

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Accession No. - Dec. 1983

GRU

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar



111467

~~RT-01073~~

दीवाली
अंक



111467

111667

21
12-11-0

दीवाली के
मौके पर चारों
ओर खुशियों का
साहौल होता है. कहीं
पटाखे छुट रहे होते हैं तो कहीं
रंगबिरंगी रोशनियों की जगमगाहट
होती है. बच्चों से ले कर बड़ेबूढ़ों तक
के मन में नई उमंग, नया उत्साह होता है.
ऐसे खुशी के मौके पर आप के पूरे परिवार के
लिए प्रस्तुत है :

शारिता

दीवाली विशेषांक

हजारों कहानियों में से चुनी गई 12 कहानियां

दीवाली पर घरपर बनाने वाले मीठेनमकीन व्यंजनों की विधियां रंगीन
चित्रों सहित.

दीवाली के मौके पर विशेष रूप से तैयार कराए गए कई लेख

मर्मस्पर्शी कविताएं तथा सभी स्तंभ

आकर्षक आवरण

चित्र-135

मूल्य 4.00 रुपए

पृष्ठ 225 से अधिक

निश्चय ही यह विशेषांक संग्रहणीय होगा

अगली प्रति अभी से सुरक्षित करा लें

घर एक स्वर्ग है ...



उपन्यास पढ़िये
और 1000/- रु. के
नकद पुरस्कार
जीतिये!

इस स्वर्ग के आधार हैं घर के सभी सदस्य, उनके आचार-विचार
स्नेह, प्रेमाश्रित, एवम्, प्रेमा दायक चरित्र !
आज के समाज का सही चित्रण 'समीर' की लेखनी का
अनूठा जादू है ! अपनी सभी रचनाओं में बाहे बह
'ओलाद का सुख' हो दूटते सपने,
सात फेरों की कसम, दामाद, धनदोलत,
'अन्तिम सच', कोहरा या कसक हो,
'समीर' ने हमेशा सुख दुख के इस खेल को अपनी लेखनी से
सजीव किया है ! समाज के उन सुष्ठु पहलुओं को
कलमबंद कर समाज के सामने उसकी ही सही तस्वीर
को उजागर करने में 'समीर' कहीं तक सफल है
ये दिनों दिन उसकी बढ़ती लोकप्रियता से ही
जाहिर हो जाता है ! वास्तविक जीवन में
समस्याओं के जाल में फंसा मानव,
स्वर्ग की कल्पना भी नहीं कर पा रहा है !
आज स्वर्ग की कामना में बह मृग तुम्हा के समान
भाग रहा है जबकि स्वर्ग उसके अपने ही पास है !
उसके अपने विचार-चिन्तन मन
ही उसे स्वर्ग के सानिध्य में ला देते हैं !
'समीर' की लेखनी के जादू ने समाज के उन अछूते
पहलुओं को उजागर किया जिनमें हम नजर अन्दाज
कर देते हैं ! मानवी भावनाओं के उन्हीं पहलुओं को
उजागर करने में 'समीर' कहीं तक सफल है इसकी सही परख
के लिये (समीर) का नया उपन्यास

घर का स्वर्ग

आपके समक्ष है !

अपनी सभी रचनाओं की तरह एक बार फिर 'समीर' ने उन्हीं चरित्रों का
चित्रण किया है जो हममें से ही एक हैं हमारे ही करीब हैं और
आधुनिकता के आवरण में अपने मर्यादा, अपने फर्ज और जिम्मेदारियों को
भूल चुके हैं ! ये कहानी है एक आधुनिक की जो विवाह से पहले भाँ बम
चुकी है, एक ऐसे युवक को जो प्रेम के लिये दीलत ठुकरा देता है, एक
ऐसी बेवस नाँ की जो अपने बच्चे की दवा के लिये अपना अंतिम देव
देती है, ऐसे समाज के टेकेदारों की जो अपनी धन-सिंसा के लिये बेगुनाहों
के सून से खेलते हैं ! ये सारे चरित्र हमारे अपने करीब के हैं !
हम प्रतिदिन बूढ़े देखते हैं ! लेकिन हम कितने सजग हैं ये सिर्फ 'समीर'
ही लिख सकते हैं !

डायमंड पाकेट बुक्स द्वारा

एक बार फिर लोकप्रिय लेखक (समीर) की मार्मिक रचना -

घर का स्वर्ग

अपने निकट के बुक स्टाल सं खरीदें डायमंड पाकेट बुक्स

2012, बरियदा गंज, नई दिल्ली-110002



PUBUCO/ID 683

ताप बर्तन के अंदर उबाल बिंदु
से भी ५०° से अधिक ताप
पर किसी प्रेशर कुकर की
सुरक्षा का विश्वास आपको
कौन दिला सकता है ?

हम दिलाते हैं इसका विश्वास !

ताप जब उबाल बिंदु से ऊपर चढ़ जाता है तो कई
बातें हो सकती हैं। द्रिमाग का पाग बढ़ सकता है।
प्रेशर कुकर फट सकता है। चोट लग सकती है। इन
स्थितियों से बचने का एकमात्र उपाय है—प्रेशर कुकर
खरीदने से पहले विश्वव्यापी नाम की खातगी।

जैसे कि बजाज।

भारत में बजाज ही उन कुछ नामों में से है जिनके
पाम २५ से भी अधिक वर्षों का अनुभव है। हर बजाज
उत्पादन में इस अनुभव का प्रमाण आपको मिलेगा।
घरेलू साधनों की हमारी सबसे विस्तृत श्रेणी में भी यह
उत्कृष्टता मौजूद है। और फिर देश भर में हमारी
सत्रह शाखाओं व ३५०० विक्रेताओं के ज़ोरों पर बजाज की
बाद की नज़रें मचा भी उपलब्ध है।

यही कारण है कि घरेलू साधनों की उत्कृष्टता,
मजबूती व सुरक्षा के लिए एक ही प्रमाण पत्र काफी
है—बजाज।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

आज ही सबसे बढ़े बजाज ही सबसे

मिक्सर, बजाज प्रेशर कुकर, बजाज आयरन, बजाज हीटर, बजाज फैन, बजाज ओवन, बजाज गैस स्टोव, बजाज वाटर



दीवाली अंक

लेख

दीवाली पर किस		
की पूजा?	18	ज्योतिर्मय
दीवाली किफायत		
से मनाएं	21	संतोषकमार
हांगकांग	26	योगेशचंद्र
इस दीवाली पर	32	प्रमिला कौशल
दीवाली को आडंबरों		
से बचाएं	35	सैन्त्री अशेष
बरफ महोत्सव	42	मुकुंद सक्सेना
आस्ट्रेलिया के...	48	संतोषवाला
मूर्ति उद्योग	58	शिवराम शुक्ल
बलूचिस्तान	63	चंद्रकमार
सहरा	86	अजय सिन्हा
दादा खोंडके	100	ताराचंद
अदब से बातें...	112	कमलाकांत
मथुरा संग्रहालय	116	ब्रजगोपाल
हिंदी दिवस	136	प्रतिनिधि

कथा साहित्य

सुधार	52	मुकारव खान
पहचान	76	मो. मवीन
नरक और स्वर्ग	106	सत्यकमार
लक्ष्मी चली...	122	कमलकिशोर
नानक्या	140	चंद्रशेखर दवे

कविताएं

मुसकान की...	38	प्रकाश मन
दीवाली की रात	83	पूरन सरमा
दुल्हन सी रात	93	पंकज
अकेला दीप	98	हरीश निमम

स्तंभ

संपादक के नाम	8 95	परदे के आगे
मुक्त विचार	14 97	ये लड़के लड़कियां
शाबाश	51 99	धूपछांव
दुनिया भर की	72 104	पिछले छः महीने
दास्ताने दफ्तर	84 130	युवा गतिविधियां

वास!

है तो कई
कता है।
नी है। इन
शर कुकर
मी।

हैं जिनके
हर बजाव
मिलेगा।
म से भी यह
हमारी
गा, विकी

पटना,
य काफी

एवरी

ए वट

संपादन व प्रकाशन कार्यालय : ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.
दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा. लि. के लिए विश्वनाथ द्वारा दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली व
दिल्ली प्रेस स.प.प्रा.लि. गाजियाबाद में मुद्रित.

मुक्ता नाम रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क है. मुक्ता में प्रकाशित सभी रचनाओं के सर्वाधिकार दिल्ली प्रेस पत्र
प्रकाशन प्रा. लि. द्वारा सुरक्षित हैं. © दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा. लि. 1983

मूल्य : एक प्रति 3.25 रुपए. एक वर्ष 78.00 रुपए. विदेश में (समुद्री डाक से) एक वर्ष : 160.00 रुपए
अमरीका में (हवाई डाक से) एक वर्ष : 400.00 रुपए. यूरोप में (हवाई डाक से) एक वर्ष : 325.00 रुपए.
मुख्य वितरक व वार्षिक शुल्क भेजने का स्थान : दिल्ली प्रकाशन वितरण प्रा. लि. रानी झांसी मार्ग, नई
दिल्ली-110055. व्यक्तिगत विज्ञापन विभाग : एम-12, कनाट सरकार, नई दिल्ली-110001. बंबई
कार्यालय : 79ए, मिटल चैम्बर्स, नारीमन पॉइंट, बंबई-400021. मद्रास कार्यालय : नं. 14, पहली
मंजिल, सीएस कॉम्प्लेक्स, 150/82, माटीअथ रोड, मद्रास-600008. कलकत्ता कार्यालय : पोद्दार
पॉइंट, तीसरी मंजिल, 113, पार्क स्ट्रीट, कलकत्ता-16. बंगलौर कार्यालय : नं. 302-बी, 'ए'
विंग-तीसरी मंजिल, क्वींस कान्फर्ट अपार्टमेंट, 3, क्वींस रोड, बंगलौर-560001. अहमदाबाद कार्यालय :
503, नारायण चैम्बर्स, समीप नेहरु ब्रिज कान्फर्ट, आश्रम रोड, अहमदाबाद-380009.

मुक्ता में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और वास्तविक
घटनाओं या संस्थाओं से उन की किसी भी प्रकार की समानता केवल संयोग मात्र है.

प्रकाशन अधिकारियों के आधिकारिक पत्रों पर मुद्रित विषयों आना आवश्यक है अन्यथा
अस्वीकृत रचनाएं लौटाई नहीं जाएंगी.

क्या आप को भी वरवध की तलाश है?

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम ने हजारों दंपतियों के
सुखी घर बसाए हैं.
हम ने हजारों आदर्श वरवधुओं को
एक हो जाने में
सहायता की है.

कैसे?

उन्होंने स्वयं
या उन के मातापिता ने
विज्ञापन दिया.
उन का विज्ञापन
सरिता के वैवाहिक विज्ञापनों में 15 दिन
तक आदर्श वरवधू तलाश करने वालों को
आकर्षित करता रहा.

शरिता

आज 75 लाख से अधिक स्त्रीपुरुषों द्वारा
महीने में दो बार पढ़ी जाती है.
सरिता की विशिष्ट व मनोरंजक
कहानियां 15 दिन तक पाठकों के
आकर्षण का केंद्र बनी रहती हैं.

आइए...

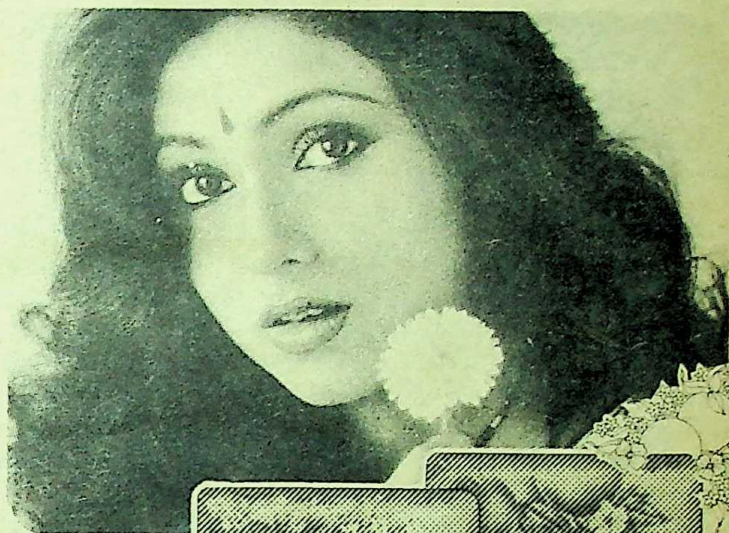
वरवधू ढूंढने में हम भी आप की
सहायता करें.

संपर्क करें :

वैवाहिक विज्ञापन विभाग
दिल्ली प्रेस
एम-12, कनाट सरकस
नई दिल्ली-110001.

रिया...

...ताज़गी का सुन्दर एहसास.



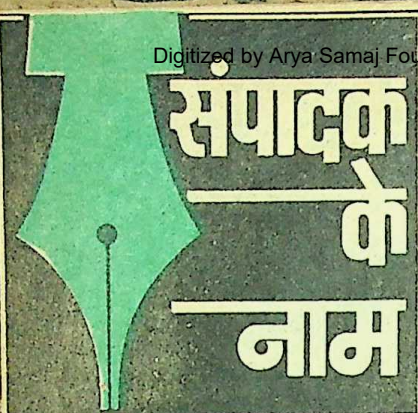
मनापसंद सुगन्धों में
फुलवा रिया
नींबू रिया

फुलवा रिया	नींबू रिया
नमो-नाजुक...	ताज़गी की बहार
हल्का गुलाबी साबुन	छलकाता हरा साबुन
फूलों की भीनी-भीनी	जिसमें है नींबू की
महक लिए.	मचलती महक.

रिया-महकता महकाता साबुन.

टाटा उत्पादन

CASTR-8-172 HIN



संपादक के नाम

'लोकतंत्र के कैसे पक्षधर?'

(मुक्त विचार/सितंबर/द्वितीय) में आप के विचार बिलकुल सही हैं, क्योंकि कुछ ही दिनों पूर्व जनरल जिया उल हक द्वारा असम में हुए नरसंहार के बारे में बोलने पर श्रीमती इंदिरा गांधी ने प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा था कि पाकिस्तान हमारे आंतरिक मामलों में दखल दे रहा है। क्या अब श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा सिंध में हुए दंगों के बारे में बोलना पाकिस्तान के आंतरिक मामलों में दखल देना नहीं है?

—विमल बिहाणी

*

टिप्पणी 'बस दो, पर क्यों?' (मुक्त विचार/सितंबर/द्वितीय) में मैं आप के विचारों से सहमत हूँ कि परिवार नियोजन को राष्ट्रीय समस्या के रूप में प्रचारित किया गया है, जब कि इसे पारिवारिक समस्या के रूप में जनता के सामने लाया जाना चाहिए था, लेकिन सरकार इसे राष्ट्रीय समस्या कह कर आम जनता को प्रभावित नहीं कर सकती, क्योंकि देश की 75 प्रतिशत जनता गांवों में रहती है, जो करीबकरीब अशिक्षित है, जो राष्ट्र या राष्ट्रीय का अर्थ ही नहीं समझती।

परिवार नियोजन हेतु सरकार कई योजनाएं बना कर जो पूंजी व्यय कर रही है उस का ज्यादा अंश तो कुछ लोगों की जेबों में चला जाता है, सिर्फ कागजों पर आंकड़े रह जाते हैं।

मुक्तवास कईक 'निर्भीक'

लेख 'हिंदी: अपने प्रयोगकर्ताओं के लिए का दर्जा' (अनुसूचक/प्रथम) ने तो मेरे मन की बात छीन ली। मैं जो कहना चाहता था, इस लेख ने कह दिया यानी जहां तक संभव हो हिंदी का ही प्रयोग करना चाहिए, किसी भी भाषा को विश्व भाषा का दर्जा देना तो कतई गलत है, क्योंकि हर देश की एक अपनी भाषा होती है। —राजेंद्र मावंडिया

*

लेख 'ऊंचे भवनों के बढ़ते खतरे' (सितंबर/द्वितीय) ने एक बार फिर उस भीषण अग्निकांड की तरफ ध्यान आकर्षित कर दिया, जो बहुमंजिला इमारत गोपाल टावर में लगी थी और जिंदा जल जाने की दहशत ने 500 लोगों की हालत बिगाड़ कर रख दी थी। इसी प्रकार अभी सदर बाजार (गांधी मार्केट) दिल्ली में भीषण आग लगी। अपर्याप्त सुविधाओं और लापरवाही के कारण आगजनी की घटनाएं प्रायः होती रहती हैं। अतः लोगों को इस में लापरवाही नहीं बरतनी चाहिए। —संजयकुमार हिश्रा

*

ऊंची इमारतों पर लेख सटीक था। वैसे हम ऊंचीऊंची इमारतें तो बनाते जा रहे हैं, परंतु उन की व्यवस्थाओं के प्रति हम बहुत

'संपादक के नाम' के लिए मुक्ता की रचनाओं पर आप के विचार आमंत्रित हैं। साथ ही आप देश के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि विषयों पर भी अपने विचार इस स्तंभ के माध्यम से रख सकते हैं। प्रत्येक पत्र पर लेखक का पूरा नाम व पता होना चाहिए, चाहे वह प्रकाशन के लिए न हो। पत्र इस पते पर भेजिए :

संपादकीय विभाग,
मुक्ता,
ई-3, झंडेवाला एस्टेट,
नई दिल्ली-110055.

तो मेरे
चाहता
हां तक
चाहिए,
जर्जा देना
की एक
वंडिया

खतरे
र उस
अकर्मित
गोपाल
ताने की
गड़ कर
बाजार
लगी.
ही के
रहती
ही नहीं
र हिस्सा

या. वैसे
रहे हैं,
म बहुत

लए
के
आप
बक,
पपने
रख
का
चाहे.
इस

बढ़त बच्चा का

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिये विशेष ठोस आहार...

फ़ैरेक्स



क्योंकि फ़ैरेक्स, मुन्ने के जल्द और सर्वांगीण विकास के लिये, अधिक पौष्टिक ठोस आहार है.

१. आपके मुन्ने के विकास के लिए फ़ैरेक्स में भरपूर प्रोटीन है.
२. फ़ैरेक्स में किसी भी डिब्बे-बन्द ठोस आहारों के मुक्ताबले अधिक आयरन है, जो आपके मुन्ने को रक्तहीनता से बचाता है, उसकी प्रतिरोधक क्षमता का विकास करता है और आपको

विश्वास दिलाता है कि उसका खून स्वस्थ है.

३. सिर्फ़ फ़ैरेक्स ही एक ऐसा डिब्बे-बन्द ठोस आहार है जिसमें कैल्शियम और फ़ॉस्फ़ोरस आदर्श अनुपात में हैं याने आपके

मुन्ने की स्वस्थ हड्डियों और मजबूत दाँतों के लिये ये दोनों तत्व २:१ के अनुपात में हैं.

४. और फ़ैरेक्स आसानी से पचने लायक है क्योंकि इसे मुन्ने की कोमल पाचनशक्ति के अनुरूप विशेष रीति से बनाया गया है.



डॉक्टरों की सिफ़ारिश है-

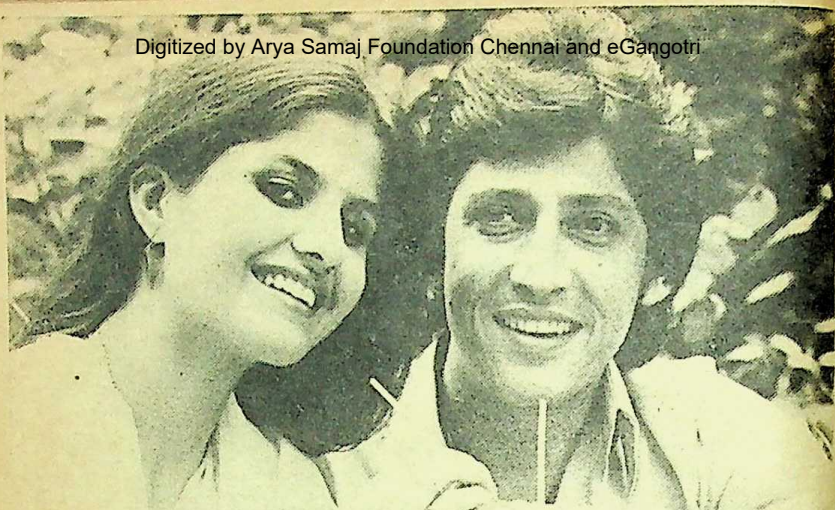
फ़ैरेक्स®

जलैसो उत्पादन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, India. TASGLF-42-183_HN

मुक्ता

1983



**सांस की बदबू हटाइए...
दांतों की सड़न रोकिए**



कोलगेट से जब भी
आप दांत साफ करते हैं, उसका
भरोसेमंद फार्मूला आपकी
सांसों को महकता है...
उनमें ताज़गी लाता है. साथ ही आपके
दांतों को मज़बूत व स्वस्थ बनाता है.



ये देखिए कैसे :

दांतों में छिपे अन्नकणों में सांस में बदबू और दांत में
सड़न पैदा करनेवाले कीटाणु बढ़ते हैं.



कोलगेट का अनीसा असरदार झाग दांतों के कोने में
छिपे हुए अन्नकणों और कीटाणुओं को निकाल देता है.



नतीजा : आपकी सांस तरोताज़ा, दांतों का सड़न से
बचाव, दांत स्वस्थ और मज़बूत.

इसीलिए हर भोजन के बाद बिना भूले कोलगेट डेंटल क्रीम से
दांत साफ कीजिए. सांस की बदबू हटाइए, दांतों की सड़न रोकिए.

कोलगेट का ताज़ा पेपरमिंट जैसा स्वाद मन में बस जाता है!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

इमारतों की सुरक्षा की व्यवस्था न हो तो इस
के बनाने की अनुमति नहीं देनी चाहिए।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—बालकृष्ण नीमा

*

कहानी 'नामूर' (सितंबर/द्वितीय) मर्मस्पर्शी रही। इस में वास्तविकता प्रदर्शित करते हुए बताया गया है कि सच्चा प्रेम करने के बाद अगर किसी की भावनाओं में खिलवाड़ किया जाए तो वह बात दिल में चुभ जाती है और ज़िंदगी का 'नामूर' बन कर रह जाती है।

—कैलाशचंद्र राखैर

*

मुक्ता का सितंबर (द्वितीय) अंक पिछले चार घंटे से मेरे ही हाथ में है। अभी तक 29 बार व्यंग्य 'कठिन प्रेम' पढ़ चुका हूँ। इस बीच कितनी बार हंसा हूँ, यह तो मुझे याद नहीं, लेकिन यह तो तय है कि इस पत्र को लिखने के पश्चात एक बार यही व्यंग्य और पढ़ूंगा।

—ब्रिजेशसिंह

*

व्यंग्य 'कामचोर महासंघ जिदावाद' (सितंबर/प्रथम) बहुत अच्छा लगा। इस के अंतर्गत आजकल दफ्तरों में होने वाली मनमानी एवं भ्रष्टाचार का सही उल्लेख किया गया है। इस तरह के व्यंग्य का मुझे काफी दिनों से इंतजार था।

—अमरचंद्र रावण

*

पिछले कई वर्षों से यह बहस छिड़ी हुई है कि आरक्षण नीति ने देश को अकुशल डाक्टर व इंजीनियर वगैरह ही दिए हैं। वास्तव में यह तर्क एकदम बेबुनियाद है। डिग्री प्राप्त करने के लिए उत्तीर्णों का सब के लिए बराबर है, उस में कोई छूट नहीं है इसलिए कम प्रतिशत अंकों पर दाखिला मिलने पर भी अन्य लोगों के बराबर अंक ला कर उत्तीर्ण होना कुशलता का ही परिचायक है। वैसे प्रायोगिक परीक्षाओं में किया जाने वाला पक्षपात किसी से छिपा नहीं है।

सच बात तो यह है कि आरक्षण नीति का खल कर उल्लंघन किया जा रहा है।

मुक्ता

स्तंभों के बारे में सूचना

मुक्ता में प्रकाशित होने वाले विविध स्तंभों के लिए चुटकुले, अपने अनुभव, संस्मरण व अन्य सामग्री भेजते समय स्पष्ट और सुपाठ्य शब्दों में अपना नाम, पूरा पता और भेजने की तारीख अवश्य लिखें। भेजी गई सामग्री किसी भी हालत में लौटाई नहीं जाएगी, अतः वापसी के लिए टिकट या टिकट लगा व पता लिखा लिफाफा भेजने का कष्ट न करें। एक से अधिक स्तंभों की सामग्री एक ही लिफाफे में रख कर भेजी जा सकती है।

भेजी गई सामग्री मौलिक और कम से कम शब्दों में होनी चाहिए। किसी भी पत्रपत्रिका से चुराई हुई या सुनीसुनाई नहीं होनी चाहिए। हर संस्मरण के साथ मौलिकता का निम्न प्रमाणपत्र अवश्य भेजें। इसे स्पष्ट शब्दों में अलग कागज पर भेजें।

"प्रमाणित किया जाता है कि..... शब्दों से आरंभ होने वाली मेरी रचना (अनुभव/चुटकुला/पकवान विधि) नितांत मौलिक है व इसे कहीं से लिया नहीं गया है और पुरस्कार के एवज में इस का प्रकाशन अधिकार (कापीराइट) मैं दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा.लि. को दे रहा हूँ। स्पष्ट हस्ताक्षर।"

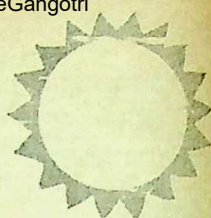
जिन संस्मरणों के साथ मौलिकता संबंधी प्रमाणपत्र संलग्न नहीं होगा उन पर विचार नहीं किया जाएगा और उन्हें नष्ट कर दिया जाएगा।

अपने संस्मरण इस पते पर भेजें:
संपादकीय विभाग,
ई-3, ब्रंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग
नई दिल्ली-110055.

दिल में
होने से
देता है
मड़न से

हे! मुक्ता

चंपक



हर पक्ष चंपक में प्रकाशित मनोरंजक व शिक्षाप्रद कहानियां, कविताएं, पहेलियां, चटकले और लेख बच्चों को नई जानकारी देते हैं, उन का चरित्र संवारते हैं और नए स्वरूप में ढालते हैं।



चंपक हिंदी के अलावा अंगरेजी, गुजराती, तमिल, बंगाली, मराठी व मलयालम भाषाओं में भी प्रकाशित होता है।

अपने बच्चों को चंपक लेकर दें।
उन का मनोरंजन भी करें और
भविष्य भी संवारें।



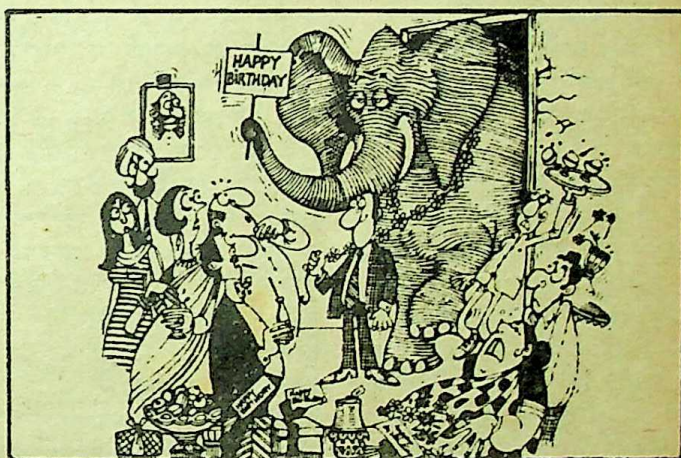
आज राजपत्रित अधिकारी हैं, लेकिन सिर्फ लिखित परीक्षा के बल पर, साक्षात्कार में उन्हें पूर्णांक तीन सौ अंकों में से सिर्फ एक ही अंक दिया गया. इससे पूर्व उन को साक्षात्कार में 10 अंक से अधिक कभी नहीं दिए गए. दूसरी ओर सबर्णों को 200 से 250 तक अंक मिल जाना आम बात है.

एक अन्य सज्जन इस समय उत्तर प्रदेश में मूनसिफ हैं. प्रशासनिक पद के

सफाई कर्मचारी दल में क्यों नहीं भरती हा जाने. हमारे देश में प्रतियोगी परीक्षाओं में बैठने वाले असवर्णों से जिस प्रकार का बरताव किया जाता है यह उस का एक नमूना है. फिर भी वस्तु स्थिति से यह स्पष्ट जाहिर है कि आरक्षित पदों पर नियुक्त व्यक्ति बिना आरक्षण वाले पदों पर काम कर रहे व्यक्तियों की तुलना में अधिक निष्ठा और क्षमता से कार्य कर रहे हैं.

—राजपालसिंह •

11,25,51,101* श्रेष्ठ उपहार!



बैंक ऑफ इंडिया का उपहार चेक

* रु. 11, रु. 25, रु. 51 और
रु. 101 की शुभराशियों
में उपलब्ध.

बैंक ऑफ इंडिया के उपहार चेक
बैंक की सभी शहरी और कस्बाई.
शाखाओं में उपलब्ध हैं
और भारतभर की किसी भी
शाखा में भुनाएँ.



बैंक ऑफ इंडिया

(भारत सरकार का उपकार)

उपहार चेक

हर अवसर के उपयुक्त उपहार.



मुक्त विचार

दीवाली पर आंतक

इस वर्ष की दीवाली कम से कम उत्तर भारत में भय के साए में मनाई जाएगी। पहले दीवाली पर महंगाई का रोना रोया जाता था, अब की बार सिख आतंकवादियों का डर है कि न जाने कब कौन से बाजार में, कौन सी बस में, कौन से सिनेमा हाल में वे अपनी काली करतूत दिखा दें।

फिर भी नई आशाओं, नए उत्साह, नई रोशनी का यह त्योहार धूमधाम से मनाया जाएगा, इस में संदेह नहीं। दीयों की कतारों की कतारें, खुशी की आतिशबाजी, घरघर का उल्लास सिद्ध करेगा कि विपत्तियों के बावजूद आशा की ज्योति बुझने नहीं लगी है।

सुख, समृद्धि और उपलब्धि का प्रतीक यह त्योहार हर परिवार में नई उमंग और नया उत्साह देगा और काले अंधेरों को दूर भगाने में सहायक होगा, यही आशा है।

असरकारवाद का नारा

विपक्षी दलों के श्रीनगर सम्मेलन से शुरू से ही कोई खास आशा तो थी नहीं, क्योंकि फारुक अब्दुल्ला ने लोक दल व भारतीय जनता पार्टी को बुलाने में हिचकिचाहट दिखा कर एकता के रंग में भंग पहले ही कर दिया था।

उन के आपसी विचारविमर्श के जो नतीजे निकले वे और अधिक निराशाजनक रहे, क्योंकि बजाए अपना घर खूद ठीक करने के वे इंदिरा कांग्रेस की सरकार से ऐसी मांगें करने में जुट गए, जो उन्हें बिना राजनीतिक अधिकार के मिल ही नहीं सकतीं।

इस सम्मेलन का असली लाभ तो तब होता जब यह तय हो जाता कि अगले लोक सभा चुनावों में कांग्रेस विरोधी मत बंटेंगे नहीं। उन्हें यह भी तय करना था कि कम से कम जब तक श्रीमती इंदिरा गांधी सत्ता में हैं, वे अपनी शक्ति बजाए एकदूसरे को नीचा दिखाने के इंदिरा सरकार की पोलें खोलने में लगाएंगे। संसद में सरकार विरोधी दलों की बिल्कुल नहीं सुनती, इसलिए इस सम्मेलन का उपयोग जनहित की बातों पर विचार करने पर किया जा सकता था। ऐसे निर्णय लेने की मांग की जा सकती थी जिन से जनता को राहत मिलती, उस का कामकाज पहले से सरल हो जाता।

इस के विपरीत यह सम्मेलन पश्चिमी बंगाल, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक व जम्मू कश्मीर की गैर कांग्रेसी सरकारों के वकीलों की बैठक बन कर रह गया। इस में जो निर्णय लिए गए उन से आम जनता का तो दूर काभी ताल्लुक नहीं है।

सर्वप्रथम तो इस बैठक की मांगें मानी ही नहीं जा सकतीं और अगर मान भी ली

मुक्ता के पाठकों को दीवाली की शुभकामनाएं

जाएँ तो लाभ सिर्फ़ गैरकांग्रेसी दलों की सरकारों को होगा, जनता को नहीं।
 ज्यादातर मांगें केंद्र के अधिकारों से संबंधित थीं। केंद्र अधिक पैसा दे, राज्य सरकार के कामकाज में दखलअंदाजी न करे, राज्यपाल के अधिकार सीमित हों, योजना आयोग के अधिकार बदलें, चुनाव आयोग निष्पक्ष हो, केंद्रीय पुलिस हर जगह न पहुंचे, आदि अब भला बताइए, हैदराबाद, बंगलौर, श्रीनगर या कलकत्ता में रहने वाले आम व्यक्ति को इन से क्या फर्क पड़ता है? निर्णय ज्योंति वसु लें या श्रीमती इंदिरा गांधी, उस के लिए वे एक बराबर हैं, यदि उस निर्णय से उस की जेब ढीली हो रही हो या उसे किसी सरकार के दफ्तर की लाइन में खड़ा होने का आदेश हो।

विपक्षी दलों का सम्मेलन इन मांगों से जनहित सिद्ध कर पाता तो बात दूसरी थी। अधिकांश दलों को तो इन मांगों पर हां में हां इसी लिए मिलानी पड़ी, क्योंकि कक्ष के बाहर खड़ी गाड़ी राज्य सरकार की थी और अंदर रसोई में स्वादिष्ट खाने का पैसा भी उसी ने दिया था।

विपक्षी दलों के साथ अब कठिनाई यह है कि वे बिना नए आश्वासन दिए सत्ता प्राप्त करना चाहते हैं। असल में उन्हें मालूम ही नहीं है कि वे कर क्या सकते हैं। इसलिए उन्हें जो छोटा मोटा मुद्दा सामने नजर आता है वे अगला चुनाव उसी को ले कर जीतने के लिए हायतोबा मचाने लगते हैं। कभी यह मुद्दा गाय की चर्बी में नजर आता है तो कभी केंद्र व राज्यों के अधिकारों में।

विपक्षी दल अगर जनता को बढ़ते सरकारी अंकुश से निकालने के आश्वासन पर अगला चुनाव लड़ें तो कोई कारण नहीं कि उन्हें सफलता न मिले। गांव का किसान हो या पटरी का भिखारी, उद्योगपति हो या स्वयं सरकारी कर्मचारी, आज सब सरकारी लालफीताशाही के अत्याचार से बुरी तरह ग्रस्त हैं। जिस तरह 1969 में इंदिराजी सरकारवाद के नाम पर जीती थीं, आज असरकारवाद देशवासियों की प्रगति व मज्जा

खुशहाली का सब से बड़ा कारण बन सकता है। क्या विपक्षी दल बेकार की बातों को छोड़ कर इस अपनाएंगे?

माक्सवादी और हड़तालें

घेराव और हड़ताल को नौकरीपेशा लोगों का मौलिक और सदा उपयोग में लाया जा सकने वाला अधिकार बता कर उस की वकालत करने वाली माक्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी को खुद इस का मजा चखना पड़ा है। पिछले दिनों पश्चिमी बंगाल के सरकारी हस्पतालों के डाक्टरों, कनिष्ठ डाक्टरों और उन के सहयोगियों ने अपनी बहुत सी मांगों के लिए हड़ताल कर दी।

हड़ताल से कितने ही हस्पतालों में काम ठप हो गया। यही नहीं, चिकित्सा सुविधाएं न मिलने के कारण कई बच्चों की अकाल मृत्यु भी हो गई।

रोचक स्थिति तब पैदा हुई जब डाक्टरों ने वरिष्ठ अधिकारियों का घेराव किया और माक्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व वाली वामपंथी सरकार को पुलिस बुला कर इन डाक्टरों को जबरन हटाना पड़ा। इस के लिए लाठी प्रहार करने तक की नौबत आई।

कम्युनिस्ट हर सुबह गला फाड़फाड़ कर चिल्लाते हैं कि मजदूरों और अन्य कामगारों की बुरी दशा का कारण सरमायादारों द्वारा किया जाने वाला शोषण है और इस के विरुद्ध हड़ताल करना जायज ही नहीं जरूरी है।

पर जब काम लेने की जिम्मेदारी स्वयं उन पर आई तब उन्हें वास्तविकता का पता चला कि वेतन मूल रूप से उत्पादकता और मांग व पूति पर निर्भर करते हैं। जब तक काम करने वालों की उत्पादकता नहीं बढ़ेगी, किसी भी सरकार या नियोजक के लिए वेतन बढ़ाना संभव नहीं है। जिन उद्योगों में नई तकनीक के कारण उत्पादकता बढ़ी है, वहां नियोजकों के न चाहने पर भी वेतन बढ़ गए हैं। वहां इस के लिए घेराव और हड़ताल की जरूरत ही नहीं पड़ी क्योंकि वहां मजदूर

के जो
जनक
करने
मांगें
नैतिक

तो तब
लोक
वर्गों
क्रम से
में हैं,
नीचा
लने में
लों की
मेलन
वैचार
य लेने
ता को
हले से

पश्चिमी
जम्मू
की लों
निर्णय
का भी

मानी
भी ली

ए

1983

उसे अच्छा वेतन नहीं मिलता तो कोई दूसरी कंपनी उसे ज्यादा वेतन पर लेने की तैयारी कर जाती है। घेराव व हड़तालों को प्रोत्साहन दे कर मार्क्सवादी कम्युनिस्टों ने पिछले डेढ़ दशक से पश्चिमी बंगाल का औद्योगिक वातावरण खराब कर रखा है। नियोजक वहां पैसा लगाने से कतराते हैं और इसी लिए जो कलकत्ता किसी समय एक प्रमुख औद्योगिक केंद्र कहा जाता था, वह अब बीमार कारखानों का शहर बन गया है।

श्रीनगर का क्रिकेट मैच

श्रीनगर में 13 अक्टूबर को भारत और वेस्ट इंडीज के बीच हुआ क्रिकेट मैच अब राजनीतिक विवाद का विषय बन गया है। इस मैच में दर्शकों की भीड़ ने भारतीय टीम के अच्छे खेल की तो प्रशंसा की नहीं, लेकिन वेस्ट इंडीज की प्रशंसा बहुत ही उत्साहपूर्वक की। उन के व्यवहार से लगता था जैसे यह मैच भारत में न हो कर कहीं वेस्ट इंडीज में खेला जा रहा हो।

हमारे देश प्रेमियों को यह घटना बुरी तरह खल रही है। यहां तक कि केंद्रीय गृह मंत्री प्रकाशचंद्र सेठी ने भी मुख्य मंत्री फारुक अब्दुल्ला से इस बारे में सफाई प्रस्तुत करने को कहा है और मांग की है कि जिन लोगों ने सुनियोजित तरीके से देश का अपमान किया है, उन के विरुद्ध कार्रवाई की जाए।

खेलों के मामले में कश्मीरियों का यह रवैया कोई नया नहीं है। भारत और पाकिस्तान के बीच होने वाले मैचों में तो यह बहुत मुखर हो उठता है। हाकी का मैच हो या क्रिकेट अथवा फुटबाल का, आम कश्मीरी पाकिस्तान का ही समर्थक नजर आता है। पाकिस्तान के जीतने पर मिठाई बांटी जाती है, पटाखे छोड़े जाते हैं, भारत के जीतने पर शोक प्रकट किया जाता है।

यह खेदजनक बात है, पर इस के लिए नेशनल कानफ्रेंस या जमायते तुलबा को दोष दे कर संतोष कर लेना ठीक नहीं है। इन

पाकिस्तान प्रेम अभी तक समाप्त नहीं हुआ है, पर इस के लिए उसका कौन है?

भारतीय संघ में कश्मीर को मिलाए अब 35 वर्ष हो गए हैं। 1948 में आम कश्मीरी की राय क्या थी, यह हमें आज तक नहीं मालूम। 1948 में जिस जनमत संग्रह का वादा किया गया था, वह भारत सरकार आज तक पूरा नहीं कर पाई है।

इस दौरान बाकी देश की ओर से ऐसी कोई कोशिश नहीं की गई जिस से वहां के निवासी भारत को पाकिस्तान के मुकाबले ज्यादा अच्छा दोस्त व संरक्षक मान लें। आश्चर्य की बात है कि हम उन लोगों को भी अपने साथ रख पाने में असफल हो रहे हैं जिन्हें धार्मिक व सांस्कृतिक रूप में भारत का ही हिस्सा माना जाता रहा है।

अखिल भारतीय राजनीतिक दल कश्मीर में अपना अस्तित्व नहीं बना पाए हैं। कश्मीरी लोगों का शेष भारत से नौकरियों और उद्योगों के मामले में भी संबंध नहीं बढ़ा है। कोई कश्मीरी अखिल भारतीय नेता नहीं बन पाया है। शेष भारत से कश्मीर का संबंध सिर्फ पर्यटन स्थल के रूप में रहा है।

फिर भला कश्मीरी क्यों अपने को भारत का अभिन्न अंग मानें?

क्रिकेट मैच में हुडदंग मचाने वालों को सजा देने के स्थान पर सजा तो बाकी सारे देश को दी जानी चाहिए कि वह नई पीढ़ी को भी अपनी ओर नहीं कर सका है। केंद्रीय सरकार को बजाए इस बारे में किसी को डांटनेफटकारने के चप ही रहना चाहिए।

धर्म के नाम पर आतंक

अकाली आतंकवादियों ने अब अपना कार्यक्षेत्र फैला कर उस में दिल्ली और चंडीगढ़ को भी शामिल कर लिया है। दहशत फैलाने के लिए रामलीलाओं, सिनेमाघरों और रेलवे स्टेशन में भीड़भाड़ के समय बम विस्फोट किए गए। दिल्ली में तो लोगों ने फिर भी थोड़ी सहनशीलता दिखाई, पर चंडीगढ़

ऐसा लगने लगा है कि अब अकाली आतंकवादी नेता और खोने लगे हैं और वे तुरंत अपनी बात मनवाने के लिए कुछ भी करने को तैयार हैं। पंजाब व अन्य स्थानों पर सरकार के ढीलेढाले रवैए और पुलिस की अपराधियों को पकड़ने में असफलता ने इन का दुस्साहस और भी बढ़ा दिया है।

श्रीमती इंदिरा गांधी की सरकार अब तक इस आस में थी कि आंदोलन कर के और बम फेंकफांक कर अकाली भी ऐसे ही थक कर बैठ जाएंगे जैसे असम के लोग बैठ गए हैं। लगता है सिख नेता इस के विपरीत इसे सरकार की नपुंसकता मान रहे हैं और उन्हें लगता है कि सरकार को जल्दी ही उन की मांगें मानने पर मजबूर किया जा सकता है।

पंजाब में केंद्रीय शासन वैसे इस ओर पहला कदम है, क्योंकि दरबारासिंह की सरकार को हटाने की मांग उन की कई शर्तों में से एक थी।

वैसे पंजाब में केंद्रीय शासन कुछ कर पाएगा, इस में संदेह है। दरबारासिंह अपने आप में भी नाममात्र के ही मुख्य मंत्री थे। अधिकांश निर्णय तो तब भी दिल्ली में ही लिए जाते थे। उन दो सालों में उठाए गए कदमों से कोई लाभ नहीं मिला।

इस में संदेह नहीं है कि आने वाले महीने पंजाब के हर निवासी के लिए दहशत भरे होंगे। उन्हें अपने भविष्य का अब कोई भरोसा नहीं रहेगा। जिन गैर सिखों ने अपने उद्योग व्यापार मेहनत से जमाए थे उन को तो जान का डर है ही, सिख व्यापारी व उद्योगपति भी भारी आर्थिक संकट में पड़ जाएंगे।

खेद की बात तो यह है कि धार्मिक नेता को अपने अनुयायी तक की कठिनाइयों की चिंता नहीं होती। अनुयायियों का व्यापार चौपट हो, परिवार बिखरे, आर्थिक संकट आए, धार्मिक नेता तो इसे ईश्वर का विधान मान कर ध्यान ही नहीं देता।

भिडरावाले जैसे संतों के कारण सिखों के प्रति देश भर में जो अविश्वास पैदा होने लगा है, उस को जो आर्थिक कठिनाइयां आ

स्थापना करनी है, चाहें कितने ही लोग क्यों न बरबाद हों।

सरकारी कानूनी सहायता

निःशुल्क कानूनी सहायता योजना, जिस का सर्वोच्च न्यायालय के एक न्यायाधीश व केंद्रीय विधि मंत्रालय द्वारा समाज सेवी के नाम पर जोरशोर से प्रचार किया जा रहा है, अब करदाता पर भार बनने लगी है। गरीब लोग पैसे के अभाव के कारण अदालत का दरवाजा नहीं खटखटा सकते, इसलिए उन्हें यह सहायता देने की योजना बनाई गई थी और आरंभ में युवा व उत्साही वकील इसे स्वयं सेवी के रूप में दे रहे थे।

बाद में इसे सरकारी संरक्षण मिलने लगा। सरकारी संरक्षण के रूप में इस निःशुल्क कानूनी सहायता के लिए सरकारी मुलाजिम रखे जाने लगे हैं। उन मुलाजिमों के साथ प्रशासकीय विभाग भी होगा ही। उन के लिए भवन भी बनेगा। स्टेशनरी, यात्रा भत्ते की भी व्यवस्था होगी। उच्च अधिकारी भी नियुक्त होंगे। इस प्रकार यह तंत्र विकराल रूप धारण करने लगा है।

जब निःशुल्क कानूनी सहायता सरकारी हो जाएगी तो सहायता पाने वाले के साथ क्या सलूक होगा, इस को जानने के लिए किसी भी समाज कल्याण केंद्र में जाना काफी होगा। चपरासी से ले कर अधिकारी तक सब रिश्तत मांगने लगेंगे। वे जो मामले लेंगे उन की पैरवी अधूरे मन से होगी।

सहायता पाने वाला शिकायत तो कर नहीं सकता। उसे वैसे ही 'मुफ्त' सहायता मिल रही है और सरकारी सहायता देने वाले की कार्यकुशलता की जांच कोई करेगा नहीं क्योंकि उस के खराब काम से किसी की सेहत पर कोई असर नहीं पड़ेगा।

यदि यह कार्य स्वयं सेवा के स्तर पर हो रहा होता तो कम से कम सेवा देने वाले को आत्मसंतोष तो होता जिस कारण वह काम की सलाह देता।

लेख • ज्योतिर्मय

अमावस की रात, चारों ओर छाया हुआ घोर अंधेरा, तब आज की तरह जगमगाते हुए विद्युत प्रकाश की कोई व्यवस्था नहीं थी. लोग घरों में ही किसी तरह दीपक जला कर या आग से रोशनी का काम चलाऊ प्रबंध करते थे. घर में रोशनी के लिए भी वह प्रबंध अपर्याप्त रहता था. घर के बाहर किसी ने दीपक रखा होगा और फिर

दीवाली का त्योहार आज औपचारिकताओं में उलझ कर रह गया है. जर्जर मान्यताओं की लकीर पर चल कर हम क्या कर पाते हैं. क्या यह पुरातन मोह तोड़ा नहीं जा सकता?

बहुत से दीपक रखे जाने लगे होंगे. इस के बाद अंधेरे की घनी परत चीर कर आलोक फैलने लगा होगा. अंधेरा था बहुत घनीभूत और इतना व्यापक कि सारी दुनिया उस अंधेरे में लिपटी हुई थी. इस सर्वग्राही अंधेरे का मुकाबला एक नन्हें दीपक से करने का विचार कहां से जन्मा होगा? यह प्रश्न अनुत्तरित सा है, किंतु दीपक से अंधेरे का मुकाबला करने का महत्त्व आज भी उतना ही है.

चारों ओर निराशा का अंधेरा घना हो, कहीं कोई रास्ता न सूझ रहा हो. दरिद्रता के बादल घटाटोप छाए हुए हों. इस सर्वग्राही लगने वाले वातावरण में विवेक का दीपक इतनी रोशनी तो कर ही देता है कि आसपास की स्थिति स्पष्ट होने लगे और अंधेरा उतना तो छंट ही जाए कि कुछ कदम आगे के लिए उठ सकें.

दीवाली पूरे देश में मनाई जाती है. हर घर में दीपक जलते हैं, किंतु दरिद्रता ज्यों की त्यों बनी रहती है. वह ज्यों की त्यों ही नहीं



छोटी सी स्रित हाथ लग और उस सनकला-
वाली रोशनी में आगे न बढ़ कर उस स्रोत की
ही पूजा की आँखों से रोशनी धुंध है।
व्यर्थ इस अर्थ में कि उस का कोई उपयोग
नहीं हो रहा है। दीवाली को अगर समृद्धि का
पर्व मानें तो यह मानना पड़ेगा कि समृद्धि का
मार्ग विवेक से प्रकाशित होता है और उस के
प्रकाश में पुरुषार्थ के कदम उठाने पड़ते हैं।

इस प्रेरणा को न उभार कर दीवाली पर
लक्ष्मीपूजा का अंधविश्वास प्रचलित हुआ।
लोग यह मानने लगे कि दीवाली की रात को
धन की कथित देवी लक्ष्मी का पूजन करना
चाहिए। इस पूजा से प्रसन्न हो कर लक्ष्मी घर
में आएगी और ढेर सारा धन उड़ेल देगी।

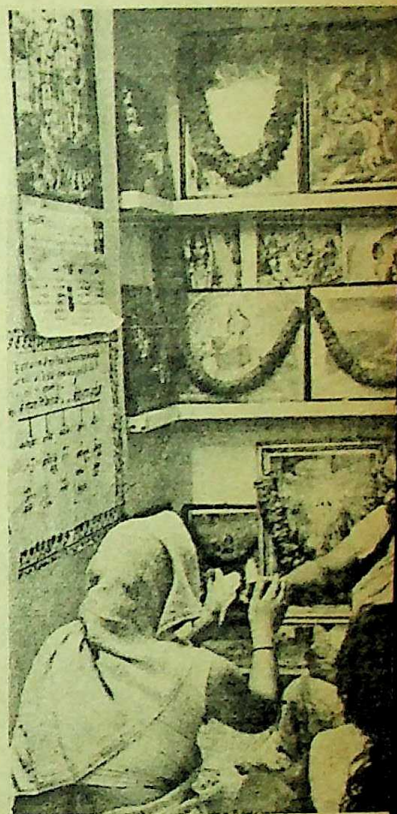
धन किसे नहीं चाहिए? धन के साथ
यह अंधविश्वास जुड़ा तो विवेक और पुरुषार्थ
उपेक्षित छूट गए। पूजा ही सब कुछ बन गई।
इस अंधविश्वास को पुरोहित वर्ग ने बोया
और सींचा। वह वर्ग तो अपना स्वार्थ सिद्ध
करता रहा, किंतु समाज में समृद्धि की
आकांक्षा पथभ्रष्ट हो गई। उस की उत्कटता
नष्ट होने लगी और पूजा का लिजलिजापन
उसे कमजोर करने लगा।

अंधविश्वास की गहरी जड़ें

पूजापाठ और कर्मकांडों से समृद्धि की
आकांक्षा किसी भी तरह पूरी नहीं हो सकती,
किंतु इस अंधविश्वास ने अपनी जड़ें जमाईं
तो परिश्रम का रास्ता छोड़ कर हर व्यक्ति
आसान उपायों से समृद्ध होने की सोचने लगा।
यही कारण है कि भारत में गरीबी और धन
का लालच दोनों ही चरम स्तर पर हैं। हम
धनवान होना भी चाहते हैं और इस के लिए
परिश्रम करने से यथासंभव बचे रहना भी
चाहते हैं।

अकर्मण्यता नसनस में बसी हुई है और
संपन्नता के लिए इतनी अधिक तरस है कि
दूसरे संपन्नों को देख कर ईर्ष्या तक होती है।
संपन्नता अपने लिए इतनी दुर्लभ लगती है कि
दूसरे संपन्न व्यक्ति या देश को भौतिकवादी
कहने और उन की आलोचना करने में अजीब

मानसिकता को अच्छी तरह स्पष्ट करती है।
कई विदेशी पत्रों पर कुछ दिन पहले नई
दिल्ली स्टेशन के बाहर बैठे ज्योतिषियों को
कौतूहल से देख रहा था। ज्योतिषी अपने
ग्राहक की हस्तेखाएं देख कर उस का भाग्य



दीवाली क्या सिर्फ अंधविश्वासों को
मजबूत करने का ही त्योहार है?

बांच रहा था। ग्राहक का हाथ देख चुकने
बाद ज्योतिषी पर्यटक की ओर मुड़ा तथा उस
का हाथ पकड़ कर बोला, "पांच रुपए
पर्यटक ने न जाने क्या सोचा, उस ने पा
रुपए दे दिए, लेकिन अपना हाथ वापस छु
लिया।

इस बात पर ज्योतिषी झल्ला उठा व



दीवाली का आगमन : क्या इस त्योहार को नया रूप दिया जा सकता है?



बोला, "तुम भौतिकवादी लोग हो. मैं तुम्हारे कष्टों को दूर करने का उपाय बताता, किंतु तुम्हें आध्यात्मिक बातों में विश्वास नहीं है. इसी से अशांत भटकते रहते हो."

ज्योतिषी पर्यटक की भौतिकवादिता को कोस रहा था या उसे और रुपए न ऐंठने देने के लिए दुत्कार रहा था? अगर पर्यटक को पैसों से उतना ही लगाव होता हो वह पांच रुपए भी क्यों देता? इस स्थिति में ज्योतिषी ज्यादा लालची हुआ या वह पर्यटक?

पूजापाठ में विश्वास करने वाले अधिकांश लोग इसी मानसिकता में जी रहे हैं. गलत रास्ते पर चलने के कारण मिलने वाली असफलता इसी तरह की कुंठा को जन्म देती है. सफलता, संपन्नता और समृद्धि के लिए सही और व्यावहारिक उपाय क्या हो सकते हैं, इस दिशा में सोचा जाए और आवश्यक कदम उठाए जाएं तो वह दीवाली सच्चे अर्थों में दीवाली होगी, लक्ष्मी की पूजा करने से नहीं. परिश्रम करने और संपन्न होने के लिए निजी व पारिवारिक निर्धमण तथा उन निर्धमणों का क्रियान्वयन करने के लिए आनंद और आलोक का यह पर्व एक अच्छा अवसर बन सकता है.

किफायत से मनाएं

लेख • संतोषकुमार 'निर्मल'

त्योहार खुशियों के प्रतीक होते हैं, भारत को तो त्योहारों का देश ही कहा जाता है, जिन मुख्य त्योहारों को धूमधाम से मनाया जाता है, उन में दीवाली का अपना अलग महत्त्व है, लेकिन विडंबना यह है कि लोग इस के धार्मिक पक्ष को इतना अधिक महत्त्व देते हैं कि उस के अन्य पक्ष दब जाते हैं। दीवाली मनाने का पारंपरिक ढंग कुछ ऐसा बन गया है कि कुछ लोग इस त्योहार के आने पर बड़ी हीन भावना का अनुभव करते हैं। जहां एक ओर कुछ लोग इसे बड़ी धूमधाम से मनाते हैं, वहीं कुछ लोग ऐसे हैं, जो अनमने ढंग से इसे मना कर अपना बोझ हलका कर लेते हैं।

यह सही है कि हर त्योहार पर लोगों का खर्च बढ़ जाता है, लेकिन अगर कहा जाए कि दीवाली सब से महंगा त्योहार है तो गलत न

दीवाली पर अपनी आर्थिक हालत को देखे बगैर अनाप-शनाप खर्च करना कहाँ तक जायज है? त्योहार का उत्साह क्या अपने सीमित साधनों में व्यक्त नहीं किया जा सकता?

होगा। इस अवसर पर कुछ लोग तो कर्ज आदि ले कर भी इसे मनाते हैं।

आजकल महंगाई इतनी अधिक बढ़ गई है कि दीवाली आने पर कुछ लोगों के चेहरे उतर जाते हैं। त्योहार पर प्रसन्नता प्रकट करने के स्थान पर वह अपनी झल्लाहट प्रकट करते हैं। अगर उन से कहा जाए कि दीवाली आ गई है, तो वे बड़े अनमने ढंग से





दीवाली का आगमन : क्या इस त्योहार को नया रूप दिया जा सकता है?



बोला, "तुम भौतिकवादी लोग हो. मैं तुम्हारे कष्टों को दूर करने का उपाय बताता, किंतु तुम्हें आध्यात्मिक बातों में विश्वास नहीं है. इसी से अशांत भटकते रहते हो."

ज्योतिषी पर्यटक की भौतिकवादिता को कोस रहा था या उसे और रुपए न ऐंठने देने के लिए दुत्कार रहा था? अगर पर्यटक को पैसों से उतना ही लगाव होता हो वह पांच रुपए भी क्यों देता? इस स्थिति में ज्योतिषी ज्यादा लालची हुआ या वह पर्यटक?

पूजापाठ में विश्वास करने वाले अधिकांश लोग इसी मानसिकता में जी रहे हैं. गलत रास्ते पर चलने के कारण मिलने वाली असफलता इसी तरह की कुंठा को जन्म देती है. सफलता, संपन्नता और समृद्धि के लिए सही और व्यावहारिक उपाय क्या हो सकते हैं, इस दिशा में सोचा जाए और आवश्यक कदम उठाए जाएं तो वह दीवाली सच्चे अर्थों में दीवाली होगी, लक्ष्मी की पूजा करने से नहीं. परिश्रम करने और संपन्न होने के लिए निजी व पारिवारिक निर्धमण तथा उन निर्धमणों का क्रियान्वयन करने के लिए आनंद और आलोक का यह पर्व एक अच्छा अवसर बन सकता है.

किफायत से मनाएँ

लेख • संतोषकुमार 'निर्गुण'

त्योहार खुशियों के प्रतीक होते हैं, भारत को तो त्योहारों का देश ही कहा जाता है, जिन मुख्य त्योहारों को धूमधाम से मनाया जाता है, उन में दीवाली का अपना अलग महत्त्व है, लेकिन बिड़बना यह है कि लोग इस के धार्मिक पक्ष को इतना अधिक महत्त्व देते हैं कि उस के अन्य पक्ष दब जाते हैं। दीवाली मनाने का पारंपरिक ढंग कुछ ऐसा बन गया है कि कुछ लोग इस त्योहार के आने पर बड़ी हीन भावना का अनुभव करते हैं। जहाँ एक ओर कुछ लोग इसे बड़ी धूमधाम से मनाते हैं, वहीं कुछ लोग ऐसे हैं, जो अन्तर्मुखी ढंग से इसे मना कर अपना बोझ हलका कर लेते हैं।

यह सही है कि हर त्योहार पर लोगों का खर्च बढ़ जाता है, लेकिन अगर कहा जाए कि दीवाली सब से महंगा त्योहार है तो गलत ब

दीवाली का अर्थ है प्रकाश का प्रसारण। यह त्योहार हमें प्रेरित करता है कि हम अपने अन्तर में प्रकाश को जगाने का प्रयास करें। दीवाली केवल दीयों की प्रशंसा नहीं है, बल्कि यह हमें प्रेरित करता है कि हम अपने अन्तर में प्रकाश को जगाने का प्रयास करें। दीवाली केवल दीयों की प्रशंसा नहीं है, बल्कि यह हमें प्रेरित करता है कि हम अपने अन्तर में प्रकाश को जगाने का प्रयास करें।

होगा। इस अवसर पर बहुत सारे त्योहार मनाए जाते हैं, लेकिन हमें इस अवसर को सही ढंग से मना लेना चाहिए।

आजकल हमारे देश में दीवाली केवल दीयों की प्रशंसा के लिए मनाया जाता है। हमें इस अवसर को सही ढंग से मना लेना चाहिए। दीवाली केवल दीयों की प्रशंसा नहीं है, बल्कि यह हमें प्रेरित करता है कि हम अपने अन्तर में प्रकाश को जगाने का प्रयास करें। दीवाली केवल दीयों की प्रशंसा नहीं है, बल्कि यह हमें प्रेरित करता है कि हम अपने अन्तर में प्रकाश को जगाने का प्रयास करें।



कहत है। कि दीवाला नही, दीवाला आ गया है। महंगाई के कारण किसी चीज पर हाथ नहीं रखा जाता, ऐसे में क्या दीवाली मनाई जाए? उन के इस कथन के पीछे यह कसक छिपी होती है कि वे चमकदमक ढंग से दीवाली नहीं मना पाते, इस अवसर पर वे बिजली की सजावट करने व परिचितों को मिठाई वांटने में अपने को असमर्थ पाते हैं, लगभग हर नौकरीपेशा व्यक्ति कार्यालय से अग्रिम धन लेता है, कुछ लोगों को इस अवसर पर बोनस आदि भी मिल जाता है, वेतन का एक बड़ा हिस्सा या लगभग पूरा वेतन ही वे दीवाली में खर्च कर डालते हैं, महीनों से की गई बचत दीवाली में बराबर हो जाती है, बाद में इस के परिणाम अच्छे नहीं होते।

त्योहार बोझ न बने

जिस त्योहार को मनाने के लिए आप को अतिरिक्त धन का प्रबंध करना पड़े, तो वह त्योहार आप को खुशी नहीं दे पाएगा, क्योंकि आप के मन में यह बात आ जाती है कि यदि यह न आता तो ऐसा न करना पड़ता, पैसा किसी से भी लिया जाए निबटाना तो आप को ही पड़ेगा, इसलिए क्यों न हम त्योहार को इस ढंग से मनाएं कि वह बोझ न लगे।

जब भी माह के प्रथम सप्ताह में दीवाली पड़ती है, लोग अपने वेतन को बिना

साचसमझ त्योहार को मनाने में खत्म कर डालते हैं, बाद में आर्थिक तंगी का रोना रोते हैं, पिछले वर्ष मेरे पड़ोस में एक नाए किराएदार आ कर रहे थे, मध्यमवर्गीय होने के बावजूद उन्होंने जिस ढंग से दीवाली मनाई थी, उसे देख कर मुझे बड़ा ही आश्चर्य हुआ था, पूरे घर में उन्होंने बिजली की सजावट करवाई थी, उन के बच्चों ने सैकड़ों रुपए की आतिशवाजी छोड़ी थी, मेरे यहां भी उन्होंने मिठाई का एक बड़ा डब्बा भेजा था, मुझे व मेरी पत्नी को बड़ी ही हीन भावना का अनुभव हुआ कि हम लोग उन के लिए कुछ न कर सके, लेकिन आश्चर्य तब हुआ जब एक सप्ताह बाद पत्नी ने मुझे दत्तलाया कि पड़ोस वाली भाभीजी उस से तीन सौ रुपए मांग कर ले गई हैं, जाहिर है कि दीवाली की खुशी में उन्होंने आवश्यकता से अधिक खर्च कर दिया था, इसलिए यह हमेशा ध्यान रखें कि दीवाली में अनावश्यक खर्च न होने पाए।

दीवाली के साथ इतनी मान्यताएं व प्रथाएं जुड़ी हुई हैं कि लोग उन से अपने आप को अलग नहीं कर पाते, कुछ लोगों ने उसे 'धन की देवी' का त्योहार मान रखा है, इस देवी को प्रसन्न करने के लिए वे तरहतरह से उस की पूजा करते हैं, कुछ लोग तो दीवाली के एक सप्ताह पहले से ही अन्नष्टान करना शुरू कर देते हैं और दीवाली के बाद तक

दीवाली से दो दिन पहले धनतेरस के दिन मोलभाव करने वाली महिलाएं भी मुंहमांगे पैसे दे कर बरतन खरीद लाती हैं।



करत रहत है। पत्नी नहीं धन को देवा उन स प्रसन्न होती है या नहीं, लेकिन उन के सैकड़ों रूपए अवश्य उड़ जाते हैं, अनुष्ठान करने वाले तो अपनी दक्षिणा ले कर अलग हो जाते हैं।

बाजारों की रौनक

दीवाली आने के कई सप्ताह पहले ही बाजार में जो गहमागहमी व भीड़भाड़ दिखलाई देती है, वह दीवाली मनाने के लिए ही जोरशोर से खरीदारी करने की प्रतीक होती है। बरतनों की दुकानें, आतिशबाजी, पटाखे, मिठाई, मिट्टी के बरतन, गणेश व लक्ष्मी की मूर्तियां तथा खीलवताशे आदि से बाजार भर जाता है। इन्हें देख कर ऐसा लगता है जैसे इन के बिना दीवाली मनाई ही नहीं जा सकती।

दीवाली के दो दिन पहले 'धनतेरस' के दिन बरतनों की दुकानों पर जिस तरह की भीड़ दिखाई देती है, वह अपनेआप में एक आश्चर्य है। अन्य अवसरों पर महिलाएं जहां किसी चीज की खरीद पर मीनमेख निकालती हैं व मोलभाव करती हैं, वहीं दीवाली के अवसर पर वे बिना देखेसुने मंहमांगे दामों पर बरतनों की खरीद करती हैं, क्योंकि दुकानदार के पास इतना समय नहीं होता। बरतन विक्रेता इस दिन का बड़ी बेसब्री से इंतजार करते हैं, क्योंकि उन की यह एकदो दिन की कमाई महीनों की कमाई के बराबर होती है। पुराने बरतनों पर पालिश करवा कर बेचने का यही मौका होता है। महानगरों में कई दुकानें ऐसी भी हैं, जहां ग्राहकों को सामान लेने के लिए लाइन लगानी पड़ती है।

यही हाल मिठाई की दुकानों का होता है। लोग दोतीन दिन पहले से ही मिठाई खरीद कर रख लेते हैं, क्योंकि दीवाली के दिन उन की दुकान में तिल रखने की भी जगह नहीं होती। छोटे से छोटा हलवाई भी इस दिन मंहमांगे दाम पर मिठाई बेचता है। घटिया मिठाई खरीद कर वे अपना आर्थिक नुकसान तो करने ही हैं, साथ ही साथ अपने स्वास्थ्य से भी खिलवाड़ करते हैं। यदि समझदारी से काम मुक्ता

लिया जाए तो कोई नुकसान करने का खतरा नहीं ही घर पर मिठाई बनाई जा सकती है। किसी भी त्योहार पर बच्चों का खुशी प्रकट करने का अपना अलग ही ढंग होता है। दीवाली में हर बच्चा आतिशबाजी छोड़ना चाहता है। आप उस की उस जिद को बिना मोचेसमझे पूरा कर देते हैं, क्योंकि दीवाली रोजरोज नहीं आती है, लेकिन यदि आप उसे आतिशबाजी की जगह ऐसे स्वचालित खिलौने खरीद दें, जिन से आग की चिनगारी जैसी चमक निकलती हो तो बच्चे वही लेना ज्यादा पसंद करेंगे। आतिशबाजी तो जरा सी देर में राख हो जाती है, लेकिन ये खिलौने तो बहुत समय तक चल सकते हैं। इस के अलावा अन्य आकर्षक खिलौने भी खरीद कर बच्चों को दिए जा सकते हैं, क्योंकि कोई भी आदत विकल्प के बिना नहीं छुड़ाई जा सकती। इन चीजों को आप आतिशबाजी जैसी खतरनाक वस्तु का विकल्प बना सकते हैं, बच्चे फिर आतिशबाजी के लिए जिद नहीं करेंगे।

मूर्तियां खरीदने में होड़

आश्चर्य तब होता है जब गणेश व लक्ष्मी की मूर्तियों की खरीद में होड़ लगाई जाती है। हर व्यक्ति अपने स्तर के अनुसार अच्छी से अच्छी मूर्ति खरीदना चाहता है। साधारण व्यक्ति सस्ते 'भगवान' खरीदता है तो संपन्न व्यक्ति महंगे से महंगे 'भगवान' को खरीदना चाहता है, क्योंकि भगवान जितने अधिक महंगे होंगे, उतने ही अच्छे होंगे, यानी अगर बेचारे भगवान सस्ते अथवा गरीब हैं तो भक्त को क्या दे पाएंगे? दो रूपए से लेकर पांच सौ रूपए तक की गणेश व लक्ष्मी की मूर्तियां बाजारों में विक्रय हो रही देखी जा सकती हैं।

ये ऐसी कुप्रथाएं हैं, जो काफी समय से समाज में व्याप्त हैं व दिन ब दिन अपना प्रभाव बढ़ाती ही जा रही हैं। इन्हीं सब कारणों से दीवाली मनाने का ढंग बड़ा विकृत हो गया है। लोग यह भूल जाते हैं कि दीवाली शरद ऋतु के आने की सूचक है। यह त्योहार शरद ऋतु का पहला त्योहार भी है, इस के पश्चात्



दीवाली मनाइए, मगर सहजता से.

बरसात आदि से घरों की हालत खराब हो चुकी होती है. बरसात में कीड़ेमकोड़े व गंदगी हो जाना साधारण बात है. यदि दीवाली के बहाने पूरे घर की अच्छी तरह से सफाई व पुताई आदि हो जाए तो ज्यादा अच्छा रहता है, लेकिन लोग बिजली की सजावट, मिठाई व आतिशवाजी में ही इतना अधिक खर्च कर डालते हैं कि कभीकभी सफाई को वह टाल देते हैं. अगर वे घर की सफाई करवाते भी हैं तो उस में पूरी रुचि नहीं लेते. केवल रस्म सी अदा करते हैं. यदि वे खर्च करने में अपने को असमर्थ पाते हों तो उन्हें चाहिए कि घर के सब लोग मिल कर अपनेआप सफाई करें व जहां आवश्यकता हो वहां मजदूर लगा लें. दरवाजों, खिड़कियों व फरनीचर पर अपनेआप भी पालिश की जा सकती है.

पिछले कुछ वर्षों से मकानों में बिजली की सजावट करने का फैशन बढ़ता ही जा रहा है. बहुमंजिली इमारतों में उस सजावट को ले कर अच्छीखासी प्रतियोगिता हो जाती है.

सभी जानते हैं कि पिछले कई वर्षों से देश में बिजली का उत्पादन कम हो रहा है. सरकार बिजली के उपभोग में कटौती कर रही है, लेकिन फिर भी वे मनमाने ढंग से व्यर्थ में सजावट कर के फजूलखर्ची करते हैं.

तेल आदि के दीए जलाना भी आजकल बड़ा महंगा हो गया है. इसलिए अधिक संख्या में दीए न जला कर कम संख्या में छोटी मोमबत्तियां जलाना ज्यादा किफायती रहता है. कंदील में एक दीया जला कर रख देना चाहिए.

आज कुछ लोगों ने दीवाली को इतना अधिक आधुनिक व खरचीला बना दिया है कि लोग दीवाली के नाम से ही डरने लगे हैं. उन के लिए दीवाली और दीवाला एक ही बात हो गई है. इसलिए ऐसी परिस्थिति ही न उत्पन्न की जाए, जिस से त्योहार मनाने में आनंद ही न आए. यदि आप दिखावे से बचें तो साधारण ढंग से त्योहार मना कर अधिक खुशी प्राप्त की जा सकती है.

नए लेखकों के लिए कहानी प्रतियोगिता

नए अंकुर

मुक्ता ने अपने जन्म ही से नए लेखकों को प्रोत्साहित किया है। कभी लेखकों के नाम से प्रभावित हो कर उन की रचनाओं को तरजीह नहीं दी है। मुक्ता के लिए रचना ही महत्वपूर्ण होती है। लेखकों का नाम या उस की ख्याति नहीं।

नए लेखकों को प्रकाश में लाने के लिए मुक्ता द्वारा समयसमय पर नए अंकुर प्रतियोगिताएं भी आयोजित की जाती रही हैं, जिन में केवल उन्हीं लेखकों की रचनाएं स्वीकृत की जाती हैं जिन की कोई रचना पहले कहीं न छपी हो।

अब इस प्रतियोगिता को सामयिक की बजाए स्थायी रूप दे दिया गया है। यह प्रतियोगिता निरंतर चलती रहेगी। इन में उन सभी नए लेखकों की कहानियों का स्वागत है जिन की कोई रचना पहले कहीं प्रकाशित नहीं हुई है। इन रचनाओं के लिए कोई अंतिम तिथि नहीं है। जैसेजैसे ये प्राप्त होती जाएंगी इन पर विचार कर के निर्णय किया जाता रहेगा और यथासंभव शीघ्र प्रकाशित कर दिया जाएगा। प्रत्येक रचना पर 75 रुपए का पारिश्रमिक दिया जाएगा। वर्ष के अंत में सभी 'नए अंकुर' रचनाओं पर पुनः विचार किया जाएगा और सर्वश्रेष्ठ रचनाओं पर निम्नलिखित पुरस्कार दिए जाएंगे :

प्रथम पुरस्कार : 200 रुपए

द्वितीय पुरस्कार : 100 रुपए

तृतीय पुरस्कार : 50 रुपए

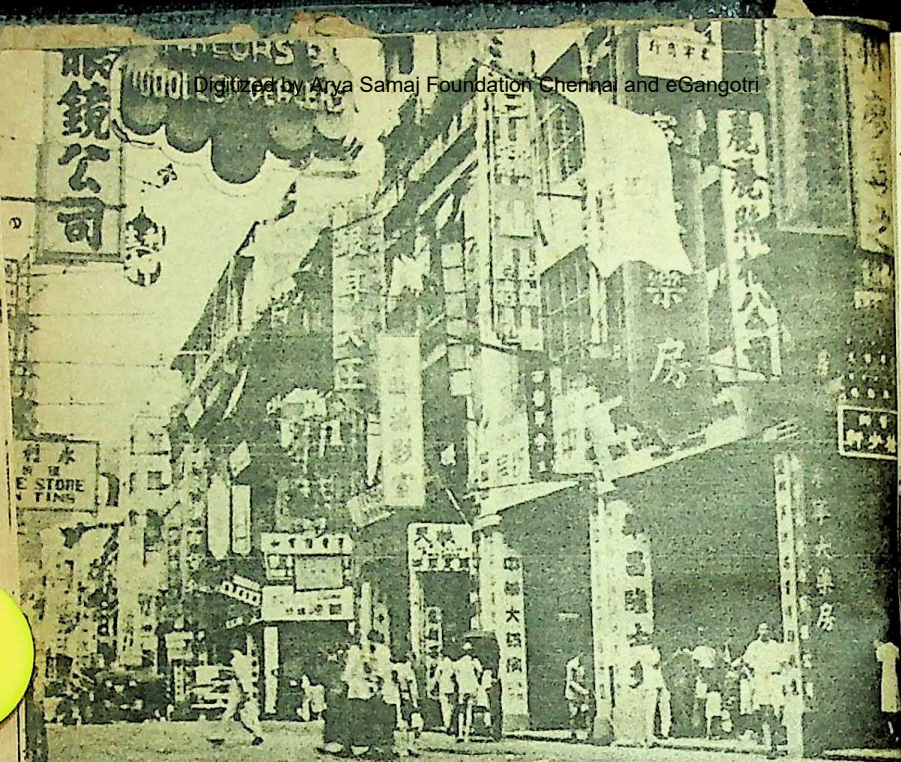
ये पुरस्कार पारिश्रमिक के अतिरिक्त होंगे।

इस विषय में संपादक का निर्णय अंतिम व मान्य होगा।

रचनाएं भेजने से पहले कृपया मुक्ता कार्यालय से लेखकों के नियम मंगवा कर पढ़ लीजिए ताकि आप की रचनाओं पर विचार करने में सुविधा रहे।

इस के लिए 50 पैसे का टिकट लगा, अपना पता लिखा लिफाफा भेजिए।

संपादक, मुक्ता, ई-3, राजीव गांधी मार्ग, नई दिल्ली-110055.



य और अनिश्चय के दौर में उलझा

हांगकांग

लेख • योगेशचंद्र शर्मा

गलैड और चीन के बीच इस समय हांगकांग विवाद का मुख्य मुद्दा हुआ है। इंगलैंड के समाचारपत्र 'डैन' तथा हांगकांग के पत्रों ने चीनी दंग का एक वक्तव्य प्रकाशित किया है, जिसमें यह धमकी दी गई है कि यदि हांगकांग के बारे में इंगलैंड से चीन के अनुकूल कोई औता नहीं हो पाया तो वह 1997 से पहले

ही हांगकांग पर अपना अधिकार कर लेगा। स्पष्ट ही इस धमकी का उद्देश्य यह है कि इस समय इंगलैंड और चीन के बीच हांगकांग के भविष्य के बारे में जो वार्ता चल रही है, उसमें इंगलैंड पर दबाव डाला जाए ताकि निर्णय चीन के अनुकूल हो सके।

चीन ने जनवरी 1841 में हांगकांग की बस्ती ब्रिटेन को सौंप दी थी। अगस्त 1842 में

इंग्लैंड और चीन की राजनीतिक चालों के बीच उलझा हुआ हांगकांग आज फिर बहस का मुद्दा बन गया है. अनिश्चय का यह दौर हांगकांग को कहां ले जाएगा?

नानकिंग में हुई संधि में इस हस्तांतरण की छूट कर दी गई थी. तब से हांगकांग पर अंगरेजों का शासन चल रहा है, सिवा 25 दिसंबर, 1941 से लेकर 30 अगस्त, 1945 के उस समय को छोड़ कर जब दूसरे विश्व युद्ध के दौरान इस पर जापानियों का अधिकार था.

हांगकांग टापू का क्षेत्रफल केवल 29

हांगकांग के बाजार चाहे भव्य दुकानों वाले हों या फुटपाथ वाले, अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं.





हांगकांग के निवासी हर उत्सव को उल्लास के साथ मनाते हैं।

वर्ग मील है। यह एक बहुत ही सुंदर और प्राकृतिक बंदरगाह द्वारा चीन की मुख्य भूमि से बिलकुल अलग है। 1860 के पेइचिंग (पीकिंग) समझौते के अंतर्गत काउलून प्रायद्वीप (3½ वर्ग मील) के दूसरी ओर का इलाका और स्टोनकटर्स द्वीप (¼ वर्ग मील) भी अंगरेजों को सौंप दिया गया था। 9 जून, 1898 को चीन के साथ एक और समझौता हुआ, जिस के तहत चीन ने मुख्य भूमि के निकट का 365½ वर्ग मील का इलाका और उस क्षेत्र के अनेक द्वीप 99 साल के पट्टे पर ब्रिटेन को दे दिए थे।

404 वर्ग मील क्षेत्रफल (इस में 1,039 हेक्टेयर का वह क्षेत्र भी शामिल है, जिसे 1945 के बाद समुद्र को सुखा कर विकसित किया गया है) तथा 52 लाख की आबादी का यह क्षेत्र ऊपरी तौर से बहुत छोटा दिखाई देता है, किंतु आर्थिक दृष्टि से यह अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान है। आर्थिक और व्यावसायिक दृष्टि से हांगकांग का स्थान

विश्व में न्यूयार्क तथा लंदन के बाद तीसरे स्थान पर आता है। रहस्यमय की दृष्टि से हांगकांग एशिया में जापान के बाद दूसरे स्थान पर है। निर्माता तथा निर्यातक देश के रूप में हांगकांग कम्युनिस्ट चीन से कहीं बढ़ कर है। यहां के उद्योगधंधे और बाजार अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। यहां प्रतिदिन लगभग ढाई लाख पर्यटक विदेशों से आते हैं, जिन का मुख्य उद्देश्य क्रयविक्रय होता है। केवल भ्रमण में रुचि रखने वाले पर्यटक भी कम नहीं होते। यहां मोटरगाड़ियां प्रतिदिन औसतन 530 किलोमीटर चलती हैं, जो यहां के व्यस्त जीवन का प्रमाण है।

अंतरराष्ट्रीय व्यापार जगत में हांगकांग का स्थान अप्रतिम है, क्योंकि यहां मुक्त व्यापार चलता है। व्यापारियों को अनेक प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध हैं। आयकर की दरें बहुत कम हैं, कंपनियों के लिए अधिकतम 16½ प्रतिशत तथा व्यक्तियों के लिए अधिकतम 15 प्रतिशत। हांगकांग में न तो पर्याप्त कृषि भूमि है, न उल्लेखनीय खनिज भंडार और न ही पर्याप्त मात्रा में शुद्ध पेय जल। इन कमियों के बावजूद हांगकांग ने केवल मुक्त व्यापार नीति के आधार पर अपना विशिष्ट स्थान बनाया हुआ है। जून 1976 में इस छोटे से प्रदेश में 33,304 फैक्टरियां थीं, जिन में 7,48,846 आदमी काम कर रहे थे।

राजनीतिक इतिहास

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, हांगकांग पर पिछले 142 वर्षों से इंग्लैंड का नियंत्रण है। वैसे इस का राजनीतिक इतिहास अधिक पुराना नहीं है। प्रारंभ में यह कानूनी दृष्टि से चीन के क्षेत्र में सम्मिलित अवश्य था, किंतु यहां उस की कोई विशेष प्रशासनिक व्यवस्था नहीं थी। छोटेछोटे चट्टानी द्वीपों से बने इस क्षेत्र में प्रायः अफीम के तस्कर निर्बाध रूप से आते और अपने सामान का आपस में लेनदेन करते। स्थायी रूप से उन दिनों यहां केवल कुछ मछियारे रहा करते थे।



आज का हांगकांग : तकनीकी काम करती हांगकांग की एक युवती.

साथसाथ हांगकांग का महत्त्व बढ़ने लगा और 1840 के अफीम युद्ध के बाद यहां पर तस्करों की अवैध गतिविधियां काफी अधिक बढ़ गईं.

चीन का तत्कालीन सम्राट अत्यंत कमजोर था. उस के लिए इन गतिविधियों को रोकना संभव नहीं था. ऐसी परिस्थिति में इंग्लैंड ने मौके का फायदा उठाया है और उस ने चीन से कई संधियां कर के हांगकांग द्वीप तथा कुछ और क्षेत्र प्राप्त कर लिया. ब्रिटेन को हांगकांग द्वीप के अलावा 99 वर्ष के पट्टे पर जो अतिरिक्त प्रदेश मिला, वह वर्तमान हांगकांग का 90 प्रतिशत भाग है. संधि के अनुसार इस 90 प्रतिशत भाग पर इंग्लैंड का केवल 30 जून, 1997 तक नियंत्रण रहेगा. जिस के बाद कानूनी रूप में उस पर चीन का नियंत्रण हो जाएगा. शेष 10 प्रतिशत पर इंग्लैंड का स्थायी नियंत्रण है.

किंतु समस्या यह है कि हांगकांग का जो भी विकास हुआ है, वह इस 90 प्रतिशत भाग

पर ही हुआ है. शेष 10 प्रतिशत भाग पर न तो कोई विशेष विकास हुआ है और न उस की भौगोलिक परिस्थिति इस प्रकार की है कि वहां कोई विशेष विकास कार्य हो सके. 90 प्रतिशत भाग के चले जाने पर शेष 10 प्रतिशत का कोई आर्थिक महत्त्व नहीं रहेगा. हांगकांग की वर्तमान स्थिति को देखते हुए यह नहीं लगता कि ब्रिटेन इसे आसानी से चीन को लौटा देगा, पर यदि उस ने ऐसा निश्चय किया तो चीन के हाथों से उस को सुरक्षित रखना भी कठिन हो जाएगा. उस स्थिति में संभावना यही है कि इंग्लैंड इस का विकास सैनिक अड्डे के रूप में करे. यह संभावना चीन के लिए चिंतनीय है.

सामान्य जनजीवन की दृष्टि से 1 जुलाई, 1997 का वह दिन अभी बहुत दूर है, जब कानूनी तौर पर हांगकांग पर चीनी प्रभुत्व कायम होगा, किंतु एक ऐसे प्रदेश के जीवन में, जहां उद्योगपतियों और व्यापारियों की अरबों खरबों की धनराशि लगी हो तथा

प्रतिदिन धन लगाया जाता हो 13-14 वर्षों की यह अवधि बहुत छोटी है। इसी लिए हांगकांग के व्यापार जगत में इस समय बड़ी बेचैनी, भय और अनिश्चय का वातावरण बना हुआ है। चिंता इस बात को लेकर नहीं है कि 1 जुलाई, 1997 से हांगकांग चीन की प्रभुता में आ जाएगा, बल्कि चिंता का मुख्य मुद्दा यह है कि चीन की प्रभुता में आने के उपरांत हांगकांग की प्रशासनिक व्यवस्था किस प्रकार की रहेगी। चीन की कम्युनिस्ट व्यवस्था के साथ हांगकांग की घोर पूंजीवादी व्यवस्था का सामंजस्य कैसे हो पाएगा? यदि चीन ने हांगकांग को भी अपने कम्युनिस्ट रंग में रंग लिया तो जिन व्यापारियों ने हांगकांग में बड़ी मात्रा में धन लगाया हुआ है, उन का क्या होगा?

व्यापार जगत में हलचल

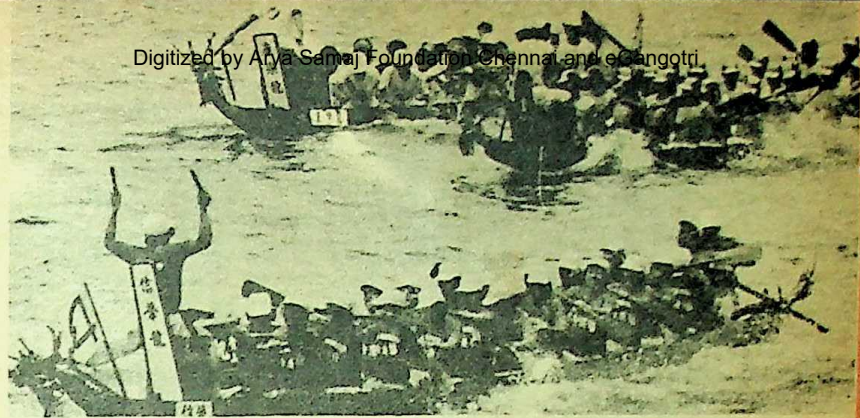
अनिश्चय की इस स्थिति के कारण ही हांगकांग के व्यापार जगत में इस समय बड़ी हलचल मची हुई है। हांगकांग की मुद्रा का मूल्य निरंतर गिर रहा है। शेयर बाजार में भी अत्यधिक गिरावट है। हांगकांग के बैंक 1996 से आगे के लिए धन उधार नहीं दे रहे हैं। विदेशी व्यापारियों ने इस क्षेत्र में रुचि लेना धीरे-धीरे कम कर दिया है। इस से हांगकांग की विशिष्ट व्यापारिक स्थिति पर बड़ा बुरा प्रभाव पड़ रहा है।

इंगलैंड इस बात को स्वीकार करता है कि 1997 में हांगकांग पर चीन की प्रभुता वैध रूप में स्थापित हो जाएगी, किंतु ऐसा करने से पूर्व वह इस बात के लिए अपने को आश्वस्त करना चाहता है कि हांगकांग की वर्तमान पूंजीवादी व्यवस्था बनी रहे, ताकि वहां पर लगे उस के अपने व्यापारिक हित सुरक्षित रहें। इसी लिए गत वर्ष सितंबर के अंतिम सप्ताह में इस विषय पर इंगलैंड ने उस समय चीन से बातचीत शुरू की, जब वहां की प्रधान मंत्री श्रीमती मार्गरेट थैचर ने अपनी तीन दिवसीय हांगकांग यात्रा के दौरान चीनी नेताओं से बातचीत की।

वार्ता का क्रम फिर जारी हुआ। यह सारी वार्ताएँ गुप्त रखी गई हैं। इसीलिए इस के निष्कर्षों के बारे में कुछ कहना कठिन है। हां, जो भी कुछ बातें बाहर आ पाती हैं, उन से ऐसा प्रतीत नहीं होता कि वार्ता का क्रम संतोषजनक ढंग से चल रहा है। मुख्य विवाद दो बातों पर है। एक तो हांगकांग के उस 10 प्रतिशत भाग (हांगकांग द्वीप तथा काउलून प्रायद्वीप) के बारे में जो पहली संधियों के अंतर्गत स्थायी रूप से इंगलैंड के पास रहेगा, चीन अपनी ही पुरानी सरकारों द्वारा की गई संधियों को मान्यता प्रदान नहीं करता और इसी लिए वह हांगकांग के संपूर्ण क्षेत्र को प्राप्त करना चाहता है, किंतु चीन का इस बात के विरुद्ध तर्क यह है कि पुरानी संधियों को मान्यता न दी जाए तो हांगकांग के 90 प्रतिशत भाग (1898 की संधि) को भी चीन को लौटाने की आवश्यकता कहाँ रह जाती है? मगर इंगलैंड पुरानी संधियों को मान्यता देता है, इसलिए केवल 10 प्रतिशत भाग पर अपना अधिकार जताता है।

दूसरा विवाद हांगकांग की भावी प्रशासनिक व्यवस्था पर है। गत वर्ष चीन ने अपनी जन कांग्रेस के छठे अधिवेशन में अपने संविधान में एक संशोधन कर के हांगकांग के लिए 'विशेष प्रशासनिक क्षेत्र' शब्दों का प्रयोग किया है, किंतु 'विशेष प्रशासनिक क्षेत्र' की व्याख्या कहीं नहीं की गई। इसलिए भ्रम बना हुआ है।

इंगलैंड से चल रही वार्ताओं में चीन हांगकांग की जनता या उस के प्रतिनिधियों से औपचारिक बातचीत के लिए तैयार नहीं। हांगकांग के गवर्नर सर एडवर्ड यूडे को भी चीन बातचीत में केवल अंगरेज प्रतिनिधि के रूप में स्वीकार करता है, हांगकांग के प्रतिनिधि के रूप में नहीं। चीनी अधिकारियों की हांगकांग के जन प्रतिनिधियों से अनौपचारिक बातें अवश्य हुई हैं। इन बातों में चीनी अधिकारियों ने इन बातों को अस्वीकार कर दिया कि हांगकांग पर चीन तथा हांगकांग दोनों के ध्वज लहराएँ अथवा



हांगकांग में प्रतिवर्ष मईजून में आयोजित की जाने वाली नौका दौड़ वहां के निवासियों के मनोरंजन का एक खास साधन है।

हांगकांग की पृथक मुद्रा सुरक्षित रहे। गोलमोल रूप में उन्होंने यह अवश्य स्वीकार किया कि हांगकांग पर शासन करने के लिए पेइचिंग से किसी भी अधिकारी को नहीं भेजा जाएगा।

आश्वासनों पर विश्वास नहीं

हांगकांग के मुक्त व्यापार की नीति को चालू रखने की बात जब उठी तो चीनी अधिकारियों का उत्तर था कि वे इस विषय पर विचार कर रहे हैं, किंतु हांगकांग के लोग इन आश्वासनों पर विश्वास नहीं करते। उन का विचार है कि कम्यूनिस्ट व्यवस्था वाले देश के अधीन पूंजीवादी व्यवस्था वाला क्षेत्र रह ही नहीं सकता। इसी लिए कभीकभी हांगकांग के पत्रकारों से चीनी अधिकारियों की काफी झड़प भी हो जाती है। अभी जुलाई में ही इसी प्रकार की एक झड़प में चीन के उपविदेश मंत्री याओ गुआंग को उग्र पत्रकारों से बचने के लिए भाग कर सीढ़ियों में शरण लेनी पड़ी थी।

कानूनी दृष्टि से चीन के लिए यह कतई आवश्यक नहीं है कि वह हांगकांग की भावी प्रशासनिक व्यवस्था के बारे में बातचीत करे या कोई नया समझौता करे, किंतु वस्तुस्थिति

यह है कि हांगकांग में जितने हित इंग्लैंड के हैं, इस से कहीं अधिक स्वयं चीन के हैं। हांगकांग की जनसंख्या का 98 प्रतिशत भाग चीनी मूल का है। पूंजीवादी व्यवस्था में पलने और उस से जुड़े रहने के कारण ये चीनी भी अब कम्यूनिस्ट चीन के शासन को नहीं, इंग्लैंड के शासन को पसंद करते हैं।

हांगकांग में चीन के लगभग 12 बैंक हैं। हांगकांग से चीन आयात नाममात्र का करता है और निर्यात बहुत अधिक। हांगकांग से इस समय चीन को लगभग 70 करोड़ डालर की विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है। इस की तुलना में इंग्लैंड को यहां केवल 10 करोड़ डालर की ही विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है। यदि हांगकांग के वर्तमान ढांचे को पूरी तरह बदल कर कम्यूनिस्ट ढांचे में ढाल दिया गया तो स्पष्टतः इस से चीन को ही अधिक हानि होगी। इसलिए प्रतीत यही होता है कि चीन फिलहाल एक ऐसी व्यवस्था की खोज में है, जो चीन की कम्यूनिस्ट व्यवस्था और हांगकांग की वर्तमान पूंजीवादी व्यवस्था के बीच में तालमेल बैठा सके।

फिलहाल वहां अनिश्चय की स्थिति है, जिस से हांगकांग के आर्थिक ढांचे पर बुरा असर पड़ रहा है।



लेख • प्रमिला कौशल

श्यामजी पिछले कई बरसों से एक सरकारी बैंक में बड़े बाबू के पद पर नियुक्त हैं। पांच रोज से छुट्टी पर हैं, घर में बीमार पड़े हैं। बुखार है कि उतरने का नाम ही नहीं लेता।

उन्हें छुट्टी की भी चिंता सता रही है कि कुल चार छुट्टियां बाकी हैं, मन ही मन कामना करते हैं इन्हीं चार दिनों में वह दफ्तर जाने के काबिल हो जाएं, नहीं तो बड़ी मुशकिल हो जाएगी।

बैंक में साथ काम करने वाले कर्मचारी वारीवारी से उन के घर आ कर दो घड़ी बैठ कर हालचाल पूछ जाते थे। एक दिन शाम को उन की पत्नी ने अपने कमरे में लेटे हुए श्याम जी से आ कर कहा, "कोई मनोहर लालजी आप से मिलने आए हैं।"

"क्या कहा?" श्यामजी की आवाज में हैरानी झलक रही थी।

"हां, मनोहरलालजी आप से मिलना चाहते हैं।"

तुम उन्हे बढक न बढाओ, न जमा आता है."

"अरे... अरे... तुम क्यों उठते हो, मैं उन्हें यहीं लिवा लाती हूँ."

मनोहरलालजी ने कमरे में प्रवेश किया तो श्यामजी हाथ जोड़ कर उठने का प्रयत्न करने लगे. उन्होंने उन के कंधे पर हाथ रख कर उन्हें लेते रहने का इशारा करते हुए कहा, "उठ क्यों रहे हो, मेरे भाई, यह घर है. दफ्तर नहीं, चुपचाप लेते रहो."

श्यामजी प्रसन्नचित हो कर तकिए को पीठ के पीछे टिका कर चारपाई पर बैठ गए और मनोहरलालजी पास ही रखी कुरसी पर विराजमान हो गए.

"सुनाओ, तबीयत कैसी है?" मनोहरलालजी ने पूछा.

"साहब, वैसे तो ठीक हूँ, पर बुखार नहीं उतर रहा है."

"किस डाक्टर को दिखाया है?"

"हमारे ही महल्ले के एक डाक्टर साहब हैं..."

"क्या कहते हैं, वह?"

"खून और पेशाब टेस्ट के लिए गए हुए हैं, रिपोर्ट आने पर पता चलेगा," फिर कुछ

आप का आत्मीय व्यवहार सहयोगी के नया उत्साह देगा.



दीवाली पर अपने अधीनस्थ कर्मचारियों के घर जा कर, उन के निकट हो कर क्या आप नई परंपरा शुरू नहीं कर सकते?

रुक कर वह विनय भरे स्वर में बोले, "साहब, आप ने बड़ी तकलीफ की, मामूली सा बुखार ही तो है."

"मेरे भाई, इस में तकलीफ की क्या बात है? तुम सब को हर रोज देखने की आदत जो पड़ गई है, कई रोज से तुम दिखे नहीं थे, बुरा लग रहा था, सो देखने चला आया, किसी बात की जरूरत हो तो वैजिशक कहो."

"नहीं साहब, आप की मेहरबानी है, बस, जरा छुट्टी की चिंता सता रही थी, थोड़ी ही बाकी बची हैं?"

"छुट्टियों की तुम चिंता मत करो. पहले अपनी सेहत का खयाल रखो. और हां, मेरा एक दोस्त अच्छा अनुभवी डाक्टर है, जरूरत पड़े तो उसे दिखा सकते हो, मैं उन से बात कर लूंगा. यह है उस का पता," अपनी जेब में से उस का कार्ड निकाल कर श्यामजी को देते



हुए मनोहरलालजी खड़े हो गए, "मैं चलता हूँ।"

Digitized by Arya Samaj Foundation, New Delhi

श्यामजी भी एकदम चारपाई पर से उठ खड़े हुए तो मनोहरलालजी ने उन्हें मीठी झिड़की देते हुए कहा, "फिर वही तकल्लुफ़. मैं यहां तुम्हारा अधिकारी नहीं, बड़ा भाई हूँ." फिर श्यामजी की पत्नी को संबोधित कर के बोले, "बहनजी, श्यामजी को जल्दी से ठीक कर के दफ़्तर भेजिए, इन के बिना हमारे बैंक का काम चलना जरा मुश्किल सा हो गया है."

विनम्रता से हाथ जोड़ कर वह तो चले गए, पर श्यामजी की तो बांछें ही खिल गईं, खुशी से उन की छाती फूल गई.

अपने अधिकारी का घर आ कर हालचाल पूछना, मदद करने को प्रस्तुत रहना और इस तरह से प्रशंसा करना उन्हें वीमारी में दवा से अधिक असर कर गया था.

यह एक ऐसी सुखद अनुभूति थी, जो उन्हें जल्दी से जल्दी स्वस्थ हो कर, जी लगा कर काम करने को प्रेरित कर रही थी.

मनोहरलालजी जैसे अधिकारी कम ही होते हैं. अपने अधिकारी की जरा सी तबीयत खराब होने पर हम भागेभागे उन के हालचाल पूछने जाते हैं. उन की जरूरतों को पूरा करने को उत्सुक रहते हैं, खामखा चिंता प्रकट करते हैं, आखिर क्यों?

इस के पीछे हमारा उद्देश्य होता है. अपने अधिकारी को खुश करना. पर शायद अधिकारी को आपने इन तारे कार्यों के पीछे स्वार्थ का पता होता है, इसलिए वह उतना प्रभावित नहीं हो पाता, परंतु यहां पर मनोहरलालजी का कोई स्वार्थ नहीं था, इसी लिए श्यामजी इतने प्रसन्न और प्रभावित हुए.

देखा जाए तो मनोहरलालजी का कुछ नहीं गया, पर उन्होंने इस तरह श्यामजी का दिल जीत लिया. हमेशा के लिए एक अधीनस्थ कर्मचारी की बेहतर सेवाएं उन के लिए सुरक्षित हो गईं. क्या इस तरह से उन्होंने अपने दफ़्तर की कार्य क्षमता बढ़ाने में मदद नहीं की?

अपने कर्मचारियों के प्रति सहानुभूति

दर्शा कर, सहायता कर के, आप अपनी जाना की कार्य क्षमता को दोगुना कर सकते हैं. यदि अधिकारी को खुश करने में आप का निजी स्वार्थ है तो अधीनस्थ कर्मचारियों को खुश रखने, उन का विश्वास जीतने में भी आप का अपना ही भला है, क्योंकि काम तो आप को उन्हीं से निकलवाना होगा.

दफ़्तर में आप उन से सख्ती से पेश आ सकते हैं, पर दफ़्तर से बाहर उन के करीब आ कर, उन का साहब बढ़ा कर आप अपने दफ़्तर का माहौल बेहतर बना सकते हैं. कहीं आप के कर्मचारियों को यह तो नहीं लगता कि उन का अधिकारी पत्थर दिल है, उन के लिए कौन अपनी जान हलाक करे... और वह मुस्त पर मुस्त होता चला जाता है.

आत्मीयता बरतें

इस दीवाली पर जहां आप अपने अधिकारी को मुबारकवाद देने जाएं, वहां अपने अधीन काम करने वाले किसी कर्मचारी के घर भी जरूर जाएं, फिर देखिए, वह कैसा खुश हो कर आप का स्वागत करते हैं और दफ़्तर में किस फ़र्ती से काम करता है.

दफ़्तर में सभी कर्मचारी एक दूसरे के करीब हों, दुखसुख के साथी हों तो काम करना इतना ऊबाऊ नहीं लगता. प्रशंसा के दो शब्द शक्तिवर्धक दवा का काम करते हैं.

यदि कर्मचारी को यह पता हो कि अधिकारी को उस के दुख से कोई सहानुभूति नहीं है तो वह बिना बताए अंदर ही अंदर घुलता रहता है, जिस से जाहिर है कि उस के काम में ढीलापन आ जाता है और आप अनजाने में उसे झिड़क कर उस के दुख को और बढ़ा देने हैं.

तीजत्योहार पर एकदूसरे के करीब हो कर दुखसुख बाँटिए. एक अच्छे अधिकारी बन कर दफ़्तर के माहौल को बेहतर बनाइए. चालिए इस दीवाली से ही अपना रवैया बदलिए और कर्मचारियों के घर खुद जा कर उन में आश्चर्यमिश्रित प्रसन्नता बाँटिए. सब मानिए दीवाली की मिठाई से बढ़ कर मीठी

दीवाली को आइंवरो से बचाएं

मगर कैसे?

'अब पर्वत्योहार दिखावा भर रह गए हैं, "कौन इन फजूल के कामों में कत बरबाद करे," "मुझे यह हुड़दंग कतई संद नहीं", "और कई जरूरी काम करने को डे हैं", इस प्रकार की बातें अब त्योहारों के वसर पर अकसर सुनने को मिलने लगी हैं। और बहुधा इन बातों में सचाई भी होती

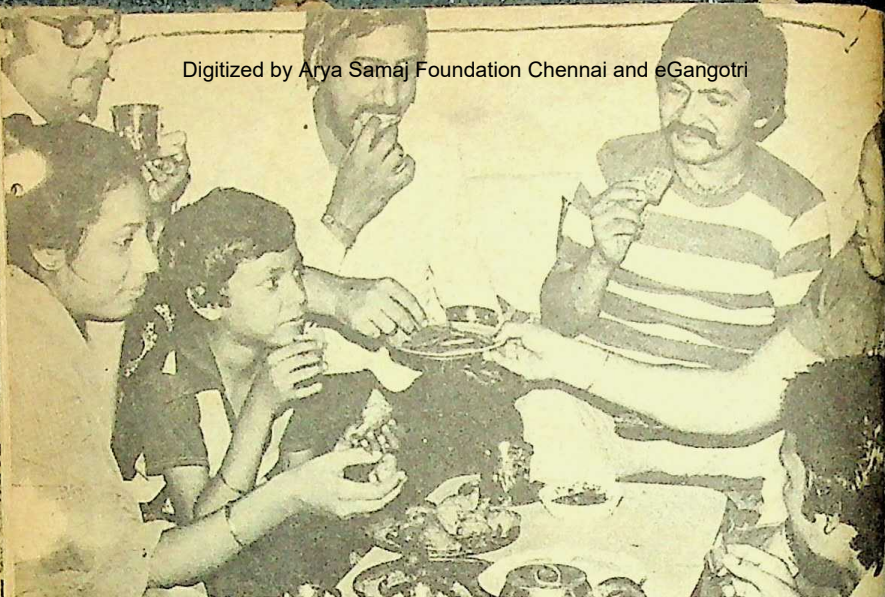
त्योहारों के प्रति ऐसा दृष्टिकोण तब खने में आता है, जब अधिकांश लोग, दीवाली को सिर्फ धूमधड़ाका मान लेते हैं या दीवाली को सिर्फ हुड़दंग। त्योहारों से समझबूझ खने वाला व्यक्ति प्रायः तभी चिढ़ता है, जब

वह देखता है कि समाज के कई लोग त्योहार की आड़ में अपने स्वार्थों को पूरा कर रहे हैं।

लेकिन फिर भी परिवार व समाज से बंधा हुआ सभ्य नागरिक इस उमंगपूर्ण त्योहार की रक्षा के लिए सदैव चिंतित रहता है और हर साल कोशिश करता है कि इस त्योहार को मनाए भी और इसे संवारे भी।

यह पर्व हमारे देश की अधिकांश जनता के सुखदुख से संबंध रखता है। मेहनतकश कृषक अपने अनाज के बल पर रुपया कमा कर जहां कुछ सुविधाएं जुटाने की स्थिति में होता है, वहीं उसे खेतों से कुछ फुरसत भी मिलती है।





परिजनों के आगमन के मौके पर भी सावधानी पूर्वक निर्णय लें.

यह फुरसत ही दीवाली के आयोजन का कारण बनी है. संघर्ष के बाद जैसेतैसे खुशियां मनाना मनुष्य की आदिम इच्छा है. अतः भारत का भूखानंगा खेतिहर तक साल में एक बार कर्ज से छुटकारा पा कर उल्लास का माहौल बनाने के लिए दीवाली पर तरहतरह से मनोरंजन करता है.

दीवाली से जुड़े हुए चकाचौंध, आडंबर और कानों को फाड़ देने वाले शोरशराबे को हम अपनी चिढ़ भर से दूर नहीं कर सकते, क्योंकि दीवाली से सब की उमंग, सब की समृद्धि का संबंध है—चाहे वह गृहिणी हो, बालक हो, वृद्ध हो या गृहस्वामी हो. सब की यही चाह होती है कि एकरसता खत्म हो, ऊब से छुट्टी मिले, मिलजुल कर उल्लास मनाएं.

प्रकाश के इस पर्व की अपनी कुछ विशेषताएं हैं. परिजनों व प्रियजनों से मिलने का अवसर तो यह त्योहार पैदा करता ही है, इस मशीनी जमाने में उन लोगों को अपनी से मिलने का बहाना देता है, जो एक बार घर से जाते हैं तो कई कारणों से वेगाने से हो जाते हैं.

भावपूर्ण संबंधों एवं दायित्वपूर्ण पारस्परिक संबंधों की रक्षा करने में भी दीवाली का बड़ा हाथ है.

इसी के साथ इस पर्व का पुराना संबंध पड़ोस और पड़ोसी से भी है. पारस्परिक सहयोग सद्भाव इस का आधार है, जिस पर सामाजिकता फलतीफूलती है.

निस्संदेह दीवाली आज खर्चीले त्योहार बन गया है. यह भी सही है. आडंबर प्रिय लोगों ने इस का स्वरूप बिगाड़ दिया है, पर इसी के साथ यह भी सही है. सहयोग एवं सद्भाव से इस पर्व को मनाने वाले लोगों ने दीवाली को सच्चे अर्थों में प्रकाश प्रदान कर रखा है. यही लोग इस पर्व को जगमग की भौंडी चकाचौंध से बचाते रहे हैं. आप भी इस में अपना सहयोग दे सकते हैं.

आप भी इस में सहयोग दे सकते हैं. सही आयोजन, सही खर्च, सही सजावट, सही उमंग. यह सब आप के हाथ में है. आप इसे तो अन्य लोग भी आप से प्रेरणा लेंगे.

विश्व सुलभ साहित्य

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैवाहिक जीवन में प्रवेश कर रहे
युवकयुवतियों के लिए अनुपम पुस्तकें

युवकों से : रु. 3.50

युवकों को योग्य पति, सफल गृहपति और
जिम्मेदार पिता बनने में सहायक पुस्तक.

पति से : रु. 4.00

विवाहित जीवन में पति का पत्नी को समझने
व अपना बनाए रखने में सहायक उपयोगी पुस्तक.

पत्नी से : रु. 5.00

परिवार को सुखमय बनाने के लिए विभिन्न
समस्याओं का विवेचन हर पत्नी के लिए अनिवार्य.

बच्चों की समस्याएं : रु. 3.00

बच्चों को शारीरिक व मानसिक रूप से
स्वस्थ कैसे बनाएं?

युवतियों से : रु. 5.00

एक युवती समझदार बहु, प्रिय पत्नी, योग्य
गृहिणी और आदर्श मां बन कर अपनी
जिम्मेदारियों को सही ढंग से कैसे निभाए?

कामकला भाग I व II . प्रत्येक रु. 6.00

यौन जीवन सुखमय बनाने में सहायक प्रस्तुत
पुस्तक में सेक्स के हर पहलू का वैज्ञानिक विश्लेषण.

स्त्री और पुरुष : रु. 8.00

प्राचीन भारतीय काम विज्ञान से ले कर
आधुनिक पश्चिमी खोज के ज्ञान का
समावेश इस पुस्तक में मिलेगा.

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से ले या आदेश भेजें :

दिल्ली बुक कंपनी

एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.

मूल्य अग्रिम भेजने पर पूरा सैट 30 रूपए में डाक खर्च 50 पैसे वी.पी.पी. द्वारा
मन्त्रालय, भारत सरकार, कानून, विधि, और न्याय विभाग, नई दिल्ली

मूसकान की फुलझड़ियाँ

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रात का तारों जड़
आंचल संभाले
मुँडेर पर झुकी हो तुम,
होंठों पर मूसकान की
फुलझड़ियाँ सजाए.

नयनों में स्नेह ढाल कर
बाल रही हो दीए,
दीप से दीप की
सज जाती हैं पातें
झिलमिला उठती है स्नेहवाती
जैसे पाती प्यार की हो
खुशानुमा मौसम के नाम.

जप का
हर कोना चमका
नई उज्जास लिए,
हर कोना सहका
फूलों की सी छुअन लिए

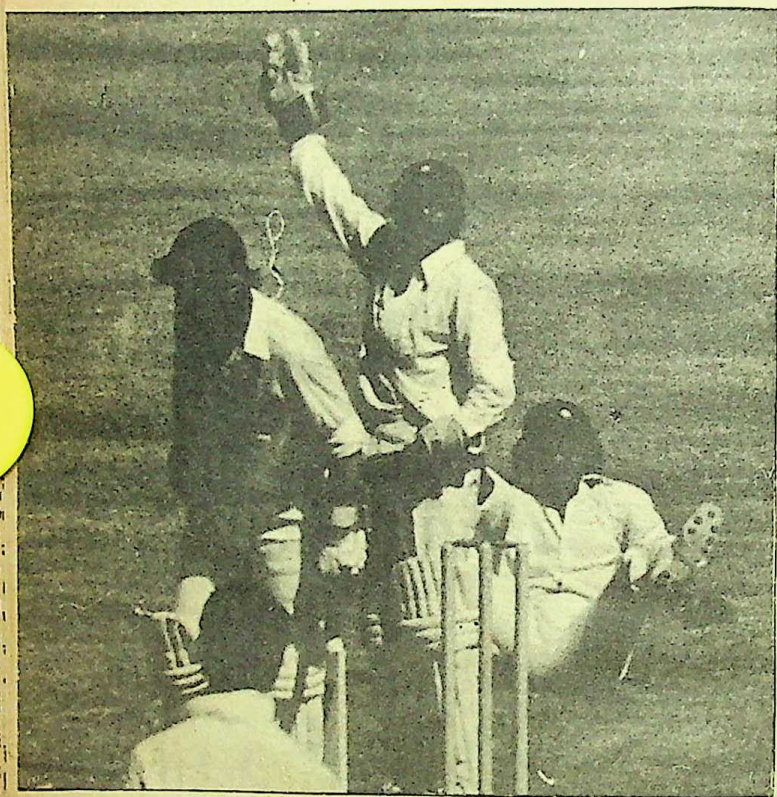
सुन कर
दीए से दीए मीठी बातें
देख कर उजियारी रातें,
होंठों से
मूसकरा देती हो तुम.

हंस पड़ते हैं आंचल में तुम्हारे
झिलमिलाते सितारे,
हंस पड़ता है बेंदी का
शरसाया चांद
हंस देते हैं रुनझुनरुनझुन स्वर
सोनई कंगन
दूर, बहुत दूर
आच रहा है अंधकार
आज प्रियोंके
चिल में बाहरे
कलम बना है प्यार!

—प्रकाश म



क्रिकेट के माहौल में एक अति महत्वपूर्ण प्रश्न



“हमारा राष्ट्रीय खेल
क्रिकेट या हाकी”

भूभास्ती

हर पक्ष नई घटनाएं नये समाचार

नवंबर (प्रथम) अंक

इस में पढ़िए विशेष सामग्री:

- क्रिकेट बनाम हाकी: अतीत से वर्तमान तक.
- क्रिकेट व हाकी के दिग्गजों से बातचीत.
- क्रिकेट व हाकी के खिलाड़ी एकदूसरे के बारे में क्या सोचते हैं.
- क्या पाकिस्तान व वेस्ट इंडीज के मुकाबले हम जीतते रहेंगे.
- अब तक के टेस्टों का विश्लेषण.
- क्रिकेट सभ्य लोगों का खेल नहीं है?
- कीर्ति आजाद की कहानी उन्हीं की जबानी.
- भारतीय हाकी के गिरते स्तर पर इंद्रमोहन महाजन से बेबाक बातचीत.
- क्रिकेट कमेंट्री: मुसीबत की जड़ है.
- अंतरराष्ट्रीय हाकी प्रशिक्षक ज्ञानसिंह बता रहे हैं तब और अब के हाकी खेल का फर्क.

इस के अतिरिक्त कुछ और भी बातें हाकी और क्रिकेट पर.
रंगीन चित्र ताजा सामग्री. और साथ में देश की राजनीतिक
व सामयिक घटनाओं की सहीसही रिपोर्ट.

सपोरो शहर का जापान के महानगरों में छठा स्थान है, यह शहर गुरु से ही अपनी शीतल आबोहवा व मनोहारी दृश्यावली के कारण पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र रहा है, लेकिन आज इस शहर के प्रति लोगों के बढ़ते आकर्षण का मुख्य कारण यहां आयोजित किया जाने वाला 'यूकी मात्सुरी' महोत्सव है, चूंकि इस महोत्सव में दर्शाई गई करीबकरीब सभी वस्तुएं तथा इमारतें रुई जैसी उजली बरफ से विभिन्न आकार एवं स्वरूप देकर निर्मित की जाती हैं, इसलिए इसे 'बरफ का महोत्सव' नाम से भी जाना जाता है.

वैसे विश्व का कोई भी देश ऐसा नहीं है, जहां राष्ट्रीय स्तर के महोत्सव आयोजित

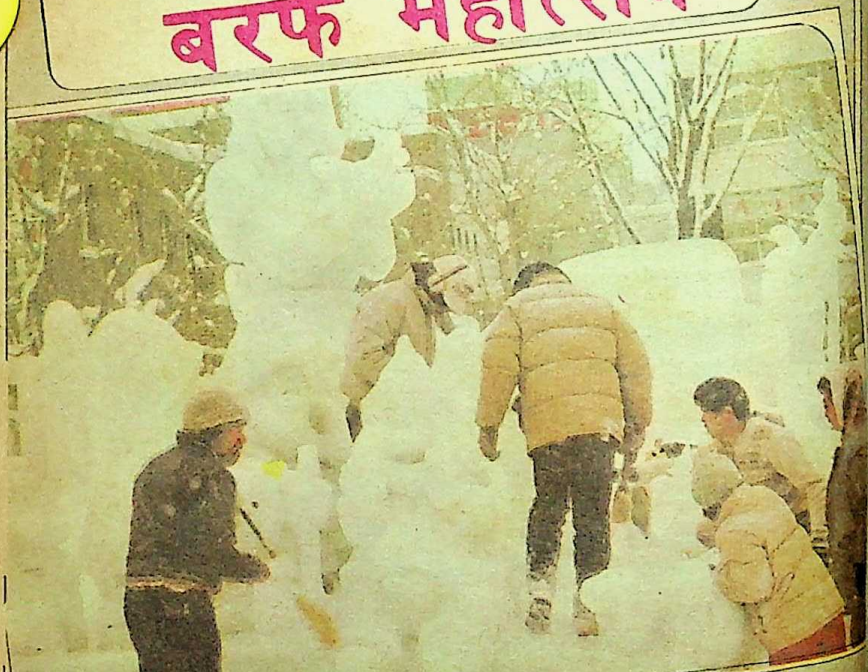
आकर्षण इस महोत्सव का है उतना बहुत ही अधिक है, जो कि जापान के अन्य महानगरों में नहीं मिलेगा.

बरफ का यह महोत्सव प्रति वर्ष फरवरी के महीने में, जब कि सपोरो शहर में जबरदस्त ठंड पड़ती है, नगर के बीचोबीच स्थित जाउन डाउन टाउन माल ओडोरी पार्क में आयोजित किया जाता है.

काफी समय पहले से इस महोत्सव की तैयारियां जोरशोर से शुरू हो जाती हैं तथा बरफ की विभिन्न आकारप्रकार की प्रतिमाओं का निर्माण शुरू कर दिया जाता है. ओडोरी पार्क में दूरदूर तक बरफ ही बरफ दिखाई देती है. कहीं बरफ के जानवर हैं तो कहीं बरफ के बने राजमहलों के माडल. इन्हें इतनी खूबसूरती तथा बारीकी से बनाया जाता है कि

लेख • मुकुंद सक्सेना

सपोरो का बरफ महोत्सव



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection. जाते हैं.

बरफ की आकर्षक प्रतिभाएं जिन्हें देख कर दर्शक रोमांचित होते हैं.

Digitized by Anva Samaj Foundation Chennai and eGangotri
तेनसांगु मंदिर के कुले का बरफ का
माडल महोत्सव का प्रमुख आकर्षण था.

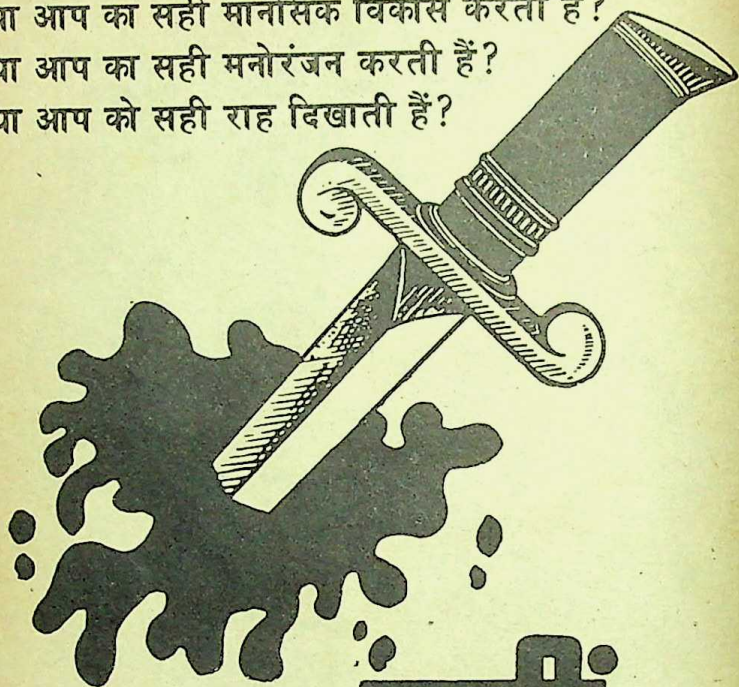
कल्पनालोक की अद्भुत
दुनिया का एहसास कराने
वाला सपोरो का बरफ
महोत्सव किस प्रकार देशी-
विदेशी पर्यटकों के बीच
आज आकर्षण का केंद्र बना
हुआ है?

बलात्कार, हत्या, डकैती, लसकरी, चालेसाजी,
वेश्यावृत्ति की कहानियां—

क्या आप का सही मानसिक विकास करती हैं?

क्या आप का सही मनोरंजन करती हैं?

क्या आप को सही राह दिखाती हैं?



नहीं...

वे सिर्फ क्षणिक रोमांच देती हैं...

गलत दुनिया में भटकती हैं...

चरित्रहीनता की ओर ले जाती हैं...

सुरुचिपूर्ण, स्वस्थ मनोरंजन के लिए प्रेरक
और उद्देश्यपूर्ण साहित्य पढ़ें.

दिल्ली प्रेस की पत्रिकाएं
ज्योति नए युग की घरघर जगाएं.

पयटक रामाचित हा जात ह.

पार्क के प्रवेश द्वार से प्रवेश करने ही नजर बरफ की बनी एक व्यक्ति की वृत्ताकार प्रतिमा पर आ कर ठिठक जाती है। मुसकराहट बिखेरती इस प्रतिमा को 'यूकी डारुमा' नाम दिया गया है। यह प्रतिमा वर्ष में एक बार होने वाले इस महोत्सव की प्रतीक है। इस के बाद शुरू होता है बरफ से निर्मित आकृतियों तथा इमारतों का एक लंबा सिलसिला, जिन्हें देख कर दर्शक हतप्रभ हो जाते हैं।

रोमांचक शाम

यों तो दिन भर इस महोत्सव में देशीविदेशी दर्शकों की चहलपहल नजर आती है, पर यहां की शाम का अपना अलग ही रोमांच है। पूरे ओडोरी पार्क को रंगबिरंगे बल्बों की हजारों झालरों तथा स्पाट लाइटों से सजाया जाता है। शाम होते ही पूरा पार्क रंगबिरंगे प्रकाश से जगमगा उठता है। ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे हम कल्पना लोक के अदभुत संसार में आ गए हों।

शाम के समय ओडोरी पार्क का रंगीन प्रकाश एक ओर अपनी छटा बिखेर रहा होता है तो दूसरी ओर हरे रंग के परिधान में सजाधजा जापान का आत्मरक्षा बल का बैंड अपनी मधुर ध्वनियों से मन मोह लेता है. आत्मरक्षा बल का यह बैंड 1950 से, जब यह महोत्सव शुरू हुआ था, लगातार इस महोत्सव की शोभा बढ़ाता आ रहा है.

वरफ के इस अनोखे महोत्सव का 33 वर्ष पुराना इतिहास है। तब से हर वर्ष लाखों देशी-विदेशी लोग कल्पना लोक के इस अद्भुत महोत्सव को देखने के लिए आते हैं।

शुरू के वर्षों में यह केवल एक दिवसीय ही होता था, जो कि स्नो स्कोर्टिंग (बरफ पर दौड़ने का खेल), स्कीइंग (बरफ पर फिसलने का खेल), कुत्ता दौड़ तथा चलचित्र प्रदर्शन तक ही सीमित था। गायन प्रतियोगिताएं भी इस में आयोजित की जाती थीं। बरफ से ढकी विशाल प्रतिमाएं, जो कि आज इस महोत्सव का मुख्य आकर्षण हैं, तब 10-11 से अधिक

मृक्ता

ही निर्मित किया जाता था, पर पिछले कई वर्षों से बरफ को प्रतिमाओं पर खास ध्यान दिया जा रहा है.

जूनियर व सीनियर स्कूली बच्चों द्वारा ओडोरी पार्क के ब्लाक स्कावायर क्षेत्र में बरफ की विशाल मूर्तियां इतने करीने से निर्मित की जाती हैं कि दर्शक इन नन्हेमूत्रे कशल हाथों की तारीफ करते नहीं अघाते हैं.

आकर्षक महोत्सव

अभी तक आयोजित बरफ के इस महोत्सव में 1982 के महोत्सव को सब से सफल एवं आकर्षक माना जाता है. इस महोत्सव में अनेक ऐसे आकर्षण थे, जिन को देखने के लिए जापान के अन्य इलाकों से करीब एक लाख से अधिक लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी थी. 16,000 से अधिक विदेशी पर्यटक भी इस महोत्सव को देखने के लिए खिंचे चले आए थे.

3 फरवरी, 1982 से 7 फरवरी, 1982 तक चलने वाले इस चार दिवसीय महोत्सव में हृदय को स्पर्शित कर देने वाली बरफ की

अपने छोटे बच्चों को

चंपक

दीजिए,

बड़े बच्चों को

सुमानि सौरभ

मनमोहक, शिक्षाप्रद, मनोरंजक.

प्रतिमाएं, जो कि ओडोरी पार्क के 11 ब्लाक लंबे मार्ग के दोनों ओर पकटबद्ध थी, सहज ही दर्शकों का ध्यान अपनी ओर खींच लेती थीं.

इन अद्भुत आकर्षणों के पीछे स्कूल में पढ़ने वाले उन नन्हेमुन्हे बच्चों की ही कल्पनाएं थीं, जिन को जापान के स्थानीय आत्मरक्षा बल के जवानों ने बच्चों के साथ दिनरात परिश्रम कर के साकार कर दिखाया था. आत्मरक्षा बल के जवान दूरस्थ इलाकों से हजारों टुक बरफ ढो कर लाए थे, जिस से बाद में विभिन्न प्रकार की मूर्तियों का निर्माण किया गया था.

ये मूर्तियां जापान की पारंपरिक वास्तु-कला को दर्शाती थीं. जापान के टेलीविजन की जानीमानी हस्तियों को भी मूर्तियों का रूप दिया गया था. मनोरंजन की दृष्टि से कार्टूनों का भी निर्माण किया गया था.

महोत्सव का मुख्य आकर्षण दार्जिलिंग में तैनात मंदिर के कुत्ते की विशाल प्रतिमा थी, जिस को बनाने में सैकड़ों लोगों के सैकड़ों घंटे खर्च हुए थे. कुत्ते की इस प्रतिमा की लंबाई

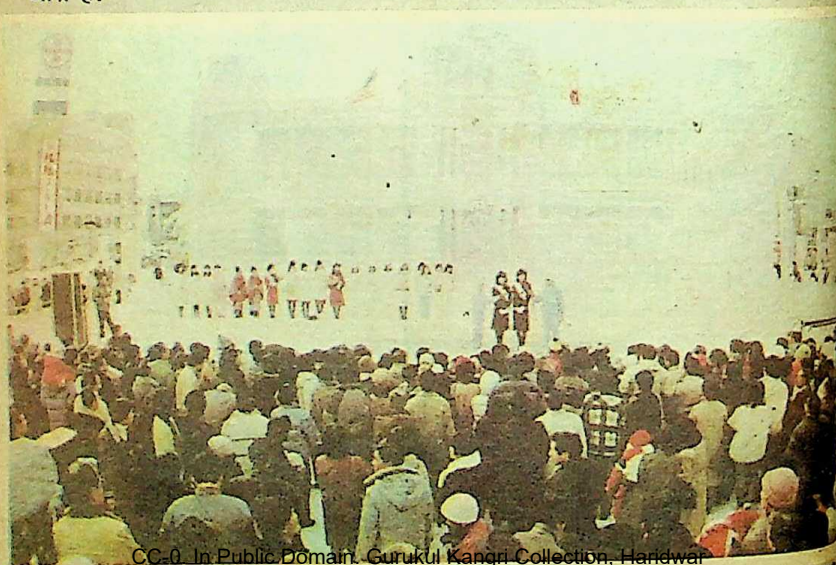
उन बरफ की इस विशालकाय प्रतिमा को बनाने में 400 टुक बरफ का प्रयोग किया गया था.

होनोलूलू लोआनी राजमहल को भी यहां बरफ के माडल का रूप दिया गया था. राजमहल के ठीक सामने वहां के राजा कामीहामिहा की विशाल प्रतिमा भी लगाई गई थी. राजमहल के इस माडल में मेहराबों तथा डिजाइनों को हूबहू इतनी खूबसूरती से बनाया गया था कि इस माडल तथा असली राजमहल में कोई अंतर नहीं जान पड़ता था. फर्क सिर्फ इतना था कि ईंटगारे के स्थान पर बरफ का इस्तेमाल किया गया था और यह माडल असली राजमहल से आकार में छोटा था.

पर्यटकों का आकर्षण

बरफ के एक चौकोर घेरे के बीच में होकाइडो द्वीप की रंगीन मछलियों को भी रखा गया था. इधरउधर तैरती रंगीन मछलियों को देख कर पर्यटक सहज ही उधर खिंचे चले जाते थे.

होनोलूलू के लोआनी राजमहल का बरफ का माडल जिसे देखने के लिए पर्यटक खिंचे चले आते हैं.



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar



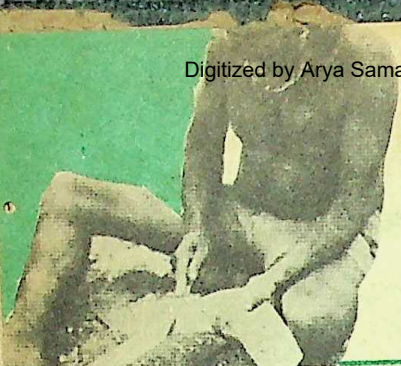
जापान का आत्मरक्षा बल का बैंड जो शुरू से ही इस महोत्सव की शोभा बढ़ाता आ रहा है।

महोत्सव में आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रमों में 'अंतरराष्ट्रीय बरफ प्रतिमा कोनकोरस' प्रमुख है। यह 1974 से हर वर्ष आयोजित किया जाता है। 'अंतरराष्ट्रीय बरफ प्रतिमा कोनकोरस' पर्यटकों को भरपूर मनोरंजन तो प्रदान करता ही है, यह अंतरराष्ट्रीय बंधुता का प्रतीक भी है। पोर्टलैंड, संयुक्त राज्य अमरीका, म्युनिख, पश्चिमी जर्मनी, शेनयांग और चीन का सहयोगी शहर होने के कारण सपोरो के इस बरफ प्रतिमा कोनकोरस में इन सभी देशों द्वारा सक्रिय भाग लिया जाता है। 1982 के महोत्सव में संयुक्त राज्य अमरीका की वायुसेना के जवानों ने होकाइडो में काफी पहले से आ कर अपना डेरा जमा दिया था तथा सपोरो के इस महोत्सव के लिए होनोलूलू के लोआनी राजमहल तथा वहां के राजा कामीहामिहा की प्रतिमा का निर्माण किया था तथा हेल्सिकी के ग्रैंड कैथेड्रल का माडल भी तैयार किया था।

एक अन्य दृष्टि से भी सपोरो के इस महोत्सव से अंतरराष्ट्रीयता को बढ़ावा मिलता है। हर वर्ष लगभग 10 देशों को इस

महोत्सव में आमंत्रित किया जाता है। कुछ देश, जो दक्षिण पूर्व एशिया, अफ्रीका तथा विश्व के अन्य क्षेत्रों में हैं तथा जिन के लिए बरफ एक अजूबा चीज होती है, यहां एक साथ मिल कर बरफ की चीजें बनाते हैं तो वे आंतरिक प्रसन्नता महसूस करते हैं। इस प्रकार विभिन्न देशों के लोगों को एकदूसरे को करीब से जानने तथा समझने का मौका भी मिलता है। सपोरो महोत्सव के दौरान अक्सर अंतरराष्ट्रीय विवाह भी संपन्न हो जाते हैं। अलगअलग देशों से आए युवकयुवतियां जब बरफ के महोत्सव की तैयारियों में जुटे होते हैं तो उन के बीच अक्सर प्रेम भी हो जाता है और वे वैवाहिक सूत्र में बंध जाते हैं। इस प्रकार अब तक कई अंतरराष्ट्रीय विवाह यहां संपन्न हो चुके हैं।

हालाँकि 1982 के इस महोत्सव से जापान की अन्य देशों में प्रतिष्ठा तो बढ़ी ही है साथ ही उस को करीब नौ अरब 40 करोड़ येन (लगभग तीन करोड़ 80 लाख अमरीकी डालर) की आमदनी भी हुई, जो वहां के पर्यटन उद्योग के लिए एक महान सफलता का संकेत है।



अलग संस्कृति, वातावरण और परिस्थितियों के होते हुए भी आस्ट्रेलिया के बंजारे किस प्रकार भारतीय बंजारों से साम्यता रखते हैं. कैसा है इन का जीवन?

आस्ट्रेलिया के कलाप्रेमी बंजारे

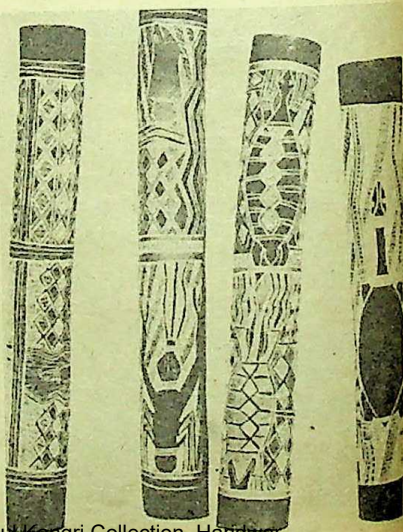
लेख • संतोषबाला शर्मा

5 जून, 1980. रात के 11 बजे थे. हम चार वर्ष बाद आस्ट्रेलिया से भारत लौट रहे थे और हमारा हवाईजहाज आस्ट्रेलिया के सिडनी हवाईअड्डे पर उतर रहा था. वहां से हमें दूसरे दिन 11 बजे भारतीय हवाईजहाज पकड़ना था. अतः यह तय किया गया कि 12 घंटे का यह समय हवाईअड्डे पर ही बिताया जाए. वैसे हम सपरिवार आस्ट्रेलिया के मुख्य नगरों का कई बार भ्रमण कर चुके थे.

सिडनी हवाईअड्डे पर हमारे पहुंचने के एक घंटे पश्चात एक हवाईजहाज, जो आस्ट्रेलिया की घरेलू उड़ान का था, लगभग 50 लोगों को ले कर केनबरा से आया था. इस में वहां के अधिकांश बंजारे, जिन्हें वहां अबोरिजिनी लोग कहते हैं, सवार थे. वे देखने में भारत के बंजारों से मिलतेजुलते थे. वे रंगबिरंगे कपड़े पहने थे. उन का रंग सांवला था. वे लोग यहां अपने संप्रदाय के लोगों से मिलने आए थे. आस्ट्रेलिया के इन बंजारों को देख कर हमें अपने देश के बजारे याद आ गए थे.

76,82,000 वर्ग किलोमीटर है और जनसंख्या लगभग 15,33,80,000. यहां अधिकांशतः गोरे जाति के लोग यूरोप के

हस्तनिर्मित काष्ठ कला के नमूने, जो कला प्रेम की शाश्वत पहचान हैं.



आस्ट्रेलिया का कल क्षेत्रफल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

गाए थे. यहां पर कपास, धान, गन्ना, फल और गेहूं आदि की खेती होती है।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं काम से भी भारतीय वंजारों से मेल खाते हैं।

मुख्य व्यवसाय

पशुपालन, दूध तथा मांस का व्यवसाय यहां की ग्रामीण जनता का मुख्य व्यवसाय है. लौह, जस्ता, बाक्साइड, ऊन उत्पादन और वनों के क्षेत्र में भी आस्ट्रेलिया काफी आगे है. इस देश की अधिकांश भूमि सिंचित है. यहां खेती के लिए ट्रैक्टरों और कृषि यंत्रों का भी खूब प्रयोग किया जाता है.

उपलब्ध आंकड़ों एवं पुरातत्व विभाग के अनुसार आस्ट्रेलिया में अबोरजिनी लोग लगभग 40,000 वर्षों से रह रहे हैं. इस देश का 99 प्रतिशत इतिहास अबोरजिनी लोगों का इतिहास ही है. 200 वर्ष पूर्व जब सर्वप्रथम अंगरेज आस्ट्रेलिया में बसे थे, उस समय अबोरजिनी लोगों की आबादी 2,50,000 से 3,00,000 के बीच थी. इन में से अधिकांश आबादी समुद्र के तटवर्ती भागों में नदियों के किनारे रहा करती थी, क्योंकि वहां पर समुद्री भोजन मिलना आसान था.

ये लोग बहुत सी भाषाएं बोला करते थे, यह विश्वास किया जाता है कि अबोरजिनी लोग आस्ट्रेलिया में न्यूगिनी के रास्ते से आए थे. आज ये इस देश के प्रायः सभी भागों में पाए जाते हैं और 1981 की जनगणना के अनुसार इन की कुल आबादी 1,44,665 है.

इन आदिवासियों के विकास के लिए वहां केंद्रीय स्तर पर एक मंत्रालय है, जो इन



के कल्याण के कार्य में संलग्न है. अबोरजिनी लोग कला के काफी प्रेमी हैं और सरकार की तरफ से पूरा प्रयास किया जाता है कि इन की कला, जो इन के जीवन निर्वाह का साधन है, फलतीफूलती रहे.

सरकार की तरफ से अबोरजिनी लोगों को अपने विकास के पूरे अवसर दिए जाते हैं. इस कार्य में सहायता के लिए अबोरजिनी विकास आयोग की स्थापना की गई है, जो लघु उद्योगों तथा भवन आदि की व्यवस्था करती है. इस के अतिरिक्त इन लोगों के स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार, मनोरंजन, न्याय एवं भूमि की व्यवस्था भी सरकार करती है.

रसायनिक गोंद

सोवियत वैज्ञानिकों ने फास्फोरस अम्ल, क्रोमियम, मैग्नेशियम तथा अन्य फास्फे में से युक्त एक ऐसी गोंद का विकास किया है, जिस से उच्च ताप को सहन करने वाली वस्तु तैयार की जा सकती हैं.

इस गोंद से निर्मित वस्तुएं 300 से 1,700 अंश सेंटीग्रेड तक का ताप आसानी से सहन कर सकती हैं. यह गोंद भट्ठी की ईंटों को जोड़ने तथा तीव्र ताप वाली भट्ठियों की मरम्मत में सहायक सिद्ध हुआ है.

ANNOUNCING...

November 11, 1983

SPECIAL ISSUE OF

Woman's era

ON BRIDES

This issue will contain all the facts and guidance that a young BRIDE wants to know:

- Are you really ready for marriage?
- How to look your best on this most memorable day of your life.
- How to adjust with your in-laws who were strangers to you till yesterday.
- Rites of the first night.
- How to prevent childbirth during the first year of your married life.
- Is a honeymoon trip desirable/necessary?
- A bride for the second time—problems of being a second wife and a step-mother.

Also short stories and humour to suit the occasion.

Woman's era

helps you build your personality
helps you build a happy home.

Reserve your copy today with your news agent.

VV/We 133

Pub: by DELHI PRESS, New Delhi.

शाबाश

इस स्तंभ के लिए समाचारपत्रों की रोचक कटिंग भेजिए, सर्वोत्तम कटिंग पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी, कटिंग के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.

भेजने का पता : मुक्ता, दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली-110055.

विधवा बनी सुहागिन

दुर्ग में एक युवक ने किन्हीं कारणों से विवाह के दूसरे दिन ही नदी में डूब कर आत्महत्या कर ली, किंतु उस के छोटे भाई से अपने परिवार व अपनी भाभी का दुख नहीं देखा गया. उस ने विधवा भाभी की मांग में सिंदूर भर कर उसे विधवा से सुहागिन बना दिया.

—पंजाब केसरी, जालंधर (प्रेषक : विद्या भूषण)
(सर्वोत्तम)

*

वयोवृद्ध शिक्षकों का सम्मान

राजपुर के सिटी लाइंस क्लब में विगत दिनों शिक्षक दिवस को नए तरीके से मनाया. इस क्लब में अध्यक्ष ने ऐसे आठ सेवानिवृत्त शिक्षकों का सम्मान उन के घरों में जा कर किया, जो शारीरिक रूप से अक्षम हैं, इन वयोवृद्ध शिक्षकों को शाल दे कर सम्मानित किया गया. इन आठ शिक्षकों में से दो अंधे हैं, जब कि शेष छः विभिन्न व्याधियों में पीड़ित हैं.

—नवभारत, रायपुर (प्रेषक : मुहम्मद शकील)

*

गूंगेबहरे बालक की बहादुरी

घटना मंडी डबवाली की है. एक छोटा बच्चा प्लेटफार्म पर खेलता खेलता रेलवे लाइन पर गिर पड़ा. उसी समय उसी लाइन पर रेल गाड़ी काफी तेजी से आ रही थी. इस पर बच्चे के मातापिता ने शोर मचाना शुरू कर दिया. गाड़ी काफी तेजी से आ रही थी. उस का रुकना मुश्किल था.

तभी एक गूंगेबहरे लड़के सरदारीलाल ने यह देखा तो उस ने अपनी जान जोखिम में डाल दी और बच्चे को बचा लिया.

—पंजाब केसरी, दिल्ली (प्रेषक : रवि दत्त)

*

एक लाख का सोना लौटाया

जोधपुर में हाल में ईमानदारी का एक दुर्लभ उदाहरण देखने में आया है. एक बूढ़े पेंशनयाफँता व्यक्ति भानारलाल शर्मा एक दिन मंदिर में पूजा कर रहा था तो उसे कपड़े के एक थैले में सोना मिला. थैले में ही पड़े राशन कार्ड से थैले के मालिक का पता लगाया.

उस ने वह सोना उस के मालिक को लौटा दिया. बताया जाता है कि सोने का मालिक उक्त सोना बैंक के लाकर में रखने जा रहा था.

नवभारत, रायपुर, नई दिल्ली (प्रेषक : नरेंद्र गोवर) •

उस क कालज पहुचन क बाद पहलें ता प्रधानाचार्या अपनी धूमन वाली कुर्सी पर घुसी, उन्होंने कुलसूम को घूर कर देखा।
 "क्या नाम है तुम्हारा?"
 "जी, कुलसूम..." वह सिर झुका फुसफुसाई थी।
 "उम्र क्या है?"
 "जी, 25 वर्ष..."

कुलसूम का कलेजा कांप रहा था। 'अब क्या होगा? कहीं पोल ही न खुल जाए. उस की सहेलियों ने न जाने क्या बयान दिए हों. अब्बाजान को खबर हो गई तो वह उस की खाल ही खींच लेंगे.'

उसे अपने पीछे आने को कह कर

सुधा

कहानी • मुकारब खान 'आजाद'



अधीक्षिका प्रधानाचार्या के कार्यालय में घुस गई. कुलसूम की टांगें कांप रही थीं. किसी तरह उस ने भी परदा उठाया और डरतेडरते अंदर गई. पसीना पोंछ कर अपने सुखते अधरों को जीभ फिरा कर उस ने तर करने की कोशिश की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

“एम.ए...”

“हं...” Digitized by eGangotri Samaj Foundation

प्रधानाचार्या व्यंग्य से मुसकराई थीं. फिर बोली थीं, “इन्हें पहचानो. ये सोने की चूड़ियां तुम्हारी ही हैं न?”

चूड़ियां देख कर कुलसूम हककीबककी रह गई थी. ये कहां से मिल गई थीं इन्हें, पसीने में नहा उठी वह.

दीवाली की छुट्टियों में वह छात्रावास में ही रही थी. अब्बाजान् को समाचार भिजवा दिया था कि छुट्टियों में यहीं रह कर पढ़ाई करेगी, लेकिन पढ़ाई की जगह उस ने सहेलियों के साथ जुआ खेला था. नौ सौ रुपए हारे थे और इन्हीं रुपयों की पूर्ति हेतु उस ने अपनी सोने की दोनों चूड़ियां बेच दी थीं.

फिर एक सहेली की नेक सलाह पर छात्रावास की अधीक्षिका से शिकायत कर दी थी कि कमरे से उस की चूड़ियां चोरी चली गई हैं.

पहली घटना थी. अतः अधीक्षिका को बहुत बुरा लगा. वह उस की चूड़ियां वापस करने के लिए उसे अपने कमरे में बुलाया था. प्रधानाचार्या का कहना था कि इसी तरह की वारदातें किसी संस्थान को बदनाम करती हैं. अतः यह स्पष्ट था कि अगर यह चोरी की घटना खुली तो कई लड़कियों की शामत आएगी.

अंजु ने तब शीघ्र ही धबरा कर सचाई उगल दी थी. उसी ने चूड़ियां विकवाई थीं और बाजार से वापस लाई गई चूड़ियां अब प्रधानाचार्या के हाथ में थीं.

कुलसूम के अब्बाजान् सेना में मेजर थे. उन का परिवार छावनी में साथ ही रहता था. तीन साल के लिए उन की नियुक्ति जोधपुर हुई थी. लिहाजा खाली बैठी बेटी को बाप ने बी.एड. का प्रशिक्षण दिला देना मुनासिब समझा था. कुलसूम की भी यही इच्छा थी. फिर वहां इस की व्यवस्था भी थी.

दीवाली की छुट्टियों में कुलसूम ने अपनी सहेलियों के साथ जो कुछ भी किया, उस के पश्चात्ताप की आग में वह देर तक झुलसती रही, पर किस तरह उस के पिता ने उसे सही राह दिखलाई.



जो कि कालिज से काफी दूर पड़ता था। फिर पाठ्यक्रम आदि दिखाने के लिए धक्के धक्के भी कालिज आना पड़ता था। इसलिए कैप्टन महेंद्र की पुत्री के साथ कुलसूम को भी छात्रावास में रहने की छूट मिल गई थी। वह रविवार को अपने मातापिता से मिलने छावनी चली जाती। कभी वे लोग भी शहर में आते तो छात्रावास आ कर बेटी से मिल जाते थे।

आधुनिकता, फैशन और फिल्मों के लिए युवतियों के एक दल ने इस बार दीवाली पर जुआ खेल कर अतिरिक्त आय बनाने की योजना बनाई थी। कुछ अंधविश्वासी लड़कियां शगुन के लिए तो कुछ पिकनिक के लिए ही ऐसा चाहती थीं, पर इस में किसी को फायदा न हुआ। कुलसूम ताशबाजी में माहिर न होने के कारण सर्वाधिक नुकसान में रही। अब वह पछता रही थी।

"तुम मुसलमान हो न?" प्रधानाचार्या ने कहा था।

"जी." कुलसूम के स्वर में कंपन था।

"देखो, मुसलिम समाज वैसे ही संकीर्ण विचारधारा रखता है। इस समाज में लड़कियों को ऊंची तालीम दिला देने से लोग कतराते हैं और उस का कारण तुम जैसी युवतियां हैं, अब पूछो क्यों?"

पर कुलसूम क्या पूछती? उस की गरदन और अधिक झुक गई थी। लगा था अब रो देगी।

"तुम्हारी गलतियां, तुम्हारे कारनामे देख कर मजहब के ठेकेदारों को बोलने का मौका मिल जाता है। इसलिए अपने समाज के लिए अपने छोटों के लिए तुम्हारी जिम्मेदारियां क्या हैं, तुम्हें समझना चाहिए."

सही बात थी, कुलसूम का अंतःकरण हाहाकार कर उठ था, 'क्यों खेला उस ने जुआ...क्यों बेची उस ने चूड़ियां और क्यों की झूठी रिपोर्ट..ऊफ.'

"प्रमिलाजी," प्रधानाचार्या ने पलट

देखा था, "आप क्या कहती हैं?"

उन्होंने कुलसूम की ओर देखा था, फिर बोली थीं, "इसे चेतावनी दे दी जाए... समझदार लड़की है। पढ़ने में भी होशियार है। मैं समझती हूं कि अब भविष्य में यह शिकायत का कोई मौका नहीं देगी। वह कावे में आने के कारण यह भूल कर बैठी है।"

"हूँ..." प्रधानाचार्या ने चश्मा उतार कर मेज पर रख दिया था। रूमाल से उस के शीशे साफ किए थे, फिर दराज से एक पत्र निकाल कर कुलसूम की ओर बढ़ाया था, "तीन दिन के लिए तुम्हें कालिज से निकाला जाता है। तुम अपने घर जाओ। अपने पिताजी को यह पत्र दे देना, वह हम से मिल लेंगे, जाओ..."

दिन के साढ़े 11 बजे थे। कुलसूम छावनी क्षेत्र पार कर के सैनिक अधिकारियों के बंगलों की तरफ बढ़ रही थी। उदास सी जब वह अपने घर में घुसी तो घास काट रहे अरदली ने उसे सलाम कर के कहा था, "साहब तो बाहर गए हैं।"

"और अम्मां?"

"मेम साहब भी साथ गई हैं। कैप्टन महेंद्र के यहां पार्टी है। आप बैठिए। हाथ धो कर मैं चाय बनाता हूँ।" अरदली ने बरामदे में कुर्सी डाल दी थी। कुर्सी पर बैठ कर कुलसूम दूरदूर तक फैले इस हरी वादियों के संसार को देख रही थी।

चाय पी कर वह अपनी मां के कमरे में जा कर लेट गई थी। उस ने प्रधानाचार्या के अब्बाजान के नाम वाला पत्र पढ़ा था। पिं धीरेधीरे रोने लगी थी और इसी स्थिति में जाने कब उस की आंखें लग गई थीं।

उस के पिताजी अपनी बीबी के साथ दोपहर दो बजे लौटे थे। अरदली मंशाराम ने उन्हें कुलसूम के आने की खबर द्वार पर ही दी थी। पतिपत्नी कुछ नहीं बोले थे। उन्होंने बेटी को जगाया भी नहीं था। वे सीधे बैठक आ कर बैठ गए थे।

उन के बीच कुछ देर के लिए खामोशी लगी थी



"बेटी ने नौ सौ हारे हैं...पर हम ने? महेंद्र के यहां पार्टी में क्या नहीं खोया हम ने? जब हम सुधरेंगे तभी हमारी औलाद भी..." मेजर ने कहा.

रही थी. कैप्टन महेंद्र की पुत्री शारदा ने उन्हें अवसर पा कर कुलसूम के बारे में सब कुछ बता दिया था. आखिर वह भी इस मामले से संबद्ध थी.

कुलसूम की मां उठ कर कमरे में गई थी. कुलसूम नींद में थी. उस के सिरहाने एक पत्र पड़ा था. जिज्ञासावश मां ने उसे उठाया था और वापस बैठक में आ गई थी.

मेजर साहब ने भी खत पढ़ा था, "कोई खास बात नहीं है." उन्होंने कहा था.

"यह खास बात नहीं है? औलाद को बिगाड़ेंगे आप?"

"बेटी ने नौ सौ हारे हैं...पर हम ने?

महेंद्र के यहां पार्टी में क्या हुआ नहीं खेला हम ने? हम खुद गलती करें और बच्चों को डांटें...हम सुधरेंगे तो हमारी औलाद भी..." मेजर साहब ने सहजता से कहा था.

"तब?..." उन की पत्नी कुछ सोचने लगी थी.

"मैं शराब छोड़ूंगा. तुम ताश छोड़ो. फिर समझाओ बेटी को. वैसे उस ने पहली बार कोई गलती की है. मैं उस की प्रधानाचार्या से मिल लूंगा." कह कर मेजर मुसकराया.

"मंशाराम, क्या कह रहे हो, चाय नहीं बनी अभी तक?" उन की पत्नी ने जरा जोर से आवाज लगाई थी. अरदली लपकता हुआ आया था. "बस, तैयार है साहब. अभी लाया."

मेजर साहब ने अपनी बीवी की ओर देखा था, "बेटी को जगाओ. वह भी हमारे साथ नाश्ता कर ले."

उन की पत्नी ने बेटी को जगाया था. वह हड़बड़ा कर उठी थी. उस ने इधर उधर देखा था. तकिया उठाया था, फर्श पर देखा था, पर प्रधानाचार्या वाला पत्र उसे नहीं मिला था.

"खत मेरे पास है. हाथमूंह धो कर खाने की मेज पर आओ. तुम्हारे

अब्बाजान इतजार कर रहे हैं. यकायक उस

के कानों में मां की आवाज पड़ी थी.

कुलसूम का दिल धक से हो गया था.

अब? अब, खैर नहीं. मरे मन से वह गुसलखाने में घुसी थी. वहां खिड़की की जाली में से उस ने अपने अब्बाजान को देखा था. वह सहज थे. हां, मां जरूर गंभीर लग रही थीं.

नाश्ता लग चुका था. उस की मां चाय प्यालों में उंडेल रही थी. कुलसूम आई थी और गरदन झुका कर बैठ गई थी.

"मंशाराम, सूबेदार को बताओ कि हमें जीप की जरूरत है. जल्दी ही यहां भेज दे." उस के पिता ने अरदली से कहा था.

"अच्छा साहब." अरदली हवा के झोंके की भांति बाहर निकल गया था. वे नाश्ता करने लगे थे. कैप्टन महेंद्र के यहां हुई पार्टी की बात चलने लगी थी. मां को लक्ष्य कर के उस के पिता चुटकुले सुनाने लगे थे. मां भी खूब हंस रही थीं. हंसी तो कुलसूम को भी आ रही थी, पर वह बराबर सोचे जा रही थी कि उस के साथ यह कैसा सुलूक किया जा रहा है. मातापिता प्रधानाचार्या के पत्र के बारे में बात क्यों नहीं कर रहे हैं. उसे डांटा क्यों नहीं जा रहा है.

जीप जोधपुर शहर को पार कर के कायलाना झील पर पहुंची थी. वहां रडार को देखने के बाद वे लोग झील के किनारे बैठ गए थे. नाश्ते के दौरान अधूरी छूटी बात को उस के पिताजी ने फिर पकड़ा था और मां को छेड़ने लगे थे, "बेटी, तुम्हारी मां ने पार्टी में लहरालहरा कर डांस किया था..."

मां चिढ़ गई थी, "मैं क्या करूं, आखिर समाज में रहते हैं तो यह सब तो करना ही पड़ता है."

"ठीक है, मैं भी इसी वजह से शराब पीता हूं और हमारी बेटी इसी वजह से 'ताश' खेल गई. हम सभी दोषी हैं." पिताजी ने ठहाका लगाया तो मां गंभीर हो कर बोली थीं,

"कान पकड़े, अब डांस करने तो लेना

मरा...

"चलो हम भी शराब न छुएंगे..." और मैं भी... कुलसूम ने झंपते हुए

कहा था. उस के मातापिता हंसने लगे थे. लौटते वक्त कालिज के पास कुछ देर के लिए जीप रुकी थी तो कुलसूम की धड़कनें फिर तेज हुई थीं. मेजर साहब अकेले ही उतरे थे और फिर कालिज में चले गए थे. जब वह वापस आए थे तो प्रधानाचार्या उन्हें मुख्य द्वार तक छोड़ने आई थीं. कुलसूम ने उन दोनों के कनखियों से देखा था. दोनों हंसहंस कर बातें कर रहे थे.

जीप में बैठते ही उस के पिताजी ने कहा था, "ये तुम्हारी चूड़ियां हैं बेटी. मैं पैसे दे आया हूं. तुम कल ठीक समय कालिज जाना."

फराटे से भागती जीप में बैठी कुलसूम सोच रही थी ऐसे पिता शायद सब को नसीब नहीं होते होंगे.

अपने छोटे बच्चों को

चंपक

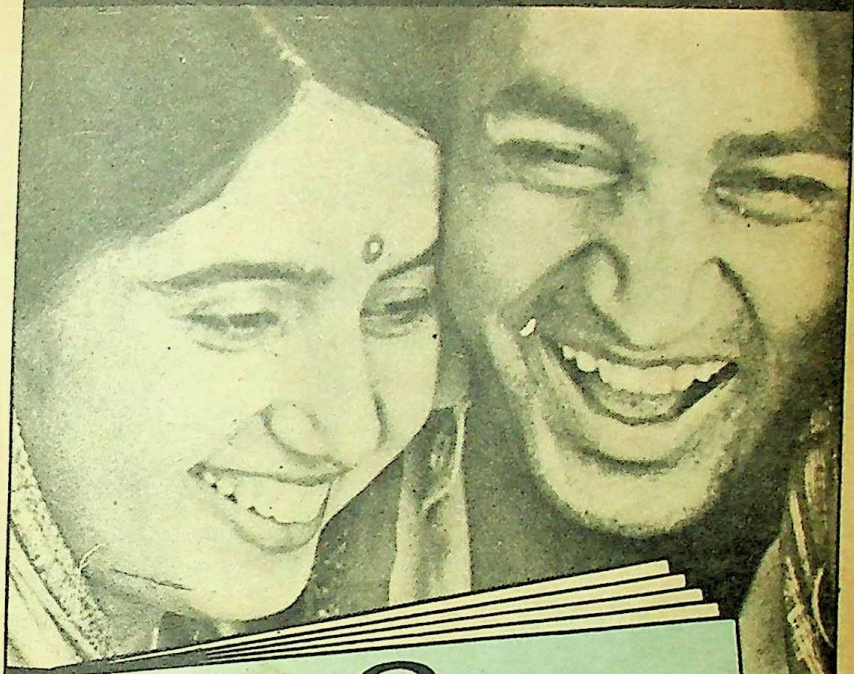
दीजिए,

बड़े बच्चों को

सुखान् सीरस

मनमोहक, शिक्षाप्रद, मनोरंजक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar *****



शरिता

निहित स्वार्थों को चुनौती देने वाली एकमात्र पत्रिका, जिस ने बड़ी से बड़ी शक्ति की परवाह नहीं की। शरिता की यह निर्भीकता अब एक इतिहास बना चुकी है। इसी लिए आज 40 लाख से अधिक पाठक शरिता का सम्मान करते हैं।

शरिता के लेख, समीक्षाएं, टिप्पणियां, उस की स्पष्ट नीति व क्रांतिकारी विचार आप को भी नए मोड़ पर ले आएंगे। हृदयस्पर्शी कहानियां, मोहक कविताएं आप का स्वस्थ मनोरंजन करेंगी। लाखों पाठकों के साथसाथ आप भी आज से ही शरिता पढ़िए।

दिल्ली प्रेस की पत्रिकाएं - ज्योति नए युग की घरघर जगाएँ

कलकत्ता का मूर्ति उद्योग

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख • शिवराम शुक्ल

कलकत्ता महानगर के बाग बाजार में कम्हार टोली नामक स्थान पर मिट्टी की मूर्तियां बनाने के लगभग 150 कारखाने हैं, जिन्हें यहां स्टूडियो कहते हैं। इस उद्योग से लगभग एक हजार लोगों को रोजीरोटी मिलती है।

सौ वर्ष पुराना यह उद्योग विश्व प्रसिद्ध



है। यहां प्रति वर्ष दुर्गा की तीन सौ से चार सौ बड़ी प्रतिमाएं तथा हजारों छोटी प्रतिमाएं बनती हैं। यहां अन्य देवीदेवताओं की भी प्रतिमाएं बनती हैं। इन प्रतिमाओं का मूल्य दो सौ से पांच हजार रुपए तक होता है।

दुर्गा पूजा का त्योहार यहां अक्टूबर में मनाया जाता है किंतु मूर्तियों का निर्माण अप्रैल से ही शुरू हो जाता है। वास्तव में ये मूर्तिकारों को वर्ष में चार महीने ही काम मिलता है, शेष आठ महीने वे उसी धन पर निर्भर रहते हैं, जो वे इन चार महीनों में कमा लेते हैं। यहां के एक कारीगर को 250 से 600 रुपए मासिक तक मिलते हैं। वैसे कारीगर कहींकहीं ठेके पर भी रखे जाते हैं, पर मूर्तियों का अंतिम रूप देने वाले शिल्पकार 80 से 100 रुपए प्रतिदिन कमाते हैं।

कारखाने के मालिकों के दो संघ हैं। एक है—'कम्हार टोली' मृद शिल्प समिति' दूसरा—'कुम्हार टोली' मृद शिल्प संघ'।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

समि
जो
महा
शिल
और
हैं। ज
तब
करते
स्टूडि
चुके
फिल्
अभि
उत्प
जो।
उन्हो
वेतन
मूर्
का
गु

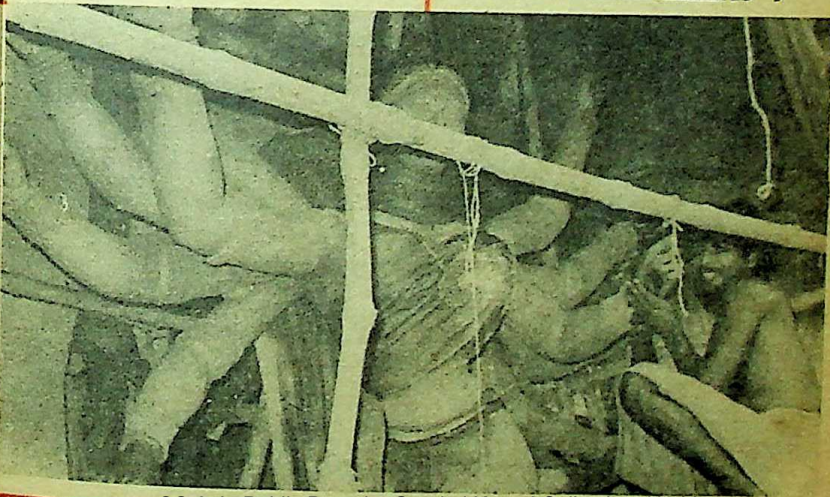
मुक्ता

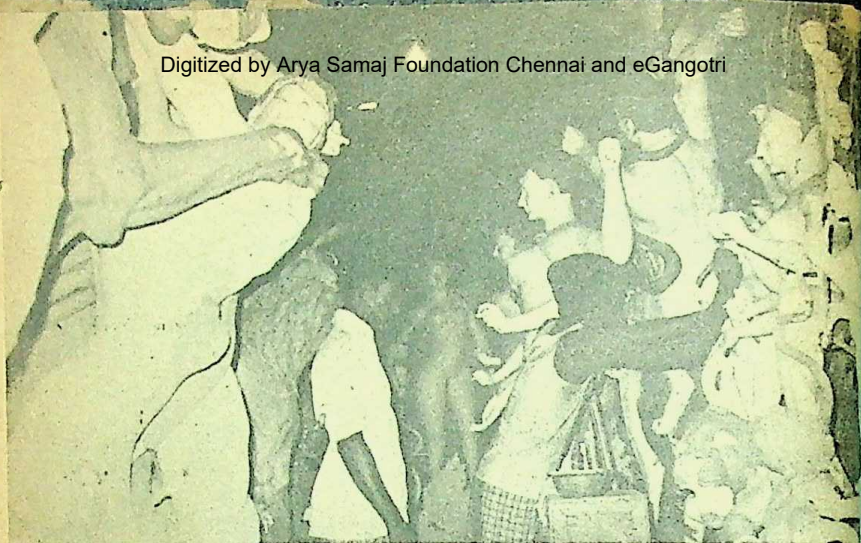
कलात्मकता का बना मूर्तियाँ विदेशों में भी जितने ही लोकप्रिय हैं, लेकिन इतनी कलात्मक और आकर्षक मूर्तियाँ बनाने वाले मूर्तिकार ही नहीं यह पूरा उद्योग ही आज आर्थिक संकट के दौर से क्यों गुजर रहा है?

समिति'. पहले संघ के महामंत्री कृष्णपाल हैं, जो एक अच्छे शिल्पी हैं. दूसरे संघ के महामंत्री जितेंद्रनाथ पाल हैं, वह भी अच्छे शिल्पी हैं.

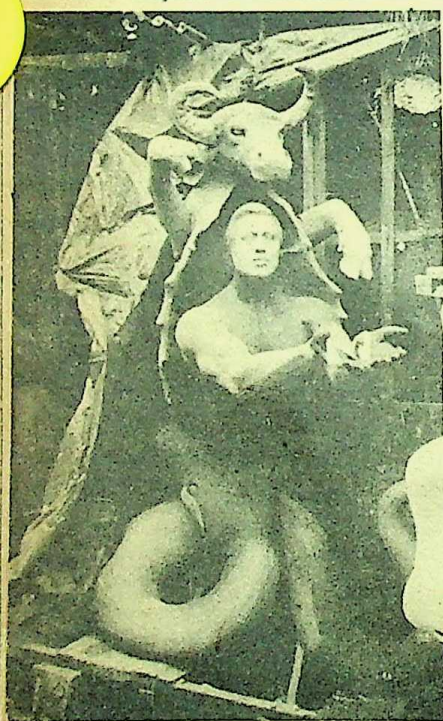
जितेंद्रनाथ की उम्र 60 वर्ष से ऊपर है और वह इस क्षेत्र में 15 वर्ष की उम्र से संलग्न हैं. जब सिनेमा में इतनी आधुनिकता नहीं थी तब यह चलचित्रों के लिए 'माडल' तैयार करते थे. इस के लिए वह भारत लक्ष्मी स्टूडियो व इंद्रपुरी स्टूडियो के लिए काम कर चुके हैं. 1980 में निर्देशक सत्यजीत रे की फिल्म 'हिरेक राजर देशे' के लिए उन्होंने अभिनेता उत्पल दत्त का माडल बनाया था. उत्पल दत्त की यह प्रतिमा 30 फीट ऊंची थी, जो 10 फीट ऊंचे स्टैंड पर खड़ी की गई थी. उन्होंने भारत लक्ष्मी स्टूडियो में 10 वर्ष तक वेतन पर कार्य किया था. उन्होंने इंद्रपुरी

मूर्तियों को रंगने और कपड़े पहनाने जैसे कार्य करने वाले कारीगर तमाम उम्र गुमनामी के अंधेरे में खोए रहते हैं.





मूर्तियां बनाने के कारखाने का एक दृश्य (ऊपर) व महिषासुर की आधुनिक स्वरूप दे कर बनाई गई मूर्ति (नीचे).



स्टूडियो में ठेके पर भी माडल बनाए थे.

इन्हें मिट्टी उद्योग से जुड़े 45 वर्ष से अधिक हो गए हैं. वह कलकत्ता में दुर्गा महोत्सव के अवसर पर तेइस पल्ली व संघर्ष की दुर्गा की मूर्तियां 35 वर्ष से, सहपक्षी की 20 वर्ष से, लोक पल्ली की 30 वर्षों से तथा बाबा बाजार में होने वाली दुर्गा पूजा के लिए 16 वर्ष से लगातार मूर्तियां बना रहे हैं. इन के कारखाने में दुर्गा की 15 छोटी व 11 बड़ी प्रतिमाएं बनती हैं.

उद्योग की समस्याएं

इन के अनुसार इतने बड़े नगर में मिट्टी की बड़ी परेशानी है. नगर से दूर उलबेरिया से नाव में मिट्टी लानी पड़ती है. मिट्टी अप्रैल से पहले ही ला कर भंडार कर रखी जाती है. इस मिट्टी को छाया में रखना पड़ता है, नहीं तो खराब हो जाती है.

इन उद्योगों में बहुत से कुली भी दैनिक मजदूरी पर रखे जाते हैं, जो मिट्टी रौंदने तैयार करते तथा ट्रकों में प्रतिमा रखते उद्योग हैं. ऐसे अधिकांश मजदूर हजारी बाग व गंगा के रहने वाले होते हैं. सार्वजनिक पूजा प्रतिमा उठाने में प्रत्येक मजदूर को आठ से दस रुपए तक मिल पाते हैं.

इस के अलावा यहाँ बड़े भी रहते हैं, जिन्हें 18 रुपए रोज दिए जाते हैं। उन्हें सिर्फ लकड़ी के फ्रेम दिए जाते हैं। इस के अलावा इस उद्योग में आभूषण बनाने वाले लगभग 4,000 व्यक्ति भी लगे रहते हैं।

कुम्हार टोली के कुम्हारों व कर्मियों की एक कर्मचारी यूनियन भी है। इन का कार्य करने का समय प्रातः आठ बजे से एक बजे तक तथा तीन बजे से सायं आठ बजे तक होता है। इस के अलावा वे ओवर टाइम भी करते हैं। किसीकिसी उद्योग में दोनों वक्त का भोजन भी देना पड़ता है।

कारखानों के मालिकों का कहना है कि इस उद्योग से उन्हें कोई खास लाभ नहीं है। मिट्टी उद्योग से जुड़ी जिंदगी भी मिट्टी तुल्य है। फिर भी जीने के लिए कुछ न कुछ तो करना ही पड़ता है। उन के अनुसार देवीदेवता के चेहरे की बनावट शिल्पी की कल्पना होती है, किंतु कल्पना का आधार सिनेमा के अभिनेता-अभिनेत्रियों की सुंदरता होता है।

जितेंद्रपाल के अनुसार 50—60 वर्ष पहले दुर्गा की सार्वजनिक पूजा नहीं होती थी। सर्वप्रथम दुर्गा पूजा राजा कृष्णचंद्र द्वारा बंगाल के कृष्णनगर में आरंभ की गई थी, जो सिर्फ जमींदारों में लिए होती थी। कलकत्ता में सार्वजनिक पूजा की शुरुआत बाग बाजार कुम्हार टोली, विवेकानंद स्पोर्टिंग जैसे क्लबों

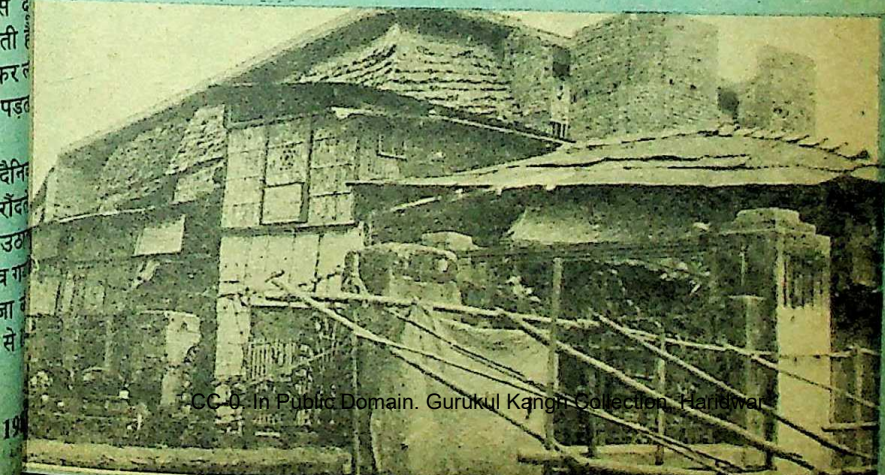
कलकत्ता का प्रतिमा निर्माण केंद्र कुम्हार टोली का एक दृश्य (नीचे)।



मिट्टी को कलात्मक रूप.

ने की है। दुर्गा पूजा अब तो पूरे भारत में ही नहीं, इंग्लैंड में भी बड़े धूमधाम से संपन्न होती है।

अधिकांश कारखानों को बैंक से कर्ज मिलता है। यहां कर्ज समिति के अनुमोदन पर ही मिल पाता है, लेकिन कर्ज की वापसी समय पर न होने से अब यह समिति बदनाम हो रही है।

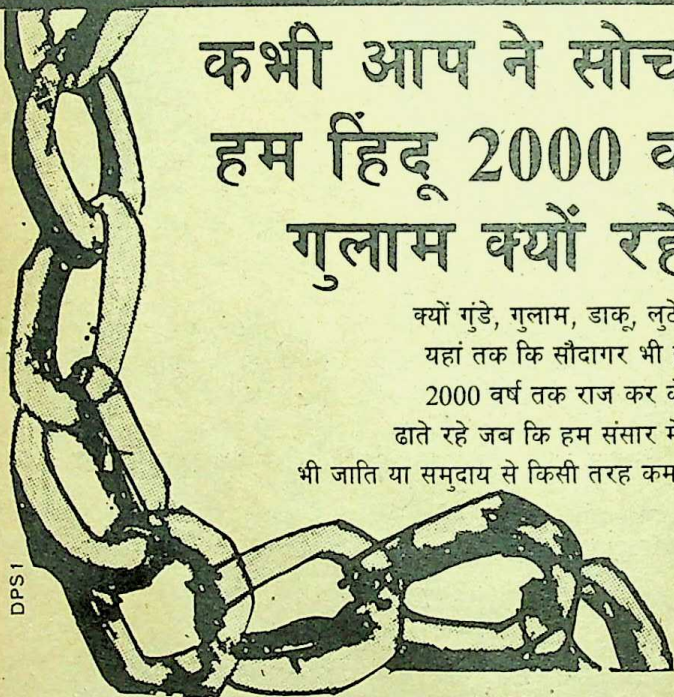


जितद्रपोल न फिल्म रानो रासमनो क
लिए दक्षिणेश्वर मंदिर में काली की प्रतिमा
बनाई थी. इस के लिए नारायण पिक्चर के
मालिक ने उन्हें गवर्नर हरेन मुखर्जी के हाथों
स्वर्ण पदक दिलवाया था.

कृष्णपाल से भी समिति व कर्ज के
विषय में मालूम किया तो उन्होंने बताया कि
समिति द्वारा अनुमोदन करने पर 12 प्रतिशत
ब्याज की दर से 8,000 रुपए तक ऋण मिल
जाता है, लेकिन यह राशि निर्धारित समय के
भीतर लौटानी पड़ती है फिर भी समय पर
वापसी नहीं हो पाती, जिस से आने वाले वर्ष में

आर्थिक संकट उत्पन्न हो जाता है.

सब से ज्यादा मशकिल तब आती है
जब चार मास काय करन के बाद आठ मा
तक लगभग 500 स्थायी कर्मचारियों का वेत
देना पड़ता है. इन आठ महीनों में काफी क
भी हो जाता है. इस कर्ज का सुद भी दे
पड़ता है. अतः सरकार से अनुदान या अ
प्रकार की सहायता न मिलने पर इस विश
विख्यात मिट्टी उद्योग का भविष्य अंधकार
मय है. स्टुडियो का 400 रुपए मासि
किराया दे कर उद्योग चलाना अत्यंत कठि
हो गया है.



DPS1

कभी आप ने सोचा: हम हिंदू 2000 वर्ष गुलाम क्यों रहे?

क्यों गुंडे, गुलाम, डाकू, लुटेरे, और
यहां तक कि सौदागर भी हम पर
2000 वर्ष तक राज कर के जुलम
ढाते रहे जब कि हम संसार में किसी
भी जाति या समुदाय से किसी तरह कम न थे?

शरिता

भारत की सब से अधिक प्रिय
व साथ ही साथ सब से अधिक क्षुब्ध करने वाली पत्रिका

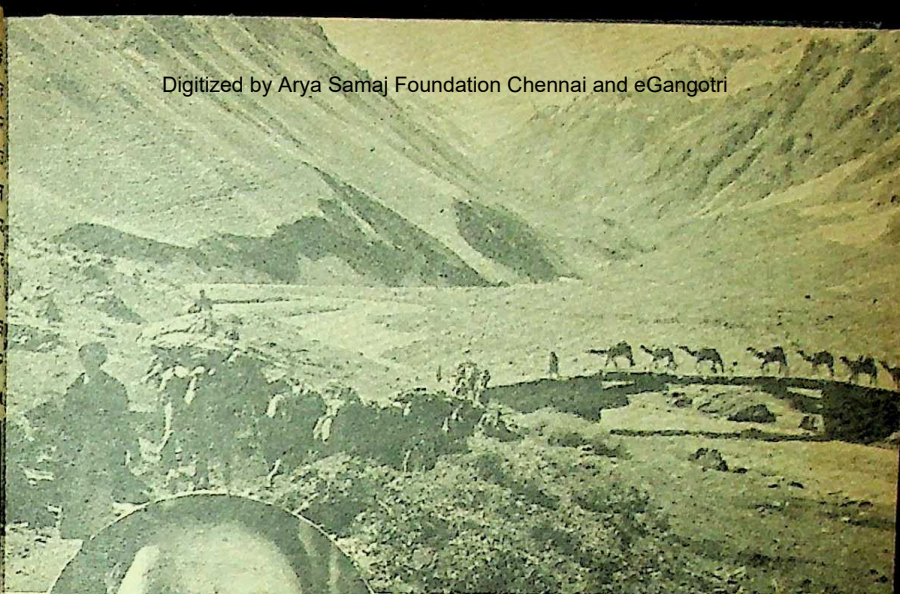
इसे सोचिए और उत्तर दीजिए
क्योंकि जिन कारणों से हम 2000 वर्ष
गुलाम रहे वे आज भी उतनी
ही तीव्रता से विद्यमान हैं.

गती
ठ मा
व वेत
की क
ो दे
अ
विश
कार
सि
कठि

र
न
न
?

र
न
न

19



अय्यूब खान

बलूचिस्तान विरोध जारी है

लेख • चंद्रकुमार मिश्र

लगभग दो वर्ष पूर्व बलूचिस्तान छात्र संगठन के नेता हमीद बलूच को पाकिस्तान के सैनिक शासन द्वारा मौत के घाट उतार दिए जाने पर लंदन में

बलूचिस्तान को पाकिस्तान में मिलाने के लिए पाकिस्तानी शासकों ने कोई कोरकसर नहीं उठ रखी, लेकिन वे अब तक बलूचियों को पाकिस्तान के प्रति दिल से वफादार क्यों नहीं बना सके हैं?

स्वनिष्कासित जीवन व्यतीत करने वाले बलूच नेता अताउल्लाह मेंगल (मंगोल) द्वारा दिया गया यह वक्तव्य कि "बलूचिस्तान की पूर्ण स्वतंत्रता की मांग पर कोई सौदेबाजी नहीं होगी," अत्यंत महत्वपूर्ण है। (अताउल्लाह मेंगल सन 1971 में बलूचिस्तान में हुए प्रथम तथा अंतिम चुनाव के फलस्वरूप मुख्य मंत्री बने थे, किंतु जुल्फिकार अली भुट्टो ने उन्हें जल्द ही अपदस्थ कर दिया था तथा विद्रोह के दमन के लिए फौजें भेज दी थीं)।

बलूचिस्तान की स्वतंत्रता की मांग कोई नई मांग नहीं है। भारत के स्वतंत्र होने तथा पाकिस्तान बनने से पूर्व से ही यह मांग की जा रही है। वास्तविकता यह है कि अंगरेजों का



बलूचियों को संबोधित करते पाकिस्तान के तत्कालीन प्रधानमंत्री सोहरावर्दी :
बलूचियों को बहलाफुसला कर भी दिल से पाकिस्तानी नहीं बनाया जा सका.

शासन भी केवल राजमार्ग के आसपास ही रहा था तथा बलूचिस्तान के कबीले आंतरिक रूप से पूर्णतया स्वतंत्र थे.

वर्तमान पाकिस्तान के दक्षिणपश्चिमी भाग में स्थित बलूचिस्तान पर्वतीय और मरुस्थली प्रदेश है. यह उत्तरपूर्व में गोमाल नदी से दक्षिण में अरब सागर तक तथा पश्चिम में ईरान से पूर्व में सुलेमान तथा किरथार पहाड़ी तक फैला हुआ है. इस के समुद्री तट को मकरान कहते हैं, जो ईरान तक फैला हुआ है. बलूचिस्तान में मुख्यतः बलूच कबीला रहता है, इसी लिए इस का नाम बलूचिस्तान पड़ा है. इस में क्वेटा और कलात डिवीजन भी हैं.

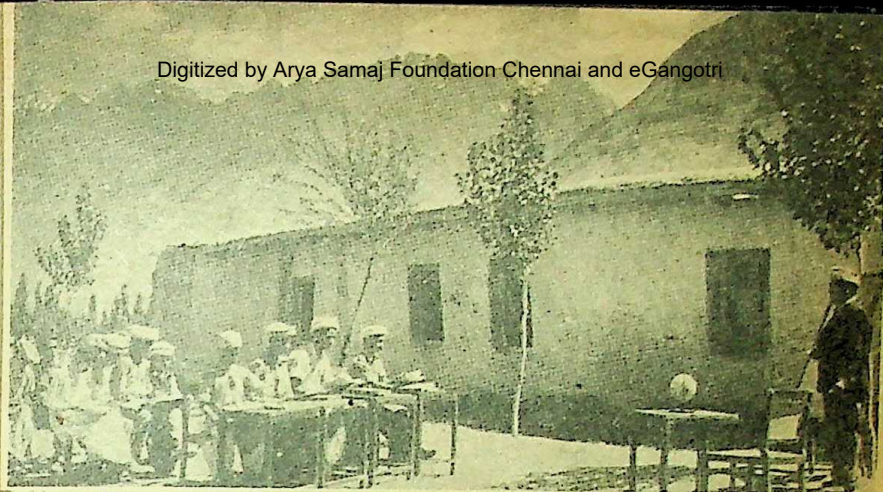
बलूचिस्तान में वर्षा नहीं के बराबर होती है. उत्तरी क्षेत्र में भीषण सर्दी और दक्षिणी क्षेत्र में भीषण गरमी पड़ती है. कलात डिवीजन का मकरान शहर विश्व के अत्यंत गरम शहरों में से एक है. मुख्य पर्वत श्रृंखला सुलेमान है, जो पश्चिमी पंजाब तथा बलूचिस्तान के मध्य में है. दूसरी पर्वत श्रृंखला किरथार बलूचिस्तान और सिंध के

बीच है. ये दोनों पर्वत श्रृंखलाएं बोलान नदी पर मिलती हैं. इस दर्रे से ही क्वेटा, हैदराबाद (सिंध) राजमार्ग तथा क्वेटा लाहौर राजमार्ग गुजरता है.

बलूचिस्तान मुख्यतः कृषि प्रधान है. यहां गेहूं, बाजरा, जौ, मक्का, चावल, आ



भूटो के शासनकाल में भी बलूचियों का शोषण जारी रहा.



बलूचिस्तान का एक स्कूल : बलूचियों के विकास पर कोई ध्यान नहीं दिया गया.

और खजूर पैदा होता है. चमड़े की वस्तुएं तथा मोटे कपड़े भी तैयार होते हैं. बलूचिस्तान में गैस, खनिज पदार्थ तथा तेल प्राप्त होने की संभावना है.

बलूचिस्तान में अनेक जनजातियां हैं, जो विभिन्न कबीलों में रहती हैं. ये जनजातियों

आर्य, द्रविड़, अरब, ईरानी और यूनानियों का मिश्रण हैं. इन कबीलों के अपने नियम हैं तथा कबीले के सरदार का शासन चलता है. ये लोग अच्छे घुड़सवार और निशानेबाज होते हैं. उत्तरी भाग में अब भी एक ऐसा कबीला रहता है, जो लूटमार द्वारा ही जीवनयापन करता है. वृश्ती और मारी कबीले बड़े हैं. शोष छोटे कबीले हैं. अधिकतर बलूच दरी (फारसी का अपभ्रंश या फारसी का अफगानी रूप) बोलते हैं. एक कबीला 'बाहू' द्रविड़ मूल की भाषा भी बोलता है.

ईसा से 3,000 वर्ष पूर्व बलूचिस्तान में प्राचीन सभ्यता थी. उस समय वहां वर्षा भी अच्छी होती थी. सिंधु घाटी और अरब देशों के मध्य व्यापार का मार्ग बलूचिस्तान से होकर ही जाता था. 325 (ईसा पूर्व) में सिकंदर ने इस प्रदेश को जीता और सैल्यूकस को शासन देकर चला गया. सैल्यूकस के उपरांत यहां बौद्ध मत वाले हिंदू राजाओं का शासन रहा. सातवीं शताब्दी में अरबों ने बलूचिस्तान को जीता तथा मुहम्मद बिन



**पाकिस्तान के तत्कालीन राष्ट्रपति
इस्कंदर मिर्जा : बलूचियों के विद्रोह का
सौहार्दपूर्ण समाधान**

स्थापित किया. फिर यह फारस साम्राज्य का अंग बन गया. Digitized by Arya Samaj Foundation of India and eGangotri

इसलाम धर्मावलंबी बलूच कबीला आर्य नस्ल का था और यह काफी बाद में बलूचिस्तान आया. इन्हें बलूचिस्तान के निचले भाग में बसना पड़ा. ब्राहूई कबीला द्रविड़ नस्ल का था. यह कबीला कलात के ऊंचे पठारी प्रदेशों में बसा हुआ था. 17 वीं सदी में बलूच कबीले के सरदार कंवार ने कलात को जीता और इस प्रकार पूरे बलूचिस्तान में इसलामी शासन हो गया.

बलूचिस्तान का सब से महत्त्वपूर्ण शासक नासिर खां था, जो ईरान के नादिरशाह का सेनापति था. नादिरशाह की मृत्यु पर वह स्वतंत्र हो गया, किंतु वह स्वतंत्रता अधिक दिन नहीं चली. उधर अफगानिस्तान में अहमदशाह दुर्रानी ने शासन स्थापित कर लिया और बलूचिस्तान के शासक को उस का स्वामित्व स्वीकार करना पड़ा.

अंगरेजों का दखल

बलूचिस्तान में अंगरेजों की रुचि सन 1810 ईसवी में प्रारंभ हुई, जब एक अंगरेज यात्री सर हेनरी पाटिंग ने बलूचिस्तान का भ्रमण किया. प्रथम अंगरेज अफगान युद्ध के समय अंगरेजों ने कलात के शासक मेहराब खां से अंगरेज फौजों की सुरक्षित यात्रा की गारंटी मांगी, जो उस ने दे दी, किंतु राजमहल के षडयंत्र के कारण अंगरेज फौजों पर बलूच कबीले ने हमला कर दिया. फलस्वरूप अंगरेजों ने कलात पर कब्जा कर लिया, किंतु शीघ्र ही अंगरेजों की समझ में आ गया कि वे कलात पर शासन नहीं कर पाएंगे. अतः उन्होंने मेहराब खां के पुत्र नासिर खां को वहां का शासक बना दिया, किंतु कलात के शासक और कबीली सरदारों के मध्य झगड़ा बना रहा.

सन 1876 में इन आपसी झगड़ों को निबटाने के लिए कैप्टेन राबर्ट सैंडेमान वहां गया तथा कबीली शासन की उस की पद्धति

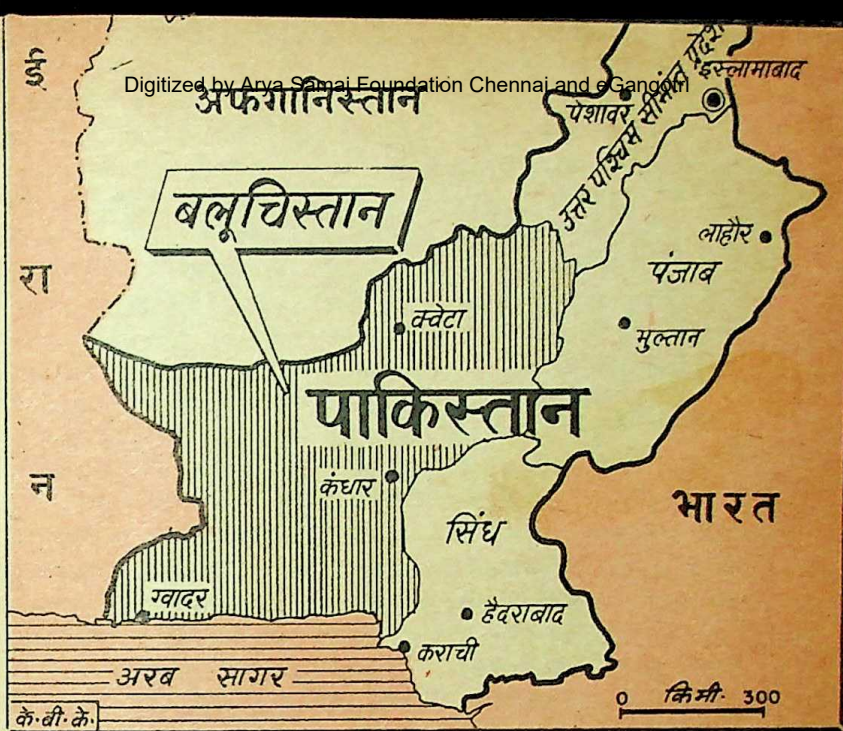
स्वीकार कर लिया. इस पद्धति के तहत कबीली सरदारों को कबीले के आंतरिक मामलों में पूर्ण स्वतंत्रता थी और अंगरेजों के केवल देखरेख ही करनी थी. कलात राज्य के स्वतंत्रता को भी अंगरेजों ने स्वीकार किया किंतु उन्होंने ब्रिटिश भारत को रूसी साम्राज्य से सुरक्षित रखने के लिए बोलान दर्रे के आसपास का क्षेत्र तथा क्वेटा को ब्रिटिश भारत में मिला लिया.

ब्रिटिश बलूचिस्तान

सन 1879 में अफगान युद्ध की समाप्ति पर अंगरेजों ने सिंधी तथा पिशीन घाटियों को जीत कर उन्हें भारत में मिला लिया. सन 1891 में राबर्ट सैंडेमान ने ब्रिटिश भारत तथा पिशीन घाटी के बीच का प्रदेश ब्रिटिश भारत में मिला लिया. सन 1899 में नुश्की तथा सन 1901 में नसीराबाद को कलात से अलग कर ब्रिटिश भारत में मिला लिया गया. इस क्षेत्र को ब्रिटिश बलूचिस्तान का नाम दिया गया.

पाकिस्तान बनने से पूर्व मध्य तथा दक्षिणी भाग कलात के खान के संरक्षण में था. किंतु बलूचिस्तान के तीन अन्य कबीले सरदार लगभग स्वतंत्र हो गए थे. लास बेला केवल सैनिक सहायता देता था. खारान सन 1940 में स्वतंत्र रियासत हो गई थी. बाद में मकरान भी स्वतंत्र रियासत हो गई.

पाकिस्तान के निर्माण के उपरान्त कलात के खान मीर अहमदयार खां ने पाकिस्तान के संस्थापक और पहले गवर्नर जनरल मुहम्मद अली जिन्ना ने पाकिस्तान में विलय होने के लिए कहा, लेकिन बलूच पूर्णतया स्वतंत्र राज्य बनाना चाहते थे. अतः बलूचियों ने खान अब्दुला समद खां के नेतृत्व में स्वतंत्रता की मांग की, साथ ही कलात के खान मीर अहमदयार खां ने भी कलात के स्वतंत्र घोषित कर दिया. यद्यपि लाहौर माउंटबेटन ने कलात के खान तथा जिन्ना के बीच वार्ता कराई, किंतु वह असफल रही. फलस्वरूप जिन्ना ने कूटनीति का सहारा



लिया और पुनः कलात के खान से पाकिस्तान में कलात को विलय कर देने की मांग की, किंतु कलात के दोनों सदनों अवामे खास और अवामे आम ने विलय के विरुद्ध प्रस्ताव पास किया।

इन प्रस्तावों से चिढ़ कर जिन्ना ने कलात की तीन रियासतों खारान, लासबेला तथा मकरान को कलात से पूर्णतया अलग हो जाने के लिए उकसाया और उन रियासतों का विलय पाकिस्तान में 17 मार्च, 1948 को स्वीकार कर लिया।

मार्च 1948 के आखिरी सप्ताह में पाकिस्तानी फौजों ने कलात पर आक्रमण कर दिया और काफी खूनखराबे के बाद 31 मार्च, 1948 को कलात के शासक ने कलात के पाकिस्तान में विलय की मांग को स्वीकार कर लिया, लेकिन बलूच पाकिस्तान की इस जोरजबरदस्ती को भूल न सके और छुटपुट युद्ध चलता रहा।

मुक्ता

सरदार अताउल्लाह मेंगल के शब्दों में "बलूचिस्तान ही एक ऐसा राज्य है, जो पाकिस्तान में अपनी इच्छा से विलीन नहीं हुआ। कलात के ब्रिटेन के ह्वाइट हाल के साथ वैसे ही संबंध थे, जैसे नेपाल के थे। लेकिन इस तथ्य की किसी ने परवाह नहीं की और यद्यपि कलात की विधान सभा ने पाकिस्तान में विलय के विरुद्ध दो प्रस्ताव पारित किए थे, फिर भी जब जिन्ना की फौज कलात में घुस गई तो मजबूर हो कर कलात के तत्कालीन शासक को विलय के मसौदे पर हस्ताक्षर करने पड़े।

अक्टूबर 1958 में पाकिस्तान के राष्ट्रपति इस्कंदर मिर्जा ने कलात के विद्रोह को दमन कर आ कर कलात के खान को वार्ता के लिए बुलाया। खान ने न केवल इस निमंत्रण को अस्वीकार कर दिया, बरन कहला भेजा कि अगर इस्कंदर मिर्जा को मिलना हो तो वह स्वयं मीरी किले में आ कर मिले (इसी किले

उपरांत मारा किले में जनसाधारण का जलसा हुआ और उस की मांगों पर मीरी किले में लगा पाकिस्तानी झंडा उतार दिया गया और कलात का झंडा फहरा दिया गया।

इस अपमान से क्षुब्ध हो कर पाकिस्तानी फौजों ने मीरी किले को 6 अक्टूबर, 1958 को घेर लिया तथा भीषण युद्ध के बाद उसे जीत लिया। जब खान को कैद कर उसे अज्ञात स्थान ले जाया जा रहा था तो पुनः जनता ने विरोध किया और फिर भीषण संघर्ष हुआ तथा सैकड़ों लोग मारे गए।

बलूचियों पर अत्याचार

राष्ट्रपति अय्यूब खां के शासनकाल में बलूचियों पर अत्याचार और ज्यादा हुए। उन दिनों बलूचिस्तान में पाकिस्तानी फौजों का कमांडर टिक्का खां था। बलूचिस्तान में उस के द्वारा किए गए हत्याकांडों के कारण उसे 'बलूचिस्तान का कसाई' कहा जाता था।

इन अत्याचारों का भंडाफोड़ करते हुए सरदार अताउल्लाह खान ने पाकिस्तान की राष्ट्रीय असेंबली में कहा था, "अय्यूब खां कहते हैं कि हमारी क्रांति रक्तहीन हुई है, किंतु रक्तहीन क्रांति का खुलासा तब ही हो पाएगा, जब बलूचिस्तान के खून से लथपथ महाड़ों को जा कर देखें कि तथाकथित रक्तहीन क्रांति के पहले छः महीनों में पाकिस्तानी फौजों ने बलूचिस्तान पर कैसे जुल्म ढाए हैं।"

'इस रक्तहीन क्रांति में पाकिस्तानी फौजों के लगभग 15,000 जवानों ने लगभग 8 महीने तक बलूचों के घरों की जम कर तूखसोट की और उन की औरतों पर अत्याचार किए। तोपों से बमबारी और बम फेंकों का जम कर उपयोग किया गया। 17 फरवरी बलूचियों को उलटा टांग कर उन पर सिर ठंडे पानी की बालटी में डुबो कर तब तक रखे जाते थे, जब तक वे बेहोश न हो गए।'

जून 1968 में पुनः क्वेटा में मौजूद पाकिस्तानी फौजों के विरुद्ध जन विद्रोह हुआ।

पुरा शहर बमबारी और गोलाबारी से नष्ट हो गया।

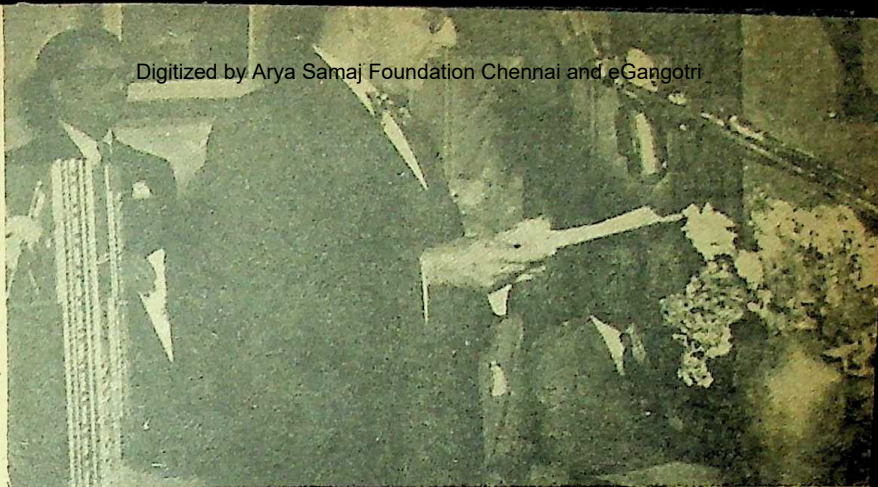
बलूचिस्तान में विद्रोह तथा उसे दबाने के लिए पाकिस्तानी फौजों के उपयोग का सिलसिला प्रथम बार सन 1948 में जो प्रारंभ हुआ, वह लगातार चल रहा है। यहां तक कि निर्वाचित नेता जल्फिकार अली भुट्टो के शासनकाल में भी पाकिस्तानी फौजों ने बलूचों को मानसिक और शारीरिक रूप से तोड़ने का प्रयास किया, किंतु वह भी बलूचों की स्वतंत्रता की भावना को कुचल न सके।

सन 1973 में अताउल्लाह खान की सरकार को अपदस्थ कर, विद्रोह को कुचलने के लिए भेजी गई पाकिस्तानी फौजों का मुकाबला बलूचियों के लोकप्रिय मुक्ति मोर्चे (पापुलर लिबरेशन फ्रंट) के स्वयंसेवकों ने किया। इन स्वयंसेवकों को बलूचों द्वारा बहुत सम्मान तथा प्यार मिलता है। एक समाचार के अनुसार इस मोर्चे के कई हजार (लगभग 8,000) स्वयंसेवक गुरिल्ला लड़ाई के प्रशिक्षण के लिए काबुल में हैं।

कड़े नियमों का सहारा

भुट्टो को अपदस्थ कर उन्हें मौत के घाट उतार देने वाले शासक जिया उल हक ने भी बलूच समस्या को सुलझाने का प्रयास नहीं किया, वरन विरोध को दबाने के लिए मार्शल ला का उपयोग किया। लंदन से प्रकाशित 'संडे टाइम्स' में प्रकाशित समाचार के अनुसार क्वेटा में रात नौ बजे से लगभग कर्फ्यू लगा दिया जाता है और रात नौ बजे के उपरांत निकलने वालों से कड़ी पूछताछ की जाती है। पाकिस्तान से भागे हुए और लंदन में निवास कर रहे वामपक्षी नेता तारिक अली के अनुसार क्वेटा में प्लेन पेपर कापियां तथा साइक्लोस्टाइल मशीनों को भी पंजीकृत करवाना आवश्यक है।

लेकिन क्या इन कड़े नियमों से बलूच स्वतंत्रता आंदोलन में कोई कमी आई है? संभवतः इस का उत्तर 'न' में है। क्वेटा में पंजाबियों को उठा कर फक देने के लिए परचे



पाकिस्तान के प्रथम प्रधान मंत्री लियाकत अली खान : बलूचिस्तान समस्या को निबटाने के लिए कुछ न कर सके.

बांटे जाते हैं. एक अन्य सूचना के अनुसार रूस में तैयार किए गए बलूच तथा ब्राहुल भाषी कैसट बलूचियों को विद्रोह के लिए प्रेरित करने के लिए खुले आम बांटे जाते हैं.

दो राष्ट्रों के सिद्धांत एवं धर्मभेद के आधार पर बना पाकिस्तान क्यों टूटता जा रहा है? इस समस्या को समझने के लिए यह जानना आवश्यक है कि पाकिस्तान कैसे बना.

यह सर्वमान्य है कि पाकिस्तान को बनाने में वर्तमान पाकिस्तान के बाशिंदों का उतना हाथ नहीं जितना कि भारत में रहने वाले मुसलमानों का था. पाकिस्तान के संस्थापक मुहम्मद अली जिन्ना बंबई के रहने वाले थे और उन्हें धर्म में सिर्फ उतनी ही दिलचस्पी थी जितनी उन्होंने नेता बनाए रखने के लिए आवश्यक थी. किसी समय लोकमान्य तिलक के प्रबल समर्थक और कट्टर राष्ट्रवादी माने जाने वाले मुहम्मद अली जिन्ना में मुसलमानों का नेता बन कर उठने की भावना तब पैदा हुई, जब उन्होंने देखा कि लोग गांधीजी को अधिक महत्त्व देने लगे हैं. उन्होंने अपनी शादी एक पारसी युवती से की और पाकिस्तान बनाने के बाद

उन की लड़की पारसी युवक से ब्याह कर के भारत में ही रही.

पाकिस्तान के प्रथम प्रधान मंत्री लियाकत अली खां उत्तर प्रदेश के रहने वाले थे. पाकिस्तान की कुल योजना लंदन में बनी और उसे अलीगढ़ मुसलिम विश्वविद्यालय से समर्थन मिला. (पाकिस्तान की मांग स्वीकार हो जाने के उपरांत इस विश्वविद्यालय के एक प्राध्यापक ने एक निबंध में लिखा था, "जो मुसलमान भारत में रहने के लिए बाध्य हो गए हैं, उन्हें स्वतंत्रता के लिए दूसरी लड़ाई लड़नी पड़ेगी और उस में पाकिस्तान से भरपूर सहायता मिलेगी.) मुसलिम लीग को आर्थिक सहायता कानपुर, लखनऊ, हैदराबाद, दिल्ली और मेरठ से अधिक मिलती थी.

पाकिस्तान बनने के बाद भारत के 78 मुसलिम आई.सी.एस. अधिकारी पाकिस्तान गए, जिन में से अनेक की जन्मभूमि पाकिस्तान से बाहर थी. यहां तक कि पंजाब हाईकोर्ट के सब मुसलमान न्यायाधीश पश्चिमी पंजाब चले गए. इन सब के अलावा बड़ी संख्या में मुसलिम शरणार्थी बिहार, पश्चिमी पंजाब तथा

गए. आज इन लोगों को भीषण समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है और वे अपनी द्वितीय श्रेणी के नागरिक बन कर रह गए हैं.

लेकिन जो सूबे पाकिस्तान का हिस्सा बने, उन की क्या प्रतिक्रिया थी? बंगाल के सुहरावर्दी ने जी तोड़ कोशिश की कि बंगाल एक अलग स्वतंत्र राज्य बने, जो सन 1971 में बना. पख्तून नेता खान अब्दुल गफ्फार खां ने पाकिस्तान बनने पर कहा, "इन दुखद परिस्थितियों में स्वतंत्रता प्रेमी पठान कैसे स्वतंत्रता मना सकते हैं?" बलूचों की प्रतिक्रिया पाठक ऊपर पढ़ ही चुके हैं.

इस अप्राकृतिक विभाजन तथा राजनीतिवाजों और प्रशासनिक अधिकारियों एवं धनाढ्यों के स्थान परिवर्तन के कारण पाकिस्तान में भारत के विभिन्न प्रांतों से आए अभिजात वर्ग का शासन छा गया, जो इन आकांक्षाओं से दूर तथा स्वार्थी था. उस ने पाकिस्तान पर उर्दू जबान थोपी, जो पाकिस्तान में कहीं भी बोली नहीं जाती थी.

लेकिन पाकिस्तान में इस अभिजात वर्ग का शासन बहुत दिनों तक नहीं चला. सब से पहले मुहम्मदअली जिन्ना इस दुनिया से उठ गए और कहते हैं कि बीमार 'कायदे आजम' को आखिरी समय कराची के हवाई अड्डे पर मोटर कार तक नहीं मिली और संभवतः उन का प्राणांत मार्ग में ही हो गया.

उन की मृत्यु के दो वर्षों के भीतर ही पाकिस्तान के प्रधान मंत्री लियाकत अली खां को गोली मार दी गई. लियाकत अली खां की मृत्यु के उपरांत पाकिस्तान का शासन गैरपंजाबियों के हाथ से निकल कर पंजाबियों के हाथ में आने लगा और पंजाबियों ने पूरे पाकिस्तान पर छा जाने का प्रयास प्रारंभ कर दिया. सेना में तो प्रारंभ से ही पंजाबियों का आहुत्य था. सरकार में भी मुख्य प्रशासनिक तौर पर उन्हें आसीन किया जाने लगा. इस के प्रतिरिक्त अन्य क्षेत्रों, में विशेषकर आर्थिक और कृषि उद्योग इत्यादि में भी पंजाबियों को प्रबल वरीयता मिली. पंजाबियों ने पाकिस्तान के गैरपंजाबी प्रांतों का जम कर शोषण किया

बंगला देश के स्वतंत्र होने का यह महत्त्वपूर्ण कारण था.

लेकिन बंगला देश के स्वतंत्र हो जाने पर भी पंजाबियों के स्वभाव और शोषण प्रवृत्ति में कोई अंतर नहीं आया और शोषण तथा स्वार्थपूर्ति के लिए पंजाबियों ने सत्ता का बुरी तरह से उपयोग किया. यह शोषण जुल्फिकार अली भुट्टो के शासनकाल में भी चलता रहा, जब कि भुट्टो स्वयं सिंधी थे. इन सब कारणों से पाकिस्तान के विभिन्न प्रांतों के मध्य क्षेत्रीय असमानता उत्पन्न हो गई और देश विभिन्न कौमों के मध्य बंट गया. पाकिस्तान में सिंध का निवासी सिंधी, उत्तरी पश्चिमी सीमा प्रांत का निवासी पठान, बलूचिस्तान का निवासी बलूच है और केवल पंजाब का निवासी अपने को पंजाबी तथा पाकिस्तानी मानता है.

पाकिस्तान से नफरत

बलूच तो अपने को पाकिस्तानी कहलाना भी पसंद नहीं करते. भुट्टो ने भी अपने शासनकाल में वह ऐतिहासिक मौका यों ही निकल जाने दिया, जिस में वह पूरे पाकिस्तान को एक सूत्र में पिरो सकते थे. उन्होंने भी पंजाब और पंजाबी कौम पर ही ज्यादा भरोसा किया और बलूच तथा पठानों को दबाया. यहां तक कि सिंध तक में उन के शासन का विरोध हुआ.

बलूच नेता अताउल्लाह मंगल के अनुसार भुट्टो के शासन के उपरांत जिया उल हक के शासन में भी बलूचियों ने समझौते का प्रयास किया, किंतु फौजी शासकों ने समझौता नहीं किया.

मंगल का कथन है, "इस समय पाकिस्तान में चार कौमों रहती हैं और इन चार कौमों (पंजाबी, सिंधी, पठान और बलूचियों) को बराबरी का हक है. अतः पाकिस्तान के हर क्षेत्र अर्थात् सरकारी सेवा, वित्त, सेनाओं, उद्योग इत्यादि में एक चौथाई हिस्सा बलूचियों को मिलना चाहिए. ऐसे ही बंटवारे से पाकिस्तान को काबू में रखा जा सकता है. पंजाबी, पठान, बलूचिस्तान का

शोधन करना चाहते हैं। उन्हें बलूचिस्तान, तेल तथा खनिज पदार्थ चाहिए और वे उन खानों में काम करने के लिए तैयार हैं। बलूचिस्तान के बाहर से लाते हैं।

बलूचिस्तान में पाकिस्तानी सेना ने अपने खूनी पंजे बलूचिस्तान के आंतरिक क्षेत्रों में फैलाने प्रारंभ कर दिए हैं तथा वह छावनी पर छावनी बनाती जा रही है।

मंगल के अनुसार बलूचिस्तान के 99.9 प्रतिशत प्रशासनिक अधिकारी बाहरी हैं। यहां तक कि खानों, भवन तथा सड़क निर्माण, छावनी इत्यादि के लिए भी श्रमिक बाहर से लाए जाते हैं। इस का मुख्य कारण यह है कि यदि कभी मतदान हो तो बलूचों को बलूचिस्तान में ही अल्पमत में किया जा सके।

अंतरराष्ट्रीय अखाड़ा

बलूचिस्तान में स्वतंत्रता से पूर्व तथा बाद में ईरान, रूस, ब्रिटेन और अमरीका की सदैव दिलचस्पी रही है। ईरानी बलूचिस्तान में शाह रजा पहलवी के शासन के विरुद्ध आवाज उठी थी, किंतु उसे सख्ती से दबा दिया गया। शाह की सलाह पर ही भूटो ने बलूचियों के प्रति कड़ा रुख अपनाया था। उधर रूस गरम पानी के बंदरगाह की तलाश में सदियों से मकरान समुद्र तट को लालच की निगाह से देखता आ रहा है।

अफगानिस्तान में रूसी फौजों के प्रवेश एवं जम जाने के कारण इस क्षेत्र के तनाव में वृद्धि हुई है। अफगान स्वतंत्रता सेनानियों को शस्त्रास्त्र भी बलूचिस्तान के माध्यम से उपलब्ध कराए जाते हैं। इस कारण बलूचिस्तान अंतरराष्ट्रीय शक्तियों के आपसी तनाव का केंद्रबिंदु बनता जा रहा है।

एक समाचार के अनुसार मकरान तट पर ग्वादर बंदरगाह के समीप अमरीकी सैनिक अड्डा बन रहा है। उधर ईरान पाकिस्तान के शिया मुसलमानों को आर्थिक और शस्त्रों की सप्लाई कर रहा है। यह सहायता भी बलूचिस्तान से हो कर जाती है। कुछ मास पूर्व कराची में हुए शियासुन्नी दंगों में अग्नेय अस्त्रों का उपयोग हुआ था।

मुक्ता

अनुसार अफगानिस्तान की सीमा पर कोई भी व्यक्ति अत्याधुनिक शस्त्रास्त्र खरीद सकता है। अमरीकी राइफल तथा रूसी राइफल दोनों ही आसानी से उपलब्ध हैं।

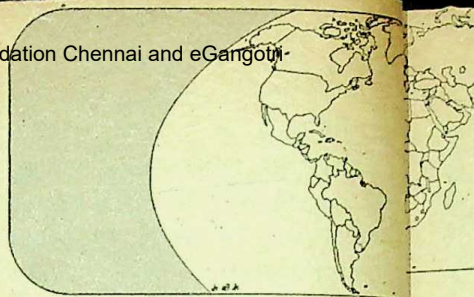
बलूचिस्तान का भविष्य

लेकिन रूस और ईरान बलूच आंदोलनकारियों को कितनी सहायता देगा, इस का अनुमान करना कठिन है। यद्यपि यह सही प्रतीत होता है कि काबुल में 6,000 से 8,000 बलूच (मारी और मंगल कबीले) सैन्य प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं तथा इन्हें रूसी हथियारों से लैस कर रहे हैं। ईरान से भी कुछ सहायता मिल रही है, लेकिन इस सहायता से इसलामाबाद के शासक की नींद तो हराम हो सकती है, किंतु बलूचिस्तान की स्वतंत्रता प्राप्त करने की इच्छा पूरी होती नहीं लगती।

क्या रूस अफगानिस्तान की भाँति बलूचिस्तान में भी हस्तक्षेप कर सकता है। एक बलूच नेता का यह कथन कि पंजाबी गुलामी से रूसी गुलामी कहीं बेहतर होगी। भविष्य की ओर संकेत अवश्य करता है, किंतु क्या अमरीका तथा अन्य ताकतें उसे ऐसा करने देंगी? शायद नहीं। इस का मुख्य कारण यह है कि यदि रूसी मकरान समुद्र तट पर स्थित हो गए तो फारस की खाड़ी के मार्ग पर भी उन का आधिपत्य हो जाएगा और यह स्थिति अत्यंत भीषण होगी, क्योंकि इस मार्ग से ही खाड़ी के देशों से तेल की निकासी होती है। फारस की खाड़ी के देशों के तेल पर निर्भर राष्ट्र ऐसी स्थिति कभी नहीं होने देना चाहेंगे।

यही बलूचिस्तान की समस्या का सब से महत्त्वपूर्ण पक्ष है और इस पक्ष के कारण ये राष्ट्र (अमरीका, ब्रिटेन, फ्रांस, पश्चिमी जर्मनी, जापान और चीन) पाकिस्तान को शासकों को भरपूर सहायता देंगे, जिस से पाकिस्तान के और टुकड़ें न हो सकें और इस के लिए बलूचिस्तान को अपनी स्वतंत्रता के लिए अभी न जाने कब तक प्रतीक्षा करना पड़ेगी।

दुनिया भर की



नग्नता को कानूनी मान्यता

अफलातून तथा अरस्तू जैसे महान दार्शनिकों तथा विचारकों एवं सिकंदर जैसे महान योद्धा का यूनान (ग्रीस) देश इतिहास में बड़ा प्रसिद्ध है। इस देश की विश्व के ज्ञान तथा संस्कृति के उत्थान में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। प्राचीन यूनान की राजनीति, दर्शन, प्रशासन, इतिहास, शिल्पकला आदि ने यूरोप के साथ-साथ दूसरे देशों को भी प्रभावित किया था।

प्राचीन काल में ज्ञानविज्ञान का दर्शन देने वाला यह देश आधुनिक काल में नग्नता का नया दर्शन प्रस्तुत कर फिर से चर्चा का विषय बन गया है। ग्रीस की संसद में हाल में नग्नता को कानूनी मान्यता दिए जाने की बात सुनने में आई है। इस कानून का यहां के चर्च तथा अन्य धार्मिक संगठनों ने घोर विरोध किया है, लेकिन जैसा कि सुनने में आया है, संसद ने नग्नता से संबंधित बिल को पास कर दिया है। इस बिल के अनुसार यहां के होटलों तथा पर्यटन केंद्रों को लाइसेंस जारी किए जाएंगे, यहां पर्यटक बड़े आराम से समुद्री तटों, तथा होटलों के तालाबों में नंगे नहा सकेंगे।

पिछले कुछ अरसे से ग्रीस आर्थिक संकट में फंसा हुआ है। आर्थिक संकट से उस का पर्यटन उद्योग भी बुरी तरह प्रभावित है। ग्रीस ने यह नया कदम यूरोप के पर्यटक प्रेमी लोगों को आकर्षित करने तथा अपने आर्थिक संकट को थोड़ा बहुत हल करने के लिए

उठाया है। पिछले कुछ अरसे से यहां पर्यटन से होने वाली आय में 40 से 50 प्रतिशत तक गिरावट आई है।

ग्रीस में और देशों की तरह नग्नता पर प्रतिबंध रहा है और नंगे रहने पर तीन सप्ताह की जेल तथा आर्थिक जुर्माने का प्रावधान है। इस नए बिल से इस मामले में अब काफी नरमी आ जाएगी।

पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए ग्रीस का नया नग्नता बिल दूसरे देशों को कितना प्रभावित करेगा यह बात अभी अनिश्चित है। हां, इस बिल की फिलहाल खूब चर्चा है।

चीन में बढ़ती फांसियां

कम्युनिस्ट चीन में अपराध और अपराधी तेजी से बढ़ रहे हैं। हाल में 30 अपराधियों को फांसी की सजा सुनाई गई है। कहा जाता है कि पिछले कुछ वर्षों के दौरान एक साल के अंदर इतनी अधिक संख्या में मृत्युदंड कभी नहीं दिए गए जितने पिछले साल (1982) दिए गए हैं। यह तो बात है फांसी की। अकेले सन 1983 के चार महीनों में आर्थिक अपराध के 1,92,000 मामले पकड़े गए हैं। इस से यह बात तो साफ हो गई है कि कम्युनिस्ट शासन प्रणाली से लोग खुश नहीं हैं और वे लोग जो इस व्यवस्था में

नवंबर (प्रथम) 1983

चमत्कारी फायदा नहीं हुआ है।

चीन का सत्तारूढ़ नेतृत्व वर्ग अपनी स्थिति को सुदृढ़ बनाए रखने के लिए और उभरते नए नेताओं की बोलती बंद करने के लिए हमेशा कोई न कोई 'शुद्धि अभियान' चलाता रहता है। इस वर्ष भी 'शुद्धि अभियान' चलाया जा रहा है। हजारों लोगों को जेल में बंद किया जा रहा है। जघन्य अपराध करने वालों को गोली से उड़ाया जा रहा है।

कम्यूनिस्ट पार्टी की केंद्रीय अनुशासन समिति की रिपोर्ट के आंकड़े चौंकाने वाले हैं। हेराफेरी तथा तस्करी में 30 हजार अपराधी पकड़े गए हैं। यही नहीं, लाल झंडा उठा कर चलने वाले पार्टी के 8,500 लोगों को आर्थिक अपराधी मान कर पार्टी से निकाल दिया गया है। सब से मजेदार बात तो यह है कि पूंजीवादी देशों में पनपने वाली सभी बुराइयां अब कम्यूनिस्ट चीन में तेजी से पनपने लगी हैं। हेराफेरी, तस्करी, बोगस अनुसंधान संस्थान, मिलावट, चोरबाजारी सभी कुछ चीन में होने लगा है। चीन में एक और नई बात जो हो रही है, वह यह कि पिछले सालों में बंद अपराधियों को छोड़ा जा रहा है और नए अपराधियों को अंदर ठूसा जा रहा है।

स्वाजीलैंड की दुविधा

दक्षिण अफ्रीका तथा मोजाम्बिक से घिरा दक्षिण पूर्वी अफ्रीका का एक छोटा देश स्वाजीलैंड रानियों की राजनितिक चालों में उलझा हुआ है। गत वर्ष स्वाजीलैंड के राजा

मुक्ता



राजा सोबुजा : सवाल उत्तराधिकार का.

सोबुजा का निधन हो गया था। सोबुजा की 100 रानियां और 600 बच्चे हैं। अब स्वाजीलैंड में गद्दी हथियाने का खेल रानियों के बीच शुरू हो गया है।

सोबुजा के निधन के बाद उन की सब से बड़ी रानी डेलिवे के हाथ में सत्ता आ गई थी। डेलिवे ने पांच लाख आबादी वाले स्वाजीलैंड को आधुनिकता के रास्ते पर लाने के लिए तरहतरह की योजनाएं बनाईं। लेकिन यहां के पुरातनपंथी कबीलों के असरदार सरदारों को यह बात पसंद नहीं आई। डेलिवे स्वाजीलैंड में 'महान हस्तिनी' के नाम से प्रसिद्ध है। 53 वर्षीया इस रानी को उखाड़ने के लिए कबीलों के सरदारों ने महल में दूसरी रानियों के साथ षड्यंत्र रचा और उसे सत्ता से हटा कर राजा की कुर्सी पर बैठाया एक 15 वर्षीय स्कूल छात्र को।

इंगलैंड के एक स्कूल में पढ़ने वाला यह छात्र सोबुजा की ही एक 34 वर्षीया रानी का लड़का है। पुरातनपंथी कबीलों के सरदारों अपने स्वार्थों की खातिर बूढ़ी रानी को दूसरी रानी से पिटा कर गद्दी पर अपना दबदबा

संसार का कामकाज कबाली के सरदारों की सहायता से चलाया जा रहा है।

स्वाजीलैंड में संवैधानिक राजतंत्र स्थापित है। राजा प्रधान मंत्री की नियुक्ति करता है। फिलहाल नए राजनीतिक परिवर्तन से 100 रानियों और 600 बच्चों में अपने भविष्य के प्रति अनिश्चितता पैदा हो गई है। सभी रानियां गद्दी हथियाने के लिए अब नई नई चालें चलने लगी हैं।

हांगकांग की घड़ियां

हांगकांग में बनी छोटीछोटी घड़ियां इन दिनों बड़ी सस्ती मिल रही हैं। पिछले काफी वर्षों से हांगकांग के घड़ी निर्माता स्विटजरलैंड के घड़ी निर्माताओं के सहयोग से इस उद्योग में काफी प्रगति कर चुके हैं, लेकिन यह प्रगति रही है नकल करने की। इन दिनों हांगकांग में बनने वाली अधिकांश घड़ियां स्विटजरलैंड में बनने वाली घड़ियों की नकल हैं।

इन दिनों हांगकांग का घड़ी उद्योग कानूनी विवादों के कारण चौपट होने की स्थिति में आ गया है। इस स्थिति की शुरुआत हुई अप्रैल 1983 से, जब हांगकांग के एक बड़े शानदार होटल में घड़ियों की प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी में रखी घड़ियों को देख कर स्विटजरलैंड की कुछ घड़ी बनाने वाली कंपनियों ने अपना माथा पीट लिया। उन के देश की कुछ प्रसिद्ध घड़ियों की हूबहू नकल कर बाजार में नई घड़ियों पेश कर दी गईं।

इस प्रदर्शनी के बाद स्विटजरलैंड की अनेक घड़ी कंपनियों ने हांगकांग में घड़ी बनाने वाली कंपनियों पर मुकदमे ठोक दिए। मुकदमे भी एक या दो नहीं, पूरे 52 मुकदमे अदालतों में चल रहे हैं। नौ मुकदमे स्विटजरलैंड में चल रहे हैं और 43 हांगकांग में। अदालतों में मुकदमों के दायर होते ही हांगकांग का घड़ी उद्योग बुरी तरह से

बंद भी हो गई है। कुछ कारखानों में उत्पादन आधा रह गया है और कुछ बंद होने की स्थिति में पहुंच गए हैं।

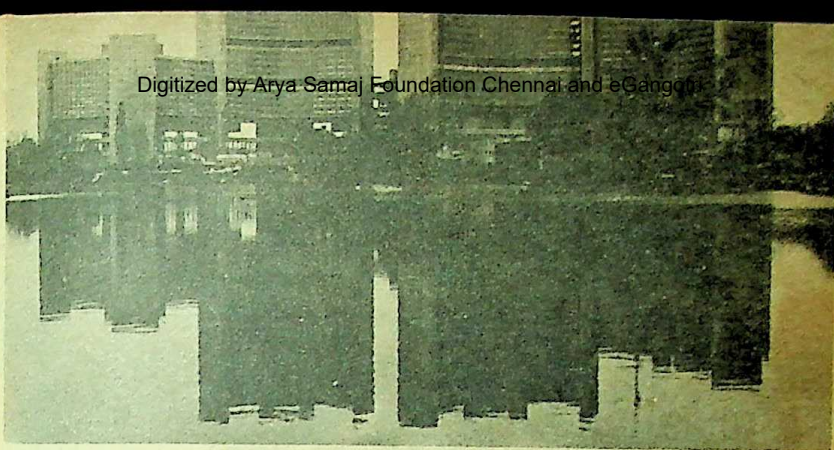
विश्व में घड़ियों के कुल उत्पादन का लगभग आधा स्विटजरलैंड में होता है। हांगकांग में घड़ियों का उत्पादन होने से स्विटजरलैंड का उत्पादन एकदम घटने लगा था। यही नहीं, विश्वसनीयता में भी भ्रम पैदा हो गया था।

खून में डूबी हरी किताब

अफ्रीका की राजनीति में इन दिनों लीबिया के राष्ट्रपति मुअम्मर गद्दाफी अपनी अजीबोगरीब हरकतों के कारण हास्यास्पद बने हुए हैं। मिस्र, सूडान, ट्यूनिशिया, अलजीरिया तथा चाड के बीच बसे इस देश में तेल काफी निकलता है। तेल की बेशुमार दौलत को ठिकाने लगाने और अफ्रीका देशों में नेता बनने के चक्कर में कर्नल गद्दाफी अपने पासपड़ोस व दूर के देशों में उखाड़पछाड़ की क्रांति का निर्यात कर रहे हैं।

कुछ वर्ष पूर्व चीन के भूतपूर्व सर्वेसर्वा माओत्सेतुंग ने एक लाल किताब तैयार की थी, जिस में एक नए दर्शन की व्याख्या थी। कर्नल गद्दाफी ने भी एक हरी किताब तैयार की है, जिस में एक नए दर्शन का उल्लेख है।

इन दिनों कर्नल गद्दाफी अपनी हरी किताब पासपड़ोस के देशों में खूब बंटवा रहे हैं और हताश, सत्ताहीन अंसतुष्ट राजनीतिवाजों की धन और शस्त्रों से सहायता कर रहे हैं। गद्दाफी दुनिया में इसलाम का फैलाव कर के खुमैनी बनने का भी सपना देख रहे हैं। हरी किताब के मुताबिक गद्दाफी ने अपना नया राजनीतिक दर्शन दूसरों देशों में जोरजबरदस्ती से फैलाना शुरू कर दिया है। पिछले दिनों सूडान के राष्ट्रपति का तख्ता पलटवाने का इन्होंने असफल प्रयास करवाया। इथियोपिया में नई हलचल पैदा की और सोमालिया के राष्ट्रपति को



विएना : समर्लिंग कामियों के पांचवें विश्व सम्मेलन का गवाह

हटवाने की कसम खाई.

कर्नल गद्दाफी केनिया, उगांडा, जिवाब्वे, नाइजीरिया, घाना, अपर वोल्टा, आइवरी कोस्ट आदि देशों में उथलपुथल करवाने के लिए अब हर तरह की सहायता कर रहे हैं. चाड में गद्दाफी खून की होली खेल रहे हैं. चाड में भारी सैनिक हस्तक्षेप को देखते हुए अमरीका ने अपना विमानवाहक जहाज 'आइजन हावर' भूमध्य सागर की उस खाड़ी में भेज दिया है जिसे गद्दाफी अपनी जागीर मानते हैं.

समर्लिंग कामियों का सम्मेलन

मध्य यूरोप का देश आस्ट्रिया इतिहास में काफी चर्चित रहा है. प्रथम और द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान यह राजनीतिक उथलपुथल का कारण बना है. आज भी यहां संयुक्त राष्ट्र संघ के कई संगठनों के मुख्यालयों के कारण इस की चर्चा होती है.

गत जुलाई में आस्ट्रिया की राजधानी विएना में पांचवां विश्व समर्लिंग कामियों का सम्मेलन हुआ. इस सम्मेलन में 35 औद्योगिक तथा पांच समाजवादी देशों के

प्रतिनिधि शामिल हुए. इंडोनेशिया का एक प्रतिनिधि भी जैसेतैसे इस सम्मेलन में पहुंच गया. सम्मेलन में भारत को भी शामिल होने का निमंत्रण दिया गया था, लेकिन भारत ने इस में भाग नहीं लिया.

समर्लिंग कामियों का यह सम्मेलन बड़ी धूमधाम से संपन्न हुआ. कुछ महिला संगठनों ने सरकार से इस सम्मेलन पर प्रतिबंध लगाने की मांग की थी—लेकिन सरकार ने उसे नहीं माना. इस सम्मेलन की समाप्ति पर एक प्रस्ताव पास किया गया, जिस में सन 1984 को समर्लिंग कामियों के वर्ष के रूप में मनाने, विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा उल्लिखित रोगों की सूची में से समर्लिंग कामुकता को निकालने की पुरजोर अपील की गई. सम्मेलन ने इस बात का भी निर्णय किया कि सारे प्रशिक्षी यूरोप के आगामी चुनावों में समर्लिंग कामुकता के समर्थक उम्मीदवार खड़े किए जाएंगे.

सम्मेलन में इस बात पर खेद प्रकट किया गया कि कुछ देशों ने समर्लिंग कामुकता को अब भी दंडनीय अपराध घोषित कर रखा है. सम्मेलन में पारित प्रस्ताव में समर्लिंग कामियों के आपसी संबंध के प्रचार पर ध्यान देने पर विशेष जोर दिया है. •



कहानी • मो. मबीन

जावेद सवेरे से ही अमित के घर जाने की तैयारी में लग गया था। अमित ने उसे दीवाली पर घर बुलाया था और भाभी ने तो विशेष तौर पर उस से आने के लिए कहा था।

अमित उस का मित्र था। वे कालिज में साथसाथ पढ़े थे। अमित उस का पड़ोसी भी था, इसलिए उन का ज्यादा समय एक साथ ही बीतता था।

अमित को एक नौकरी मिल गई थी और उस का विवाह हो गया था, परंतु वह आगे पढ़ता ही रहा था। अमित की तरह अमित की पत्नी से भी उस की खूब जमती थी। वह उसे भाभी कहता था। भाभी यानी शीला बड़ी ही हंसमुख थी। कहीं बाहर धूमने जाना होता था तो वे अकसर साथ ही जाते थे। फिर कुछ दिन बाद उसें एक अच्छी नौकरी मिल गई थी, परंतु अमित ने अपनी नौकरी छोड़ दी थी और उसके पिताजी का देहांत हो गया था और

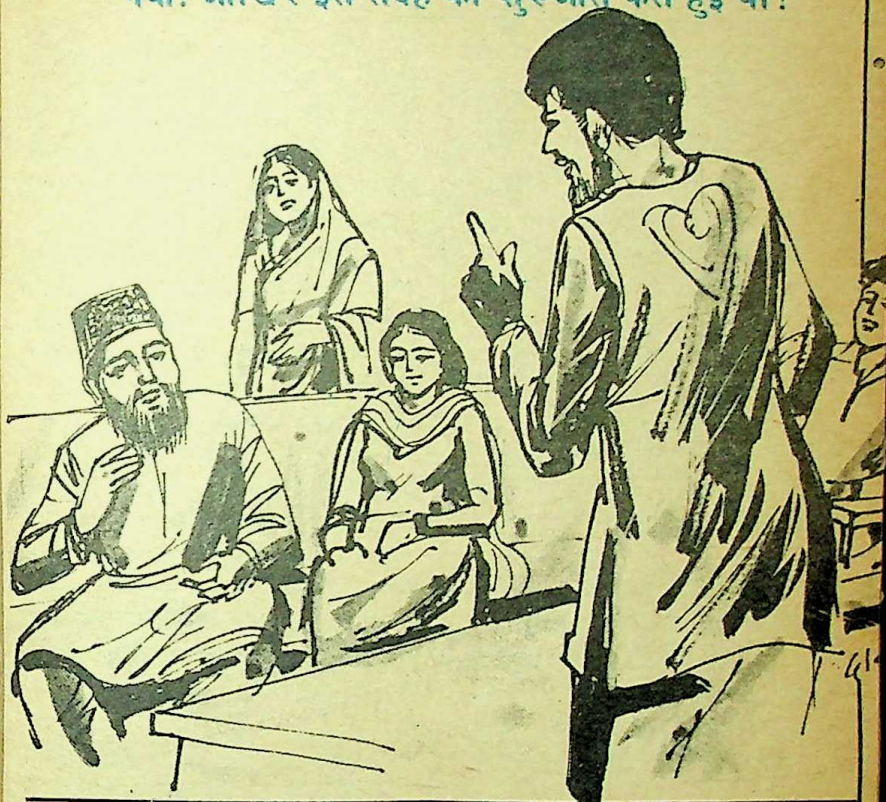
वहां खेतों की देखभाल करने वाला कोई नहीं था। इसलिए उस ने शहर में रह कर नौकरी करने के बजाए खेती करने को ही बेहतर समझा था।

अमित के चले जाने से उस को दुख हुआ था, क्योंकि उस का एक अच्छा दोस्त उस से दूर चला गया था, परंतु वे एकदूसरे को भूले नहीं थे। उन में पत्र व्यवहार जारी रहता था। कभी अमित का कोई पत्र आ जाता था तो कभी शीला भाभी का। किसी काम से अमित शहर आता तो उस से मिले बिना नहीं जाता था। जाते समय हर बार वह उस से गांव आने को कहता था, परंतु वह लाख प्रयत्न करने पर भी अमित की इच्छा पूरी नहीं कर पाता था।

इस बार अमित आया था तो अपने और शीला की ओर से धमकी दे गया था कि यदि दीवाली पर वह नहीं आया तो उस से संबंध तोड़ दिए जाएंगे। इसलिए इस बार उस ने शीला की बात मान ली और गांव आ गया। वह जानता था कि अमित और शीला

नवंबर (प्रथम) 198

एक दीवाली ऐसी भी आई जब जावेद के मन में सलमा को ने कल नैक दुआएं रोते-रोते बर हो गया. आखिर इस संदेह की शुरुआत कैसे हुई थी?



उत्सुकता से उस की राह देख रहे होंगे.

"क्या बात है बेटे कहीं जाना है क्या?"

उसे तैयारी करता देख कर उस की अम्मा ने पूछा था.

"हां अम्मा", उस ने उत्तर दिया था.

"अमित के गांव जा रहा हूं, धरनपुर."

"धरनपुर" यकायक अम्मा की आंखें चमकने लगी थीं. "सच बेटे."

"हां अम्मा" उस ने उत्तर दिया था.

धरनपुर जा रहे हो तो उन के घर भी हो आना... वे लोग इतने बुरे नहीं हैं, जितना तुम समझते हो... वे तो अब भी सलमा के लिए तुम्हारी ओर से 'हां' की आस लगाए हुए हैं...

मुक्ता

"तुम उन के घर जाने की बात करती हो अम्मा," वह अपने होंठ काट कर बोला था, "मैं तो उन की सूरत भी देखना पसंद नहीं करूंगा. जिन लोगों ने मेरा मजाक उड़ाया. मेरा अपमान किया. तुम उन लोगों से मिलने की बात कर रही हो?"

"परंतु बेटे, वे सलमा या सलमा के अम्माअब्बा तो नहीं थे."

"अम्मी," उसे क्रोध आ गया था. "यदि तुम ने उन लोगों की और वकालत की तो मैं धरनपुर जाने का इरादा ही बदल दूंगा."

"नहीं बेटे ऐसा न करना." अम्मी ने कहा, "तुम जानो, जैसा तुम्हारे

वह तैयारी कर के चल पड़ा था।

गाड़ी मिल गई थी। जगह भी थी।

इसलिए उस की यात्रा बड़े आराम से हुई थी। दोपहर के समय वह धरनपुर पहुंच गया था।

आंगन में ही शीला ने उस का स्वागत किया था। "वाह तुम आ गए... यदि नहीं आते तो..."

"तुम्हारी बात कहीं टाली जा सकती है, भाभी," वह बोला तो शीला हंस पड़ी थी। फिर उस से हाथमूंह धोने को कहा था और स्वयं उस के लिए भोजन लगाने चली गई थी, पर भोजन की थाली एकदूसरी लड़की ले कर आई थी। उसे देखते ही वह चौंक पड़ा था और उस के मस्तिष्क में धमाके होने लगे थे।

वह सलमा ही थी।

"यह यहां कैसे?" वह सोचने लगा था। थाली दे कर सलमा चुपचाप चली गई थी।

परंतु सलमा का अमित के घर होना उस की समझ में नहीं आ रहा था।

वह चुपचाप भोजन करने लगा था। उसे जिस चीज की जरूरत पड़ती थी, सलमा ही ला कर देती थी। उसे इस प्रकार सलमा का बारबार आना अच्छा नहीं लग रहा था।

"भाभी कहां है?" उस ने तेज स्वर में पूछा था।

"वह एक जरूरी काम में लगी हैं। सलमा ने सिर झुका कर कोमल स्वर में उत्तर दिया था।

वह भोजन कर के उठा था और जब हाथ धो चुका था तो सलमा ने जल्दी से उस की ओर तौलिया बढ़ा दिया था।

उसे फिर सलमा को देख कर क्रोध आ गया था और तौलिया झटके से सलमा की ओर फेंक कर वह अमित को ढूंढने के लिए खेतों की ओर चल दिया था। उसे पता था कि सलमा के घर वाले भी उसी गांव में रहते हैं, परंतु अमित के घर सलमा से सामना हो जाएगा, यह उस ने सोचा भी नहीं था।

कुछ दिन पहले उस के और सलमा के

रिश्ते की बात चली थी। अम्मा गांव जा कर सलमा को पसंद भी कर आई थीं। सलमा मोक्ष की इच्छा रखती थी, सारी जायदा की अकेली वारिस। सलमा के अब्बा गांव की धनी लोगों में गिने जाते थे।

अम्मा की नजर में सलमा सुशिक्षित सुशील थी, फिर सलमा के घर वालों की ओर से बात चली थी। इसलिए उस ने उस पर ध्यान ही नहीं दिया था। एक दिन सलमा चाचा और कुछ दूसरे रिश्तेदार उसे देख कर सलमा के साथ उस के घर आए थे।

इस प्रकार वे दोनों एकदूसरे को देख कर बातचीत कर के अपने जीवन के संबंध निर्णय ले सकते थे और सलमा के घर वाले उसे देख सकते थे; पर जिस समय वह दफत से आया था, उसी समय वे लोग बैठक में वे अम्मा से बातें कर रहे थे।

अपने कमरे की ओर जाते हुए उस एक उचटती सी दृष्टि उन लोगों पर डाली थी उस की नजरें सलमा पर जा कर टिक गई थी।

वह सिर झुकाए बैठी थी। उस की सादगी और सुंदरता देख कर वह उस पर मोहित हो उठा था। उस ने अपनी होने वाली जीवनसंगिनी की जो कल्पना की थी, सलमा उसी के अनुरूप थी।

वह अपने कमरे में आ कर कपड़े बदलने लगा था, परंतु उस के कान दूसरे कमरे में हो रही बातों पर लगे थे।

"जावेद क्या करता है?" सलमा चाचा पूछ रहे थे।

"एक कंपनी में एकाउंटेंट है," अम्मा ने जवाब दिया था।

"मतलब जावेद मियां मुंशीजी के काम करते हैं।" किसी ने कहा था तो उस का खून खौल उठा था और फिर जिस अपमानजनक स्वर में यह कहा गया था, वह उसे सहन नहीं हुआ था।

"कितने पैसे मिलते हैं उसे?" सलमा चाचा ने पूछा था।

"12 सौ रुपए।" अम्मा ने जवाब दिया था।



रंगोली बनाने में सलमा शीला का साथ दे रही थी.

"अरे, 12 सौ रुपए." कोई बोला था, "इतने में क्या होता है, इतने रुपए तो हर मास सलमा के घर के नौकरों को तनखाह के रूप में दिए जाते हैं."

अब वह और सहन नहीं कर सका था. गुस्से में भरा वह उस कमरे में आया था और दहाड़ कर बोला था.

"सुनिए जनाब, मैं मुंशी हूं, मेरी तनखाह तुम्हारे घर के नौकरों के बराबर है, फिर क्यों अपने घर की लड़की का रिश्ता ले कर यहां आए हो. जाओ कोई लखपति तलाश करो. आप लोगों ने मेरी बेइज्जती की है. इसी वक्त मेरे घर से निकल जाइए, वरना अच्छा नहीं होगा...."

उस को गुस्से में देख कर सब घबरा गए थे. सलमा का चेहरा पीला पड़ गया था.

"तुम्हारा लड़का बड़ा बदतमीज है.

मेहमानों के साथ किस तरह पेश आना चाहिए, उसे यह भी नहीं आता." सलमा के चाचा नाकभौं चढ़ा कर अम्मा से बोले थे.

"देखिए जनाब," वह गरज कर बोला था, "अभी मैं ने सिर्फ जवान से बदतमीजी की है. मेरे हाथ भी बदतमीजी करें, इस से पहले ही आप लोग यहां से चले जाइए."

अम्मा बीचबचाव करती रही थीं, पर वे लोग भिन्नाते हुए चले गए थे.

"अम्मा मैं कह रहा हूं अगर अब ये लोग घर आए तो....वे लोग अपने घर के अमीर होंगे, लेकिन हमारी भी कुछ इज्जत है. अपनी दौलत से वे हमारा मजाक उड़ाएं मैं इसे सहन नहीं कर सकता. दौलत के घमंड में वे कितनी बदतमीजी से बातें कर रहे थे. उस लड़की के दिमाग में भी अपनी दौलत का घमंड भरा होगा, वह तो इन से ज्यादा बदतमीज होगी. मैं

उसे क्रोध में देख कर अम्मा ने उस से कुछ नहीं कहा था। कुछ दिनों के बाद अम्मा के अब्बा का पत्र आया था उस में लिखा था, "मेरे भाई और भतीजों ने जो बदतमीजी की उस के लिए मैं आप से माफी मांगता हूं, आप जावेद को गांव ले आइए हम उसे सब समझा देंगे।"

"लेकिन पत्र देखते ही वह भड़क उठा था। मैं कह चुका हूं कि मैं अब उन की सूरत भी नहीं देखना चाहता तो उस बदतमीज लड़की से विवाह के बारे में कैसे सोचूं?"

"नहीं बेटे, सलमा ऐसी नहीं है। वह बहुत अच्छी लड़की है। मैं उसे अच्छी तरह जानती हूं।" अम्मा बोली थीं।

परंतु वह नहीं माना था।

आज उसी सलमा को अमित के घर देख कर उस का खून खौल उठा था। जब अमित मिला था तो एकदो बातों के बाद वह उस से बोला था, "सलमा तुम्हारे घर कैसे है?"

"सलमा, अच्छा वही सलमा जिस के साथ तुम्हारे रिश्ते की बात चल रही थी और उस के चाचा और भाइयों की बदतमीजी की सजा तुम उस बेचारी को दी, तुम ने रिश्ते से इनकार कर दिया। अरे भई वह शीला की सहेली है। उसी ने उसे दीवाली के लिए घर बुलाया है...."

अमित की बात का उस ने कोई उत्तर नहीं दिया था। वे दोनों घर की ओर चल दिए थे।

अचानक उस का पैर फिसला और वह गीले खेत में जा गिरा था। उस के सारे कपड़े खराब हो गए थे।

"यह क्या मसीबत है," बड़बड़ाते हुए वह उठने का प्रयत्न करने लगा था। "मैं तो यह सोच कर एक ही जोड़ा लाया था कि एक ही दिन रुकना है। अब क्या इन कपड़ों में रहूं...."

"कोई बात नहीं...." उसे देख कर अमित की हंसी नहीं रुक रही थी। "तुम मेरे

"तुम्हारे कपड़े," वह चिढ़ कर बोला था। "तुम्हारे कपड़े मेरे कैसे आ सकते हैं।"

घर आने तक वह कई लोगों की हंसी-निशाना बना था। जैसे ही उस ने आंगन कदम रखा था, उसे देख कर आंगन में खड़ी शीला तो जोरजोर से हंसने लगी थी, पर सलमा धीरे से मुसकरा दी थी। उसे शीला हंसना तो अच्छा लगा था, परंतु सलमा मुसकान उसे अच्छी नहीं लगी थी।

झेंपाझेंपा सा वह भीतर आया था। सलमा भी भीतर चली आई थी और बोली थी, "शीला ने कहा है कि आप कपड़े उतार दीजिए मैं धो डालती हूं। शाम तक सूजाएंगे।"

"आप कपड़े धोएंगी?" वह व्यंग्य बोला था।

"जी," सलमा आश्चर्य से उसे देख लगी थी।

"आप कष्ट क्यों करती हैं। आप कोमल हाथ यह काम नहीं कर सकेंगे। आप तो लखपति बाप की बेटी हैं। आप की सेवा करने के लिए तो कई नौकर हैं और आप को छोटा सा काम करना चाहती हैं।"

उस की बात सुन कर कुछ कहने के लिए सलमा के होंठ फड़फड़ाए थे, परंतु फिर उस ने अपने होंठ भींच लिए थे। उस की आंखों में आंसू भर आए थे।

जावेद ने कपड़े उतार कर उसे दे दिए थे। उसे उस समय बड़ा आश्चर्य हुआ था। उस ने सलमा को अपने हाथों से कपड़े धोए हुए देखा था। वह तो सोच रहा था कि धनदौलत पर अभिमान करने वाली लड़की इतना छोटा काम अपने हाथों से कर ही नहीं पाएगी। वह देर तक उसी के बारे में सोच रहा था। फिर उस ने सोचा था कि क्यों न नींद ले ली जाए। शरीर पर कपड़े भी नहीं इसलिए कहीं जाया भी नहीं जा सकता। यह सोच कर वह सोने लगा था।

जब उस की आंख खुली थी तो उस सलमा को कमरे की सफाई करते हुए पाया।

दीवालों की रात

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्योति बनो
मेरे जीवन की
अमर प्यार की बाती बन कर
जला करूंगा साथ

मानो मेरी बात
दीवाली की रात.

नजर नजर का फेर
मुझे तुम समझो अपना ही
मुझे लगेगा
सच्चा हो गया
जैसे सपना ही
पलक उठाओ
पास भी आओ
बहक रहे जज्बात

मानो मेरी बातें
दीवाली की रात.

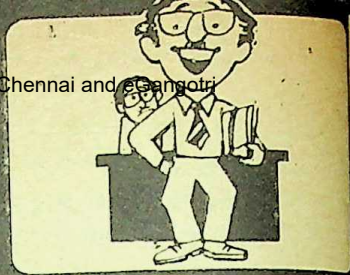
प्रेम पंथ में
जलोखिलो तुम
बन कर फुलझड़ी,
बातें बताओ
गुमसुम हो कर.
क्यों हो दूर खड़ी.
मन के आंगन
झूम रही है
खुशियों की बारात

मानो मेरी बात
दीवाली की रात.

—पूरन सरमा



दार्शनिक दफ्तर



मैं सिनेमा की दो टिकटें ले कर बिना किसी पूर्व कार्यक्रम के अपने मित्र के कार्यालय पहुँच गया। मित्र भी सिनेमा देखने को मान गए और छुट्टी हेतु अपने अधिकारी के पास पहुँच कर याचना भरे शब्दों में बोले, "साहब, अचानक, एक अत्यंत आवश्यक कार्य आ पड़ा है....आज दिन का अवकाश चाहिए."

अधिकारी ने काम की अधिकता और अपनी व्यस्तता दर्शाते हुए पहले मना किया फिर अनुमति दे दी। चलते समय यह भी कह दिया कि आज तुम्हारे कारण मुझे काफी देर तक बैठ पड़ेगा। कुछ देर बाद ही हम वातानुकूलित छविगृह में चलचित्र का आनंद ले रहे थे। मध्याह्न हुआ। बाहर आए और यह देख कर हम दोनों स्तब्ध रह गए कि अत्यधिक व्यस्त और काम की अधिकता का रोना रोने वाले वह अधिकारी महोदय भी एक महिला के साथ सिनेमा घर बाहर निकल रहे थे जब नजर चार हुई तो झेंपते हुए बोले, "सब चलता है, भई।"

—पुष्पहंस

*

मेरे कार्यालय में एक कर्मचारी बातबात पर चिढ़ता था। एक दिन उस कर्मचारी का कपड़ा मुझ से पड़ा। उस दिन मैंने भी उसे चिढ़ कर जवाब दिया। तो वह कहने लगा, "चिढ़ते क्यों हो सही ढंग से जवाब दो।" मैंने कहा, मैं तो आज ही चिढ़ा हूँ, तुम तो रोजाना चिढ़ते हो। उस दिन के बाद उस ने कभी चिढ़ कर बात नहीं की।

—जीवनसिंह भादविक

*

हमारे कार्यालय में गणतंत्र दिवस के अवसर पर खेल आयोजित किए गए तथा कोष राशि कम होने के कारण पुरस्कार में केवल पेन दिए गए। भाग लेने वाले सभी क्लर्क थे। क्लर्क मेरे पास आ कर बोला, "साहब, हम लोगों को इनाम में पेन ही क्यों दिए गए। तभी पास ही खड़ा एक निरीक्षक बोला पड़ा, "ताकि आप लोगों को अपनी बाबूगीरी एहसास बना रहे।"

—राजपाल

नौकरीपेशा व्यक्तियों को और किसी कार्यवश दफ्तरों में जाने वालों को दफ्तर में अनेक मनोरंजक स्थितियों से गुजरना पड़ता है, और कई बार तो किस्सा बहुत ही दिलचस्प बन जाता है। क्या आप की दृष्टि में कोई इस प्रकार की घटना आई है, जो रोचक हो?

आप ऐसे संस्मरण 'मुक्ता' के लिए भेजिए। प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण के लिए ₹ 100 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी। पत्र के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें।

पत्र इस पते पर भेजिए : मुक्ता, दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली-110055.

बढ़ते बच्चों की जरूरत कॉम्प्लान

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिर्फ
कॉम्प्लान® में ही
२२ अत्यावश्यक
पोषक तत्व हैं
जिनकी उनकी
रोज़ाना जरूरत है

बढ़ते बच्चों की खास
जरूरतें होती हैं, कॉम्प्लान
उन्हें सर्वोत्तम प्रोटीन के साथ
साथ २२ अन्य अत्यावश्यक
पोषक तत्व भी देता है, जिनकी
बच्चों को बढ़ती उम्र में जरूरत
रहती है. ध्यान रहे कॉम्प्लान ही
वह नियोजित आहार है जिसकी
डॉक्टर ज्यादातर सिफ़ारिश
करते हैं.

कॉम्प्लान चॉकलेट, केसर-इलायची
और स्ट्रॉबेरी के स्वादभरे
जायकों में तथा प्लेन भी मिलता है.



लिरास-GLC. 6-1810 HI

मुफ्त! ३२ पृष्ठ की पुस्तिका

“सम्पूर्ण परिवार के लिए पोषाहार मार्गदर्शिका”
कृपया २० पैसे के डाकटिकट सहित इस पते पर बिलें:
पोस्ट बैग नं. १६११६ (कॉम्प) जी-१०७
बम्बई-४०० ०२६.

कॉम्प्लान

®

-परिपूर्ण नियोजित आहार

रेत का महासागर जिस में दृष्टि धी जाती है, मरुस्थल है, हैरान रह जाती है, मस्तिष्क चकराने लगता है—नीरवता, एकांत और निस्तब्धता लिए एक विराट शून्य, अपरिमित और बेअंत।
उत्तरी अफ्रीका में फैले रेत के इस महासागर को सहारा कहते हैं। यह शब्द मरुस्थल साढ़े तीन हजार मील लंबा और। सौ मील चौड़ा है। जरा इस विशाल मरुभूमि की कल्पना कीजिए, पूरा का पूरा संयुक्त राज्य अमरीका इस में आ जाएगा। य मरुस्थल जैसे सौ मरुस्थल इस में समा सकें हैं।

उत्तरी अफ्रीका का रेत का महासागर

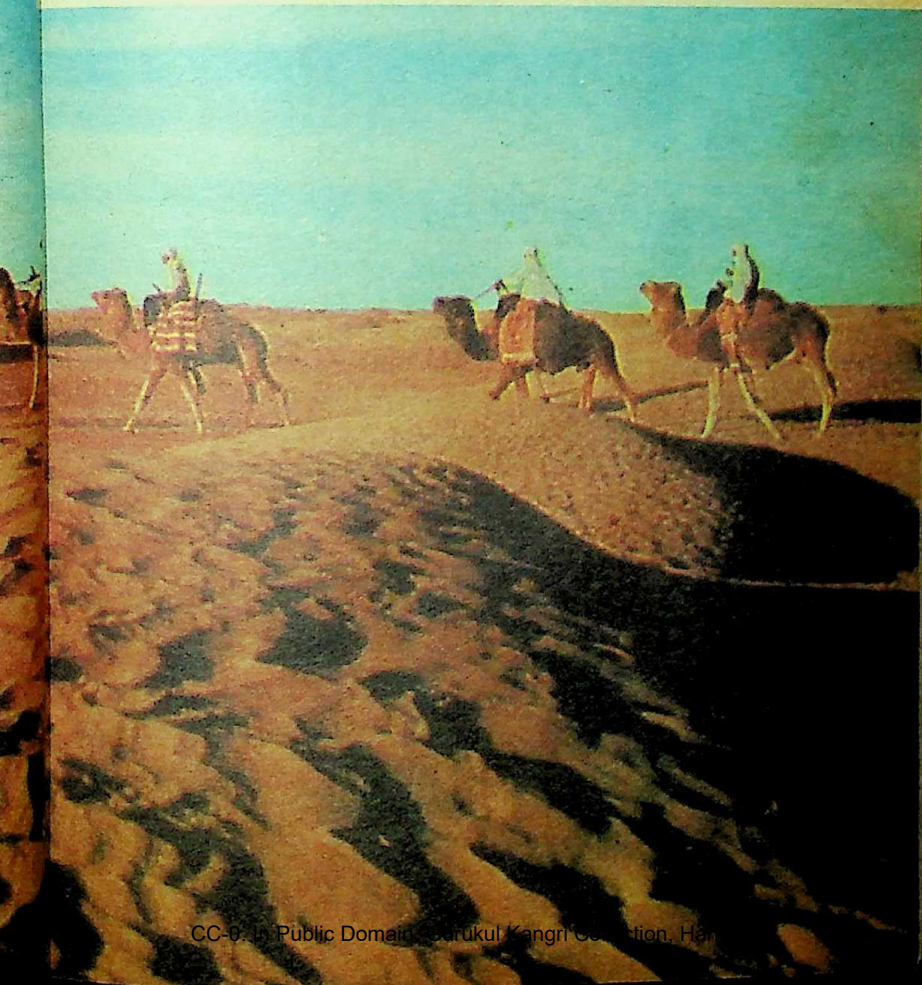
सहारा

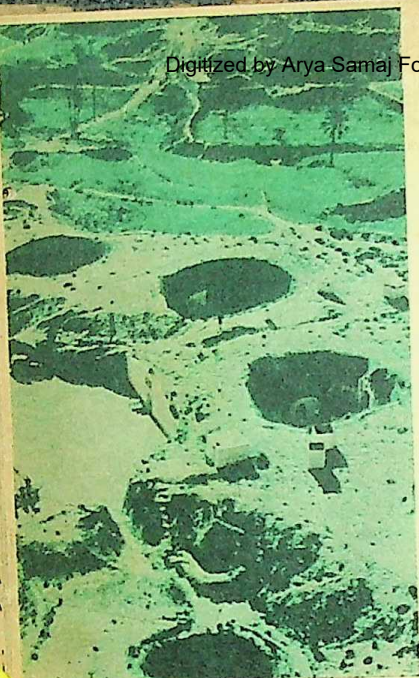


उत्तरी अफ्रीका में, पश्चिम में एटलांटिक महासागर से लेकर पारब में लाल सागर तक फैले हुए इस विशाल रेतीले भूमिखंड को अभी तक किसी ने भी पार नहीं किया है। जिन साहसी व्यक्तियों ने प्रयास किया, वे पूर्ण रूप से सफल नहीं हुए। धरती के सब से भव्य, असाधारण तथा कौतुकपूर्ण प्रदेश सहरा को कम ही लोगों ने देखा है। इस का असीम फैलाव अनेक देशों में है। यह सारे मिस्र तथा सारे पश्चिमी सहरा में फैला हुआ है। मोरक्को, अलजीरिया, लीबिया, ट्यूनीशिया, सूडान, चाड, नाइजर, माली और मारिटेनिया के भागों में भी यह फैला हुआ है।

उत्तरी अफ्रीका का सब से विशाल मरुस्थल सहरा आखिर किन आकर्षणों को अपनेआप में समेटे हुए है, जिन्हें देख कर लोग रोमांचित हो जाते हैं?

सहरावासी अधिकतर पानी और चरागाह की तलाश में भटकते रहते हैं।





आश्चर्यचकित कर देने वाली सहरा की भूमि.

इस का कुल क्षेत्रफल 35 लाख वर्ग मील है। यानी यदि इस छोरहीन, दिशाहीन तथा पगडंडी रहित क्षेत्र में कोई फंस जाए तो वह खो जाएगा। बच कर निकलना असंभव है, किंतु यहां केवल रेत ही नहीं है, इस में पर्वतमालाएं और चट्टानी पठार भी हैं। कंकरीले मैदान हैं तो रेतीले बंजर या ऊसर भी हैं।

इस के मध्य भाग में 10 हजार फुट तक ऊंचे पहाड़ और ऊंची भूमि है। इस की उड़ती हुई रेत से छः सौ फुट तक ऊंचे टीले बन जाते हैं। मध्य भाग के पर्वतों के शिखरों पर कभीकभी बरफ भी जमती है। कैसी आश्चर्य की बात है।

एक ओर तप्त जलती हुई रेत, दूसरी ओर जमा देने वाली बरफ! सापेक्षता का इस से बढ़िया प्रदर्शन और कहाँ होगा?

दिन को यहां प्रचंड गरमी पड़ती है। रेत इतनी गरम हो जाती है कि उस में दाना भन

जाए। यहां रात बिलकुल ठंडी होती है। आसमान साफ रहता है, तारे साफसाफ दिखलाई पड़ते और चमकते हैं। आसमान में बादल नहीं होते हैं।

शायद आप यह सोचते होंगे कि धरती के इस वीरान उजाड़ खंड में कोई नहीं रहता होगा, किंतु मनुष्य हर जगह है। इस उग्र व कठोर शून्य में भी वह अपने अस्तित्व को प्रदर्शित कर रहा है। वाकई सहरा सृष्टि का आश्चर्यचकित कर देने वाला एक अनोखा प्रदेश है।

इस विशाल मरुस्थल में अनेक नखलिस्तान हैं, जिन्हें मरुस्थल की कठोरता व उष्णता को देखते हुए यदि मरुस्वर्ग कहा जाए तो अतिशयोक्ति न होगी। नखलिस्तान वे स्थान हैं, जहां हरियाली होती है तथा कृषि या स्रोत होते हैं जिन से जल उपलब्ध होता है। इन्हीं में लोग रहते हैं।

खानाबदोश सहरावासी

सहरा में कुल मिला कर 90 बड़े नखलिस्तान हैं। प्रत्येक नखलिस्तान में गांव होता है, जहां लोग रहते हैं और खजूर, गेहूँ और जव पैदा करते हैं। सहरा में कई छोटे नखलिस्तान भी हैं, जहां केवल एक या दो परिवार रहते हैं। सहरा के नखलिस्तानों में रहने वालों की कुल जनसंख्या 20 लाख से भी कम है। ये लोग अरब या मुर लोग हैं। कुछ हब्शी लोग भी यहां रहते हैं।

सहरावासी अधिकतर खानाबदोश हैं। ये भेड़ें, बकरियां व ऊंट पालते और चराते हैं। पानी और चरागाह की तलाश में ये एक स्थान से दूसरे स्थान तक भटकते रहते हैं। इन में से कुछ कबीलों के पास नखलिस्तानों में अपनी भूमि होती है।

एक नखलिस्तान में दो हजार से कम लोग रहते हैं। नखलिस्तान में खजूर के सहस्रो वृक्ष होते हैं, या इन के बाग हैं, किंतु जलहीन नखलिस्तानों में खजूर के वृक्ष कम होते हैं। यहां उन का महत्त्व इतना अधिक होता है कि एक वृक्ष में कई व्यक्तियों का हिस्सा होता है।

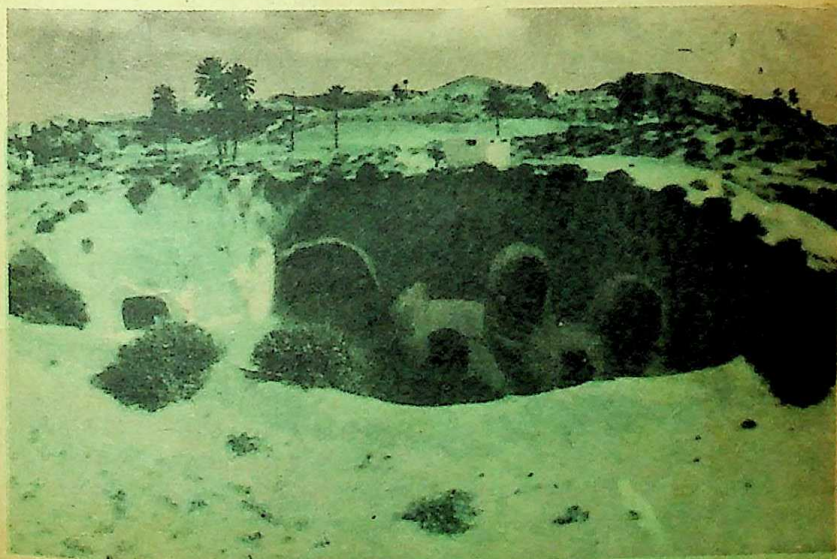


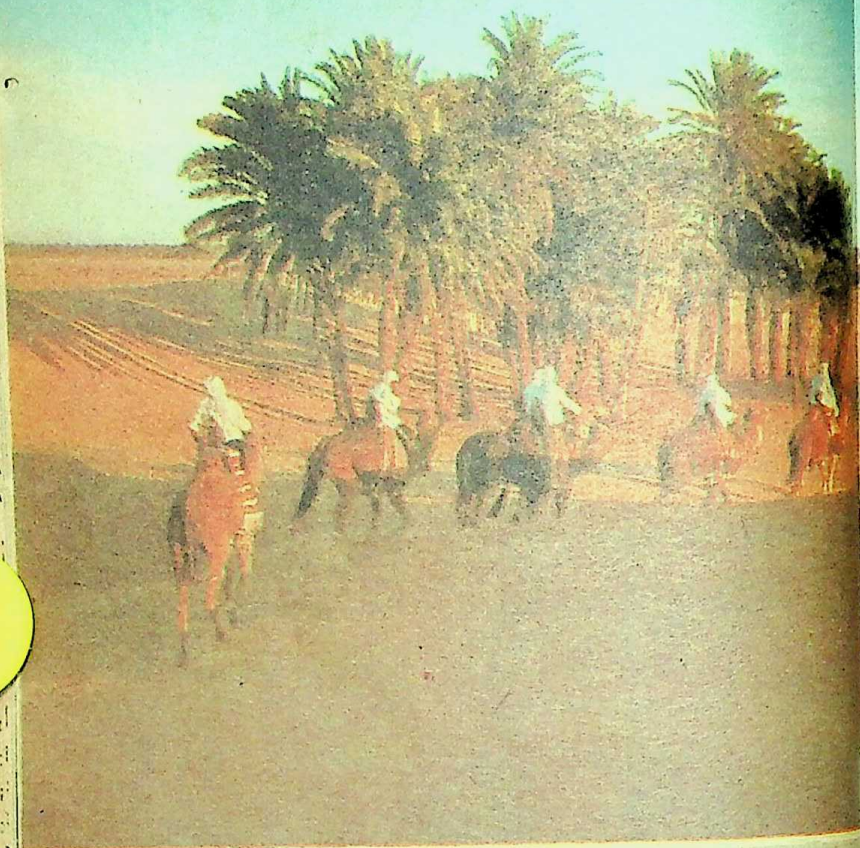
नखलिस्तान : सहरावासियों का मरु स्वर्ग.

मरुस्थलों के किनारों पर स्थित बंजर नखलिस्तानों में, चंद्रमा पर पाए जाने वाले ज्वालामुखीय गड्ढों के समान गोलगोल गड्ढे

हैं। ये गड्ढे यहां रहने वाले लोगों के घर के आंगन हैं। गरमी से बचने के लिए इन्होंने भूमि के भीतर घर बनाए हुए हैं, जो ठंडे रहते हैं।

भूमि के भीतर गड्ढे कर के बनाए गए घर





मनुष्य प्रकृति की चुनौतियों को स्वीकार कर कहीं भी जीवित रह सकता है, सहारा इस का अच्छा प्रमाण है। यहां मनुष्य ने प्रकृति के सम्मुख झुकना पसंद किया है। दरअसल उस पर विजय पाने के लिए रेगिस्तान की मारक गरमी के बीच भूमिगत घरों में ये लोग आरंभ से रहते हैं और कला का सृजन भी करते हैं।

कम जंतु व वनस्पतियां

यद्यपि कच्चे मार्गों से इस मरुस्थल में मोटरगाड़ियां भी जा सकती हैं, किंतु फिर भी इसे पार करना कठिन है। अन्य मरुस्थलों की तुलना में सहारा में जंतु व वनस्पतियां कम पाई

जाती हैं। यहां पाए जाने वाले पौधों की जड़ें बहुत लंबी होती हैं जिस से वे जमीन के भीतर की नमी को सोखते हैं। अन्य पौधे हवा में व्याप्त नमी को अपने पत्तों से सोखते हैं। छोटे-छोटे सुंदर हिरन रेत के टीलों के पास घूमते हैं। टीलों में सांप, छिपकली, लोमड़ी जैसे जानवर और चूहे रहते हैं। चट्टानी पठारों में बारबरी भेड़ें पाई जाती हैं। यहां पाए जाने वाले सभी जंतु लंबे समय तक बिना पानी के रह सकते हैं। उन्हें पानी उन पौधों से मिलता है, जिन्हें वे खाते हैं।

दस हजार वर्ष पहले जब यूरोप हिमयुग समाप्त हुआ, उस समय सहारा क्षेत्र

की जलवायु में काफी नमी थी, यहाँ झीलें व नाले भी थे, इस के आधुनिक क्षेत्र में घास का मैदान था, यहाँ वनों में हाथी व जिराफ पाए जाते थे, 5,000 वर्ष ईसा पूर्व तक इस क्षेत्र में हव्शी जाति के लोग रहते थे, वे शिकार और मछली पकड़ कर जीविका चलाते थे, बाद में पश्चिमी एशिया के लोगों ने यहाँ कृषि पशुपालन आरंभ किया.

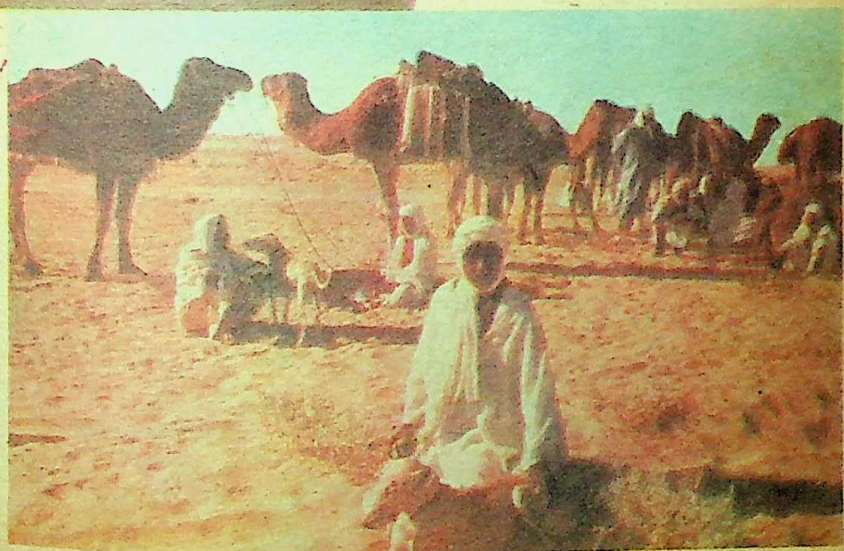
मरुस्थल का निर्माण

4,000 ईसा पूर्व अफ्रीका का जलवायु शुष्क हो गया और सहारा क्षेत्र मरुस्थल में बदलने लगा, तब से सहारा धीरे-धीरे मरुस्थल बनता गया, मरुस्थल के फैलने का एक बड़ा कारण था वृक्षों का काटा जाना और घास के मैदानों आदि का पशुओं के अत्यधिक चरने से नष्ट हो जाना, इस के लिए यहाँ के निवासी जिम्मेदार थे.

जैसे-जैसे सहारा क्षेत्र शुष्क होने लगा,

(शेष पृष्ठ 94 पर)

यहाँ रास्ता केवल जंतों द्वारा ही पार किया जा सकता है (वाएं) व यहाँ के जंतु लंबे समय तक बिना पानी के रह सकते हैं (नीचे).



विश्व बाल साहित्य

मनोरंजक, वीरतापूर्ण, ज्ञानवर्धक, प्रेरक
एवं देशभक्तिपूर्ण बाल पुस्तकें...



रु. 2.00

स्वतंत्रता सेनानी
प्रत्येक रु. 2.50
तेनालीराम
बस में चोरी
तिनके का सहारा
गलतफहमी

चीकू

नकलची ननकू
चमत्कारी बाबा
बहादुर विनीता
हथी का शिकार
पंचतंत्र भाग I, II
घमंडी कौआ

रु. 3.00

आखिरी सरकस
रु. 3.50
घमंडी भैंसा
प्रत्येक रु. 4.00
अपहरण
सम्राट चंद्रगुप्त
आगरे वाले मामा जी

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें या आदेश भेजें

दिल्ली बुक कंपनी

एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.

40 रुपये में पूरा सैट. अग्रिम रुपये भेजने पर डाक खर्च केवल 50 पै. बी.पी. द्वारा. बी.पी. द्वारा मंगवाने पर 5 रुपये या आदेश का 10% अग्रिम भेजना आवश्यक. डाक खर्च अतिरिक्त. चैक नहीं बैंक ड्राफ्ट या पोस्टल आर्डर भेजें.

दुलहन रात

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



दिन के फटे लिबास को सूरज ने क्या दिया,
नन्हें दीयों ने रात को दुलहन बना दिया.

जो बोझ अंधकार का सूरज न ढो सका,
उस को शमा ने अपने कलेजे लगा लिया.

वे जा रहे हैं रोशनी महलों में देखने,
घर हम ने जिन के वास्ते अपना जला दिया.

आंखों में खनखनाई हैं अशकों की कौड़ियां,
यों मुफलिसी ने हम को जुआरी बना दिया.

कल, रात उंगलियों से लुटाती थी रोशनी,
मैं ने जो मांगा जाम अंगूठा दिखा दिया.

बुझते दीए सुबह के पैगंबरों से बोले,
हम ने मरण को जश्न के काबिल बना दिया.

मिट्टी के घर में कैद है किरणों का कुंभकार,
यह राज एक चिराग ने जल कर बता दिया.

इस रात में शुमार है धरती का इनकलाब,
मिट्टी को जिस ने आग उगलना सिखा दिया.

—पंकज

(पृष्ठ 91 से आगे)

हव्शी जातियां यहां से दक्षिण की ओर बसने के लिए जाने लगीं. बरबेर जाति के लोग, जो अफ्रीका महाद्वीप के उत्तरपश्चिमी तटीय

क्षेत्र में हैं. इतना ही नहीं. इस में नीचे अनजान धातुओं व खनिजों जैसे तांबा, कच्चा लोहा, कोयला आदि की खानें भी भंडार हैं, कि अभी तक इन की खुदाई नहीं हुई है.

सहरा का मरुस्थल दर्शनीय है तो सारा ही चुनौतीपूर्ण भी. यह चेतना में एक नया रोमांच उत्पन्न करता है. इस का दृश्य आह



क्षेत्रों में रहते थे, धीरेधीरे पूरे मरुस्थल में फैल कर बस गए.

'मरुस्थल का यान' ऊंट ईसा के समय में पश्चिमी एशिया से सहरा में लाया गया. तब से वह मरुस्थल वासी हो गया है. सहरा के निवासी मुसलमान हैं और उन की भाषा अरबी है. वे अधिकांशतः अरबी बरबेर रीतिवाजों का पालन करते हैं.

सहरा के नीचे तेल व नैसर्गिक गैस के बड़े भंडोर हैं जो अलजीरिया और लीबिया के

भूमि के भीतर बने घर की सजावट सहारावासियों की कलात्मक अभिरुचियों व उन की सभ्यता की प्रतीक है.

और कल्पना को स्तब्ध कर देता है.

किंतु सहरा के बारे में सब से बड़ी व यह कही जा सकती है कि यह मानवीय भक्ति को ले कर एक चेतावनी देता है. यह चेतावनी आज की एक ज्वलंत समस्या के संदर्भ अत्यंत प्रासंगिक है. यह चेतावनी है वृक्षों न काटने तथा वनों और वनस्पतियों को न करने की.



सुहासिनी का भविष्य

कमल हामन की भतीजी सुहासिनी दर्शकण भारतीय फिल्मों में काफी नाम पैदा कर चुकी है. अब बंबई में भी उस के चर्चे होने लगे हैं. सुहासिनी को जयाप्रदा और श्रीदेवी की तरह हिंदी फिल्मों में लाने के लिए कई निर्माता जोड़तोड़ कर रहे हैं.

हिंदी फिल्मों में आने के लिए सुहासिनी भी काफी उत्सुक दिखाई देती है, लेकिन वह अभी इस इंतजार में है कि उसे कोई अच्छा निर्मातानिर्देशक मिले, ताकि उस की प्रतिभा



घनश्याम वासवानी



सुभाष कपूर : बेहतर भविष्य की तलाश.

की सही परख हो सके. देखना यह है कि ऐसा निर्मातानिर्देशक उसे कब मिलता है.

योग्यता की जरूरत

जब से सितारों के बेटे अभिनेता बनने लगे हैं, फिल्म उद्योग में आने वाले कई नौजवान प्रतिभा और योग्यता के बावजूद अपनी वह जगह नहीं बना सके हैं, जो वह बना सकते थे. सुभाष कपूर भी इन में से एक हैं. 'अनाड़ी', 'जनता हलवदार', 'देसपरदेस', 'दि बर्निंग ट्रेन', 'बालिका वधू', 'क्रोधी' और ऐसी ही कई फिल्मों में काम करने के बावजूद सुभाष कपूर की योग्यता का सही मूल्यांकन नहीं हो सका है.

इस की वजह बताते हुए सुभाष कपूर का कहना है, "आजकल योग्यता की क्या जरूरत है? जरूरी है कि आप किसी सितारे के बेटे हों. हमारा कसूर यह है कि हम किसी सितारे के बेटे नहीं हैं, वरना आप देखिए और कोई कमी तो हम में है नहीं."

अपनी पहली ही फिल्म 'बेताब' के सफलता के बाद सनी देवल ने अपनी कीमत आंकनी शुरू कर दी है. अब जो भी निर्माता अपनी फिल्म के लिए उसे अनुमोदित करा जाता है, वह उस से 15 लाख रुपए मांगता है. याद रहे कि फिल्म 'बेताब' लगभग 500 शिफ्टों में बनाई गई है, जब कि आहिदी फिल्में 60-70 शिफ्टों में पूरी हो जाती हैं.

लोगों का कहना है कि इतनी शिफ्ट करने के बाद अगर 'बेताब' जैसी फिल्म नतीज में प्राप्त हुई है तो आश्चर्य की कोई बात नहीं है. सनी की सही पहचान तो उस की आगे आवाज वाली फिल्मों से ही होगी. उस के बाद निर्माता उस की असली कीमत तय कर सकेंगे.

घनश्याम : एक नई आवाज

मुहम्मद रफी और मुकेश की मृत्यु के बाद फिल्म उद्योग में आज तक एक अच्छी आवाज की कमी बनी हुई है. कल्याण आनंदजी, लक्ष्मीकांत प्यारेलाल, राजेश रोशन आदि संगीतकारों ने कई नई आवाजों को मौका दिया, लेकिन पूरी तरह कोई सफल नहीं हो सका.

अब जयदेव और जगजीतसिंह जैसे महानुष्ठान संगीतकारों ने एक और नई आवाज खोज की है, जिस का नाम घनश्याम वासवानी है.

घनश्याम अब तक 'कालका', 'कहना एक नया इतिहास', 'एक मौसम छोटा' तथा 'बंदा नवाज' आदि फिल्मों के लिए जयदेव, जगजीतसिंह, राजकमल, माधव मुखर्जी, रामलक्ष्मण जैसे संगीतकारों निर्देशन में गीत गा चुका है.

घनश्याम ने 1977 में सुर सिंगार संगीत की 'वसंत देसाई ट्रफी' जीती थी. वह हांगकंग और जापान में भी अपने कार्यक्रम पेश कर चुका है.

ये लड़के ये लड़कियां

संस्मरण भेजिए. प्रकाशित होने पर 15
रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी.
पत्र पर अपना नाम व पूरा पता अवश्य
लिखें.

भेजने का पता : मुक्ता, दिल्ली
प्रेस, नई दिल्ली-110055.

घटना उस समय की है जब मैं आठवीं कक्षा में पढ़ता था. जीव विज्ञान का घंटा चल रहा था. एकाएक शिक्षक ने पाया कि एक शरारती छात्र का ध्यान कहीं और है. उन्होंने उस छात्र को खड़ा किया और पूछा, "रेंगने वाले जंतु का कोई उदाहरण दो."

कुछ सोच कर वह छात्र बोला, "सांप."

शिक्षक को सही उत्तर की आशा नहीं थी. अतः उन्होंने फिर पूछा, "कोई दूसरा उदाहरण दो."

छात्र ने तपाक से कहा, "कोई दूसरा सांप."

—अशा जैन

*

एक बार वस में तीन सहेलियां जो आगे वाली सीट पर बैठी थीं, उन में शादी की चर्चा चल रही थी. बीच वाली लड़की जो बहुत तेज थी, बोली, "मुझे गाने सुनने का बहुत शौक है. मुझे ऐसा जीवन साथी मिले, जो मुझे गाने सुनाता रहे तथा जब मैं चाहूँ अपनी जवान बंद कर ले."

तभी मेरी सीट पर बैठे एक अन्य लड़के ने तपाक से कहा, "तब तो आप को रेडियो से शादी कर लेनी चाहिए." यह सुन कर वस में बैठे आदमी हंस पड़े.

—नौरंगलाल चोटिया

*

बात उन दिनों की है, जब मैं 12वीं कक्षा में पढ़ती थी. कक्षा में कुछ न कुछ खाते रहने की मेरी और मेरी सहेलियों की आदत सी हो गई थी. एक दिन हम मिठाई खा ही रहे थे कि हमारे शिक्षक आ गए. जिन से हम सब बहुत डरती थीं.

उपस्थिति लेने के बाद उन्होंने कहा, "मुझ को कुछ मीठीमीठी महक आ रही है."

दोतीन छात्रों ने हमारी डेस्कों की ओर इशारा कर दिया. शिक्षक ने हमारी ओर देखा तो मेरी एक सहेली तुरंत बोली, "जी वो लड़कियां तो हमेशा मीठी होती हैं..."

—श्रीदेवी

*

बात उन दिनों की है, जब मैं मुजफ्फरपुर में पढ़ता था. वहां छविगृह में देव आनंद की कोई फिल्म लगी हुई थी. हम पांचछः मित्र फिल्म देखने गए. हमारे आगे की पंक्ति में बैठी तीनचार लड़कियां भी फिल्म देख रही थीं.

फिल्म शुरू होने के कुछ क्षण बाद देव आनंद ने परदे पर गाना शुरू किया, 'अपनी तो हर आह इक तूफान है, ऊपर वाला जान कर भी अनजान है...'.

इतने में हमारे एक मित्र को शरारत सूझी. उस ने लड़कियों को लक्ष्य कर के गाना शुरू किया. 'अपनी तो हर आह इक तूफान है, आगे वाला जान कर भी अनजान है...'.

इस पर हम सभी हंस पड़े, लेकिन उन में से एक लड़की जो काफी तेजतर्रार लगती थी, ने फौरन जवाब दिया, "अपनी तो हर आह इक तूफान है, पीछे वाला गधे की संतान है." कहने की जरूरत नहीं कि हम लोगों ने पूरी फिल्म के दौरान मुंह नहीं खोला.

—सुभाष कुशवाहा •

मुक्ता

ये अकेला दीप

कब तलक
ऐसे जलेगा
ये अकेला दीप.

ओट दे दो अब
जरा सी
नेह की,
उम्र बढ़ जाए
सुलगती देह की.
रूप वाले शांख दे दो
आंख वाली सीप.

रागिनी सी
एक फूटी झांझ में,
मेंहदिया उम्मीद
लिख दो
सांझ में.

रात के अंतिम सफे पर
चंद्रमा की टीप. —हरीश निगम



धूपधानव

इस स्तंभ के लिए समाचारपत्रों की रीचक कटिंग भेजिए. सर्वोत्तम कटिंग पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. कटिंग के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.

भेजने का पता : मुक्ता, दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली-110055.

नन्हेमुन्नों द्वारा कक्षाओं का बहिष्कार

सिवनी के महात्मा गांधी स्कूल में छात्रछात्राओं ने अपनीअपनी कक्षाओं का बहिष्कार कर के एक जलूस निकाला और जिला प्रशासन के एक अधिकारी को जापन दिया. नन्हेमुन्ने छात्रों के आक्रोश का कारण है शाला भवन के आसपास भारी गंदगी, भवन की पिछली दीवार से सट कर बह रही नाली और उस में जमी हुई गंदगी की तेज दुर्गंध, जिस के कारण बच्चे एक क्षण भी अपनी कक्षाओं में नहीं बैठ पाते.

एक हस्ताक्षर युक्त अलगअलग कक्षावार शिकायत इस से पहले बच्चों ने एक लिखित शिकायत अपने प्रधानध्यापक को दी थी. उन्होंने नगरपालिका के अधिकारियों को इस बारे में लिखा था किंतु कुछ नहीं हुआ. तब जा कर बच्चों ने विरोध स्वरूप अपनी कक्षाओं का बहिष्कार किया. —नवभारत, नागपुर (प्रेषक : जगदीशप्रसाद साहू) (सर्वोत्तम)

*

लड्डू नहीं तो विवाह नहीं

थाना भसौली में ग्राम शहावपुर में एक ब्राह्मण परिवार के युवक की शादी मात्र इसलिए रुक गई, क्योंकि कन्यापक्ष की ओर से आए तिलक के बदले में लड्डू के वालों ने चूड़ियों के साथ लड्डू नहीं भेजे थे. मजे की बात तो यह है कि युवक की विधवा मां ने, जो एक अध्यापिका है, सुलतानपुर के गांव पूरेफकीरशाह के निवासी बाबूराम शर्मा को मानहानि और खर्च का एक नोटिस दिया है, और कहा है कि आप तिलक के दोतीन दिन बाद अचानक मेरे गांव आए थे और आप ने यह कह कर लगन वापसी की मांग की थी कि मेरी हैसियत तुम्हारे बराबर की नहीं है तथा लगन की चूड़ियों के साथ लड्डू नहीं भेजे, इसलिए मैं अपने भतीजे की शादी नहीं करूंगा.

—नवभारत, रायपुर (प्रेषक : विकास मंडल)

*

कबूतर संदेशवाहक हैं

संचार उपग्रह के युग में भी कबूतर संदेशवाहक की भूमिका निभा रहे हैं. उड़ीसा के पूर्वी जंगलों में कबूतर गत 37 वर्ष से बिना किसी बाधा के वह सेवा कर रहे हैं.

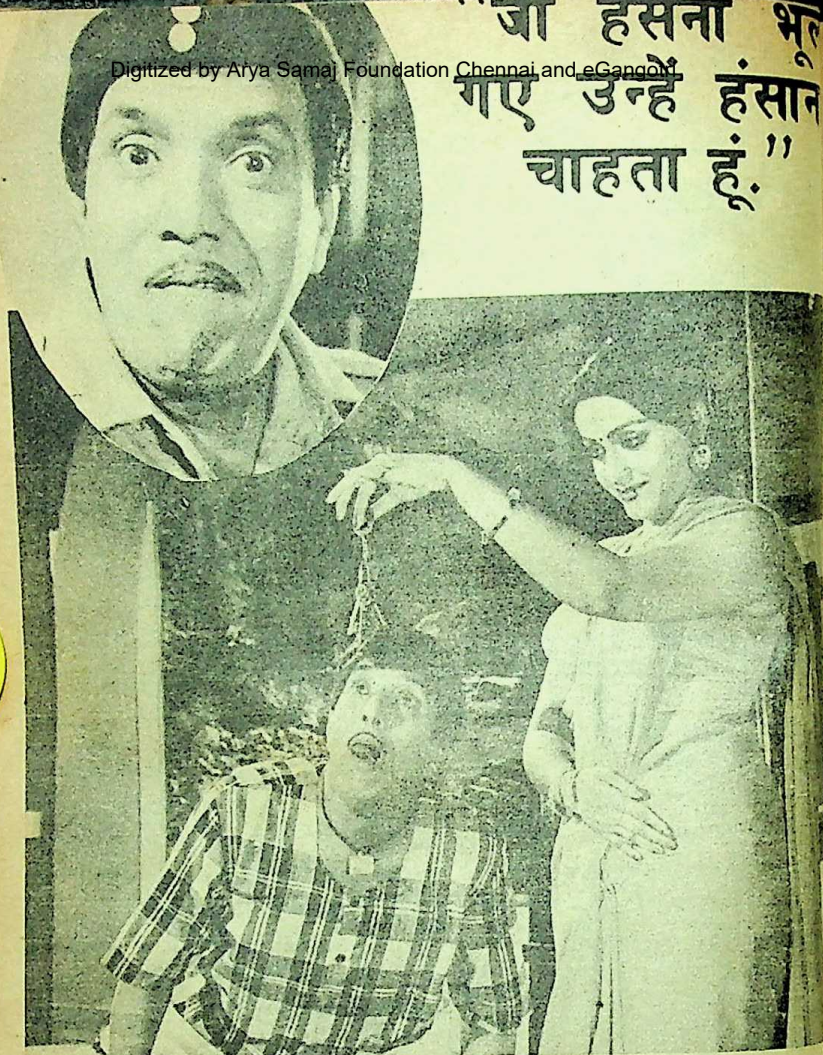
भारत में अपने ढंग की इस एकमात्र सेवा में लगभग एक हजार से भी अधिक कबूतर लगे हैं. इन कबूतरों को कहीं भी भेज दिया जाए, वे अपने निर्दिष्ट स्थान पर वापस लौट आते हैं. इतना ही नहीं, ये कबूतर इस राज्य के 13 जिलों के लिए नियमित रूप से संदेशवाहक का काम करते हैं.

हवा का रुख अनुकूल होने पर ये कबूतर औसतन 80 से 90 किलो मीटर प्रति घंटे की गति से उड़ान भर सकते हैं तथा 15 से 20 घंटे तक लगातार उड़ सकते हैं.

—हिंदुस्तान, नई दिल्ली (प्रेषक : जगदीशकुमार)

मुक्ता

“जा हसना भूल
गए उन्हें हंसाने
चाहता हूं.”



दादा कोंडके

भेंटवार्ता • ताराचंद मकसाने

दादा कोंडके मराठी फिल्म जगत के बहुचर्चित व लोकप्रिय निर्माता-निर्देशक हैं, जिन की मराठी में अब तक प्रदर्शित नौ फिल्मों ने सफलता के नए

कीर्तिमान स्थापित किए हैं। दादा कोंडके विश्व के पहले निर्माता-निर्देशक हैं, जिन के एक के बाद एक लगातार नौ रजत जयन्ती मनाने वाली फिल्मों में दे कर विश्व कीर्तिमान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

नवंबर (प्रथम)

कायम किया है. इसी कारण दादा कोंडके का नाम अब 'गिनीत बुक ऑफ़ बड़ई रिक्तार्द' में शामिल हो चुका है.

दादा कोंडके न केवल निर्मातानिर्देशक हैं, बल्कि अभिनेता, लेखक एवं गीतकार भी हैं. दो अर्थों वाले संघाद एवं निर्भीक सामाजिक व राजनीतिक व्यंग्य दादा कोंडके की अपनी विशेषताएँ हैं. अब वह हिंदी फिल्म व्यवसाय में आ रहे हैं. हिंदी में उन की पहली फिल्म का नाम है 'तेरे मेरे बीच में' जो उन की लोकप्रिय व बहुचर्चित मराठी फिल्म 'रामराम गंगाराम' का हिंदी संस्करण है.

एक भेंट में उन से निम्नलिखित प्रश्न किए:

प्रश्न: हिंदी फिल्मों में प्रवेश का आप का कोई खास मकसद है?

उत्तर: हाँ, मैं अपनी कला का प्रदर्शन हिंदी दर्शकों के सामने करना चाहता हूँ. कारण यह है कि हिंदी दर्शक वर्ग बहुत विशाल है जब कि मराठी में सीमित है. मैंने मराठी में नौ हिट फिल्में बनाई हैं, देखना यह है कि अब ये हिंदी में कैसी रहती हैं.

अमजद व दादा कोंडके फिल्म 'तेरे मेरे बीच में.'

प्रश्न: आप ने अपनी नौ सफलतम फिल्मों में 'रामराम गंगाराम' को ही पहले हिंदी में क्यों बनाया?

उत्तर: ऐसा मैं ने निर्मातानिर्देशक मनमोहन देसाई के अनुरोध पर किया है. वह मेरे घनिष्ठ मित्र हैं तो मैं भी उन का अच्छी दोस्त हूँ. उन्होंने मेरी सभी फिल्में देखी हैं. उन्हें 'रामराम गंगाराम' अधिक पसंद आई है. इस फिल्म में मैं ने हिंदूमुसलिम एकता को दर्शाया है.

प्रश्न: आप अपनी फिल्मों से लोगों को केवल हंसाना चाहते हैं?

उत्तर: मैं समाज को कुछ देना भी चाहता हूँ, किंतु मेरा पहला काम है हंसाना और हंसतेहंसाते समाज को कुछ देना. आप मेरी कोई भी फिल्म देखिए, उस में समाज के लिए कुछ न कुछ संदेशउपदेश जरूर है.

मराठी फिल्मों में अपना अलग स्थान रखने वाले दादा कोंडके की कई फिल्मों ने अपार सफलता प्राप्त की है. वह खुद अपने बारे में क्या कहते हैं?





अमजद, उषा चव्हाण व दादा कोंडके फिल्म 'तेरे मेरे बीच में' के एक महत्वपूर्ण दृश्य में।

फिल्म 'सोंगाड्या' में मैं ने तमाशा (लोक नाट्य) में काम करने वाले कलाकारों की विभिन्न समस्याओं को तो फिल्म 'रामराम गंगाराम' में हिंदुमुसलिम एकता को दिखाया है। वास्तव में किसी को रुलाना बड़ा ही आसान है, लेकिन हंसाना उतना ही मुश्किल है। आज का इनसान हंसना भूल गया है। मैं उसे हंसाना चाहता हूँ, जिस की जिंदगी गमों से भरी है, वह कम से कम ढाई घंटे तक तो अपने दुखों को भुले।

और जिस दिन मुझे यह लगेगा कि मेरी फिल्में अब लोगों को हंसा नहीं सकतीं, उसी दिन से मैं फिल्में बनाना बंद कर दूंगा।

प्रश्न: आप की फिल्मों के द्विअर्थी संवाद और उन से उत्पन्न हास्य अश्लीलता की हद को छूता हुआ है?

उत्तर: अरे भाई, दो अर्थ निकलेंगे तभी तो हास्य पैदा होगा और मैं मानता हूँ कि मेरे संवादों में दो अर्थ होते हैं, लेकिन दूसरा अर्थ लोग क्यों निकालते हैं? मैं आप को कुछ उदाहरण दूँ। एक बार एक दोस्त अपने दोस्त को मिठाई देने लगा, "किस बात की मिठाई है" दोस्त ने पूछा, "मेरे यहां लड़का पैदा हुआ है," उस ने कहा "अरे वाह, भाई।" मित्र ने बधाई दी तो वह विनम्रता से बोला,

"ऊपरवाले की मेहरबानी है।" "तुम्हारे ऊपरवाले प्लेट में कौन रहता है?" दोस्त का प्रश्न था। अब आप ही बताइए कि क्या दोस्त दूसरा अर्थ नहीं निकालता तो क्या हास पैदा होता।

ऐसे कुछ और उदाहरण भी दिए जा सकते हैं जैसे मैं किसी से पूछूँ, आप की कैसी जिंदगी है? अर्थात् तबियत। या अंधेरी रात में दीया तो हाथ में, भई दीया तो अंधेरी रात में ही होगा और ये संवाद आप को इसलिए अश्लील लगते हैं कि उस में से दूसरा गंदा मतलब आ लोग खुद निकालते हैं, हम तो सीधीसादी बातें कहते हैं।

हां, एक और बात है, मैं ऐसे संवादों का कारण सेंसर की कैंची से बच जाता हूँ।

प्रश्न: प्रत्येक फिल्म में आप हाफ पैट पहनते हैं, क्या हिंदी फिल्म में भी इसी पोशाक में आ रहे हैं?

उत्तर: हां, इसी पोशाक में आ रहा हूँ। हाफ पैट तो मैं आम आदमी की पहचान के तौर पर पहनता हूँ। चार्ली चपलिन (दादा कोंडके जिसे अभिनय में अपना आदर्श मानते हैं) ने पूरी उम्र अपना फटा हुआ जूता पहना छोड़ा तो मैं भला हाफ पैट कैसे छोड़ सकता हूँ।

कीमतें कम करने के लिए :

- सरकारी खर्च कम हो
- करों में कमी हो

बढ़ती हुई कीमतों की मूल वजह (और प्रायः एकमात्र) सरकार द्वारा आवश्यकता से ज्यादा खर्च किया जाना (करों व ऋणों से प्राप्त आय की तुलना में ज्यादा व्यय) और उस घाटे को पूरा करने के लिए नए करेंसी नोट छापना तथा माल व सेवाओं पर नए नए कर थोपना है।

हर नया नोट, हर नया कर माल व सेवाओं की कीमत में तुरंत वृद्धि कर देता है, जिस की वजह से सरकारी खर्च में और अधिक वृद्धि आवश्यक हो जाती है। इस वृद्धि की भरपाई के लिए फिर नए नोट छपते हैं, फिर नए कर लगते हैं और इस से कीमतें लगातार बढ़ती जाती हैं।

राजनीतिबाज बढ़ती हुई कीमतों का सारा दोष उत्पादकों व व्यापारियों के जिम्मे मढ़ कर आम लोगों को धोखा देने की कोशिश करता है। यह अच्छी तरह से जानते हुए भी कि करों द्वारा बढ़ी लागत उत्पादक और व्यापारी अपनी जेब से पूरी

नहीं कर सकते। उन्हें चीजों के दाम बढ़ाने ही पड़ते हैं। आम लोगों के हाथ में अतिरिक्त धन आने से भी वस्तुओं की मांग ज्यादा बढ़ जाती है जिस से कीमतें भी और बढ़ जाती हैं।

इस के साथ ही राजनीतिबाजों की अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए, अपनी पार्टियों को चलाने के लिए और चुनाव लड़ने के लिए काले धन की मांग भी जुड़ जाती है। यह रकम सिर्फ माल व सेवाओं की कीमत से ही प्राप्त हो सकती है। इस प्रकार कीमतें और ज्यादा से ज्यादा बढ़ती जाती हैं।

कभीकभी यह कहा जाता है कि ज्यादा उत्पादन से कीमतें बढ़ना रोका जा सकता है। लेकिन अगर कहीं कोई ज्यादा उत्पादन होगा तो वह कच्चे माल और सेवाओं पर बढ़े हुए करों की वजह से ज्यादा कीमत पर ही होगा। इसलिए बढ़े हुए उत्पादन से भी कीमतें कम नहीं होंगी।

कीमतें कम करने के लिए :

- करों में कमी कीजिए
- सरकारी खर्च कम कीजिए

इस के अलावा और कोई रास्ता नहीं है।

पिछले छः महीनों की फिल्में

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्देशिका

उ. : उद्देश्यपण/अवश्य दर्शाए
म. : समय काटण/चलनाउ

म. : मनोरञ्जक/दस ले
अ. : अपव्यय/समय की बर्बादी

नि. : निर्देशक
मु. पा. : मुख्य

रजिया सुलतान : ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर बनी बड़े बजट की फिल्म, जो आम दर्शक को निराश ही करती है। मध्यांतर तक फिल्म में कुछ गति बनी रहती है, लेकिन उस के बाद फिल्म बहुत धीमी हो जाती है। फारसी मिश्रित संवादों से भी आम दर्शक उकताहट महसूस करता है। हाँ, फोटोग्राफी और भव्य सेट ही इस फिल्म की उल्लेखनीय विशेषताएँ हैं। नि. : कमाल अमरोही, मु.पा. : प्रदीपकुमार, धर्मेन्द्र, हेमा, परवीन, सोहराब मोदी. स.

प्राइवेट लाइफ : सुनीति की शादी एक नपुंसक युवक से हो जाती है। वह युवक अपने बास को खुश करने के लिए सुनीति को उस की कामवासना का शिकार बना देता है। बदले की आग में सुनीति ऊपरी प्रेम दिखा कर बास को बश में कर लेती है और दौलत हथियाने के बाद उसे धक्के मार कर निकाल देती है। अनेक सामाजिक समस्याएँ उठा कर भी फिल्म को सेक्स के गंदे नाले में गिरा दिया गया है। नि. : आदर्श, मु.पा. : जयमाला. अ.

कालका : कोयला खानों के मजदूरों को ले कर बनाई गई एक सतही फिल्म, जो अंत तक अनेक प्रश्नों को अनुत्तरित छोड़ती चली जाती है। प्रायः सभी जानेमाने कलाकारों के बाद भी फिल्म कोई खास प्रभाव नहीं छोड़ती। नि. : लोकेश लालवानी, मु.पा. : शत्रुघ्न, राज दब्बर, रामेश्वरी, सारिका, अरुण गोविल, नितिन सेठी, सुरेश चटकल. अ.

मुझे इनसाफ चाहिए : पुरुषों के अत्याचारों की मारी नारी की व्यथा और अवैध संतानों को उन के बाप का नाम दिलाने में बाधक कानूनों को बदल देने की पुरजोर अपील इस फिल्म में दिखाई देती है। अधिकतर पात्रों का स्वाभाविक चित्रण व प्रत्येक दृश्य में संयम से काम लेने के कारण फिल्म खासी असरदार बन गई है। नि. : रामाराव, मु.पा. : रेखा, मिथुन, रति अग्निहोत्री, डैनी, रंजीता, श्रीराम लागू, असरानी, असित सेन. उ.

एक जान है हम : एक हलकीफुलकी फिल्म जिस में कालिज जीवन में होने वाले प्रेम प्रसंगों, शरारतों और मारपीट को ही फिल्माया गया है नि. : राजीव मेहरा, मु.पा. : शम्मी कपूर, तनूजा, राजीव कपूर, प्राण, राकेश बेदी, अ.

बेकरार : नायकनायिका का प्रेम, मारपीट, डिस्को डांस जैसे फारमूलों को ले कर बनाई गई बेजान फिल्म, जिस में कोई भी कलाकर प्रभावित नहीं कर पाता। आनंद बख्शी के गीतों को लक्ष्मीकांत प्यारेलाल ने सुंदर

धुनों में बांधा है, मगर डिस्को के समय गाए जाने वाले गीतों में शोर अधिक है। नि. : व. व. राजेंद्रप्रसाद, मु.पा. : संजय दत्त, पद्मिनी कोल्हापुरे, अशोककुमार, मंगेश पाठक, असरानी, ओमशिवपुरी, सत्येन कपूर. अ.

नदिया के पार : मारधाड़, सेक्स, हिंसा की लीक दूर एक अच्छी फिल्म भाई के प्रति भाई के त्याग व ग्रामीण पृष्ठभूमि में जिस प्रकार प्रदर्शित किया गया उस से दर्शक अवश्य ही बंधा रहता है। गीतसंगीत में हैं। नि. : गोविंद यूनिन, मु.पा. : सचिन, साधना मिताली, इंदर ठाकुर, शीला डेविड, स.

वेआबरु : दौलत के लालच में आ कर भूख गरीबी से लाचार युवतियों को जिस्म का सौदा करने मजबूर करने वालों को पर्दाफाश करती यह फिल्म उद्देश्य में काफी हद तक कामयाब रही है। सभी अपनी भूमिकाओं में सही हैं। गीतसंगीत साधारण हैं। नि. : शिवकुमार, मु.पा. : अपेक्षा, रवींद्र महाजनी, सावित्री खान, महावीर शाह. स.

बेजुबान : विवाह पूर्व प्रेम कर बैठने और उसे परेशानियों को सहते हुए भी अपनी जूवान नहीं खोने वाली युवती की कहानी। फिल्म में कोई नवीनता नहीं नसीरुद्दीनशाह ने जरूर कहींकहीं प्रभावित किया संगीत व गीत साधारण हैं। नि. : वापू, मु.पा. : शमी कपूर, रीना, नसीरुद्दीनशाह, युनुस परवेज, म.

बंधन कच्चे धागों का : प्रेम भावना और दोस्ती के साथ एक छोटे से परिवार का मुखिया है। व्यापार मिलसिले में बाहर जाता है। जहां स्नेह से उसका मुलाकात और शारीरिक मिलन भी होता है। स्नेह वंचके को जन्म देती है। लेकिन प्रेम उसे भूल चुका होता फिर प्रेम को रहस्य का पता चलता है। कुछ नाटक घटनाओं तथा स्नेह की मृत्यु के बाद प्रेम उसे अपना है। नि. : अनिल शर्मा, मु.पा. : राखी, शशि कपूर, जी. देवेन वर्मा, मास्टर रवि, प्रेम चोपड़ा. स.

नौकर बीवी का : बेहद नाटकीय और फुल हरकतों से भरपूर एक फिल्म जिस के बारे में अंतर्गत निर्णय नहीं लिया जा सकता कि यह हास्य फिल्म अथवा स्टंट या भावना प्रधान. घटनाएँ अत्यंत नाटकीय सी लगती हैं। नि. : राजकुमार कोहली, मु.पा. : धर्मेन्द्र, अनीता, रीना, प्राण, विनोद मेहरा. अ.

जीत हमारी : खोया और पाया के फारमूलों बनी यह फिल्म नएन के नाम पर एकदम शून्य तमाम किस्म के फिल्मी मसालों को कुछ तेज कर

लाहिड़ी ने चालू किस्म की धुन बनाई है. नि.:
त्यागराजन, मु.पा.: राकेश रोशन, रजनीकांत, अनीता,
ओम शिवपुरी, मदन मूकजी, Digitized by Arya Samaj Foundation, Chitwan, Nepal

बो सात दिन : प्रेमिका पत्नी बन सकती है, पर
पत्नी प्रेमिका नहीं बन सकती. इसी समस्या को तर्क
संगत रूप में उठाया गया है, पर शीथिल पटकथा के
कारण कहानी बिखर गई है. नि.: बापू, मु.पा.: अनिल
कपूर, पद्मिनी, नसीरुद्दीन शाह, राजू, दीना पाठक, स.

बेताब : गरीब सनी अमीर बाप की लड़की रोमा से
काफी नोकझोंक के बाद प्यार करने लगता है. रोमा का
पिता दिनेशमिह इसे पसंद नहीं करता. अंत में तमाम
मारधाड़ के बाद प्रेमीप्रेमिका का मिलन हो जाता है.
छायांकन कुछ अच्छा है. गीतों में कतई दम नहीं, पर स्टंट
दृश्यों से रोचकता बनी रही है. नि.: राहुल रवेल, मु.पा.:
सनी देवल, अमृता सिंह, शशि पुरी, प्रेम चोपड़ा,
असराणी. म.

जस्टिस चौधरी : पूरी तरह से लीक से बंधी हुई
फिल्म, जिस में कहानी का अंदाजा फिल्म शुरू होते ही हो
जाता है. फिल्म के संवाद घटिया हैं और गीतसंगीत का
पक्ष बेहद कमजोर है. नि.: के. राखेंद्र राव, मु.पा.:
जितेंद्र, श्रीदेवी, हेमा, मौसमी, कादर खान, अ.

बो दिशाएं : चोटी के कलाकारों को ले कर भी
घटिया कहानी से एक अच्छी फिल्म नहीं बनाई जा
सकती. यह इस फिल्म के निर्देशक ने यह सिद्ध कर दिया
है. कमलेश्वर की उद्देश्यहीन कहानी में बेसिरपैर की
घटनाओं के अतिरिक्त कुछ नहीं है. हाँ, शीर्षक कुछ
अवश्य प्रभावित करता है. नि.: दुलाल गुहा, मु.पा.:
धर्मेन्द्र, हेमा, श्रीराम लागू, प्रेम चोपड़ा, आंसल सेन. अ.

बर्ब का रिश्ता : नरगिस की स्मृति में सुनील दत्त
काका केंसर पर आधारित फिल्म. एक देशप्रेमी डाक्टर
की कहानी, जो देशसेवा के लिए अमरीका में अपनी
पत्नी को तलाक दे आता है तथा दूसरी शादी कर लेता है
और उस की बेटी को केंसर हो जाता है. डाक्टर की पहली
पत्नी उस का इलाज करती है. अंधविश्वासों से भरपूर
होने के कारण फिल्म कुछ प्रभावहीन हो गई है. नि.:
सुनील दत्त, मु.पा.: सुनील दत्त, स्मिता पाटिल, रीना
राय, खुशबू. म.

बुधरू : वेश्या उद्धार पर बनी फिल्म, जो तरहतरह के
मसालों के नीचे दब कर रह जाती है. केंसर वेश्या है और
दीवान विक्रमसिंह के प्रेम में कोड़ा छोड़ देती है. अनेक
तरह के कष्ट उठा कर ही अंत में बूढ़ापे में वह दीवान को
हासिल कर पाती है. नि.: राम सेठी. मु.पा.: बहीदा
रहमान, शशि कपूर, स्मिता पाटिल, सुरेश ओवराय,
कुणाल गोस्वामी. म.

आओ प्यार करें : सेक्स पर आधारित भोंडी हास्य
फिल्म, जो बारबार एक ही प्रकार से सेक्सी दृश्य आने से
उबाऊ हो गई है. नि.: प्रकाश वर्मा, मु.पा.: वेंजामिन
गोलानी, राधिका बरटके, अमृतपाल, अनिता

अत भावुकतापूर्ण फिल्म, जो अभिनय व प्रस्तुतकरण
दोनों ही लिहाज से शून्य है. नि.: अजय गोयल, मु.पा.:
अमजद खान, मु.पा.: रणधीर, रजिता, अमजद, स.

हम से न जीता कोई : दो भाई ट्रैक्टर खरीदने गांव
से शहर जाते हैं, लेकिन तस्करों के चक्कर में पड़ जाते हैं.
सामान्य घटनाओं से भरपूर एक हास्य फिल्म, नि.: शिव
मित्रा, मु.पा.: रणधीर, रजिता, अमजद, स.

एक बार चले आओ : दहज की समस्या पर बनी
एक फिल्म, जो मध्यांतर के बाद विषय से भटक कर
प्रतिशोध पर पहुंच जाती है, नि.: जगदीश सिन्हा, मु.पा.:
फारूक, दीप्ति, गिरीश. अ.

कथा : पंचतंत्र की कुछ आ व खरगोश की दोड़ की
कहानी को आधुनिक संदर्भ में हास्यपूर्ण ढंग से पेश किया
गया है. नि.: साई पराजये, मु.पा.: फारूक, दीप्ति,
नसीरुद्दीनशाह. म.

चोर पुलिस : पुलिस को ईमानदार व
कर्तव्यपरायण साबित कराने वाली एक सामान्य फिल्म,
जिसमें लंबे समय तक सेंसर का निशाना बनना पड़ा था.
नि.: अमजद खान, मु.पा.: परवीन, शत्रुघ्न. अ.

रंग बिरंगी : एक हास्य फिल्म, जो पतिपत्नी के
संबंधों में तनाव व रूखापन आने की समस्या को खत्म
करने का रास्ता सुझाती है. नि.: अणिकेश मुखर्जी,
मु.पा.: असोल, परवीन, दीप्ति, फारूक. उ.

साहब बहादुर : भ्रष्ट अधिकारियों की मार से
पीड़ित एक कसबे को मुक्ति दिलाने के लिए एक
अधिकारी वहां पहुंचता है. धीमी पटकथा व बेतरतीब
घटनाओं की वजह से फिल्म बेहद सामान्य रह गई है.
नि.: चेतन आनंद, मु.पा.: देव आनंद, प्रिया,
अजीत. अ.

करवा चौब : औरत को अंधविश्वासी व
भाग्यवादी बनाने की एक धार्मिक फिल्म, जिसमें बेतुके
चमत्कारों की मदद से ही दर्शकों को लुभाने की कोशिश
की गई है. नि.: रामलाल हंस, मु.पा.: आशीश कानन,
रमेशदेव, आगा. अ.

लवर्स : 'लव स्टोरी' के ही ढर्रे पर बनी एक प्रेम
कहानी, जिसमें प्रेमीप्रेमिका को शादी के लिए राति के
बंधन तोड़ डालने की सलाह दी गई है. नि.: भारती
राजा, मु.पा.: कुमार गौरव, पथिनी कोल्हापुरे, डैनी. स.

अवतार : बच्चों द्वारा उपेक्षित वृद्ध मांबाप की
समस्या पर बनी एक पारिवारिक नाटकीय फिल्म, जिस
में समस्या का कोई ठोस समाधान नहीं दिया जा सका है.
नि.: मोहनकुमार. मु.पा.: राजेश खन्ना, शबाना, शशि
पुरी, रजनी, सचिन. अ.

महान : अमित अपने परिवार से बिछड़ कर नेपाल
भाग जाता है और अंत में अपनी पत्नी और दो जुड़वां
बेटों से मिलता है. अमिताभ की तीहरी भूमिका. सब कुछ
विसापिटा, कोई नयापन नहीं. नि.: स. रामनाथन,
मु.पा.: अमिताभ, अशोककुमार, परवीन बावी, जीनत
अमान, अमजद, शक्ति कपूर, कादरखान. स.

नरक और स्वर्ग

कहानी • डा. सत्यकुमार

नेहा ने महानगर के बड़े-बड़े हस्पताल व डाक्टरों के बड़े-बड़े 'क्लीनिक' देखे थे और सरकारी डिसपेंसरी की भी ऐसी ही कुछ छवि अपने मनमस्तिष्क में बना रखी थी। उस के पिता शंकरलाल इंजीनियर थे, ठेकेदारों से मिल कर उन्होंने सरकार को खूब चूना लगाया था और अवकाश प्राप्त करने से पहले ही कानपुर की गीता कालोनी में शानदार बंगला बना लिया था, जिस में सभी आधुनिक सुविधाएं थीं। नेहा के हाथ भी उन्होंने अवकाश प्राप्ति से छः माह पूर्व ही पीले कर दिए थे, वरना कुरसी छोड़ने के बाद कौन पूछता है।

नेहा का पति राहुल कानपुर मेडिकल कालिज में उस समय एम. डी. कर रहा था। वह तो शिक्षा समाप्त करने के बाद ही शादी करना चाहता था, परंतु मातापिता विहीन राहुल अपने वृद्ध चाचा की बात नहीं टाल सका था। चाचा ने ही उसे पुत्रवत पाला था

और उन की इच्छा थी कि वह मरने से राहुल की शादी कर दें। हुआ भी यही था। राहुल की शादी के दो माह बाद चाचा मृत्यु हो गई थी। चाचा के बच्चों को राहुल कभी स्नेह नहीं रहा था। अतः अपना कफतहपुर उस से सदासदा को छूट गया।

एम. डी. करने के बाद राहुल करता? अपना क्लीनिक खोलने के लिए के पास पूंजी नहीं थी। अतः उस ने सरकारी नौकरी स्वीकार कर ली थी। उस की निवास हुई बस्ती जिले के सुदूर गांव सीतापुर यानी 12 किलोमीटर बस से जाओ, फिर 5 किलोमीटर रिकशा से और शेष 2 किलोमीटर पगड़ंडी पर साइकिल से जाओ घोंड़े से या पैदल।

गांव में बिजली नहीं थी। हस्पताल इमारत खस्ता हालत में थी, स्टोर में कोई सामान नहीं था। स्टाफ के नाम पर केवल कंपाउंडर और सफाई कर्मचारी था। वहीं

बाय, चौकीदार आदि को धन्य कहता था। कंपाउंडर ने उसे बताया था कि पिछले चार साल से यहां की डॉक्टरों की संख्या बढ़ती जा रही है। कोई आता नहीं और अगर आता था तो दोचार दिन बाद चला जाता था। लखनऊ सचिवालय के चक्कर काट कर रिश्तत दे कर, किसी अच्छी जगह तबादला करा लेता था।

आखिर डाक्टर यहां रह कर करे भी क्या? रहने को क्वार्टर नहीं, गांव में भी ढंग का मकान नहीं। एकदो कमरे किराए के ले कर कहीं रहो भी तो शौचादि के लिए कोई व्यवस्था नहीं। महिलाएं तक बाहर खेतों में जाती थीं। खाने के लिए कोई होटल नहीं। कोई बाजार नहीं, सिनेमा नहीं, पुस्तकालय नहीं। सातआठ साल महानगरों में आधुनिक

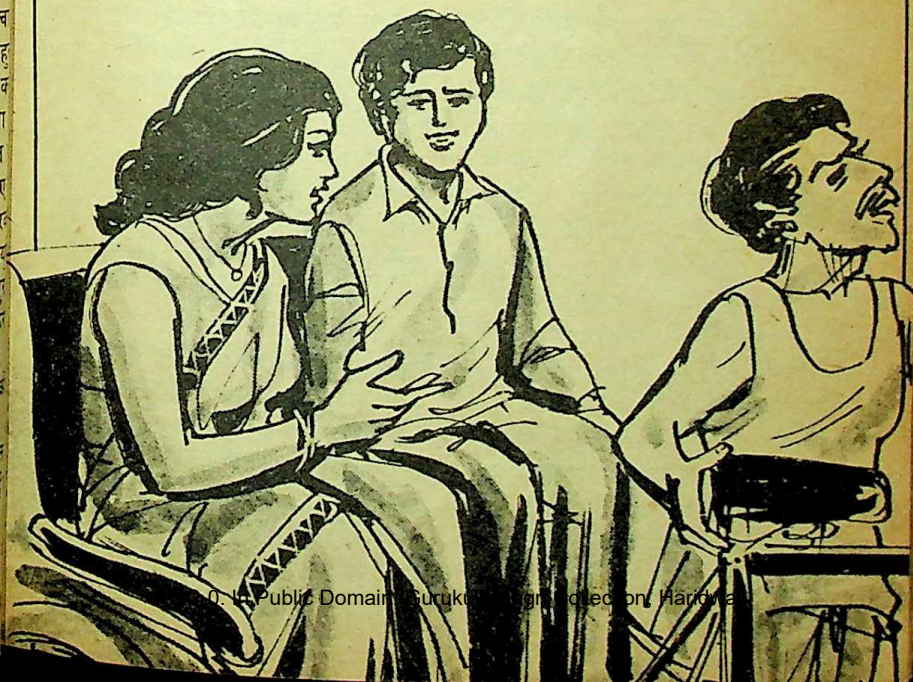
सुविधाओं वाले होटलों, सिनेमों, बाजारों, पुस्तकालयों में मौज से रहने वाले डाक्टर को वहां का जीवन बर्बाद कर देता था।

राहुल के रहने के लिए पटवारी ने अपनी बैठक में व्यवस्था कर दी थी। राशन के पैसे दे कर उस ने कंपाउंडर के घर से खाना मंगाना शुरू कर दिया था, पर हरेक व्यक्ति पूछता था कि डाक्टर साहब कब जा रहे हैं? कितने दिन रहेंगे?

मरीज हस्पताल आ कर कहते थे, "डाक्टर साहब आप तो दो दिन बाद चले जाओगे हमें तो कंपाउंडर की शरण लेनी पड़ेगी या फिर ओझापीरों की।"

राहुल देखता था कि असली जरूरत तो डाक्टरों की ऐसे ही पिछड़े हुए क्षेत्रों में थी। सूखा, पीलिया, अंडकोष वृद्धि, पेट में कीड़े,

राहुल ने अपने आदर्शों और मानवता के नाते जब गांव में डाक्टरी शुरू की तो उस की पत्नी नेहा को वहां का असुविधाओं से भरा जीवन नरक समान लगने लगा, पर किस प्रकार नेहा के बड़े और बीमार पिता को वही जीवन शहरी जीवन के मुकाबले स्वर्ग प्रतीत हुआ।



था. पेटेट दवाइयां न तो मिलती थीं और न कोई उन्हें जानता था. अशिक्षित व्यक्ति परहेज नहीं जानते थे. रोग को पालने रहते थे और एक दिन रोग उन्हें निगल जाता था.

राहुल को भी वहां का वातावरण देख कर मतली सी आई थी. उस का मन भी छोड़ कर भागने को हुआ था. उस के ससुर ने पेशकश भी की थी कि वह कानपुर में उस के लिए क्लीनिक की व्यवस्था कर सकते हैं या कोई नर्सिंग होम खलवा सकते हैं, परंतु राहुल ने ससुराल के टुकड़ों पर पलनां स्वीकार नहीं किया था.

उस ने अधिकारियों के पास दौड़धूप की थी. दवाइयां और उपकरण मंगवाए थे. उस क्षेत्र के विधायक को एक दिन हस्पताल ला कर दर्शना दिखलाई थी. उस के फलस्वरूप हस्पताल को कुछ अनुदान मिल गया था. हस्पताल कुछ ढंग का दिखाई पड़ने लगा था.

हस्पताल के कर्मचारियों के मकानों का अनुदान तो पांच साल पहले स्वीकृत हुआ था, परंतु कोई रुचि लेता तब तो मकान बनते ? राहुल ने अनुदान का नवीनीकरण कराया था तथा निर्माण कार्य के लिए सभी द्वार खटखटाए थे. जैसेतैसे काम शुरू हुआ था.

उधर नेहा के प्रेम पत्र बराबर आ रहे थे. वह राहुल के विरह में दुबली हुई जा रही थी, पर जब राहुल उसे सीतापुर लाया था तो वह रास्ते में ही बदहवास हो गई थी. रिकशे में हिचकोले खाती हई वह बोली थी, "राहुल यह भी कोई जगह है. तुम कहां पड़ हो ?"

और घर पहुंच कर जब उस ने 'बाथ रूम' पूछा था तब तो वह रोने को हो गई थी. पैर पटकती हुई बोली थी, "अभी चलो वापस मैं इस नरक में नहीं रह सकती."

राहुल उसे तरहतरह से समझाता रहा था. अगले दिन उस ने हस्पताल से कमोड मंगा कर पीछे की कोठरी में रखवा दिया था. पटवारी ने राहुल की पत्नी की आने की बात सुन कर दो कोठरियां और खाली करा दी थी. वह राहुल से बहुत प्रभावित था. एक तो वह

पत्नी गठिया से ग्रस्त थी. घर में डाक्टर तो बड़ी तसल्ली रहती है. फिर राहुल के रहने से सभी लोगों की पटवारी की इया पर आना पड़ता था.

सुविधाओं की आदत, वह भी उमर से नेहा ने बहुत प्रयत्न किया, पर स्वयं को वातावरण में नहीं ढाल पाई. न कुछ काम धंधा, न बाजार जाना, न पिकचर देखना. क्लब न कोई गोष्ठी, रोगी भी तो बिल्कुल हांचे जैसे आते थे.

एक दिन वह राहुल से बोली थी, "आदमियों का इलाज करते हो या जानवर का?"

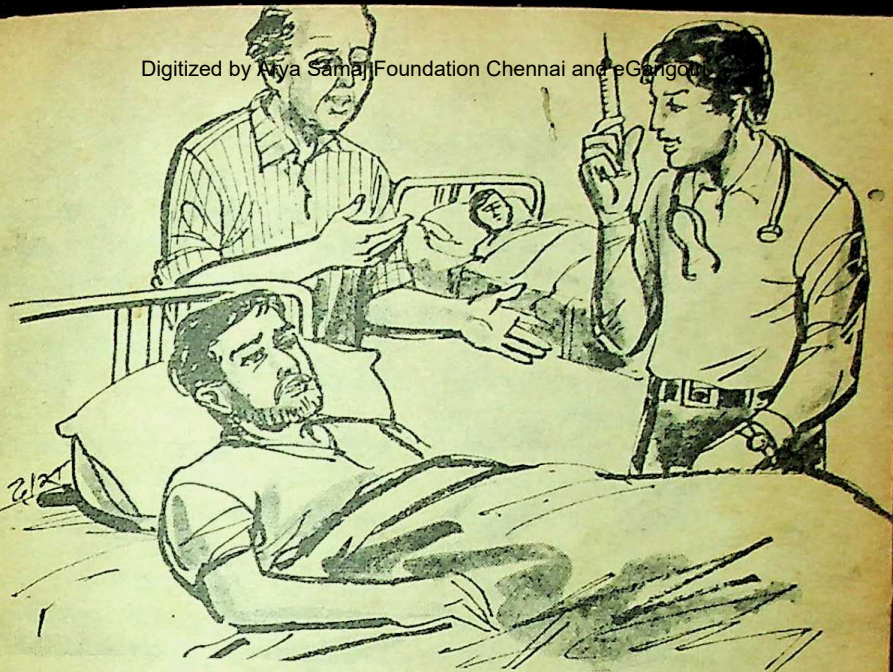
राहुल ने मुसकरा कर कहा "आदमी भी तो जानवर ही हैं."

एक दिन अचानक नेहा के पिता शंकरलाल बहुत बीमार हो गए थे. राहुल नेहा को कानपुर पहुंचा आया था. नेहा ने के लौटने पर कहा था, "तुम जल्दी से किसी अच्छी जगह तबादला करा लो. मेरे बस वहां रहना नहीं है"

राहुल लौट कर फिर काम में लगा था. काम का तो वहां शमार नहीं था. कौन बीमार नहीं था ? और फिर स्नेह से हाल पूछने वाला, ध्यान से दवाई वाला डाक्टर उपलब्ध हो, तो कोई रोग बाले रहता.

राहुल को बदले में मिलती थीं के दुआएं. क्या हुआ कभी कोई रोगी मौसम फल, सब्जी या अचार या सिरका या दूध छाछ भेंट कर गया. वरना वह तो घर देखने जाने की भी फीस नहीं लेता था.

नेहा के पत्र आते रहे थे और राहुल देरसवेर उसे आश्वासन देता रहा था. उस शंकरलाल को बुढ़ापे में एक के बाद एक जकड़ते जा रहे थे, उन्हें मधुमेह था, दिल दौरा पड़ा था. रक्तचाप तो था ही. इधर पेट अल्सर भी पाया गया था. दुनिया भर औषधियां और परहेज चल रहे थे. कानपुर लाभ नहीं हुआ तो लखनऊ. वहां भी न



"मुझे भी इंजेक्शन लगाना सिखा दो" जब शंकरलाल ने कहा तो राहुल हैरान रह गया।

नहीं हुआ तो दिल्ली वहां से चंडीगढ़, अंत में हताश हो कर, तीन माह से अधिक न जीने की पुष्टि करा के कानपुर लौट आए थे।

उन के यहां मित्रों, संबंधियों का देखने आने का तांता लग गया था। वह चैन से बैठना चाहते थे, परंतु कभी वकील, कभी किराएदार, कभी बेटे कुछ न कुछ बवंडर खड़ा किए रहते थे। एक दिन वह नेहा से बोले थे, "राहुल तो देखने आया नहीं। मैं स्वयं ही मरने से पहले उस से मिल आता हूं। हो सका, तो समझाबुझा कर उसे साथ लेता आऊंगा।"

"जल्दी लौट आना पिताजी"। यह कह कर नेहा ने अपना साथ न जाना घोषित कर दिया था।

अपनी कार, ड्राइवर व एक नौकर को साथ ले कर शंकरलाल सीतापुर चल दिए थे। कार तो वर्डपुर पर ही छोड़नी पड़ी थी। पगडंडी के रास्ते पर समस्या आई थी। साइकिल पर चढ़ना शंकरलाल भूल चुके थे

और घोड़ा कोई दिखाई नहीं पड़ रहा था, पर जब वहां लोगों को पता चला कि वह डाक्टर साहब के सुसर हैं, तो गांव का ठाकुर स्वयं अपना घोड़ा ले कर आया था और साईंस को सावधानीपूर्वक पहुंचा देने का निर्देश दे गया था।

शंकरलाल को देख कर राहुल चौंक गया था, "अरे, बाबूजी आप? कोई सूचना नहीं दी? रास्ते में बहुत कष्ट हुआ होगा?"

उस ने सोचा नेहा भी अवश्य आई होगी, पर उसे न देख कर उस का मुंह लटक गया था। फिर वह उन के रोग आदि के बारे में पूछताछ करता रहा था। वह बहुत थके हुए थे। रात को उन्होंने कुछ नहीं खाया था। एक गिलास दूध पी कर सो गए थे, पर दूध पीते समय, होठों पर जीभ फेरते हुए उन्होंने इतना अवश्य पछा था, "यह दूध ही है क्या?"

सबेर जब राहुल ने निवृत्त होने के लिए बाहर चलने को कहा, तो वह उठते हुए बोले

बता रहा है, पर कानपुर में चार मील जाने के बाद कहीं खुली जगह नहीं मिली। यहाँ तो एक पंथ दो काज।"

लौट कर जब राहुल ने नाश्ते के लिए पूछा था तो वह बोले थे, "भाई मुझे अल्सर की वजह से दूध पीने को कहा गया है, पर दूध मुझे अच्छा नहीं लगता था। रात को जो दूध पिया तो आश्चर्य हुआ कि दूध में इतना स्वाद होता है। वस, मैं तो दूध ही पिऊंगा।"

नाश्ते के बाद राहुल ने उन को आले आदि से देखा था। जो दवाएं उन्हें बताई गई थीं, उन के नुस्खे देखे थे। उस ने उपचार के बारे में उन से भी पूछा था और फिर जब तीन माह वाली भविष्यवाणी सुनी थी तो बोला था, "बाबूजी, मेरी मानें तो सब इलाज बंद कर दें। कोई दवा न लें। वस, अधिक शक्कर न लें। मधुमेह के कारण और वैसे भी बढ़ती आयु में चीनी अनावश्यक होती है। आप को इतनी एंटीबायोटिक दवाएं दी जा चुकी हैं और सभी दवाएं आप के शरीर में इतनी ज्यादा मात्रा में पहुंच चुकी हैं कि आगे उन से कुछ लाभ नहीं होने वाला। यदि लाभ होना है तो शरीर में उन की जो मात्रा उपस्थित है, वह पर्याप्त है।"

शंकरलाल स्वयं दवाओं से ऊब गए थे। उन्होंने तुरंत सारे नुस्खे फाड़ दिए थे। राहुल हस्पताल चला गया था। शंकरलाल पटवारी से गप्पें मारने लगे थे। पटवारीजी उन के दामाद की प्रशंसा करते नहीं अघा रहे थे। बड़ी देर तक अपने इलाके की बातें करते रहे थे।

राहुल जब दो बजे लौटा था तो शंकरलाल खरटि ले रहे थे। राहुल ने जब उन्हें जगाया तो वह विस्मित होते बोले थे, "मैं सो गया था, मुझे तो न जाने कितने दिन से दोपहर में नींद नहीं आई थी। रात को भी कभीकभी तो सोने के लिए गोली लेनी पड़ती है।"

राहुल ने कहा था, "बाबूजी, अब आप एकदो माह यहां आराम करें। नेहा होती तो आप की सेवासुश्रूषा भली प्रकार हो जाती..."

बोले थे, "न भाई? वह होती तो दुनिया की दवाइयां लगा देती, घरेघरे भर बाद और दानिक लिए खड़ी रहती। मेरा फेर गोलियों से भर जाता था। भूख ही नहीं आती थी, पर आज तो पेट में चूहे कूद रहे हैं।"

राहुल घड़ी देखता हुआ बोला "ढाई बजे रहे हैं, बाबूजी दो बजे तक हस्पताल का समय ही है। फिर यदि जरूरी मामला आ जाता है तो मुझे देर जाती है। आप खाना जल्दी खा लीजिए।"

तीन दिन बाद शंकरलाल को लगा जैसे वह ठीक हो चले हों। जब दवा नहीं, तीमारदार नहीं तो शायद रोकिनारा कर गए थे। वह सुबहशाम जाते थे। दिन में गांव में घूमते थे। कभी हस्पताल चले जाते थे। रोगियों से बतिया डाक्टर के प्रति उन की श्रद्धा रखते थे। उन्हें आंखें छलछला आती थीं। वह स्वयं भी डाक्टरों से इलाज करा चुके थे। अधिक फीस उन्होंने दी थी, पर डाक्टर प्रति यह भाव उन के मन में कभी नहीं आया था।

एक दिन वह राहुल से बोले थे, "भाई इंजेक्शन लगाना सिखा दो।" राहुल बोला था, "क्यों, क्या इंसुलिन लेना शुरू कर डायबिटीज तो नियंत्रण में है।"

वह बोले थे, "नहीं, भाई, कंपाउंड अकेला दवाई दे, पट्टी करे, इंजेक्शन लगा क्याकरे वह? मैं खाली ही तो रहता हूँ।"

दो दिन बाद रोगियों के इन्जेक्शन लगाते समय शंकरलाल सोच रहे थे, कि मधुमेह के लिए डाक्टर सुरेंद्र ने उन से कहा था कि खाना खाने से पहले या तुरंत बाद 'इंसुलिन' का इंजेक्शन लगा लिया करें। उन्होंने नकारते हुए कहा था, "मेरे बच्चे नहीं।" और कई साल तक वह कंपाउंड पांच रुपए घर आ कर इंजेक्शन लगाती फीस देते रहे थे।

तीन माह हो गए थे। शंकरलाल

शंकरलाल अपनेआप में मग्न थे. उत्तर देते ही नहीं थे. लोग अविश्वसनीय मानते थे. रहे थे.

रविवार को हस्पताल की छुट्टी रहती थी. ससुर, दमाद नाश्ता कर के नदी पर मछली पकड़ने पहुंच जाते थे. वहां घंटों बैठे रहते थे और जब लौटते थे तो जाल में अवश्य, ही कुछ होता था.

शंकरलाल के बेटों को शंका हुई थी कि कहीं ऐसा तो नहीं कि पिताजी चल बसे हों या मरने वाले हों और वहनोई ने कोई उल्टीसीधी वसीयत अपने नाम करा ली हो.

नेहा के साथ पूरा काफिला एक दिन हाराथका, रोता झींकता सीतापुर पहुंच गया था. पटवारीजी के घर से पता चला था कि हस्पताल के क्वार्टर बन गए हैं और डाक्टर साहब अब वहीं पर रहते हैं.

जब सब क्वार्टर पर पहुंचे थे तो दंग रह गए थे वहां ताला लटक रहा था. राहुल तो भी खैर हस्पताल होगा पर पिताजी कहाँ गए. सब सोचने लगे थे.

जब सब लोग हस्पताल पहुंचे थे, राहुल विस्मित रह गया था. नेहा को देख कर जैसे उस के दिल की कली खिल गई थी नेहा ने धीरे, भराए गले से पूछा था, "पिताजी."

राहुल ने पीछे के बरामदे की ओर इशारा कर दिया था. ये लोग समझे थे कि शायद उन की हालत खराब है, वह भर्ती हैं, तो डपट कर बोले, "आप ने खबर क्यों नहीं दी? लखनऊ एडमिट कराते उन्हें."

राहुल की समझ में कुछ नहीं आया था. सब लोग बरामदे की ओर लपके थे. खेलों वाली कमीज और पैंट पहने, शंकरलाल एक सूखाग्रस्त बच्चे को इंजेक्शन लगा रहे थे.

सब के मुंह से अनायास निकला था "पिताजी आप?"

शंकरलाल हंसते हुए बोले थे "अरे, तुम लोग कब आए? मुझे तो यहां इतना सुख मिला कि तुम्हें पत्र भी नहीं लिख सका.

सब अवाक थे, वह नेहा को देख कर बोले थे, "अच्छा किया बेटी तू आ गई. इस

वह बोली थी, "पिताजी आप का नाम क्या है, अल्लुगोत्रि."

शंकरलाल ने हंसते हुए अपनी छाती तान कर कहा था, "देख नहीं रहीं. भला यहां भी कोई बीमार पड़ सकता है? यही तो फर्क है यहां और वहां में. वहां नरक था तो यहां स्वर्ग है."

हिंदी

गुलामों गंवारों जाहिलों

की भाषा है न?

तभी तो आप

● हिंदी की बोलचाल में और हर वाक्य में दो तीन शब्द अंगरेजी के जरूर रहते हैं. हर दूसरा वाक्य अंगरेजी का बोलते हैं.

● अपने नाम का संक्षिप्तीकरण अंगरेजी अक्षरों में करते हैं.

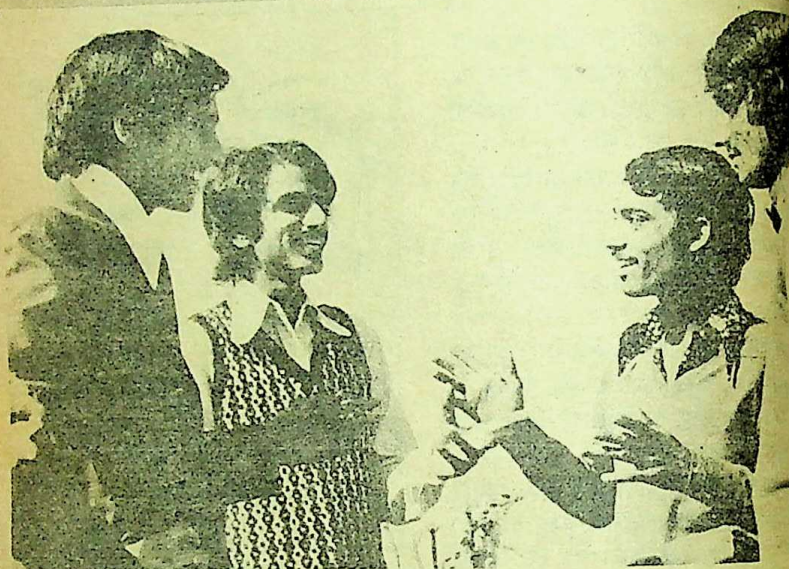
वी.पी. शर्मा, एस.एन. वर्मा, के.एस. गुप्ता, आई.एम. दास...

● अपने सांस्कृतिक, सामाजिक, पारिवारिक और निजी उत्सवों एवं सम्मेलनों के निमंत्रण पत्र अंगरेजी में छपवाते हैं, चाहे आप और आप के आर्मांत्रित अंगरेजी के चार वाक्य भी सही रूप से न ब्रिड सकें और न समझ सकें.

● अपना निजी पारिवारिक पत्रव्यवहार अंगरेजी में करते हैं.

अंगरेजी साहबों की भाषा है. आप पूरी नहीं बोललिख सकते तो आधीअधूरी ही सही, साहबी कुछ तो दिखाई देगी ही!

अदब से बातें करिए

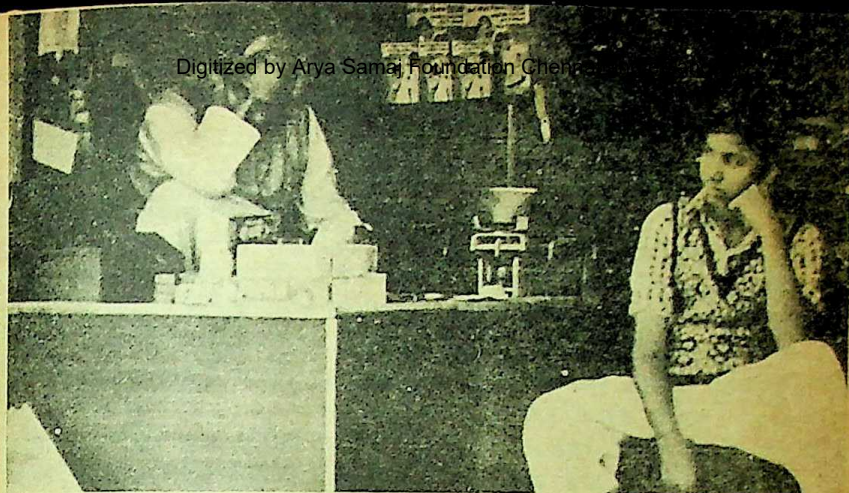


लेख ● डा. कमलाकांत हीरक

बातचीत करते समय यदि छोटी-मोटी बातों का ध्यान रखा जाए तो व्यक्ति पर आप का अच्छा प्रभाव तो पड़ेगा ही, आप का काम भी आसानी से निकल जाएगा..

"वाह, कमाल के आदमी हैं आप. मैं इतनी दूर से आप से मिलने के लिए आ रहा हूँ आप हैं कि अदब से बातें करना नहीं जानते. क्या मैं आप से कुछ मांग रहा हूँ? पड़ोसी होने के नाते आप की मौसी ने यह संदेश यहां तक पहुंचा देने के लिए कहा था, सो मैं ने कर दिया. अब आप जानिए और आप का काम. मैं चल रहा हूँ." विशन विना

नमस्कार किए ही कपिलराज के भुनभुनाते हुए चल दिया. कपिल की व्यवहार से उसे दुख एवं क्षोभ हुआ. कपिलराज ने 40 वर्ष की उम्र पाली थी, लेकिन वह किसी से अदब करना नहीं जानते थे. उन का हर शब्द में ऐसा लगता था जैसे वह सामने वाले की उपेक्षा कर रहे हों. इस बात को



बिना ग्राहकों की दुकान : अदब से बातचीत न करने का नतीजा.

कभीकभी उन की अपनी पत्नी से भी खटपट हो जाया करती थी.

"भाईजान, क्या मैं यहां पर बैठ सकता हूं? आप को कोई एतराज या तकलीफ तो नहीं...?" चल रही ट्रेन के डब्बे में एक सज्जन ने बैठे हुए एक यात्री से मुसकराते हुए पूछा.

"आइए." कहते हुए उस यात्री ने एक ओर सरकते हुए उसे स्थान दे दिया. उस सीट पर चार की जगह पांच व्यक्ति हो गए. मीठी बोली ने किसी को कुछ कहने का मौका ही नहीं दिया.

शंकरदास बड़े रुतवे वाले अधिकारी थे. अपने आगे किसी को कुछ समझते ही नहीं थे. एक दिन चार अफसरों के साथ अपने कमरे में बातचीत कर रहे थे. अपना रुतबा दिखाने के खयाल से उन्होंने सेवकलाल टाईपिस्ट को बुला कर पूछा, "आप ने अभी तक पत्र टाइप नहीं किए? आज तीन दिन हो रहे हैं. आप क्या काम करते रहते हैं? आज शाम तक पत्र मिल जाने चाहिए."

इस से सेवकलाल के आत्मसम्मान को चोट पहुंची थी. वह शंकरदास के कमरे से चुपचाप चला गया, पर कुछ क्षण पश्चात, अपने हाथ में तीनचार कागज लिए हुए उन

के पास पहुंचा था और कागजों को मेज पर पटकते हुए बोला था, "मैं आप के घर का नौकर नहीं हूं, कूड़ाकरकट टाइप करना मेरा काम नहीं है: यहां भाईभतीजों का टाइप नहीं होता है और हां, जरा आदमी की तरह बातें किया करें. ये तेवर अपनी बीवी को जा कर दिखाइएगा, सेवकलाल जैसे सरकारी टाईपिस्ट को नहीं."

शंकरदास का चेहरा फक पड़ गया था. एक साधारण बाबू के मुख से ऐसी बातें सुनने की उन्होंने कभी कल्पना तक नहीं की थी. सभी के सामने उन का सिर नीचा हो गया. यह उन के अदब से बातें न करने का नतीजा था.

रात्रि के आठ बज रहे थे. तीनचार वर्ष के बच्चे को लिए हुए एक महिला सड़क पर खड़ी हो कर व्यग्रता से इधरउधर देख रही थी. उसे रिकशा की तलाश थी. संयोग से एक रिकशेवाला उधर से गुजर रहा था. महिला ने उसे रोकते हुए बड़े प्रेम से कहा, "भाई, मुझे चौकीपूरा पहुंचा दो. मैं अकेले इस बच्चे के साथ हूं. तुम्हारा एहसान मानूंगी."

रिकशेवाले ने महिला की बातें ध्यान से सुनीं. हालांकि उसे रिकशा जमा करना था, फिर भी वह महिला के आग्रह को नहीं टाल सका. उस ने महिला को उस के घर पहुंचा

दिया। मोहला ने उस दो के स्थान पर तीन
रुपए दे दिए। रिकशावाला खुशीखुशी चला
गया।

Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

मनीष की मां अपने बच्चों को हमेशा
सिखाती और समझाती रहती थी कि प्रेम से
जातचीत करना कभी नहीं भूलना चाहिए।
रोष से, गुस्से से एवं अहं से बातें करने से
बाधाएं उत्पन्न होती हैं।

मनीष को इस का तजुर्बा भी हुआ।

फरवरी का महीना था। कड़ाके की सर्दी
पड़ रही थी। इसी बीच वर्षा भी होने लगी थी।
संयोग से मनीष की स्कूल बस छूट गई थी।
वह चिंतित हो उठा था। उस रास्ते से गुजरने
वाली कोई भी बस नहीं थी, जिस से वह घर
जा सके। उधर से आते हुए ट्रक को रुकवा कर
उस ने उस के चालक से कहा, "चाचाजी,
मुझे शंकरपुरा तक लेते चलिए न। मेरी स्कूल
बस छूट गई है और अब कोई गाड़ी भी नहीं।"

ट्रकवाले ने मनीष को बैठा लिया और
शंकरपुरा तक ले गया। वहां उतर कर मनीष
धन्यवाद करते हुए जब उसे 50 पैसे देने लगा
तो ड्राइवर मुसकराया और बोला, "तू
समझदार लड़का है, मैं खुश हूँ। तू मेरी ओर से
रेवड़ी खा लेना।"

मां की सिखाई हुई बातों पर मनीष को

गव हो रहा था।

कुछ दिन पहले राजू की बहुत छोटी
एक दुकान थी, जो अब अच्छीखासी ब
दुकान हो गई है। इस का कारण है कि वह
से बोलता एवं सामान देता है। उम्र के अनु
चाचाजी, भाईसाहब, बाबूजी इत्यादि
कर लोगों को संबोधित करना उस की आ
बन गई है। वह अपनी गलती को स्वी
करने में भी नहीं हिचकिचाता। मुसकराते
बातों का जवाब देना और सुनना ही उ
सीखा है। राजू जानता है कि अदब से
करना सफलता की सीढ़ियों पर चढ़ते
है।

हमें आसपास इस प्रकार की अने
बातें सुनने एवं देखने को मिलती हैं। बातों
प्रभाव जादू सा होता है। इसे तो मान
पड़ेगा। अदब से की गई बातों का असर
अनोखा होता है। इस के आगे सारी
फीकी पड़ जाती हैं, कठिन समय में भी ब
बड़ा काम हो जाता है।

अदब से बातचीत करने से मनुष्य
अच्छा प्रभाव पड़ता है। मन की उलझी
ग्रंथियां खुल कर सुलझ जाती हैं और परि
अच्छा होता है। अतः अदब से बात करने
कंजूसी मत कीजिए।

जन्मोत्सव, विवाह
व अन्य
शुभ अवसरों पर

पुस्तकें भेंट में दीजिए



आपके बच्चे कल क्या बनते हैं

यह इस पर निर्भर करता है
कि आप उन्हें आज पढ़ने के
लिए क्या देते हैं

आपके बच्चों के लिए
स्कूल के पश्चात सिर्फ खेलना ही काफी नहीं।
उनको दीजिए सुमन सौरभ- दिल्ली प्रेस की नई पत्रिका
जी हां, वही दिल्ली प्रेस जो पिछले 40 वर्षों से
आपके पूरे परिवार के लिए सरिता, गृहशोभा, मुक्ता,
भूभारती, चंपक, कैरेवान और वूमंसडैरा प्रकाशित
करते आ रहे हैं।

सुमन सौरभ आपके बच्चों का संतुलित विकास करने
के लिए प्रकाशित की जा रही है।

सुमन सौरभ की शिक्षा पूर्ण कहानियां व रोचक स्तंभ
आप के बच्चों को जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा देंगे।
उन का स्वस्थ मनोरंजन करने के साथसाथ उन को देश व
समाज के प्रति अपना उत्तरदायित्व निभाने के लिए तैयार
करेंगे।

हर महीने अपने बच्चों को ले कर दें

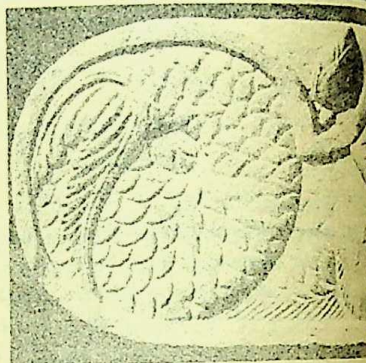
सुमन सौरभ

किशोरी को सही विज्ञान विज्ञान वानस सार्वजनिक पत्रिका

जानने के माध्यम, सांस्कृतिक
 थाती के रक्षक और ज्ञान के दुरोखे होते हैं।
 इस दृष्टि से मथुरा संग्रहालय का अपना

मथुरा का इतिहास हजारों वर्ष पुराना
 है। बौद्ध, जैन, एवं ब्राह्मण धर्मों का यह
 रहा है। प्रसिद्ध बौद्ध कालीन यात्री फाहियान

मथुरा



एवं ह्वेनसांग ने अपने यात्रा वर्णनों में मथुरा का उल्लेख किया है। गुप्त काल, कृपाणक एवं तत्पश्चात मुगल एवं ब्रिटिश शासक कालों के हजारों वर्षों में मथुरा का इतिहास अनेक बार बनाबिगड़ा है।

मथुरा संग्रहालय की स्थापना ब्रिटिश काल में 1874 में प्राचीन वस्तुओं के विदेश और तत्कालीन जिलाधीश एफ.एस. गार्डनेर की थी। जिस स्थान पर अब यह संग्रहालय स्थापित है, इसे 1930 में यहाँ लाया गया। यह इस समय डैम्पियर नगर में स्थित है। यहाँ में बौद्ध कालीन, गुप्त कालीन, मौर्य कालीन एवं ईसा से भी एक हजार वर्ष पुरानी, सैन्य प्रस्तर प्रतिमाएं, सिक्के, पेंटिंग एवं कलात्मक पुरावशेष संगृहीत हैं। संग्रहालय का सब से बड़ा आकर्षण गुप्त एवं कृपाणक युगीन कलाकृतियों का भव्य संकलन संग्रहालय में प्रवेश करने, इसके पुस्तकालय में पुस्तकें पढ़ने की निःशुल्क व्यवस्था पहली जुलाई से 15 अप्रैल तक प्रातः सात

लेख • ब्रजगोपाल राय 'चंचल'

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मे साढ़े तीन बजे तक यह संग्रहालय देशका एवं कलाप्रेमियों के लिए खुला रहता है।

महिलाओं की कपाण कालीन मूर्तियां : संग्रहालय की अमूल्य धरोहर (बाएं की ओर)

संग्रहालय

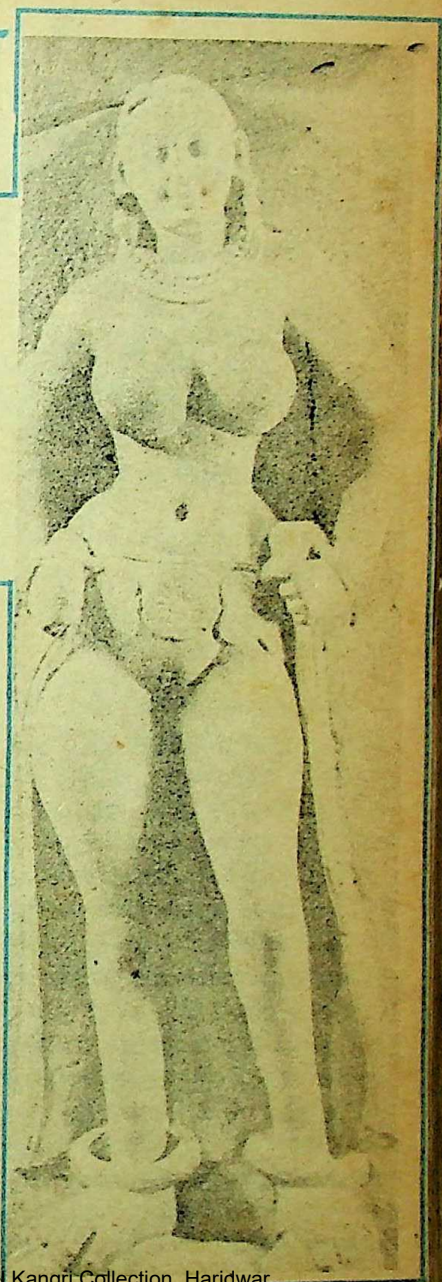


सोमवार को अवकाश रहता है।

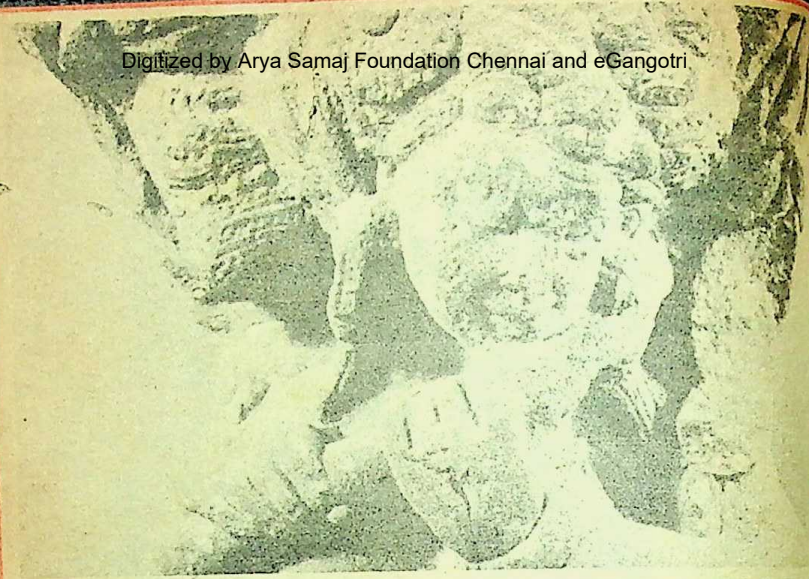
यह भव्य संग्रहालय 16 गैलरियों में विभाजित है। प्रत्येक गैलरी में अलग-अलग युगों, शैलियों की प्रतिमाओं एवं पुरावशेषों का संकलन है।

जरमनी के एक पुरातत्वविद दल ने डा. हरवर्ट हटेल के नेतृत्व में मथुरा से कुछ ही किलोमीटर दूर सोख नामक स्थान से लगभग 3,000 वर्ष पूर्व के प्राचीन संस्कृति के

प्राचीन संस्कृति एवं कला की अपार धरोहरों को अपनेआप में समेटे हुए मथुरा संग्रहालय, आज किस प्रकार इतिहासकारों, कला प्रेमियों तथा आम दर्शकों के बीच आकर्षण का केंद्र बना हुआ है?



मुक्त



लाल चित्तीदार पत्थर से बनी बांसुरी वादन करती महिला.

अवशेषों को धरती की परतों से निकाल कर इस संग्रहालय को भेंट किया है. यह संपदा अमूल्य है.

सांस्कृतिक धरोहर

1976 में विश्व भर में बुद्ध की 2,600 वीं जयंती मनाई गई थी. इसी वर्ष मथुरा संग्रहालय को अत्यंत महत्त्वपूर्ण बौद्ध कालीन पुरावशेष, मथुरा के गोविंदनगर नामक स्थान से प्राप्त हुए थे.

खुदाई में प्राप्त एक अभिलिखित चरण चौकी से यह ज्ञात हुआ कि गोविंद नगर बौद्ध काल में बौद्ध स्मारक था और यह बौद्ध स्मारक गुप्त युग में 'वीरदत्त बिहार' के नाम से प्रसिद्ध था. यहीं से मौर्य युग से भी प्राचीन सैकड़ों मूर्तियां भी प्राप्त हुईं. प्रस्तर मूर्तियां प्रथम शती ईसा पूर्व से छठी शती ईसा पूर्व के मध्य की हैं.

गोविंद नगर से प्राप्त ये कलाकृतियां तत्कालीन बौद्धों के विकास, संस्कृति एवं कला की जीतीजागती प्रतिमाएं हैं. विशालतम प्रतिमाओं से ले कर छोटीछोटी

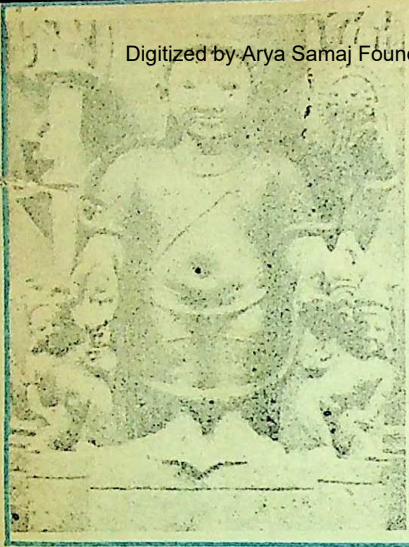
प्रतिमाओं को देखने से विदित होता है संभवतः तत्कालीन बौद्ध धर्मावलंबियों ने प्रतिमाएं अपनी श्रद्धा, आस्था एवं पूजा के स्थान के अनुरूप बनाई होंगी. बहुत अवशेषों पर जातक कथाओं, बुद्ध लीलाओं का अंकन है. बौद्ध कालीन कला शास्त्रियों के अनुसार ये मूर्तियां अ महत्त्वपूर्ण हैं. ये मूर्तियां गुप्त एवं कालीन मथुरा शैली की शिल्प कला प्रदर्शित करती हैं.

कुषाण कालीन पुरावशेषों का इ भव्य संकलन अन्यत्र मिलना दुर्लभ है. द्वार पर ही छत्र के नीचे अभय मुद्रा में बुद्ध की भव्य प्रतिमा, अनेक शुभ कहे वाले चिह्नों की पट्टी से युक्त छत्र सिंहासन आकर्षित करते हैं. संवत् 2 सम्राट हविष्क के शासन काल प्रतिस्थापित एक चरण चौकी, जिसे अमिताभ बुद्ध का उल्लेख है, मूर्तिकला मथुरा के इतिहास की दृष्टि से अमूल्य. कुषाण युगीन अन्य पुरावशेष महत्त्वपूर्ण प्रतिमाओं में गांधार शैली

अभयमुद्रा में आसीन बुद्ध की आकर्षक प्रतिमा है। इस प्रतिमा के पीछे एक स्तंभ है जिस पर राजकुमार सिद्धार्थ के यक्ष हाथ में पात्र लिए खड़ा है। एक वास्तुखंड पर उत्कीर्ण एक दृश्य अत्यंत आकर्षक है। इस में सिद्धार्थ के अश्वों के खुरों को यक्ष अपनी हथेली पर साधे हुए है। एक स्तंभ के शीर्ष पर राजकुमार सिद्धार्थ के राज मुकुट की उपासना है तथा तीनों भागों में संभवतः ऋषि श्रृंगी के जातकों का अंकन किया गया है। एक स्तंभ में एक मूढ़े पर बैठी

अभयदान की मुद्रा में बुद्ध संग्रहालय की एक महत्त्वपूर्ण प्रतिमा।





संग्रहालय में संग्रहीत एक कुषाण
कालीन प्रतिमा.

बुद्धा को दर्पण में निहारते हुए दिखाया गया है.

जालांगुलि धारी बुद्ध की एक
मस्तकहीन खड़ी प्रतिमा है. इस के पैरों के
नीचे पद्मगुच्छ है. इस में लाल रंग के लेप के
कुछ चिह्न अभी तक विद्यमान हैं. संभवतः
उस समय मूर्तियों को रंगने की परंपरा शुरू
हो गई थी.

अन्य कुषाण कालीन पुरावशेषों में
अलंकृत द्वार शाखा, गरुड़, एक अत्यंत
प्राचीन शीश विहीन बुद्ध प्रतिमा तथा कमल
के फूल से अंकित भिक्षापात्र दर्शनीय है.

कला के अप्रतिम नमूने

गुप्त काल को कला एवं वैभव की दृष्टि
से भारत का स्वर्णकाल माना जाता है. गुप्त
कालीन अवशेषों में बुद्ध की सर्वांग सुंदर
प्रतिमा यहां स्थित है. इस प्रतिमा में उत्कीर्ण
पारदर्शक वस्त्र, अधमुंदे से नेत्र, सुंदर
घुंघराले केश और लंबे कान इस को कला का
अप्रतिम उदाहरण बना देते हैं. 434 ईसवी में
इस प्रतिमा की स्थापना की गई है. इस प्रतिमा
के मूर्तिकार 'दिन्न' का नाम इस की चरण
चौकी पर उत्कीर्ण है.

अन्य गुप्त कालीन पुरावशेषों में
थ कला शैली
प्रतीक भूरे रंग की बुद्ध की खड़ी प्रतिमा
खंडित बुद्ध मस्तक तथा एक छोटे खंडित
उत्कीर्ण शोभा मुख पट्टी तत्कालीन कला
एवं शैली की भव्यता का साक्ष्य प्रस्तुत करता
है.

इन के अतिरिक्त संग्रहालय में कला
जन्मभूमि में स्थित कंकरा टीला की खुदाई
प्राप्त सैकड़ों पुरावशेष संग्रहीत हैं. इस संग्रहालय
पर हमेशा मंदिरों के निर्माण होते रहे थे. कला
एवं ब्राह्मणों से संबंधित विभिन्न मंदिरों के
निर्माण युगों में यहां हुआ. यहां से ब्रह्मण्य
एवं बौद्ध धर्म की कई मूर्तियां संग्रहालय में
संग्रहीत हैं.

पिछले 10-12 वर्षों में संग्रहालय में
अनेक उल्लेखनीय उपलब्धियां हैं. इनमें
संख से प्राप्त पुरावशेषों का संकलन
गोवर्धन से प्राप्त 50 हजार वर्ष पुराने पाषाण
उपकरणों की खोज आदि हैं.

संग्रहालय में नई वीथिकाओं को प्रा
किया गया है. समयसमय पर कई अस्थायी
प्रदर्शनियों का भी आयोजन किया जाता है.
सन् 1974 में संग्रहालय के शताब्दी वर्ष
आयोजन भी किया गया था. संग्रहालय के
शताब्दी पर डाक तार विभाग ने दो
डाक टिकट भी जारी किए थे.

संग्रहालय द्वारा अनेक शोध संगोष्ठी
विद्वत्सभाओं, व्याख्यानों एवं शैक्षिक फिल्मों
का भी आयोजन किया जाता है. संग्रहालय में
शोध स्नातकों, पर्यटकों, क्लबों, शिशु
संस्थानों तथा जनता से निकट का संपर्क रखता
है. नगरपालिका द्वारा यहां के एक मार्ग का
नाम 'संग्रहालय मार्ग' रखा गया है. विश्व
विद्यालयों द्वारा यहां के निदेशक को शोध
परीक्षक के रूप में मान्यता दी गई है.

इस संग्रहालय को देखने से मथुरा का
कला शैली का पता चलता है. मथुरा का
शैली में प्रायः लाल चित्तीदार पत्थर का
प्रयोग किया गया है. मध्य प्रदेशीय कला
अनुसरण और उसे विकासोन्मुख करने
मथुरा शैली का योगदान रहा है. इस शैली

समन्वय है। राज पुरुषों की मूर्तियों को अधिक निर्मित किया गया है। अधिक लावण्यमय एवं आकर्षक बनाया गया है। गुप्त कालीन प्रतिमाओं में कला प्रेमियों के सौंदर्य एवं अध्यात्मिक लोगों के लिए अध्यात्म का विलक्षण समन्वय है।

1981 तक यहां लगभग 7,895 प्रस्तर प्रतिमाएं, चित्र, कलाकृतियां एवं अन्य पुरावशेष थे, धातुओं में सोने, चांदी, तांबे एवं अन्य धातुओं की सामग्री की संख्या 1981 में 9,549 थी। इस के अतिरिक्त सोख से प्राप्त खुदाई में 12,000 प्राचीन पुरावशेष और मिले हैं। सभी पुरावशेष 623 ईसा पूर्व से 1200 ईसा के बाद तक के हैं। इन में गोवर्धन से प्राप्त उपकरण 50 हजार वर्ष पुराने हैं।

संग्रहालय द्वारा हिंदी व अंगरेजी में कई महत्वपूर्ण पुरातत्व विषयक पुस्तकों का प्रकाशन किया गया है। संग्रहालय के काउंटर पर संग्रहालय के चित्रों, चित्र पोस्टकार्डों एवं प्लास्टर आफ पेरिस के साडलों की अनुकृतियों की विक्री भी होती है।

कई विदेशी राष्ट्रों की कदृष्टि लगी हुई है। आंकी जाती है। इसलिए कई इस कदृष्ट्य को करने वाले तस्कर इस संग्रहालय की बहुमूल्य सामग्री को उड़ाने की कोशिश में लगे रहते हैं। 25 वर्ष पूर्व यहां से बुद्ध का मस्तक चोरी चला गया था। जो बाद में बड़ी मुशकिलों से स्विटजरलैंड से यहां लाया गया। 4 जून, 1978 को भी संग्रहालय में चोरी का भयंकर प्रयास किया गया था। चोर कुषाण कालीन तांबे का एक छल्ला ले कर भाग जाने में सफल रहे थे तथा अन्य कलाकृतियों को अस्तव्यस्त कर गए थे। स्ट्रांग रूम, जिस में सोने चांदी के अत्यंत मूल्यवान पुरावशेष रहते हैं, में लोहे की सीखचों वाला दरवाजा लगा है। चोरों ने उसे खोल कर तथा लकड़ी के दरवाजों को काट कर चोरी का असफल प्रयास किया था।

वास्तव में इस संग्रहालय की सुरक्षा और कड़े प्रबंध की आवश्यकता है ताकि यह भारतीय धरोहर सुरक्षित रह सके।



की तैयारियां कर रहे थे, उधर
 देवलोक में लक्ष्मी चली गई थी।
 औजार वगैरह समेट रही थी। हर साल

दीवाली मनाना मृत्युलोक के लोगों का काम
 था और हर साल छप्पर फाड़ कर किसी न
 किसा के गढ़ा जाना लक्ष्मी का काम। ये दोनों
 काम बरसों से निर्बाध होते चले आ रहे थे।

सारे औजार वगैरह ब्रीफकेस में रखने
 के बाद महामाया लक्ष्मी अपने उल्लू पर बैठ
 कर मृत्युलोक की ओर चल दी। वैसे तो उस
 का उल्लू बहुत तेज गति से उड़ लेता था, किंतु
 उस ने ही उसे धीमी गति से चलने के निर्देश दे
 रखे थे, क्योंकि जब से मृत्युलोक से उपग्रहों व
 राकेटों का आना शुरू हुआ है तब से आसमान
 में भी काफी भीड़ हो गई है। इसलिए दुर्घटना
 के डर से लक्ष्मी उल्लू को धीरे ही चला रही
 थी।



लक्ष्मी चली फाड़ने छप्पर

व्यंग्य • कमलकिशोर सक्सेना



जिस समय लक्ष्मी ने मृ
 लोक की सीमा में प्रवेश किया
 उस समय रात हो चुकी थी।
 और झिलमिलाते दीपों की रोशनी
 नजर आ रही थी। हालांकि क
 लोगों ने बिजली की झालरें
 लगा रखी थीं, मगर बिजली वि
 की कृपा से वे प्राणहीन

नवंबर (प्रथम) 19



दीवाली की रात जब लक्ष्मी अपने भक्तों को मालामाल करने की गरज से पृथ्वी पर आई तो वहां एक दूसरी लक्ष्मी को पहले से मौजूद देख कर उस के होश उड़ गए, आखिर किस प्रकार निराश, हताश और उपेक्षित हो कर लक्ष्मी को देवलोक वापस जाना पड़ा?

इसलिए शहर में केवल उन्हीं दीपकों में प्रकाश था, जो वनस्पति घी, सरसों के तेल या मिट्टी के तेल के सहारे जल रहे थे।

दूरदूर तक कतारों में सजे दीपक देख कर लक्ष्मी का मन आल्हादित हो उठा। मनुष्य को इतने उल्लास तथा श्रद्धा से परंपरागत त्योहार मनाता देख कर लक्ष्मी इतनी प्रसन्न हो उठी कि उस ने अपने निर्धारित कोटे से अधिक छप्पर फाड़ने का निर्णय ले लिया।

अब उस का उल्लू मृत्युलोक में ही विचरण कर रहा था। एक पार्क के किनारे उल्लू को खड़ा कर के लक्ष्मी ने ब्रीफकेस से उन भक्तों की सूची निकाली, जिन के छप्पर उसे इस साल फाड़ने थे। सूची में सब से पहला नाम खूबचंद का था। वह सप्लाई विभाग में बाबू था और पास की ही कालोनी में रहता था।

लक्ष्मी ने सूची को तह कर के पुनः ब्रीफकेस में रखा और उल्लू को स्टार्ट कर के खूबचंद के घर की ओर चल दी। कुछ ही देर में उस का उल्लू कालोनी के ऊपर उड़ रहा था। खूबचंद का घर ढूँढ़ने में उसे ज्यादा कठिनाई नहीं हुई, क्योंकि जैसे ही वह नीचे उतरी कालोनी में खेलते खूबचंद के बच्चे उस के उल्लू को पिताजी आ गए, पिताजी आ गए, कह कर घर के भीतर लिवा ले गए।

उधर बच्चे घर में घुसे और इधर फ्लैट की छत तोड़ने के लिए लक्ष्मी छत पर आ गई, किंतु वहां पहुंचते ही वह चौंक पड़ी, क्योंकि छत पहले ही से टूटी हुई थी। उस ने धड़कते दिल से टूटी छत के अंदर झांका तो उस के बाकी बचे होश भी उड़ गए, क्योंकि नीचे के कमरे में खूबचंद पहले से ही किसी और लक्ष्मी की पूजा में व्यस्त था।



"आप का नंबर क्या है?" दरोगा ने चुटकी लेते हुए कहा।

गया था। वह आवेश में बोली, "यह रहती कहाँ है?"

"देवी यह पूछिए कि आती कहाँ से हैं..." नारद ने उस की बात में कुछ संशोधन करते हुए कहा, "दो नंबर की लक्ष्मी, दो नंबर के कार्यों से, दो नंबर के रास्ते से आती है। उदाहरण के लिए आप का यह भक्त खूबचंद सप्लाई दफ्तर में बाबू है। दरजनों ऐसे काम हैं, जिन्हें करने के लिए दो नंबर की लक्ष्मी का ही सहारा लेना पड़ता है। बुरा मत मानिएगा, भगवती, स्थिति यहाँ तक पहुँच चुकी है कि अधिकांश लोग आप को केवल वेतन के रूप में ही ग्रहण करना पसंद करते हैं।"

दो नंबर की लक्ष्मी के बारे में इतना सब जानने के बाद लक्ष्मी लगभग चौखला उठी, साथ ही अपने अधिकार क्षेत्र पर अतिक्रमण देख कर उस के अहं को भी ठेस लगी। उस ने दो नंबर की लक्ष्मी से दो टुक बात करने का निर्णय लिया कि तभी जोरों की गड़गड़ाहट ने उसे चौंका दिया। उस ने चौंक कर सामने देखा तो नारद गायब हो चुके थे। नीचे खूबचंद के कमरे में झांका तो दो नंबर की लक्ष्मी भी गायब थी। उस ने तुरंत अपने गुप्त संकेत से उल्लू को बुलाया और उस पर बैठ कर दो नंबर की लक्ष्मी को ढूँढ़ने निकल पड़ी।

उल्लू पर बैठेवैठे लक्ष्मी ने लगभग पूरा

कहा जाता न चला। रास्ते में उस तमाम मकानों की छतें टूटी हुई मिलीं, जिन्हें देख कर उसे विश्वास हो गया कि दो नंबर की लक्ष्मी में उस से पहले ही सारे भक्तों का कल्याण कर दिया है। लक्ष्मी ने कई मकानों की टूटी छतों से इस-उस से अंदर झांका कि शायद कहीं दो नंबर की लक्ष्मी अपनी पूजा कराती मिल जाए, किंतु हर जगह उस के गीत तो गाए जा रहे थे, वह नहीं थी।

निराशा और क्रोध से भरी लक्ष्मी को यह सब देख कर पहली बार एहसास हुआ कि दो नंबर की लक्ष्मी प्रभाव और शक्ति में उस से कहीं ज्यादा है। साथ ही भय भी हुआ कि यदि तुरंत कोई समाधान न किया गया तो दो नंबर की लक्ष्मी मृत्युलोक से उस का पूरा नामोनिशान मिटा कर रख देगी। यह सोच कर लक्ष्मी ने उस के खिलाफ पुलिस में रिपोर्ट दर्ज करने का निर्णय लिया और उल्लू का रुख निकटवर्ती थाने की ओर कर दिया।

रात के समय थाने में एक 'महिला' को निडरता से आता देख कर वहां उपस्थित सारे पुलिस कर्मचारी चौंक पड़े। उन के मन में उठ रहे विचारों से अनभिज्ञ लक्ष्मी ड्यूटी पर तैनात दरोगाजी के सामने वाली कुर्सी पर बैठ गई और बोली, "मुझे एक रिपोर्ट लिखवानी है।"

होठों पर जीभ फिराते हुए दरोगा ने इत्मीनान से पूछा, "किस के खिलाफ... क्या आप के साथ कोई बलात्कार..."

"बकवास बंद करो," लक्ष्मी ने दरोगा की बात काट कर क्रोध से तिलमिलाते हुए कहा, "मुझे एक बहुरूपणी के खिलाफ रिपोर्ट करनी है... वह जालसाज मेरा रूप धर कर मेरे भक्तों को गुमराह कर रही है।"

अब दरोगा को लगा कि मामला कुछ गंभीर है, फिर सतर्क हो कर उस ने रजिस्टर तथा कलम उठा कर पूछा, "आप का नाम?"

"लक्ष्मी?"

दरोगा ने नाम सुन कर उसे घूरा फिर लिखते हुए बोला, "आप विवाहित हैं?"

"हां।"

दिवाली!

वर्ल्ड एक सिपाही से सब न हुआ वह बोल ही पड़ा, "साहब, इन लोगों के भगवानों से कितने मिलते हैं।"

"चुपो। चुपचाप अपना काम करो। दरोगा उसे डांटने के बाद फिर लक्ष्मी मुखातिब होते हुए बोला, "जिस के खिलाफ रिपोर्ट लिखानी है, उस का नाम?"

"उस का नाम ..." लक्ष्मी एक क्षण को सोच में पड़ी फिर तुरंत बोली, "उस का नाम भी लक्ष्मी ही है मगर वह दो नंबर की है।"

"आप का नंबर क्या है?" दरोगा चुटकी लेते हुए बोला।

"क्या बकते हो..." लक्ष्मी बौखला कर बोली।

"मेरा मतलब है उस का हुलिया क्या है?" लक्ष्मी की डांट सुन कर दरोगा का बदल कर बोला।

"वह बिलकुल मेरी जैसी है, वही शक्ल, यही रंग, यही रूप। मुझ में और उस कोई अंतर नहीं है।"

हुलिया सुन कर दरोगा फिर चौंका और अपनी घाघ पुलिस दृष्टि से उसे घूरते हुए बोला, "वह भी विवाहित है?"

"पता नहीं।"

"तो उस के पिता का नाम?"

"ऐसे लोगों का भी कोई बाप होता क्या?" लक्ष्मी ने नफरत से कहा, "और भी तो मुझे पता नहीं।"

"खैर, क्या हुआ आप के साथ?" दरोगा ने घटना क्रम जानने की गरज से पूछा।

लक्ष्मी उन्हें सारा वृत्तांत सुनाने जा रही थी कि तभी जोरों की आवाज हुई और थाने की छत तोड़ती हुई दो नंबर की लक्ष्मी दरोगा के सामने रखी मेज पर आ गिरी।

देख कर सभी एक क्षण तो सन्नाटे में आ गए लेकिन अगले ही क्षण लक्ष्मी चीख कर बोली

"यही है...यही है वह जालसाज जो मेरा रूप

जब मैं चलू तो मुझे दर्द था
अपना न साथ दे,
जब तुम चलो
जमीन चले, आसमां चले.
—जलील मानिकपुरी



धर कर लोगों को ठग रही है... पकड़ लो इसे."

लक्ष्मी की बात सुन कर भी कोई पुलिसकर्मी अपनी जगह से नहीं हिला. उल्टे दो नंबर की लक्ष्मी जोरों का ठहाका लगा कर हंस पड़ी.

"तुम लोग इसे पकड़ते क्यों नहीं... यही वह बहुरूपी है, जिस के खिलाफ मैं रिपोर्ट करने आई हूँ." लक्ष्मी ने आवेश में चीखते हुए कहा.

अब की बार दरोगा जैसे सोते से जागा और ताजा स्थिति को समझने के बाद लक्ष्मी से बोला, "महोदया, आप से भूल हुई है. इन्हें हम कैसे गिरफ्तार कर सकते हैं? यह तो हमारी आका है... इन के हम पर बहुत एहसान हैं," कहते हुए दरोगा दो नंबर की लक्ष्मी के पैरों पर लोट गया.

अब लक्ष्मी को काटो तो खून नहीं. वह जड़ हो कर रह गई. अपना इतना बड़ा अपमान तथा तिरस्कार उस ने पहले कभी नहीं देखा था. उस की इच्छा हुई कि श्राप दे कर दरोगा सहित पूरे थाने को मिट्टी में मिला दे, मगर पता नहीं क्यों दो नंबर की लक्ष्मी के सामने वह ऐसा करने का साहस न कर सकी. संभवतः वह मन ही मन उस से भयभीत थी. इसलिए वह उस से दो टूक बात करने की भी हिम्मत न जुटा सकी. अब उसे थाने में एक पल भी ठहरना उचित न लगा और वह क्षोभ से भरी हुई बाहर आ गई.

थाने से बाहर आते ही उसे अपने उल्लू के पास गिटार बजाते नारद फिर नजर आ गए.

"देवमुनि, यह सब क्या हो रहा है,"

नारद को पा कर लक्ष्मी के संयम का बांध टूट गया और वह लगभग रोती हुई बोली, "यहां भी यह कमीनी उपस्थित है."

"इंदिरा कांग्रेस, इंदिरा कांग्रेस, भगवती मैं ने तो आप से पहले ही कहा था कि दो नंबर की लक्ष्मी ने मृत्युलोक में अपना साम्राज्य स्थापित कर रखा है, इसलिए आप को यहां आना ही नहीं चाहिए था. पुलिस थाना, सरकारी दफ्तर, कचहरी, नेता, मंत्री, सेठसाहूकार... ये सब दो नंबर की लक्ष्मी के प्रमुख गढ़ हैं. फिर आप यहां अपना अपमान कराने क्यों चली आई." नारद ने उसे वास्तविकता से परिचित कराते हुए कहा.

नारद की बातें सुन कर लक्ष्मी फूटफूट कर रोने लगी. उस समय वह स्वयं को विलकुल असहाय महसूस कर रही थी. उसे रोता देख कर नारद को उस पर तरस आ गया और वह उसे ढांडस बंधाने के विचार से बोले, "हिम्मत से काम लीजिए, भगवती. आप रोती क्यों हैं. आज दीवाली का दिन है, जाइए अपने भक्तों को कृतार्थ कीजिए."

"देवमुनि, जले पर नमक मत छिड़किए. आप भी जानते हैं कि हर जगह दो नंबर की लक्ष्मी का बोलबाला है... ऐसे में क्या मैं फिर अपना अपमान कराने जाऊँ," लक्ष्मी ने हिचकियों के बीच कुंड कर कहा.

"इंदिरा कांग्रेस, इंदिरा कांग्रेस. आप मुझे गलत समझ रही हैं, महामाया, यह सच है कि आज मृत्युलोक में दो नंबर की लक्ष्मी ने अपना व्यापक प्रभाव जमा रखा है, किंतु अभी भी बहुत से लोग ऐसे हैं, जिन्हें आप की बहुत आवश्यकता है. आप उन के पास जाइए. वे सदियों से आप के आने की बाट जोह रहे हैं."

मैं ऐसा लोग ह, जो मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं?" नारद की बात सुन कर लक्ष्मी ने अपनी आंखें पोंछ ली और मूढ़ की ओर बोली, "आप मुझे बताएं कि वे लोग कहाँ रहते हैं... मैं उन के घर अवश्य जाऊँगी।"

"ऐसे लोगों की इस देश में कोई कमी नहीं है, य अजस्र को गलीगली कूचकूचे में मिल जायेंगे।"

"मगर इन लोगों की पहचान क्या है?"

"इंदिरा कांग्रेस, इंदिरा कांग्रेस, महामाया, इन्हें पहचाना तो बहुत सरल है, क्योंकि ये लोग जहाँ रहते हैं, उस के ऊपर 'गरीबी की रेखा' खिंची हुई है। इस रेखा के नीचे रहने वालों को आप की बहुत आवश्यकता है," कह कर नारद फिर अंतराधान हो गए।

उन की बातों ने लक्ष्मी के व्याकुल मन को राहत तो दी, साथ ही उस में नई स्फूर्ति भी भर दी। अतः वह तुरंत अपने उल्लू पर बैठ कर उन लोगों के घर की ओर चल दी, जहाँ गरीबी की रेखा खिंची थी।

लक्ष्मी ने उस रेखा के नीचे दृष्टि डोड़ाई तो वहाँ की दशा देख कर उस की आंखें भर आईं। उस रेखा के नीचे देश की आबादी का बहुत बड़ा भाग निवास कर रहा था। गरीबी ने वहाँ के लोगों को अपने शिकंजे में इस तरह जकड़ रखा था कि सब त्राहित्राहि कर रहे थे। वहाँ भूख थी, बेकारी थी, मजबूरी थी, लाचारी थी। त्योहार के दिन भी घरों में अंधेरा पड़ा था। मुंदे सी बेजान उस बस्ती में लोगों की आंखों से आशा की चमक भी समाप्त हो चुकी थी।

यह सब देख कर न केवल लक्ष्मी का दिल रो पड़ा, बल्कि उसे अपनी भूल का एहसास भी हुआ कि हाय वह अब तक यहाँ क्यों नहीं आई। इन लोगों के नाम उस ने अपनी सूची में आज तक क्यों न लिखे, लेकिन अब भूल को ले कर पछताने का समय न था, बल्कि उसे सुधारने की आवश्यकता थी। यह सोच कर लक्ष्मी ने अपने उल्लू को गरीबी की रेखा से नीचे चलने का आदेश दिया।

अपमान पूर्वक हजार वर्ष जीने के अपमान ने नरमान के साथ एक घड़ी जीसा अच्छा है
—एमसन

जैसे ही उल्लू गरीबी की रेखा के पास पहुँचा, अप्रत्याशित रूप से कुछ लोगों ने उल्लू के आगे खड़े हो कर उस का रास्ता रोक लिया। यह एक आश्चर्यजनक घटना थी। लक्ष्मी ने विचारों के सागर से निकल कर सामने देखा तो गरीबी की रेखा पर पहरेदार की तरह कुछ लोग खड़े नजर आए। उल्लू रेखा पर बिलकुल चक्रव्यूह सा बना रखा था जिसे भेदे बगैर अंदर जाना असंभव था।

लक्ष्मी ने तिलमिला कर एक पहरेदार से पूछा, "कौन हो तुम लोग और तुम ने इस तरह रास्ता क्यों रोक रखा है?"

"महोदया, हम उन लोगों के आदमी हैं जो दो नंबर की लक्ष्मी के पुजारी हैं... हमारे मालिकों का आदेश है कि न तो किसी को इस रेखा से नीचे जाने दिया जाए और किसी को ऊपर आने दिया जाए।" एक पहरेदार ने लक्ष्मी को समझाया।

इन शब्दों ने लक्ष्मी को बिलकुल तोकर रख दिया। थाने में अपमानित व पराजित होने के बाद नारद की बात मान कर वह आशा व उत्साह से यहाँ आई थी, इस घटना ने उस सारी आशाओं पर तुषारापाव कर दिया। दो नंबर की लक्ष्मी का एक साम्राज्य तो वह देख ही आई थी, किंतु उस सीमा यहाँ तक होगी, यह उस ने सपने में ही नहीं सोचा था।

लक्ष्मी ने हथियार डाले सिपाही की तरह खूनी दृष्टि से गरीबी की रेखा पर दूर तक खड़े पहरेदारों को देखा। दो नंबर की लक्ष्मी ने आखिरी दांव तक उसे मात दी थी उस का मन वितृष्णा से भर उठा और उस ने हार मान कर अपने उल्लू का रुख सीमा देवलोक की ओर कर दिया।

बाल संवारें

रूप निरवारें

सिमको

परमानेंट
हेयर डाई

शिकाकाई
केश तेल

सिमको कुदरती काले
या ब्राउन रंग में सफेद
बालों को रंगने का
विश्वसनीय व आसान
उपाय है।

मधुर मुगन्धित
लम्बे, चमकीले,
और
काले बालों के लिये

सिमको हेयर फिक्सर

के निर्माताओं की भेंट



विश्व के सब से प्राचीन व हिंदू धर्म का आधार ग्रंथ

सरल, सुलभ भाषा में पहली बार प्रकाशित

ऋग्वेद

(ऋग्वेद की संपूर्ण 'शाकल संहिता' का हिंदी भाषांतर)

भाषांतरकार :

डा. गंगासहाय शर्मा एम.ए. (संस्कृत), पीएच.डी. व्याकरणाचार्य
वेद में क्या है, क्या नहीं है, दूसरों से न सुन कर स्वयं पढ़िए। यह वही वेद है
जो आज तक एक गोपनीय विधा रहा है और जिस के लिए शास्त्र कहते हैं
कि शूद्र के कान में यदि इस का एक अक्षर भी पड़ जाए तो उसके कान में
पिघला सीसा भर देना चाहिए।

हर हिंदू परिवार के लिए आवश्यक

मूल्य 65/- डाक व्यय 10/- अतिरिक्त

पूरा मूल्य अग्रिम भेजने पर डाक व्यय केवल 5 रुपए

प्राप्य : दिल्ली बुक कंपनी, एम/12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001

नई प्रतिभाएं

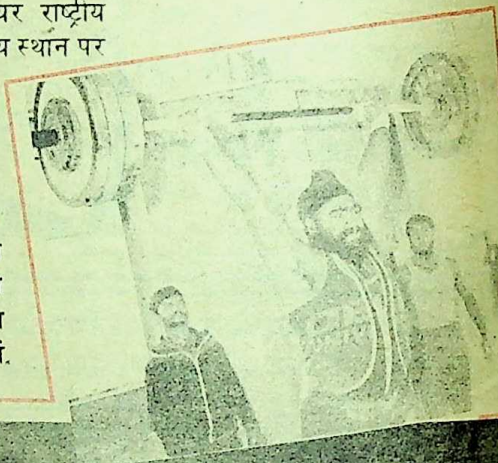
गुरु तेगबहादुर खालसा कालिज (सायंकालीन) के बी.ए. तृतीय वर्ष के छात्र राजेंद्रसिंह ने दिल्ली विश्वविद्यालय भारोत्तोलन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। वह सुपर हैवी वेट में भाग लेता है। उस का वजन 109 किलोग्राम है।

इस से पहले वह जूनियर राष्ट्रीय भारोत्तोलन प्रतियोगिता में तृतीय स्थान पर रहा था। उस ने अखिल भारतीय विश्वविद्यालय भारोत्तोलन प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त किया था। इस के अलावा

भारोत्तोलन प्रतियोगिता में प्रथम राजेंद्रसिंह (दाएं) व रंगमंच से जुड़े सुधीरकुमार 'सोल्यूशन एक्स' नाटक के एक दृश्य में।

पिछले सालों से उस ने अनेक प्रतियोगिता जीती हैं। अखिल भारतीय विश्वविद्यालय भारोत्तोलन प्रतियोगिता में उन्होंने 2 किलोग्राम वजन स्नेच से उठाया है।

उस की शिकायत है कि विश्वविद्यालय की ओर से उसे कोई सहायता या सहयोग न मिलता है। —अशोक बजाज, वि.वि.





अमरीका और भारत के बीच हुए बास्केटबाल मैच का एक दृश्य (ऊपर)।



लखनऊ विश्व-विद्यालय में विधि संकाय का छात्र सुधीरकुमार रंगमंच से भी जुड़ा हुआ है। उस ने अभिनय के साथसाथ निर्देशन भी किया है।

नाटक प्रतियोगिता में प्रथम 'कालचक्र' नाटक का एक दृश्य।

सुधीर का पहला अभिनय तथा आलेख की दृष्टि से सफल नाटक एडगरऐलन की कहानी पर आधारित नाटक 'हवेली' था, जिस में उस ने एक सनकी डाक्टर के किरदार को निभाया था। इस भूमिका की तारीफ ने उसे रंगकर्म के क्षेत्र में प्रोत्साहित किया। इस के अलावा 'पोस्टर', 'दो मसखरों की महारानी', 'पैर तले की जमीन', 'इकतारे की आख' आदि नाटकों में उस ने अभिनय किया है।

'किसी एक फूल का नाम लो' प्रमुख हैं।

सुधीर के पास इस वक्त कुछ लघु फिल्मों भी हैं, जिस में वह अभिनय कर रहा है।

—राकेशचंद्र मिश्र, वि.वि.प्र.

प्रतियोगिताएं

पिछले दिनों लखनऊ में भारत व अमरीका के बीच खेले गए दूसरे बास्केटबाल टैस्ट मैच में अमरीका के खिलाड़ियों का खेल

उस के स्वतंत्र रूप से निर्देशित नाटक 'सोल्यूशन एक्स' तथा मधुराम लिखित नाटक

मुक्ता

मिशनरों के हाथों कहा जा सकता है। मैच के प्रारंभिक क्षणों में भारतीय पिछड़े हुए थे, किंतु अंततः उन्होंने यह मैच जीत लिया। पर इस जीत का पूर्ण श्रेय अमरीकी खिलाड़ियों के फाउल खेलने को जाता है, जिसके कारण उन के पांच खिलाड़ी खेल से बाहर हो गए थे। मैच के अंतिम क्षणों में तो अमरीका की टीम में केवल चार ही खिलाड़ी खेल रहे थे। अमरीका के जिम जिगलर का खेल प्रशंसनीय था। भारत के टी.एस.संधू, सुनील टंडन, एस.पंडा तथा ओमप्रकाश का खेल तालमेल युक्त था।

—अर्जुन कांडपाल, वि.वि.प्र

ग्वालियर के महारानी लक्ष्मीबाई कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय में अखिल भारतीय सिंधिया सांस्कृतिक प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं।

अखिल भारतीय नाटकों की प्रतियोगिता में महारानी लक्ष्मीबाई

अभियांत्रिकी महाविद्यालय रायपुर के वार्षिकोत्सव पर मंचित नाटक 'कापालिक' का एक दृश्य।

महाविद्यालय के ही छात्रों द्वारा मंचित नाटक 'काल चक्र' को प्रथम पुरस्कार मिला। नाटक में भ्रष्टाचार, दूषित राजनीति व जनता के प्रति घोर उपेक्षा के प्रभाव को दर्शाया गया था, जिस ने दर्शकों के मन पर गहरा प्रभाव छोड़ा। इस नाटक का निर्देशन रवींद्र जगताप द्वारा किया गया था। अभिनय के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का पुरस्कार दीपक घटक को मिला, जब कि अभिनय के लिए ही दो विशेष पुरस्कार कमल माखीजानी व चक्रपाणिदत्त मिश्रा को दिए गए। शिव शुक्ला के अभिनय को भी काफी सराहा गया।

प्रतियोगिताओं के अखिल भारतीय समूह गायन कार्यक्रम में भी लक्ष्मीबाई महाविद्यालय ही प्रथम रहा। दूसरा स्थान गजराज मेडिकल कॉलेज, ग्वालियर के छात्रों को मिला — राजीव सक्सेना, वि.वि.प्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सहायता दिवस मनाया गया। इटावा शिक्षा अधिकारी की अध्यक्षता में कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिस निधन छात्रों को पुस्तकें, पोशाकें व सामग्री वितरित की गई।

—अरविद शर्मा



पुस्तक मेला

दिल्ली विश्वविद्यालय के कला संसद में दिल्ली युवा उद्यमी संगठन ने एक पुस्तक मेले का आयोजन किया, जिस में 200 से अधिक देशीविदेशी प्रकाशकों की विभिन्न विषयों पर 50,000 से अधिक पुस्तकें प्रदर्शित की गईं। इस पुस्तक मेले को विभिन्न कानूनों के 30,000 से अधिक छात्रों और अध्यापकों ने देखा। —राजीव मेहरोत्रा, वि. वि.

वार्षिक समारोह

कुमायूं विश्वविद्यालय, नैनीताल वार्षिक समारोह संपन्न हुआ। इस में विभिन्न रूप से नाटकों का मंचन हुआ। वन विभाग के छात्रों की प्रस्तुति 'कीड़े' को प्रथम पुरस्कार व कई सांत्वना पुरस्कार

नवंबर (प्रथम)



मिले. नाटक 'कीड़े' मैक्सिम गोर्की द्वारा लिखित 'मेरा बचपन' नाटक का हिंदी नाट्य रूपांतर था. इसे श्रेष्ठ निर्देशन, भंच सज्जा व प्रकाश व्यवस्था एवं देश सज्जा में प्रथम स्थान मिला. इस नाटक के प्रस्तुतीकरण में वेकरी सरदार की भूमिका में निर्मल, सुधीरकुमार, हर्ष एवं सीमा ब्रज्जु का अभिनय सराहनीय रहा. कृशनचंदर द्वारा

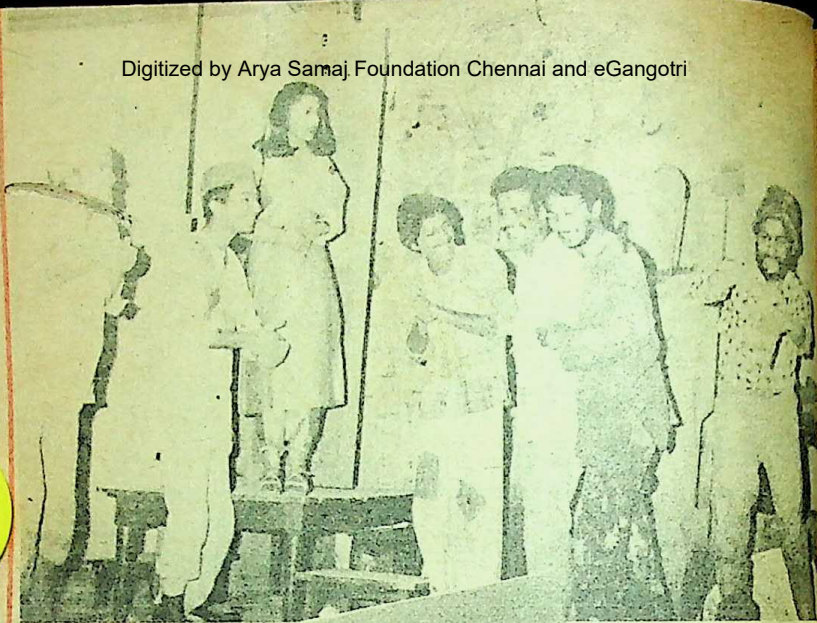
दिल्ली विश्वविद्यालय में आयोजित पुस्तक मेले में उपकुलपति सरदार गुरुबख्शसिंह अतिथियों को पुस्तकें दिखाते हुए.

लिखित 'गाँचे लोकर', विजय तेंदुलकर द्वारा लिखित 'जाति हो पृथो साधु' की नाटकों एवं एक तथाकथित स्वामी के हथकंडों का परदाफाश करने वाले नाटक 'गुडबाई स्वामी', भी स्तरीय रहे.

—प्रभोदकुमार यादव, वि.वि.प्र.

इटावा रोटरीक्लब द्वारा पुस्तक वितरण कार्यक्रम का एक दृश्य.





शिविर

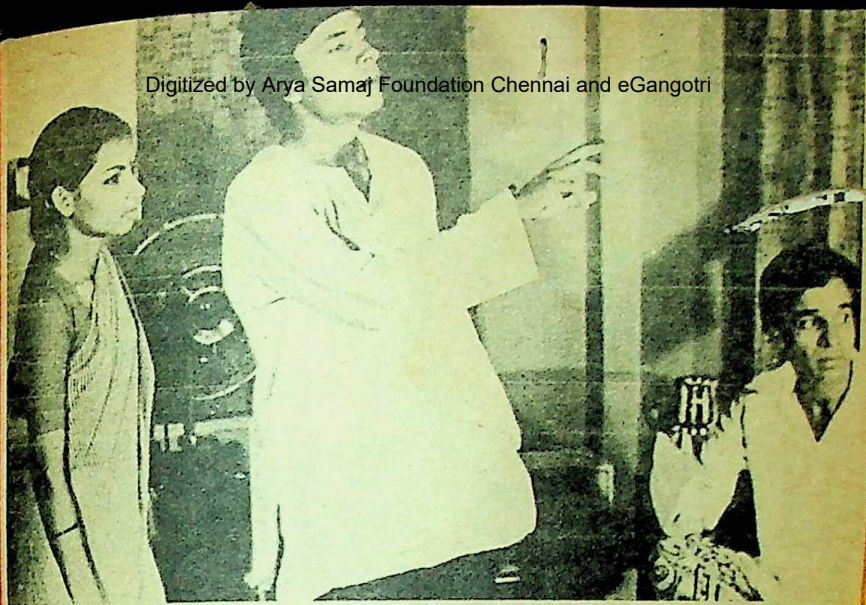
सहारनपुर की नाट्य संस्था 'नाट्य' ने पिछले दिनों एक 'रंगमंच प्रशिक्षण शिविर' का आयोजन किया। उस शिविर में रंगमंच के क्षेत्र में रुचि रखने वाले युवकों व युवतियों को प्रशिक्षण दिया गया। शिविर में प्रशिक्षण देने के लिए दिल्ली के नेशनल स्कूल आफ ड्रामा के विशेष प्रशिक्षक रामचंद्र शैलके भी आए थे। शिविर में प्रशिक्षार्थियों को सेट लगाना,

कुमार्य विश्वविद्यालय में मंचित नाटक' की का एक दृश्य (ऊपर) व सहारनपुर में रंगमंच प्रशिक्षण शिविर में प्रदर्शित नाटक 'अबू हसन' का एक दृश्य (वाएं)।

विभिन्न परिवेशों व परिस्थितियों में संवाद बोलना, श्रृंगार करना, प्रकाश व्यवस्था आदि का विशेष रूप से प्रशिक्षण दिया गया।

शिविर के अंत में सुरेश सेठ कृत नाटक 'सोन जूही बीमार है' व बादल सरकार द्वारा लिखी व्यंग्य नाटक 'अबू हसन' प्रस्तुत किए गए। नाटक में भारतीय कलाकारों की दुर्दशा को दिखाया गया था तो दूसरे नाटक में सरकार की दुर्दशा को दर्शाया गया था। अभिनय में अन्य दृष्टियों से दोनों प्रस्तुतियां सफल रही।

—दिवाकर वशिष्ठ, वि.वि.



परिवार नियोजन पर आधारित वृत्तचित्र 'स्वार्थी मन' का एक दृश्य.

सांस्कृतिक कार्यक्रम

साधारण थी.

—श्रीकांत रहाटगांवकर, वि.वि.प्र.

वृत्तचित्र का निर्माण

इंदौर में कलाकारों को प्रोत्साहन देने के लिए सत्यनारायण शर्मा ने कला दर्शन फिल्मस की स्थापना कर के पहली बार 'स्वार्थी मन' वृत्तचित्र का निर्माण किया है. इस की कहानी मूल रूप से परिवार नियोजन पर आधारित है. फिल्म में इंदौर के कलाकारों ने भाग लिया.

सुखी और दुखी परिवार की इस शिक्षापत्र कहानी में मुख्य रूप से नायक मदन ढोंढियाल, नायिका चंद्रप्रभा माहेश्वरी और सहनायिका पृष्ण नीर ने मंजा हुआ अभिनय किया. निर्देशक सत्यनारायण कहींकहीं शिथिल पड़ गए. छायाकार रूपकिशोर पंडया की सूझबूझ पर फिल्म के कुछ दृश्यों में रोचकता रही. दृश्यों में कमरे की सजावट सुंदर लगी. —दिनेश सोलंकी, वि.वि.प्र. ●

विगत दिनों शासकीय अभियांत्रिकी महाविद्यालय, रायपुर में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रमों में नाटक भी पेश किए गए. सब से प्रभावशाली नाटक रहा 'कापालिक', जिस में एक बेहद लाचार और गरीब कापालिक को एकल अभिनय द्वारा सजीव किया था प्रताप देशमुख ने. इस में कापालिक का बेटा हस्पताल में मौत की घड़ियां गिनता रहता है. उसे बचाने हेतु रुपयों का प्रबंध करने के लिए कापालिक शामशान घाट में किसी लाश की प्रतीक्षा में रहता है. कुछ देर बाद एक लाश आती दिखाई देती है तो उस की खुशी का पारावार नहीं रहता, परंतु वह लाश उस के बेटे की ही होती है.

कार्यक्रम का अन्य आकर्षण 'भांगड़ा नृत्य' रहा, जिस से दर्शक अंत तक कुरसी से चिपके रहे. ध्वनि एवं प्रकाश व्यवस्था सुकता

शोभायात्रा

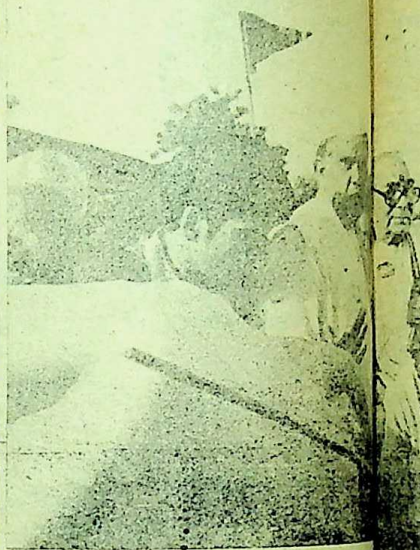
कितनी उपयोगी?

लेख • प्रतिनिधि

14 सितंबर, 1950 को भारत के संविधान में हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। इस के बाद हर वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है। इस साल हिंदी दिवस पर राजधानी में हिंदी की शोभायात्रा निकाली गई। शोभायात्रा में हिंदी की झांकियां सजाई गई थीं। करीब 5,000 लोगों का एक जलूस लाल किले के सामने सुभाष मैदान से शुरू हुआ और रामलीला मैदान तक पहुंचा। इन जलूस का नेतृत्व ईंदिरा कांग्रेस के कार्यकारी अध्यक्ष कमलापति त्रिपाठी कर रहे थे।

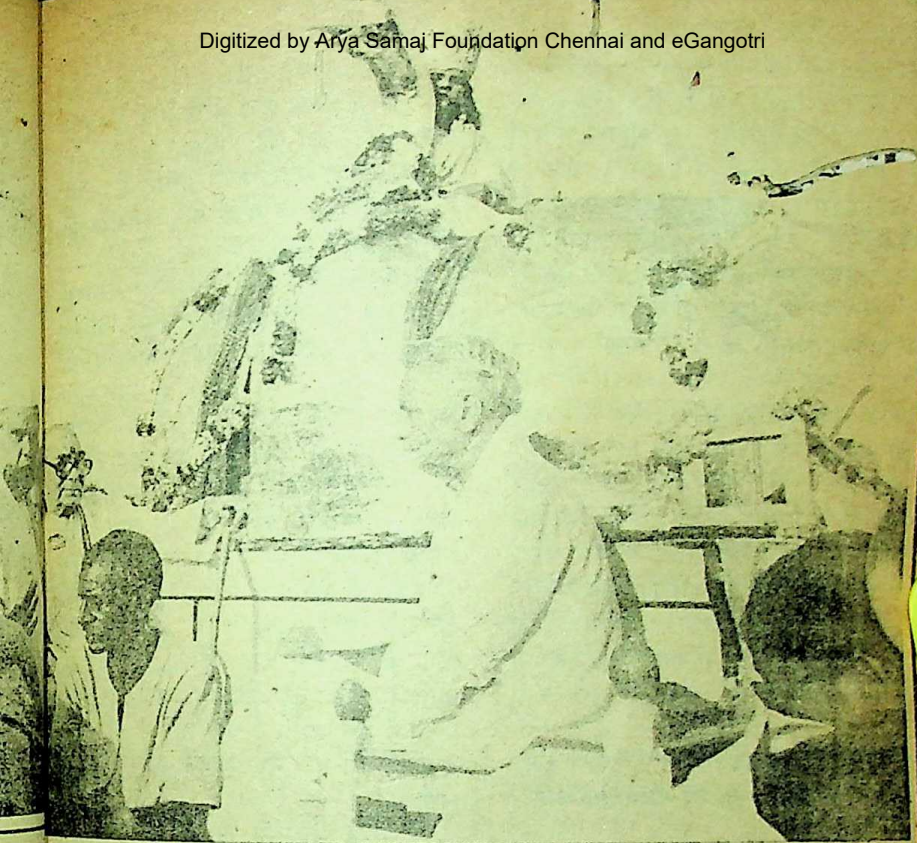
हिंदी की शोभायात्रा देख कर एक बात बरबस याद आती है। राष्ट्रध्वज, राष्ट्रगीत, राष्ट्रवंदना आदि प्रतीकों को भी किसी न किसी दिन स्वीकार किया ही गया है। इन प्रतीकों का उपयुक्त अवसरों पर विधिवत प्रयोग किया जाता है। दूसरे शब्दों में इन्हें उचित प्रतिष्ठा प्राप्त है और इन्हें अपना भी लिया गया है। इन प्रतीकों के लिए कोई दिवस नहीं मनाया जाता, इन की कोई शोभायात्रा भी नहीं निकाली जाती। इन का दिवस मनाने या शोभायात्रा निकालने की जरूरत है भी नहीं।

हिंदी दिवस मनाने और हिंदी की शोभायात्रा निकालने की क्या जरूरत है? यह तो निश्चित है कि हिंदी अभी व्यावहारिक स्तर पर राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित नहीं हो सकी है। आगे निकट भविष्य में वह



राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित हो सकेगी, इसमें भी संदेह है। शोभायात्रा इस संदेह को दूर करने में पुष्टि ही करती है। वैसे तो हिंदी दिवस मनाने और उस की शोभायात्रा निकालने का उद्देश्य हिंदी को लोकप्रिय बनाना ही बताया जाता है। परंतु वास्तव में ऐसा होता नहीं है। हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने के निरव्यावहारिक प्रयत्न तो कुछ किए नहीं जाते। ऐसे प्रयत्नों की ओर ध्यान दिए बिना निरुपदेश देने से क्या बात बनती है?

हिंदी दिवस पर दिल्ली में जो कार्यक्रम आयोजित किए गए उनमें मुख्य था, हिंदी की शोभायात्रा। शोभायात्रा से पहले सुभाष मैदान में एक सभा आयोजित की गई थी। इस सभा में शामिल लोगों ने प्रतिज्ञा की थी कि



प्रतिदिन का काम मातृभाषा या हिंदी में करेंगे और इसे अंतरराष्ट्रीय भाषा बनाएंगे. कहना नहीं होगा कि प्रतिज्ञा सभा शोभायात्रा आयोजकों के दिमाग की ही उपज थी.

हिंदी को 33 साल पहले राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया जा चुका है. हर साल हिंदी दिवस मनाया जाता है और प्रतिज्ञा रस्म अदायगी से ज्यादा महत्त्व नहीं रखती अन्यथा प्रतिज्ञा तो एक बार करना ही काफी है. बारबार प्रतिज्ञा दोहराई जाती है तो उस में कार्य कहीं नहीं होता, होती है सिर्फ औपचारिकता.

इंदिरा कांग्रेस के कार्यकारी अध्यक्ष और हिंदी साहित्य सम्मेलन की दिल्ली शाखा के सभापति कमलाप्रति

हिंदी को व्यावहारिक स्तर पर राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने का मुद्दा सम्मेलनों और शोभायात्राओं में उलझ कर रह गया है. हिंदी दिवस पर किया जाने वाला यह शोरशराबा हिंदी भाषा के लिए किस प्रकार खतरनाक साबित हो सकता है?

कहा कि "आजादी मिलने के 36 वर्ष बाद भी हिंदी को उस का उचित स्थान नहीं मिल सका है. यह बड़े खेद की बात है. हिंदी को उस का उचित दर्जा दिलाने के लिए उसे जनजन तक पहुंचाना चाहिए."

मुस्ता

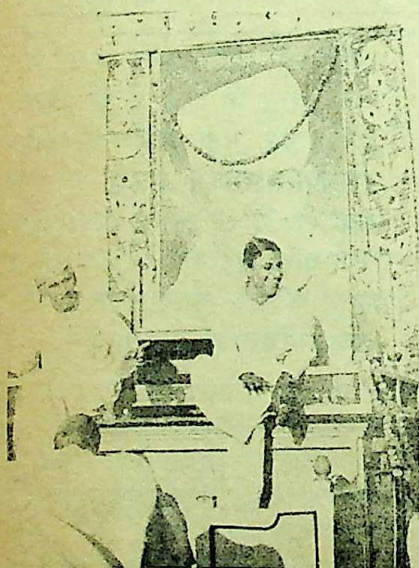
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

किंतु इस में सारा दोष जैसे लोगों के मत्थे मढ़ दिया गया है कि हिंदी के प्रचलन में कोई और होने का संदेश नहीं पहुंच सका या लोगों ने यह संदेश प्राप्त नहीं किया।

अंगरेजी किसी की भी मातृभाषा नहीं है। अंगरेजी जानने, बोलने और पढ़ने लिखने वालों की संख्या मुश्किल से दो प्रतिशत है, जब कि हिंदी को अपनी मातृभाषा लिखने बताने वाले लोग 25 प्रतिशत हैं। इस प्रतिशत में अवधी, बृज, राजस्थानी आदि को मातृभाषा लिखने वालों की संख्या शामिल नहीं है। आम जनता के लिए अपरिचित और पराई भाषा अंगरेजी को सरकारी कामकाज की भाषा इसलिए बने रहने दिया जाए कि लोगों तक हिंदी के राष्ट्रभाषा होने की खबर नहीं पहुंची है, क्या मजेदार तर्क है? हिंदी का संदेश लोगों तक नहीं पहुंचा, इसलिए पराई और अपरिचित भाषा हिंदी की जगह बैठी है।

जनजन तक हिंदी के राष्ट्रभाषा होने का संदेश पहुंचाने और उसे राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने की बात की इस तरह

‘शोभायात्रा में मदनमोहन मालवीय जैसे हिंदी सेवियों के नाम को भी भुनाया गया।



हिंदी को उस का उचित दर्जा नहीं मिलने का संदेश दे दिया है। या कोई और?

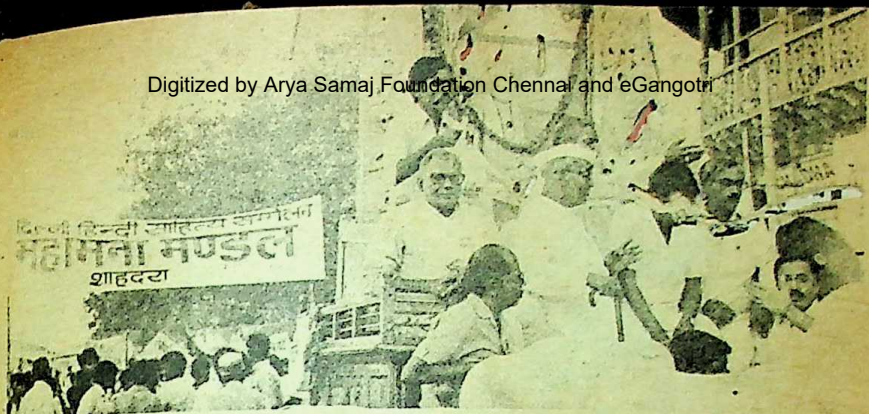
सन 1965 में पारित राजभाषा संशोधन विधेयक द्वारा अंगरेजी के चिरक तक चलते रहने की व्यवस्था जनजन तक राष्ट्रभाषा का संदेश नहीं पहुंचने के कारण हुई या सरकार की मर्जी और अफसरशाही की सुविधा के लिए हुई।

दरअसल अंगरेजी भाषा को सरकारी भाषा बने रहने देने से ही हिंदी को उस का स्थान नहीं मिला और उस के प्रचलन को बाधका पहुंचा। आज अंगरेजी की ओर लोग का रुझान बढ़ रहा है तो उस का कारण अंगरेजी का सरकारी भाषा बने रहना ही है।

सरकारी भाषा का मतलब साहबों की भाषा, साहब हर कोई नहीं बन सके कि साहब दिखने का भी अपना आकर्षण है। आकर्षण के कारण ही लोग टूटीफूटी ही अंगरेजी बोलना चाहते हैं। यदि टूटीफूटी अंगरेजी भी नहीं बन पड़े तो बातचीत अंगरेजी शब्दों का ज्यादा से ज्यादा इस्तेमाल करते हैं। इस प्रवृत्ति के चल पड़ने से हिंदी अंगरेजी की एक नई खिचड़ी भाषा उभर लगी है।

मुगल काल में अरबी, फारसी और हिंदी के मेल से तैयार हुई उर्दू भाषा की कुछ सालों बाद इस खिचड़ी भाषा को 'हिंग्लिश' या 'हिंगरेजी' नाम से पुकारा जाने लगे तो कोई आश्चर्य नहीं करना चाहिए। यह कह सकता है उर्दू की तरह इसे भी भाषा के रूप में मान्यता दिलाने के लिए आंदोलन चले। लोग पत्रों और निजी विवरणों में हिंदी लिखने समय बीचबीच में रोमन लिपि में अंगरेजी शब्दों की मक्खियां तो बैठाने ही लगे हैं।

हिंदी को राष्ट्रभाषा का सम्मान दिलाने और उसे जनजन तक पहुंचाने की बात भी की जाती है तो उस के पीछे इस संभावनाओं को नजरअंदाज करने तथा इसकी जिम्मेदारी से बचने का भाव ही प्रकट होता है। अन्यथा इस बात का मतलब है कि हमें हिंदी का संदेश जनजन तक



हिंदी दिवस पर हिंदी की 'शोभायात्रा' : हिंदी भाषा के प्रचारप्रसार में कितनी उपयोगी?

पहुँचाना चाहिए. हिंदी तो जनजन तक पहुँची है ही, वह आम लोगों की भाषा है.

इस संबंध में एक और बात उल्लेखनीय है कि हिंदी अहिंदीभाषी क्षेत्रों में पहुँची भी है तो ऐसे माध्यमों से जिन की कभी कल्पना नहीं की गई थी. हिंदी प्रचार के लिए किए गए सारे सरकारी और राजनीतिक प्रयत्न उन माध्यमों के परिणामों से बहुत बौने साबित हुए. उदाहरण के लिए सिनेमा को लिया जा सकता है. हिंदी फिल्में दक्षिण भारत में भी खूब चलती हैं. वहाँ के लोग हिंदी फिल्में देख कर भी हिंदी समझने लगे हैं. पर्यटन को भी ऐसे माध्यमों की सूची में शामिल किया जा सकता है. दक्षिण भारत का निवासी उत्तर भारत में आता है तो जानेअनजाने हिंदी के टूटेफूटे वाक्य सीख ही जाता है.

इन माध्यमों ने चुपचाप हिंदी का थोड़ाबहुत प्रचार किया, जब कि राजधानी दिल्ली में, जहाँ अधिकांश लोग हिंदी भाषी हैं और लगभग सभी हिंदी बोल व समझ लेते हैं, हिंदी भवन की जरूरत महसूस की जाती है. पिछले हिंदी दिवस पर सुभाष मैदान में हिंदी भवन की मांग की गई थी. वहीं उपस्थित उपराज्यपाल जगमोहन ने हिंदी भवन के लिए यथाशीघ्र भूमि देने का आश्वासन भी दिया था.

हिंदी को उस का समुचित स्थान प्राप्त

कराने के लिए हिंदी भवन की योजना क्या ऐसी नहीं लगती जैसे गांधी के सपनों का भारत बनाने के लिए गांधी भवन या गांधी स्मारक बनाया जाए. गांधीजी की स्मृति में कई भवन और संस्थाएँ बनी हैं. इन स्मारकों से गांधीजी के आदर्श कितने क्रियान्वित हो रहे हैं? स्मारक या भवन किसी भी आदर्श को जिंदा रखने या उन का प्रचार करने में प्रायः असफल ही रहते हैं. हिंदी भवन से हिंदी का प्रचार हो सकेगा. यह आशा रखने के लिए कोई आधार नहीं है.

14 सितंबर के कार्यक्रम की चर्चा उस के एक और पहलू का उल्लेख किए बिना अधूरी रहेगी. आयोजन में लगभग सभी वक्ताओं ने कहा कि हिंदी को अंतरराष्ट्रीय भाषा का दर्जा दिलाएंगे. हिंदी का इस से बड़ा मजाक और क्या हो सकता है कि उसे राष्ट्रभाषा के रूप में तो प्रतिष्ठा दी नहीं जा रही. उसे अंतरराष्ट्रीय भाषा बनाने के सपने दिखाए जा रहे हैं.

अक्तूबर के अंत में विश्व हिंदी सम्मेलन होने जा रहा है. उस का उद्देश्य विश्व में हिंदी की प्रतिष्ठा बढ़ाना बताया जा रहा है. इस विडंबना पर हंसा जाए या क्षोभ व्यक्त किया जाए कि हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाए बिना ही उसे सार्वभौम अंतरराष्ट्रीय भाषा बनाने के सपने उछाले जा रहे हैं. •

जब कानों में पड़ती है, या किसी के इस खास अंदाज में बोलने से। नानक्या की याद आ जाती है। उस की याद आते ही मैं सिहर उठता हूँ।

नानक्या से मेरा परिचय इंदौर के केंद्रीय कारागार हुआ था। आपातकाल के दिनों में वहाँ कैद था। नानक्या भी किसी अपराध में वहीं सजा काट रहा था। उस से मेरा परिचय शायद मिर्च के कारण ही हुआ था। मैं ने अपनी रकाबी में से मिर्च निकाल कर अलग रख दी थी। नानक्या को न जाने कैसे इस बात का पता लग गया था। मुझे अच्छी तरह से याद है कि वह उस क्षण मेरे आसपास ही मंडराता रहा था।

कुछ देर बाद उस ने हिचकिचाते हुए मुझ से कहा था, "बाबूजी..." और चचाते-चचाते मैं ने पूछा था, "क्या है?"

"यह मिर्च आप नहीं खाएंगे?"

"नहीं।"

"इसे मैं ले लूँ?"

"ले लो।"

उसे गौर से देखा था। सांवला रंग, दरमियान कद, महीला शरीर, साधारण नाकनका बड़ी मासूम दृष्टि, ठोड़ी, माथे और आँखों के पास गुदने के निशान। एक नजर में ही भील आदिवासी प्रतीत होता था।

फिर भी मैं ने पूछ लिया था, "कौन हो?"

"हां।"

"कहाँ के हो?"

"झाबुआ जिले का हूँ, बाबूजी।"

"नाम क्या है?"

"नानक्या।"

"यहाँ कब से हो?"

"पांच साल होने को आए हैं।"

"और कितनी सजा बाकी है?"

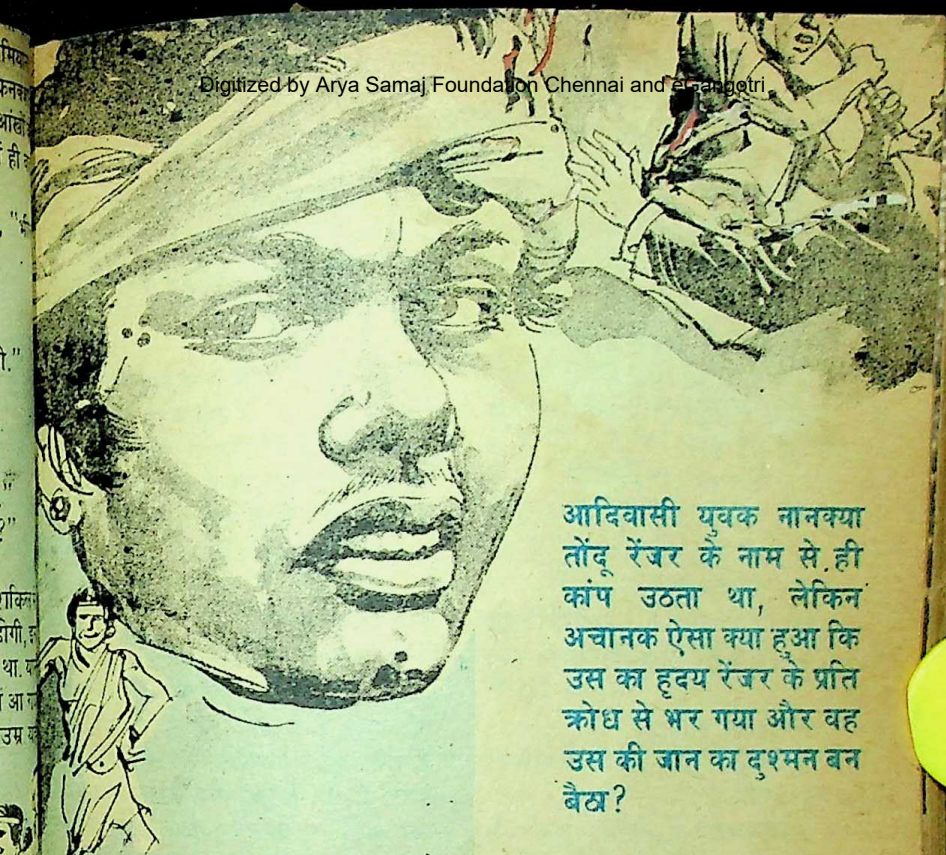
"उम्र कैद है, बाबूजी।"

मैं कांप उठा था। उस समय मुर्शक उस की उम्र 20-22 साल की रही होगी, मैं से पांच साल वह यहीं कट चुका था। मैं 16-17 साल की उम्र में ही वह यहाँ आया था और अब उसे पहाड़ सी यह उम्र

कहानी • चंद्रशेखर दुबे

नानक्या





आदिवासी युवक नानक्या तोंदू रेंजर के नाम से ही कांप उठता था, लेकिन अचानक ऐसा क्या हुआ कि उस का हृदय रेंजर के प्रति क्रोध से भर गया और वह उस की जान का दुश्मन बन बैठा?

काटनी थी.

मैं इसी हिसाब में उलझा हुआ था और ऊपर नानक्या मिर्च की पुड़िया बांध कर चल पड़ा था. जातेजाते वह बड़ी प्यारी मुसकान लुटा गया था. यों मुसकगते हुए उस ने अनारदाने जैसे अपने सफेद अक दांतों की एक झलक मुझे दे दी थी.

इस के बाद तो वह लगभग रोज ही मेरे पास मिर्च और गुड़ लेने आने लगा था. ये दोनों चीजें स्वास्थ्य के लिहाज से मेरे लिए बर्जित थीं, इसलिए मैं ख़शीखुशी इन का त्याग कर देता था, किंतु मेरे इस साधारण से त्याग ने नानक्या के भोजन को शायद सुस्वादु बना दिया था. इसी लिए वह अपनेआप को उपकृत अनुभव करने लगा था. इस उपकार के बदले में वह मेरे छोटे-छोटे काम करने लगा

था. मेरी सुखसुविधा का यथासंभव ख़याल रखने लगा था.

मौका लगते ही मैं ने सहज कुतूहलवश पूछा था, "क्यों रे नानक्या, तुझे उम्र कैद किस कारण हुई?"

"कत्ल के कारण."

नानक्या ने यह बात इतने निर्विकार भाव से कही थी, जैसे कत्ल बिलकुल साधारण सी बात हो, किंतु मैं उस की सूरत ही देखता रह गया था. उस के जीवन के बारे में जानने के लिए मैं व्यग्र हो उठा था. इसी लिए मैं ने पूछा था, "तू ने सचमच कत्ल किया था?"

"हां, बाबूजी... किया था."

"तुझ से कत्ल कैसे हो गया?"

"जाने कैसे हो गया, बाबूजी? वह तादियल रेंजर हंस जा रहा था. उस की हंसी

मुझ से सहन नहीं हुई. मैं ने एक बार सहन किया, दो बार सहन किया, बार-बार सहन किया. मगर जब उस ने हसना बंद ही किया तो मैं ने कहाड़ी के एक ही बार से

चीख सी निकाल दी थी. मैं ने बुराए से रंजरंग म पूछा था, "तू ने रंजरंग को मारा था नानक्या?"

"हां, बाबूजी."

"सिर्फ हंसने के कारण मारा?"

"हां, बाबूजी, बात यह हुई थी कि उस की इस हंसी से मुझे उस की पिछली जहरभरी हंसी याद आ गई थी."

"कौन सी जहरभरी हंसी?"

"जिस दिन मैं बाग के जंगल में से लकड़ी की गाड़ी भर कर लाया था."

"कौन सा बाग?"

"वही, जहां गुफाएं हैं, जहां पर बड़ेबड़े लोग गुफाओं के भीतर की तसवीरें देखने आते रहते हैं."

"अच्छा, वह बाग...."

"हां, बाबूजी, उन गुफाओं के पास ही मेरा फल्या (गांव) है."

"अच्छाअच्छा, तू तो वह जहरभरी हंसी वाली बात बता."

"वही बता रहा हूं, बाबूजी, हुआ यह कि हम पांच लोग जंगल में से लकड़ी की गाड़ी भर कर दिन डूबने पर चले. हम ने सोचा था कि रात ही रात में हम कुक्षी पहुंच जाएंगे. दिन निकलते ही वहां हाट में लकड़ियां बेच देंगे."

"फिर क्या हुआ?"

"हुआ यह कि हम आधी दूर भी नहीं पहुंचे थे कि बाग और कुक्षी के बीच में वजरंग के मंदिर के सामने मोटले साहबों ने हमें पकड़ लिया."

"मोटले साहब कौन?"

"यही रंजरंग, थानेदार और भी जाने कौनकौन से बड़ेबड़े साहब लोग थे. बाग और कुक्षी के सेठ लोग भी थे. उस रात मंदिर में कोई कार्यक्रम था."

"फिर क्या हुआ?"

"उन को देखते ही हम गाड़ी छोड़ कर भाग खड़े हुए."

"मैंने क्या, नानक्या?"

"गाड़ी में चोरी की लकड़ी की बाबूजी, इसलिए भागना पड़ा."

"चोरी का माल था?"

"हां."

"वैसे परमिट मिलता है न तुम तो?"

"मिलता" तो है, बाबूजी, पर आज से नहीं मिलता है. गन

दफ्तरों के चक्कर काटते रहो, रिश्ते तब कहीं परमिट हाथ में आता है. इतना करने के बाद कुछ बचत ही नहीं होती है.

"बचत क्यों नहीं होती है?"

"बाजार में सेठ लोग बहुत सारा माल मांगते हैं न?"

"तुम देते क्यों हो सस्ते में?"

"नहीं दें तो खाएं क्या? सेठ लोग एकता है. कोई ज्यादा बोली लगाता ही नहीं है. हमें मजबूर हो कर सस्ते में ही गाड़ी पड़ती है. पेट की आग सब कराती है, बाबूजी. इस खंदक को तो सुबहशाम भरना ही पड़ता है. इसी लिए चोरी करते हैं."

"तू यह ज्ञान की बात फिर बताने पहले किस्सा तो पूरा..."

"यह किस्सा नहीं है, बाबूजी. आपबीती है..."

"अच्छा भैया, आपबीती ही है, निकल गया मुंह से. अब तू आगे सुना."

"कहां तक सुनाया था, मैं ने?"

"तुम लोग गाड़ियां छोड़ कर भाग्ये..."

"हां, बाबूजी, गाड़ी छोड़ कर हम आसपास ही आड़ियों में छिप गए थे. मेरी छोटी बहन डूंगरी का लहंगा एक में उलझ जाने से वह पीछे रह गई थी. मदद के लिए चिल्लाई तो थानेदार के एक ने दौड़ कर उस की राह रोक ली."

यह सारा क्षेत्र मेरा देखा हुआ था. परमिट हनुमान मंदिर में मैं स्वयं

गया था। इसी लिए नानक्या के वपन से सारा चित्र ही जैसे मेरी आंखों के सामने खिंचने लगा था। उसी राँ में बहुत ही तेज़ धूप पड़ रही थी।
 "फिर क्या हुआ, नानक्या?"
 "हमारे तीर चढ़े के चढ़े ही रह गए, बाबूजी, अगर खाकी वर्दी वाले मोटले साहब वहाँ नहीं होते तो हम उस आदमी को उसी क्षण तीरों से वींध देते, किंतु खाकी वर्दी के कारण हमारे हाथों को जैसे लकवा मार गया था।"

"खाकी वर्दी से इतना डरते हो तुम लोग?"

"हां, बाबूजी, बाघ से, काले नाग से या ऐसे ही किसी और खतरे से हम इतना नहीं डरते हैं, जितना खाकी वर्दी से डरते हैं। खाकी वर्दी को देखते ही हमें कंपकपी सी..."

तभी नानक्या की पुकार हो गई थी। वह बात को अधूरी ही छोड़ कर भाग गया था। जातेजाते वह कह गया था, "बाकी

बात फिर सुनाऊंगा, बाबूजी।

दूसरे दिन जब वह गुड़ और मिर्च लेने आया, तो कोठे के बाहर नानक्या, "नानक्या, मैंने आपकी पीठ पर एक चंद मूढ़े रात भर नींद नहीं आई। मैं बियालों में उसी मंदिर के आसपास भटकता हूँ।"

नानक्या ने अपने भरोसे भते दिखाते हुए कहा, "मेरी आपकी पीठ में ऐसा क्या है, बाबूजी, जो आप उस में उलझ गए?"

"बहुत कुछ है रे, नानक्या, तू जल्दी सुना, देर मत कर। अगर कल की तरह तेरी पुकार हो गई, तो बात फिर अधूरी रह जाएगी और मेरी नींद फिर हराम हो जाएगी।"

"नहीं नहीं बाबूजी, अब आप की नींद हराम नहीं होने दूंगा। आज आपकी पीठ पूरी कर के ही उठूंगा।"

फिर उस ने पूछा, "कहां तक सुना चुका हूं, बाबूजी?"

"तुम ने बताया था कि तुम्हारे तीर चढ़े के चढ़े ही रह गए थे?"

नानक्या रेंजर के सामने रोया गिड़गिड़ाया, तब कहीं जा कर वह पसीजा था।



“हां, बाबूजी, खाकी बर्दी के ड... मेरे हाथ रुक गए थे। मगर वहन की व... के लिए मैं दौड़ पड़ा था। उसे आदमी को ध... नत हुए मैं ने कहा था, ‘मैं से बात कर...’ वहन से कुछ मत कहो।”

“अच्छा, फिर वह क्या ‘छेड़ा’?”

“बोली... नया... हाथ पकड़ कर मुझे खींचता हुआ उन लोगों के पास ले गया। उन्होंने पूछा, ‘परमिट है रे?’ मैं ने कह दिया, ‘नहीं है।’ फिर सवाल हुआ, ‘चोरी का माल है?’ मैं ने जवाब नहीं दिया, चुप रह गया।”

“फिर?”

“फिर” मोटले साहब काररवाई ही करने लगे। पंचनामा बनाने लगे। मैं गिड़गिड़ाया, रोया, अरज की। दसों उंगलियां मुंह में ले कर दया की भीख मांगी। बारबार कहा कि हुजूर, मेरे घर में खाने को दाना नहीं है। मुझे अपनी मां का इलाज कराना है। वह भर रही है। इसलिए मुझ पर रहम करो, मेरी गाड़ी छोड़ दो।”

“तो उन्होंने छोड़ दिया क्या?”

“नहीं, बाबूजी, छोड़ना तो दूर रहा वे लोग मेरी बातों पर हंसने लगे। कहने लगे कि मैं बदमाश हूं। झूठ बोल रहा हूं। मैं ने कसम खा कर उन्हें विश्वास दिलाना चाहा, मगर उन्हें मेरी बातों पर विश्वास नहीं हुआ। वे हंसते ही रहे। जहरबुझी हंसी ही उन के कंठों से फूटती रही। उन के गुर्गे रुपए मांगने लगे।”

“क्या तुम ने रुपए दे दिए?”

“कहां से देता, बाबूजी, रुपए थे ही कहां? मैं ने अपनी डूंगरी वहन के पांवों की कड़ी निकाल कर पेश कर दी। कह दिया कि बस यही है मेरे पास, इसे ले लो और मेरी गाड़ी जाने दो।”

“क्या उन्होंने वह कड़ी ले ली?”

“नहीं, बाबूजी, वह मोटा रेंजर तो लालटेन की तरह भभक उठा था। मुझे धमकाते हुए बोला था, ‘कड़ी दे कर हमें फंसाना चाहता है बदमाश तेरा चालान ही करना पड़ेगा।’”

उस तोंदियल रेंजर का खयाली था मेरे जेहन में बनने लगा था। दृश्य को मैं कल्पना सी करने लगा। नानक्या की बातें सुनते सुनते मैं सुधर जाने कहां का कहां पहुंच गया था। कुशी की ओर जाने वाली सुपरिचित पर मैं जा पहुंचा था।

मेरी अन्यमनस्कता को देख नानक्या पछ बैठा था, “सुन नहीं लग रहा बाबूजी? ऊब गए?” मैं ने जैसे उस को लोक से वापस लौटते हुए कहा था, “नानक्या, मैं तो इसी में डूब गया था। तब बात जारी रख। मैं सुनने को बेताब हूँ।”

नानक्या कह चला था, “बाबूजी, उस तोंदू रेंजर के पैर पकड़ लिए थे। वहन ने भी अपना सिर उस के पांवों पर दिया था। तब वही वह पसीजा था। फाड़ते हुए उस ने हुकम दिया था कि गाड़ियां वापस बाग की ओर मोड़ी जाएं। मैं ये हरीकिशन सेठ के यहां खाली कर जाएं। गाड़ियां अगर सुबह तक वहां पहुंचीं, तो ठीक नहीं होगा।”

“फिर क्या हुआ?”

“अब होने को रहा ही क्या था? गाड़ियों के मुंह फेरे और बाग की ओर पड़े। मोटले साहब लोग हमारी दुर्गति हंसते रहे। वह तोंदू रेंजर दूल्हा सा बना। बीच में खड़ा मुसकराता रहा।”

“फिर बाग में क्या हुआ?”

“दिन” निकलने से पहले ही हमने किशन सेठ के पीठे में खाली कर दी थीं। मोटले साहब का हुकम दिया था, सेठ से बदले में कुछ देने की थी, पर सेठ ने तो हमें अंगूठा ही दिखाया था। हम ने कहा था नकद मत दो, सेठ ज्वार ही खाने को दे दो। आज तो पेट भर दो, पर उस ने हमारी एक नहीं सुनी थी। ही टरका दिया था। पानी तक को नहीं प्या। जब बहुत ही गिड़गिड़ाए थे तो उटका सा जवाब दे दिया था कि ज्वार दोगे, बड़ा जले जमाओ।”

न जाने किस की हमें
उम्र भर तलाश रही,
जिस करीब से देखा
वह दूसरा निकला।

—आजमी



"फिर क्या तुम रेंजर के यहां गए थे?"

"हां, बाबूजी, गए थे. भूख के सारे हमारी अकल पर परदा पड़ गया था. उस मोटले रेंजर ने हमारी अकल पर का यह परदा हटा दिया."

"क्या उस ने ज्वार दे दी?"

"नहीं, बाबूजी, रेंजर इतने सीधे नहीं होते हैं. बड़े खूंखार होते हैं ये लोग."

"अच्छा, यह बता कि रेंजर क्या बोला था?"

"बोला, क्या. वह तो हमें देखते ही आगवबूला सा हो गया था. उस ने हमें चारदीवारी के भीतर पैर ही नहीं रखने दिया था. बाहर से ही भगा दिया था. हमारा वहां पहुंचना ही उसे चुभ गया था. वह गुराया था कि चालान न कर के उस ने बड़ी गलती की है. इन बदमाशों को यों छोड़ना ठीक नहीं था. हम लोग जब चूहों की तरह दुम दवा कर भाग खड़े हुए थे, तभी उस का गुस्सा कुछ ठंडा हुआ था. उस के होंठों पर वह जहरभरी मुसकराहट तभी उभरी थी. हमारी ओर उंगली से इशारा करते हुए वह अपनी घरवाली और वच्चों के साथ खिलखिलाता रहा था."

इतना कह कर नानक्या खामोश हो गया था. उस का निरीह सा लगने वाला चेहरा कठोर हो गया था. खोईखोई सी नजरों से वह कहीं दूर देखने लगा था.

ने उसे झकझोरा था, तब कहीं वह जैसे किसी खोह में से निकला था. चौंक कर उस ने कहा था, "बोली, बाबूजी?"

मैं ने कहा था, "मैं क्या बोलूं, तू ही बोल. रेंजर साहब के खिलखिलाने की बात तू ने अधूरी ही छाड़ दी."

बात का सिरा थामते हुए नानक्या बोला था, "उस मोटले साहब की वही हंसी मेरे कलेजे में गड़ गई थी, बाबूजी, ऐसी गहरी उतरी थी वह हंसी कि नासूर सी बन गई थी."

"इसी लिए तू ने मोटले साहब पर वार कर दिया था?"

"वार उस समय नहीं किया था, बाबूजी, साल भर के बाद यह मौका आया था."

"साल भर बाद?"

"हां, बाबूजी, भगोरिया हाट के मौके पर वह वारदात हो गई थी."

"कैसे हुई नानक्या?"

"हुआ यों बाबूजी कि मैं अपने सारे गम भूल कर भगोरिया हाट में मस्ती में नाच रहा था. जंगी ढोल बज रहा था. कामे की थाली खनखनन बज रही थी. लोग किलकारी मारते हुए ढोल के आसपास घेरे में कूद रहे थे. मैं भी कुल्हाड़ी हाथ में लिए घुंघरू पैरों में बांधे कूद रहा था."

"फिर क्या हुआ?"

"फिर यह हुआ, बाबूजी कि यों ही घूमतेघूमते मेरी नजर एकाएक उस तोंदू रेंजर पर पड़ी."

"वह रेंजर वहां आ गया था क्या?"

"हां, बाबूजी, अपने पूरे परिवार के साथ वह जाने कब सामने के ऊंचे चबूतरे पर जा खड़ा हुआ था. अपनी तोंद पर हाथ बांधे वह मुसकरा रहा था, बाबूजी, उसे

गई थी. मेरी वह मस्ती गायब सी हो गई थी. मेरे कलेजे में गुस्सा था, मुसकान वाला चेहरा जैसे फिर हरा हो गया था. हर चक्कर घूमते-घूमते मेरी ही उस तोंद के मुसकराते चेहरे पर पड़ती थी, एक टाक सी मेरे कलेजे में उठने लगती थी. मैं ने आंखें बंद करने की कोशिश की तो भी उस का हंसता चेहरा नजर आता रहा.

"मैं ने एक चक्कर में उस के चेहरे को अनदेखा सा किया, दूसरे चक्कर में अनदेखा सा किया, तीसरे में किया... बारबार किया, मगर हर बार बिच्छू के डंक सा उस का चेहरा मुझे डंक मारने लगा. इसी लिए मैं ने अपना आपा खो दिया. मैं कुल्हाड़ी तान कर उस की ओर दौड़ा. वह हंसता ही रहा और मैं ने एक ही बार में उस की गरदन काट दी."

मैं चीख पड़ा था, "काट दी..."

नानक्या ने बड़े सहज ढंग से कहा था, "हां, बाबूजी, एक ही बार में उस का सिर धड़ से अलग जा गिरा था. खून से लथपथ उस सिर को उठा कर मैं थाने में जा पहुंचा था और साफसाफ कह दिया था कि यह सिर मैं ने धड़ से अलग कर दिया है. इस की हंसी मुझ से सहन नहीं हुई थी."

रह गया था. सब कुछ उस के मुँह से बोलने के बाद भी मुझे विश्वास नहीं हो रहा था कि इस निरीह से लगने वाले भील युवक ऐसी जघन्य हत्या की होगी.

मेरे मन के इन भावों को नानक्या ने कैसे ताड़ गया था. वह कैफियत सी देता बोला था, "बाद में मुझे खुद विश्वास हुआ था कि उस मोटले साहब की गरदन उड़ाई थी. इसी लिए अदालत में मेरे मुँह निकला था— कि जाने कौन सी शीश भीतर घुस कर यह काम मुझ से करा था. हकीकत में मैं ने कत्ल नहीं किया. मोटले साहब की खाकी वर्दी से ही कांपता मैं भला उन का सिर धड़ से अलग कैसे सकता था? यह काम किसी और ने ही किया है, मैं ने नहीं किया, मगर बाबूजी, अदालत मेरी एक नहीं सुनी. मुझे ही गुनहगार कर आज़न्म कैद दे दी."

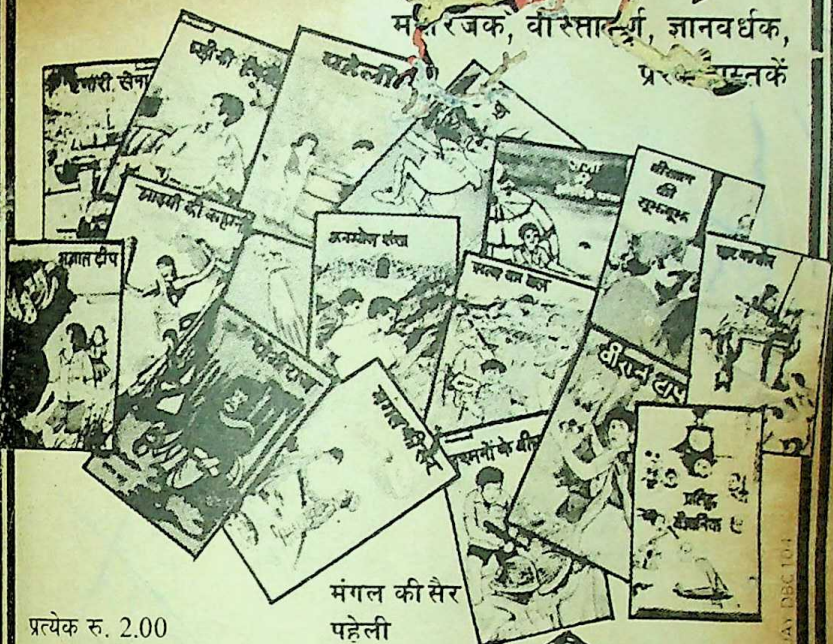
कारागृह से छूट कर मैं तो कभी बाहर आ गया हूँ, किंतु जब भी मैं किसी घृणास्पद हंसी देखता-सुनता हूँ तो मैं उठता हूँ. उस समय मेरी आंखों के सामने नानक्या का मासूम, भोला, दयनीय चेहरा उभरने लगता है.



"ठीक है, मैं बेईमान हो सकता हूँ, भ्रष्ट हो सकता हूँ, पर इतना गिरा हुआ तो नहीं कि मंत्रीपद पर बना नहीं रह सकता!"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाराजक, वीरसाहस, ज्ञानवर्धक,
प्रत्येक युद्धके



प्रत्येक रु. 2.00

प्रसिद्ध वैज्ञानिक
वीरान टाप्

प्रत्येक रु. 2.50

योगीराज
चीकू
नया घर
चीकू से बलवान हारा
घड़ी की टिकटिक
बीरवल की सझबझ

प्रत्येक रु. 3.00

आदमी की कहानी

मंगल की सैर
पहेली
अज्ञात द्वीप
हमारी सेना

प्रत्येक रु. 3.50

घाट का चोर
सत्य का बल
राजा की अंतरिक्ष यात्रा

प्रत्येक रु. 4.00

अनमोल शंख
शुक्र की खोज
संकट के साथी
दुश्मनों के बीच



दिल्ली बुक कंपनी

एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-1.

WISHVUAY DBC 104

ई. वी., वीडियो व रेफ्रीजरेटर

के लिए । तद् नाम

श्याम इलैक्ट्रॉनिक्स (रजि.)

लाजपत राय मार्केट - दरियागंज



अब केवल टेक्सला उत्पादनों के लिए
अपने प्रतिष्ठित शोरूम

श्याम इलैक्ट्रॉनिक्स कार्पोरेशन

एम-1 पालिका बाजार कनाट प्लेस नई दिल्ली. में भव्य उद्घाटन की घोषणा करते हैं

फोन : 323403

दिल्ली के लिए डिस्ट्रीब्यूटर :

टैक्सला सर्व सान्झी गुर बानी कैसेट

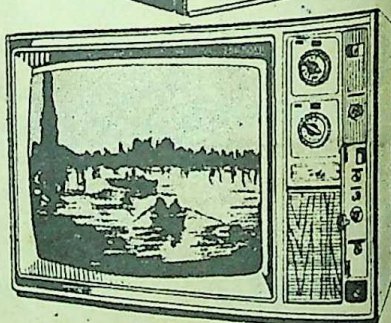
टेप्स व टैक्सला वीडियो टेप्स

टैक्सला कलर व ब्लैक एण्ड

व्हाइट टी वी,

वीडियो टेप रिकार्डर,

टू इन वन व स्टीरियो डैक्स.



श्याम इलैक्ट्रॉनिक्स (रजि.)

3647, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, दिल्ली. फोन : 264624

294, लाजपत राय मार्केट, चांदनी चौक, दिल्ली. फोन : 236767.

सुखी

प्राणिन दिनक

22
13-12-83

शिव हिंदी सम्मेलन :
क करोड़ का तमाशा

युक्त राष्ट्र संघ :
गण विकास लक्ष्योमी ?

लिका की सल
किया क्या है

विश्व सुख साहित्य

त्रैलोक्यिक जीवन में प्रवेश कर रहे
युवकयुवतियों के लिए अनुपम पुस्तकें

युवकों से : रु. 3.50

युवकों को योग्य पति, सफल गृहपति और
जिम्मेदार पिता बनने में सहायक पुस्तक.

पति से : रु. 4.00

विवाहित जीवन में पति का पत्नी को समझने
व अपना बनाए रखने में सहायक उपयोगी पुस्तक.

पत्नी से : रु. 5.00

परिवार को सुखमय बनाने के लिए विभिन्न
समस्याओं का विवेचन हर पत्नी के लिए अनिवार्य.

बच्चों की समस्याएं : रु. 3.00

बच्चों को शारीरिक व मानसिक रूप से
स्वस्थ कैसे बनाएं?

युवतियों से : रु. 5.00

एक युवती समझदार बहु, प्रिय पत्नी, योग्य
गृहिणी और आदर्श मां बन कर अपनी
जिम्मेदारियों को सही ढंग से कैसे निभाए?

कामकला भाग I व II प्रत्येक रु. 6.00

यौन जीवन सुखमय बनाने में सहायक प्रस्तुत
पुस्तक में सेक्स के हर पहलू का वैज्ञानिक विश्लेषण.

स्त्री और पुरुष : रु. 8.00

प्राचीन भारतीय काम विज्ञान से ले कर
आधुनिक पश्चिमी खोज के ज्ञान का
समावेश इस पुस्तक में मिलेगा.

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से ले या आदेश भेजें :

दिल्ली बुक कंपनी

एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.

टी वी, वीडियो व रेफ्रीजरेटर

के लिए प्रसिद्ध नाम

श्याम इलेक्ट्रॉनिक्स (रजि.)

लाजपत राय मार्केट - दरियागंज



अब केवल टेक्सला उत्पादनों के लिए
अपने प्रतिष्ठित शोरूम

श्याम इलेक्ट्रॉनिक्स कार्पोरेशन

एम-1 पालिका बाजार कनाट प्लेस नई दिल्ली. में भव्य उद्घाटन की घोषणा करने हैं.

फोन : 323403

दिल्ली के लिए डिस्ट्रीब्यूटर :

टैक्सला सर्व सान्झी गुर बानी कैसेट

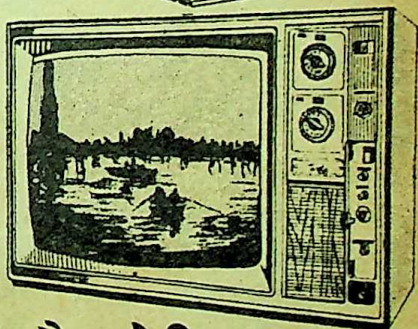
टेप्स व टैक्सला वीडियो टेप्स

टैक्सला कलर व ब्लैक एण्ड

व्हाइट टी वी,

वीडियो टेप रिकार्डर,

टू इन वन व स्टीरियो डैक्स.



श्याम इलेक्ट्रॉनिक्स (रजि.)

3647, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज दिल्ली फोन: 264624

294, लाजपत राय मार्केट, चौदनी चौक, दिल्ली. फोन: 236767.

यदि घंटे तक पानी को गरम
उबलता हुआ रखना हो तो
किसी वाटर-हीटर के थर्मोस्टेट
की सुरक्षा का विश्वास आपकी
कौन दिला सकता है?

हम दिलाते हैं इसका विश्वास!

जब गरम उबलते पानी को घंटों इसी तरह रखना हो
तो कई बातें हो सकती हैं। विस्फोट हो सकता है।
थर्मोस्टेट जल सकता है। करंट लग सकता है। इन
स्थितियों से बचने का एकमात्र उपाय है—वाटरहीटर
खरीदने से पहले विश्वव्यापी नाम की ख़ातरी।

जैसे कि बजाज।

भारत में बजाज ही उन कुछ नामों में से है जिनके
पास २५ से भी अधिक वर्षों का अनुभव है। हर बजाज
उत्पादन में इस अनुभव का प्रमाण आपको मिलेगा।
घरेलू माधनों की हमारी सबसे विस्तृत श्रेणी में भी यह
उत्कृष्टता मौजूद है। और फिर देश भर में हमारी
सत्रह शाखाओं व ३५०० विक्रेताओं के ज़रिए बिजली के
बाद की तत्पर सेवा भी उपलब्ध है।

यही कारण है कि घरेलू माधनों की उत्कृष्टता,
मजबूती व सुरक्षा के लिए एक ही प्रमाण पत्र काफी
है—बजाज।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

आज ही एसीटें-बत्ताल ही एसीटें



लेख

हिंदी सम्मेलन	18	ज्योतिर्मय
श्रीलंका की समस्या	24	ब्रह्मदत्त
संयुक्त राष्ट्रसंघ	31	अतुल जैन
महाराजगढ़ का...	38	राजेशकृष्ण
साउना स्नान	42	अजय सिन्हा
इनसेट-1 बी	65	चित्रा गर्ग
गंधर्वपुरी	70	चंद्रशेखर
रति अग्निहोत्री	90	रवींद्र थापर
आंद्रे सखारोव	99	रणवीरसिंह
नोबेल पुरस्कार...	111	मानवेन राकेश
अर्थव्यवस्था...	124	वेद अग्रवाल
कराते	129	दीपक
विटामिन	142	मुकुंद सक्सेना



कथा साहित्य

गफूर भाई	52	चंद्रशेखर दुबे
सरकारी छता	77	श्यामकिशोर
सौ के छुट्टे	106	सत्यकुमार
मौसम क्रिकेट का	134	जीति

कविताएं

सांझ सिंदूरी	35	ऋचा सत्यार्थी
बनसंवरने की उम्र	46	जहीर कुरेशी
अभिलाषा	83	मोहनप्रसाद
बहुत दूर चलना है	98	कैलाश जैन

स्तंभ

संपादक के नाम	876	वास्ताने दपतर
मुक्त विचार	1484	पिछले छः महीनों
ये शिक्षक	4986	परदे के आगे
ये लड़के लड़कियां	51109	धूपछांव
सावधान	63116	युवा गतिविधियां
खेल समीक्षा	138	

संपादन व प्रकाशन कार्यालय : ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा.लि. के लिए विश्वनाथ द्वारा दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली व दिल्ली प्रेस स.प.प्रा.लि. गाजियाबाद में मद्रित.

मुक्ता नाम रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क है. मुक्ता में प्रकाशित सभी रचनाओं के सर्वाधिकार दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा.लि. द्वारा सुरक्षित हैं. © दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा. लि. 1983

मूल्य : एक प्रति 3.25 रुपए. एक वर्ष 78.00 रुपए. विदेश में (समुद्री डाक से) एक वर्ष 160.00 रुपए. अमरीका में (हवाई डाक से) एक वर्ष 400.00 रुपए. यूरोप में (हवाई डाक से) एक वर्ष 325.00 रुपए.

मुख्य वितरक व वार्षिक शुल्क भेजने का स्थान : दिल्ली प्रकाशन वितरण प्रा.लि. रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. व्यक्तिगत विज्ञापन विभाग : एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001. बंबई कार्यालय : 79ए, मिटल चैम्बर्स, नारीमन पॉइंट, बंबई-400021. मद्रास कार्यालय : नं. 14, पहली मंजिल, सीमेंस कॉम्प्लेक्स, 150/82, मांटीअथ रोड, मद्रास-600008. कलकत्ता कार्यालय : पोद्दार पॉइंट, तीसरी मंजिल, 113, पार्क स्ट्रीट, कलकत्ता-16. बंगलौर कार्यालय : नं. 302-बी, 'ए' विंग-तीसरी मंजिल, कवीस कार्नर अपार्टमेंट, 3, कवीस रोड, बंगलौर-560001. अहमदाबाद कार्यालय : 503, नारायण चैम्बर्स, समीप नेहरू बिज कार्नर, आश्रम रोड, अहमदाबाद-380009.

मुक्ता में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और वास्तविक घटनाओं या संस्थाओं से उन की किसी भी प्रकार की समानता केवल संयोग मात्र है.

प्रकाशनार्थ रचनाओं के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा आना आवश्यक है अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं लौटाई नहीं जाएंगी.

मुक्ता में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और वास्तविक घटनाओं या संस्थाओं से उन की किसी भी प्रकार की समानता केवल संयोग मात्र है.

प्रकाशनार्थ रचनाओं के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा आना आवश्यक है अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं लौटाई नहीं जाएंगी.

प्रकाशनार्थ रचनाओं के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा आना आवश्यक है अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं लौटाई नहीं जाएंगी.

सांस की बदबू हटाइए...
दांतों की सड़न रोकिए



कोलगेट से जब भी आप दांत साफ करते हैं, उसका भरोसेमंद फार्मूला आपकी सांसों को महकाता है... उनमें ताज़गी लाता है. साथ ही आपके दांतों को मज़बूत व स्वस्थ बनाता है.



ये देखिए कैसे :

दांतों में छिपे अन्नकणों में सांस में बदबू और दांत में सड़न पैदा करनेवाले कीटाणु बढ़ते हैं.



कोलगेट का अमोना असरदार झाग दांतों के कोने में छिपे हुए अन्नकणों और कीटाणुओं को निकाल देता है.



नतीजा: आपकी सांस तरोताज़ा, दांतों का सड़न बचाव, दांत स्वस्थ और मज़बूत.

इसीलिए हर भोजन के बाद बिना भूले कोलगेट डेंटल क्रीम से दांत साफ कीजिए. सांस की बदबू हटाइए, दांतों की सड़न रोकिए.

कोलगेट का ताज़ा पेपरमिंट जैसा स्वाद मन में बस जाता है!

दिसंबर (प्रथम) 1988

विश्व बाल साहित्य

मनोरंजक, वीरतापूर्ण, ज्ञानवर्धक, प्रेरक
एवं देशभक्तिपूर्ण बाल पुस्तकें...



रु. 2.00

स्वतंत्रता सेनानी

प्रत्येक रु. 2.50

तेनालीराम

बस में चोरी

तिनके का सहारा

गलतफहमी

चीकू

नकलची ननकू

चमत्कारी बाबा

बहादुर विनीता

हाथी का शिकार

पंचतंत्र भाग I, II

घमंडी कौआ

रु. 3.00

आखिरी सरकस

रु. 3.50

घमंडी बैसा

प्रत्येक रु. 4.00

अपहरण

सम्राट चंद्रगुप्त

आगरे वाले मामा जी

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें या आदेश भेजें

दिल्ली बुक कंपनी

एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.

VISHVUJAY DBC 105

40 रुपये में पूरा मेट. अग्रिम रुपये भेजने पर डाक खर्च नहीं डाक खर्च केवल 50 पै. बी.पी. द्वारा.
बी.पी. द्वारा मंगवाने पर 5 रुपये या आदेश का 10% अग्रिम भेजना आवश्यक. डाक खर्च
अतिरिक्त. चैक जहाँ बैंक Public Domain Gurukul Kangri Collection, Haridwar
आदेश भेजें.

मुद्रता

संपादक के नाम

'धर्म के नाम पर आतंक' (मुक्त विचार/नवंबर/प्रथम) में व्यक्त किए गए आप के विचार बिलकुल सही हैं। अकाली आंदोलनकारियों का दुस्साहस उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा है और केंद्रीय शासन की इस संबंध में उदासीनता व असफलता से लोगों में असुरक्षा की भावना बढ़ रही है। दूसरी ओर धर्म के नाम पर अपने चंद तथाकथित संतों के कारण सिख अन्य लोगों का विश्वास खोते जा रहे हैं। आखिर जनता धर्म की राजनीति व वोटों की राजनीति के बीच कब तक पिसती रहेगी?

—अनिलप्रसाद

'वाह री, उच्च शिक्षा' मुक्त विचार (अक्टूबर/प्रथम) में आप ने लिखा है कि मध्य प्रदेश में कोई हाजिरी रजिस्टर ही नहीं है, लेकिन यह बात सही नहीं है। मैं स्वयं मध्य प्रदेश में शिक्षक के पद पर कार्य करता हूं। हमें बराबर हाजिरी का रिकार्ड रख कर प्राचार्य को देना पड़ता है। छात्रों की 60 प्रतिशत उपस्थिति अनिवार्य है। यहां यह उल्लेख कर देना भी आवश्यक है कि मध्य प्रदेश में कालिजों के भवनों का निर्माण शासन करता है न कि विश्वविद्यालय और कालिजों में छात्रों की संख्या भी कम नहीं हो रही है।

—स. प. अग्रवाल

आप की यह बात कि सरकार न्यायेधीशों को परेशान कर रही है, (मुक्त

विचार/सितंबर/द्वितीय) बिलकुल सही है। यदि इसी तरह न्यायेधीशों पर अंकुश लगाया जाता रहा तो उस से उन के स्वतंत्र अस्तित्व को खतरा पैदा हो जाएगा साथ ही यह देश के लिए भी खतरनाक साबित होगा। क्योंकि अपने स्वतंत्र अस्तित्व के कारण आज इस में लोगों का विश्वास है।

लेकिन परिवार नियोजन के बारे में आप के विचारों से मैं सहमत नहीं हूं। आर्थिक विकास के लिए जनसंख्या पर नियंत्रण रखना जरूरी है और इस के लिए सभी तरह के तरीके अपनाए जाने चाहिए। लोगों के प्रलोभन व प्रोत्साहन दे कर भी अधिक बच्चे पैदा करने से रोका जा सकता है। चीन ने जनसंख्या पर नियंत्रण आर्थिक विकास में पाया है? वहां भी लोगों पर कई अंकुश लगे हैं। मेरे विचार से तो आर्थिक व अन्य प्रकार के दंडों की व्यवस्था कर के ही हम लोगों को अधिक बच्चे पैदा करने से रोक सकते हैं।

—महिंद्र धीपा

मुक्ता का दीवाली अंक हर दृष्टि में उपयोगी रहा। लेख 'हांगकांग', 'आस्ट्रेलिया के कलाप्रेमी बंजारे', 'बलूचिस्तान' व 'सहरा' विशेष पसंद आए। जहां कहा

'संपादक के नाम' के लिए मुक्ता की रचनाओं पर आप के विचार आमंत्रित हैं। साथ ही आप देश के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि विषयों पर भी अपने विचार इस स्तंभ के माध्यम से रख सकते हैं। प्रत्येक पत्र पर लेखक का पूरा नाम व पता होना चाहिए, चाहे वह प्रकाशन के लिए न हो। पत्र इस पते पर भेजिए :

संपादकीय विभाग,
मुक्ता,
ई-3, झंडेवाला एस्टेट,
नई दिल्ली-110055.



ऑलिम्पिक कोच जिम ओ' डोहर्टी कहते हैं: "शक्ति और दम-खम बढ़ाने के लिए कॉम्प्लान बेजोड़ है।"

सुप्रसिद्ध ऑलिम्पियन जिम ओ' डोहर्टी ने भारत सहित दुनिया भर की कई युवा प्रतिभाओं को कड़ी प्रतियोगिताओं के लिए प्रशिक्षण दिया है। उनका विश्वास है कि चैम्पियन पैदा नहीं होते बल्कि बनाये जाते हैं और विजेता बनने के लिए जरूरी है इच्छा शक्ति और शारीरिक शक्ति। जिम ओ' डोहर्टी का कहना है — "मैं तैराकों, खिलाड़ियों और विशेषकर बढ़ते बच्चों के लिए कॉम्प्लान की सिफारिश करता हूँ। कॉम्प्लान परिपूर्ण आहार है जो आसानी से पच जाता है। इसके २३ अत्यावश्यक पोषक तत्व शरीर का स्वस्थ विकास करते हैं जिससे दम-खम की वृद्धि होती है।"

आप भी जिम ओ' डोहर्टी की सलाह मानिए। अपने बच्चों के सम्पूर्ण विकास के लिए उन्हें हर रोज कॉम्प्लान दीजिए। कॉम्प्लान कई स्वाद भरे जायकों में मिलता है जिसे बच्चे बेहद पसंद करते हैं।



कॉम्प्लान - परिपूर्ण नियोजित आहार

रिया...

...ताज़गी का सुन्दर एहसास.



मनपसंद सुगन्धों में
फुलवा रिया
नींबू रिया

फुलवा रिया	नींबू रिया
नम्रों-नाजुक...	ताज़गी की बहार
हल्का गुलाबी साबुन	छलकाता हरा साबुन
फूलों की भीनी-भीनी	जिसमें है नींबू की
महक लिए.	मचलती महक.

रिया-महकता महकाता साबुन.

टाटा उत्पादन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

दिसंबर (प्रथम) 1981

‘नरक और स्वर्ग’, ‘सुधार’ तथा ‘पहचान’ अच्छी थीं वहीं ‘नानक्या’ जैसी अपराध कथा को मुक्ता में पढ़ कर आश्चर्य भी हुआ। यद्यपि रेंजर भ्रष्ट था, लेकिन क्या इसी लिए उस का कत्ल कर देना उचित था?

व्यंग्य ‘लक्ष्मी चली...’ बहुत सटीक था साथ में सारी कविताएं व ‘अदब से बातें करिए’ जैसी समस्याएं भी अच्छी थीं।

—प्रमोदकुमार वालीछवाल

*

लेख ‘गुजरात की नवरात्रि’ (अक्तूबर/द्वितीय) पढ़ कर ऐसा लगा कि लेख अपने विषय से भटक गया है, लेकिन कहानी ‘राग अनुराग’ और कविता ‘कोई संबंध तो है’ इतनी अच्छी लगी कि बारबार पढ़ने को मन हुआ।

—संजय

*

व्यंग्य ‘न्यायालय अर्थात् न्याय आले में’ (अक्तूबर/द्वितीय) में लेखक ने न केवल न्यायालयों की दुर्व्यवस्था व अनुशासनहीनता को सामने ला कर रखा है, बल्कि

लालफीताशाही को प्रश्रय देने वालों की असलियत खोल कर उन पर करारा व्यंग्य भी किया है।

—सुमनसिंह बनीरोत

‘हिंदी अपने प्रयोगकर्ताओं के चरित्र का दर्पण’ (अक्तूबर/प्रथम) में लेखक ने अपने तर्कों से यह स्पष्ट कर दिया है कि प्रगति के लिए किसी एक भाषा का प्रयोग आवश्यक नहीं है। जिन देशों की भाषा अंगरेजी नहीं है क्या वे देश प्रगति नहीं कर रहे हैं? लेकिन हम भारतीय न जाने कब तक अपनापन भूल कर दूसरों की चीजों पर गर्व करते रहेंगे।

—प्रकाश पांडे

*

लखनऊ किसी जमाने में मेहमाननवाजी व लोगों की नजाकतनफासत के लिए मशहूर था, पर आज उस की वह शान अपराधों के बढ़ने से खो गई है। आजकल लखनऊ के चारबाग रेलवे स्टेशन पर जहर मिला परसाद यात्रियों को खिला कर मार डालने की घटनाएं आए दिन होती रहती हैं।

बाल संवारें रूप निखारें

सिमको

परमानेंट
हेयर ड्राई

शिकाकोई
केश तेल

सिमको कुदरती काले या बाउन रंग में सफेद बालों को रंगने का विश्वसनीय व आसान उपाय है।

मधुर सुगन्धित लम्बे, चमकीले, और काले बालों के लिये

सिमको हेयर फिक्सर

के निर्माताओं की भेंट



AD-N-AU

कीमतें कम करने के लिए :

- सरकारी खर्च कम हो
- करों में कमी हो

बढ़ती हुई कीमतों की मूल वजह (और प्रायः एकमात्र) सरकार द्वारा आवश्यकता से ज्यादा खर्च किया जाना (करों व ऋणों से प्राप्त आय की तुलना में ज्यादा व्यय) और उस घाटे को पूरा करने के लिए नए करेंसी नोट छापना तथा माल व सेवाओं पर नए नए कर थोपना है।

हर नया नोट, हर नया कर माल व सेवाओं की कीमत में तुरंत वृद्धि कर देता है, जिस की वजह से सरकारी खर्च में और अधिक वृद्धि आवश्यक हो जाती है। इस वृद्धि की भरपाई के लिए फिर नए नोट छपते हैं, फिर नए कर लगते हैं और इस से कीमतें लगातार बढ़ती जाती हैं।

राजनीतिबाज बढ़ती हुई कीमतों का सारा दोष उत्पादकों व व्यापारियों के जिम्मे मढ़ कर आम लोगों को धोखा देने की कोशिश करता है। यह अच्छी तरह से जानते हुए भी कि करों द्वारा बढ़ी लागत उत्पादक और व्यापारी अपनी जेब से पूरी

नहीं कर सकते। उन्हें चीजों के दाम बढ़ाने ही पड़ते हैं। आम लोगों के हाथ में अतिरिक्त धन आने से भी वस्तुओं की मांग ज्यादा बढ़ जाती है जिस से कीमतें भी और बढ़ जाती हैं।

इस के साथ ही राजनीतिबाजों को अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए अपनी पार्टियों को चलाने के लिए और चुनाव लड़ने के लिए काले धन की मांग भी जुड़ जाती है। यह रकम सिर्फ माल व सेवाओं की कीमत से ही प्राप्त हो सकती है। इस प्रकार कीमतें और ज्यादा से ज्यादा बढ़ती जाती हैं।

कभीकभी यह कहा जाता है कि ज्यादा उत्पादन से कीमतें बढ़ना रोक जा सकता है। लेकिन अगर कहीं कोई ज्यादा उत्पादन होगा तो वह कच्चे माल और सेवाओं पर बढ़े हुए करों की वजह से ज्यादा कीमत पर ही होगा। इसलिए जो हुए उत्पादन से भी कीमतें कम नहीं होतीं

कीमतें कम करने के लिए :

- करों में कमी कीजिए
- सरकारी खर्च कम कीजिए

पछले चारपांच वर्षों से प्रायः रोज ही कोई व्यक्ति इसका शिकार होने का भोग पंजाब आदि से कमा कर जब अपने शहरों को वापस जाते हैं तब उन्हें रास्ते यानी लखनऊ स्टेशन पर (या स्टेशन के बाहर) जहर मिला परसाद या एक प्रकार का जहरीला पाउडर (जिसे खा कर या तो व्यक्ति बेहोश हो जाता है या फिर मर जाता है) या जहर छिड़की खाद्य वस्तुएं खिला कर कुछ मौत के सौदागर उन का सारा पैसा ले कर चंपत हो जाते हैं और प्रदेश की पुलिस लावारिस लाशों को मेडिकल कालिज के हवाले कर देती है, पर इन लाशों के पोस्ट मार्टम के बाद भी प्रायः यह मालूम नहीं हो पाता कि व्यक्ति की मृत्यु कैसे हुई.

इस गिरोह में अधिकतर युवा पेशेवर अपराधी हैं, जो अच्छे कपड़े पहने होने के कारण भीड़ में मिल जाते हैं. पहचान में नहीं आ पाते.

यह बात भी प्रकाश में आई है कि ये

भगवान के दर्शन कराने के बहाने औरतों के रुमाल सुंघा देते हैं. इस से कुछ देर में व्यक्ति अर्धचेतन अवस्था में आ जाता है और जो वे कहते हैं, वह वही सब करता चला जाता है, पर बाद में वह इन लोगों को पहचान भी नहीं पाता. इसी लिए इन लोगों को पकड़ने में कठिनाई भी होती है और अगर वे कभी पकड़े भी जाते हैं तो अपराध सिद्ध होने पर उन्हें मात्र तीन माह की कैद होती है. उस में भी वे जम नत पर छूट जाते हैं.

अतः आप की पत्रिका के माध्यम से मेरा सरकार से विशेष अनुरोध है कि वह इस दिशा में कुछ करे और इस तरह के सफेदपोश अपराधियों के लिए सख्त सजा का प्रावधान करे. प्रचार माध्यमों के द्वारा लोगों को सचेत भी किया जाए.

आशा है कि सरकार की गुप्तचर शाखा इस तरह के अपराधियों का परदाफाश करेगी. —जगदीशकुमारसिंह •

मुक्ता के लेखक



श्यामकिशोर

इस अंक में प्रकाशित कहानी 'सरकारी छाता' के लेखक श्यामकिशोर पेशे से पत्रकार हैं. आप अमूमन ग्रामीण समस्याओं को ही अपने लेखन का आधार बनाते हैं.



ऋचा सत्यार्थी

इस अंक में प्रकाशित कविता 'सांझ सिंदूरी' की रचयिता ऋचा सत्यार्थी को 'साहित्यिक वातावरण विरासत में मिला है. आप लेखन व अभिनय में गहन रुचि रखती हैं.



संस्कृत विचार

हिंदी के नाम पर तमाशा

पिछले महीने में नई दिल्ली में तृतीय विश्व हिंदी सम्मेलन हुआ. इस पर लगभग एक करोड़ रुपया खर्च हुआ. कुछ बाहर के देशों से प्रतिनिधि आए, कुछ भारत के विभिन्न भागों से. हिंदी के लेखक तो थोड़े से ही थे. जो थे भी, उन की उपेक्षा की गई.

लगता है इस सम्मेलन का असली मकसद श्रीमती इंदिरा गांधी को हिंदी क्षेत्र में हिंदी के समर्थक के रूप में उभारना ही था, क्योंकि इस के अलावा वहां और कुछ तो हुआ ही नहीं.

हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बनाने पर भाषण दिए गए, पर जब हिंदी का भारत ही में कोई स्थान नहीं है तो अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में क्या हो सकता है?

पिछले दिनों जब श्रीमती इंदिरा गांधी रूस गई थीं तो उन के स्वागत में हर जगह जो इशतहार, बंदनवार या झंडे लगे थे, उन पर रूसी और हिंदी में स्वागत के शब्द लिखे गए थे, पर श्रीमती इंदिरा गांधी ने वहां अपने सारे भाषण अंगरेजी में दिए—बातचीत अंगरेजी में की, जब कि रूसी बरसों से बराबर कह रहे हैं कि हम से पत्रव्यवहार व संबंध या तो अपनी राष्ट्रभाषा में कीजिए या हमारी भाषा में, अंगरेजी में नहीं, पर श्रीमती इंदिरा गांधी का अंगरेजी प्रेम देखिए कि वह हर काम अंगरेजी में करना पसंद करती

हैं—सिवा हिंदी क्षेत्र में चुनाव भाषणों के.

अब क्योंकि चुनाव सिर पर आ खड़े हुए हैं और हिंदी क्षेत्र पर ही उन का दोबारा प्रधान मंत्री बनना या न बनना निर्भर करता है—दक्षिण तो उन के हाथ से निकल ही गया है—इसलिए हिंदी प्रेमी होने का यह महंगा नाटक रचा गया ताकि रेडियो, टेलीविजन पर उन की छवि राष्ट्रीय प्रसारण द्वारा सारे देश में खूब बढ़ाचढ़ा कर फैलाई जा सके.

हिंदी क्षेत्र में सारी सरकारें इंदिरा कांप्रेस की हैं. क्या वहां सारा कामकाज हिंदी में हो रहा है? जब वहां ही यह नहीं हो पा रहा है तो विश्व में हिंदी फैलाने की बात करना लोगों को बेवकूफ बनाने का प्रयत्न ही कहना चाहिए और उन की गाढ़ी कमाई से वसूल किए गए टैक्स के रुपए से यह महंगा तमाशा एक अपराध.

'फ्रांस श्री' प्रतियोगिता

जब नवयुवतियां 'सुंदरी प्रतियोगिताओं' में बिकिनी पहन कर अपनेआप को प्रदर्शित कर सकती हैं और वाहवाही लूट सकती हैं तो नवयुवक 'सुंदर श्री प्रतियोगिताओं' में संक्षिप्त जाधिए पहन कर क्यों नहीं भाग ले कर खिताब जीत सकते?

पिछले महीने फ्रांस के एक नगर में 'फ्रांस श्री' की प्रतियोगिता हुई जिस में नवयुवकों ने संक्षिप्त जाधिए पहन कर केवल

स्त्री निर्णायकों (जजों) के एक दल के सामने अपने आप को पेश किया। इनमें से उक्त नौकरों में से एक को सब से सुंदर, सुगठित होने के लिए 'फ्रांस श्री' का खिताब दिया गया।

वैसे इस प्रकार की प्रतियोगिताएं प्राचीन यूनान (ग्रीस) में बहुत होती थीं जहां युवक व युवतियां दोनों नंगे हो कर खेलकूद और व्यायाम में सम्मिलित होते थे ताकि शारीरिक सुंदरता, रखरखाव को प्रोत्साहन मिले। प्राचीन यूनान की युवकयुवतियों की मूर्तियां देख कर इस में संदेह नहीं रह जाता कि मानव शरीर को जब कपड़ों से ढका जाता है तो इस की बदसूरती को भी ढांप दिया जाता है और शरीर को स्वस्थ, सुगठित रखने के लिए कोई विशेष प्रोत्साहन नहीं रहता।

भारत में भी शहरी इलाकों को यदि छोड़ दिया जाए तो प्रायः सारे पुरुष अर्द्ध नग्न—केवल लंगोटी या छोटी धोतियों, लुंगियों में रहते हैं। स्त्रियों का पहनावा भी ऐसा रहता है जिस से शरीर साफ झलकता है। और शायद यही कारण है कि गांवों में भेदे शरीर वाले व्यक्ति कम ही मिलेंगे।

रोजगार दफ्तर से किसे रोजगार ?

सरकार ने रोजगार दफ्तरों की स्थापना इसलिए की थी ताकि वह इन के जरिए बेरोजगारों को काम दिला सके, पर आज इन का कोई महत्त्व नहीं है सिवा इस के कि इसी दफ्तर में बैठने वालों को रोजगार मिल जाए।

ये रोजगार दफ्तर कुछ काम करते रहें इस के लिए सरकार ने यह भी कानून बनाया कि हर संस्थान में, चाहे वह सरकारी हो या नागरिक, जो भी स्थान रिक्त हो उस की सूचना वह रोजगार दफ्तर को दें। कुछ राज्यों ने, जिन में पश्चिम बंगाल प्रमुख है, यह भी कानून बना दिया कि रोजगार दफ्तर द्वारा भेजे हुए व्यक्ति के सिवा अन्य किसी व्यक्ति को नौकरी भी न दी जाए। (इस का एक कारण यह था कि पश्चिम बंगाल सरकार अन्य राज्यों के व्यक्तियों को अपने राज्य में नौकरी

पर लगने देना नहीं चाहती थी।)

परन्तु इन प्रवृत्तियों के रोजगार दफ्तर काम करते हैं उस से कोई मंतव्य पूरा नहीं होता।

नागरिक क्षेत्र स्वयं समाचारपत्रों में विज्ञापन दे कर भरती करता है, क्योंकि रोजगार दफ्तर द्वारा भेजे हुए व्यक्ति अधिकांश में अनुपयुक्त होते हैं।

जहां तक सरकारी क्षेत्र का प्रश्न है, नाममात्र या खानापूरी के लिए वहां नौकरी की यह शर्त अवश्य रहती है कि नौकरी पर लिए जाने वाले व्यक्ति का नाम रोजगार दफ्तर में चढ़ा हो, पर यहां जिसे नौकरी देनी होती है उस का नाम चढ़वा दिया जाता है और उसे नौकरी मिल जाती है।

फिर ये दफ्तर बेरोजगारी का गलत अंदाजा देते हैं। अधिकांश व्यक्ति कहीं न कहीं नौकरी करते हुए भी अपना नाम यहां लिखा देते हैं ताकि उन्हें आगे चल कर सरकारी नौकरी में घुसने में बाधा न हो, पर जब उन्हें अन्य कहीं नौकरी के लिए बुलाया जाता है तो आते ही नहीं।

रोजगार दफ्तर के अनुसार देश में एक लाख से अधिक डाक्टर व इंजीनियर बेकार हैं, पर यदि यह सच होता तो मेडिकल व इंजीनियरिंग कालिजों में प्रवेश लेने के लिए इतनी मारामारी नहीं होती।

दूसरी ओर जो वास्तव में बेकार हैं उन में से सभी रोजगार दफ्तर में नाम दर्ज नहीं करा पाते, क्योंकि यहां नाम दर्ज कराने के लिए और अपना नाम आगे भिजवाने के लिए अमले को रिश्वत देनी होती है।

इन दफ्तरों को हटा कर कई सौ करोड़ रुपए वार्षिक का खर्च कम किया जा सकता है और जनता पर टैक्स कम किए जा सकते हैं जिस से वास्तविक उत्पादन करने वाले को अधिक रोजगार मिल सके। इस समय तो यहां का खर्च जनता पर एक बेकार का बोझ है।

अब जब हर सरकारी महकमा खुली प्रतियोगिता व परीक्षा के द्वारा भरती करता है और ये परीक्षाएं व प्रतियोगिताएं सभी के लिए खुली हैं, तब ये रोजगार दफ्तर और भी बेकार का बोझ साबित हाते जा रहे हैं।

सरकारी कोयला उद्योग की दुर्दशा

कोयले का उत्पादन आजकल सरकारी एकाधिकार में है। देश का सारा कोयला भारत सरकार की कोल इंडिया लिमिटेड की पांच सहायक कंपनियों तथा सिगरेनी कोलियरीज कंपनी द्वारा निकाला जाता है। कोयला निकाले जाने और बेचने के इस तौर-तरीके के बारे में रोज आलोचना होती है, किस प्रकार कोयला क्षेत्र में सरकारी अमले की मिलीभगत से गुंडों के सरदार राज करते हैं और कोयले की चोरी करते हैं।

पर क्योंकि कामकाज सरकारी है, इसलिए जनता की, कोयला इस्तेमाल करने वालों की, कुछ चलती नहीं। कुछ देशभक्त अफसर यदि स्थिति को सुधारना भी चाहते हैं तो गुंडों के सरदार, राजनीतिबाज और अन्य सरकारी अफसर उन के प्रयत्नों पर पानी फेर देते हैं और वे बेचारे अपना सा मुंह ले कर बैठ जाते हैं—उन का तबादला तो निश्चित ही होता है।

जब कोयला खानों पर जबरन सरकारी कब्जा किया गया था तो कहा गया था कि इस से उपभोक्ता को कोयला सस्ते दाम पर मिलेगा, खान मजदूर शोषण से मुक्ति पाएगा, सरकारी खजाना आमदनी से भर जाएगा।

पर इन 20 वर्षों में सरकारी कब्जे से ऐसा कुछ नहीं हुआ। मजदूरों की स्थिति पहले जैसी ही दयनीय है। सरकारी खजाने भरने की बजाए सैकड़ों करोड़ रुपए का नुकसान हो रहा है। उपभोक्ता को तो कोयला मिलता ही नहीं, मिलता है तो ढेर से और लगातार बढ़ते हुए मूल्यों पर।

देश के हजारों कारखाने, बिजलीघर (वे सब सरकारी हैं) कोयले की कमी और क्वालिटी निकृष्ट होने के कारण बहुत बड़ा घाटा उठाते हैं और बंद हो जाते हैं।

पिछले महीने खान मजदूरों की वेतन वृद्धि की गई है, जिस के कारण कोयला

उत्पादन का खर्च लगभग 200 करोड़ रुपए बढ़ गया है। यह रुपया और इस पर सरकारी खर्च, कुल मिला कर लगभग 400 करोड़ रुपए का भार जनसाधारण पर ही पड़ेगा, हर चीज और सेवा का मूल्य बढ़ेगा, क्योंकि कोयला ऊर्जा के रूप में हर वस्तु और सेवा में लगता है।

बम विस्फोट की राजनीति

बर्मा की राजधानी रंगून में 9 अक्तूबर को एक बम फटा और उस में दक्षिण कोरिया के चार मंत्री मारे गए और राष्ट्रपति चुन हवान बालबाल बच गए।

अब बर्मा सरकार ने इस विस्फोट के जांच करने के बाद पता लगाया है कि विस्फोट उत्तर कोरिया सरकार की दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति और मंत्रिमंडल के सदस्यों को एक ही बार में मार डालने की साजिश थी। ये लोग यदि मर जाते तो दक्षिण कोरिया लगभग तब विहीन हो जाता और उत्तरी कोरिया दक्षिण कोरिया पर अपना आक्रमण कर के उस पर कब्जा कर सकता था, जिस की धमकी बम पिछले वर्षों से दे रहा है। उत्तर कोरिया के राजमर्म के साबित होने से बर्मा ने उत्तर कोरिया से अपने दौत्य संबंध तोड़ लिए हैं और उस देश रंगून स्थित दूतावास को बंद करने के आदेश दे दिए हैं।

इस सिलसिले में यह याद रखने की बात है कि 25 जून 1950 को कम्युनिस्ट उत्तर कोरिया ने दक्षिण कोरिया पर आक्रमण कर दिया था। इसे संयुक्त राष्ट्र संघ की फौजों ने जिन में अमरीकी सेना प्रमुख थी, विफल कर दिया था। तब से उत्तर कोरिया के कम्युनिस्ट शासक लगातार दक्षिण कोरिया पर कब्जा करने की योजनाएं बना रहे हैं, पर दक्षिण कोरिया में लगभग 50,000 अमरीकी सैनिक तैनात होने और आक्रमण की स्थिति में अमरीका द्वारा युद्ध में कूदने के वादे के कारण उत्तर कोरिया अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो पाया है।

उत्तर कोरिया की दक्षिण कोरिया

दिसंबर (प्रथम) 1950

समृद्धि से बहुत जलन है। वास्तव में जापान के बाद दक्षिण कोरिया ही दुनिया का दूसरा सबसे अधिक समृद्ध देश है। उद्योग व्यवसाय के हर क्षेत्र में वह अग्रणी है। कमीजों और टेलीविजन सेटों से लेकर बड़े विशाल समुद्री जहाजों तक के निर्माण में दक्षिण कोरिया अपना सिक्का बैठा चुका है। विश्व बैंक की 1979 की वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार 1977 में दक्षिण कोरिया की प्रति व्यक्ति वार्षिक आय 820 डालर थी, जब कि भारत की केवल 150 डालर थी। इसी से दक्षिण कोरिया की समृद्धि का अंदाजा लगाया जा सकता है।

जापान और दक्षिण कोरिया की समृद्धि का भेद यही है। इन देशों ने समाजवाद के चक्कर में न पड़ कर नागरिक क्षेत्र को बढ़ावा दिया, जिस से दिन दूना रात चौगुना उत्पादन हुआ। यहां की सरकारें बराबरी और शोषण समाप्ति के नाम पर उत्पादन बढ़ाने में रुकावटें नहीं डालतीं।

सिगरेट कंपनियों की चालें

ब्रिटेन में एक सर्वे के अनुसार यह अनुमान लगाया गया है कि हर वर्ष दो लाख व्यक्ति सिगरेट पीने से उत्पन्न कैंसर की बीमारी से समय से पूर्व मृत्यु के शिकार हो जाते हैं। भारत में इस प्रकार का कोई सर्वे नहीं किया गया है। इसलिए यह तो कहना मुशकिल है कि यहां सिगरेट द्वारा कितने व्यक्ति हर वर्ष बेमौत मरते हैं, पर सिगरेट से रुपए का नाश तो प्रत्यक्ष दिखाई ही देता है। फेफड़ों, जिगर का नाश भी अवश्यभावी है।

भारत सरकार ने यह अनिवार्य कर दिया है कि सिगरेट के हर पैकेट पर यह चेतावनी छपी जाए कि सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, परंतु न जाने क्यों अभी तक सिगरेट के प्रचार, प्रसार व विज्ञापनों पर पाबंदी नहीं लगाई है जिन से हर रोज नए सिगरेट पीने वाले बड़ी संख्या में पैदा किए जा रहे हैं।

सिगरेट कंपनियों की एक चाल तो बहुत मुखर है। वे प्रसिद्ध खिलाड़ियों और

सुंदर स्वस्थ युवकयुवतियों को सिगरेट पीते दिखाती हैं। आज के समय में जापान फिल्मों में साहस के काम करवाती हैं—ताकि नवयुवकों को लगे कि सिगरेट पीना बड़ी शानदार आदत है और लोगों को 'स्मार्ट' और स्वस्थ बनाती है।

इस के साथसाथ इन कंपनियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम भी अपनाने शुरू किए हैं जिस से इन का कला प्रेम और देशभक्ति भी जाहिर हो।

पर ये सब नए शिकार फांसने की चालें हैं। जितना लोग अपना गला, फेफड़ा फाड़ेंगे, उतना ही ये कंपनियां समृद्ध होंगी और इस लूट में से ये कंपनियां अगर कुछ रुपया सरकारी नेताओं और अधिकारियों को भी देती हों ताकि इन के प्रचारप्रसार पर पाबंदियां न लगाई जाएं तो कौन से आश्चर्य की बात होगी?

सरकारी संस्थानों की हानि

सरकारी संस्थानों में आज देश का 28,000 करोड़ रुपया लगा हुआ है। चूँकि यह रुपया पिछले दो दशकों से लग रहा है। इसलिए यदि इस का हिसाब आज के मूल्यों को देखते हुए लगाया जाए तो यह राशि इस से 15 से 20 गुना अधिक बैठेगी।

यदि इतना रुपया नागरिक क्षेत्र में लगा होता तो ये कंपनियां 28,000 करोड़ से अधिक का तो लाभ ही हर साल कमा रही होतीं। आम तौर पर भारतीय कंपनी अपनी पूंजी के आधे से लेकर बराबर तक का मुनाफा कमाती है तभी तो 65 से 70 प्रतिशत आयकर देने तथा 15 से 25 प्रतिशत तक लाभांश (डिवीडेंड) देने के बाद भी कंपनी के पास अपने काम के लिए शुद्ध मुनाफा बचता है। नागरिक क्षेत्र 28,000 करोड़ की पूंजी पर जो लाभ कमाता उस से केंद्र सरकार तो क्या समस्त राज्य सरकारों के खर्च भी बिना कोई अतिरिक्त कर लगाए चल जाते। इस का मतलब है आज के ही दामों पर सामान बिकता, आज जितना ही उत्पादन होता, पर न आयकर होता, न बिक्री कर।



तृतीय विश्व हिंदी सम्मेलन



लेख

ज्योतिर्मय

हिंदी को कैसा व्यक्तित्व मिला

"हिंदी एक व्यक्तित्वहीन भाषा थी. इंदिराजी ने हिंदी भाषा को व्यक्तित्व प्रदान किया है. यदि आप को हिंदी का व्यक्तित्व देखना है तो आप इंदिराजी को देखिए."

28 अक्टूबर को दिल्ली के इंदरप्रस्थ स्टेडियम में तृतीय विश्व हिंदी सम्मेलन के उद्घाटन समारोह में सम्मेलन की संगठन समिति के पदाधिकारी सुधाकर पांडेय ने ये शब्द कहे थे. इस भाषण से कुछ देर पहले ही प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने उद्घाटन भाषण किया था. इस चापलूसी भरे भाषण के समय वह भी वहीं मौजूद थीं और कुछ प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार सुधाकर पांडेय की यह घटिया चापलूसी सुनने हुए वह दंगल

रही थीं.

हो सकता है चापलूसी का यह घटिया दंग घटियापने के कारण आलोचना का विषय बना हो, क्योंकि सम्मेलन में शामिल हुए कुछ प्रतिनिधियों ने इस भाषण की आलोचना की बताते हैं, किंतु पूरा सम्मेलन क्या था? देढ़ साल पहले यह सम्मेलन दिसंबर 1982 में होना तय हुआ था. सम्मेलन का प्रचार होने लगा था. देशविदेश के प्रतिनिधियों को निमंत्रणपत्र भी भेज दिए गए थे. यह खबर भी आ गई थी कि विदेशी प्रतिनिधि सम्मेलन में आने की तैयारी कर रहे हैं, किंतु आयोजन का समय आने से कुछ दिन पहले ही सम्मेलन स्थगित हो गया.

अतीतिधियां मार्च 1983 में तय हुई

दिसंबर (प्रथम) 1983

हिंदी
तमा
बरब
गया.
हिंदी
तक

इस का
निमंत्रण
एक बार
सम्मेलन
दो
का कारण
के पास स
समय नही
के महास
अफवाह
प्रधान मं
भी हो स
के लिए
हिंदी के
है.

पुनता



हिंदी सम्मेलन नाम का तमाशा एक करोड़ रुपए की बरबादी के बाद खत्म हो गया. इस बेटुके खर्चे के बाद हिंदी का विकास किस सीमा तक पहुंचेगा?

इस का भी जोरशोर से प्रचार हुआ और निमंत्रणपत्र भेज दिए गए थे, किंतु तारीखें एक बार फिर बदलीं और तय हुआ कि अब सम्मेलन अक्तूबर के अंत में होगा.

दो बार सम्मेलन की तारीखें बदले जाने का कारण यह बताया गया था कि प्रधान मंत्री के पास सम्मेलन का उद्घाटन करने के लिए समय नहीं था. सम्मेलन की राष्ट्रीय समिति के महासचिव शंकर राव लोंढे ने इस बात को अफवाह बताया है कि सम्मेलन की तारीखें प्रधान मंत्री के कारण बदली गई हैं. यह सच भी हो सकता है, क्योंकि श्रीमती इंदिरा गांधी के लिए करोड़ों लोगों की भावना से जुड़ी हुई हिंदी के लिए समय निकाल पाना कठिन नहीं है.

पुस्तक

हिंदी बहुसंख्यक लोगों की भाषा है. ज्यादातर लोग यही भाषा बोलते हैं और हिंदुओं का तो इस भाषा से सगेपन जैसा भावनात्मक रिश्ता है. हिंदुओं की धार्मिक और सांस्कृतिक भावनाएं सहलाने के लिए श्रीमती इंदिरा गांधी अपने व्यस्त कार्यक्रमों के दौरान भी समय निकाल लेती हैं और मंदिरों, तीर्थों व धर्मगुरुओं के पास हो आती हैं तो हिंदी सम्मेलन जैसे आयोजन के लिए उन के पास समय न होने की बात कहना गलत ही होगा.

इतना जरूर कहा जा सकता है कि उपयुक्त समय यही था, दिसंबर 1982 में एशियाई खेलों के कारण और मार्च 1983 में गुट निरपेक्ष देशों के सम्मेलन के कारण सम्मेलन का प्रचार इस एकाग्रता के साथ न हो पाता. उन दिनों रेडियो, दूरदर्शन और अखबार एशियाई खेल व गुट निरपेक्ष देशों के सम्मेलन पर ज्यादा केंद्रित थे. उस शोर में हिंदी सम्मेलन के समाचार और समीक्षाएं नक्कारपाने में तूती की आवाज ही सिद्ध होतीं.

हिंदी को अंतरराष्ट्रीय भाषा बनाने, उसे संयुक्त राष्ट्रसंघ में मान्यता दिलाने और एक विश्व विद्यापीठ स्थापित करने के प्रस्ताव 1975 तथा 1976 के विश्व हिंदी

मधुकर राव चौधरी : निजी स्वार्थों के लिए सम्मेलन का सहारा.





सुधाकर पांडेय: हिंदी के कितने शुभचिंतक?

सम्मेलनों में भी पारित हुए थे. यही प्रस्ताव तृतीय विश्व हिंदी सम्मेलन में भी पारित हुए हैं. इन प्रस्तावों के आधार पर सम्मेलन की उपलब्धियों को आंकना निरर्थक ही होगा. ये प्रस्ताव पारित कर लेने से हिंदी के विकास में कितना सहयोग मिलेगा यह तो सम्मेलन की उपलब्धियों का स्वर्ण लेखाजोखा लेने वाले ही जानें. आश्चर्य की बात तो यह है कि सम्मेलन की आलोचना करने वाले लोग भी एक प्रकट सच को अनदेखा कर रहे हैं.

जिस बात को ले कर आयोजकों की आलोचना की जा रही है वह अव्यवस्था तक ही सीमित है. प्रतिनिधियों को ढंग से नहीं ठहराया गया था. विदेशी प्रतिनिधि जनपथ होटल, लोधी होटल और अशोक यात्री निवास में ठहराए गए, जब कि भारतीय प्रतिनिधियों को रामकृष्ण आश्रम मार्ग और पुष्प विहार में ठहराया गया.

भारतीय प्रतिनिधियों को जहां ठहराया गया वहां पर्याप्त विस्तर नहीं थे. लोग भेड़-बकरियों की तरह ठूसठूस कर भरे गए.

पीने का पानी भी आसानी से नहीं मिलता था. लाइन में धक्कामुक्की हो रही थी. आयोजक स्थल पर कार्यक्रमों के बारे में सूचना देने कोई व्यवस्था नहीं थी. लोग कार्यक्रमों के बारे में जानने के लिए यहां से वहां धक्का खा रहे थे.

इस अव्यवस्था को कोसने के अलावा जिस बात की और आलोचना की जा रही है वह यह कि भारतीय प्रतिनिधियों को विदेशी प्रतिनिधियों से मिलने नहीं दिया गया. गोष्ठियों में बोलने का मौका प्रत्येक व्यक्ति को नहीं मिला. 30 अक्तूबर को सम्मेलन का भाग ले रहे साहित्यकार उपेन्द्रनाथ 'बारा' मंच पर ही रो पड़े. बात इतनी सी हुई थी कि उस दिन खुले अधिवेशन में मंच संचालक उन्हें बोलने की अनुमति नहीं दी. यह प्रतिनिधि अव्यवस्था और सभी को बोलने का मौका न दिए जाने के कारण इतने रुष्ट हुए कि उन्होंने कार्यकारी अध्यक्ष मधुकर चौधरी का बहिष्कार किया. इन प्रतिनिधियों ने वहीं एक और समानान्तर सम्मेलन किया और अपनी खीज उतारी.

सम्मेलन का औचित्य

दूसरे कई प्रतिनिधियों को शिकायतें मिलीं कि उन्हें विदेशी प्रतिनिधियों से मिलने नहीं दिया गया. इस तरह की अव्यवस्था को समर्थन नहीं किया जा सकता. सभी लोगों को बोलने का मौका नहीं मिला. इस के कारण हो सकते हैं. ये कारण अनुचित नहीं हो सकते हैं, किंतु अव्यवस्था और भेदभाव सम्मेलन का एकमात्र अंधेरा पहलू नहीं है.

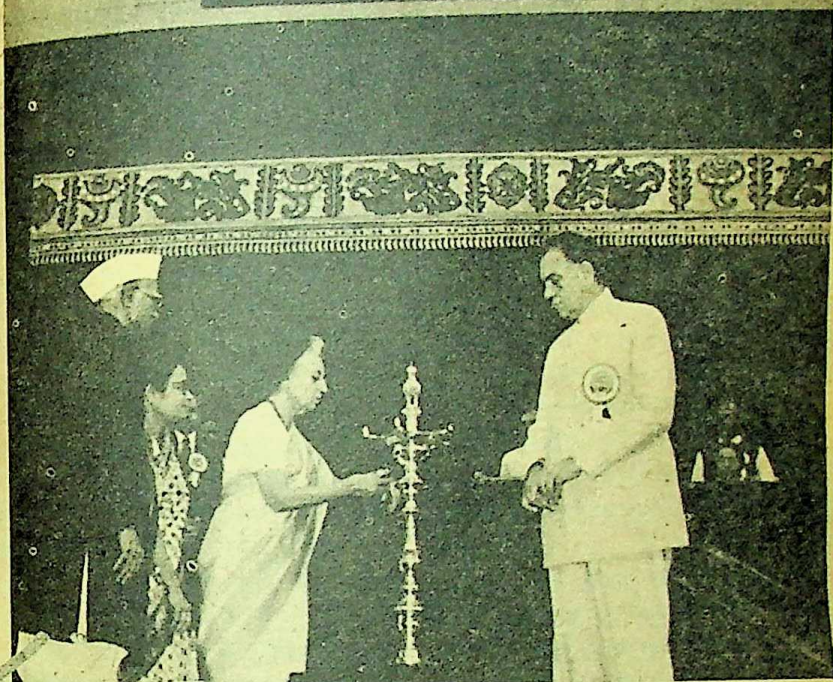
सम्मेलन में अव्यवस्था की इस बात की आलोचना का मुद्दा बनाया जा सकता है, कि इस से भी बड़ी बात यह है कि एक कार्यक्रम के रूप से भी ज्यादा खर्च हुए इस सम्मेलन का असली उद्देश्य क्या था? क्या वास्तव में हिंदी का विकास करने के लिए आयोजित हुआ था यदि हां तो यह अपने उद्देश्य कितना सफल रहा?

पहला विश्व हिंदी सम्मेलन सन 1925

दिसंबर (प्रथम)

28-30 अक्टूबर 1983

नई दिल्ली भारत



विश्व हिंदी सम्मेलन का श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा उद्घाटन यानी 'शुरुआत एक तमाशे की।

में हुआ था। इस के लिए राष्ट्रभाषा प्रचार समिति से सरकारी अनुदान मिला था। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि प्रकट तौर पर राष्ट्रभाषा प्रचार समिति द्वारा आयोजित दिखाई देते हुए भी इस की बागडोर सरकार के हाथ में ही थी। सम्मेलन की राष्ट्रीय समिति में प्रधान मंत्री सहित कई केंद्रीय मंत्री, राज्यों के मुख्य मंत्री, सांसद, विश्वविद्यालयों के उपकुलपति और लेखक आदि होते हैं।

विज्ञापन, दान और सदस्यता शुल्क से सम्मेलन के बजट की पूर्ति नाममात्र की ही होती है। बाकी धन तो सरकारी सहयोग से ही मिलता है। इस उद्घाटन में उपस्थित हैं कि

सम्मेलन की बागडोर प्रकट रूप से भी उन्हीं के हाथ होगी। जिन लोगों के हाथ में सम्मेलन की बागडोर होगी वे जाहिर हैं कि सरकार के ज्यादा निकट होंगे। यह निकटता सिद्ध करने—सम्मेलन पर प्रभुत्व जमाने के लिए डेढ़ साल पहले से ही होड़ मच गई थी। इस होड़ में महाराष्ट्र के भूतपूर्व वित्त मंत्री मधुकर राव चौधरी और राष्ट्र भाषा प्रचार समिति के सदस्य शंकरराव लोंढे के हाथ बाजी रही।

सम्मेलन के लिए केंद्र सरकार के अलावा विभिन्न राज्य सरकारों ने भी अनुदान दिया था। पर्यटन विकास निगम, एअर इंडिया और इंडियन एयर लाइंस ने

प्रतिनिधियों के लिए सुविधाएं उपलब्ध कराईं. दृश्य एवं श्रवण प्रसारण निदेशालय (डी.ए.वी.पी.) ने सम्मेलन की प्रचार सामग्री छपवाई और प्रकाशित की थी. दिल्ली प्रशासन, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, दूरदर्शन, फिल्म डिवीजन से भी प्रचार में सहायता मिल रही थी. दिल्ली के विट्ठल भाई पटेल भवन में पिछले डेढ़ साल से हिंदी सम्मेलन का कार्यालय चल रहा है. वहां प्रतिनिधियों को बुलाने और आयोजन की व्यवस्था का काम निबटाया जा रहा था.

आयोजकों का रुख

ये सारी बातें समाचारपत्रों और पत्रिकाओं में कईकई बार छप चुकी हैं. इन्हें पढ़ कर कई लोगों ने यह समझा हो कि हिंदी सम्मेलन के रूप में सरकारी भोज हो रहा है तो कोई आश्चर्य नहीं है. सम्मेलन में आ कर वैसी अपेक्षाएं पूरी होती नहीं दिखाई दीं तो खीज होना स्वाभाविक ही है. वैसे प्रचार माध्यमों द्वारा हिंदी सम्मेलन सरकारी उत्सव जरूर सिद्ध हो गया है.

आयोजकों का ध्यान सम्मेलन की व्यवस्था और कार्यक्रमों के सुचारु संचालन से ज्यादा कार्यक्रम में मंच पर दिखाई देने पर ज्यादा रहा. प्रत्येक कार्यक्रम में तो ऐसा नहीं हुआ, लेकिन पहले दिन उद्घाटन करने के लिए जब श्रीमती इंदिरा गांधी आईं तो हर कोई उन के इर्दगिर्द ही दिखाई देते रहने में व्यस्त था. 28 अक्तूबर को सुबह श्रीमती इंदिरा गांधी जब उद्घाटन करने पहुंचीं तो आयोजक 'जय हिंदी जय नागरी' का नारा लगाने के साथसाथ श्रीमती इंदिरा गांधी की जयकार भी कर रहे थे. उन के आने से पहले एक आयोजक ने प्रधान मंत्री के शीघ्र पहुंचने की सूचना बारबार माइक पर दोहराई. बारबार इस तरह की सूचना दिए जाते देख कर ऐसा लग रहा था जैसे आयोजन हिंदी सम्मेलन का नहीं प्रधान मंत्री की सभा का हो रहा है.

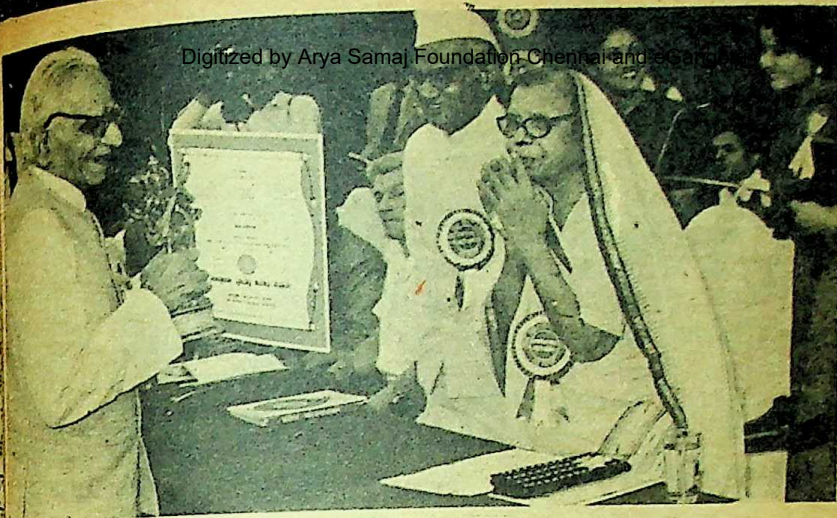
सम्मेलन के कुछ आयोजक प्रधान मंत्री के साथ ही दिखाई दिए. इस के बाद पूरे

समारोह में वे दोबारा कहीं नहीं आए. समापन हो रहा था तब वे फिर दिखाई दिए. उन की उपस्थिति प्रधान मंत्री की अगुआई और कार्यक्रम की समाप्ति में ही तो सम्मेलन वास्तव में इस से ज्यादा कुछ था नहीं.

कहने को सम्मेलन में 17 गोष्ठियां नृत्य, नाटक और कवि सम्मेलन भी हुआ. गोष्ठियों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों आयोजकों को कोई विशेष दिलचस्पी नहीं रही. फिर भी गोष्ठियों में बोलने और बोलने देने की बात पर नाराजगी व्यक्त होती रही. जिन्हें बोलने का मौका मिला, उनके लिए यह मौका संतोष का विषय था. विदेशी प्रतिनिधियों के सामने उन्होंने अपने विद्वत्ता का परिचय दिया. जिन्हें बोलने का मौका नहीं मिला वे प्रतिनिधि इस बात पर नाराज थे. महाराष्ट्र से आए एक प्रतिनिधि हर कहीं यह शिकायत करते घूम रहे थे कि मेरी 40 कविताएं आकाशवाणी से प्रसारित हो चुकी हैं, फिर भी मुझे कवि सम्मेलन का मौका नहीं दिया गया.

गोष्ठियों के बारे में कहा जा रहा है कि आम प्रतिनिधि भी इन में कोई सींच नहीं रहे थे. प्रतिनिधि गोष्ठियों में शामिल होने के स्थान पर दिल्ली घूमने में ज्यादा व्यस्त उल्लेखनीय है कि आयोजकों ने सम्मेलन तीनों दिनों प्रतिनिधियों को दिल्ली घूमने की व्यवस्था की थी. शायद उन्हें पहले से अंदाजा था कि गोष्ठी वगैरह में दिलचस्पी लेने वाले लोग कम ही आएंगे. ज्यादातर तो सरकार खर्च पर दिल्ली आए पर्यटक ही होंगे.

सम्मेलन खैर हो चुका है. इस से हिंदी के विकास में कोई मदद नहीं मिलनी है. सोचा भी नहीं गया था. अलबत्ता इतना जरूर हुआ है कि सम्मेलन के माध्यम से हिंदी मंच पर नए राजनीतिक समीकरण बने. पहले ऐसा समझा जाता था कि इस मंच पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का प्रभाव ज्यादा था. पहले हिंदी सम्मेलन के आयोजक अनेक गोष्ठियों के माध्यम से राष्ट्रीय स्वयंसेवक



महादेवी वर्मा द्वारा जैनेन्द्रकुमार का सम्मान.

संघ का वर्चस्व था. अब समीकरण बदल से गए हैं और मधुकर राव चौधरी हिंदी के मंच पर इंदिरा कांग्रेस के प्रतिनिधि की भूमिका निभा रहे हैं. वह महाराष्ट्र के मंत्री रह चुके हैं. सम्मेलन के माध्यम से श्रीमती इंदिरा गांधी की निगाह में आने की मंशा कोई बहुत बड़ी महत्वाकांक्षा भले न व्यक्त करे, किंतु इतना अस्त तो कर ही सकती है कि वह हिंदी के नेता के रूप में उभर आएँ.

अपने अपने स्वार्थ

अभी तक इंदिरा कांग्रेस में हिंदी का प्रतिनिधित्व करने के लिए पंडित कमलापति त्रिपाठी की ओर देखा जाता था. किंतु विश्व हिंदी सम्मेलन में उन्हें आमंत्रित ही नहीं किया गया. इस संदर्भ में एक प्रतिनिधि का, जो इस सम्मेलन की अव्यवस्था से तो खीजे हुए थे ही, इसे एक राजनीतिक तमाशा भी मान रहे थे, कहना है कि त्रिपाठीजी हिंदी का मठ इंदिरा कांग्रेस की जागीर में ला पाने के लिए उतने सशम साबित नहीं हो सकते थे, जितना यह आयोजक मंडली साबित हो सकती है. फिर उन्हें बुलाया जाता तो मंच पर मौजूद सारे हिंदी सेवी उन के आगे फीके पड़ जाते.

यह तो सही है कि पंडित कमलापति

त्रिपाठी को निर्मात्रित किया जाता तो बाकी आयोजक इंदिरा कांग्रेस और हिंदी के संयुक्त मंच पर उन के सामने बौने ही साबित होते. इस से हिंदी के मठ में नए महंतों को भी प्रोत्साहन नहीं मिलता. दूसरे वे तो यों भी हिंदी ही क्या हर उपलब्धि का श्रेय इंदिराजी को देते रहेंगे.

अब चर्चा है कि वर्धा में हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना कब तक होती है. जल्दी होनी चाहिए, इस बात पर भी जोर दिया जा रहा है. विश्व विद्यापीठ की स्थापना होगी या नहीं होगी, होगी तो कब तक होगी, इन प्रश्नों का उत्तर अभी भविष्य के गर्भ में है.

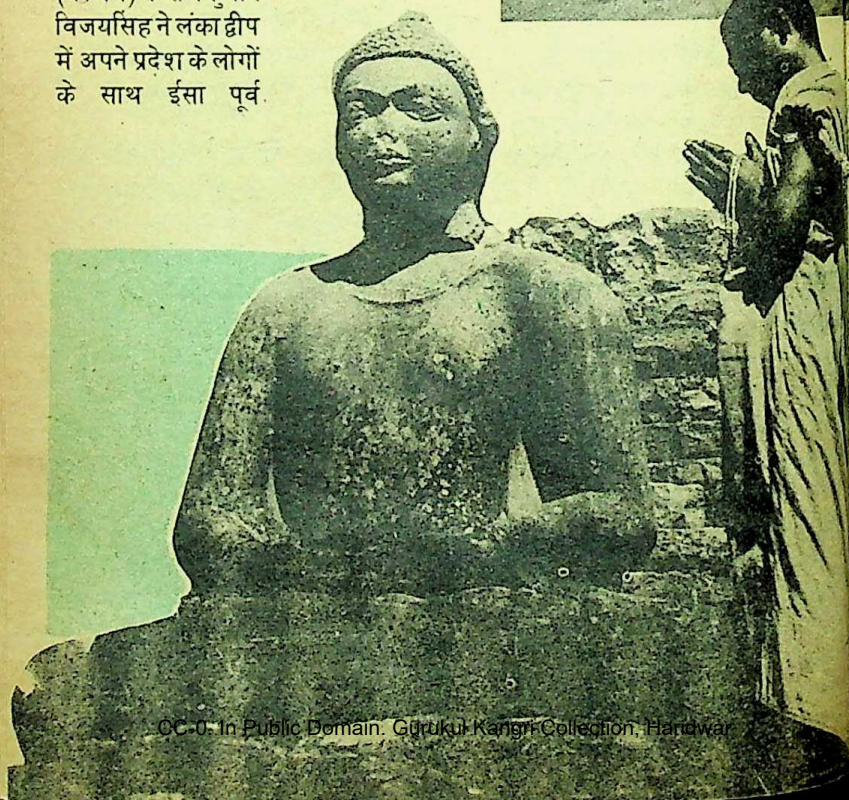
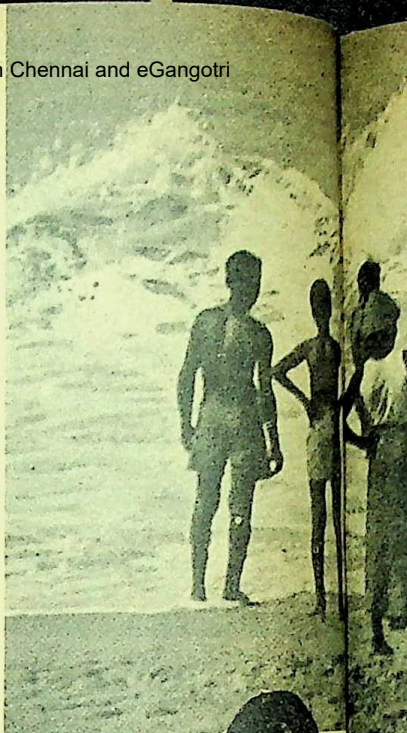
हो सकता है विद्यापीठ की स्थापना बहुत जल्दी हो जाए, क्योंकि हिंदी से जुड़ी भावनाओं को श्रीमती इंदिरा गांधी के इर्दगिर्द समेट लेना इन दिनों बहुत जरूरी है. हिंदी, हिंदू और हिंदुस्तान की एकमात्र प्रतीक इंदिराजी ही सिद्ध की जानी हैं तो इस के लिए उपयोगी होने की दृष्टि से हो सकता है बहुत जल्दी विद्यापीठ खुल जाए. नहीं खुले तो भी हिंदी को श्रीमती इंदिरा गांधी का व्यक्तित्व तो मिल ही गया है. जब एक व्यक्तित्व है ही तो हिंदी के विकास की क्या जरूरत है? •

श्रीलंका की समस्या का मूल कारण

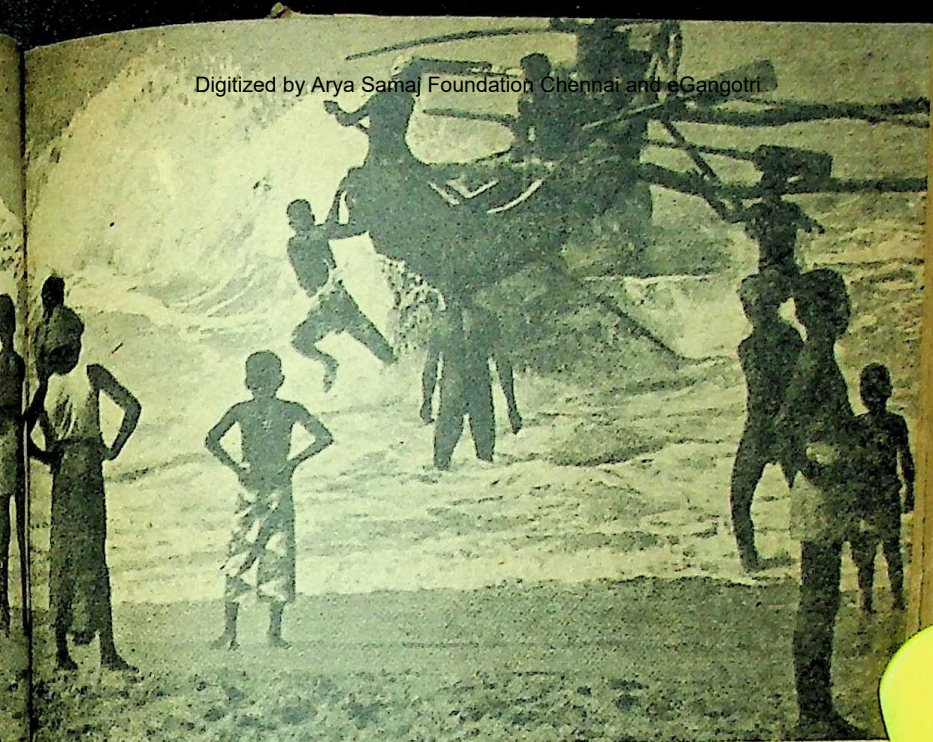
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ड० ब्रह्मदत्त स्नातक

तमिल एवं सिंहली वर्गों के बीच न केवल इतनी निकटता है कि दोनों का विकास एक ही देश भारत से हुआ, अपितु सिंहली बौद्धों की पुण्यभूमि और पितृभूमि भी भारत ही रहा है। आज राजनीतिक चेतना के कारण सिंहली भारत को भले ही पितृभूमि न माने, परंतु इतिहास साक्षी है कि उत्कल (कलिंग) के राजकुमार विजयसिंह ने लंका द्वीप में अपने प्रदेश के लोगों के साथ ईसा पूर्व



543 में ई
नाम पर
(अंगरेजी
सं
के लिए
1948 क
का महा
रख लिय
या भाषा
इस शाव
विदेशी
राजनीति
श्रीलंका
नाम व
श्री
निवासी
आब्रजव
उन का
लगभग
हैं। ईसा
के पुत्र
महता



543 में इसे आबाद किया था. विजयासह के नाम पर ही उस देश का नाम सिंहल द्वीप (अंगरेजी में सीलोन) पड़ा.

संभवतया भारतीय पहचान को मिटाने के लिए ही वहां के निवासियों ने 4 फरवरी, 1948 को स्वाधीनता पाने के बाद अपने देश का महाभारतकालीन प्राचीन नाम श्रीलंका रख लिया है, परंतु स्वयं को वे अब भी सिंहली या भाषा को भी सिंहली ही कहते हैं, क्योंकि इस शब्द के पीछे उन को अब हीनता या विदेशी भारतवासियों से पराजय (या राजनीतिक हानि?) की गंध आती है, अतः श्रीलंकावासी वहां व 'तागरिकता व भाषा के नाम बदल रहे हैं.

श्रीलंका में सिंहलियों से पूर्व मूल निवासी वेड्डा कहलाते हैं. भारतीय शासकों के नेता राजकुमार विजयसिंह ने उन का विनाश कर दिया. फिर भी 500 के लगभग ये मूल निवासी अब भी वहां पाए जाते हैं. इसा पूर्व तीसरी शताब्दी में सम्राट अशोक के पुत्र मिश्र महेंद्र (सिंहली में उन का नाम

श्रीलंका में सिंहलियों और तमिलों के बीच दंगों के रूप में प्रस्फुटित हुए पारस्परिक विद्वेष का कारण आर्थिक ही नहीं है, इस के कुछ ऐतिहासिक कारण भी हैं...

थेरा महिंद्रा है) ने इस द्वीप में आ कर सारी प्रजा एवं राज को बौद्ध धर्म में दीक्षित कर दिया. कांडी में तथागत बुद्ध के दंतावशेष उसी काल में स्थापित किए, जो कुछ शताब्दी पूर्व तक वहां की राजधानी रही है.

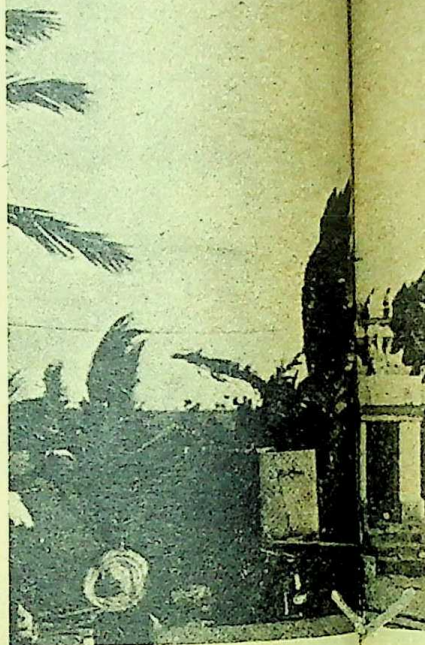
तमिलनाडु के समस्त राजनीतिक दल एवं सांस्कृतिक संगठन उत्तर भारत द्वारा दक्षिण पर आर्थिक, सांस्कृतिक व सैनिक आक्रमण की शिकायत करते हैं. अपने भूखंड को वे वेड्डा संस्कृति से जोड़ते हैं, जिस का

एक महत्त्वपूर्ण केंद्र उन के मत से श्रीलंका भी रहा है। Digitized by Anva Samaj Foundation Chennai and eGangotri
 रावण एवं उस के वंशज तथा उस से भी पूर्व के लोग उन के मत से वर्तमान द्रविड़ संस्कृति के पक्षधर थे। महाभारत अथवा रामायण को वे उत्तर द्वारा दक्षिण पथ की पराजय का महाकाव्य बताते हैं।

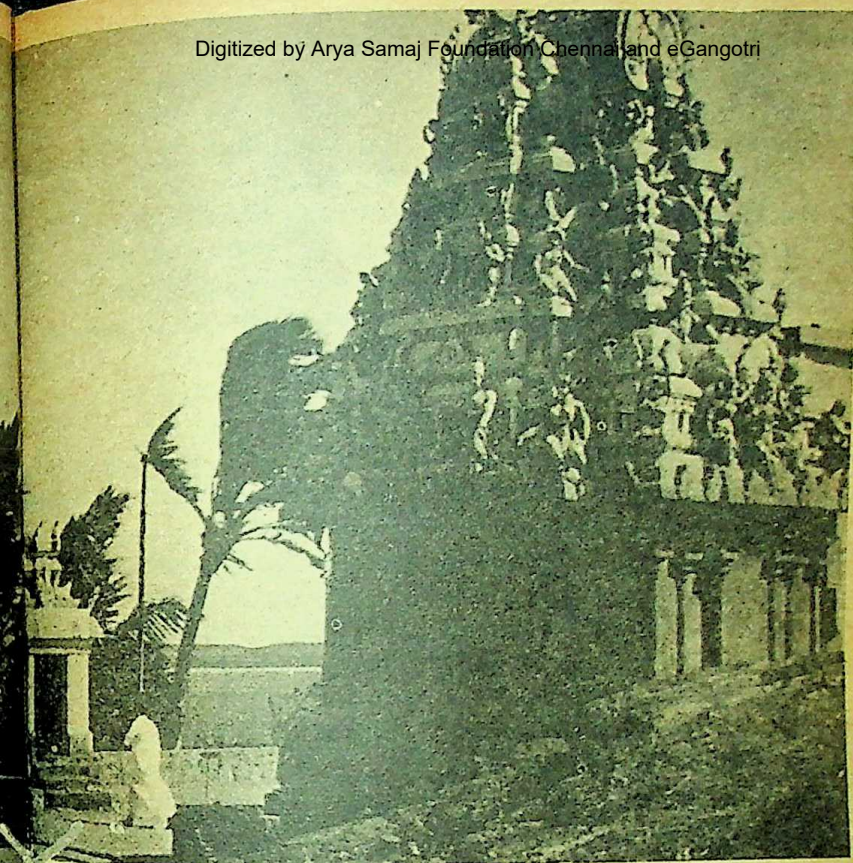
संघर्ष की वजह

श्रीलंका के संघर्ष में जो बात दबी जवान से कही जा रही है, वह वस्तुतः आयों एवं द्रविड़ों और दक्षिण व उत्तर के बीच का संघर्ष है। अंगरेजी के एक दैनिक (टाइम्स आफ इंडिया) में एक दक्षिण भारतीय पाठक ने यह बात खुल कर कह दी कि श्रीलंका के सिंहली आर्य जाति के हैं और वे उत्तरी भारत

स्वामी राक का मंदिर: बौद्ध धर्म को हिंदू धर्म का अंग मानते हुए भी श्रीलंका में बौद्ध सिंहलियों व हिंदू तमिलों के पूजा स्थल अलगअलग हैं (दाएं) व श्रीलंका के राष्ट्रपति जयवर्धने (नीचे)।



से वहां पहुंचे। वे अपने आप को तमिलों के श्रेष्ठ मानते हैं, जब कि श्रीलंका (एवं भारत) में तमिल भाषा एवं संस्कृति का वर्चस्व जयवर्धन की आगमन से पूर्व से बना रहा है।
 रावण को वे द्रविड़ संस्कृति का जयवर्धन नक्षत्र मानते हैं और स्वयं को उस का वंशज (यद्यपि आर्य संस्कृति को वर्णव्यवस्था अंतर्गत रावण ब्राह्मण कहा जाता है) मानते हैं। पूजा एवं रामलीला को इसी लिए तमिलनाडु की द्रविड़ संस्कृति के पक्षधर मानते हैं। संसद में श्रीलंका हत्याकांड में वहां के राष्ट्रपति जयवर्धने का उस नृपति हत्याकांड में हाथ होने के कारण रावण से तुलना द्रविड़ राजनीतिक पक्षधरों ने की थी और इस प्रश्न पर एक द्रविड़ राजनीतिक दल के सदस्य ने युक्तिपूर्ण



आपत्ति की थी.

वस्तुतः श्रीलंका के मूल निवासी द्रविड़ नहीं, सिंहली नहीं अपितु वेड्डा लोग रहे हैं. विशेष लोग भारत से वहां पहुंचे हैं. वेड्डा जाति की निकासी भी प्रारंभ से हुई हो, यह भी एक बात तथा संभावना है.

अफ्रीका के पूर्वी तट और विशेषतः तंजानिया, जिबाब्वे के प्रदेशों से निकल कर समुद्री नौकाओं में बैठ कर अश्वेत लोग अफ्रीका से हिंद महासागर की ओर बढ़े और धीरे-धीरे बढ़ते हुए वे लोग प्रशांत महासागर के द्वीपों की ओर चलते गए. इस के कारण अब धीरे-धीरे उपलब्ध होते जा रहे हैं. श्रीलंका के वेड्डा, आस्ट्रेलिया के माउरी, मलयेशिया और इंडोनेशिया के मेलानेशियन जनों के लोग समस्त प्रशांत-पश्चिमी द्वीपों, फीजी,

वनुआतू आदि देशों में पाए जाते हैं. फीजी में इन को काईवीती नाम से पुकारा जाता है और भारतीय मूल के गिरमिटियों के वंशजों से उन की संख्या वहां पर आधे से कुछ ही कम (44 प्रतिशत) है.

प्रमाणों के अनुसार

हमें इस बात के प्रमाण बहुतायत से मिलते हैं कि इन मूल अफ्रीकियों के साथ या बाद में दक्षिण भारत के निवासी भी अपनी व्यापारिक अथवा साहसिक यात्राओं में फीजी जैसे द्वीप समूहों में पहुंचे होंगे. दक्षिण भारत में जिस प्रकार मुखिया क्षत्रियों को राजू कहा जाता है, फीजी में उन के लिए शब्द राजू आता है. इसी प्रकार प्राप्त विवरणों के अनुसार फीजी द्वीप समूह की मूल पर मानव

समूह के प्रथम चरण रामारामा नामक जहाज से उतरने के बाद अफ्रीका की पहाड़ी पर रामा शब्द (दीर्घ अकारांत 'रामा' तमिल में भी इसी प्रकार उच्चारण किया जाता है) का अर्थ सूर्य है। इन पंक्तियों के लेखक को इस संबंध में फीजी जाने पर पुष्ट प्रमाण मिले हैं।

वस्तुतः श्रीलंका अतीत में बौद्ध एवं तमिल संस्कृतियों के प्रसार का आधार केंद्र बना था। तब बर्मा से फिलिपीन, जापान और चीन तक बौद्ध संस्कृति का फैलाव हुआ था। उधर तमिल संस्कृति, थाईलैंड, मलेशिया, आस्ट्रेलिया एवं प्रशांत के फीजी जैसे द्वीपों में भी फैली थी। एक अन्य खोज के अनुसार अफ्रीका महाद्वीप की प्रशांत के क्षेत्रों से भूखंडीय निकटता भारत के दक्षिणपश्चिमी क्षेत्रों के माध्यम से थी। कहा तो यहां तक जाता है कि काठियावाड़ के गीर क्षेत्र के जंगलों में पाए जाने वाले सिंह एवं वहां के निवासियों की निकासी अफ्रीका से ही हुई है। अभी इस संबंध में प्रमाण और भी मिले रहे हैं।

सिंहल द्वीप पर ईसा की पहली शती से लगा कर दक्षिण भारत की ओर से एक के बाद एक आक्रमण होने शुरू हुए। इस में तमिल और मलयाली भाषी दोनों प्रकार के वर्ग थे। प्रतापी चोल और पांड्य शासकों की तूती पूरे हिंद महासागर पर उन दिनों बोलती थी। उन की विजय आर्थिक, सैनिक और सांस्कृतिक तीनों प्रकार की थी। 10वीं शताब्दी में राजेंद्र चोल ने एक के बाद एक आक्रमण कर के सिंहली लोगों को द्वीप के भीतरी भागों में ढकेल दिया और उस के उत्तरी और पूर्वी भाग में तमिल बसते चले गए।

विद्वेष की भावना

सिंहली शासकों एवं प्रजा के साथ उन के पूजा स्थानों का ज्वे संहार, विनाश तमिलों द्वारा उन दिनों हुआ, उस को अनुश्रुति के माध्यम से याद कर के सिंहली लोगों का तमिलों के विरुद्ध मन विद्वेष एवं वितृष्णा से उसी प्रकार भर गया है जैसा कि उत्तरी भारत के पुस्तकालयों एवं पूजास्थानों को विनष्ट कर देने के कारण हिंदुओं का मुसलमान

शासकों के प्रति बन गया है। यों तो श्रीलंका की उत्कृष्टता के कारण भी सिंहलियों में तब से कुछकुछ शत्रुता का भाव फैल गया। यद्यपि इस दूरी को दूर करने के बीचबीच में अनेक प्रयत्न किए गए तमिलबहुल श्रीलंका के उत्तरी और क्षेत्रों की तमिलनाडु से निकटता राजधानी कोलंबो से दूरी और तमिलबहुल श्रीलंका के दोनों वर्गों में पृथक्तावादी उभारा है। श्रीलंका की नागरिकता प्रायः लाख तमिल जनता अपनी पहचान बहुत भारत की भांति मुख्य राष्ट्रीय धारा से अलग को पृथक् रखने में सचेष्ट रही है। वर्तमान तनाव के बीच यह ऐतिहासिक पृष्ठभूमि महत्त्वपूर्ण कड़ी है।

हिंदू धर्म की व्यापकता को यदि देखा जाए तो भगवान के अवतारों में तमिलबोधिसत्त्व भी शामिल हैं। बौद्ध धर्म विशाल हिंदुत्व का अंग माना जाता है। श्रीलंका में तमिलवाद के कारण बौद्ध धर्म पिछली पृष्ठभूमि में हिंदुत्व से पृथक् माना रहा है। सिंहली लोगों द्वारा हिंदू मंदिरों के विध्वंस हाल में वहां की मुख्य उत्तेजक घटना है। वैसे दोनों वर्गों की पितृभूमि एवं पितृभूमि भारत होने से श्रीलंका को विशाल परिवार का अंग आज समझे जाने की अवसर उपयोगिता है। ईसाई मिशनरियों ने इन दोनों वर्गों को धर्म परिवर्तन कर के निकट लाया है। प्रयास किया है, परंतु फिर भी ईसाई मुसलिम तमिलभाषी अपने को सिंहली से अलग ही मानते हैं। क्रमशः जाफना बट्टी कलोन जिलों में तमिल ईसाई तमिल मुसलमानों की जनसंख्या प्रतिशत है।

16वीं शताब्दी में अंगरेजों के सिंहली द्वीप में आने के बाद वहां के आर्थिक विकास के लिए चाय तथा रबड़ के बागान बनाने के लिए वहां वर्तमान तमिलबहुल तिरुचिरापल्ली, सेलम और कोयंबटूर के बड़ी संख्या में मजदूर लाए गए। आज देश में ऐसे कामगारों की संख्या आठ

और उन की बड़ी संख्या राज्यविहीन श्रेणी में आती है। उत्तरी और पूर्वी क्षेत्रों के तमिलों को नागरिकता के अधिकार प्राप्त हैं। सिंहलियों ने बदले की भावना से तमिल अल्पसंख्यकों को मानव अधिकारों से वंचित रखा है। उत्तर भारत की दृष्टि से अमृतलिंगम और प्रेमदास जयवर्धने जैसे तमिल एवं सिंहली नाम निकटता का बोध कराते हैं।

भारतीय व्यवसायी वर्ग श्रीलंका से अपना कारोबार उठा चुका है, जब कि अनेक क्षेत्रों और व्यवसायों पर उन का एकाधिकार है। इस के अतिरिक्त अंगरेजों के शासनकाल में तमिल लोग ऊंचे पदों पर छाए थे। आज का सिंहली युवक यह बात मूलतः नहीं है। वर्तमान संघर्ष का बीज इन्हीं स्थितियों पर आधारित है, जिस की पुनरावृत्ति आधीनता के बाद श्रीलंका में अनेक बार

होती रही है। देखना यही है कि तमिलभाषी श्रीलंका की मुख्य जीवनधारा में कितने अंश में खप जाते हैं।

भारत भी इस संकट से अछूता नहीं है। पृथक्तावाद यहां भी सिर उठाता ही रहता है। श्रीलंका में तमिलों की जनसंख्या 1948 में 42 प्रतिशत थी, जो अब घटकर 22 प्रतिशत रह गई है। उन मे से अधिकांश या तो भारत लौट आए हैं अथवा यूरोप, अमरीका तथा हिंद महासागर एवं प्रशांत महासागर के देशों में चले गए हैं।

वर्तमान मारकाट के बाद में तमिल लोग मूल देश भारत या अन्य देशों में बसने की योजना बना रहे हैं। इस से स्वयं श्रीलंका एवं तमिलों को हानि होगी। श्रीलंका की अखंडता स्वीकार कर मुख्य राष्ट्रीय धारा से जुड़ना ही समस्या का समाधान है। •

"हेप्पी बर्थ डे"



-नवभारत टाइम्स

विश्व बाल साहित्य

मनोरंजक, वीरतापूर्ण, ज्ञानवर्धक,
प्रेरक पुस्तकें



प्रत्येक रु. 2.00

प्रसिद्ध वैज्ञानिक
वीरान टापू

प्रत्येक रु. 2.50

योगीराज

चीकू

घाट का चोर

चीकू से बलवान हारा

घड़ी की टिकटिक

वीरवल की सूझबूझ

प्रत्येक रु. 3.00

मंगल की सैर

पहेली

आदमी की कहानी

अज्ञात द्वीप

हमारी सेना

प्रत्येक रु. 3.50

नया घर

सत्य का बल

राजा की अंतरिक्ष यात्रा

प्रत्येक रु. 4.00

अनमोल शंख

शुक्र की खोज

संकट के साथी

दुश्मनों के बीच

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें या आदेश भेजें.

दिल्ली बुक कंपनी

एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-1.

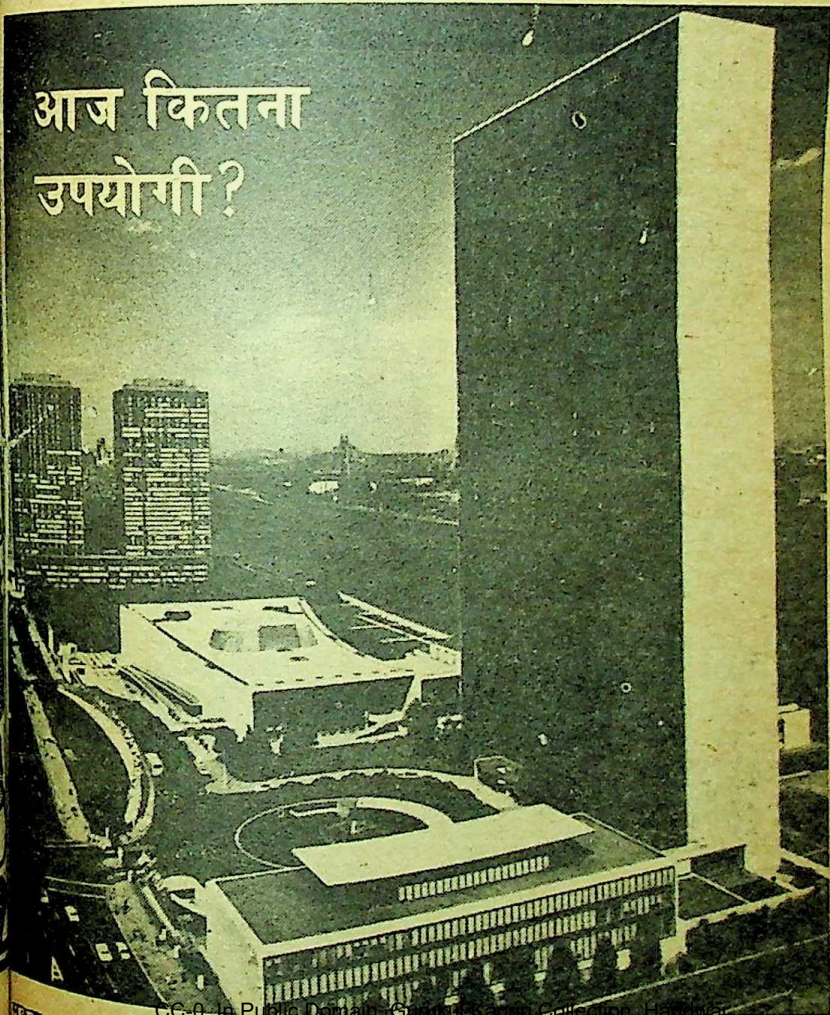


दो विश्वयुद्धों के विनाशकारी परिणामों के
 पश्चात् संसार के जनसंख्या में बढ़ोत्तरी के
 भविष्य में युद्ध की विभीषिका से बचने के
 लिए एक ऐसे मंच की कल्पना की थी जहाँ
 सभी को एक समान दर्जा मिले और जहाँ एक
 साथ बैठ कर आपसी विवादों को हल किया
 लेख • अतुल जैन

जिन उद्देश्यों को ले कर
 संयुक्त राष्ट्र की स्थापना
 हुई थी वे उद्देश्य आज कहां
 तक कारगर साबित हो रहे
 हैं, क्या इस की उपयोगिता
 कम होती जा रही है?

संयुक्त राष्ट्र संघ

आज कितना
 उपयोगी?



जा सके, परंतु यह कल्पना एक सपने से अधिक कुछ नहीं बन पाई। मंच तो बर्मा, पर विवादों का निपटारा युद्ध क्षेत्रों में ही हुआ।

पांच राष्ट्रों—अमरीका, रूस, ब्रिटेन, फ्रांस एवं चीन को वीटो का विशेषाधिकार दे कर समान दर्जे का सिद्धांत तो आरंभ में ही तोड़ दिया गया।

गत 38 वर्षों से दुनिया इस को किसी प्रकार सहती रही है, लेकिन अब इस की उपयोगिता पर संदेह होने लगा है।

24 अक्तूबर, 1982 को संयुक्त राष्ट्र संघ के 37वें स्थापना दिवस के अवसर पर विश्व संस्था की उपयोगिता पर जो प्रश्न चिह्न लगा था, उस का उत्तर तो मिला, लेकिन वह नकारात्मक रहा। यानी लगभग सभी राष्ट्र एकमत हैं कि संयुक्त राष्ट्रसंघ-

संयुक्त राष्ट्रसंघ की सुरक्षा परिषद की बैठक : खाली कुर्सियाँ इस की काररवाई में सदस्य राष्ट्रों की अरुचि ही दर्शाती हैं।

अपने 38 वर्ष के जीवनकाल में किसी भी प्रकार के विवाद सुलझाने में असफल रहा है।

इस सब का मुख्य कारण पांच राष्ट्रों को वीटो का अधिकार देना है। पूरी दुनिया में अपनाअपना अधिकार क्षेत्र कायम करने के लिए ये राष्ट्र वीटो का प्रयोग करते रहते हैं और मामला सुलझने की अपेक्षा उलझता ही रहता है।

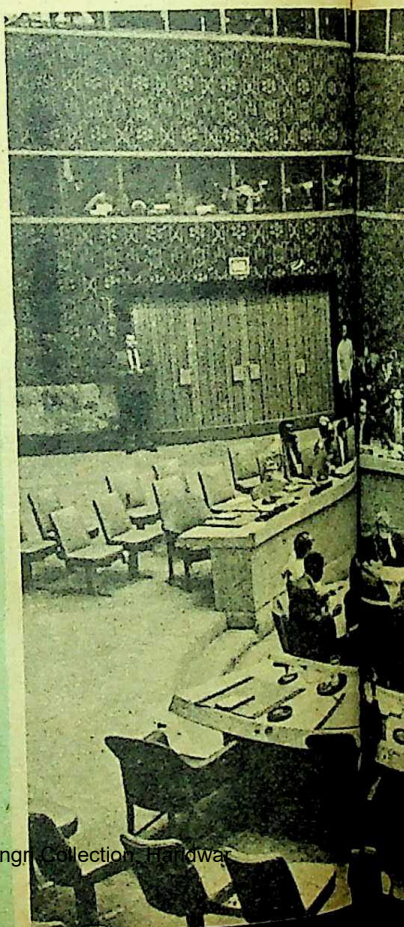
सोवियत सेनाएं हंगरी, चैकोस्लोवाकिया अफगानिस्तान में हस्तक्षेप करें अथवा अमरीकी सेनाएं ग्रेनेडा में, सुरक्षा परिषद में उन के विरुद्ध निंदा प्रस्ताव तक पारित नहीं किया जा सकता। तब सुरक्षा कैसी?

कितनी विचित्र बात है कि अरब राष्ट्र, राष्ट्र संघ द्वारा मान्यता प्राप्त इजराइल को मान्यता देने से इनकार कर देते हैं और फिर उसी इजराइल के हमले से बचने के लिए वे राष्ट्र संघ की शरण में जाते हैं, पर राष्ट्र संघ

इस विरोधाभास के बाद भी जैसे असहाय देशों से राष्ट्र की शांति सेनाएं बैठी हैं, पर मामला तक नहीं सुलझा। इतना ही नहीं इसी विवाद पर भारत से खतरे की आड़ में पाकिस्तान आधुनिकतम हथियार खरीद कर एशिया उपमहाद्वीप में हथियारों की होड़ आरंभ कर दी है।

सीमा विवादों का मामला तो फिर टेढ़ा है, परंतु उन मामलों में क्या होता है? राष्ट्र संघ यह जानता है कि राष्ट्र विशेष गलती कर रहा है? वह असहाय सोवियत दर्शक बना अपने सिद्धांतों का उल्लंघन कर हुए देखता रहता है।

समाचारपत्रों में थोड़ी सी भी खबर रखने वाला व्यक्ति, दक्षिण अफ्रीका



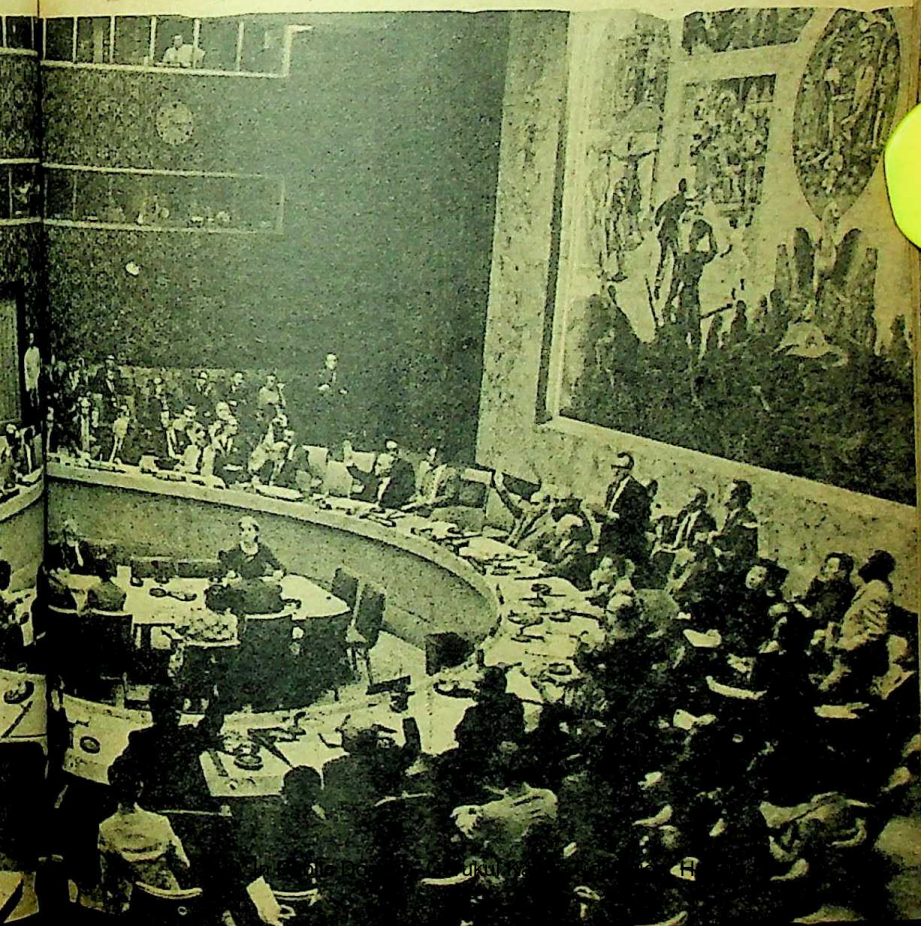
मानवाधिकारों के खुल्लमखुल्ला हनन से खिन्न है, परंतु कुछ के हिंस्र व्यवहार और अमानिती नहीं है। क्या एक मंच पर एकत्र होने के बावजूद दुनिया के 158 राष्ट्र (राष्ट्र संघ के सदस्य) इतने लाचार हैं कि वे एक स्वर में दक्षिण अफ्रीका के विरुद्ध कोई कारवाई न कर सकें?

न्यूयार्क से सियोल जाने वाले हवाई जहाज को रूसी मार गिराते हैं और 263 निर्दोष यात्रियों की जान चली जाती है, लेकिन जब सुरक्षा परिषद में उस पर निंदा प्रस्ताव आता है तो सोवियत संघ उसे वीटो के अधिकार का प्रयोग कर के निरस्त कर देता है। क्या यह अन्य राष्ट्रों को ऐसी हरकतें दोहराने के लिए उत्साहित करना नहीं है? ऐसे न जाने कितने सवाल संयुक्त राष्ट्र

संघ को जकड़े हुए हैं और वह कुछ भी कर पाएगा।

अब इस के सदस्य राष्ट्र भी समझने लगे हैं कि इस मंच की कोई विशेष उपयोगिता नहीं रह गई है। उन्हें यह भय है कि यह भी कहीं दूसरी 'लीग आफ नेशंस' बन कर न रह जाए, जिस की परिणति उस के प्रभावशाली होने से पहले ही हो गई थी। यही कारण है कि राष्ट्र संघ की बैठकों में सदस्य राष्ट्रों की उपस्थिति निरंतर घटती जा रही है और अब तो वह नगण्य ही रह गई है।

वे राष्ट्र जो अभी भी इस में रुचि रखते हैं और अधिकतर उपस्थित रहते हैं, परमाणु हथियार कम करने की बात ही दोहराते रहते हैं, पर बाहर आ कर अगले ही क्षण अपने मित्र राष्ट्रों से घातक हथियार बेचने के



समझौते करते हैं। राष्ट्रसंघ के साथ इस से
 भद्दा मजाक और बड़ा ही संकट है।

वित्तीय सहायता का मुद्दा

अमरीका जो अभी तक राष्ट्र संघ को बहुत उदारतापूर्वक वित्तीय सहायता देता रहा है, अब अपने कदम पीछे हटाने लगा है। वर्तमान में राष्ट्रसंघ सचिवालय पर प्रतिवर्ष होने वाले कुल 800 करोड़ डालर के खर्च में से एक चौथाई भाग तो अमरीका ही देता था, लेकिन अब अमरीकी जनता यह समझने लगी है कि यह मंच केवल अमरीका और रूस का परस्पर विरोध करने का एक माध्यम बन कर रह गया है। इस बात को ध्यान में रख कर अमरीकी संसद (सेनेट) ने राष्ट्र संघ को दी जाने वाली वित्तीय सहायता में भारी कटौती करने का प्रस्ताव भारी बहुमत से पारित कर दिया है।

सोवियत संघ को तो हथियार बनाने से ही फुरसत नहीं है और न ही उस के पास इतना पैसा बचता है कि वह राष्ट्र संघ की वित्तीय सहायता का अपना भाग दे सके। पिछले कई वर्षों से सोवियत संघ पर राष्ट्र संघ का करोड़ों रुपया बकाया है।

महाशक्तियों की बात तो छोड़िए तीसरी दुनिया के देश राष्ट्र संघ की यदि विशेष वित्तीय सहायता नहीं कर सकते तो कम से कम अपनी आवाज तो उठा सकते हैं, लेकिन वहां भारत ने जो कह दिया उसी का दोहराव अन्य राष्ट्रों के द्वारा होता है।

बहस तो वैसे ही कुछ ही मुद्दों तक सीमित रहती है, अफगानिस्तान, कपूचिया, ईरान, इराक, लेबनान, परमाणु आयुद्ध और अब ग्रेनेडा भी वहां के लिए बहस का मुद्दा है।

चूँकि राष्ट्र संघ मुख्यालय में प्रत्येक कक्ष में माइक एवं लाउडस्पीकर की सुविधा है, विभिन्न राष्ट्रों के प्रतिनिधि रेस्तोरां अथवा लॉज में अपनी परंपरागत वेशभूषा में राजसी ठाटबाट में बैठे बतियाते रहते हैं, काफी पीते रहते हैं और वहीं से काररवाई में भाग लेते हैं। बेचारा वक्ता खाली करसियों एवं सचिवालय कर्मचारियों के समक्ष अपनी

बात कह कर चला जाता है।

इस प्रकार हमें पश्चात भी राष्ट्र को भंग करने की कल्पना नहीं की जा सकती। इस की कुछ सहायक संस्थाएं जैसे यूनेस्को (संयुक्त राष्ट्र शिक्षा, विज्ञान एवं संस्कृति संगठन), यनिसेफ (संयुक्त राष्ट्र अंतरराष्ट्रीय बाल आपातकालीन कोष) यू.एन.एच.सी.आर. (संयुक्त राष्ट्र शांति उच्चायोग) अपनेअपने क्षेत्र में सहायक कार्य कर रहे हैं। जहां यूनेस्को आधुनिक शिक्षा एवं विज्ञान को अविकसित देशों में ओर ले जा रहा है, वहीं दूसरी ओर यनिसेफ तीसरी दुनिया के जरूरतमंद बच्चों के विकास में उल्लेखनीय योगदान कर रहा है।

शरणार्थी उच्चायोग तो युद्ध से शरणार्थियों के लिए किए गए कार्यों के लिए दो बार नोबेल पुरस्कार प्राप्त कर चुका है।

इस संदर्भ में डब्लू.एच.ओ. (विश्व स्वास्थ्य संगठन) का उल्लेख करना आवश्यक है। दुनिया में कहीं भी महामारी फैले, यह संगठन बिना देर किए साजसमान के साथ वहां उपस्थित हो जाता है।

लेकिन अंतरराष्ट्रीय न्यायालय अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के कार्यों से छोटे क्षेत्रों में असंतोष व्याप्त है।

आई.एल.ओ. (अंतरराष्ट्रीय मजदूर संगठन) का कार्य वैसे तो संतोषजनक है, लेकिन साम्यवादी देशों में वह भी देर रहा है। पोलैंड में जब सोलिडरिटी निषेधाज्ञा लगाई गई तो संगठन ने बड़ा प्रयास मचाया, लेकिन सोवियत संघ के दबाव में पोलैंड ने उसे अंगूठा दिखा दिया।

लेकिन संयुक्त राष्ट्र संघ की संस्थाओं की उपयोगिता की बात तो करना और भी ठीक रहेगा जब राष्ट्र संघ प्रभावशाली हो। जब मुख्य नदी में ही बाधा नहीं होगा तो सहायक नदियां कब तक सूखेंगी? अतएव आवश्यकता इस बात की कि इन संस्थाओं को जीवित रखने के लिए राष्ट्र संघ को आज के संदर्भों में उपयोगी शक्तिशाली बनाया जाए।

दिसंबर (प्रथम)

सांझ सिंदूर

इठलाती
पुरवा चली,
छली खिली
मन की कली,
यों ही यों ही आंखों में
इंद्रधनुष झर जाए...

शायद चांद ने
कुछ कहा,
कुछ रहा
अनकहा,
और कपोलों पर तभी
कचनार बिखरे जाए...

मुसकाए कजरा
कुछ कह के,
बिंदिया झलके
रहरह के
और सांझ सिंदूरी
आए, मांग भर जाए...

मोगरा हंस पड़ा
हंस पड़ी
जूही कली
शाम ढली
पीछियों का एक जोड़ा
पर फैलाए, अपने घर जाए...

दीपशिखा
लहराती रही
जबनी रही
गाती रही
शायद इस तरह
रात का रूप संवर जाए...



दिसंबर
(प्रथम) 198

राजनीतिक,
सामाजिक व
धार्मिक घटनाओं
की सीधे घटना
स्थल से खोजपूर्ण
जानकारी.



नौ सेना : काम तो है, पर नाम नहीं

इधर पाकिस्तान नित नए हथियार खरीद रहा है उधर विश्व की महाशक्तियां हिंद महासागर में डेरा डाले हुए हैं. भारतीय नौ सेना अपने 5,600 किलोमीटर लंबे समुद्री तट की रक्षा किस प्रकार करती है तथा उस के पास कैसे-कैसे आधुनिक हथियार हैं?

तृतीय विश्व हिंदी सम्मेलन : क्या खोया, क्या पाया?

हिंदी की दुकानदारी में राजनीतिबाजों की रस्साकशी देख कर हिंदी प्रेमी, साहित्यकार किस प्रकार रोने लगे.

कर्नाटक की हेगड़े सरकार

सत्तारूढ़ दल को गिराने के लिए इंदिरा कांग्रेस द्वारा पैसे का खेल कैसे शुरू हुआ तथा अपनी चाल में वीरप्पा मोइली किस प्रकार मात खा गए?

चंद्रशेखर सिंह का नया दांव

बिहार मंत्रिमंडल का अधूरा और असंतुलित विस्तार.

दयानन्द निर्वोण शताब्दी समारोह
सत्ता के नजदीक पहुंचने के लिए आर्य समाज के
महारथियों का यह प्रयास कितना कारगर रहा?

**क्या इंदिरा गांधी चुनाव की तैयारी कर
रही हैं?**

जनता के सामने एक ही नेता, एक ही व्यक्ति, एक ही दल
और एक ही सरकार के रूप में अपने आप को साबित
करने के लिए श्रीमती इंदिरा गांधी कैसीकैसी चालें चल
रही हैं?

**ओबरा ताप बिजलीघर में आग : करोड़ों
का नुकसान**

अधिकारियों की लापरवाही से करोड़ों रुपए की सरकारी
संपत्ति का नुकसान और अब प्रदेश के उद्योगों और कृषि
के लिए फिर से बिजली की कमी.

**पंजाब : उग्रवादी गतिविधियों की शिकार
सियालदह एक्सप्रेस**

सियालदह एक्सप्रेस भीषण दुर्घटना की शिकार कैसे हुई?
आतंकवादियों ने आखिर इसे ही अपना शिकार क्यों
बनाया? क्या इस घटना में रेल कर्मचारियों का भी हाथ है?

इन के अतिरिक्त अन्य कई लेख तथा सभी स्थायी स्तंभ.

राजनीतिक उथल पथल पर पैनी नजर रखने वाली पत्रिका.

भूभारती

भूभारती मण्डिप, जामखंडक व जिल्होदार नागरिक बनिए.

मानमयोदा पर मर मिटने वाले

Digitized by eGangotri Foundation Chennai and eGangotri

राछौड़ नरेशों ने जन्म लिया है. वे तलवार
और कला से समान प्रेम करते थे. उन की इसी
रुचि का जीताजागता उदाहरण
है—महरानगढ़ का किला.

लेख • राजेशकृष्ण सांचीहर

महरानगढ़ का किला

राजपूतों के तलवार व
कला प्रेम का प्रतीक

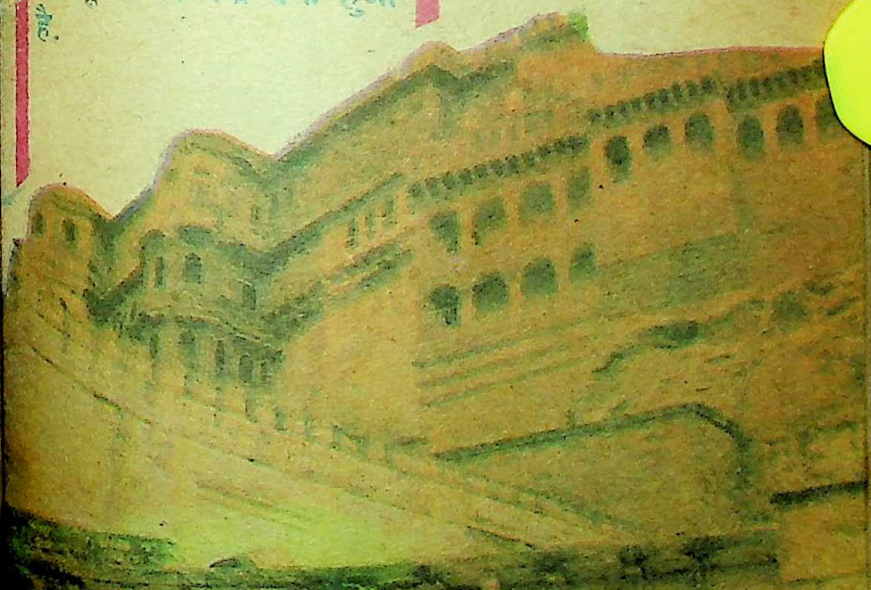
राजस्थान में नौकोटी (नौ किलों वाले) पचरंगी पताका किले की कीर्ति कहते हुए
 मारवाड़ राज्य की ऐतिहासिक मगरी जोधपुर लगे हैं।
 में सन 1459 में इस चौबुर्जे भव्य किले की
 आधारशिला रखी गई थी। यह किला भूमि
 तल से 300 फुट ऊंची पहाड़ी पर राव
 जोधाजी द्वारा अपनी प्रजा व सीमा की सुरक्षा
 के लिए बनवाना शुरू किया गया था और
 आगे चल कर 17वीं शताब्दी में महाराजा
 अजीतसिंह तथा उन के पुत्र अभयसिंह के
 समय में इस का विस्तार हुआ।

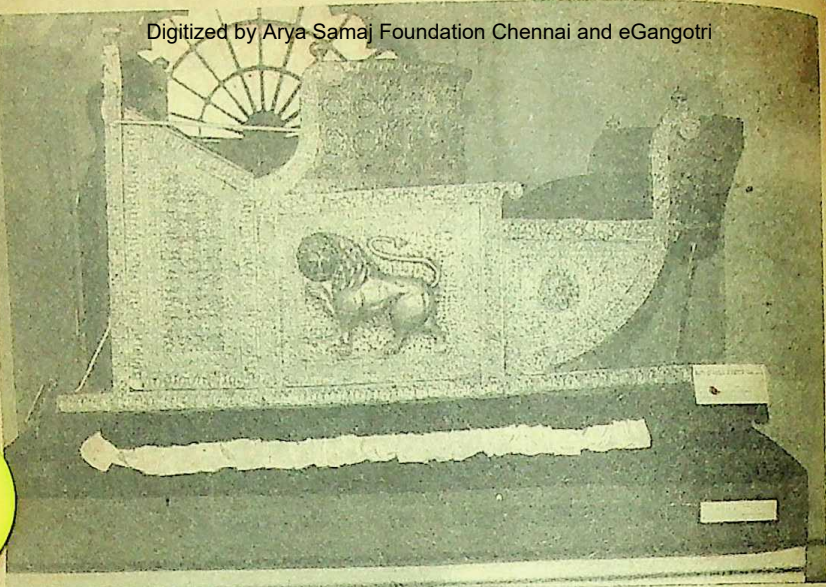
इस किले के पूर्व और उत्तर के
 विशालकाय प्रवेशद्वार और उस पर फहराती

किले में स्थापित चामुंडा देवी की
 प्रतिमा राव चूंडाजी द्वारा (संवत् 1212 में)
 स्थापित की गई थी। इस मूर्ति के हाथ के नीचे
 ही हनुमान की मूर्ति है।

महरानगढ़ में स्थित फूल महल अपनी
 बारीक कारीगरी के द्वारा बरबस ही ध्यान
 आकर्षित कर लेता है। फूल महल में दीवारों
 छतों व दरवाजों पर 80 किलोग्राम सोने से की
 गई शिल्पकारी पर्यटकों के आकर्षण का मुख्य
 केंद्र है। फूल महल में सोने से मढ़े अनेक द्वार
 सिंहासन और यहां का शिल्प दूर से ही
 आगंतुकों का स्वागत करता प्रतीत होता है।
 किले में ही एक मुगल टैंट है, जो अपनी

महरानगढ़ का किला अनेक
 ऐतिहासिक वस्तुओं व
 भारतीय शिल्प कला की
 अपार धरोहरों को अपनेआप
 में समेटे हुए आज किस प्रकार
 दर्शकों व कलाप्रेमियों के बीच
 आकर्षण का केंद्र बना हुआ
 है।



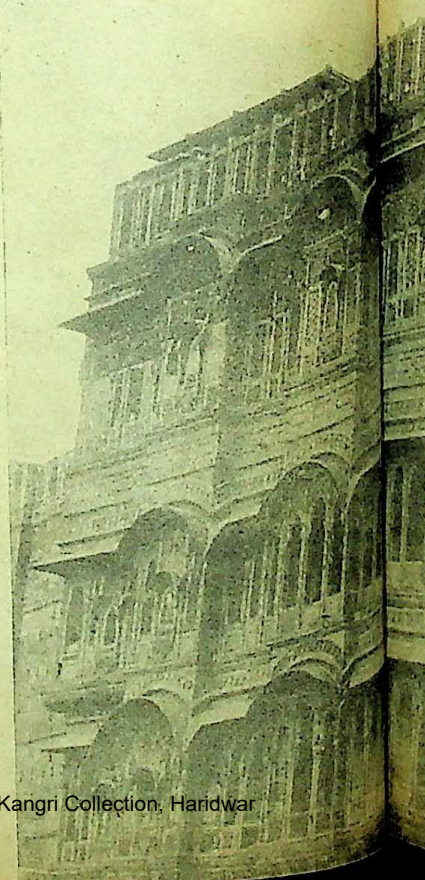


शाहजहां का हाथी का हौदा : फूल महल का एक आकर्षण.

तरह का अनूठा ही है. यहां कभी कला के पारखी राजामहाराजा मुजरे व घुंघरुओं की आवाज पर सर्वस्व न्योछावर करने के लिए बेताब हो उठते थे. इस मुंगल टैंट की लंदन के म्यूजियम के लिए मांग की गई थी, लेकिन इसे किले की शोभा बढ़ाने के लिए यहीं रखा गया.

इस किले में एक संग्रहालय भी है, जिस में जोधपुर के राजघराने की कई ऐतिहासिक वस्तुएं प्रदर्शित की गई हैं. इन में शाहजहां का हाथी का हौदा, जहांगीर के समय की पालकी, मयूर की तामझाम तथा एक महाइली है, जिसे सन 1730 में महाराजा मानसिंह द्वारा गुजरात के सूबेदार से जीत कर लाया गया था.

शुभ्य फूल महल : जिस की बारीक क़रीगरी धड़कती को पलकें बस आवाज़ी और खींच लेती है.



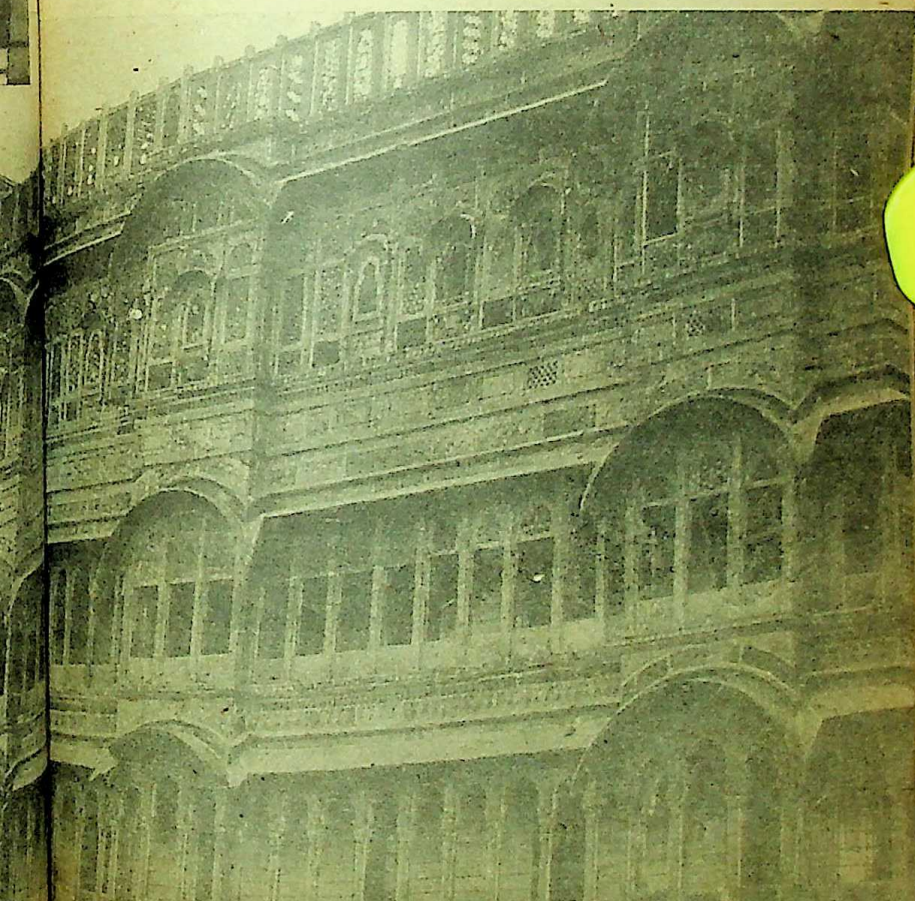
नाम
जैसे
सब
पुस्त
कल
मति
ईग
कल
उन्
गफ
है
झर

किले में ही 'मानसिंह पुस्तक प्रकाश' नामक शोधग्रंथ है, इस में विभिन्न विषयों जैसे—इतिहास, प्राचीन विद्या, योग आदि से संबंधित 3,000 से अधिक हस्तलिखित पुस्तकें हैं। यह यहां के राजाओं का वीरता तथा कला के साथ विद्या प्रेम का द्योतक है।

यहां एक ही चट्टान में उत्कीर्ण अनेक मूर्तियां निहारने का मौन निमंत्रण देती हुई इंगित करती प्रतीत होती हैं कि मारवाड़ में कला की परंपरा 18वीं शताब्दी में भी पर्याप्त उन्नत थी। किले में स्थित चिड़ियाघनाथजी की गुफा में एक झरना वारहों महीने बहता रहता है। प्रायः सूखाग्रस्त हो जाने वाले प्रदेश में ऐसा झरना भी एक पहली है।

इस किले के कपाट इतने मजबूत और बड़े हैं, जिन्हें मदमस्त हाथियों से धकेलवा कर खुलवाया जाता था। किले की दीवारों में जगहजगह झरोखे हैं, जहां से चौकसी रखी जाती थी।

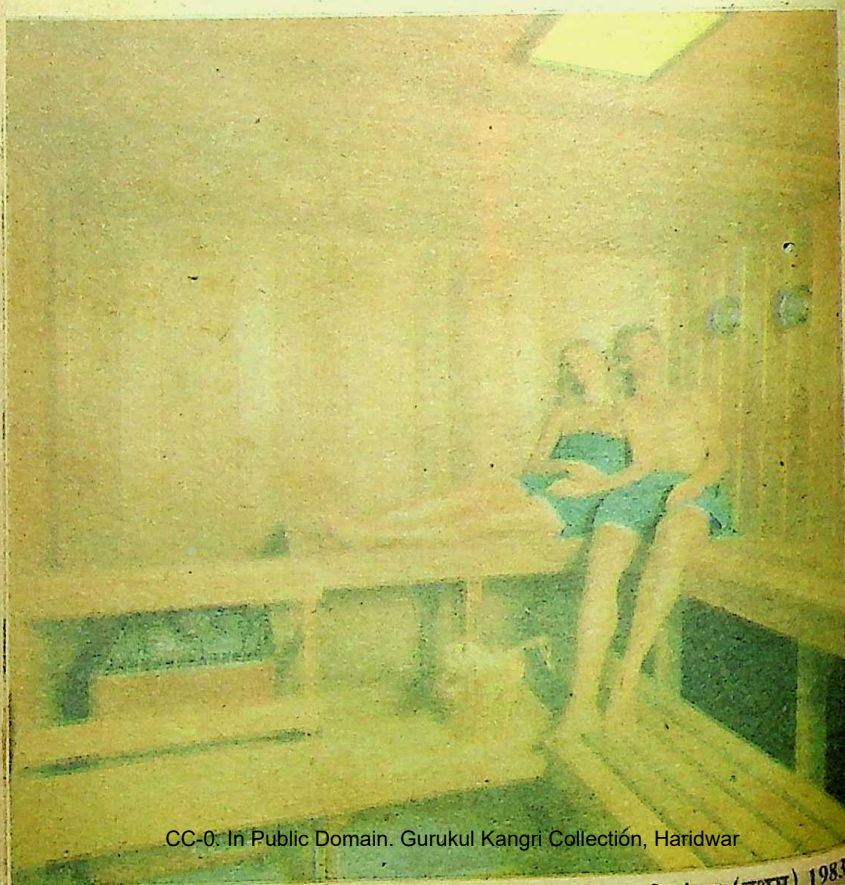
प्रतिवर्ष औसतन एक लाख देशी तथा 10 हजार विदेशी पर्यटक किले को देखने आते हैं और उन के कैमरे यहां के आकर्षण को कैद करते रहते हैं। ऐसे भव्य किले का वर्णन कुछ शब्दों में करना कठिन है, छायाचित्र भी कुछ झलकियां ही प्रस्तुत कर सकेंगे, क्योंकि किले के खजानों में न जाने कितनी अनुभूतियां, कितने अनुभव, कितनी अनकही कहानियां भरी हैं। ●



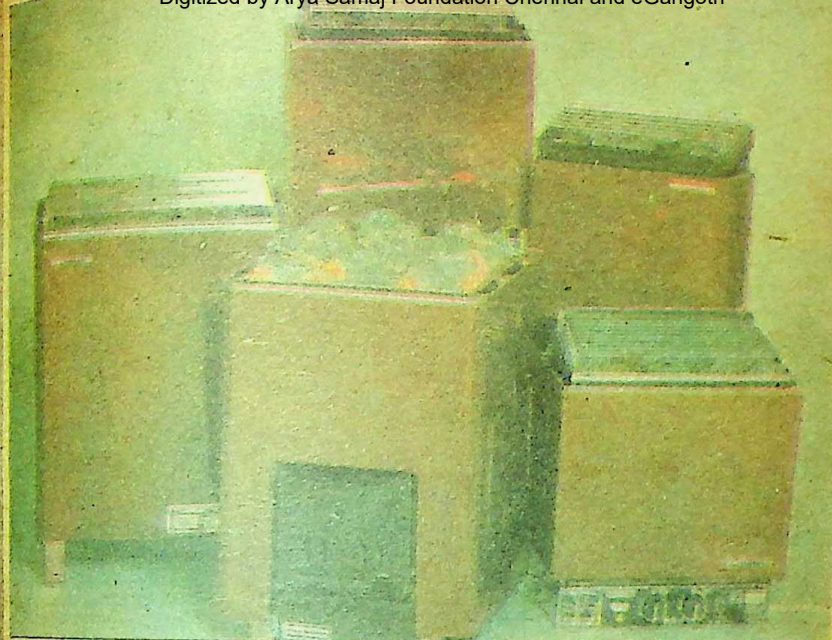
बड़े बड़े होटलों में उपलब्ध सुविधाओं की सूची में लिखा रहता है—
साउना स्नानागार उपलब्ध. साउना फिनलैंड
की भाषा का शब्द है, जिस का अर्थ है भाप का

स्नानागार. बड़े बड़े होटलों में विशेषकर ठंडे देशों के होटलों में, साउना स्नानागार इसलिए नहीं बनाए गए हैं कि आज उन का फैशन हो गया है, बल्कि इसलिए कि

फिनलैंड का साउना स्नान



साउना
तापक्रम
लिए वि
इस्तेमा
है (उ
लकड़ी
स्नानाग
आनंद
लैंड का
साउना
ताजगी
मे इनम
मे हम
प्राचीन
उ
उत्तरी
बहन ही
भी अधि
र घरो
पकता



साउना स्नानागार में तापक्रम को बढ़ाने के लिए विद्युत हीटर का इस्तेमाल किया जाता है (ऊपर)।

लकड़ी के बने साउना स्नानागार में स्नान का आनंद लेते हुए फिनलैंड कासी (बाएं)।

फिनलैंड का साउना स्नान न सिर्फ शरीर को ताजगी और फर्ति देता है, बल्कि अनेक रोगों भी आराम पहुंचाता है। इस का अनोखा और विचित्र आनंद तनमन को रौमांच से भर देता है।

साउना स्नानागार शरीर को आराम व ताजगी देने का बड़ा लोकप्रिय ढंग है और इस से स्नान का मनोरंजन भी होता है। फिनलैंड में इस विधि से स्नान करने का चलन बहुत प्राचीन काल से चला आ रहा है।

उत्तरपूर्वी यूरोप का देश फिनलैंड उत्तरी ध्रुव के बहुत निकट होने के कारण बहुत ही ठंडा है। इसी लिए वहां 10 लाख से भी अधिक भाप के स्नानागार हैं। यहां निर्धन लोग भी भाप के स्नानागार में जाते हैं।

आता है। भाप के ये स्नानागार झीलों व समुद्र के तटों पर भी पाए जाते हैं।

शायद ही कोई अन्य देश होगा जिस के निवासी अपने यहां के परंपरागत स्नानागार पर गर्व महसूस करने को स्नानागार भी कोई गर्व करने की वस्तु है? जी हां, जहां तक फिनलैंडवासियों का संबंध है, हर स्वाभिमानी और सच्चे फिन के घर में साउना स्नानागार अवश्य होना चाहिए। वहां हर पांच व्यक्तियों के लिए साउना स्नानागार होता है। फिन लोगों

की दृष्टि में साउना स्नान का कितना महत्त्व है, यह इसी बात से जाहिर हो जाता है कि साउना स्नान के लिए किसी अतिथि को आमंत्रित करने का अर्थ उस को सर्वोच्च सम्मान देना है।

फिनलैंड में 70,000 झीलें हैं और इन सभी झीलों के तटों पर साउना स्नानागार हैं। नगरों में ये फ्लैट वाले भवनों में छत पर या तहखानों में होते हैं। फिनलैंड में देहात में घर बनाने से पहले ही लोग साउना स्नानागार बनाते हैं।

फिनलैंड से साउना स्नान का चलन संसार के अन्य देशों विशेषकर पश्चिमी व ठंडे देशों में फैला है। अमरीका में तो यह बहुत ही लोकप्रिय हुआ है और वहां के घरों, सार्वजनिक स्नानस्थलों, हस्पतालों और यहां तक कि फैक्टरियों में भी ये स्नानागार बनाए गए हैं।

साउना स्नान मामूली स्नान नहीं है, शुरू में इस से हिम्मत पस्त हो जाती है। लेकिन कुछ देर बाद स्नान करने वाला अपने अंदर आश्चर्यजनक स्फूर्ति महसूस करता है। इसी लिए इस स्नान को एक ऐसी परीक्षा कहा जाता है जिस में आग और बर्फ दोनों पर से गुजरना पड़ता है। इस स्नान की एक पूरी प्रक्रिया है जिस का शुरू का भाग भयंकर रूप से कठोर व कष्टमय होता है। नए लोग तो शुरू के भाग में बुरी तरह घबरा जाते हैं।

साउना स्नानागार लकड़ी का बना होता है। इस में नहाने वालों के बैठने के लिए बेंचें होती हैं। स्नानागार में लट्टा जला कर चूल्हे पर पत्थर गरम किए जाते हैं। पत्थर को इतना अधिक गरम किया जाता है कि उस का और उस कमरे का तापक्रम 105 डिग्री सेंटीग्रेड हो जाता है, जब कि 100 डिग्री तापक्रम पर पानी उबलने और खोलने लगता है। सभी नहाने वाले व्यक्ति कपड़े उतार कर उस कक्ष में मौजूद रहते हैं।

कमरे के इतने सख्त तापक्रम में नहाने वालों का शरीर उबलने लगता है। फिर अंगारों सरीखे गरम पत्थरों पर पानी फेंका जाता है जिस से कमरा गरम भाप से भर जाता है। नहाने वालों का शरीर भाप से सेंका जाता है। वहीं पेड़ के पत्तों वाली टहनियां रखी हैं जिन्हें नहाने वाले व्यक्ति अपने शरीर पर मारते हैं। उस के बाद ये लोग भाग कर झील या समुद्र के पानी में घुस जाते हैं। यदि सर्दी का मौसम होता है और झील का पानी जम गया हो तो वे उसी पर भागते और लेट जाते हैं।

कहां गरमी से उबले हुए शरीर के सारे नंगे बदन बरफ के समान ठंडे तापक्रम में डूब जाना और फिर बरफ पर लेट जाना, यह सोच कर ही किसी के भी रोंगटे खड़े हो सकते हैं। हमारे यहां तो गरमी से एकाएक पंखे के नीचे आने पर ही लोगों को बुखार हो जाता है। फिर साउना स्नान से ऐसा कुछ नहीं होता। अतः

आधुनिक साउना स्नानागार में प्रयोग किए जाने वाले कुछ यंत्र।





साउना स्नान के लिए विशेष रूप से बनाया गया स्नानागार.

आनंद स्नान के बाद आता है. इस से शरीर में अद्भुत ताजगी आ जाती है. स्नान करने वाला उल्लसित हो उठता है.

साउना स्नानागार कई आकार के होते हैं. वे इतने छोटे भी होते हैं जो घर की जगह में फिट हो सकें. लकड़ी के बने केबिनों में साउना स्नान के लिए जमी हुई झील की जगह ठंडा शावर लगा होता है तथा लकड़ी के चूल्हे की जगह विजली के हीटर.

गरम तापक्रम और भाप में कुछ मिनट तक बैठे रहना मीलों दौड़ने के बराबर होता है. साउना स्नान से अनेक रोगों में भी आराम मिलता है.

सब से बड़ी बात यह है कि इस से यकृत दूर होती है. यह अत्यधिक तनाव से पीड़ित लोगों के रक्तचाप को कम करता है. गठिया और चर्मरोग से पीड़ित लोगों के लिए तो यह स्नान बहुत ही उपयोगी है, किंतु जिन लोगों को मिरगी के दौरे पड़ते हैं या जो तपेदिक, हृदय रोग या मधुमेह से पीड़ित हैं, उन्हें यह स्नान नहीं करना चाहिए.

साउना स्नान में अत्यधिक तापक्रम शरीर में कृत्रिम ज्वर उत्पन्न कर देता है. इस से हृदय की धड़कन और नाड़ी की गति बढ़ जाती है और निष्क्रिय हिस्सों तक में रक्त का संचार होने लगता है. बाद में तुरंत ठंडे पानी में प्रवेश करने से रक्त शरीर के आंतरिक हिस्सों में वापस चला जाता है. इस से शरीर का एक प्रकार से व्यायाम हो जाता है.

जिस प्रकार शरीर को पुष्ट व नीरोग बनाने के लिए भारत में योग और आसन क्रियाएं की जाती हैं, उसी प्रकार फिनलैंड में साउना स्नान की प्रथा प्रचलित है. जिस प्रकार कुछ वर्षों से विदेशों में भारत के योगासनों को लोकप्रियता मिली है, उसी प्रकार फिनलैंड का साउना स्नान भी पिछले 50 वर्षों में विदेशों में अत्यधिक लोकप्रिय हुआ है और लोगों ने इस में एक अनोखा व विचित्र आनंद पाया है. इसलिए यह कोई आश्चर्य की बात नहीं कि आज के बड़े-बड़े होटल साउना स्नानागार को अपनी एक विशेष व्यवस्था के तहत ग्राहकों के लिए रखते हैं.

बनसंवरने की उम्र आई है



वनसंवरने की उम्र आई है,
खुद पे मरने की उम्र आई है.

आग पर जानबूझ कर गोया,
पांव धरने की उम्र आई है.

जिंदगी में हसीन यादों के,
रंग भरने की उम्र आई है.

अपनी बांहों में चांदनी की नदी,
कैद करने की उम्र आई है.

जो भी करने की ठान ली उस को,
कर गुजरने की उम्र आई है.

—महीर कुरेशी

नए लेखकों के लिए कहानी प्रतियोगिता

नए अंकुर

मुक्ता ने अपने जन्म ही से नए लेखकों को प्रोत्साहित किया है। कभी लेखकों के नाम से प्रभावित हो कर उन की रचनाओं को तरजीह नहीं दी है। मुक्ता के लिए रचना ही महत्वपूर्ण होती है। लेखकों का नाम या उस की ख्याति नहीं।

नए लेखकों को प्रकाश में लाने के लिए मुक्ता द्वारा समयसमय पर नए अंकुर प्रतियोगिताएं भी आयोजित की जाती रही हैं, जिन में केवल उन्हीं लेखकों की रचनाएं स्वीकृत की जाती हैं जिन की कोई रचना पहले कहीं न छपी हो।

अब इस प्रतियोगिता को सामयिक की बजाए स्थायी रूप दे दिया गया है। यह प्रतियोगिता निरंतर चलती रहेगी। इन में उन सभी नए लेखकों की कहानियों का स्वागत है जिन की कोई रचना पहले कहीं प्रकाशित नहीं हुई है। इन रचनाओं के लिए कोई अंतिम तिथि नहीं है। जैसेजैसे ये प्राप्त होती जाएंगी इन पर विचार कर के निर्णय किया जाता रहेगा और यथासंभव शीघ्र प्रकाशित कर दिया जाएगा। प्रत्येक रचना पर 75 रुपए का पारिश्रमिक दिया जाएगा। वर्ष के अंत में सभी 'नए अंकुर' रचनाओं पर पुनः विचार किया जाएगा और सर्वश्रेष्ठ रचनाओं पर निम्नलिखित पुरस्कार दिए जाएंगे :

प्रथम पुरस्कार : 200 रुपए

द्वितीय पुरस्कार : 100 रुपए

तृतीय पुरस्कार : 50 रुपए

ये पुरस्कार पारिश्रमिक के अतिरिक्त होंगे।
इस विषय में संपादक का निर्णय अंतिम व मान्य होगा।

रचनाएं भेजने से पहले कृपया मुक्ता कार्यालय से लेखकों के नियम मंगवा कर पढ़ लीजिए ताकि आप की रचनाओं पर विचार करने में सुविधा रहे।
इस के लिए 50 पैसे का टिकट लगा, अपना पता लिखा लिफाफा भेजिए।

संपादक, मुक्ता, इ-3, रामी शारदा मार्ग, नई दिल्ली-110055.

ये शिक्षक

इस स्तंभ के लिए अपने रोचक संस्मरण भेजिए। उन्हें आप के नाम के साथ प्रकाशित किया जाएगा और प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी। संस्मरण के साथ अपना नाम व पता अवश्य लिखें।

भेजने का पता: मुक्ता, दिल्ली प्रेस, नई दि - 110055.

हमारे विश्वविद्यालय में एक प्राध्यापक को छात्रगण बहुत तंग किया करते थे। उन के कक्षा में आते ही कोई पक्षी की बोली बोल उठता था तो कोई सीटी बजाने लगता था। कोई अपना डेस्क ही बजाने लगता था। मगर ये सब प्राध्यापक की नजर बचा कर किया जाता था।

एक दिन वह प्राध्यापक कक्षा में आए और उपस्थिति लेने लगे तो पीछे की बेंच वाले लड़कों ने एक निश्चित ताल में अपनी-अपनी डेस्क बजानी शुरू कर दी। तब अध्यापक ने अनुमान से पीछे बैठे कुछ छात्रों को कक्षा से बाहर निकाल दिया ताकि शांति बनी रहे। मगर छात्रों को मजा आ रहा था, इसलिए उन्होंने ठकठक करना जारी रखा। प्राध्यापक भी क्रमशः पीछे के छात्रों को निकालते गए। मगर फिर भी ठकठक होनी बंद न हुई तो उन्होंने क्षुब्ध हो कर कहा, "मैं सोचता था कि इस कक्षा में कुछ ही छात्र मूर्ख हैं, जो कक्षा में अशांति फैलाते हैं, मगर अब देख रहा हूँ कि मूर्खों की संख्या बढ़ती ही जा रही है।"

यह सुन कर पूरी कक्षा ठहाका मार कर हंस पड़ी।

—बसंत करोलुस बाबा

हमारे हिंदी के शिक्षक बहुत ही क्रोधी स्वभाव के थे, पर बहुत ही धीमी आवाज में बोलते थे। एक दिन उन्होंने मेरी तरफ देख कर कुछ पूछा, जो मेरी समझ में नहीं आया। मैं उन की तरफ देखता रह गया।

तब शिक्षक मेरी तरफ आए और मेरे मुंह पर एक जोरदार चांटा मार कर बोले, "जवाब नहीं आता तो मुंह से क्यों नहीं बोलते?"

मैं ने कहा, "आप ने पूछा क्या है?"

उन के प्रश्न दोहराने पर मैं ने सही-सही उत्तर दे दिया। जवाब सुनते ही वह भौचक्के रह गए और उन के मुख पर शरमिंदगी के भाव उभर आए।

—अशोक कुमार

हमारे विश्वविद्यालय के तकनीकी छात्रों के लिए उर्दू भाषा की सायंकालीन कक्षाएं भी लगती हैं। मेरा एक सहपाठी संभवतः दिन भर की थकान के कारण अक्सर उर्दू की कक्षा में सो जाता है। एक दिन वह अपनी आदत के अनुसार सो रहा था कि तभी किसी बात के स्पष्टीकरण के लिए मैं ने अध्यापक से कुछ जानना चाहा। वह सहपाठी मेरे पास ही बैठा था। मेरे खड़े होते ही अध्यापक की नजर अनायास ही उस की तरफ चली गई और उन्होंने मुझे शांत रहने का संकेत किया। फिर उन्होंने दबे स्वर में एक शेर सुनाया। शेर इस प्रकार था:

'सिरहाने 'सीर' के आहिस्ता बोली, अभी टुक रोते-रोते सो गया है.'

शेर सुनते ही हम सब हंस पड़े और इसी हंसी में उस सहपाठी की नींद भी खुल गई। इस के बाद उस के सोने की आदत Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar अजयसिंह

गृहशोभा

बुनाई विशेषांक

दिसंबर
(1983)

अपनी प्रति आज
ही सुरक्षित कराए

16 से अधिक बुनाई के नमूने ले कर आ रहा है.

- सिल और पीला का डिजाइन
- गहवार और स्यामिलीय स्वेटर
- शाल लाल का डिजाइन
- सफाई के फलों वाली शाल
- डिजाइनों का गुलाबी का डिजाइन
- जालीदार क्लाउज

- कटारदार लाल रंगी का
- पीला लाल तरी माला का
- काले की तिरंगी जाली
- लाल सिद्धांत माल
- आप के लाल की का डिजाइन माल
- जालीदार सिद्धांत
- अंगूर के गुच्छों से सजा की रंग
- स्वेटर
- चैक डिजाइन की बाईर पट्टी
- वाला स्वेटर
- रंगबिरंगी बेल से सजा स्वेटर
- युवकों के लिए खूबसूरत पूरी जाल
- का स्वेटर

सभी डिजाइन रंगीन चित्रों व सजावटों के साथ दिए जा रहे हैं जिन्हें देखते ही आप बनना शुरू कर देंगी साथ ही सादर सजा, स्वरूप, सौंदर्य, पक्कान, जाली और फिलान पर सवित्र लेख, कहानियाँ कविताएँ और व्यंग्य.

गुणवत्ता से भरपूर महिलाओं के लिए बनाया गया संपूर्ण पत्रिका.



ये लड़के ये लड़कियाँ

इस स्तंभ के लिए अपने रोचक
संस्मरण भेजिए. प्रकाशित होने पर 15
रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी.
पत्र पर अपना नाम व पूरा पता अवश्य
लिखें.

भेजने का पता : मुक्ता, दिल्ली
प्रेस, नई दिल्ली-110055.

घटना उस समय की है, जब मैं आठवीं कक्षा में पढ़ता था. हमारी अंगरेजी की अध्यापिका ने दो कापियां बनवाई थीं—एक स्कूल के लिए और दूसरी घर के लिए.

एक दिन उन्होंने स्कूल की कापी देखने के बाद कहा, "कल अपनी घर वाली लाना."

उसी समय एक लड़का बोला, "अभी तो हमारी शादी ही नहीं हुई है."

उस की बात पर जो ठहाका लगा, उस में अध्यापिका भी शामिल हो गई.

—धर्मेन्द्रकुमार जड़िया

*

हमारे कालिज की कुछ लड़कियां वगीचे में टहल रही थीं. कुछ लड़के भी इधर उधर बैठे गप्पे मार रहे थे. तभी उन में एक लड़की गाने लगी, "जब हम जवां होंगे, जाने कहां होंगे."

उस के चुप होते ही किसी लड़के ने कहा, "ससुराल में." यह सुनते ही वह लड़की शरम से पानीपानी हो गई और हम लोगों का हंसतेहंसते बुरा हाल हो गया.

—रामफल भगत

*

उस समय मैं नवीं कक्षा का छात्र था. हिंदी के अध्यापक पढ़ा रहे थे. अचानक मनोकामना शब्द आया तो उन्होंने सभी लड़कों से अपनीअपनी मनोकामना बताने को कहा.

किसी ने प्रधान मंत्री बनने की तो किसी ने करोड़पति बनने आदि की बात कही. अंत में एक लड़के ने कहा, "मेरी मनोकामना है कि हमारे कमरे में ठंडे पानी से भरा एक मटका होना चाहिए, जिस से हमें ठंडा पानी पीने को मिल सके."

अध्यापक ने तुरंत उस की मनोकामना पूरी करवा दी.

—मोहनलाल पगारिया

*

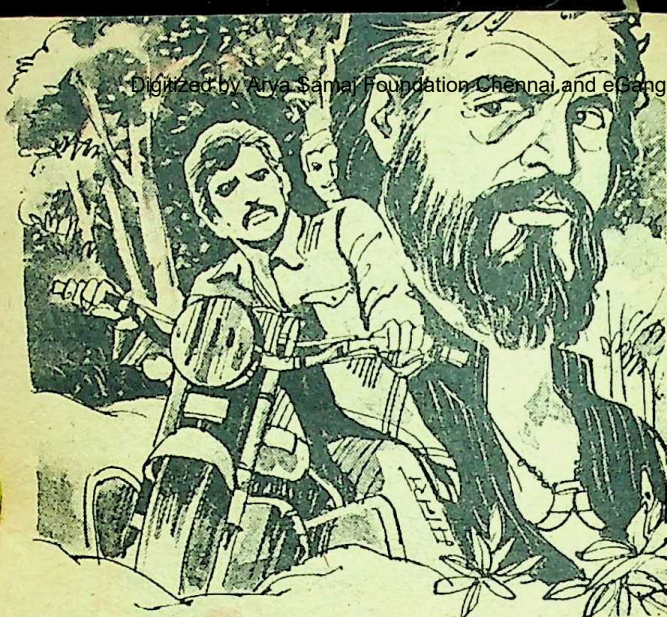
घटना उस समय की है जब मैं बी.ए. प्रथम वर्ष में पढ़ता था. कक्षाएं अभी शुरू ही हुई थीं. हमारी कक्षा में कुछ लड़कियां भी थीं जिन में एक जरूरत से ज्यादा तेजतर्रार बनने की कोशिश करती थी. वह आधुनिकतम फैशन के कपड़े भी पहन कर आती थी तथा कक्षा में बहुत जोरजोर से बोलती भी थी.

हमारे अंगरेजी के प्राध्यापक कुछ मजाकिया स्वभाव के थे. एक दिन पढ़ाते वक्त उन्होंने प्रसंगवश प्रश्न किया कि हम लोगों के फोरफादर्स (परदादा) क्या किया करते थे. हम लोग बारीबारी से अपने पूर्वजों के बारे में बताने लगे.

जब उस लड़की की बारी आई तो वह बोली, "सब की तरह मेरे फोरफादर्स (चार पिता) नहीं, बल्कि सिंगल फादर (एक पिता) हैं जो कपड़े के व्यवसायी हैं."

इस के आगे वह कुछ न कह सकी, क्योंकि पूरी कक्षा ठहाकों में डूब चुकी थी.

उस के बाद वह कई दिन तक इतनी झेंपीझेंपी रही कि मानो कोई दूसरी लड़की हो.



दूसरी किस्

मदन ने
रोक दी. पान के
थमाते हुए रफत उल्लाह
ने पूछा, "आज कि
की तैयारी है?"

मदन ने मजदूरी
अंदाज में कहा, "र
के आने जाते के ब
पूछना नहीं चाहिए
"क्यों भला?"

गफूर भाई

लंबी कहानी • चंद्रशेखर

सुबह होते ही मदन ने दफ्तर में यह बात फैला दी कि किसी जरूरी काम से वह धार जा रहा है. मेहरसिंह भी उस के साथ जाएंगे. गफूर भाई के लोगों को चकमा देने के लिए ही मदन ने यह चाल चली थी. मेहरसिंह तक को उस ने इस बात की थाह नहीं दी थी. उन्हें मदन ने यही कहा था कि सरकारी काम आ गया है. दबिश के वावत जब उन्होंने याद दिलाई थी, तो मदन ने लापरवाही से कह दिया था कि फिर कभी बाद में देखेंगे. वे तो वहां आते ही रहते हैं.

भोजन से निवृत्त होते ही मदन ने अपनी घोषणानुसार गाड़ी निकाली. मेहरसिंह भी फौरन आ गए. वे अपनी गाड़ी निकालने लगे तो मदन ने कह दिया, "इसी पर चले चलो."

मेहरसिंह मदन की गाड़ी पर बैठ गए. दनदनाते हुए दोनों चल पड़े. चौराहे पर गफूर भाई के छोटे साहबजादे रफत उल्लाह ने राह सी रोकते हुए कहा, "पान तो खींचे जाइए."

"पूछने वाले पर उन्हें श्रवहा हो है."

तीनों ने खूब कहकहे लगाए. थमाते ही रफत उल्लाह ने शरारत भरे में कहा, "हम पर तो आप को श्रवहा यहां के आदिवासी लोग जो मसल कहते वही हाल है हमारा कि डायन खाए तो लाल, न खाए तो भी मुंह लाल."

तीनों ने फिर कहकहे रफत उल्लाह ने पूछा, "मुझे आप से ए था रेंजर साहब."

"फरमाएं?"

"नहीं, ऐसा कोई जरूरी काम बाद में इतमीनान से बातें करेंगे... कब दफ्तर में?"

"शायद कल लौटेंगे?"

"बाहर जा रहे हैं?"

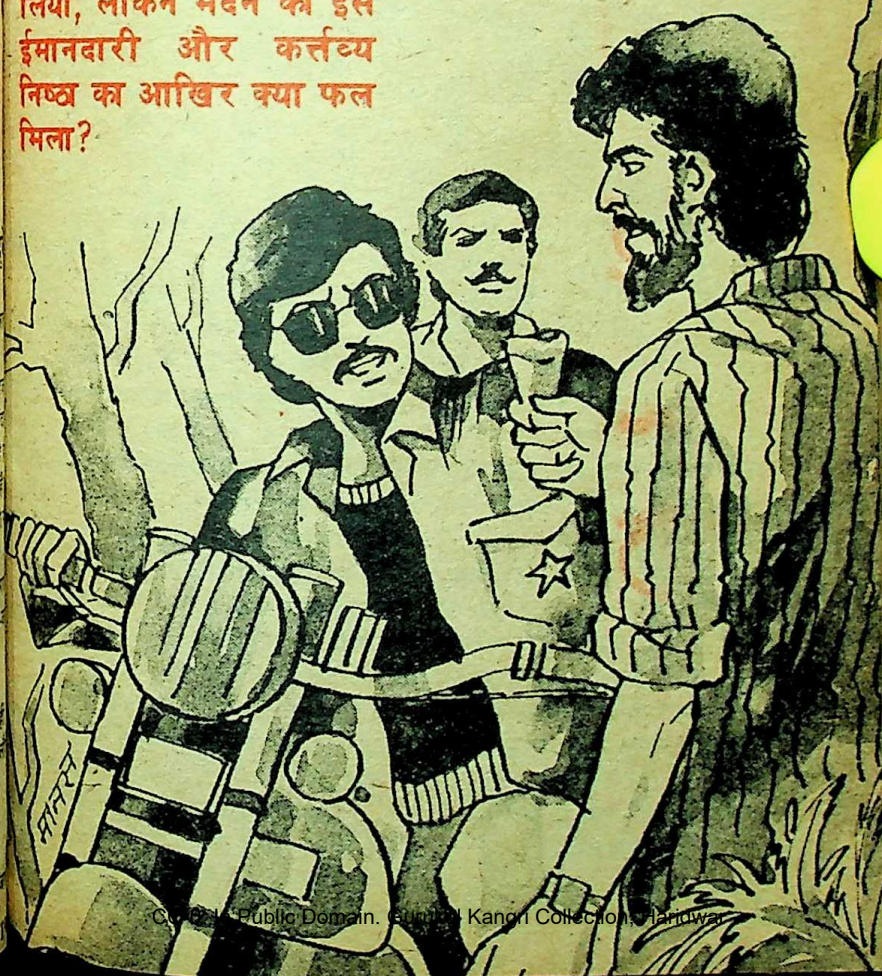
जो हां भरतक जा रहे हैं.

दिसंबर (प्रथम)

हुआ तो भोपाल तक जाना पड़ेगा।
 "भोपाल तक?"
 "हां।"
 "तो फिर जाइए।"
 "कोई खास काम हो तो कहिए?"
 "नहीं नहीं, बाद में देखेंगे... आप वापस आ जाइए।"

कर कहा, "साला हमारी थाह ले रहा था।"
 अपनी योजना के अनुसार रात के 10 बजे के लगभग मदन, मेहरसिंह के साथ सड़क के उसी मोड़ पर आ पहुंचा, जहां से पिछली रात को उन्होंने पगडंडी पकड़ी थी। पगडंडी पर आते ही आज उस ने अपनी गाड़ी की बत्ती बंद कर दी। पहाड़ की चोटी पर बैठे लोगों को वह अपनी उपस्थिति से अनभिज्ञ रखना चाहता था। अंधेरे में ही वह बड़ी सतर्कता से गाड़ी चलाता रहा। मेहरसिंह जब सिगरेट जलाने लगे, तो उस ने सिगरेट भी नहीं जलाने दी। जगहजगह ठोकर खाते हुए मदन गाड़ी बढ़ाता ही रहा।

सारे क्षेत्र में गफूर भाई का आतंक होने के बावजूद मदन ने अपनी जान पर खेल कर उस का चोरी का माल पकड़ लिया, लेकिन मदन को इस ईमानदारी और कर्तव्य निष्ठा का आखिर क्या फल मिला?



दो पहाड़ों के बीच की उस संकरी राह, जिसे यहां के लोग 'संकरी राह' कहते हैं, हम ने तो नहीं देखी थी। के करीब आने पर मदन ने गाड़ी रोक दी। फिर गाड़ी को एक झाड़ी के पीछे खड़ा कर के वह मेहरसिंह के साथ एक टीले पर बैठ गया। चांद आज भी अभी तक नहीं निकला था। चारों तरफ घुप अंधेरा छाया हुआ था। आसमान में सितारों की महफिल बरकरार थी। रात सायंसायं कर रही थी।

थोड़ी देर की प्रतीक्षा के बाद ही इन की बांछे खिल उठी थीं। क्योंकि सामने के पहाड़ की ढलान पर दो बत्तियां सहसा चमक उठी थीं। मदन ने मेहरसिंह का हाथ दबाते हुए हीले से कहा, "लगता है शिकार आ रहा है?"

मेहरसिंह ने उची दिशा में नजरें जमाए हुए कहा, "हां।"

वे दोनों सामने से आते हुए उस टुक का बेसद्री से इंतजार करने लगे। उस टुक की बत्तियां कभी चमक रही थीं, तो कभी घुप अंधेरे में गायब हो जाती थीं। बिल्कुल तिलस्म जैसा वातावरण प्रतीत हो रहा था। दूर से आते टुक की घरघराहट इस वातावरण को और रहस्यमय सा बना रही थी।

कुछ देर तक तो बत्तियों के बुझने, चमकने एवं घरघराहट के स्वर का यह मायावी खेल चलता रहा, किंतु फिर एकाएक यह सब कुछ बंद हो गया। घुप अंधेरा और सायंसायं फिर व्याप्त हो गई। सन्नाटा फिर मुखर सा होने लगा।

15 मिनट बीते, आधा घंटा बीता, शायद पौन घंटा बीत गया, परंतु टुक का अभी तक कहीं पता ही नहीं था। न घरघराहट न बत्तियों की चमक। मदन का माथा ठनका। टुक कहीं दूसरे रास्ते से तो नहीं निकल गया? उस ने मेहरसिंह से फुसफुसाते हुए पूछा, "इस के अलावा और कोई रास्ता है क्या?"

"नहीं साहब, भरे टुक के लिए इस के अलावा और कोई रास्ता नहीं है।"

"तो फिर कहां रह गया?"

"यही तो मुझे भी ताज्जुब ही रहा है।"

"किसी ने हमें देख लिया क्या?"
तक नहीं..."

तभी टुक की घरघराहट फिर से उनकी बत्तियां भी पास ही चमकीं। इन दोनों ने इसमें एकदूसरे के हाथ पर हाथ मारते हुए एक ही तरह मोर्चा संभाल लिया।

टुक की घरघराहट जब बिलकुल नजदीक ही सुनाई देने लगी तो मदन मेहरसिंह से कहा, "हिम्मत में काम ले डरना मत।"

"आप निश्चित रहिए," मेहरसिंह दृढ़ स्वर में उत्तर दिया।

टुक का स्वर जैसेजैसे नजदीक आ रहा था, तैसेतैसे मदन के मनमस्कि हलचल बढ़ती जा रही थी। तरबतर शंकाएं उसे परेशान करने लगी थीं। क्या ज्यादा लोग हुए तो क्या होगा? उन लोगों पास भी बंदूक तो शायद होगी? सीधेमादे से ये लोग आत्मसमर्पण नहीं करेंगे। आमनेसामने मुकाबला होगा आज?

मदन को एकएक मिनट भारी लग रहा था। सामने के मोड़ पर जब टुक उभरा कहीं उसे कुछ संतोष हुआ। उस ने बंदूक मजबूती से थाम लिया।

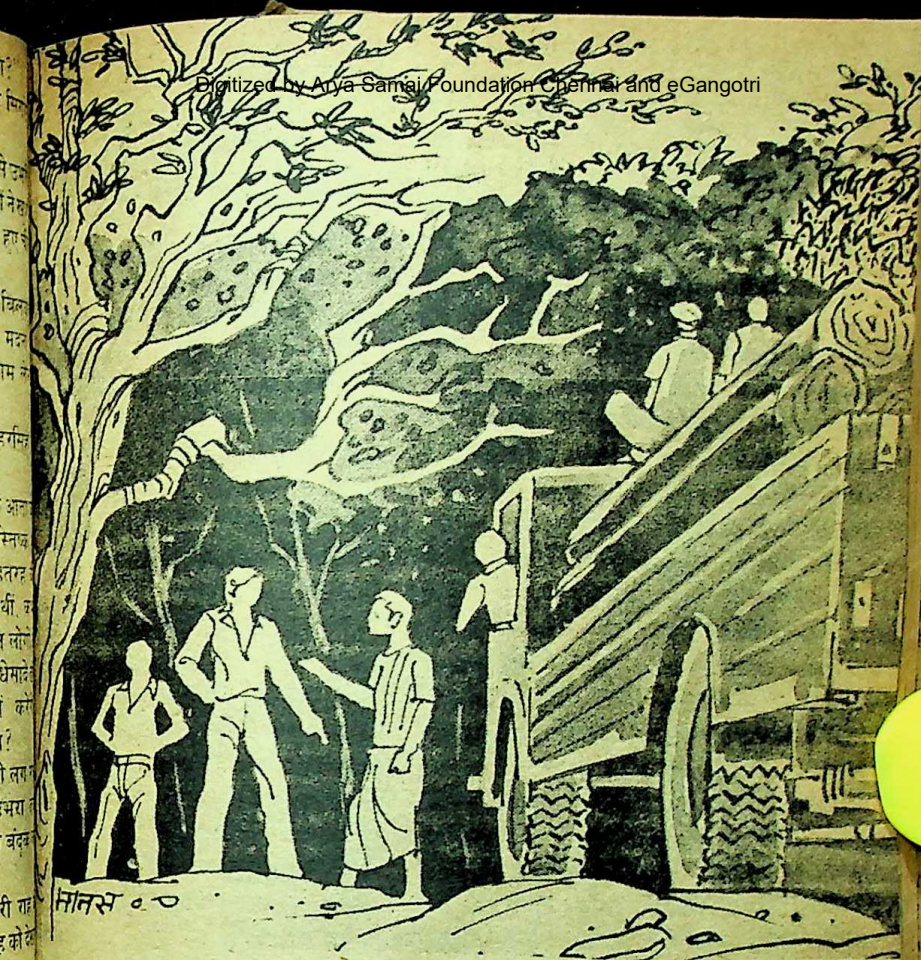
टुक के चालक ने इस संकरी राह दोनों ओर खड़े मदन और मेहरसिंह को ही हड़बड़ाहट में ब्रेक मार दिया। वापस की जगह थी नहीं, अतएव वह असमंजस मुद्रा में रुका रहा।

मदन और मेहरसिंह ने टीले पर से का बारीकी से निरीक्षण किया। उन्होंने कि लगभग पांच आदिवासी ऊपर बैठे हैं। चालक के पास केवल एक व्यक्ति है।

टीले पर से कूद कर बंदूक थामे हुए वे दोनों टुक की ओर बढ़ने लगे। टुक के चालक जा कर मदन ने रेंजरी रोब से पूछा, "क्या बताओ?"

चालक के पास बैठा हुआ व्यक्ति ने से बाहर आते हुए विनम्र स्वर में बोला, "परमिट तो नहीं है साहब।" लपक कर मदन ने टुक में सवार होकर कहा, "तो फिर"

विसंबर (प्रथम)



"किसी भी भाई का हो...परमिट तो नहीं है न?" मदन ने कहा.

ले चलो हमारे साथ."

उस व्यक्ति ने हाथ जोड़ते हुए कहा,
"साहब?"

ट्रक के भीतर से मदन गुराया, "क्या
है?"

"ये माल फारेस्ट किंग का है."

"कौन फारेस्ट किंग?"

"गफूर भाई."

"किसी भी भाई का हो...परमिट तो
नहीं है न?"

"नहीं है."

"चोरी का माल है न?"

उस व्यक्ति ने कोई उत्तर नहीं दिया.

मदन ने चालक को डपटते हुए कहा,

"बढ़ाओ गाड़ी."

मेहरसिंह भी नीचे से गरजा, "सुना
नहीं, साहब क्या कह रहे हैं?"

चालक ने फिर गाड़ी स्टार्ट नहीं करी.
वह नीचे खड़े अपने साथी की ओर ही देखता
रहा.

नीचे खड़ा वह व्यक्ति फिर गिड़गिड़ाया,
"हजूर, हम तो नौकर लोग हैं. आप सेठ से
बात कर लीजिए?"

मदन ने पूछा, "कहाँ से सेठ?"

"सेठ तो घर पर है।"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बस तो कर लेंगे बात। तुम बढ़ाओ गाड़ी।"

वह व्यक्ति मदन के पास आ कर बैठ गया। चालक ने उस का संकेत पाते ही गाड़ी स्टार्ट करी। मेहरसिंह बंदूक ताने ट्रक के पीछे जाने लगे। तभी वे पांचों आदिवासी ट्रक पर से कूद कर भाग खड़े हुए। मेहरसिंह मोटरसाइकिल पर ट्रक के पीछेपीछे चलने लगे।

मदन ने अब इतमीनान से सिगरेट सुलगाते हुए पास बैठे व्यक्ति से पूछा, "क्या नाम है तुम्हारा?"

"रतनसिंह।"

"गफूर भाई के यहां नौकर हो तुम?"

"जी हां।"

"यह काम लेते हैं वह तुम से?"

रतनसिंह कुछ नहीं बोला।

बस्ती में आते ही जब चालक ट्रक को गफूर भाई के पीठे की ओर मोड़ने लगा तो मदन ने उस के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा, "इधर नहीं, दफ्तर ले चलो।"

रतनसिंह गिड़गिड़ाया, "पहले सेठ से बात कर लीजिए न?"

मदन ने अफसरी रौब से हुक्म दिया, "सेठ को बात करनी होगी, तो वह आ जाएंगे मेरे पास। तुम्हें जो कहा गया है, वह करो।"

मेहरसिंह भी मोटरसाइकिल को बराबर ला कर बोले, "पहले दफ्तर चलो, साहब का कहना मानो।"

चालक ने विवश हो कर ट्रक को दफ्तर की ओर मोड़ा। सेठ को खबर देने के लिए रतनसिंह उतर गया।

लकड़ी

से भरा हुआ ट्रक जब दफ्तर के अहाते में आ कर लगा, तब

रात का एक बज रहा था। चारों तरफ सन्नाटा छाया हुआ था। मदन ने ट्रक में से कूद कर विजयी वीर की तरह चारों ओर देखा। फिर वह इठलाता हुआ अपने दफ्तर में जा बैठा। मेहरसिंह भी पीछे लगे ही हुए थे।

मदन और मेहरसिंह साबुन धोकर हाथ धोके बाद कागजी काररवाई में जुट गए यों 15

मिनट भी नहीं बीते होंगे कि गफूर भाई का वही छोटा साहबजादा रफतउल्लाह स्कूटर पर दनदनाता हुआ आ पहुंचा। दफ्तर में दाखिल होते ही वह बोला, "नमस्कार साहब।"

मदन ने इठलाते हुए कहा, "नमस्कार।"

"हो आए धार?"

"जी हां। उस जरूरी काम के लिए बात करने आ गए आप?"

"आप ने तो दूसरा जरूरी काम पैदा कर दिया।"

"मैं ने?"

"जी हां।"

"कौन सा?"

"यह ट्रक..."

"यह ट्रक आप का है?"

"जी हां। हम से ऐसी क्या नाराजगी हो गई, साहब?"

"अजी, नहीं जी, रफतउल्लाह साहब, ऐसी कोई बात नहीं है।"

"कोई बात नहीं है? सच कह रहे हैं रेंजर साहब?"

"मैं झूठ क्यों कहने लगा?"

"तो फिर यह ट्रक छोड़ दीजिए।"

"अब कैसे छोड़ सकता हूं?... सारे कागजात बन गए।"

"कागजात फट सकते हैं।"

"रफतउल्लाह भाई, जरा मेरी मजबूरियों का भी खयाल कीजिए। कागज बनाना आसान है... फाड़ना कठिन है।"

"देखिए रेंजर साहब, मुझे बहलाने की कोशिश मत कीजिए। साफसाफ कहिए, आप क्या चाहते हैं? आप का जो हुक्म होगा वह मैं पूरा करूंगा। आप ये कागज फाड़ डालिए।"

"कागज नहीं फटेंगे।"

"नहीं फटेंगे?"

"मेरी मजबूरी है रफतउल्लाह भाई।"

"अभी भी वक्त है रेंजर साहब, मेरी मान लीजिए। चाहें तो सौदा कर लीजिए, मैं फाड़ डालिए कागज।"

"आप यहां दस्तखत कर दीजिए."

नीलाम की बोली की तरह रफत उल्लाह
बढ़बढ़ कर बोली लगाने लगा, "10 हजार,
15 हजार, 20 हजार..."

मदन फिर भी दस्तखत के लिए कागज
आगे बढ़ाता रहा. मुंह फुलाए रफत उल्लाह
बला गया.

थोड़ी देर बाद ही जीप में रफत उल्लाह
के बड़े भाई बन्ने भैया तशरीफ लाए. वह इस
इलाके के नामी पहलवान हैं. इन से लोग
कांपते हैं.

हाथी की तरह झूमते हुए वह आए और

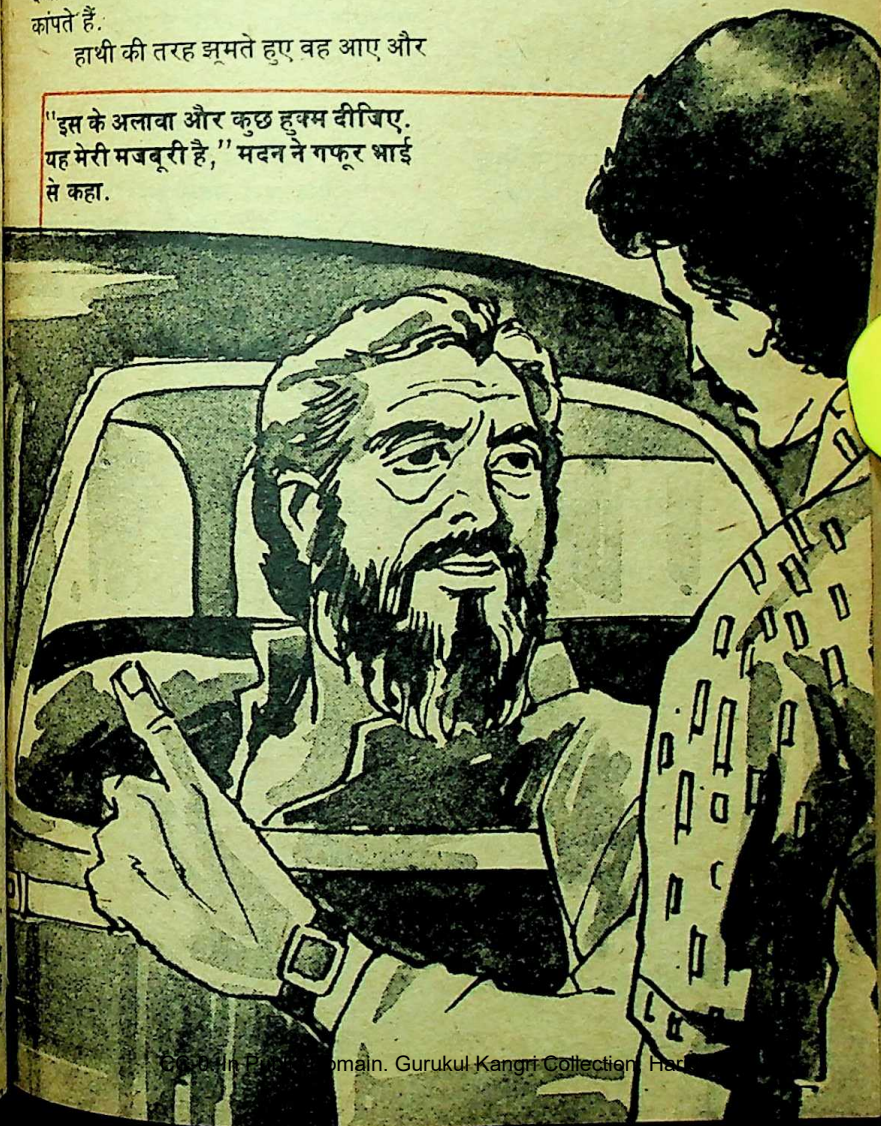
"इस के अलावा और कुछ हुक्म दीजिए.
यह मेरी मजबूरी है," मदन ने गफूर भाई
से कहा.

नगाड़े की तरह बोले, "क्या बात है रंजर
साहब?"

मदन ने उन के अभिवादन में हाथ
जोड़ते हुए कहा, "कोई बात नहीं है,
पहलवानजी."

"तो फिर यह ट्रक क्यों रोक रखा है?"

"जाप्टे की काररवाई के लिए रोका है,
पहलवानजी."



"हमारे खिलाफ जाप्ते की काररवाई?
आप हमें नहीं जानते हैं क्या?"

"आप को कौन नहीं जानता,
पहलवान."

"वस तो ट्रक को जाने दीजिए. याद रखिए हम तो आप लोगों की खैरियत की ताबीज हैं. हमारे लायक काम हो तो बोलिए?"

"आप की मेहरबानी है, पहलवानजी."

"आप की भी तो मेहरबानी होगी, ट्रक जाने दीजिए?"

पहलवान ने इतना कह कर जोरदार कहकहा लगाया. मदन और मेहरसिंह ने भी इस कहकहे का साथ दिया.

कहकहा थमते ही पहलवान ने पूछा,
"हां, तो फिर क्या हुक्म है रेंजर साहब?"

मदन ने नम्रता से कहा, "हुक्म तो आप करिए, पहलवानजी?"

"अर्ज तो आप सुन नहीं रहे हैं... हुक्म भला क्या...?"

"हमारी भी कुछ मजबूरियाँ हैं, पहलवान। ऊपर से हमारे कान उमड़े जाते हैं। इसी लिए हमें ऐसे अप्रिय काम करने पड़ते हैं। यह हमारी मजबूरी है।"

"आप के कान कौन उमेठता है... हमें बताइए. हम साले के हाथ तोड़ दें. बस, जरा सा इशारा कर दीजिए. बोलिए."

"पहलवान, पानी में रह कर मगर से
वैर नहीं किया जाता है."

"बैर आप का नहीं, हमारा होगा, रेंजर साहब. हम सब निबट लेंगे. इधर नजर डालने की किस ने जरूरत की है, आप तो बस इतना ही बतला दीजिए?"

"मझे बालबच्चे पालना है, पहलवान."

"कहा न, आप पर कोई आंच नहीं आएगी?"

"ये तो आप की मेहरबानी है...
मगर...?"

"अगरमगर को गोली मारिए, आप तो बंस जरा सा इशारा...?"

"नहीं पहिलियान, मरण दीजिआन." Gurul

"तो फिर रेंजर साहब हम यही समझेंगे

कि यह सब आप की ही कारगुजारी है?

“आप जो चाहे समझिए. आप सामान्य
वान हैं. मैं तो एक अदना रेंजर
मुझे अपने आला अफसरों का भी हुक्म
मानना पड़ता है और आप जैसे मेहरबानों का
भी हुक्म सिर आंखों पर रखना पड़ता है. यह
समझिए मैं तो दो पाटों के बीच में फिसल
हूँ.”

एक मिनट की खामोशी के बाद पहलवान ने बड़ी तलखी से पूछा, "तो आप नहीं मानेंगे?"

मदन ने हाथ जोड़ कर कहा
"पहलवानजी, मेरी मजबूरी को समझने के
कोशिश तो कीजिए?"

लेकिन बन्ने पहलवान ने ऐसी कोशिश नहीं करी, वह तैश में चले गए

लगभग आधे घंटे बाद एक स्लेटी त
की एंबेसडर कार मदन के दफ्तर के अहाते
दाखिल हुई. मदन ने खिड़की में से झाँक
देखा तो उस की बाँछें खिल उठीं. वह इ
कार की जैसे प्रतीक्षा ही कर रहा था
मेहरसिंह से उस ने कहा भी था, "तेंदुए, जी
वगैरा सब आ गए. बबर शेर अभी तक न
आया?"

इस कार पर नजर पड़ते ही मेहरारो
बोल उठा, "लो साहब, बबर शेर भी उ
गया?"

मदन लपक कर बाहर आया। एवसे
कार में गफूर भाई तशरीफ लाए थे। खिच
दाढ़ी, गोल चेहरा, तीखे नाकनकश, गंदे
रंग, चेहरे पर सुर्खी, सुता हुआ कसरी बदन,
ढीलाढाला मौलानानुमा सफेदझक कुरता
पाजामा—ऐसे थे गफूर भाई.

मदन ने उन की अगवानी सी करत
कहा, "इतनी रात को आप ने तकलीफ
करी?"

अपनी बड़ीबड़ी आंखों की तीखी नज़रों से
मदन पर एक क्षण डालते हुए उन्होंने कहा
"आप ने दी तकलीफ."

Kangri बोली बिन मवाद मे हाथ जोड़ते हुए
बोला, "मेरी क्या विसात जो मैं आप के

तकलीफ दूं?... मैं तो आप का सेवक हूं."

Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

"फरमाइए?"

"इस टुक को जाने दीजिए."

"इस के अलावा और कुछ भी हुक्म दे दीजिए... यह मेरी मजबूरी है."

स्वध से गफूर भाई सामने हाथ जोड़ कर खड़े रेंजर मदन को देखने लगे.

कएक पल की खामोशी के बाद वह बोले "यदि ऐसी ही कोई मजबूरी है, तो आप इस मामले को बेनामी बना दीजिए. लावारिस में डाल दीजिए."

धीरगंभीर स्वर में मदन ने उत्तर दिया,

सोचिए.

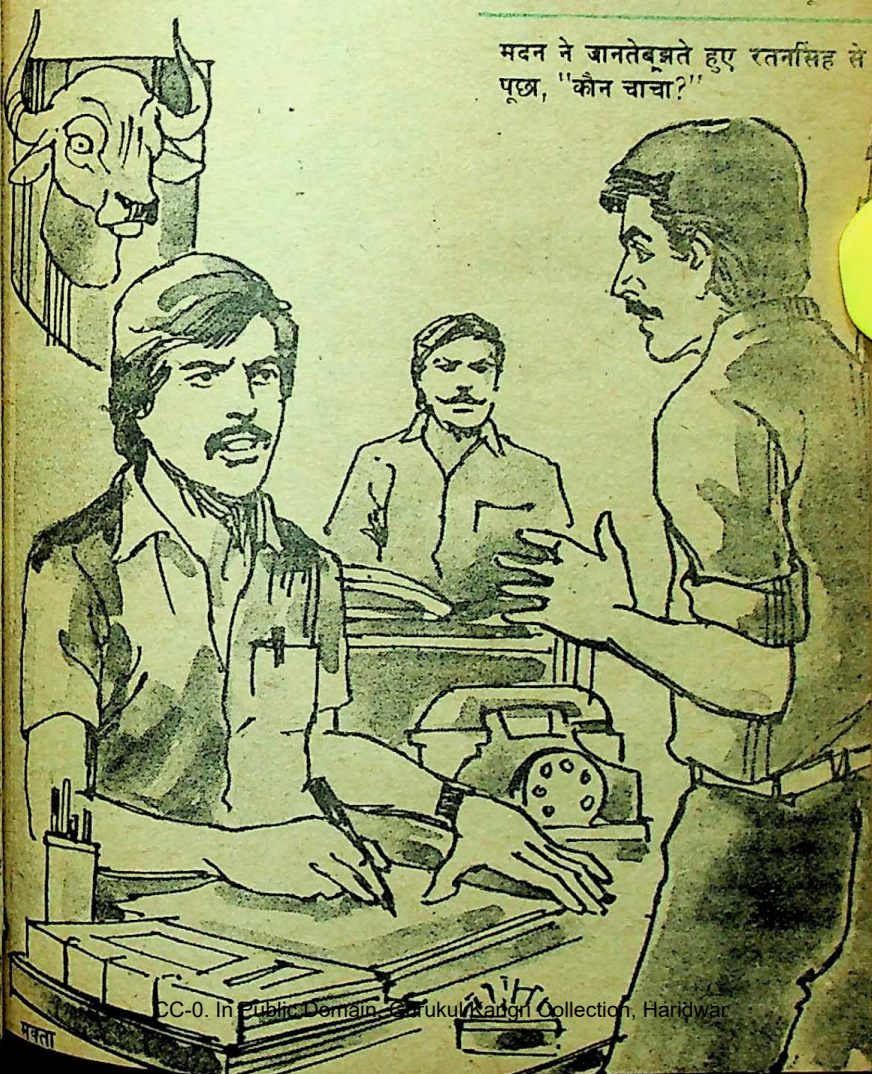
गफूर भाई आश्चर्य से बोले, "अब सोचने को रह ही क्या गया? खैर, खूब सोच लीजिए. सोच कर मुझे इत्तला कर देना."

इतना कह कर उन्होंने कार चलाने का संकेत कार चालक को दिया. मदन तपाक से बोला, "चाय तो पी लीजिए?"

गफूर भाई ने मुसकराते हुए कहा, "शुक्रिया."

स्लेटी कार फुर्र से उड़ गई. दफ्तर के इस लंबेचौड़े अहाते में खड़ा मदन दूर जाती

मदन ने जानतेबूझते हुए रतनसिंह से पूछ, "कौन चाचा?"



कार को एकटक देखता रहा. कार जब आंखों से ओझल हो गई तो वह खोई-खोई सी मजरा से चारों तरफ देखने लगा. चांद अब निकल आया था. चारों ओर की पहाड़ियाँ इस चांदनी में जगमगा उठी थीं. इन पहाड़ों से गफूर भाई के शब्दों की प्रतिध्वनि सी ही मदन को इस क्षण सुनाई पड़ने लगी, "खूब सोच लीजिए."

मदन को वहीं खड़ा देख कर मेहरसिंह बाहर आ गए. उन्होंने धीरे से पूछा, "अब क्या विचार है साहब?"

"आप का क्या विचार है?"

"मैं क्या कहूँ? जो आप का विचार, वह मेरा विचार."

"फिर भी कुछ तो कहिए?"

"ये लोग बड़े खतरनाक हैं. इन की पहुंच ऊपर तक है."

"यह सब तो मुझे पता है. आप तो यह बताइए कि अब क्या करें?"

"मेरे खयाल से तो अब इस मामले को ज्यादा खींचना ठीक नहीं है. इन लोगों को हम ने काफी जलील कर लिया. एक तरह से नाक ही काट ली. आज तक किसी ने भी इतना हौसला नहीं दिखाया था. इसलिए इसे यहीं खत्म करना ठीक रहेगा?"

"मगर, मेहरसिंहजी, इस बात की क्या गारंटी है कि शिकार पलट कर वार नहीं करेगा?"

"वार तो हर हालत में होगा."

"इसलिए मैं तो सोचता हूँ कि घायल शेर को छोड़ना ठीक नहीं रहेगा."

मेहरसिंह ने सहसा कोई जवाब नहीं दिया. मदन ने फिर पूछा, "क्या खयाल है आप का?"

मेहरसिंह ने गहरी सांस लेते हुए कहा, 'आप का जो खयाल है, वही मेरा भी खयाल है, किंतु इस में भी खतरा है, क्योंकि शेर किसी हालत में भी हम से नहीं मरेगा."

"मरे भले ही नहीं, पर दुख तो पाएगा न?"

"वह दुख पाएगा, तो हमें भी दुख देगा."

"देने दो. ओखली में जब सिर दिया तो

फिर मूसलों से क्या डरना? उसे पता तो लगे कि रेंजर भी कोई हस्ती है."

"तो फिर डटे रहिए."

दफ्तर में आ कर मदन और मेहरसिंह जाप्ते की काररवाई के कागजात तैयार करने लगे.

कुछ देर बाद ही रतनसिंह आया और उस ने मदन से पूछा, "चाचा ने पुछवाया है कि आप ने सोच लिया?"

मदन ने जानते-बूझते हुए भी अनजान बन कर पूछा, "कौन चाचा?"

"गफूर चाचा, फारेस्ट किंग..."

"कह देना कि सोच लिया."

"क्या सोचा?"

"यही कि वे आ कर कागजों पर दस्तखत कर जाएं."

हैरान सा रतनसिंह उलटे पांव लौटने लगा.

किंतु वह अहाते से बाहर भी नहीं पहुंचा था कि मदन को खयाल आया और किसी के नहीं तो इस के दस्तखत फिलहाल करा लेना ठीक रहेगा. इसी लिए उस ने आवाज लगाई, "रतनसिंह?"

रतनसिंह ने चौंके कर पूछा, "जी?"

"तुम यहां आओ."

पास आ कर रतनसिंह ने पूछा,

"फरमाइए?"

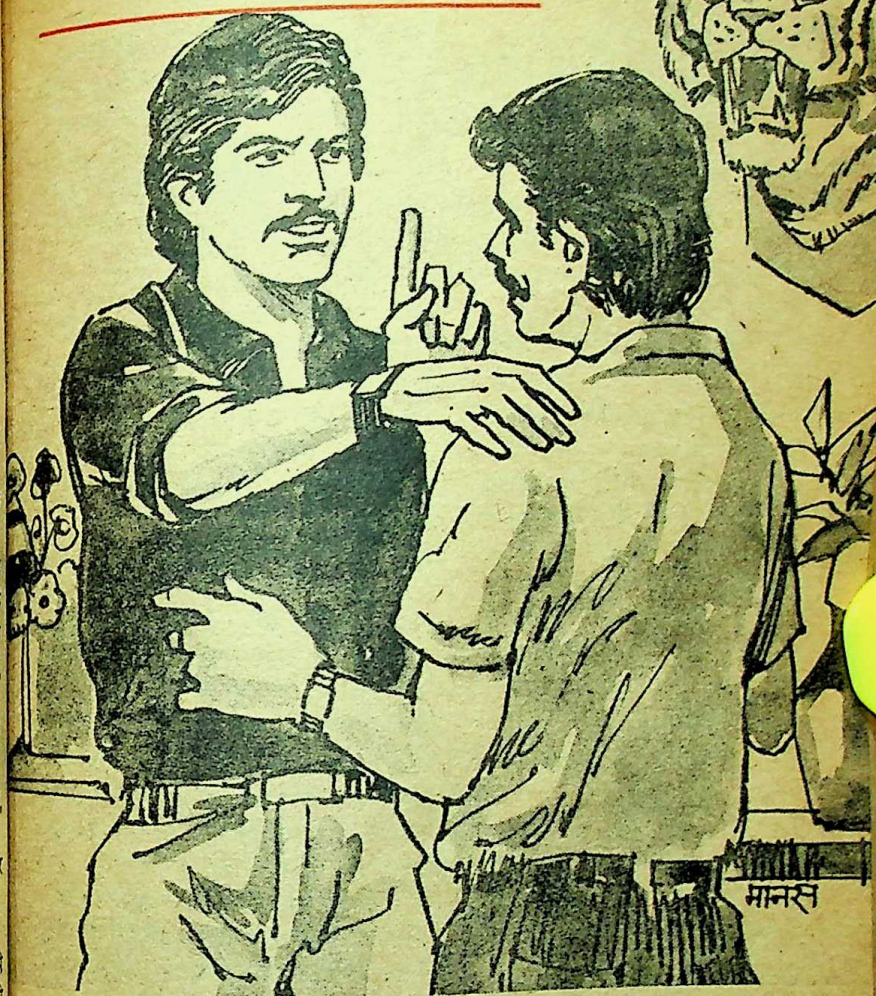
"यहां बैठ जाओ. सेठ को हम खबर करा देंगे."

दूसरे

दिन से ही गफूर भाई की ओर से मदन पर वार होने लगे. सब ने पहले उन की ओर से थाने में रिपोर्ट लिखाई गई कि रेंज फारेस्ट आफिस वालों ने उन का ट्रक किराए पर लिया था. उस ट्रक को वे लोग खाली नहीं करा रहे हैं. किराया भी नहीं दे रहे हैं. इस से उन का नुकसान हो रहा है.

राजनीतिक मोर्चा भी गरम हो उठा. छुटभैया नेताओं ने बीच बाजार में सभा की तथा आरोप लगाए. चीख-चीख कर कहा गया कि यह नारा रेंजर मदन बहुत भ्रष्ट है. यह इतने रेंज में जब से आया है, तब से यहां भ्रष्टाचार

मेहरसिंह का कंधा थपथपाते हुए मदन ने कहा, "कौड़े
बात नहीं, शिकार करने में कोई डर नहीं है।"



बहुत बढ गया है. खूले आम रिश्तत मांगी जाती है. झूठे मस्टर रोल भरभर के हजारों रुपए हड़पे जा रहे हैं. गरीब आदिवासियों का शोषण हो रहा है. जमीन के पट्टे देने में भी मुठ्ठी गरम की जाती है. जो इस की मुठ्ठी गरम नहीं करता है, उस के खिलाफ यह झूठे प्रकरण बनाता है. लोगों को परेशान करता है. इस का हौसला तो देखो, गरीबों को मारते-मारते यह अब रफत उल्लाह भाई-जैसे लोगों से भी

लगा. उन के खिलाफ इस ने झूठा प्रकरण बनाया. लकड़ी की चोरी यह खुद करवाता और इलजाम दूसरों पर लगाता है. इस कारनामे इतने हैं कि यदि बयान करने बैठें, महाभारत बन जाए.

थानसिंह नामक एक आदिवासी विधिवत शिकायत कराई गई कि रेंजर रिश्तत न मिलने पर उस का शोपडा तह दिया, जमीन का पट्टा रह कर दिया

वगैरह. परचेबाजी भी हुई. अखबारों में मनमनीखेज खचने लगे. दिन छपने लगे.

मदन के क्वार्टर पर रात को पत्थर भी बरसने लगे. कुछ बंदकधारी लोग मंदेहास्पद स्थिति में आसपास मंडगते भी नजर आए.

खामी हलचल मच गई. रोज नगना गल खिलने लगे. विधानसभा तक में मामला उठ गया. इस भ्रष्ट रेंजर के खिलाफ कार्रवाई करने के लिए दबाव पर दबाव आने लगे. कई विधायक और मंत्री इस वायत सक्रिय हो उठे.

मदन के वरिष्ठ अधिकारियों ने उस मे रिपोर्ट पर रिपोर्ट तलब करनी शुरू कर दी.

विरोधियों के इन सारे वारों को झेलता हुआ मदन अपना काम करता रहा. प्रतिरक्षात्मक जितनी भी कार्रवाइयां हो सकती थीं, वे सब उस ने करीं. अकेलेदकेले बाहर जाना उस ने बिलकुल बंद कर दिया. अपना सारा ध्यान उस ने ट्रक वाले प्रकरण पर ही केंद्रित रखा. इस प्रकरण में उस ने तकड़ी की कीमत, ट्रक की कीमत, जरमाना आदि मिला कर लगभग दो लाख का मामला बना डाला. इसे न्यायालय में पहुंचा भी दिया. सारे दबावों के बावजूद उस ने ट्रक की जन्ती सरकार रखी.

बीच उस ने अपना सारा सामान बंधा हुआ ही रखा, क्योंकि वह जानता था कि किसी भी क्षण उस का तबादला निश्चित सा है. हुआ भी यही. उस के बादले के आदेश तार से आए. डिप्टी रेंजर मेहरसिंह को तत्काल चार्ज दे कर बस्तर के रदराज इलाके में कार्यभार ग्रहण करने का आदेश उसे मिला.

मदन ने सहर्ष अपना कार्यभार अपने हायक को सौंप दिया. सारा स्टाफ उसे विदा रते समय भावविभोर सा हो उठ. उस के अर्थकल के स्मरणीय निरूपित किया गया.

इधर यह बिदाई समारोह चल रहा था और उधर दूसरा ही हंगामा खड़ा हो गया. टभैया नेताओं ने मदन के निजी सामान

वाले ट्रक को घेर लिया. वे जोरजोर से चिल्लाते हुए कहने लगे कि इस सामान की जांच की जाए. इस में चोरी का माल है.

शोरगुल को सुन कर मदन वहां आया तब तक तो ट्रक में से दो बल्लियां बिना हेमर वाली बरामद भी कर ली गई. उन बल्लियों को दिखादिखा कर छुटभैया नेता चीखने लगे. "देख लो, ये रेंजर चोर है. सरकारी माल छिपा कर ले जा रहा था."

हजूम इकट्ठा हो गया. भोपाल, इंदौर धार और जाने कहांकहां टेलीफोन किए गए थाने में रिपोर्ट की गई. पंचनामा बनाया गया ट्रक को घेर कर लोग खड़े हो गए. भीगी बिल्ली सा बना मदन यह सब देखता रहा.

वन विभाग के बड़ेबड़े अफसर भागेभागे आए. उन्होंने जनता का गुस्सा देखते हुए मदन को तत्काल निर्लंबित कर दिया एवं जांच के आदेश दे दिए.

संयोग से मदन के हितचिंतक क्षेत्रीय फारेस्ट अफसर ही जांच के लिए तैनात किए गए. उन्होंने सारे प्रकरण को बारीकी से छानबीन कर फैसला दे दिया कि इलजाम झूठा है. मदन को फंसाने के लिए ही यह चाल चली गई थी. बिना हेमर वाली दोनों बल्लियां किसी ने कहीं से ला कर ट्रक में रख दी थीं. रेंजर ने ही ये सामान में रखवाई, ऐसा पक्का साक्ष्य नहीं मिला.

यों निर्दोष सिद्ध हो जाने पर डिप्टी रेंजर मेहरसिंह ने मदन को बधाई देते हुए अफसोस भी जाहिर किया, "साहब, हमें बेहद अफसोस है. हम लोग उधर बिदाई पार्टी में व्यस्त रहे और इधर आप पर यह वार हो गया. झूठा इलजाम लगा कर आप को जलीत किया गया."

मेहरसिंह का कंधा थपथपाते हुए मदन ने कहा, "कोई बात नहीं. शिंकार करने में तो ऐसे जल्म लगते ही हैं. यही क्या कम है कि हम ने ऐसे खूंखार शेर पर गोली दागी. आप भी इस शेर का पीछा मत छोड़िएगा. किसी न किसी दिन तो हम इस का काम तमाम कर ही देंगे."



इस स्तंभ के लिए समीक्षकों की कटिंग भेजिए. कटिंग के नीचे अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें. सर्वोत्तम कटिंग पर 15 रुपये की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी.

भेजने का पता: मुक्ता, दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली-110055.

धर्मांधता महंगी पड़ी

एक मौलवी साहब ने चलती रेलगाड़ी की छत पर नमाज पढ़ने की कोशिश की तो उन्हें हस्पताल जाना पड़ा. वह बरेली पीलीभीत रेलमार्ग पर चलने वाली यात्री गाड़ी की छत पर यात्रा कर रहे थे. जैसे ही उन्हें अज्ञान की आवाज सुनाई पड़ी, वह अंगोछा बिछा कर नमाज पढ़ने लगे.

लेकिन जब वह सिजदा करने लगे तो ट्रेन से नीचे जा गिरे.

रेलवे पुलिस को सूचना मिली तो वह घटनास्थल पर पहुंची और बेहोश मौलवी साहब को हस्पताल में भरती करवाया.

—पंजाब केसरी, नई दिल्ली (प्रेषक: कुक्कु)

बच्चे पकड़ने वाले खुद पकड़े गए

चिरमिरा के हल्दीवाड़ी में सेना दफाई नामक स्थान पर एक बच्चे की मृज्जबृज्ज से पुलिस बच्चे उड़ाने वाले एक गिरोह को गिरफ्तार करने में सफल हो गई.

एक गृहिणी अपने काम में व्यस्त थी और उस की बेटी बाहर खेल रही थी कि अचानक बच्चों को उड़ाने वाले गिरोह के एक सदस्य ने उसे उठा लिया और बोरे में भरने लगा. तभी पास ही में खेल रहे एक बच्चे ने होहल्ला शुरू कर दिया और अपराधी के सिर के बाल पकड़ लिए. आवाज सुन कर लोगों की भीड़ जमा हो गई और बच्ची को छुड़ा लिया गया.

उस के बाद पुलिस अपराधी सहित गिरोह के 10 अन्य सदस्यों को गिरफ्तार करने में भी सफल हो गई.

बताया जाता है कि यह गिरोह पिछले कई वर्षों से बच्चे उड़ाने का काम कर रहा था. गिरोह द्वारा अधिकांश बच्चों के हाथपैर तोड़ कर सार्वजनिक स्थानों पर उन से भीख मंगवाई जाती थी. कुछ बच्चों को अच्छी कीमत ले कर बेच भी दिया जाता था.

—नवभारत, रायपुर (प्रेषिका : अनुपमा अग्रवाल)

सुबरी के द्वारा ठगी

पानागढ़ में एक सुंदरी और एक धूर्त संन्यासी ने मिल कर एक युवक से पांच हजार रुपए ठग लिए. संन्यासी ने उस युवक को अपने पास बुला कर कहा, "मैं हिमालय का रहने वाला योगी हूं. मेरे पास एक कीमती पत्थर है और वह मैं तुम्हें देना चाहता हूं, क्योंकि तुम मुझे जंच गए हो. उस पत्थर को अपने पास रखोगे तो तुम्हारी हर इच्छा पूरी होगी. चाहो तो पत्थर की परीक्षा ले सकते हो."

संन्यासी ने उसे पत्थर दे कर कहा कि देखो, "वहां एक सुंदर युवती बैठी है. उस के पास जा कर बैठो और उस से उसी की कामना करो. फिर इस पत्थर को हाथ में ले लो."

युवक उस के आस में आ गया और उस युवती के पास बैठ गया। अचानक ही युवती
युवक का हाथ पकड़ने लगी। "तुम्हारे पिताजी ने तुम्हें कहा था कि तुम मुझे छोड़ कर
चले गए थे? मैं तो कब से तुम्हारा इंतजार कर रही हूँ।"

युवक गदगद हो गया और उस ने संन्यासी के पास जा कर पत्थर खरीदने की हवा जाहिर की. संन्यासी ने पांच हजार रुपए मांगे, जो युवक ने तुरंत दे दिए और युवती को ले कर होटल में चला गया.

होटल से एक घंटे बाद युवती वाथलूम जाने के बहाने निकल गई और उस का और सामान ले गई. युवक उसे कुछ देर तक खोजता रहा.

अंत में उसे इस बात का एहसास हुआ कि वह ठगा गया है तो वह युवती को दूढ़ता हनु स्टेशन पर पहुंचा.

स्टेशन पर पहुंच कर उसे पता चला कि युवती और सन्यासी बर्दवान वाली रेलगाड़ी चले गए।

पिछले कुछ दिनों में बेलपुर में यह युवती और सन्यासी सौंदर्यलोलुप धनिकों को लगभग 50 हजार रुपए का चना लगा चके हैं.

-दैनिक भास्कर, इंदौर (प्रेषक : बालकृष्ण नीम)

हथकड़ी पर भी हाथ की सफाई

राजस्थान के कोटा जिले के अभियुक्त ने हाथ में हथकड़ी होने के बावजूद हाथ की सफाई दिखा दी और एक आदमी की घड़ी साफ कर दी. पुलिस उसे अदालत में ले जा रही थी, लेकिन वहां भी उस ने अपने हाथ की सफाई दिखा दी.

-नई दुनिया, इंदौर (प्रेषिका : आशाम्बी खंड)

सम्प्लोहन से ठगी

कामठी में पुलिस ने एक ऐसे ठग को गिरफ्तार किया है, जो एक स्थानीय व्यापारी युवक को सम्मोहित कर के 10 दिन में 31 हजार रुपए ठग ले गया था।

ठाग मुरलीधर उर्फ राजेश उर्फ लल्लू शर्मा उस युवक को सम्मोहित करता था और उसके बाद मंहमांगी रकम ले कर चला जाता था.

- दैनिक राजदर्पण, अकोला (प्रेषक : जगदीशप्रसाद साहू) (सर्वोत्तम)



आप मांग कर खाते हैं?

मांग कर कपडे पहनते हैं?

सांग कर बस, टाम व रेल में सफर करते हैं?

मांग कर सिनेमा देखते हैं?

मांग कर रेस्त्रां में चायकाफी पीते हैं?

तब

मांग कर पत्रपत्रिकाएं व पुस्तकें क्यों पढ़ते हैं?

निजी पुस्तकालय आप की शोभा है, आप के

परिवार की शान है, उन्नति का साधन है।

मान कर नहीं, खरीद कर पढ़िए.

भारतीय उपग्रह इनसेट -1 बी
 बैलेंजर द्वारा सफलता पूर्वक छोड़ा गया है।
 भारतीय वैज्ञानिक विक्रम साराभाई ने भारत

में अंतरिक्ष अनुसंधान का कार्य प्रारंभ किया
 था। यह नवा सतीश धवन आदि
 अंतरिक्ष विशेषज्ञों ने इसी कार्य को प्रगति के
 पथ पर अग्रसर किया है।

भारतीय उपग्रह



इनसेट-1बी

लेख • चित्रा गर्ग

भारतीय वैज्ञानिकों ने
 नए उपग्रह इनसेट-1
 बी को सफलता पूर्वक
 अंतरिक्ष में भेज दिया
 है, आखिर करोड़ों रुपए
 की लागत से बने इस
 उपग्रह से देश को क्या-
 क्या लाभ होंगे?



इनसेट-1बी का बनाने का मुख्य उद्देश्य यह है कि हम चौबीसों घंटे मौसम पर निगाह रख सकें।

भारत एक कृषि प्रधान देश है। कृषि के नियोजन, वनों की सुरक्षा, वनों से प्राप्त लकड़ी की सुरक्षा, रसायनों के उपयोग, भारत के आर्थिक नियोजन आदि के प्रबंध के लिए मौसम पर निगाह रखना अति आवश्यक हो गया है। अनाज की आपूर्ति के लिए मौसम की गतिविधि पर निगाह रखते हुए मौसम के अनुसार फसल बो कर पैदावार बढ़ाई जा सकती है।

इसी कार्य के लिए भारत ने सर्वप्रथम भास्कर उपग्रह छोड़ा था, परंतु उस का कार्य काल बहुत कम था। रोहिणी भी बहुत अधिक सहायता नहीं कर सका। पिछले वर्ष भारत ने इनसेट-1 ए, 10 अप्रैल, 1982 को नासा (नेशनल एरोनोटिक्स एंड स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन) के डेल्टा 3910 प्रक्षेपण यान द्वारा छोड़ा था, परंतु उस में कुछ तकनीकी दोष थे। उस में लगा तापमापी (रेजोल्यूशन रेडियोमीटर) शीघ्र ही खराब हो गया और वह केवल तीन माह ही मौसम के बारे में जानकारी दे सका।

इनसेट-1बी का प्रक्षेपण

इन्हीं तकनीकी दोषों को ध्यान में रख कर बहुत बारीकी से जांचपरख कर के भारत के वैज्ञानिकों ने 30 अगस्त, 1983 को इनसेट-1 बी अमरीकी स्पेस शटल चैलेंजर द्वारा कैंनेडी स्पेस सेंटर केपकेनवरल से अपने निर्धारित भारतीय समय 2.15 प्रातः से 17 मिनट देर से छोड़ा ताकि बादलों व बिजली वर्षण के कारण उपग्रह को उतारना इमरजेंसी लैंडिंग) न पड़ जाए।

33 वर्ष के अंतरिक्ष इतिहास में प्रथम बार इस उपग्रह को रात्रि के अंधकार में छोड़ा गया। रात्रि के गहन अंधकार को चीरता हुआ इनसेट उपग्रह अग्नि का 152 मीटर लंबा क्वारा सा छोड़ता हुआ चला गया। प्रक्षेपण के तीन घंटे पूर्व से ही तेज घर्षण की आवाज आरंभ हो गई थी।

दो मिनट छः सेकेंड पर चैलेंजर ने

बस्तर राकेट पूर्व नियोजित पैराशूट लैंडिंग के लिए छोड़े, जिन्हें एटलांटिक में उतरना था। यह इसलिए छोड़े गए थे ताकि जहाज पुनः उपयोग में ला सके। नासा के अनुमानों के कारण कोई दिक्कत नहीं हुई। चैलेंजर की लपटें 725 किलोमीटर के विभिन्न अंशों में दिखाई दीं।

इनसेट-1बी के कमांडर रिचर्ड हैं, जो 1981 में हुए दूसरे अभियान के पायलट थे। क्रू मेंबर्स में 40 वर्षीय पायलट डेनिस ब्रांडेंसटीन व तीन अभियानों के विशेषज्ञ 34 वर्षीय डेल गार्डनर, 54 वर्षीय विलियम थार्नटन, जो अब तक अंतरिक्ष में जाने वाले वरिष्ठतम यात्री हैं, तथा प्रथम अश्वक अंतरिक्ष यात्री ग्योन ब्लफोर्ड हैं।

इस इनसेट-1बी को प्रथम इनसेट-1ए के दोषों को ध्यान में रख कर मामूली परिवर्तन कर के बनाया गया है। इनसेट-1ए में पर्याप्त ईंधन होने के बावजूद तकनीकी दोषों के कारण काफी ईंधन बर्बाद हो गया था और उस में ईंधन की कमी हो गई थी। इसी कारण इनसेट-1बी, जिस का वजन 1,193.16 किलोग्राम है, में 644.59 किलोग्राम ईंधन (मोनो मिथाइल हाइड्रोजन) और आक्सीडाइजर (नाइट्रोजन टेट्राक्साइड) भरा गया है। जब कि अनुमानतः इस में 527.24 और 536.0 किलोग्राम के बीच ईंधन खर्च होगा। यह इनसेट लगभग सात वर्ष या इस से अधिक अंतरिक्ष में रहेगा।

इनसेट-1ए में गड़बड़ी तब पैदा हुई थी, जब ईंधन और आक्सीडाइजर के दो भिन्न वाल्वों ने पृथक ढंग से कार्य करना शुरू कर दिया था। इस गलती को दोबारा न होने देने के लिए दूसरे उपग्रह में पूरा ध्यान रखा गया है। मशीनों, एंटेना व सौर पट्टियों को पहले से ज्यादा आधुनिक बनाया गया है।

इनसेट-1बी का उद्देश्य दूरदराज के स्थानों पर दूरसंचार व्यवस्था, चौबीसों घंटे मौसम का सर्वेक्षण करना व आंकड़े भेजना, दूरदर्शन का ग्रामीण क्षेत्रों में सीधा प्रसारण, सीटी ट्रांसमिटर का जाल फैलाना है। ये

उद्देश्य पहले उपग्रह भास्कर, रोहिणी और एपल (एरियन पैसेंजर) के द्वारा अंतरिक्ष से सर्वथा भिन्न है।

इनसेट कार्यक्रम 'साइट' 1975-76 (सेट लाइट इनसेट क्वेशनल टेलीविजन एक्सपेरीमेंट) व 'स्टेप' (सेटलाइट टेलीकम्यूनिकेशन एक्सपेरीमेंट प्रोजेक्ट) 1977-79 के अनुभवों का परिणाम है। इस इनसेट-1बी पर भारत ने लगभग 14 करोड़ रुपए खर्च किए हैं।

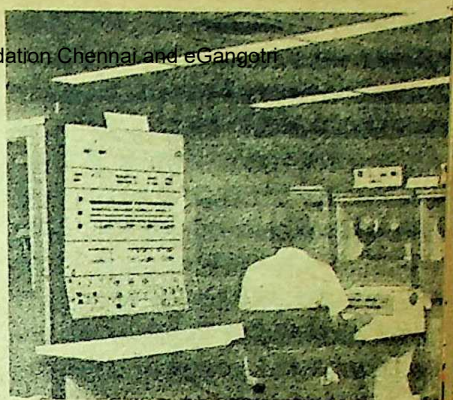
अमरीका आदि देशों ने भिन्नभिन्न उद्देश्यों के लिए भिन्नभिन्न उपग्रह छोड़े हैं। भारत को भी आगे प्रगति के लिए कम से कम तीन उपग्रह और छोड़ने होंगे। इतने बड़े खर्च के अतिरिक्त उपग्रह को अंतरिक्ष में स्थान पाने की समस्या है। एक अनुमान के अनुसार इस वक्त अंतरिक्ष में 2,700 उपग्रह हैं, जो मुख्य रूप से अमरीका व रूस के हैं।

स्पेस शटल के लाभ

राकेट के स्थान पर उपग्रह को स्पेस शटल द्वारा छोड़े जाने के कई कारण हैं। स्पेस शटल उपग्रह छोड़ने से पूर्व भी क्षेत्रीय कार्य करता है, तथा उपग्रह छोड़ने के बाद भी यदि कोई कठिनाई हो जाए तो इसे उतारा भी जा सकता है। स्पेस शटल का एक अन्य लाभ यह है कि यदि यह उपग्रह को निश्चित कक्षा में पहुंचाने में सफल नहीं होता है तो इसे वापस ला कर पुनः छोड़ा जा सकता है।

इस इनसेट-1बी में दो समान मल्टी पेलोड उपग्रह हैं, एक 74 डिगरी देशांतर व अन्य 94 डिगरी देशांतर पर है। इस में मास्टर कंट्रोल फैसिलिटी (एम.सी.एफ.) भी है, जिस का नियंत्रण हासन केंद्र (कनाडा) से है। इस उपग्रह से 8,000 लंबे द्विभागीय टेलीफोन सर्किट समीप व दूरदराज इलाकों में संपर्क स्थापित करेंगे। सीधा दूरदर्शन प्रसारण ग्रामीण क्षेत्रों में एक लाख टी.वी. सेटों पर हो सकेगा।

इनसेट-1 बी में मौसम की सूचना देने के लिए एक शक्तिशाली तापमापी (हार्ड रिजोल्यूशन रेडियोमीटर) लगाया है। इसमें



मौसम विभाग जहां हर प्रकार के आंकड़े दर्ज किए जाते हैं।

तीन प्रकार से आंकड़े प्राप्त किए जाएंगे। प्रथम डाटा कलेक्शन प्लेटफार्म (डी.सी.पी.) जो पहले ही पूरे देश में लगभग 100 बनाए जा चुके हैं, वातावरण में हवा का तापमान हवा का दबाव, वायुगति, वर्षा, सूर्यप्रकाश आदि के बारे में सूचनाएं एकत्र कर के उपग्रह को प्रति सेकेंड दो लाख 50 हजार संकेत स्वचालित मशीनों द्वारा भेजता है।

भूकेंद्र की सूचनाएं

द्वितीय उपग्रह में लगा ट्रांसपोडर (ट्रांसमीटर व रिसीवर) डी.सी.पी. से सूचनाएं ग्रहण कर के अधिक शक्तिशाली रूप से भूकेंद्र को भेजता है। तीसरा हिस्सा उपग्रह व भूकेंद्र से जुड़ा है। यहां मौसम संबंधी आंकड़ों को प्राप्त कर के प्रोसेस किया जाता है। प्रोसेस किया आंकड़ा कंप्यूटर द्वारा मैग्नेटिक टेप पर इकट्ठा किया जाता है। फिर उपयोगी संस्थाओं जैसे कृषि विभाग, विश्वविद्यालय आदि को भेजा जाता है।

इनसेट-1बी भूस्थिर उपग्रह है। इस कारण भूकेंद्रों से इस का संबंध चौबीसों घंटे बना रहता है। उपग्रह पृथ्वी से 28,000 से 38,000 किलोमीटर पर अपनी कक्षा में 74 डिगरी देशांतर पर स्थापित किया गया है।

लगातार भूस्थिर परिक्रमा पथ पर

11,000 किलोमीटर प्रति घंटे की गति से पृथ्वी की परिक्रमण करती है। Samaj Foundation Chennai

स्थिर कक्षा में होने के कारण इस का मुख्य केंद्र भारत है, पर यह अन्य एक तिहाई पृथ्वी पर भी निगाह रखता है और इसी हिसाब से सूचनाएं भेजता है। मौसम विभाग का मुख्यालय दिल्ली है और सब से महत्वपूर्ण मौसम कंप्यूटर लोदी एस्टेट, दिल्ली में लगा है, जहां आंकड़े प्रोसेस होते हैं व बादलों के चित्र भी टी.वी. (विजुअल टर्मिनल) के परदे पर देखे जाते हैं।

टेलीमेटरी प्रणाली

ताप की मात्रा, वायुगति, हिमपात, बादलों की स्थिति, वायु का दबाव आदि के बारे में तापमापी दो प्रकार से संकेत अंकित करता है— 'ऊष्मा' और 'ऊष्मा नहीं'। इन्हें तुरंत संकेतों में बदल लिया जाता है। इस व्यवस्था को 'पल्स कोडमाड्यूलेशन' कहा जाता है। यही टेलीमीटरी प्रणाली भी है।

इनसेट को 30 अगस्त, 1983 को केपकेनवरल से छोड़े जाने के बाद 31 अगस्त को 1 बज कर 19 मिनट पर पृथ्वी की कक्षा में भेजा गया था। यह महत्वपूर्ण कार्य प्रथम अश्वेत अंतरिक्षयात्री गुयोन ब्लूफोर्ड ने बटन दबा कर किया था। इस के बाद इनसेट ने हासन स्थित नियंत्रण केंद्र के सभी निर्देशों का

पालन किया।

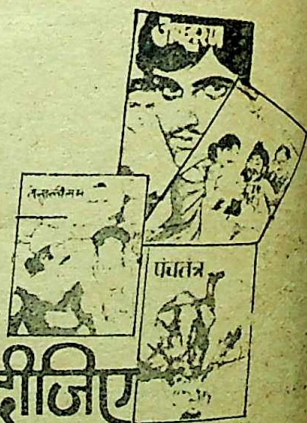
इनसेट छोड़ने के पांच दिन की इस का भविष्य खतरे में पड़ गया क्योंकि 5 सितंबर से ही सौर पट्टियों (सौर एरे) को खोलने का अनथक प्रयत्न किया रहा था, पर ये खुल नहीं पा रही थीं। उपग्रह के लिए बिजली का मुख्य स्रोत ये सौर पट्टियां ही हैं, परंतु न तो थ्रस्टर छोड़ने की आवश्यकता पड़ी, न ही झंझोड़ने की नींव आई। 10 सितंबर को उपग्रह को थोड़ा झुका दिया गया और एक घंटे सूर्य की ओर झुका दिया गया और एक घंटे सूर्य की गरमी पाने के पश्चात सौर पट्टियां खुल आप खुल गईं।

यह कार्य शाम 6.30 पर हासन नियंत्रण केंद्र से किया गया था। एक दिन की वीडियो फिल्म देख कर सूचना मिली थी कि चैलेंजर से छोड़े जाने के 23 सेकेंड बाद ही कोई वस्तु उपग्रह से टकराई थी। अनुमान लगाया गया था कि उपग्रह से टकराई वस्तु कोई ताकत का टुकड़ा भी हो सकती है।

इनसेट—1बी पहला अंतरिक्षयान है जिस से अंतरिक्ष में कोई वस्तु टकराई है। वह उपग्रह अच्छी हालत में है व इस में ईंधन की स्थिति भी संतोषजनक है। अगले उपग्रह इनसेट—1सी के लिए भी कार्य प्रारंभ हो चुका है। आशा है कि 1986 के मध्य तक अमरीकन स्पेस शटल द्वारा इसे भी छोड़ा जाएगा।

जन्मोत्सव, विवाह
व अन्य
शुभ अवसरों पर

पुस्तकें भेंट में दीजिए



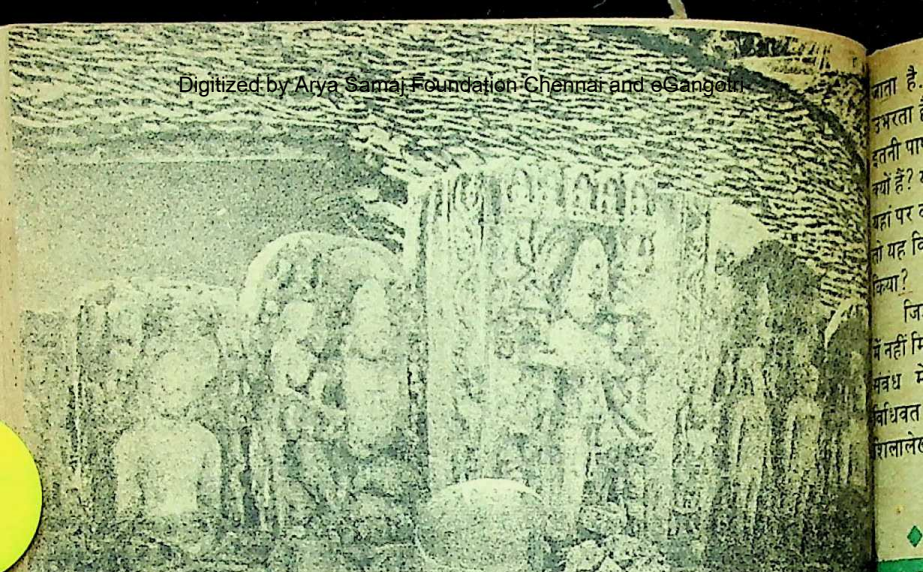


सरिता

निहित स्वार्थों को चुनौती देने वाली एकमात्र पत्रिका, जिस ने बड़ी से बड़ी शक्ति की परवाह नहीं की. सरिता की यह निर्भीकता अब एक इतिहास बना चुकी है. इसी लिए आज 40 लाख से अधिक पाठक सरिता का सम्मान करते हैं.

सरिता के लेख, समीक्षाएं, टिप्पणियां, उस की स्पष्ट नीति व क्रांतिकारी विचार आप को भी नए मोड़ पर ले आएंगे. हृदयस्पर्शी कहानियां, मोहक कविताएं आप का स्वस्थ मनोरंजन करेंगी. लाखों पाठकों के साथसाथ आप भी आज से ही सरिता पढ़िए.

दिल्ली प्रेस की पत्रिकाएं - ज्योति नए युग की वरधर जगाएं



इतिहास की एक पहेली

मध्य प्रदेश के देवास जिले की सोनकच्छ तहसील का गंधर्वपुरी नामक सुविख्यात गांव इतिहास में एक पहेली सा बना हुआ है।

इंदौर भोपाल राजमार्ग पर सोनकच्छ नामक कसबे के उत्तर में लगभग 10 किलोमीटर दूर पक्की सड़क से जुड़ा हुआ यह गंधर्वपुरी नामक गांव छोटीछोटी पर्वत श्रेणियों के मध्य में स्थित है। प्राकृतिक वैभव की अपेक्षा यहां की पाषाण प्रतिमाओं का वैभव अद्भुत है। खंडित एवं अर्खंडित सैकड़ों कलाकृतियों का यहां अंबार सा लगा हुआ है। यहां पर लगभग प्रत्येक घर की नींव में, दीवारों में, सीढ़ियों में एवं अन्य स्थानों में इन भग्नावशेषों को सहज ही देखा जा सकता है।

गंधर्वपुरी के इसी वैभव से प्रभावित हो कर शासन ने यहां देहात में संग्रहालय स्थापित किया। इस संग्रहालय में काफी बड़ी संख्या में खंडित एवं अर्खंडित पाषाण प्रतिमाएं तथा अन्य भग्नावशेष संगृहीत किए गए हैं, किंतु फिर भी कला के कई अद्भुत नमूने अब भी यत्रतत्र बिखर पड़े हैं। जब तब

खेतों में से प्राचीन कलावशेष मिलते ही रहते हैं। निर्माण कार्यों के लिए खुदाई होने पर यहां वहां खंडित अर्खंडित पाषाण प्रतिमाएं चौड़ीचौड़ी ईंटें, पुराने सिक्के, मिट्टी के पात्र किसी प्राचीन मंदिर, तलघर, बावली आदि अवशेष भी मिलते ही रहते हैं, किंतु अभी तक यहां पर विधिवत खुदाई का काम नहीं हुआ है। यहां दबा पड़ा पुरातात्विक वैभव अब पुरातत्त्ववेत्ताओं की प्रतीक्षा सी कर रहा है। इस स्थल पर इतनी बड़ी संख्या प्राचीन पाषाण प्रतिमाएं एवं भग्नावशेष देख कर हर कोई चकित सा

हजारों प्राचीन पाषाण प्रतिमाओं एवं कलाकृतियों को अपनेआप में संजोए ऐतिहासिक नगरी गंधर्वपुरी आज किस प्रकार इतिहासकारों तथा विद्वानों के लिए एक रहस्य बनी हुई है?

जाता है। उस के मन में सहज ही प्रश्न उभरता है—इस अपेक्षापूर्ण अज्ञान के कारण ही प्रतापी राजा राज्य करते थे। उन का एक पुत्र था गंधर्वसेन। वह बड़ा चंचल था। एक दिन वह भरे दरबार में अपने पिता की गोद में जा बैठा। पिता ने उसे झिड़क दिया, "ओ गधे।"

जिज्ञासु को इन प्रश्नों के उत्तर इतिहास में नहीं मिलते, क्योंकि इस स्थान के अतीत के संबंध में इतिहास लगभग मौन सा है। संबंधित खुदाई न होने से एवं किसी शिलालेख या अन्य प्रमाण के अभाव में इस

कथा भी कुछ इस प्रकार है:

यों झिड़के जाने से गंधर्वसेन की मृत्यु हो गई और उसे गधे की योनि मिली। उस ने गंधर्वपुरी में एक कुम्हार की गधे की कोख से जन्म लिया।

गधे की योनि में जन्म लेने के बाद वह गधे का बच्चा ऐन आधी रात को रोज कुम्हार

को पुकारने लगा, "कुम्हार....रे कुम्हार, जाग रहा है कि सो रहा है? सो रहा है तो जाग और जा कर अपने राजा से कह कि वह अपनी कन्या की शादी मुझ से कर दें, नहीं तो मैं इस नगरी को जला कर खाक कर दूंगा।"

कुम्हार बेचारा परेशान हो गया। रोज आधी रात को यह गधे का बच्चा उसे जगा कर यही बात कहता था। इतनी बड़ी बात वह कुम्हार भला नगरी के राजा से कैसे कह सकता था? इसी चिंता में वह घुलने लगा।

राजा की नजर एक दिन इस कुम्हार पर पड़ गई। उस ने सहज भाव से पूछा, "क्यों रे, प्रजापत! क्या बात है? तुझे कौन सा दुख है? तू इस तरह सुखंता क्यों जा रहा है?"

कुम्हार ने हाथ जोड़ कर कहा, "कोई दुख नहीं है, अन्नदाता। आप के राज में किसी को भी दुख कैसे हो सकता है?"

"तो फिर तू यों दिन बदिन दुबला क्यों होता जा रहा है?"

"ऐसे ही अन्नदाता।"

"नहीं, कोई न कोई बात है जरूर तू

संजोए वर्पुरी हास निरुपे?

गंधर्वपुरी

लेख • चंद्रशेखर

स्थान का अतीत अब भी अंधकार के गर्त में पड़ा हुआ है। निश्चित रूप से कोई भी कुछ नहीं कह पाता, मात्र अटकलें ही लगाई जाती हैं।

हां, यहां के संग्रहालय में एकत्रित इन कलाकृतियों में से अधिकांश को 11वीं सदी का माना गया है। मालवा के प्रतापी परमार शासकों से इन का नाता जोड़ा गया है। वैष्णव, जैन, बौद्ध आदि सभी धर्मों से संबंधित मूर्तियों के उपलब्ध होने से इस स्थान को महत्त्वपूर्ण माना गया है, किंतु फिर भी इस रहस्यमय स्थान के अतीत पर पड़ा आवरण अभी हटा नहीं है। यह स्थान अभी तक पहेली ही बना हुआ है। इतिहासकारों को यह चुनौती सी दे रहा है।

किंतु इस संबंध में एक किवंदती ने इस रहस्य के आवरण को रंगीन बनाने में ही योग दिया है। वह इस स्थान को एक अभिशप्त नगरी बतलाती है। इस बाबत मालवा के गांवों में एक लोक कथा न जाने कब से प्रचलित है।

पुराणों में वर्णित कथाओं की तरह वह

को पुकारने लगा, "कुम्हार....रे कुम्हार, जाग रहा है कि सो रहा है? सो रहा है तो जाग और जा कर अपने राजा से कह कि वह अपनी कन्या की शादी मुझ से कर दें, नहीं तो मैं इस नगरी को जला कर खाक कर दूंगा।"

कुम्हार बेचारा परेशान हो गया। रोज आधी रात को यह गधे का बच्चा उसे जगा कर यही बात कहता था। इतनी बड़ी बात वह कुम्हार भला नगरी के राजा से कैसे कह सकता था? इसी चिंता में वह घुलने लगा।

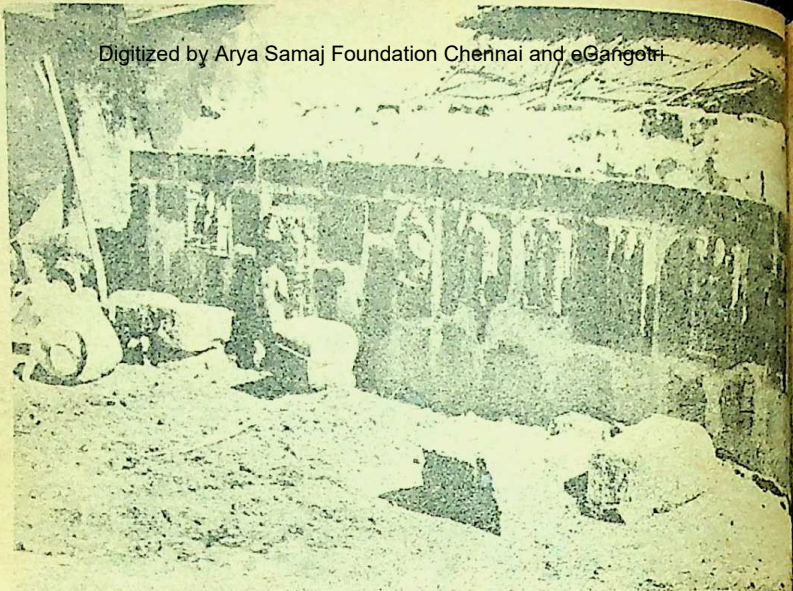
राजा की नजर एक दिन इस कुम्हार पर पड़ गई। उस ने सहज भाव से पूछा, "क्यों रे, प्रजापत! क्या बात है? तुझे कौन सा दुख है? तू इस तरह सुखंता क्यों जा रहा है?"

कुम्हार ने हाथ जोड़ कर कहा, "कोई दुख नहीं है, अन्नदाता। आप के राज में किसी को भी दुख कैसे हो सकता है?"

"तो फिर तू यों दिन बदिन दुबला क्यों होता जा रहा है?"

"ऐसे ही अन्नदाता।"

"नहीं, कोई न कोई बात है जरूर तू



शीतला मंदिर का बाहरी दीवार पर उत्कीर्ण अनुठी कला की झलक.

राजा ने जब इस तरह हठ किया तो कुम्हार ने हाथ जोड़ कर कहा, "तो फिर मेरी एक अर्ज मानो अन्नदाता."

"बोल?"

"कल इस गरीब के घर पर ही भोजन करिए. आप को सब पता लग जाएगा कि क्या बात है?"

"मंजूर है."

राजा की मंजूरी मिलते ही कुम्हार ने तरहतरह के पकवान बनवाए. दूसरे दिन राजा की सवारी आई. कुम्हार ने उसे प्रेम से भोजन कराया.

भोजन कर के राजा ने फिर पूछा, "अब बता, तुझे क्या दुख है?"

कुम्हार ने हाथ जोड़ कर कहा, "जब मेरी इतनी अर्ज मानी तो थोड़ी सी और मान लीजिए, हुजूर."

"बोल?"

"आज की रात मेरी कुटिया में ही आराम कीजिए, अन्नदाता."

"मंजूर है," राजा ने कहा.

कुम्हार ने राजा के लिए पलंग बना

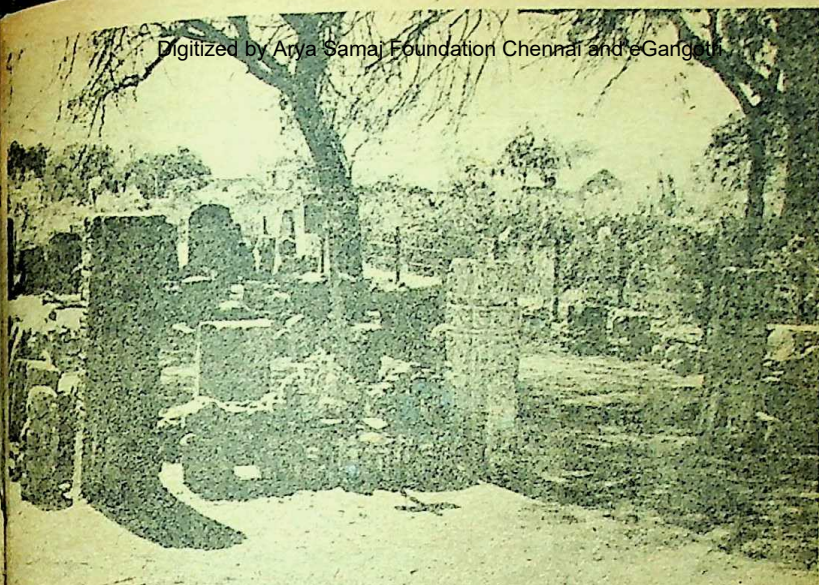
दिया. पलंग पर गद्देतकिए लगा दिए. को सेमल के फूल की हलकी रजाई रख

आधी रात बीतते ही राजा की तरफ के बच्चे ने आवाज लगाई, "कुम्हार, कुम्हार, जाग रहा है कि सो रहा है? सो तो जाग और जा कर अपने राजा से अपनी कन्या की शादी मुझ से कर दें. इस नगरी को जला कर खाक कर दें."

कुम्हार ने गधे के बच्चे के बोले राजा को जगा दिया था. उस ने सात अपने कानों से सुन ली थी. कुम्हार ने पदमों में सिर रखते हुए कहा, "हुजूर, संताप मुझे खाए जा रहा था. इतनी बड़ी भला मैं कैसे कह सकता था."

राजा ने कुम्हार को आश्चर्य और वह अपने महल में चल दिया. पंडितों और मंत्रियों से सलाह ली. सोच के बाद उस ने अपनी कन्या इस गधे के से ब्याह दी. एक महल भी इन के लिए दिया.

इस महल में गधे का बच्चा राजकुमारी रहने लगे. यहां पर गधे का



शासकीय संग्रहालय की स्थापना, कला को संरक्षण देने के प्रयास.

रोज रात को असली रूप में प्रकट हो जाता था। सुंदर राजकुमार के रूप में वह रात भर राजकुमारी के साथ व्यतीत करता था और सुबह होने से पहले ही फिर गधे का रूप धारण कर लेता था।

एक दिन एक दासी की नजर इस सुलक्षण कुंवर पर पड़ गई। उस ने राजमाता से छुवर दे दी। राजमाता ने भी अचंभा अपनी आंखों से देख लिया। गधे को खोल उतार कर सुलक्षण कुंवर बनते देख बेटी के चरित्र के प्रति राजमाता की शंका दूर हो गई। उस ने इस कलंक से मुक्ति का मन ही मन निर्णय कर लिया।

एक रात जैसे ही गधे का बच्चा अपना खोल उतार कर सुलक्षण कुंवर के रूप में आया, राजमाता ने अंधेरी कोठरी में पड़े गधे के उस खोल में आग लगवा दी।

गधे के उस खोल में आग लगते ही वह सुलक्षण कुंवर चौपड़ के पांसे फेंकते हुए चीख पड़ा, "जल गया रे... मर गया रे..."

जातेजाते वह राजकुमारी से कह गया, "यहां से भाग जाओ... मैंने अब और नहीं बचता।"

हो जाएगी."

सुलक्षण कुंवर के आदेशानुसार वह राजकुमारी वहां से तत्काल भाग गई। भागतेभागते वह उज्जैन नगरी में जा पहुंची। वहीं उस ने वीर विक्रमादित्य को जन्म दिया।

इधर जलता हुआ वह सुलक्षण कुंवर अपने गधे के खोल के पास जा पहुंचा, उस ने उस खोल में मुंह भर दिया। इस खोल में मुंह भर देने से उस का चेहरा ही गधे का हो सका, बाकी सारा धड़ मनुष्य जैसा ही रहा।

उसी घड़ी नगर की सारी कच्ची दीवारें धंस गईं और सारे निवासी पाषाण के बन गए और उसी को अब अभिशप्त पाषाण नगरी गंधर्वपुरी कहा जाता है।

विवादास्पद विक्रमादित्य

इस लोक कथा द्वारा इस नगरी का नाता विक्रमादित्य से जोड़ा गया, किंतु जनजन्म के मन बसा विक्रमादित्य ही अभी तक पहली बना हुआ है। कोई उसे चंद्रगुप्त का पर्यायवाची मानता है तो कोई स्वतंत्र शासक प्रमाण के



'राजा के मंदिर' के गधे के मुंह वाली मूर्ति.

अभाव में केवल विक्रमादित्य के ननिहाल के नाते इस अभिशप्त नगरी की गांठ खुल नहीं पाती है, बल्कि यह पहेली और उलझती ही जाती है.

किंतु इसी गंधर्वपुरी में 'राजा के मंदिर' के नाम से ख्यात स्थान इस संदर्भ में एक दूसरी ही कहानी कहता सा प्रतीत होता है. इस मंदिर के भीतर गधे के मुंह वाली वह विख्यात मूर्ति है. शेष आकार मनुष्य जैसा एवं केवल मुंह ही गधे जैसा होने से इस मूर्ति की संगति एक ओर तो उस सुप्रसिद्ध लोककथा से बैठती है, जो गंधर्वपुरी के अतीत के बारे में प्रचलित है और दूसरी ओर इतिहास प्रसिद्ध कालकाचार्य कथानक से.

कालकाचार्य कथानक में स्पष्ट रूप से उल्लेख आता है कि ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी में कालकाचार्य नामक एक जैन मुनि हुए थे, जिन की सरस्वती नामक भगिनी का गर्दीभल्ल राजा ने अपहरण कर लिया था. इस अपमान से चिढ़ कर कालकाचार्य शक राजाओं को बुला लाए थे. इन शक राजाओं ने गर्दीभल्ल को परास्त कर उज्जयिनी पर प्रभुत्व प्राप्त कर लिया था. किंतु गर्दीभल्ल के

प्रतापी पुत्र विक्रमादित्य ने इन शको परास्त कर नया विक्रम संवत् प्रारंभ किया. मरुतुंग विराचित 'प्रभावक चरित्र' भी इस कालकाचार्य कथानक का वर्णन इस रूप में प्राप्त है. अन्य कई स्रोतों से भी इस उल्लेख की पुष्टि होती है.

किंतु इतिहासकार इन सारे उल्लेखों पर प्रमाण नहीं मानते. ये सारे उल्लेख जो अर्वाचीन प्रतीत होते हैं. इसी लिए गर्दीभल्ल विक्रमादित्य एवं यह अभिधान नगरी—गंधर्वपुरी—अभी तक पहेली ही बन हुए हैं.

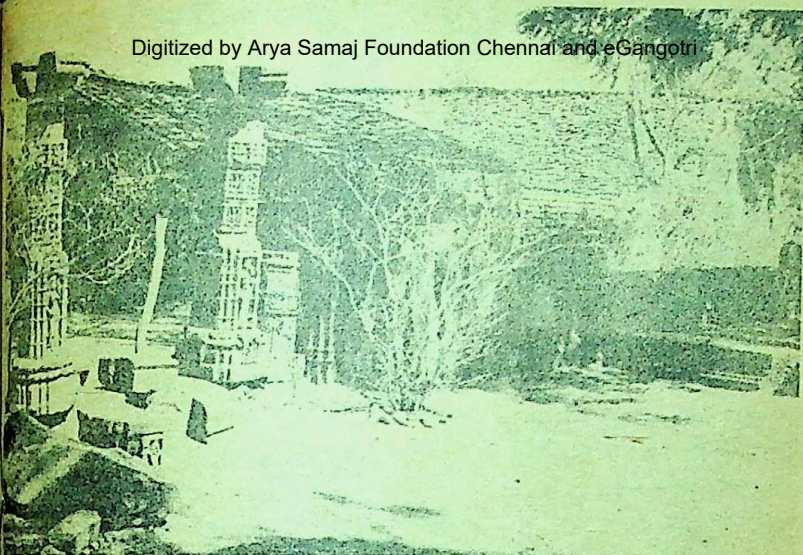
कुछ भी हो गंधर्वपुरी में यत्रतत्र बिखरी पड़ी इन खंडित अखंडित पाषाण प्रतिमाओं का आधार पर यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि यह स्थान अतीत में कोई बड़ा ही महत्त्वपूर्ण स्थान था. यहां का इतिहास टीलों में दबा पड़ा है. विधिवत खुदाई होने पर न केवल इस नगरी के अतीत पर अपितु मालवा के अतीत पर भी प्रकाश पड़ने में संभावना है.

सराहनीय शासकीय कार्य

मध्य प्रदेश शासन ने यहां संग्रहालय स्थापित कर सराहनीय कार्य किया है, किंतु भवन के अभाव में इन अनुपम कलाकृतियों की सुरक्षा संभव नहीं है. यह हर्ष की बात है कि सरकार भवन निर्माण के प्रति भी सजग है. अभी तक यत्रतत्र बिखरी पड़ी शेष मूर्तियों को भी शासन इस संग्रहालय में रखवाने के लिए जल्दी ही कदम उठा कर ऐसी ही सजगता का परिचय देगा, ऐसी आशा है. विधिवत खुदाई भी वक्त का तकाजा है.

इसी संदर्भ में लेखक डा. हरिहर त्रिवेदी, मध्य प्रदेश के पुरातत्त्व विभाग के सेवानिवृत्त उप संचालक से मिला. वह इतिहास एवं पुरातत्त्व के अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान हैं. उन्होंने इन विषयों पर हिंदी एवं अंगरेजी में कई ग्रंथ लिखे हैं.

गंधर्वपुरी के संबंध में लेखक डा. जिजासा प्रकट करने पर डा. हरिहर त्रिवेदी ने कहा:



बिखरी पड़ी कलाकृतियां, संरक्षण जरूरी है.

"मेरी दृष्टि में गंधर्वपुरी नाम ही गलत है। इस स्थान का मूल नाम 'गंधावक' ही होना चाहता था। उस प्रचलित नाम को त्याग कर एक नया नाम गंधर्वपुरी अपनाना ठीक नहीं है। पुराने नाम में अतीत की भनक थी। उस पुराने नाम का विग्रह गंध अवक (अवली) इस तरह सहज ही किया जा सकता था। इस संधि गंध के आधार पर यहां अतीत में गंधवाले लोगों की बहुतायत की कल्पना भी की जा सकती थी। गंधर्व नाम अपना कर किसी पुराने में नाता जोड़ना मुझे तो युक्तियुक्त नहीं लगता।"

"अपने कार्यकाल में दो शिलालेख मैंने यहां पर उलटे लगे हुए देखे थे। इसी लिए वे उल्टे नहीं जा सके। कह नहीं सकता कि इन का उद्धार तब हुआ या नहीं।" गंधर्वपुरी अभी भी पहली ही है। इतिहास में इस का उल्लेख नहीं मिलता, फिर यहां का पुरातात्विक वैभव उल्लेखनीय है।

"गंधे के मुंह वाली यहां की प्रख्यात मूर्ति को हम 'हयग्रीव' के रूप में भी मान्य कर सकते हैं। मध्य प्रदेश के मंदसौर जिले के

मोड़ी नामक स्थान के मंदिरों के खंभों एवं गंधर्वपुरी के मंदिरों के खंभों में साम्य परिलक्षित होता है। मोड़ी के मंदिरों का निर्माण लगभग 11वीं-12वीं सदी में हुआ था। अतएव गंधर्वपुरी के इतिहास एवं पुरातात्विक वैभव पर इसी सूत्र के सहारे प्रकाश डाला जा सकता है।

अपने छोटे बच्चों को

चंपक

दीजिए,

बड़े बच्चों को

सुभाष ❀ ❀
सीरम

मनमोहक शिक्षाप्रद मनोरंजक.

दारुजाने दफतर



हमारे दफतर में एक सज्जन ऐसे हैं जो बिना सोचेसमझे किसी बात का जवाब के एक दिन वह किसी काम से चपरासी को बुला रहे थे, लेकिन वह दूर था और उन आवाज नहीं सुन पा रहा था।

उन सज्जन के एक मित्र बोले, "ऐ भाई, इन की भी बात सुन लो, कब से वेवकूफ तरह चिल्ला रहे हैं।"

इस पर वह सज्जन बोले, "तुम्हारी तरह ही तो चिल्ला रहा हूँ।"

दफतर के एक अन्य कर्मचारी ने कहा, "यह तो जन्मजात वेवकूफ है, आप कैसे वह झट से बोले, "मैं आर्टिफिशियल (बनावटी) वेवकूफ हूँ।"

इस पर दफतर में जोर का ठहाका लगा। जब बाद में बात समझ आई तो वह बहुत और उस के बाद उन्होंने बोलना ही कम कर दिया।

—राजेंद्रकुमार

*

मैं एक विद्यालय में अध्यापक के रूप में कार्य करता हूँ। एक दिन एक सज्जन अपने बच्चों का दाखिला पहली कक्षा में कराने आए।

प्रधानाध्यापिका किसी कक्षा में पढ़ा रही थीं, इसलिए मैं ही बच्चों के दाखिला फार्म लगा।

फार्म भरने के बाद मैं ने बच्चों की जन्मतिथि पढ़ी तो उस व्यक्ति ने बताने में असमर्थ व्यक्त की। मैं ने तीनों बच्चों की उमर पांचपांच वर्ष मान कर उन की जन्मतिथि इस लिखी कि उन की उमर पांच साल बने।

बाद में जब प्रधानाध्यापिका ने फार्म देखा तो बोलीं, "जब आप जैसे अध्यापक ऐसा तो हम छात्रों से क्या आशा करेंगे।"

उन की बात सुन कर मैं चौंक गया और फार्म देखने लगा। मैं ने तीनों भाइयों का जन्म ही महीने की अलगअलग तारीखों में लिखा था। इस पर मुझे बहुत हंसी आई और शायद महसूस हुई।

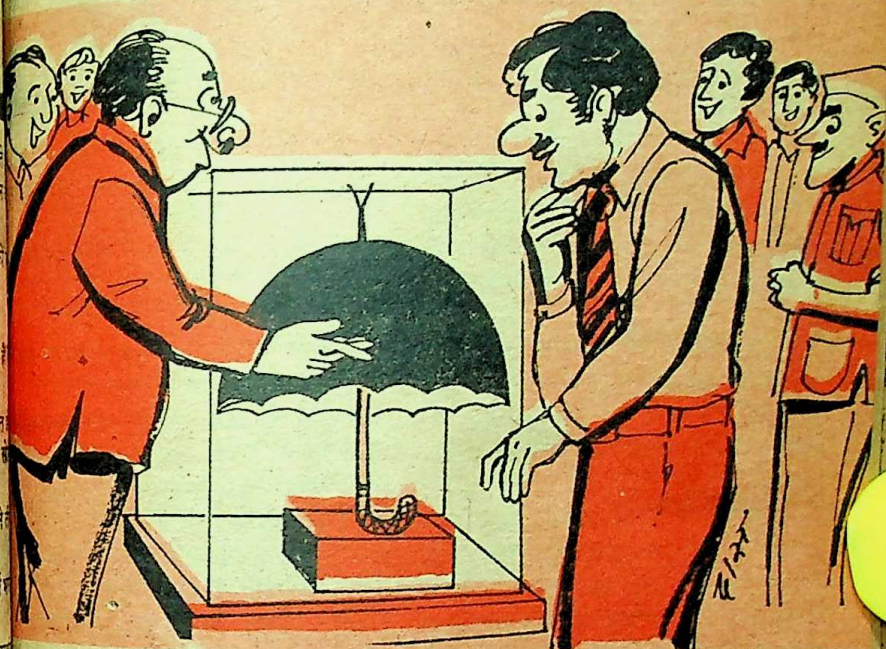
—पवनकुमार चौहान

नौकरीपेशा व्यक्तियों को और किसी कार्यवश दफतरों में जाने वालों को दफतर अनेक मनोरंजक स्थितियों से गुजरना पड़ता है, और कई बार तो किस्सा बहुत दिलचस्प बन जाता है। क्या आप की दृष्टि में कोई इस प्रकार की घटना आई है, जो रोचक हो?

आप ऐसे संस्मरण 'मुक्ता' के लिए भेजिए। प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण के लिए रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी। पत्र के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें।

पत्र इस पते पर भेजिए गुप्तसा / विजयी रोड, नई दिल्ली-110055.

सरकारी धाता



अपना कार्यालय खोला और कुर्सी पर बैठ कर अभी सामान्य हो ही रहा था कि एक चपरासी दौड़ता हुआ आया और बोला, "साहब, सचिव साहब आप को बुला रहे हैं?"

रामधन ने ठेकेदार बन कर सुखसमृद्धि के सपने देखे थे, पर एक सरकारी कार्यालय में उस ने जब एक छते की निविदा दी तो किस प्रकार उसे हवालात का मुंह देखना पड़ा?

पटना सचिवालय पहुंचा तो देखा कि आज अन्य दिनों से कुछ अधिक भीड़ है। मैं ने सोचा शायद कोई मंत्री आ रहे होंगे, परंतु वहां तो प्रतिदिन कोई न कोई मंत्री अवश्य आता है तो फिर विशेष भीड़ क्यों? इसी सचिवालय में मैं जब सचिव साहब के कार्यालय के सामने से गुजरा तो देखा कि वहां भी अन्य दिनों से ज्यादा भीड़ है और सचिव साहब भी कार्यालय में उपस्थित हैं। अभी तो साढ़े दस ही बजे हैं, जब कि सचिव साहब दो बजे से पहले ही आते हैं।

मेरा दिल काफी जोर से धकधक करने लगा, जब मैं बड़े बाबू के कार्यालय के सामने गुजरा तो देखा कि बड़े बाबू भी अपने कार्यालय में उपस्थित हैं, जब कि बड़े बाबू भी पहले नहीं आते हैं। मैं ने भी जल्दीजल्दी

मैं ने चपरासी से पूछा, "क्यों कोई खास बात है?" Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai

चपरासी ने कहा, "हां, साहब, आप तो आज पांच दिन के बाद आ रहे हैं।" फिर कुछ रुक कर आगे बोला, "साहब, हम लोग जब बाहर जाते हैं तो इस बरसात के मौसम में भीग जाते हैं। इसी लिए एक सरकारी छाता सचिवालय में रखने के संबंध में सचिव साहब आप से विचारविमर्श करना चाहते हैं। इस संबंध में देश के विभिन्न हिस्सों से विशेषज्ञ व इंजीनियर भी बुलावाए गए हैं।"

मैं ने सोचा कि एक सरकारी छाते से क्या होगा और इस के लिए विशेषज्ञ बुलावाए गए हैं। अभी तक मेरी समझ में कुछ नहीं आया। फिर भी चपरासी से कहा, "चलो, मैं आ रहा हूं।"

मैं सचिव साहब के कार्यालय में पहुंचा तो देखा कि सचिव कुछ लिख रहे हैं और उन के बगल में बैठे जनसंपर्क अधिकारी और बड़े बाबू काफी गौर से उन्हें देख रहे हैं। मैं ने कहा, "नमस्ते, साहब।"

सचिव साहब ने निर हिला कर मेरे अभिवादन का उत्तर दिया और बोले, "आप तो जानते होंगे कि एक सरकारी छाता खरीदने का विज्ञापन हम लोग समाचारपत्र में प्रकाशित करवाना चाहते हैं, इसलिए मैं ने आप को बुलाया है और इस संबंध में देश के विशेषज्ञ भी बुलाए गए हैं।"

इस के बाद सचिव साहब ने कार्यालय में उपस्थित लोगों से मेरा परिचय कराया।

काफी विचारविमर्श के बाद तय हुआ कि सरकारी छाते का कपड़ा रेशमी तथा काले रंग का होगा, उस की कमानी तथा डंडा इस्पात का होगा। छाते को खोलने तथा बंद करने के लिए बटन होगा।

अंत में बड़े बाबू ने सचिव से कहा, "साहब, सब तो ठीक है, लेकिन छाता लोहे का डंडा लगा रहने पर तो आकाश से गिरती बिजली को खींच लेगा। इस से जान का खतरा है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सचिव साहब ने कहा, "हां, यह तो मैं

भूल ही गया था।" इस के निवारण के लिए विशेषज्ञों से पूछा तो एक तरफ संशोधन संस्थान के निदेशक ने कहा कि इस के लिए छाते की इस्पात से बनी ऊपर तड़ित चालक लगाना होगा। सर ने इस परामर्श को मान लिया। इस के बाद उन को काफी सराहा गया। लेकिन मैं ने लगा कि तड़ित चालक से आकर बिजली कहां जाएगी। क्या छाते की छड़ से जमीन में गाड़ा जाएगा?

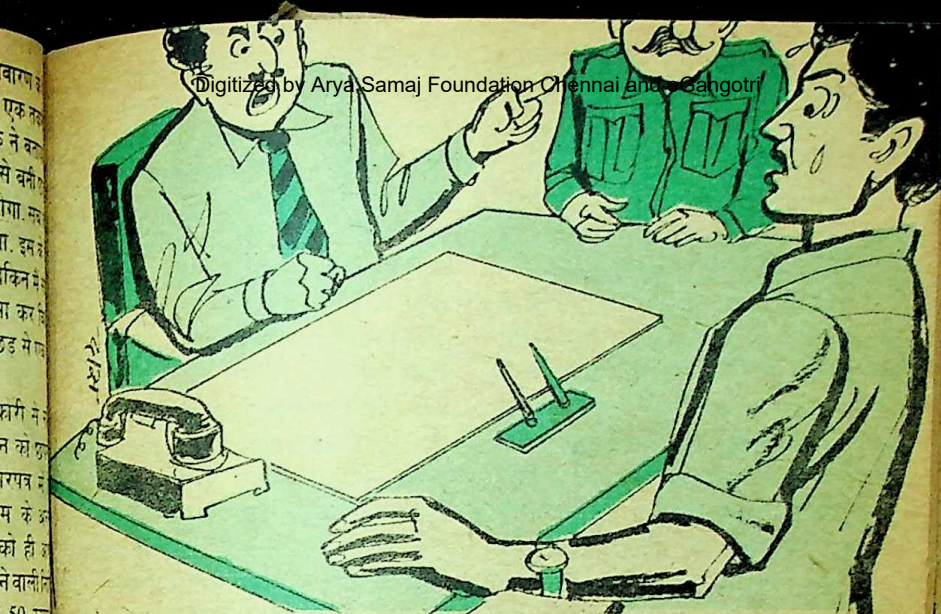
फिर जन संपर्क अधिकारी ने साहब ने कहा, "इस विज्ञापन को छापने के लिए स्थानीय दैनिक समाचारपत्र में जाए और 20 सूत्री कार्यक्रम के अन्तर्गत स्थानीय बेरोजगार युवकों को ही रोजगार देने की सुविधा दी जाए। आने वाली राशि के साथ जमानत के रूप में 50 हजार रुपये का पोस्टल आर्डर जनसंपर्क अधिकारी के नाम से आना चाहिए। इस निमित्त अधिकतम राशि पांच हजार है, परन्तु यदि राशि सब से कम होगी उस की भी स्वीकार की जाएगी।"

इस के बाद सचिव साहब ने बटन दबाकर सरकारी छाते की देखभाल करने के लिए एक छाता मुख्य निरीक्षक, एक छाता निरीक्षक, एक लिपिक एवं एक चपरासी नियुक्त की भी की गई है। लिपिक का सचिवालय के कौन अधिकारी या कर्मचारी कब, कहां और क्यों छाता ले जाते हैं, उसे लेखाजोखा रखना और छाता ले जाने के लिए रजिस्टर में हस्ताक्षर करवाना है। छाते को रखने के लिए वातानुकूलित कमरा बनवाया गया है, जिस से छाते पर गरमी और बरसात का कोई प्रभाव न पड़े।

स्थानीय समाचारपत्र में इस निमित्त उपयुक्त नियमों के साथ प्रकाशित किया गया, जिस के उत्तर में करीब 50 नमूने ठेकेदारों ने निविदाएं भेजीं। निविदाएं के दिन सभी ठेकेदार सचिवालय में उपस्थित अधिकारी के समाने उपस्थित हुए।

उपस्थित ठेकेदारों में रामधन एक नवयुवक ठेकेदार भी था, जिस ने

दिसंबर (प्रथम)



सचिव साहब ने नम्र होने के बजाए गरजते हुए कहा, "थानेदार, साहब, यही वह ठेकेदार है... इसे तुरंत गिरफ्तार कर लें."

दिन पहले स्नातक की डिग्री प्राप्त की थी, परन्तु जब कहीं भी नौकरी नहीं मिली तो उस ने ठेकेदारी के काम को देखने के बाद सोचा कि चलो यह काम भी अच्छा है इस काम से किन्तने ही लोगों ने करोड़ों रुपए कमाए हैं.

सभी ठेकेदार आए और चले गए. अंत में रामधन की पुकार हुई. वह इस व्यवसाय में बिलकुल नया था, इसलिए धड़कते दिल से जनसंपर्क अधिकारी के कार्यालय में गया. जनसंपर्क अधिकारी ने पूछा, "आप का नाम रामधन है?"

"जी हां." रामधन ने कहा.

"अच्छा, तो रामधन साहब..."

जनसंपर्क अधिकारी ने अभी इतना ही कहा था कि इस संबोधन से रामधन की बांछें खिल उठीं. वह मन में सोचने लगा कि एक दिन वह भी बहुत बड़ा ठेकेदार बन जाएगा. फिर उस के पास अनेक कारें व नौकरचाकर होंगे. एक बहुत बड़ा बंगला होगा. उस से मिलने के लिए बड़ेबड़े मंत्री आया करेंगे.

वह अभी इन्हीं कल्पनों में खोया हुआ था कि

कि जनसंपर्क अधिकारी ने आगे कहा, "सभी ठेकेदारों ने इस के लिए चार हजार नौ सौ रुपए से तीन हजार रुपए तक भरे हैं, परन्तु आप ने अपनी निविदा में उसी कार्य को करने के एक हजार रुपए भरे हैं. इसलिए यह ठेका आप को ही दिया जाता है."

यह सुन कर रामधन को काफी प्रसन्नता हुई और उस का स्वप्न उसे सच प्रतीत होने लगा.

इस के बाद जनसंपर्क अधिकारी ने कहा,

"मेरा प्रतिशत आप को मालूम है?"

इस पर रामधन जो इस गोरखाधंधों से अपरिचित था, बोला, "साहब, आप का प्रतिशत क्या होता है? मुझे तो मालूम नहीं." तो जनसंपर्क अधिकारी ने कुटिलता से मुसकराते हुए कहा, "सरकारी कार्य बगैर प्रतिशत दिए नहीं हुआ करते. आप शायद इस व्यवसाय में नए हैं, इसलिए आप मुझे तीन सौ रुपए दे दीजिए."

रामधन की समझ में अब भी कुछ नहीं आया कि वह शायद

निविदा की स्वीकृति के लिए रुपए मांग रहे हैं। उस ने झट से तीन सौ रुपए निकाल कर जनसंपर्क अधिकारी को दे दिए और बोला, "साहब, छाता खरीदने के लिए आदेश दें।"

इस पर जनसंपर्क अधिकारी ने कहा, "पहले आप छाता लाइए, उस के बाद छाता खरीदने का आदेश दिया जाएगा।"

रामधन जैसे ही जनसंपर्क अधिकारी के कार्यालय से निकला कि दरवाजे पर उपस्थित चपरासी ने कहा, "साहब, मेरा प्रतिशत।"

रामधन 'साहब' का संबोधन सुन कर खुशी से फिर खिल उठा। उस ने चपरासी से कहा, "मैं भीतर प्रतिशत दे चुका हूँ तो फिर बाहर किस बात का प्रतिशत।" तो चपरासी ने कहा, "साहब, बाहर प्रतिशत दिए बगैर काम नहीं बनेगा। जल्दी से 50 रुपए दीजिए।"

उस ने भीतर भी प्रतिशत सुना था, बाहर भी सुन रहा था। मन में सोचा शायद यहाँ पहली बार आया हूँ इसलिए किसी प्रकार का कर मांगा जा रहा है। इसलिए उस ने चपरासी को भी 50 रुपए दे दिए।

चपरासी ने रुपए ले कर कहा, "नमस्ते साहब।" और फिर दूसरी ओर चला गया। एक तरफ 50 रुपए देने का गम था तो दूसरी तरफ 'नमस्ते साहब' सुन कर उस का दिल फिर कुछ चौड़ा हो गया था।

दो दिन के बाद रामधन तड़ित चालक लगा हुआ छाता ले कर जनसंपर्क अधिकारी के कार्यालय में उपस्थित हुआ और छाता देते हुए बोला, "साहब, मैं ने तो छाता दे दिया, परंतु अभी तक आप ने छाता खरीदने का आदेश नहीं दिया।"

छाता ले कर झुंझलाते हुए जनसंपर्क अधिकारी ने कहा, "सरकारी काम भी कहीं इतनी जल्दी होता है? अभी आप छाता दे जाइए। दो दिन के बाद आइएगा तब मैं आदेश पत्र दूंगा।"

जनसंपर्क अधिकारी ने छाता ले कर मुख्य छाता निरीक्षक को सौंप दिया। छाते को सचिवालय के कर्मचारियों एवं अधिकारियों

के दर्शन के लिए 'शो रूम' में रखा गया। उस दिन संपूर्ण सचिवालय में छुट्टी घोषित कर दी गई। सरकारी छाते को देखने के लिए 'शो रूम' के नजदीक सर्वप्रथम सचिव आए एवं बड़े बाबू आए, जिन का स्वागत जनसंपर्क अधिकारी एवं मुख्य छाता निरीक्षक ने किया। दिन भर सरकारी छाते देखने के लिए तांता लगा रहा और शाम को उसे वातानुकूलित कमरे में सुरक्षा पूर्वक रखा दिया गया।

दूसरे दिन काफी जोरों की वर्षा होती थी। उसी वक्त मुख्य छाता निरीक्षक के सड़क पर पान खाने के लिए जाना। इसलिए वह स्वयं सरकारी छाता ले कर बाहर लगे तो लिपिक ने कहा, "साहब छाता ले जाने के लिए तो खाते में नाम लिखना और हस्ताक्षर करना होगा। कहां ले जा रहे हैं? कब लौटाएंगे, यह भी लिखना होगा।"

मुख्य छाता निरीक्षक ने कहा, "मैंने इस सरकारी छाते का प्रधान हूँ, अतः मैंने लिखने की जरूरत नहीं है।" मुख्य छाता निरीक्षक के जाने के बाद लिपिक भी कुछ देर के बाद बाहर चला गया।

इसी बीच सचिव साहब को मंत्रीजी बुलवाया। उन्हें एक जरूरी बैठक में बुलाया था और गाड़ी तक जाने में वह रुक जाते, इसलिए सरकारी छाता लेने वह रुक ही पहुंचे उन्हें देख कर दरवाजे पर चपरासी ने कहा, "नमस्ते साहब।"

सचिव साहब घमंड से अभिवादन का जवाब दिए बगैर ही अंदर चले गए, परंतु सरकारी छाते को वहां नहीं देख कर रोकर शब्दों में बोले, "छाता कहाँ है?"

चपरासी घबराता हुआ अंदर आया और बोला, "साहब, छाता तो यहीं पर पता नहीं कहां चला गया।"

सचिव साहब ने खुद इधर उधर देखते फिरते छाता ले जाने वाले किसी व्यक्ति का नाम नहीं था। वास्तव में जब मुख्य छाता निरीक्षक छाता ले कर गए थे, उस वक्त वह स्वयं वहां उपस्थित नहीं था।

संपूर्ण सचिवालय में तुरंत कहलाम

उदास

क्यों चांदतारों चुभते हो
मेरी निगाह में,
तुम आज डूब जाओ
मेरा जी उदास है.

—तौफकी कोटवी



गया और सचिव ने थाने में टेलीफोन किया। सरकारी छाते के गबन का मामला दर्ज किया गया और थानेदार साहब को तुरंत आ कर मामले को देखने को कहा गया। फिर सचिव ने मंत्रीजी को टेलीफोन किया कि आज की बैठक रद्द कर दी जाए, क्योंकि जिस सरकारी छाते को सचिवालय में लाया गया था वह गायब हो गया है। इसलिए मामले की जल्दी से जल्दी जांच करवानी है।

तब तक मुख्य छाता निरीक्षक एक हाथ में पट्टी बांधे और दूसरे हाथ में छाते को मोड़ कर लिए हुए आ पहुंचे। छाता भी कई जगह से टूटफूट गया था।

यह देख कर सचिव साहब बोले, "आप सरकारी छाता ले कर गए थे तो खाते में क्यों नहीं लिख कर गए औ यह दूसरे हाथ में क्या हो गया?"

तब मुख्य छाता निरीक्षक ने कहा, "साहब, जल्दबाजी में इसे बगैर खाते में लिखे ही ले गया था, आइंदा ऐसा नहीं होगा," फिर कुछ देर के बाद रुक कर बोले, "साहब, मैं ने जैसे ही छाते को बंद करने के लिए बटन दबाया कि मेरा हाथ बटन में फंस गया। जिस से एक अंगुली बुरी तरह कुचल गई। बाद में हस्पताल जाना पड़ा, जहां तीन टाके लगे।"

तब तक थानेदार साहब सरकारी छाते के गबन की जांच पड़ताल के लिए आ पहुंचे थे। सचिव साहब थानेदार साहब से क्षमा याचना करते हुए बोले, "थानेदार साहब, छाता

स्वतः मिल गया। मैं ने भूल से मामला दर्ज करा दिया था।"

थानेदार साहब तो बहुत कुछ पाने के लालच में आए थे, पर मुंह लटकाए हुए चले गए।

छाते से जब मुख्य छाता निरीक्षक की उंगली कुचली गई थी तो छाते को उन्होंने जोर से पटक दिया था, जिस से छाते की एक कमानी टूट गई थी। इसलिए उस की मरम्मत के लिए उसे इंजीनियर के पास भेज दिया गया।

इस घटना के तीसरे दिन छाते को ले कर सचिव साहब का चपरासी बाजार चला गया। उसी समय एक केंद्रीय मंत्री का फोन दिल्ली से आया कि सचिव साहब तुरंत हवाई जहाज से दिल्ली से आएँ, पर उस समय घनघोर बारिश हो रही थी। इसलिए बगैर छाते के सचिव साहब गाड़ी तक नहीं जा सकते थे। सचिव साहब ने एक सहायक को सरकारी छाता लाने के लिए भेजा, उस ने आ कर बताया कि उन का ही चपरासी सरकारी छाता ले कर बाजार गया है। कुछ देर में आ जाएगा। अतः सचिव साहब सरकारी छाते का इंतजार करने लगे।

इधर रामधन ने जन संपर्क अधिकारी से आदेश पत्र लेने के बाद बिल का भुगतान करने को कहा तो जनसंपर्क अधिकारी ने कहा, "आप एकाउंटेंट के पास जाइए वहीं आप के बिल का भुगतान होगा।"

जब रामधन एकाउंटेंट के पास पहुंचा तो एकाउंटेंट ने बिल देकर सोच समझा और कहा, "आपको बिल बनाना पड़ेगा।" रामधन ने बिल बनाने से इनकार कर दिया। इस पर रामधन का माथा गरम हो गया। उस ने कहा, "हर जगह रुपए ही देता रहूं तो मुझे क्या मिलेगा।"

एकाउंटेंट और भी गरम हो कर बोला, "क्या मैं इस का जिम्मेदार हूँ? बिना रुपए लिए मैं बिल पास नहीं करूंगा।"

रामधन इस की शिकायत ले कर जनसंपर्क अधिकारी के पास पहुंचा तो जनसंपर्क अधिकारी ने फटकारते हुए कहा, "मेरा जहां तक कार्य था, कर दिया। अब मैं कुछ नहीं जानता। आप सचिव साहब के पास जाइए।"

रामधन मुरझाए चेहरे को लेकर सचिव साहब से मिलने के लिए चल पड़ा और सोचने लगा कि 500 रुपए में तो उस ने छाता खरीदा, 300 रुपए जनसंपर्क अधिकारी एवं 500 रुपए चपरासी को दिए। उस के बाद एकाउंटेंट भी 200 रुपए मांगता है तो उसे क्या बचा।

वह जब सचिव साहब के कार्यालय के सामने पहुंचा तो देखा कि असंख्य लोगों की भीड़ लगी हुई है। उस ने भीड़ में से झांक कर देखा तो एक कुचला हुआ शव दरवाजे के समीप पड़ा हुआ था और उस के बगल में टूटा हुआ वही छाता था।

जब रामधन ने घटना के बारे में एक व्यक्ति से पूछा तो उस ने बताया, "यह सरकारी छाता बहुत खराब है। पहले तो इस ने मुख्य छाता निरीक्षक की उंगली कुचल दी और बेचारे को तीन टांके लगवाने पड़े और आज जब सचिव साहब का चपरासी इस छाते को ले कर बाजार गया तो ट्रक से कुचला गया।"

रामधन ने पूछा, "वह कैसे भाई?" तो सचिवालय के एक अन्य कर्मचारी ने बताया, "जब वह सड़क पार कर रहा था तो उस की आंखें छाते के फैलाव से ढकी हुई थीं। फलस्वरूप सामने से आता हुआ ट्रक उसे दिखलाई नहीं पड़ा, जिस से यह दुखद घटना

घट गई।"

रामधन ने बिल बनाने से इनकार कर दिया। बिल का क्या होगा," और वह लोगों के धकेलते हुए सचिव साहब के कार्यालय पहुंचा तो देखा कि वहां पर थानेदार सचिव साहब से मरे हुए चपरासी के बारे में रिपोर्ट ले रहे हैं।

रामधन सचिव साहब से बोला, "साहब, छाता तो टूट गया, परंतु मेरे बिल का क्या होगा।" तो सचिव साहब ने गरमाते हुए कहा, "आप कौन हैं।"

इस पर रामधन ने अपनी पूरी दाम्ना सुनाई, पर सचिव साहब नम्र होने लगे। बजाए गरजते हुए बोले, "थानेदार साहब यही वह ठेकेदार है जिस ने इस तरह का छाता बना कर दिया, जिस से दो घटनाएं घटीं। आप तुरंत गिरफ्तार कर लें।"

रामधन गिड़गिड़ाते हुए बोला, "साहब, इस में मेरा क्या दोष है। जैसा छाता आप ने मांगा, उसी तरह का छाता मैं ने बना कर दिया।"

"नहीं...नहीं..." सचिव साहब ने कहा, "एक तो इस के छाते से चपरासी की जान चली गई और फिर यह अपना बिल मांग रहा है। थानेदार साहब, आप इसे तुरंत गिरफ्तार कर लीजिए।"

थानेदार रामधन को गिरफ्तार कर ले गया। रामधन फिर गिड़गिड़ाते हुए थानेदार से बोला, "साहब, मैं निर्दोष हूँ। थानेदार गिरफ्तार करने के बाद बोला, "साला, निर्दोष है। इस की खबर तो हवालात में लूंगा।"

थानेदार ने रामधन को घसीटते हुए अपनी गाड़ी में बैठाया। रामधन ने गिड़गिड़ाया तो थानेदार साहब ने कहा, "साले, अगर अधिक बकबक की तो मैं झांपड़ मारूंगा कि नानी याद आ जाए।"

रामधन को टूटे छाते को देख कर अपना सपना भंग होते हुआ दिखलाई पड़ा। रामधन अपने हाथों से आंखों को रगड़ कर के बैठ गया।

अभिधाषा

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक ही ख्वाहिश एक ही तमन्ना
दिल में संजोए हुए
प्यार की अनुभूति की कल्पना
मन में पिरोए हुए
पण्य की वीणा पर
बो छेड़ दे एक तरंग
एक धुन, एक लय, एक उमंग.

मन उपवन को सींच दे
कभी तो फल खिलेंगे
सूने मन की बगिया में.

कैसी भूमिका है प्यार की
इस अभिलाषा की?
कैसी तरंग है प्यार की
इस वीणा की?
सब कुछ तो है
प्यार भी, अनुभूति भी
कसक, वेदना
और इंतजार भी.

-मोहनप्रसाद



पिछले छः महीनों की फिल्में

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्देशिका

उ. : उद्देश्यपण/अवश्य देखिए
स. : समय काटण/चलताऊ

म. : मनोरञ्जक/देख ले
अ. : अपव्यय/समय की बर्बादी

नि. : निर्देशक
मु. पा. : पात्र

सुबह : इस फिल्म में सरकारी महिला आश्रमों में होने वाले अनाचारों और उस में लिप्त राजनीतिवाजों की पोल खोलने का साहसिक कार्य निर्देशक ने किया है। इतना ही नहीं, भ्रष्टाचार का विरोध करने का प्रयास में किसी का हथ्र क्या होता है, इस का भी सजीव चित्रण किया गया है। नि. : जब्बार पटेल, मु. पा. : स्मिता पाटिल, गिरीश करनाड, श्रीकांत मोघे, आशा लता. म.

हावसा : दांपत्य संबंधों को ले कर बनाई गई एक हलकीफुलकी फिल्म जो बंबइया फारमूलों से अलग नहीं हट पाई है। कलाकारों का अभिनय साधारण. हां, स्मिता ने सिद्ध कर दिया कि वह व्यावसयिक फिल्में भी बखूबी कर सकती है। नि. : अंबर खान, मु. पा. : अशोककुमार, अकबर खान, रंजीता, स्मिता पाटिल, नसीरुद्दीन शाह, अमरीश पुरी. अ.

मजदूर : मिल मा एक और मजदूरों के बीच संघर्ष और अनबन दर्शाती फिल्म एक पक्षीय हो कर रह गई है। निर्माता ने भले ही मजदूरों को आगे आने का आह्वान किया है। पर मजदूर की वास्तविक स्थिति का उसे भान नहीं है। फिल्म अनावश्यक भाषणबाजी से भरी है। नि. : रवि चोपड़ा, मु. पा. : दिलीपकुमार, नंदा, राज बब्बर, पद्मिनी कोल्हापुरे, राज किरण, सुरेश ओबराय. अ.

तुम लौट आओ : नौकरी की तलाश में विदेश जाने वाले युवक को रोक कर उसे अपने देश में काम करने के लिए उत्साहित करने व यहीं बसे रहने का संदेश ही इस फिल्म का उद्देश्य है, जो निश्चय ही प्रशंसनीय है। नि. : भीम सेन, मु. पा. : निशांत, कविता चौधरी, करण राजदान, रोमेश मेहता, रत्ना भूषण, मयूर, सविता बेजाज. म.

रोमांस : प्रेम कहानियों पर रोमांटिक फिल्में बनाने में माहिर रामानंद सागर की यह नई फिल्म भी उसी लीक पर है। कहानी बेजान है, पर छायांकन अच्छा है। गीतसंगीत मधुर है। संवाद प्रभावित करते हैं। नि. : रामानंद सागर, मु. पा. : शम्मी कपूर, कुमार गौरव, पुनम डिल्लों, सईद जाफरी. अ.

रजिया सुलतान : ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर बनी बड़े बजट की फिल्म, जो आम दर्शक को निराश ही करती है। मध्यांतर तक फिल्म में कुछ गति बनी रहती है, लेकिन उस के बाद फिल्म बहुत धीमी हो जाती है। फारसी मिश्रित संवादों से भी आम दर्शक उकताहट महसूस करता है। हां, फोटोग्राफी और भव्य सेट ही इस फिल्म की उल्लेखनीय विशेषताएँ हैं। नि. : कमल

अमरोही, मु. पा. : प्रदीपकुमार, धर्मेन्द्र, हेमा, पर सोहराब मोदी. स.

प्राइवेट लाइफ : सुनीति की शादी एक युवक से हो जाती है। वह युवक अपने बास को खुश करने के लिए सुनीति को उस की कामवासना का शिकार देता है। बदले की आग में सुनीति ऊपरी प्रेम देकर वास को वश में कर लेती है और दीलत हाथियाने के उसे धक्के मार कर निकाल देती है। अनेक सामान्य समस्याएं उठा कर भी फिल्म को सेक्स के चरित्र गिरा दिया गया है। नि. : आदर्श, मु. पा. : जयमल

कालका : कोयला खानों के मजदूरों को ले बनाई गई एक सतही फिल्म, जो अंत तक अनेक को अनुत्तरित छोड़ती चली जाती है। प्रायः सभी कलाकारों के बाद भी फिल्म कोई खास प्रभाव छोड़ती। नि. : लोकाेश लालवानी, मु. पा. : शत्रुघ्न बब्बर, रामेश्वरी, सारिका, अरुण गोविन्द, निरंजन सुरेश चटकल. अ.

मुझे इनसाफ चाहिए : पुरुषों के अत्याचारों मारी नारी की व्यथा और अवैध संतानों को उनसे का नाम दिलाने में बाधक कानूनों को बदलने के पुरजोर अपील इस फिल्म में दिखाई देती है। कठिन पात्रों का स्वाभाविक चित्रण व प्रत्येक दृश्य में काम लेने के कारण फिल्म खासी असरदार बन गई। नि. : रामाराव, मु. पा. : रेखा, मिथुन, रीत अंबानी, डैनी, रंजीता, श्रीराम लागू, असरानी, अश्विनी कालिज जीवन में होने वाले प्रेम प्रसंगों, शराब, मारपीट को ही फिल्माया गया है। नि. : राजीव मु. पा. : शम्मी कपूर, तनूजा, राजीव कपूर, प्राण, बेदी. अ.

एक जान हैं हम : एक हलकीफुलकी फिल्म जो कालिज जीवन में होने वाले प्रेम प्रसंगों, शराब, मारपीट को ही फिल्माया गया है। नि. : राजीव मु. पा. : शम्मी कपूर, तनूजा, राजीव कपूर, प्राण, बेदी. अ.

बेकरार : नायकनायिका का प्रेम, मारपीट, डांस जैसे फारमूलों को ले कर बनाई गई बेजान फिल्म जिस में कोई भी कलात्कर प्रभावित नहीं कर पाएगा। आनंद बख्शी के गीतों को लक्ष्मीकांत प्यारेलाल धुनों में बांधा है, मगर डिस्को के समय गाए जाने गीतों में शोर अधिक है। नि. : व. व. राजेंद्रप्रसाद, संजय दत्त, पद्मिनी कोल्हापुरे, अशोककुमार, पाठक, असरानी, ओमशिवपुरी, सत्येन कपूर.

नविद्या के पार : मारधाड़, सेक्स, हिंसा की दूर एक अच्छी फिल्म भाई के प्रति भाई के प्रेम के प्रतीक के रूप में प्रदर्शित किया गया है। नि. : प्रदीप

विसंबर (प्रथम)

उन से दर्शक अवश्य ही बंधा रहता है। गीतसंगीत मधुर
नि. : गोविंद यूनिट, **डायलॉग** : सजिन साधनासिंह
मिताली, इंदर ठाकुर, शीला डोवड, स.

बेआबरू : दौलत के लालच में आ कर भूल और
गरीबी से लाचार युवतियों को जिसका सौदा करने पर
मजबूर करने वालों को पर्दाफाश करती यह फिल्म अपने
उद्देश्य में काफी हद तक कामयाब रही है। सभी अपनी
अपनी भूमिकाओं में सही हैं। गीतसंगीत साधारण हैं। नि. :
शिवकुमार, **मु.पा.** : अपेक्षा, रवींद्र महाजनी, साजिदा
खान, महावीर शाह. स.

बेइबान : विवाह पूर्व प्रेम कर बैठने और अनेक
परेशानियों को सहते हुए भी अपनी जुवान नहीं खोलने
वाली युवती की कहानी। फिल्म में कोई नवीनता नहीं है,
नसीरुद्दीनशाह ने जरूर कहींकहीं प्रभावित किया है।
संगीत व गीत साधारण हैं। नि. : वापू, **मु.पा.** : शशि
कपूर, रीना, नसीरुद्दीनशाह, युनुस परवेज, म.

बंधन कच्चे धागों का : प्रेम भावना और दो बच्चों
के साथ एक छोटे से परिवार का मुँखिया है। व्यापार के
सिलसिले में बाहर जाता है। जहाँ स्नेह से उस की
मुलाकात और शारीरिक मिलन भी होता है। स्नेह एक
बच्चे को जन्म देती है। लेकिन प्रेम उसे भूल चुका होता है,
फिर प्रेम को रहस्य का पता चलता है। कुछ नाटकीय
घटनाओं तथा स्नेह की मृत्यु के बाद प्रेम उसे अपना लेता
है। नि. : अनिल शर्मा, **मु.पा.** : राखी, शशि कपूर, जीनंत,
देवेन वर्मा, मास्टर रवि, प्रेम चोपड़ा. स.

नौकर बीवी का : बेहद नाटकीय और फूहड़
हाकतों से भरपूर एक फिल्म जिस के बारे में अंत तक
निर्णय नहीं लिया जा सकता कि यह हास्य फिल्म है
अथवा स्टेट या भावना प्रधान. घटनाएं अत्यधिक
नाटकीय सी लगती हैं। नि. : राजकुमार कोहली, **मु.पा.** :
धर्मेद, अनीता, रीना, प्राण, विनोद मेहरा. अ.

गीत हमारी : छोया और पाया के फारमूले पर
की यह फिल्म नएपन के नाम पर एकदम शून्य है।
तमाम किस्म के फिल्मी मसालों को कुछ तेज कर दिया
गया है। इंदीवर और माया गोविंद के गीतों पर भप्पी
साहोदी ने चालू किस्म की धुनें बनाई हैं। नि. :
त्यागराजन, **मु.पा.** : राकेश रोशन, रजनीकांत, अनीता,
ओम शिवपुरी, मदनपुरी. अ.

को सात दिन : प्रेमिका पत्नी बन सकती है, पर
पत्नी प्रेमिका नहीं बन सकती। इसी समस्या को तर्क
संगत रूप में उठाया गया है, पर शिथिल पटकथा के
खरग कहानी बिखर गई है। नि. : वापू, **मु.पा.** : अनिल
कपूर, पद्मिनी, नसीरुद्दीन शाह, राजू, दीना पाठक. स.

बेताब : गरीब सनी असीर बाप की लड़की रोमा से
काफी नोकझोंक के बाद प्यार करने लगता है। रोमा का
पिता दिनेशसिंह इसे पसंद नहीं करता. अंत में तमाम
भारभाड़ के बाद प्रेमीप्रेमिका का मिलन हो जाता है।
दृश्यों में रोचकता बनी रही है। नि. : राहुल खेल, **मु.पा.** :
सनी देवल, अमृता सिंह, शशि कपूर, प्रेम चोपड़ा.

पुनता

असरानी. म.

जस्टिस चौधरी : पूरी तरह से लीक से बंधी हुई
फिल्म, जिस में कहानी का अंदाजा फिल्म शुरू होते ही हो
जाता है। फिल्म के संवाद घटिया है और गीतसंगीत का
पक्ष बेहद कमजोर है। नि. : के. राघवेंद्र राव, **मु.पा.** :
जितेंद्र, धीरेदी, हेमा, मौसमी, कादर खान. अ.

बो विशाएं : चोटी के कलाकारों को ले कर भी
घटिया कहानी से एक अच्छी फिल्म नहीं बनाई जा
सकती। यह इस फिल्म के निर्देशक ने यह सिद्ध कर दिया
है। कमलेश्वर की उद्देश्यहीन कहानी में बेसिरपैर की
घटनाओं के अतिरिक्त कुछ नहीं है। हां, शीर्षक कुछ
अवश्य प्रभावित करता है। नि. : दुलाल गुहा, **मु.पा.** :
धर्मेद, हेमा, श्रीराम लागू, प्रेम चोपड़ा, अमित सेन. अ.

बर्ब का रिश्ता : नरगिस की स्मृति में सुनील दत्त
द्वारा कैसर पर आधारित फिल्म. एक देशप्रेमी डाक्टर
की कहानी, जो देशसेवा के लिए अमरीका में अपनी
पत्नी को तलाक दे आता है तथा दूसरी शादी कर लेता है
और उस की बेटी को कैसर हो जाता है। डाक्टर की पहली
पत्नी उस का इलाज करती है. अंधविश्वासों से भरपूर
होने के कारण फिल्म कुछ प्रभावहीन हो गई है। नि. :
सुनील दत्त, **मु.पा.** : सुनील दत्त, स्मिता पाटिल, रीना
राय, खुशबू. म.

बुंछरू : वेश्या उद्धार पर बनी फिल्म, जो तरहतरह के
मसालों के नीचे दब कर रह जाती है। कैसर वेश्या है और
दीवान विक्रमसिंह के प्रेम में कोठा छोड़ देती है। अनेक
तरह के कष्ट उठा कर ही अंत में बुढ़ापे में वह दीवान को
हासिल कर पाती है। नि. : राम सेठी, **मु.पा.** : बहीदा
रहमान, शशि कपूर, स्मिता पाटिल, सुरेश ओबराय,
कुणाल गोस्वामी. म.

आओ प्यार करें : सेक्स पर आधारित भोंडी हास्य
फिल्म, जो बारबार एक ही प्रकार से सेक्सी दृश्य आने से
उबाऊ हो गई है। नि. : प्रकाश वर्मा, **मु.पा.** : वेंजामिन
गेलानी, राधिका बरटके, अमृतपाल, अनिता
अडवानी. अ.

रिश्ता कागज का : बहन भाई के त्याग व प्रेम की
अति भावुकतापूर्ण फिल्म, जो अभिनय व प्रस्तुतीकरण
दोनों ही लिहाज से शून्य है। नि. : अजय गोयल, **मु.पा.** :
नूतन, रति, राज बब्बर. अ.

हम से न जीता कोई : दो भाई टैक्टर खरीदने गांव
से शहर जाते हैं, लेकिन तस्करों के चक्कर में पड़ जाते हैं।
सामान्य घटनाओं से भरपूर एक हास्य फिल्म, नि. : शिव
मिता, **मु.पा.** : रणधीर, रंजीता, अमजद. स.

एक बार चले आओ : देहज की समस्या पर बनी
एक फिल्म, जो मध्यांतर के बाद विषय से भटक कर
प्रतिशोध पर पहुंच जाती है। नि. : जगदीश सिधाना, **मु.पा.** :
फारुक, दीप्ति, गिरीश. अ.

कबा : पंचतंत्र की कछुआ व खरगोश की दौड़ की
कहानी को आधुनिक संदर्भ में हास्यपूर्ण ढंग से पेश किया
गया है। नि. : सुई परांजये, **मु.पा.** : फारुक, दीप्ति,
नसीरुद्दीनशाह. म.

संदीप पाटिल का दावधा

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संदीप पाटिल की शोहरत *को निर्माता निर्देशक विजयसिंह ने भुनाने के लिए जब से संदीप पाटिल को हीरो के रूप में

ले कर फिल्म शुरू की है. उस के क्रिकेट की पर इस का बुरा असर पड़ा है. चौके के छकके लगाने वाला संदीप पाटिल बहुत कम रन संख्या पर मैदान से बाहर हो जाते



इसी लिए अब वह धीरे-धीरे क्रिकेट प्रेमियों के दिलों से भी उतर रहा है। यह है कि फिल्में बन कर तैयार होगी तब तक उस की लोकप्रियता पूरी तरह खत्म हो जायेगी।
 विजयसिंह, जो फिल्म बना रहे हैं, उसे देखेगा

शोभा : 'पुराने कलाकारों को नए कलाकारों के साथ ऐसा खिलवाड़ नहीं करना चाहिए.'



कौन? संदीप पाटिल अगर एक ही नाव में सवार हो तो बेहतर होगा।

शोभा का दर्द

नई प्रतिभाओं के साथ पुराने कलाकार कितनी बेरहमी दिखाते हैं, इस का एक उदाहरण हाल ही में देखने को तब मिला, जब संजीवकुमार ने नई अभिनेत्री शोभा के साथ फिल्म 'शरारत' में काम करने से इनकार कर दिया। संजीवकुमार ने निर्माता आत्माराम से कहा, "आप फिल्म की हीरोइन को



बदलिए," लेकिन आत्माराम अपनी फिल्म में शोभा के काम से संतुष्ट थे। इसलिए उन्होंने शोभा के बजाए संजीवकुमार को ही फिल्म से निकाल बाहर किया। अब संजीवकुमार वाली भूमिका अमजद कर रहा है।

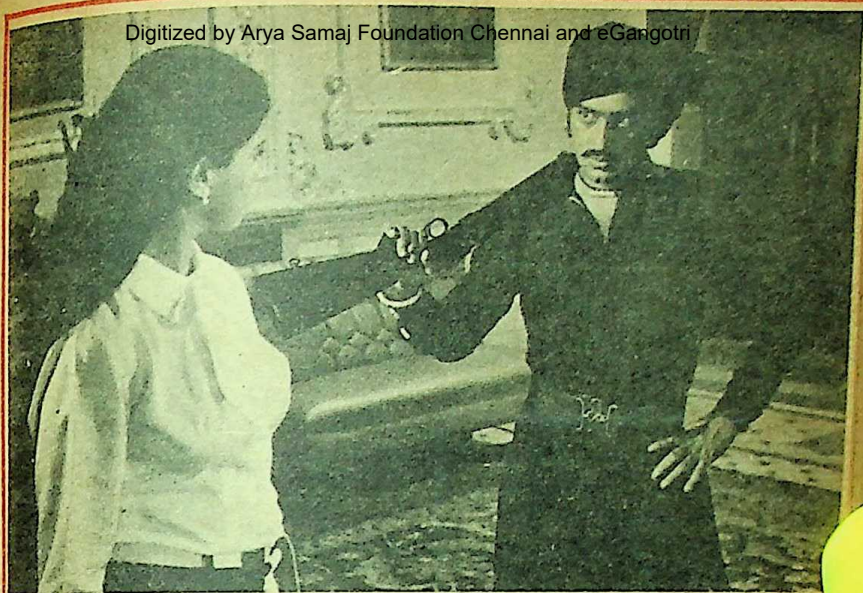
इस बारे शोभा का कहना है, "हैंरि भाई जैसे कलाकार से मुझे ऐसी उम्मीद नहीं थी, क्योंकि वह भी तो बहुत छोटीछोटी भूमिकाएं कर के इस स्थान पर पहुंचे हैं। उन के साथ काम कर के मुझे कुछ प्रोत्साहन ही मिलता। खैर अब उन की जगह अमजद भाई हैं और वह भी बेजोड़ अभिनेता हैं ही मैं खुश हूँ, लेकिन पुराने कलाकारों को नए कलाकारों के साथ ऐसा खिलवाड़ नहीं करना चाहिए।

शोभा 'शरारत' के अलावा 'मिल गई मंजिल मुझे,' 'पोस्टर' और 'सजनी' में भी मुख्य भूमिकाएं निभा रही हैं।

नताशा की चालाकी

देव आनंद की नई खोज नताशा सिन्हा के बारे में यह बात अब आम हो गई है कि वह सुनील आनंद जैसे सीधेसादे लड़के को हमेशा बेवकूफ बनाती रहती है और सुनील आनंद नताशा की असलियत को न समझते हुए उस में गंभीरता से दिलचस्पी ले रहा है।

फिल्म 'आनंद और आनंद' में नताशा सिन्हा और सुनील आनंद।



फिल्म 'जिगरवाला' में प्रीति सप्रू के साथ गुलशन ग़्रोवर.

फिल्म "आनंद और आनंद" में दोनों एक साथ काम कर रहे हैं। अब तक सुनील आनंद से किसी को कोई खास उम्मीद नहीं बंधी है, लेकिन नताशा के बारे में लोगों की रूढ़ि है कि वह इसी अंदाज से चलती रही तो एक दिन सफल अभिनेत्री बन जाएगी। फिल्म उद्योग में जिस तरह जोड़तोड़ किए जाते हैं, उस में नताशा काफी निपुण है, पर देखना यह है कि सफलता किस के हाथ लगती है सुनील आनंद के या नताशा सिन्हा के.

अलग पहचान का सवाल

गुलशन ग़्रोवर 'एक जान हैं हम' व 'अर्थ' आदि फिल्मों के बाद एक नए खलनायक के रूप में अभरा है. 'मजदूर', 'मशाला' और 'सागर' फिल्मों में भी उस की विशेष भूमिकाएं हैं. पर उस के लिए सब से बड़ी समस्या यह है कि कई बार कमल हासन के चाहने वाले उसे कमल हासन समझ कर आटोग्राफ मांगने लगते हैं. वास्तव में कमल हासन और गुलशन ग़्रोवर की सूरत एकदूसरे

से बहुत मिलती है, पर अभिनय के क्षेत्र में गुलशन ग़्रोवर अपनी अलग पहचान बनाने में प्रयत्नशील हैं.

कमाल अमरोही की असफलत

कमाल अमरोही द्वारा निर्देशित फिल्म 'रजिया सुलतान' जितनी धूमधाम से प्रदर्शित की गई, उतनी ही बुरी तरह असफल हुई है. इस फिल्म की नाकामी का असर फिल्म के निर्माता ही नहीं धर्मेन्द्र व हेमा मालिनी पर भी पड़ा है और कमाल अमरोही के बारे में तो लोगों का कहना है कि अब भविष्य में कमाल अमरोही से शायद ही कोई निर्माता इतनी बड़ी फिल्म का निर्देशन करने की बात कहे. फिल्म उद्योग वालों का मशवरा तो यह है कि कमाल अमरोही को फिल्म उद्योग से संन्यास ले लेना चाहिए, वरना हम तो डूबेंगे सनम तुम को भी ले डूबेंगे वाली कहावत चरितार्थ होगी. क्योंकि फिल्म 'रजिया सुलतान' से वितरकों को 75-75 लाख का नुकसान होने की संभावना है.



शेंट • रवींद्र थापर

10 दिसंबर, 1983 को रति अग्निहोत्री अपने जीवन के 22 साल पूरे करेगी। दक्षिण में 32 फिल्मों में काम करने के बाद, वह 1980 में फिल्म 'एक दूजे के लिए' से हिंदी फिल्मों में आई थी। यह फिल्म बहुत सफल रही थी। अब तक उस की 12 फिल्में आ चुकी हैं और अभी 28 फिल्मों की शूटिंग हो रही है। बड़े निर्मातानिर्देशक जैसे बलदेव राज बोपड़ा, मनमोहन देसाई और शक्ति सामंत की आने वाली फिल्मों में भी रति नज़र आएंगी। प्रमिताभ बच्चन, दिलीपकुमार, राजेश

खन्ना और जितेंद्र उस में नायक हैं।

अक्टूबर 1981 में रति अपने परिवार के साथ बंबई के सी रौक होटल में मद्रास से आई थी। अब उस के पास अपना घर है, चार कारें हैं और निर्माता नोटों से भरे ब्रीफकेस ले कर उस के पीछे दीवानों की तरह घूमते रहते हैं। उस की 40 हिंदी फिल्मों में करोड़ों रुपए दांव पर लगे हुए हैं। हर रोज उसे नए अनुबंध मिल रहे हैं।

वैसे 22 साल की उम्र पूरी करने में तो अभी उसे छः महीने बाकी हैं, पर इस समय

वह च
एक व
कोई
वाली
कर र
फिल्म

वह चोटी की अभिनेत्री बन चुकी है। करीब एक करोड़ रुपया वह कमा चुकी है। आगे का कोई हिसाब नहीं है।

उस के पिताजी मद्रास में विक्स बनाने वाली अमरीकन फर्म रिचार्डसन में नौकरी कर रहे थे। वहीं भारतीय राजा (राजेंद्रकुमार की फिल्म 'लवर्स' के निर्देशक) ने 1979 में उसे

कस-कस में अपनी बेहतर अभिनय क्षमता के बल पर रति अग्निहोत्री ने हिंदी फिल्मों में अपनी अलग छवि बनाई है। इस बारे में वह खुद क्या कहती है?



परिवार
मद्रास से
है, चार
लक्षों से
ते रहते
इं रुपए
अनुबंध
ने में तो
स समय



रति अग्निहोत्री फिल्म 'आलराउंडर' के सेट पर.

18 साल की उम्र में ही तमिल फिल्म 'पुथिया-वार पुक्कलन' में बतौर नायिका ले लिया, पर पंजाबी भाषी रति के संवाद डब किए गए यह फिल्म चल निकली थी तो तमिल, तेलगु और कन्नड़ भाषाओं की 32 फिल्मों में रति ने काम किया. एक लड़की जो तीनों भाषाएं जानती थी, रति के लिए डबिंग करती थी.

प्रसिद्ध निर्माता एल.वी.प्रसाद ने के.बालचंद्र के निर्देशन में रति और कमल हासन को ले कर फिल्म 'एक दूजे के लिए' बने। बंबई के वितरक गुलशन राय को यह फिल्म जंची नहीं, पर उस ने जोखिम उठा कर इसे प्रदर्शित किया. इस फिल्म ने बंबई ही में नहीं, सारे देश में कामयाबी के झंडे गाड़ दिए.

रति अग्निहोत्री मद्रास से बंबई चली आई और बंबई फिल्म उद्योग ने उसे स्टार बना दिया.

रति के पिता अपनी बेटी के सचिव की तरह हैं और पिछले दिनों को मुंबई से शहर की तारीखें देते हैं. वैसे उस का एक सचिव भी

है. उस की मां, कभी रेडीमेड कपड़ों का व्यापार करती थीं अब रति के साथ हर जगह जाना ही उन का काम हो गया है.

रति की बड़ी बहन अनीता विवाहित है, पोलैंड में रहती है और हर साल भारत अवश्य आती है.

रति का एक बड़ा भाई है, जो मद्रास रेस्तरां चला रहा था, अब वह बंबई में शाह खोल रहा है. फिलहाल वह दिल्ली में बस रहा है. वह फिल्मों से अलग रहना चाहता है.

यह है रति का घरसंसार. रति को बेसाहता कह देती है, "मेरे समूचे व्यक्ति पर सब से अधिक प्रभाव मेरे परिवार का है. मांबाप ही नहीं, मेरी बहन और भाई शख्सियत के साथ घुलेमिले हैं."

ऐसा बहुत कम अभिनेत्रियां सोचती हैं पर रति की तो हर बात निराली है. हर बात वह नपीतुली ही करती है. अभिनेत्रियों को तानाशुनकरे उस में जरा भी नहीं है. वह साढ़े सात बजे स्टूडियो पहुंच जाती है, बस

दिसंबर (प्रथम) 1983

निर्देशक तब तक आए हों या नहीं और साढ़े छः बजे अपनी नील रंग की ट्यूटू कोर में बैठ कर घर चली जाती है।

22 साल से कम उम्र की रति के इरादे ऐसे हैं कि वह हेमा मालिनी के बाद उस के स्थान की सही दावेदार है। रति के शब्दों में, "मुझे जल्दी ही शिखर तक पहुंचना है। जरा सा भी नीचे रहूं, यह मुझ से बरदाश्त नहीं हो सकेगा।"

सफलता ने उस के हौसले और बुलंद कर दिए हैं। वह कहती है, "दूसरों की बात और है। उस के पास समय था। मेरे पास समय नहीं है। मैं चारपांच साल में शादी करने वाली हूँ।"

लेखक रति अग्निहोत्री से जुहू के 'सन एंड सैंड होटल' में मिला, जहां वह मिथुन के साथ 'पसंद अपनी अपनी' फिल्म की शूटिंग।

रति अग्निहोत्री : हर तरह के किरदार निभाने में सक्षम.



मेकअप कराने के लिए तैयार—रति अग्निहोत्री.

कर रही थी। वह लेखक को होटल के हाल में ले गई, जहां शूटिंग हो रही थी।

रति की शिक्षा 11वीं कक्षा तक ही हो सकी। पंजाबी वह नहीं बोल सकती, अंगरेजी में खूब धाराप्रवाह बात कर लेती है।

उस से लेखक ने कुछ अन्य प्रश्न भी किए जो इस प्रकार हैं:

प्रश्न : फिल्मों में तुम कैसे आई, क्या बचपन से ही तुम्हारे अभिनेत्री बनने के अरमान थे? क्या तुम्हारे मांबाप ने तुम्हें रोका नहीं?

उत्तर : सच तो यह है कि मैं ने कभी अभिनेत्री बनने के बारे में सोचा तक नहीं था। मैं तो डाक्टर बनना चाहती थी।

मैं स्कूल में थी जब निर्देशक भारतीय राजा ने मुझे तमिल फिल्म की हीरोइन बना दिया, जिस की शूटिंग मेरी छुट्टियों में ही हुई और एक महीने में पूरी हो गई। दक्षिण में फिल्म जल्दी बन जाती है। वहां मैं ने 32



फिल्मों में काम किया है।

‘एक दूजे के लिए’ की सफलता के बाद मैं ने बंबई को अपना लिया। हाँ, अब मैं शिखर तक पहुँच कर ही दम लूंगी। मैं बचपन में महत्वाकांक्षी नहीं थी। अब सफलता ने मुझे महत्वाकांक्षी बना दिया है।

प्रश्न : फिल्म ‘एक दूजे के लिए’ तो दक्षिण में बनी थी तो बंबई आ कर तुम्हें यहां के तौरतरीकों के साथ समझौता करने में कोई कठिनाई तो नहीं हुई?

उत्तर : बंबई में अधिकतर निर्माता पंजाबी ही हैं। फिल्म का माध्यम मद्रास और बंबई में एक जैसा है। हाँ, यहां का वातावरण व्यापारिक अधिक है। सो मैं ने भी बंबई के माहौल में अपने को ढाल लिया है।

मैं कहानी और उस में अपनी भूमिका को अहमियत देती हूँ। कहानी अच्छी हो या निर्माता का नाम बड़ा हो तो मैं अपने पारिश्रमिक में कमी कर देती हूँ, पर आम तौर पर मैं अपना पूरा पारिश्रमिक लेती हूँ।

रति अग्निहोत्री एक पारंपरिक वेशभूषा में।



अभिनय तो मेरा पेशा है। मेरी अच्छी या बुरी फिल्मों का निर्माण मैं नहीं करूँ।

प्रश्न : फिल्म ‘एक दूजे के लिए’ कहींकहीं तुम्हारी अदाकारी देखने को मिल जाती है। बाद में तुम पूनम दिल्लों की तरह केवल सजावट की गुड़िया ही बन कर बचे गई हो?

उत्तर : कृपया मेरी किसी के तुलना न कीजिए। मैं अपने ही ढंग से अभिनेत्री हूँ। ‘एक दूजे के लिए’ जैसी भूमिका मुझे फिर कहाँ मिली है? यहां कहानी के तानाबाना पुरुषों के इर्दगिर्द रहता है। लड़कियों को दोएक गाने गाना व कपड़े पहन कर, बनठन कर कैमरे के सामने मुसकराना पड़ता है।

मैं किसी कहानी या पटकथा में हस्तक्षेप नहीं करती। किसी निर्देशक को भाषण दे देती। आम ढर्रे के किरदारों की भीड़ में, मैं चारपांच फिल्मों ऐसी आ रही हूँ, जिन्हें देख कर आप को भी ऐसा लगेगा कि मैं भाग्यशाली अभिनेत्री नहीं हूँ, सिर्फ छः महीने के बाद आप को ऐसा लगेगा कि मेरा दावा झूठ साबित है।

प्रश्न : क्या कल तुम खुद भी निर्माण बनना चाहोगी?

उत्तर : कभी नहीं। मेरे विचार सदा ही ऐसे ही रहे हैं। फिल्म क्षेत्र तो जुए का अड़्डा है। यहां अपनी कड़ी मेहनत का एक पैसा भी लगाने को तैयार नहीं हूँ। मैं दूसरे कामों में पैसा लगा दूंगी। मेरे भाई ने रेस्तरां खोल रखे हैं। मैं भी कुछ कर रही हूँ, पर अभी उस के बारे में कुछ बतलाना नहीं चाहूंगी।

प्रश्न : तुम्हारी उम्र की लड़कियां शादी कर लेती हैं, तुम्हारे भी घर बसाने के लक्ष्य होंगे। फिल्मों की दौड़ ने कहीं तुम्हारे अरमानों का दम तो नहीं घोटा है।

उत्तर : थोड़ा बहुत समझौता तो करना ही पड़ता है। मैं बहुत व्यस्त रहती हूँ। सोचने का समय कम ही मिलता है। बंबई में मेरे रिश्तेदार रहते हैं। मेरी उम्र की लड़कियां कई की शादी हो गई है। हम मिलते रहते हैं। मुझे उम्र का साथ अच्छा लगता है।



रति अग्निहोत्री : 'अब मैं शिखर तक पहुंच कर ही दम लूंगी.'

चारपांच साल के चाद मैं शादी जरूर कर लूंगी.

प्रश्न : तुम्हारी फिल्मों के अभिनेताओं के साथ तुम्हारे जो अच्छेबुरे चर्चे होते हैं, उन के बारे में क्या कहती हो?

उत्तर : फिल्मी पत्रिका वाले बहुत कुछ ऊलजलूल लिख देते हैं. संजय दत्त के साथ मेरे सिर्फ दोस्ताना ताल्लूकात हैं. इस से ज्यादा कतई नहीं. मनाली में 'जानी' की शूटिंग के समय मेरे साथ था और

संजय दत्त शाम का समय हमारे साथ ही बिताया करता था। इस पर लोगें ने बेबुनियाद फण्डामेन्टल कहा। कहीं एकत्र की बातें उड़ा दीं।

कमल हासन के साथ मैं ने तीन फिल्में साइन की हैं। हम में कोई मनमुटाव नहीं है और न ही कोई खास दोस्ती है।

मिथुन की फिल्म में मैं भी काम कर रही हूं। निर्देशक राज सिप्पी ने मुझे फिल्म 'ताला चाबी' में लिया है।

पत्रिकाओं को अपने पन्ने काले करने ही होते हैं। हरेक सफल अभिनेत्री को यह सब भुगतना पड़ता है। पत्रकार हीरो के साथ उस का रिश्ता जोड़ लेते हैं और निर्माता के साथ झगड़ा होने की खबर उड़ा देते हैं। मैं आप को बताती हूं कि मेरा इस समय तक किसी से कोई प्रेम संबंध नहीं है।

प्रश्न: तुम्हारे स्वभाव के बारे में बड़ी भ्रांतियां हैं। इस बारे में तुम क्या कहोगी।

उत्तर: कुछ लोग यह भी कहते हैं कि मैं घमंडी हूं, पर यह सच नहीं है। स्वभाव से मैं शर्मीली हूं। मुझे खुलने में समय लगता है। मैं हरेक के गले मिल कर उस के गाल नहीं कचोट सकती। मुझे जो पसंद है, वह बहुत पसंद है। जो अच्छा नहीं लगता, उस से मैं बात तक नहीं करना चाहती।

प्रश्न: अपने बारे में और कुछ बताओ?

उत्तर: मुझे सोचना, सपने लेना बहुत

अच्छा लगता है। मैं आप से बात कर रही हूँ।

मेरी नींद बहुत हल्की है। वैसे भी नींद को मैं जिंदगी में बेकार ही मानती हूँ। हम अपना ज्यादा जीवन सो कर ही गंवा देते हैं। मुझे बहुत कुछ करना है। इसी लिए मैं बेखवा या गहरी नींद नहीं सो पाती। थोड़ी सी नींद मुझे तरोताजा कर देती है। मुझे किताबें पढ़ने का शौक है। सोने से पहले मैं एक घंटा पढ़ती हूँ। मुझे सब तरह के खेल खेलने का शौक है। मुझे घूमना बहुत अच्छा लगता है। तैरना भी मुझे बहुत प्रिय है। जब मैं 12-13 साल की थी तो मद्रास में मैं चैंपियन रही थी। अब भी रविवार को अपना तैरने का शौक पूरा करती हूँ, क्योंकि रविवार को मैं भी काम नहीं करती। अपने परिवार के साथ, रिश्तेदारों के साथ खूब मजे से दिन बिताती हूँ।

मैं अकसर अपने बारे में सब फैसले आसानी से कर लेती हूँ, पर कभीकभी मुझे दो टूक फैसला नहीं हो पाता।

रति अग्निहोत्री की आने वाली प्रमुख फिल्में हैं। यश चोपड़ा की 'मशाल' के। विश्वनाथ की 'शुभकामनाएं', मनमोहन देसाई की 'कुली', बासु चटर्जी की 'पसंद अपनी अपनी', मोहनकुमार की 'आलराउंडर', टोनी की 'इतिहास', शक्ति सामंत की 'आवारा हूँ' और मिथुन चक्रवर्ती के 'बाक्सर'।

50 परखनली शिशु

1978 में विश्व का पहला परखनली शिशु (वास्तव में यह परखनली न हो कर शीशो की डिश होती है, जिस में स्त्री के डिंब और पुरुष के शुक्राणु का मेल कराया जाता है और फिर यह डिंब स्त्री के गर्भाशय में स्थापित कर दिया जाता है) पैदा कराने वाल डा. राबर्ट एडवर्ड्स ने सितंबर 1980 में कैंब्रिज में एक परखनली शिशु केंद्र खोला था, जिस में अब तक वह 50 बच्चे पैदा करवा चुके हैं। इन में 26 लड़कियां और 24 लड़के हैं। इन में चार बच्चे जुड़वा भी हैं। उन्होंने पहली परखनली शिशु लुइस ब्राउन, जो 2.6 किलोग्राम की पैदा हुई थी, की एक बहन को भी परखनली द्वारा ही जन्म दिलवाया है। इस पर इन दोनों परखनली लड़कियों की मां 30 वर्षीया ब्राउन काफी प्रसन्न है।

डा. एडवर्ड्स ने बच्चे पैदा न कर सकने वाली महिलाओं के लिए 10 दिवसीय चिकित्सा कोर्स भी चलाया है। इस के लिए विश्व से हजारों महिलाओं ने अपने आवेदन भेजे हैं। डा. राबर्ट एडवर्ड्स के दो भाई डा. क्लेव और डॉ. वेल्स को जड़ से दूर करने के लिए शोध भी कर रहे हैं।

दिसंबर (प्रथम) 1980

आपके बच्चे कल क्या बनते हैं

यह इस पर निर्भर करता है
कि आप उन्हें आज पढ़ने के
लिए क्या देते हैं

आपके बच्चों के लिए
स्कूल के पश्चात सिर्फ खेलना ही काफी नहीं।
उनको दीजिए सुमन सौरभ- दिल्ली प्रेस की नई पत्रिका
जी हां, वही दिल्ली प्रेस जो पिछले 40 वर्षों से
आपके पूरे परिवार के लिए सरिता, गृहशोभा, मुक्ता,
भूभारती, चंपक, कैरेवान और वूमंसडैरा प्रकाशित
करते आ रहे हैं।

सुमन सौरभ आपके बच्चों का संतुलित विकास करने
के लिए प्रकाशित की जा रही है।

सुमन सौरभ की शिक्षा पूर्ण कहानियां व रोचक स्तंभ
आप के बच्चों को जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा देंगे।
उन का स्वस्थ मनोरंजन करने के साथसाथ उन को देश व
समाज के प्रति अपना उत्तरदायित्व निभाने के लिए तैयार
करेंगे।

हर महीने अपने बच्चों को ले कर दें

सुमन * सौरभ



बहुत दूर चलना है

मैं नहीं कहता तुम से,
कि तुम्हारे आंचल में
अंबर के सितारे भर दूंगा,
क्योंकि
हमें जीना है,
इसी जमीन पर जीना है.

मैं यह भी नहीं कहता
कि तुम्हारे लिए अलग
दुनिया बसा दूंगा,
क्योंकि
हमें रहना है,
इसी दुनिया में रहना है.



मैं यह भी नहीं कहता
कि तुम्हारे लिए सब कुछ
कर दूंगा. क्योंकि
वह तो हमें करना ही होगा,
जो करना है.

तो सिर्फ
मैं यह कहता हूँ तुम से
कि मेरे साथ
हकीकत की जमीन पर चलना
चाहो, तो आओ, चलें,
हमें बहुत दूर चलना है.

लेख • रणबीरसिंह



सखारोव अपनी पत्नी येलिना के साथ.

कम्यूनिज्म के पिंजरे में कैद एक प्रतिभा

अपने सीने पर विश्व विख्यात पुरस्कारों और सम्मानों को संजोए आंद्रे सखारोव आज सोवियत संघ की तथाकथित समाजवादी सरकार की दमनात्मक काररवाई के बीच घुटघुट कर जी रहे हैं। व्यक्ति स्वतंत्रता की दुहाई देने वाली सरकार ने उन की आजादी पर पहर क्यों लगाए हैं?

सोवियत संघ में मास्को से 400 किलोमीटर दक्षिणपूर्व में एक शहर है गोर्की। मैक्सिम गोर्की रूस के सुप्रसिद्ध साहित्यकार रहे हैं। विश्व प्रसिद्ध उपन्यास 'मां' उन्होंने ही लिखा है। गोर्की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के हामी थे, लेकिन उन के नाम के शहर में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का उपयोग करने वाला एक महान भौतिक शास्त्री आंद्रे सखारोव आज अपने ही घर में नजरबंद है। कम्यूनिज्म की जंजीरों में जकड़ा विज्ञान आज आजादी के लिए छटपटा

रहा है. सुना जाता है कि सखारोव के बहुत से नागरिक अधिकार छीने जा चुके हैं. पुलिस की इजाजत और निगरानी के बिना उन्हें घूमने-फिरने की आजादी नहीं है. स्वदेशी और विदेशी परिचितों से उन के पत्रव्यवहार पर कड़ी नजर रखी जाती है. उन की डाक सेंसर हो कर आती-जाती है. ऐसे घुटन भरे वातावरण में भी सखारोव मूलभूत भौतिक विज्ञान पर चिंतनशील रहते हैं. भौतिकी में परमाणु विज्ञान पर उन की नई क्रांतिकारी खोज, मानव अधिकारों के लिए सोवियत सत्ताधारियों से उन का विवाद और 1975 में मिले नोबेल शांति पुरस्कार ने उन्हें दुनिया भर में चर्चित किया है.

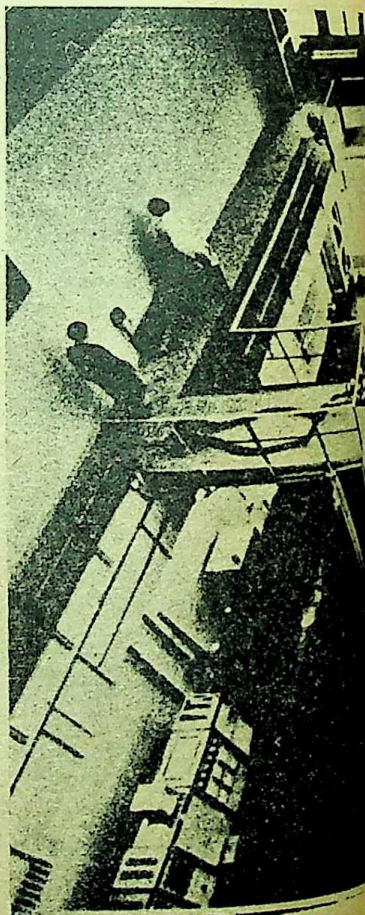
कौन है यह महावैज्ञानिक और मूलभूत भौतिकी को इस की क्या देन है? आज अनेक व्यक्ति इस रहस्यमय व्यक्तित्व के बारे में जानना चाहते हैं. विभिन्न विदेशी विज्ञान पत्रिकाओं और समाचारपत्रों में भी जबतब सखारोव के बारे में कुछ न कुछ छपता ही रहता है.

आंद्रे दिमित्रायिविच सखारोव का जन्म मई 1921 में मास्को में हुआ था. उन के पिता भौतिक विज्ञान के अध्यापक थे और उन्होंने पाठ्यक्रम और लोकप्रिय विज्ञान की कई पुस्तकें लिखी थीं. सखारोव 1942 में मास्को विश्वविद्यालय से भौतिक विज्ञान में स्नातक हुए. उन दिनों दूसरा विश्वयुद्ध चल रहा था. रूस तथा जर्मनी के बीच भी लड़ाई जारी थी. उस समय सोवियत संघ में सेना में भरती होना अनिवार्य था, पर सखारोव की वैज्ञानिक प्रतिभा सोवियत अधिकारियों की नजर में चढ़ चुकी थी. इसलिए उन को सैनिक सेवा से छूट मिल गई. उन्हें भौतिक विज्ञान में अनुसंधान करने और सोवियत सेना के हथियार बनाने वाले कारखाने में इंजीनियर बना कर भेज दिया गया. वहां सखारोव ने सैनिक साजसामान की उत्कृष्टता की जांच करने के लिए अनेक उपयोगी विधियों की खोज की.

1945 में महायुद्ध के समाप्त हो जाने पर सखारोव को मास्को के प्रसिद्ध लेनोव

फिजिक्स इंस्टिट्यूट में भेज दिया गया. इस संस्थान में सखारोव ने मूलभूत भौतिकी के जानेमाने प्रोफेसर आइगोर टैम के साथ मिल कर कास्मिक किरणों पर सैद्धांतिक अनुसंधान शुरू किया. प्रोफेसर टैम को मई 1958 में भौतिकी में अनुसंधान के लिए नोबेल पुरस्कार मिला था.

दूसरे महायुद्ध के परिणामस्वरूप सोवियत राजनीतिज्ञों और सैनिक प्रशासकों ने अपने वैज्ञानिकों को अधिकाधिक सैनिक अनुसंधान में लगाने का निर्णय लिया. यह निर्णय सखारोव के जीवन में बाद में कैसा भारी परिवर्तन ले आएगा, उस समय इस महान वैज्ञानिक को इस का तनिक भी एहसास न था.



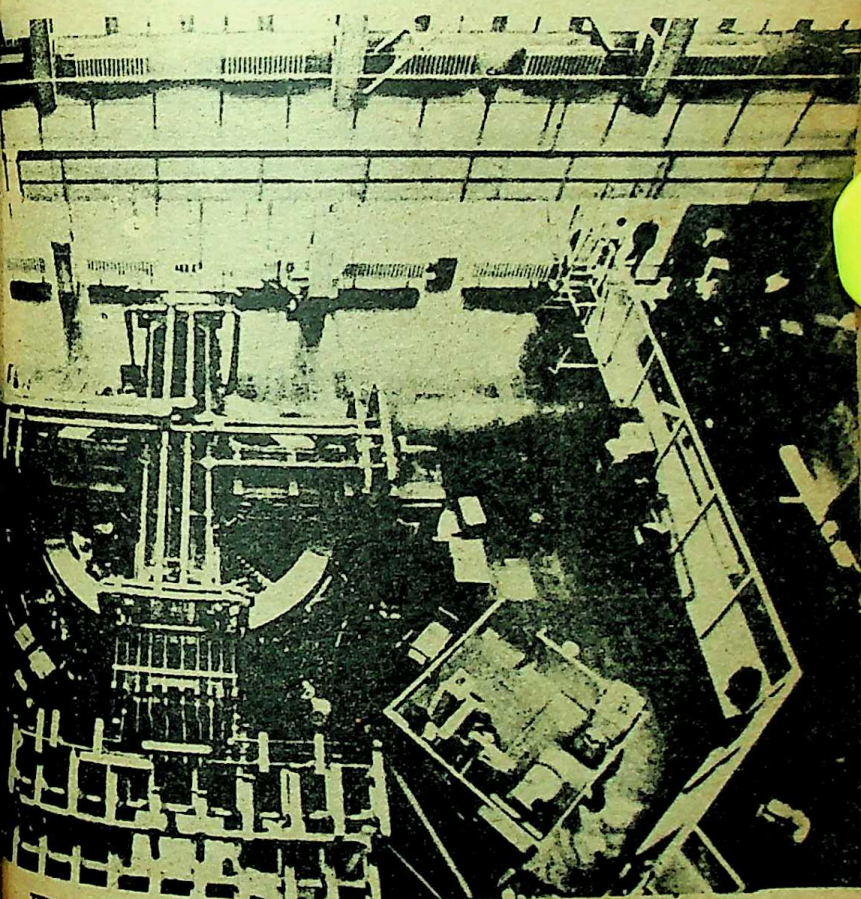
पर सखारोव को मास्को के प्रसिद्ध लेनोव

1947 में सखारोव सहसा ही सार्वजनिक वैज्ञानिक अनुसंधान के मंच से लोप हो गए। यह तो बहुत बाद में पता चला कि उन्हें प्रशासन ने एक ऐसे गुप्त कार्यदल में शामिल कर लिया था, जो हाइड्रोजन बम का विकास कर रहा था। हाइड्रोजन बम का विकास उस समय सोवियत संघ के सिरमौरों के लिए सब से महत्त्वपूर्ण हो उठा था, क्योंकि इस से सोवियत संघ के अमरीका की बराबरी पर आ जाने की आशा थी। यूरोप की राजनीति में युद्ध लड़ने जैसे अनेक कारणों के परिणामस्वरूप इन दोनों बड़े देशों के बीच

सैन्य संतुलन की जो होड़ आरंभ हुई, उस में हाइड्रोजन बम का विकास पहली सीढ़ी था। सखारोव और टेम ने 1954 में अखिर हाइड्रोजन बम बना ही लिया और सोवियत सेना ने इसे विधिमत ग्रहण भी कर लिया। इस लिए कभीकभी सखारोव को रूसी हाइड्रोजन बम का पितामह भी कह देते हैं। राज्य के प्रा की गार्ड सेवाओं के बदले सखारोव को 195 में केवल 37 वर्ष की आयु में ही सोवियत एकेडेमी आफ साइंसेज का पूर्णकालिक सदस्य बना दिया गया।

हाइड्रोजन बम की विकासयात्रा

दिशा नियंत्रक संगलन परमाणु ऊर्जा बनाने का सयंत्र : सखारोव की इस क्रांतिकारी उपलब्धि का श्रेय रूसी सरकार ने उन्हें नहीं मिलने दिया।



दौरान ही सखारोव व टैम ने एक और अत्यंत महत्वपूर्ण दिशा संगलन परमाणु ऊर्जा (कंट्रोल्ड थर्मोन्यूक्लियर फ्यूजन) में शोध कार्य किया था। 1950 में इन दोनों वैज्ञानिकों को परमाणु ऊर्जा की संगलन विधि के लिए जरूरी अवस्थाओं के अध्ययन का पता 1958 में उस समय चला जब सोवियत संघ ने अंतरराष्ट्रीय विज्ञान समुदाय के लाभ के लिए इस के साहित्य को प्रकट करने की अनुमति दी। उस समय तक भौतिक विज्ञान की यह एक खोज करार दी गई।

अन्याय का चरम

सोवियत संघ ने हाल ही में एक पुस्तिका टोका मैक : टुवर्ड्स थर्मोन्यूक्लियर एनर्जी का प्रकाशन नोबोस्ती प्रेस एजेसी पब्लिशिंग हाउस मास्को के जरिए किया है। यह आश्चर्यजनक है कि 72 पन्ने की इस पुस्तिका में कहीं भी आद्रे सखारोव के नाम और इन के योगदान का जिक्र नहीं है। इस में सर्वत्र ही आइगोर टैम व आइगोर कुर्चातोव का उल्लेख है। इस में यह कहा गया है कि टोका मैक के विकास का सारा श्रेय इन दोनों परमाणु भौतिक विदों को ही है। यह सखारोव के साथ जानबूझ कर किया गया अन्याय नहीं तो और क्या है?

1950 से 1968 तक सखारोव गुप्त अनुसंधान में लीन रहे। इन 18 सालों में सखारोव का मन बदल गया। समाज के प्रति विज्ञान के रचनात्मक दायित्व को न निभा पाने और निरंतर सोवियत सेना की संहारक शक्तियों को बढ़ाने के अपने पिछले रवैए पर सखारोव को भारी क्षोभ हुआ। परमाणु व हाइड्रोजन बमों के विस्फोटों से फैलने वाली घातक रेडियोधर्मी धूल और विकिरण के प्रति सखारोव अपनी चिंता सर्वसाधारण में भी प्रकट करने लगे।

हाइड्रोजन बम का विकास करने वाले सखारोव तब तक स्वयं को नैतिक रूप से अपराधी अनुभव करने लगे थे। प्रायश्चित्त स्वरूप उन्होंने निकिता ख्रुश्चेव से तीन बार मिलने की कोशिश की ताकि वह उन्हें अपने

देश द्वारा बाह्य अंतरिक्ष में किए जाने वाले परमाणु परीक्षणों के घातक प्रभावों के बारे में बता सकें और आगे ऐसे परीक्षणों को रूकवा सकें। सखारोव से बातचीत करने पर ख्रुश्चेव ने उन के बारे में कहा था कि वह निस्संदेह एक अच्छे वैज्ञानिक हैं, पर राजनीति से उन्हें कोई सरोकार नहीं होना चाहिए। राजनीति उन्हें राजनीतिज्ञों के लिए ही छोड़ देने चाहिए।

इसी दौरान न्यूयार्क टाइम्स समाचार पत्र में सखारोव का एक लेख, जिस का शीर्षक था—'प्रगति, सहअस्तित्व और बौद्धिक स्वतंत्रता' छपा था। इस में उन्होंने विस्तृत रूप से विश्व के मामलों पर अपने विचार प्रकट किए थे। उन्होंने विज्ञान का दुरुपयोग करने वाले अनेक विदेशी वैज्ञानिकों से भी संबंध बनाए और विचारों का आदानप्रदान किया। इस पर सोवियत प्रशासन के कान खड़े हो गए। सोवियत अधिकारियों और सखारोव में पूरी तरह अनबन हो गई।

अपने सैनिक महत्त्व के वैज्ञानिक रहस्यों की सुरक्षा के लिए सोवियत संघ के शासकों ने सखारोव को गुप्त अनुसंधान कार्य से हटा कर पुनः मास्को में लेबेदेव फिजिकल इंस्टिट्यूट में भेज दिया। 24 साल पहले यहीं से सखारोव की अनुसंधान यात्रा आरंभ हुई थी। जनवरी, 1968 में सोवियत प्रशासन ने सखारोव की गतिविधियों पर और ज्यादा रोक लगाने के लिए उन्हें जबरदस्ती गोर्की शहर में भेज दिया।

सख्त पहरे के बीच सखारोव

आज गोर्की शहर किसी छोटेमोटे किले से कम नहीं है। सोवियत अधिकारियों का बस चले तो वे पंछियों को अपने यहां पर भी न फड़फड़ाते दें, लेकिन सखारोव यहां रह कर आज भी विश्व शांति, विज्ञान और निरस्त्रीकरण के बारे में सोचते हैं। गोर्की में आज कोई विदेशी पांव नहीं धर सकता। सखारोव के लिए विदेशियों से मिलना, उन्हें टेलीफोन करना या पत्र लिखना मना है। यहीं

नहीं, सखारोव को हर 10 दिन बाद अपने चालचलन की सफाई देने के लिए धर्म भी जाना पड़ता है।

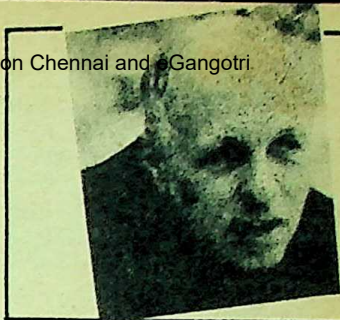
उन से मिलने वाले हर व्यक्ति से पुलिस पूछताछ करती है। सोवियत गुप्तचर संस्था—'के.जी.बी.' चौबीसों घंटे इन पर निगरानी रखती है ताकि सखारोव का कोई पत्र या संदेश पश्चिमी जगत को आने वालों के जरिए न मिल जाए।

दुविधा में फंसा प्रशासन

सखारोव सोवियत प्रशासन के लिए आज ऐसे छछूंदर साबित हो रहे हैं जिसे न निगलते बन रहा है और न उगलते। सोवियत पुलिस ने बारबार सखारोव व उनकी पत्नी येलिना बोनर को अपनी जबान बंद रखने के लिए धमकाया है, पर दोनों ही निडर हो कर कहते हैं कि उनकी जबान उसी वक्त बंद होगी जब सोवियत प्रशासन सखारोव पर सार्वजनिक रूप से मुकदमा चलाए और उन पर लगाए गए आरोपों को साबित करे, पर सोवियत प्रशासन अपनी पोल खुलने के भय से ऐसा नहीं करना चाहता।

नवंबर, 1979 में अफगानिस्तान पर हुए सोवियत कब्जे का सखारोव ने जम कर विरोध किया था। उन्होंने सोवियत संघ की इस कार्रवाई को विश्वशांति के लिए खतरा और मानव अधिकारों पर चोट बताया था। अब तक सोवियत अधिकारी सखारोव के सार्वजनिक बयानों से तंग आ चुके थे इसलिए खीज कर उन्होंने सखारोव को जनवरी 1980 में गोर्की में निष्कासित कर ही दिया।

निष्कासन के आदेशों के बाद सखारोव को प्रशासन द्वारा तंग किए जाने का लंबा सिलसिला शुरू हुआ, जो साढ़े तीन साल बीत जाने पर आज भी जारी है। निष्कासन के समय यद्यपि सखारोव के सभी राजकीय सम्मान छीन लिए गए थे, फिर भी उन्हें सोवियत विज्ञान अकादमी से वजीफा मिलने दिया गया और इस का सदस्य भी बना रहने दिया गया, लेकिन इस का सखारोव को कोई फायदा नहीं हो रहा है।

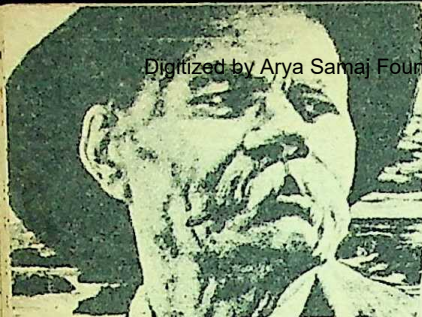


आंद्रे सखारोव : 'उदासीनता, निष्क्रियता की दीवार मेरे चारों ओर उठ गई है.'

सखारोव को विज्ञान संबंधी चिंतन और कार्य के लिए पुस्तकालय की सुविधाओं से वंचित रखा गया है। सोवियत सरकार ने उन्हें अपने देश के मूलभूत अनुसंधान परिचित होने दे रही है और न ही उन विदेशी मित्रों द्वारा भेजा गया कोई वैज्ञानिक साहित्य उन तक आने दे रही है। किसी चिंतनशील वैज्ञानिक के लिए यह कोई कसबा नहीं है। और तो और, उन्हें मास्को अपने घर में बनाए निजी पुस्तकालय तक पुस्तकें लेने की इजाजत नहीं है।

सखारोव को व्यक्तिगत सहूलतें व कर के तो तंग किया ही जा रहा है। इस अलावा उन के परिजनों को तंग कर के उन्हें मानसिक रूप से प्रताड़ित किया जा रहा है ताकि दबाव में आ कर वह सोवियत अधिकारियों की सभी बातें मान लें।

"मैं समझता हूँ कि गलतखयाल उदासीनता और निष्क्रियता की एक दीवार मेरे चारों ओर उठ गई है।" ऐसा सखारोव पश्चिमी वैज्ञानिकों को अपने एक खत लिखा था। हुआ यह था कि सखारोव की वर्षीय पुत्रवधू येलिजावेता एलिकसे अमरीका में रह रहे अपने पति एलेक्से सेम्योनोव के पास जा कर रहना चाहती थी परंतु सोवियत सरकार ने उसे देश छोड़ जाने की अनुमति देने से साफ मना कर दिया और यह मत प्रकट किया कि "विवाह घोषणा के अवसर पर चूक सेम्योनोव अ



अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के पक्षधर मैक्सिम गोर्की जिन के नाम पर बसे शहर में सखारोव स्वतंत्रता के लिए छटपटा रहे हैं।

लजा दोनों शारीरिक रूप से एक ही स्थान पर मौजूद नहीं थे, इसलिए सोवियत कानून नजरो में यह विवाह मान्य नहीं है। लफोन पर भी भला कहीं शादियां हुआ रती हैं।

इस पर सखारोव ने कहा, "मेरे पुत्र पुत्रवधू को मुझ से बदला लेने का साधन जाना और इस तरह मुझ पर दबाव डालना नुचित, गैर कानूनी व असहनीय है।"

बस इसी बात पर तब 60 वर्षीय सखारोव और 59 वर्षीय उन की दूसरी पत्नी लेना बोना संयुक्त रूप से 22 नवंबर 1981 को भूखहड़ताल पर बैठ गए। एलेक्सेई स्योनोव सखारोव की पहली पत्नी से तृतीय पुत्र है। सखारोव दिल के मरीज तो हैं, ऊपर से उच्च रक्तचाप से भी वह रेशान रहते हैं। ऐसे में भूख हड़ताल पर बैठ कर उन्होंने सोवियत उच्चाधिकारियों में खूब लबली मचा दी। अब सोवियत अधिकारियों राजशक्तियों और सखारोव की कृष्णशक्ति के बीच शीत युद्ध छिड़ गया था।

पत्रपत्रिकाओं के जरिए पश्चिमी जगत और अन्यत्र भी सखारोव की भूख हड़ताल और मानव अधिकारों की पुनः प्रतिष्ठा के लिए लड़ने वाले विद्रोही सखारोव की पश्चिमी समाज में खूब मान्यता और इज्जत। उन से किए जा रहे अमानवीय व्यवहार के विरोध में पश्चिमी देशों की राजधानियों में सोवियत दूतावासों के सामने अनेक बार

प्रदर्शन हो चुके हैं। अपनी भूख हड़ताल के दौरान सखारोव पश्चिमी जगत में गुप्त रूप से यह संदेश भिजवाने में सफल हो गए कि इस दौरान उन की मृत्यु होने पर के.जी.बी. को जिम्मेदार समझा जाए।

सखारोव की भूख हड़ताल करते तकरीबन 15वां दिन गुजरा होगा कि उन के घर से उन्हें पत्नी समेत जबरन उठा कर हस्पताल ले जाया गया। वहां उन को नाक व मुंह में नलिका डाल कर जबरदस्ती तरल खुराक दी गई। फिर भी सखारोव भूख हड़ताल पर डटे रहे। इस दौरान भूख हड़ताल से घबराई उन की पुत्रवधू को भी उन से नहीं मिलने दिया गया। आखिर 9 दिसंबर, 1981 को के.जी.बी. अधिकारियों ने येलिजा को अमरीका जाने के लिए अनुमति देने की हामी भर ली।

वैज्ञानिक समुदाय की चिंता

कम्यूनिज्म की जंजीरों में जकड़ा यह महान वैज्ञानिक बाहरी दुनिया के संपर्क में न रहते हुए भी आज मूलभूत भौतिकी में अनुसंधानरत है। यहां यह बताना मुनासिब होगा कि विज्ञान की सभी शाखाओं में मूलभूत अनुसंधान पहले कागज और ब्लैकबोर्ड पर ही किया जाता है और इस के बाद प्रयोगशाला में परीक्षण किए जाते हैं।

पश्चिमी देश सखारोव के प्रति कितने चिंतित हैं इस का अंदाजा इसी बात से लगता है कि सोवियत संघ और अमरीका में विज्ञान व तकनीक के क्षेत्र में आपसी सहयोग के अनेक मामले और परियोजनाएं आज ठप पड़ी हैं। दोनों देशों के बीच निरस्त्रीकरण के बारे में होने वाली शिखर वार्ताओं में सखारोव का जिक्र जरूर आता है। विश्व का समस्त वैज्ञानिक समुदाय सखारोव की नजरबंदी को ले कर चिंतित है।

अक्तूबर 1980 में स्पेन की राजधानी मेड्रिड में 'अमेरिकन फिजिकल सोसाइटी' की बैठक हुई थी। इस में 44 देशों के 7,000 वैज्ञानिकों ने सोवियत संघ में निष्कासित पीड़ित वैज्ञानिकों को मिलने वाले अमानवीय

व्यवहार के प्रविगाहक हो भू-प्रकृत विज्ञान की आधारभूत अवधारणा ही कहा जाता है। और यह कसम खाई थी कि वे निजी रूप से तो सोवियत संघ से किसी भी तरह का वैज्ञानिक संबंध तोड़ेंगे ही, इस के अलावा अपनी सरकारों से भी ऐसा करने को कहेंगे।

आज सोवियत संघ में सखारोव की तरह पांच अन्य उच्चकोटि के वैज्ञानिक निष्कासित हैं। वे हैं कंप्यूटर शास्त्री विक्टर ब्रेलोवस्काई और अंतोली शाखारांस्की भौतिक शास्त्री जोसफ डार्याद्रिकन, आमोनियायी विज्ञान अकादमी के सदस्य यूरी ओरलोव और अंतरिक्ष भौतिकी विशेषज्ञ जेकोव एल. एलपर्ट। इन में एलपर्ट तो 1959 से नैराश्रयपूर्ण व अपमानजनक जिंदगी जी रहे हैं। ब्रेलोवस्काई को नवंबर 1980 में गिरफ्तार किया गया था, क्योंकि उन्होंने सोवियत संघ की सामाजिक और सार्वजनिक व्यवस्था की निंदा की थी। डार्याद्रिकन कालिनिन के भू भौतिकी संस्थान में कार्य कर रहे थे। सोवियत प्रशासन को यह पता चल गया कि इन्होंने स्टालिन के जमाने में मारे गए व्यक्तियों के आंकड़े एकत्र किए थे। इन्हें इस राज्य विरोधी गतिविधि की सजा के रूप में तीन साल की कैद दी गई।

सखारोव की देन

सखारोव की भौतिक विज्ञान को जो देन है उस की संक्षिप्त चर्चा करना यहां अप्रासंगिक न होगा।

1950 में सखारोव और टैम ने संयुक्त रूप से नियंत्रित ताप आणविक शक्ति पर प्रथम सोवियत शोधपत्र प्रस्तुत किया। इन में एक चुंबकीय बोतल में बंद भारी हाइड्रोजन यानी ड्यूटियम के गरम द्रव्य (हाट प्लाज्मा) के उपयोग से ऊर्जा पैदा करने का जिक्र था। इस निबंध का दूसरा भाग सखारोव ने ही लिखा। इस में सखारोव ने चुंबकीय बोतल से ऊर्जा प्राप्त करने की व्यावहारिक विधियों की विस्तृत जानकारी दी थी। उन्होंने ही चुंबकीय बोतल को 'टोका मैक' कहा था।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्धि प्राप्त करने के लिए (संगलन भट्टी) के प्रारंभिक अनुसंधान

उन्होंने सो अणु डेक्कबैक ही कहा जाता है। टोका मैक से संगलन विधि से ऊर्जा पैदा की जाती है। इस में पदार्थ के परमाणुओं को गरम द्रव्य में बदल कर और चुंबकीय शक्ति से बांध कर 10 करोड़ डिग्री सैल्सियस से भी अधिक तापमान प्राप्त कर संगलन ऊर्जा प्राप्त की जाती है। आजकल संगलन ऊर्जा में सभी उन्नत देश रुचि ले रहे हैं। संगलन ऊर्जा बनाने के लिए एक तरह से हम अपने सूर्य की ऊर्जा पैदा करने की पद्धति का ही अनुसरण कर रहे हैं।

भौतिक विज्ञान को सखारोव की दूसरी महत्त्वपूर्ण देन है—परमाणु के नाभिकीय कणों—प्रोटोन, न्यूट्रॉन के उपखंडों का अध्ययन। इन नए उप परमाणु कणों को क्वार्क कहा गया। क्वार्क का अध्ययन करने से विश्व में पदार्थ की उत्पत्ति और उस के व्यवहार का अध्ययन किया जाता है। इस प्रकार एक तरह से ब्रह्मांड की उत्पत्ति के रहस्य का ही पता लगाया जा रहा है।

सखारोव की खोज का तीसरा महत्त्वपूर्ण क्षेत्र गुरुत्वाकर्षण से संबंधित है। इस में आइनस्टाइन की गुरुत्वाकर्षण के बारे में दी गई नई व्याख्या में सुधार किया गया है। इस से कण भौतिकी में भी आगे अनुसंधान संभव हुआ और भौतिकशक्तियों की उत्पत्ति और व्यवहार को समझने में काफी मदद मिली है।

आंद्रे सखारोव को अन्य वैज्ञानिकों की तरह यदि स्वतंत्र रूप से काम करने दिया जाता तो निस्संदेह वह आधुनिक भौतिक विज्ञान में क्रांतिकारी योगदान करते। कहा गया था कि आइनस्टाइन जैसा महावैज्ञानिक शताब्दी में मुश्किल से ही एक पैदा होता है। ठीक यही बात सखारोव के बारे में कही जाए तो गलत न होगी। यह बड़े देख की बात है कि इस महान वैज्ञानिक की विलक्षण प्रतिभा आज कम्यूनिस्ट पिजरे में दम तोड़ रही है। सखारोव की वैज्ञानिक प्रतिभा को बहुजन हिताय मुक्त न करने की सोवियत सरकार की अतिरिक्त निश्चय ही मानवता के लिए एक महान क्षति साबित होगी।

नकुल हैरान था. चाचाजी भी अजीब

अदिभी हैं! तीन दिन आगुहुए हो गए हैं, पर उन्हें पैसे मांगते हुए तनिक भी संकोच नहीं होता. उस का पूरे माह का जेबखर्च इन तीन दिनों में साफ हो गया था. गुल्लक में से भी कई बार मां ने रेजगारी निकाल कर दी थी. कई बार पिताजी ने अपने पास से भी फुटकर रुपए दिए थे. चाचाजी जब से आए थे, उन्होंने शायद ही अपने पास से एक भी पैसा खर्च किया हो?

पहले दिन आते ही उन्होंने द्वार पर हांक लगाई थी, "अरे भाभी, जरा दो रुपए देना. इस रिकशेवाले के पास छुट्टे नहीं हैं."

यही नहीं वह रिकशेवाले पर भी अलग बहुत देर तक बड़बड़ाते रहे थे, "सुबह से कमा रहे हो, कहते हो छुट्टे नहीं हैं."

रात को खाना खा कर जब वह पान खाने निकले तो फिर उन्होंने पान वाले को ओर सौ का नोट बढ़ा दिया था. वह कम्पुनाता एक पान में सौ का नोट. नकुल ने अपने पास से पैसे दे दिए थे. चाचाजी पान वाले पर भी बड़बड़ाते रहे थे.

अगले दिन धूमने निकले थे. नवाब का महल, पुस्तकालय, शाही मसजिद और सभी दर्शनीय स्थल देखे थे. इन्हें देखने के लिए प्रवेश टिकट भी लेना पड़ा था. एक जगह चाय भी पी थी. पान भी खाया था, पर उन का सौ का नोट नहीं भुना था. पूरे रास्ते बड़बड़ाते रहे थे, "यार, तम्हारा शहर भी क्या शहर है? कहीं भी सौ के छुट्टे नहीं मिलते."

नकुल के मन में आया था कि कहें

सौ के छुट्टे

व्यंग्य • सत्यकुमार



नकल के घर मेहमान आए
उस के चाचा खुले पैसे न होने
का बहाना कर के अपना सारा
खर्चा दूसरों से ही करवाते
रहे, पर एक दिन नकल ने
ऐसी चाल चली कि चाचा की
होशियारी धरी रह गई...



माओ किसी बड़ी दुकान से भुना देता हूँ,
परंतु मां और पिताजी के डर से कुछ नहीं कह
पाया था। कहीं वह इस के बदतमीज होने की
शिकायत न कर दें। पिताजी वैसे ही सदा
अतिथिसत्कार पर भाषण देते रहते हैं।

दूसरे दिन शाम
को तो मां भी परेशान
हो गई थीं। चाचाजी
जहां से भी लौटते थे
'भाभी रिकशे वाले को

पैसे दे देना' कहते थे। मां उकता कर रात को
पिताजी से पूछ रही थीं, "आप के भाई कब
लौटेंगे?"

पिताजी ने कहा था, "कल रात को जाने
को कह रहा था।"

अगले दिन तो वह सुबह बाहर निकलने
से पहले ही पिताजी से बोले थे, "भाई साहब
जरा दसपांच रुपए खुले देना। आप के शहर
में तो सौ का नोट ही नहीं भुन पाता।"

पिताजी ने दोदो रुपए के छः नोट
निकाल कर हंसते हुए कहा था, "भाई गरीबों
का शहर है। तुम्हारा शहर तो प्रदेश की राज-

दोपहर के बाद जब वह नकुल के साथ सिनेमा जाने लगे थे तो फिर उन्होंने भाभी से 15 रुपए ले लिए थे, क्योंकि कहीं सिनेमा घर पर सौ का नोट नहीं भूना तो ?

इन तीन दिनों में पान आदि लाने में नकुल के पैसों का सदुपयोग होता रहा था. शाम को चलतेचलते भी, स्टेशन तक छोड़ने जा रहे नकुल से उन्होंने पूछ लिया था, "भाई, रिकशेवाले के लिए खुले तीन रुपए तो हैं न?"

नकुल ने खून का घूंट पी कर हामी भर दी थी. स्टेशन काफी दूर था. रास्ते में कोई दुर्घटना हो गई थी. इसलिए आवागमन कुछ देर के लिए रुक गया था. स्टेशन पहुंचे तो रेलगाड़ी खड़ी थी.

चाचाजी ने नकुल को सौ का नोट पकड़ाते हुए कहा था, "तुम टिकट ले कर सब से पीछे वाले डब्बे पर आना. मैं जगह देखता हूँ."

नकुल ने 26 रुपए का टिकट खरीद लिया था और फिर प्लेटफार्म पर पहुंच कर आराम से टहलने लगा था. जब हरा सिगनल

हो गया था और गाड़ी ने सीटी बजाई तो वह पीछे के डब्बे की ओर भागा था. चाचाजी खिड़की में से आधे बाहर निकले उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे. उसे देखते ही जोर से हाथ हिलाने लगे थे. उस के पास पहुंचकर बोले थे, "बड़ी देर कर दी?"

नकुल बोला, "खिड़की पर बहुत खी."

तभी गाड़ी खिसकने लगी थी. नकुल चाचाजी के हाथ में टिकट पकड़ा दिया. चाचाजी ने दूसरा हाथ बढ़ाते हुए कहा "बाकी पैसे?"

नकुल गाड़ी के साथसाथ दौड़ता सा बोला था, "बकिंग क्लर्क के पास से छुट्टे नहीं थे. उस ने कहा है आधे घंटे का जाना."

चाचाजी का चेहरा फक पड़ गया. वह कुछ बुदबुदाए थे, पर तब तक काफी तेज हो चुकी थी.

नकुल एक हाथ पेंट की जेब में डाल कर शेष नोटों को पकड़े स्टेशन के बाहर आया था.



हिंदू समाज के पथभ्रष्टक तुलसीदास

संत कवियों की प्रशंसा की परंपरा चली तो आलोचकों ने तुलसी को हिंदी साहित्य का सूर्य घोषित कर दिया. प्रशंसा की चकाचौंध में किसी ने यह सोचने की चेष्टा नहीं की कि तुलसी वास्तव में हिंदू समाज के पथप्रदर्शक थे या पथभ्रष्टक?

यह उद्देश्य है. इस से पाठकों को तुलसी साहित्य के बारे में एक नई दृष्टि से सोचने की प्रेरणा मिलेगी.
मूल्य रु. 4. डाक सच रु. 2.
पुस्तकालयों, विद्यार्थियों व अध्यापकों के लिए 50% की विशेष छूट.
मनी आर्डर द्वारा 3 रुपए में.
वी.पी.पी. में भेजना संभव नहीं है.

दिल्ली बुक कंपनी

ध्पध्पध्प

इस स्तंभ के लिए समाचारपत्रों की रोचक कटिंग भेजिए. सर्वोत्तम कटिंग पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. कटिंग के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.

भेजने का पता : मुक्ता, दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली-110055.

लड़की एक बरातें तीन

नजीराबाद में एक लड़की की एक ही दिन में तीन बरातें आई, पर एक ही लड़का दुलहन को ले जा सका.

यहां के सेवाराम महल्ले में इस लड़की के विवाह के दिन बरातियों से झगड़ा हो जाने के कारण शादी नहीं हो सकी और बरात लौट गई. इस के बाद उसी दिन एक अन्य युवक को इसी लड़की से विवाह करने के लिए तैयार किया गया. वह भी बरात ले कर लड़की के घर जा पहुंचा, परंतु लड़की ने इस लड़के को नापसंद कर दिया. अतः उसे भी वापस लौटना पड़ा.

अंत में उसी महल्ले के एक अन्य युवक को शादी के लिए राजी किया गया और वह युवक दुलहन को ले जाने में कामयाब रहा. —नवभारत, भोपाल (प्रेषक: डा. स.क. शर्मा)

*

रस्ती एक उच्च पदाधिकारी की

पुर्णिया जिले के एक वरिष्ठ एवं प्रभावशाली अधिकारी एक रात एक सिनेमाघर में फिल्म देखने पहुंचे. उन्होंने सोफे पर बैठ कर ही सिनेमा देखना चाहा, पर सोफे पर पहले से ही एक अधिकारी परिवार सहित फिल्म देख रहे थे. सोफे पर जगह न मिलने पर उक्त अधिकारी सिनेमा प्रबंधक को सिनेमा बंद करवाने की धमकी दे कर लौट गया.

दूसरे दिन 10 बजे ही जिलाधिकारी कार्यालय से उक्त सिनेमा को बंद कर देने का आदेश दिया गया और सिनेमा मजिस्ट्रेट ने सिनेमा हाल को सील कर दिया. इस कारण बड़ी संख्या में जो टिकट कटवा चुके थे, निराश लौट गए.

—हिंदुस्तान, नई दिल्ली (प्रेषक: रानी भाटिया)

*

दुलहन बरात ले कर पहुंची

हिंदमल कोट नामक ग्राम में एक डाक्टर की होने वाली दुलहन ने बरात उस के घर ला कर शादी कर ली.

डा. चंदबानी की शादी इलाहाबाद की एक युवती से होने वाली थी, लेकिन घरवाले इस शादी के विरोध में हो गए. यह संबंध टूटने ही जा रहा था कि दुलहन को इस बात का पता चल गया. तब वह इलाहाबाद से बरात समेत हिंदमल कोट पहुंची और दूल्हे का वरण किया.

—नवभारत, रायपुर (प्रेषक: प्रमोदकुमार तिवारी)

*

हराम कार्यक्रम

भरतपुर में भारतीय युवा मोर्चे के कार्यकर्ताओं ने यहां एक अनठा आंदोलन शुरू किया. उनके कार्यकर्ता मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी के आवास पर मध्य रात्रि तक

ढोलमजी ~~राजस्थान~~ ^{राजस्थान} ~~का~~ ^{का} ~~आद~~ ^{आद} ~~उठा~~ ^{उठा} ~~गंगा~~ ^{गंगा} ~~ने~~ ^{ने} ~~रुहे~~ ^{रुहे} : 'जो जूनता का करे न काम, कर दो उस का हाराम, रघुपति राघव राजा राम.'

उक्त मोर्चे के जिलाध्यक्ष सत्येंद्र गोयल ने बताया कि शहर की सफाई, विद्युत आपूर्ति की व्यवस्था में सुधार की मांग को ले कर मोर्चे ने 'नींद हराम' कार्यक्रम चलाने का फैसला किया है।

—राजस्थान पत्रिका, जयपुर (प्रेषक: शक्तिशोर)

पेट के लिए बच्ची का गला घोंटा

कोल्हापुर की एक महिला ने अपनी डेढ़ वर्षीया बच्ची की महज इसलिए हत्या की ताकि उसे जेल भेजा जा सके और उसे कम से कम नियमित भोजन उपलब्ध हो सके।

55 वर्षीया इस औरत को गिरफ्तार कर लिया गया है। उस ने पुलिस को बताया कि गरीबी के कारण यह कदम उठाना पड़ा। दिलचस्प बात यह है कि इस महिला ने 13 वर्षों से भी अपनी चार वर्षीया बच्ची की हत्या की थी। उम्र कैद काट कर वह चार महीने पहले ही का छूटी थी।

—राजस्थान पत्रिका, उदयपुर (प्रेषक: सुरेंद्र)

एक मछली ने दो जानें लीं

बस्ती जिले में मछली पकड़ने वाले दो मछेरों को एक रोहू मछली के लिए जान बूझकर पड़ी।

नौराहवी घाट के निकट घाघरा नदी में एक मछेरे ने अपने कांटे और डोरी की मदद से रोहू मछली को पकड़ लिया। जब वह मछली के मुंह से कांटा निकालने गया तब उसे पता चला कि मछली के रूप में साक्षात मौत उस की प्रतीक्षा कर रही है। उस मछली ने एक कोबरा सांप को निगल लिया था जो तब तक उस मछली के मुंह के अंदर जीवित ही था। मछेरा जैसे ही मछली के मुंह से कांटा निकालने लगा, सांप ने उसे डस लिया और वह बेहोश हो गया। उस का एक साथी मदद के लिए पहुंचा, उसे भी सांप ने डस कर बेहोश दिया।

बाद में दोनों मछेरों की मृत्यु हो गई, अन्य मछेरों ने मछली और सांप दोनों को डाला।

—नवभारत, रायपुर (प्रेषक: कमताप्रसाद)

एक जूते के लिए रेलगाड़ी रोक दी

आगरा में राजा की मंडी स्टेशन से जैसे ही कुतुब एक्सप्रेस रवाना हुई कि आगरा में जाने वाले पासधारी यात्रियों ने जंजीर खींच कर रेलगाड़ी रोक दी, क्योंकि इन में से एक जूता प्लेटफार्म पर गिर गया था।

जब रेलगाड़ी रुक गई तो वह ठाट से प्लेटफार्म पर गया, जूता ढूंढा और उसे प्लेटफार्म पर लौटा दिया। रेलगाड़ी 15 मिनट रुकी रही। डेढ़ घंटा वह ठाट से चली थी।

—विकासशील भारत, आगरा (प्रेषक: राधिका)

मायके न जाने देने पर पत्नी ने पति को पीटा

मायके न भेजने पर पत्नी ने अपने पति की पिटाई कर दी। बरेली के ग्राम मुंहहाथी के एक निवासी की पत्नी ने तीजत्योहार पर अपने मायके की इच्छा व्यक्त की। पति द्वारा मना किए जाने पर उस ने क्रोध हो कर अपने पति को बांध दिया। इस के बाद उस ने लोहे की छड़ से उसे बुरी तरह पीटा।

पति ने पत्नी के खिलाफ पुलिस में रिपोर्ट दर्ज करवाई है।

—दैनिक भास्कर, भोपाल (प्रेषक: ज.प.न. चतुर्वेदी) (सर्वोत्तम)

उस की
युत एव
न चल
रोबर
हत्या
हो म
ताया
13 व
हले ही
सुरेंद्र
ए जान
मि म
उसे प
मी ने
त ही
र वह
कर व
दोनों
ताप्र
आग
में से
र उसे
गंटा
क: रा
पने मा
त को
(सर्व
र (प्र

नोबेल पुरस्कार :

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाद क्यों उठते हैं

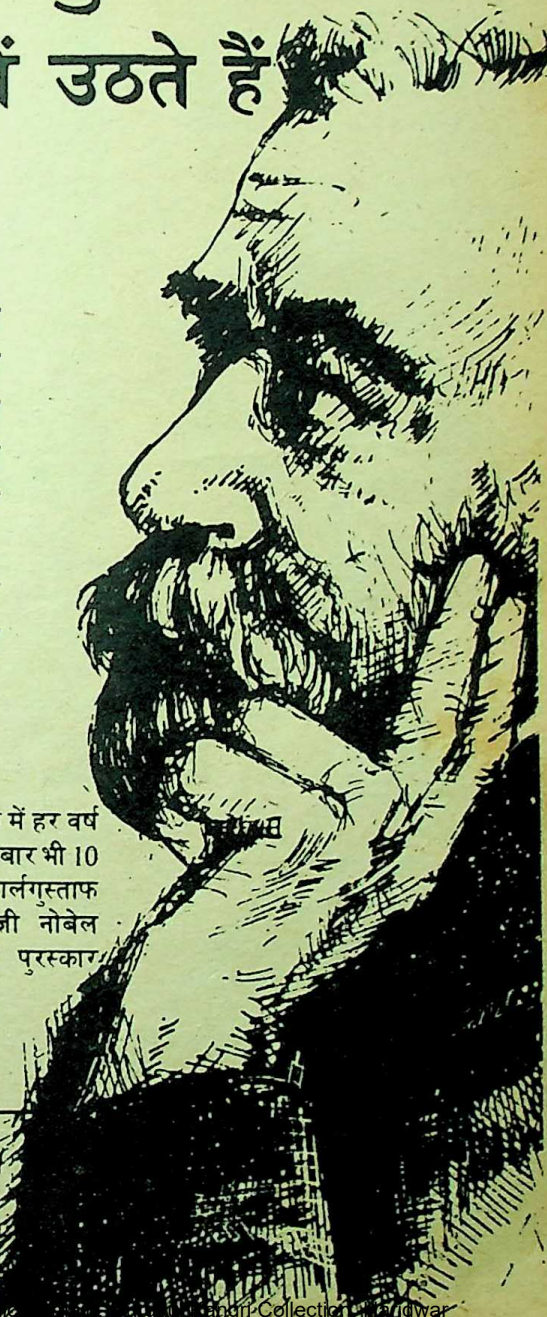
लेख

मानवेन राकेश

विश्व सम्मान का पर्याय माना जाने वाला नोबेल पुरस्कार हर वक्त विवादों के घेरे में रहा है, आज फिर उसे लेकर विवाद उठ खड़े हैं। क्या इस पुरस्कार की महत्ता को नकारा जा सकता है?

स्टाकहोम के सिटी हाल में हर वर्ष की भाँति इस बार भी 10 नवंबर को स्वीडन के सम्राट कार्लगुस्ताफ (आलहर्वे) एवं उन की साम्राज्ञी नोबेल पुरस्कार प्रदान करेंगे। नोबेल पुरस्कार

नोबेल पुरस्कार के जनक
अल्फ्रेड नोबेल



विभिन्न क्षेत्रों में किए गए उत्कृष्ट कार्य के लिए प्रकाशित किए जाते हैं। लेकिन जब अक्टूबर में इन की घोषणा होती है, तभी से इन की आलोचना और प्रत्यालोचना का दौर शुरू हो जाता है।

विवादास्पद नोबेल शांति पुरस्कार के लिए इस बार लेक वालेसा के नाम की घोषणा



हेनरी कीसिंजर : नोबेल पुरस्कार पाने करने के बाद विवाद का कारण बन

नोबेल पुरस्कार प्राप्त करते मदर टेरेसा के।

हुई। इस धोषणा के साथ ही रूस समेत इस की आलोचना प्रारंभ कर दी। उदाहरण के साथ ही यदि हम नोबेल पुरस्कारों की लंबी सूची पर भी दृष्टि डालें तो हम पाएंगे कि ये पुरस्कार वास्तव में विवादास्पद हैं और संभवतया दोहरे मानकों पर आधारित हैं।



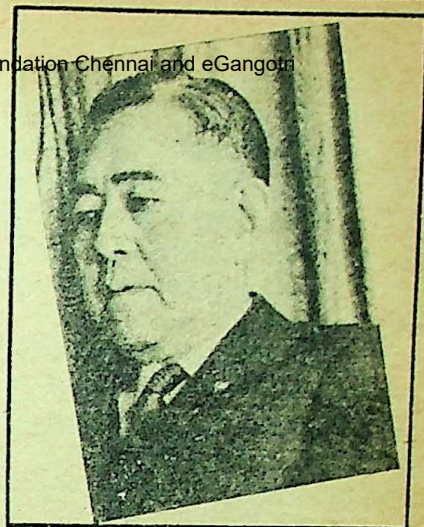
इन पुरस्कारों की लंबी सूची में जापान के विवादास्पद भूतपूर्व प्रधान मंत्री इसोकू सातो, इस्राइल के युद्ध प्रेमी प्रधान मंत्री बेगिन और अमरीकी खुराट राजनीतिज्ञ हेनरी कीसिजर के नाम भी हैं। क्या इन नामों से इन पुरस्कारों को देने में राजनीतिक हस्तक्षेप की वृत्ति नहीं आती? हो सकता है कि इन पुरस्कारों की निष्पक्ष मीमांसा इस 'महान' पुरस्कार की चमक को कम कर दे।

अल्फ्रेड नोबेल ने विश्व को दो विस्फोटक दिए। एक डायनामाइट और दूसरा नोबेल पुरस्कार (क्योंकि यह पुरस्कार भी किसी धमाके से कम नहीं है) डायनामाइट के आविष्कार के मूल में अल्फ्रेड नोबेल की भावना विनाश करने की नहीं थी, पर आज समस्त मानव जाति इसी के द्वारा विनाश के कगार पर खड़ी है। वास्तव में अल्फ्रेड नोबेल विनाश का भय दिखा कर विश्व शांति की स्थापना करना चाहते थे। उन्हीं के शब्दों में, "मैं ऐसे भयानक तत्वों की तलाश में हूँ जो सामूहिक विनाश में समर्थ हों और जिस के भय से मानव जाति युद्ध की कल्पना भी न कर सके।"

नोबेल की वसीयत

नोबेल पुरस्कार अल्फ्रेड नोबेल की वसीयत के आधार पर दिए जाते हैं। अपनी

वसीयत में पाल सार्व जिन्होंने सहित्य में मिले नोबेल पुरस्कार को अस्वीकार किया।



नोबेल पुरस्कार विजेता जापान के भूतपूर्व प्रधान मंत्री इसोकू सातो.

वसीयत पर उन्होंने 27 नवंबर, 1895 को हस्ताक्षर किए थे। इस वसीयत को जनवरी 1897 में खोला गया था। उन की वसीयत में यह वाक्य दर्ज था: 'द मोस्ट आउट स्टैंडिंग वर्क आफ ऐन आइडिलिस्टिक टैंडेंसी' (आदर्श प्रकृति वाले किसी उत्कृष्ट कृतित्व के लिए)। आदर्श की परिभाषा व्यक्ति दर व्यक्ति बदलती रहती है। जो वस्तु एक के लिए आदर्श है, जरूरी नहीं कि वह दूसरे के लिए भी आदर्श हो। यही बात पुरस्कारों पर प्रश्न चिह्न लगाती है।

इन आदर्श कृतित्वों का चयन 18 सदस्यों वाली स्वीडिश अकादमी करती है। इस अकादमी के लिए एक बार चयन हो जाने पर वे महानुभाव जीवन पर्यंत इस के सदस्य रहते हैं। इन पुरस्कारों की घोषणा कुछ बैठकों के पश्चात ही नहीं कर दी जाती, वरन् सुझाए गए नामों पर वर्ष भर विचारविमर्श चलता है। विवेचन के लिए क्रिसमस और ग्रीष्मावकाश को छोड़ कर प्रति सप्ताह बैठक होती है। इन नामों की प्रस्तावना विश्व-विद्यालयों के प्राध्यापकों, जन प्रतिनिधि, संस्थाएं एवं नोबेल पुरस्कार विजेता करते हैं।

राजनीतिक दबाव के बारे में मात्र इतना ही कहा जा सकता है कि आज कोई भी बुद्धिजीवी, चाहे वह कितना भी प्रयत्न क्यों न करे, अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों से अप्रभावित नहीं रह सकता. प्रत्येक का रुझान किसी न किसी के प्रति कम या अधिक हो ही जाता है. व्यक्ति की खुद की विचारधारा भी होती है और यही विचारधारा उसे निष्पक्षता से परे भी धकेल सकती है.

अल्फ्रेड नोबेल का अधिकांश जीवन प्रयोगशाला में ही बीता. प्रयोगशाला में ही वह कविताएं भी लिखा करते थे. उन्होंने एक नाटक भी लिखा था. उन्होंने फ्रेंच कवि वाल्देयर की रचनाओं का स्वीडिश भाषा में अनुवाद भी किया था. उन्हें अपनी आत्मकथा में दिलचस्पी नहीं थी, किंतु अपने भाई लुडविक के आग्रह पर कुछ वाक्यों में उन्होंने इस प्रकार अपनी जीवनी लिखी थी:

'मेरे लिए आत्मकथा लिखना असंभव है, लेकिन अगर यह पुलिस रिपोर्ट की तरह संक्षिप्त हो तो दूसरी बात है. उदाहरण के लिए अल्फ्रेड नोबेल: एक दयनीय अर्धजीव. जब वह चीखता हुआ जिदगी में दाखिल हुआ तो डाक्टर को उसे तभी नष्ट कर देना चाहिए था.

गुण: अपने नाखून साफ रखता है और कभी किसी पर बोझ नहीं बना.

अवगुण: अपना परिवार नहीं, हमेशा खुश और तीक्ष्ण भूख.

एक मात्र इच्छा: जीवित न दबाया जाऊं.

एक मात्र पाप: 'मैमन' की पूजा नहीं करता.

जिदगी में महत्त्वपूर्ण घटनाएं: एक भी नहीं.

क्या इतना ही काफी नहीं है? वैसे भी कभी हमारी सदी में ऐसा क्या है, जो महत्त्वपूर्ण घटनाओं के शीर्षक के नीचे आ सकता हो? इस नन्हे से बुदबुदे में, जिसे आकाशगंगा कहा जाता है, करोड़ों और अरबों सूरजों का विशाल समुद्र है. यही दरअसल महत्त्वहीन है. इस तमाम सृष्टि संदर्भों में

अपनी तुच्छता पर शायद वे भी लज्जित हों. सिर्फ सिने कलाकारों और कवियों के नामों में लोग लेख पढ़ते हैं. कवियों के बारे में खास कर, चाहे उन्होंने अपने कारनामों की भूमि में दिखाए हों या घरों में मगार इस कि मनुष्य जाति का मुंह अचंभे में खुल जाए.

यह छोटी सी जीवनी कितना क्लृप्त जाती है, उन का व्यक्तित्व, आत्मसम्यक् भावना, तत्कालीन लोगों की अभिरूपा आदि. अल्फ्रेड नोबेल में 'अर्धजीवी' की इस कदर घर कर गई थी कि एकांत में रास आने लगा था. उन के एकांत में आस्ट्रिया की सोफी प्रवेश कर सकी.

एक ही परिवार में एकाधिक नोबेल पुरस्कार के अपवाद मिर्डल दंपति श्रीमती अलवा मिर्डल को शांति पुरस्कार और उन के पति गुन्नार मिर्डल को अर्थशास्त्र में नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ है.

यह पुरस्कार वर्ष में एक क्षेत्र के एक व्यक्ति को दिया जाता है. परिणामस्वरूप नाम जो इस सम्मान के हकदार हैं, छुट्टी हैं. यही कारण है कि गांधी, हो ची मिनेलसन मंडेला, जार्ज लुई आदि इस पुरस्कार से सम्मानित नहीं किए जा सके.

यह पुरस्कार चाहे कितना विवादास्पद क्यों न हो, प्रति वर्ष अत्यंत विश्व के सभी लोगों का ध्यान खींचता है. अकादमी की ओर केंद्रित कर देता है.

अपने छोटे बच्चों को

चंपक

दीजिए,

बड़े बच्चों को

सुखानु सौरभ

शिक्षाप्रद, मनोरंजक

विसंवर (प्रबन्ध)

क्या आप को भी वरवधू की तलाश है?

हम ने हजारों दंपतियों के
सुखी घर वसाए हैं।
हम ने हजारों आदर्श वरवधुओं को
एक हो जाने में
सहायता की है।

कैसे?

उन्होंने स्वयं
या उन के मातापिता ने
विज्ञापन दिया।
उन का विज्ञापन
सरिता के वैवाहिक विज्ञापनों में 15 दिन
तक आदर्श वरवधू तलाश करने वालों को
आकर्षित करता रहा।

शरिता

आज 75 लाख से अधिक स्त्रीपुरुषों द्वारा
महीने में दो बार पढ़ी जाती है।
सरिता की विशिष्ट व मनोरंजक
कहानियां 15 दिन तक पाठकों के
आकर्षण का केंद्र बनी रहती हैं।

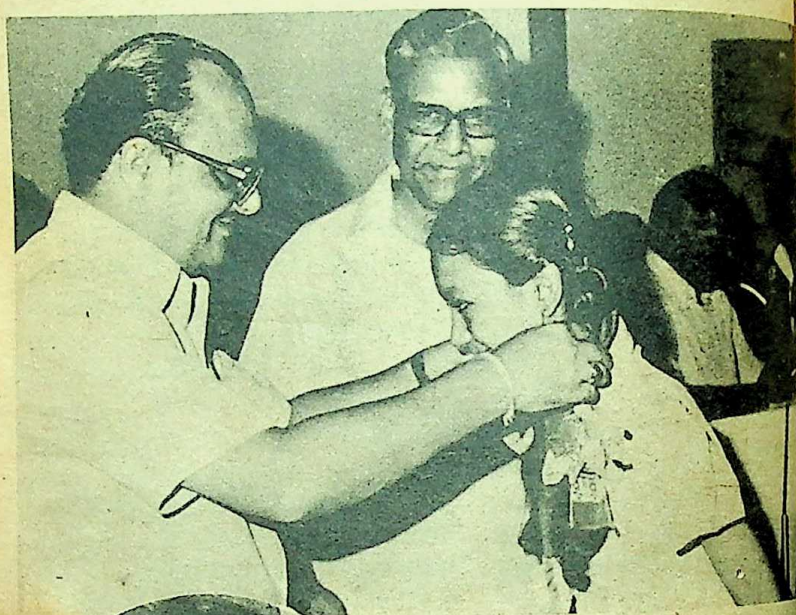
आइए...

वरवधू ढूँढने में हम भी आप की
सहायता करें।

संपर्क करें :

वैवाहिक विज्ञापन विभाग
दिल्ली प्रेस
एम-12, कनाट सरकस
नई दिल्ली-110001.

नई प्रतिभाएं



अर्चना खरे ने इस वर्ष माध्यमिक शिक्षा मंडल, भोपाल द्वारा संचालित ।।

वीं कक्षा की परीक्षा में संपूर्ण प्रदेश में गणित विज्ञान वर्ष में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया है। अर्चना शासकीय विद्यालय भिलाई की छात्रा

मुख्य मंत्री अर्जुनसिंह से स्वर्ण पदक प्राप्त करती अर्चना खरे (ऊपर) काशी हिंदू विश्वविद्यालय का छात्र राजेशकुमार श्रीवास्तव (नीचे)

है। वह हमेशा प्रथम आती रही है। 15वीं अर्चना अपनी सफलता का श्रेय अभिभावक तथा गुरुजनों को देती है। माध्यमिक शिक्षा मंडल, भोपाल आयोजित सम्मान समारोह में मुख्य अर्जुनसिंह ने अर्चना को स्वर्णपदक दिया। भोपाल में एक भेंट में अर्चना ने कि कड़े परिश्रम तथा अथक मेहनत से सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया जा सकता है। उस की वादविवाद तथा खेलकूद में भी कई पुरस्कार प्राप्त हैं।

राजेश कुमार श्रीवास्तव (नीचे) विसंबर (प्रथम)

चुकी है
सेवा में

वी. फा.
श्रीवास
बालिक
होने व
प्रादेशि
प्रतियो
अथक

नृत्य
अनंत
मिले
सिंह

संत

चुकी है। उस की इच्छा भारतीय प्रशासनिक सेवा में जाने की है।

—माया माहेश्वरी, वि.वि.प्र.

काशी हिंदू विश्वविद्यालय के बी.फार्मा. द्वितीय वर्ष का छात्र राजेशकुमार श्रीवास्तव न केवल एक मेधावी छात्र है, बल्कि उसे बास्केटबाल का राष्ट्रीय खिलाड़ी होने का गौरव भी प्राप्त है। वह अनेक बार प्रादेशिक, राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भाग ले चुका है। उस के अधिक परिश्रम व लगन का ही परिणाम है कि



नृत्य के क्षेत्र में उभरती प्रतिभा अनंतकुमार बरुआ (दाएं) व खेल में मिले अपने पुरस्कारों के साथ चंद्रशेखर-सिंह (नीचे)।

वह कई बार देशविदेश में भारतीय बास्केट-बाल टीम का नेतृत्व कर चुका है।

12 वर्ष की आयु से ही राजेश उत्तर प्रदेश बास्केट बाल की मिनी टीम में खेलने लगा था। उस ने 1980 में बैंकाक तथा 1981 में मनीला में आयोजित जूनियर एशियाई बास्केटबाल प्रतियोगिता में भारतीय टीम की





कप्तानी की। अभी हाल ही में भारत दौरे पर आई रूसी तथा अमरीकी बास्केटबाल टीम के विरुद्ध उस ने अपने उत्कृष्ट खेल का परिचय दिया।

राजेश खेल के साथ ही साथ अपनी पढ़ाई का भी पूरा ध्यान रखता है, उस ने हाई स्कूल तथा इंटर की परीक्षाएं प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की हैं, पर नवें एशियाई खेलों से पूर्व पूरे 14 महीने पटियाला कैम्प में रहने के कारण उसे अपनी पढ़ाई का एक वर्ष गंवाना पड़ा।

—अतुलकुमार श्रीवास्तव, वि.वि.प्र.

युवा बांसुरी वादक एवं नर्तक
अनंतकुमार बरुआ भातखंडे हिंदुस्तानी संगीत
महाविद्यालय की छात्र है और राजेश खेल के क्षेत्र में कार्य कर रहा है।

की ओर से संगीत की शिक्षा ले रहा है।
अनुमान है कि वह गंगोत्री जिले के निवासी
अनंतकुमार ने भातखंडे संगीत विद्यालय में
गायन की विशारद परीक्षा उत्तीर्ण की है।
मणिपुरी नृत्य और लोकनृत्य के क्षेत्र में भी
कार्य किया।

नृत्य का शौक उसे बचपन से था, 10 वर्ष
की आयु में उस ने गोहाटी की एक थिएटर कंपनी
में कार्य शुरू किया। वे जोड़ अभिनय से प्रभावित
हो कर असम सरकार ने उसे छात्रवृत्ति भी प्रदान
की।

अनंत बरुआ बंबई स्थित गुरु ज्ञान प्रकाश
के तत्वावधान में गठित भ्रमणकारी भारतीय
सांस्कृतिक दल के साथ यूरोप जाने के लिए रवाना
का

शिक्षा और संगीत के क्षेत्र में अग्रणी
नेत्रहीन युवक इब्राहीम अली (याण) ने
अनेक प्रतिभाओं के धनी ब्रजेंद्रमोहन
(नीचे)।



गया और उस ने लगभग आठ माह तक
कार्यक्रम पश्चिमी जर्मनी, ऑस्ट्रिया
स्विट्जरलैंड व इटली में किए और ख्याति अर्जित
की।

आजकल वह लखनऊ मेडिकल कॉलेज
के मानसिक चिकित्सालय में म्यूजिक थेरेपिस्ट
के पद पर कार्यरत है।

राकेशचंद्र मिश्र, वि.वि.प्र.
दिसंबर (प्रथम)

है।
 निवृत्त
 धानद
 की की
 व में
 10
 टर के
 प्रभा
 भी प्र
 धान प्र
 भार
 लिए
 अप
 व्याप
 द्रमो
 ह तक
 आदि
 ख्याति
 कल को
 जक धे
 अ, वि
 यम)।

रायपुर के शास-
 कीय अभियांत्रिकी
 महाविद्यालय के पिछले
 तीन वर्षों से बने आ रहे
 सर्वश्रेष्ठ धावक चंद्र-
 शेखरसिंह ने महा-
 विद्यालय के रजत
 जयंती वर्ष में अभि-
 यांत्रिकी महाविद्यालयों
 की खेल प्रतियोगिता में
 19 पदकों के साथ
 'सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी'
 का खिताब हासिल

नाटक 'सिलवर मून'
 का एक हास्य दृश्य
 (दाएं) व 'यार
 तुम पानी क्यों नहीं
 बेचते' का एक मर्म-
 स्पर्शी दृश्य (नीचे)।

किया था. चंद्रशेखरसिंह बी.ई. अंतिम वर्ष
 विद्युत इंजीनियरिंग का छात्र है. वह एक
 एथलीट होने के साथ ही हाकी, बास्केटबाल,
 क्रिकेट तथा बैडमिंटन भी अच्छा खेलता है और



इन सभी खेलों में अनेक पुरस्कार भी जीत चुका है। पिछले तीन वर्षों से वह महाविद्यालय का 'सर्वश्रेष्ठ एथलीट' बना हुआ है।

—श्रीकान्तचंद्र रहाटगांवकर, वि.वि.प्र.

इब्राहीम अली का नाम इन दिनों उज्जैन में महज इसलिए चर्चित नहीं है कि उस ने विक्रम विश्वविद्यालय की बी.ए. अंतिम वर्ष की परीक्षा में योग्यता सूची में स्थान प्राप्त किया है, वरन इसलिए है कि नेत्रहीन होने के बावजूद वह एकमात्र ऐसा छात्र है, जो योग्यता सूची में स्थान पा सका है। उस के अलावा शेष सभी छात्राएं हैं।

वह प्रारंभ से ही मेधावी छात्र रहा है। उस ने हायर सेकेंडरी परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की थी। इंदिरा संगीत विश्वविद्यालय खेरागढ़ से



नाटक 'नहीं' का एक रोचक दृश्य (नीचे)।



'कंचन रंग' नाटक का एक हास्य दृश्य (ऊपर) तथा नाटक 'दियागोर्गसिया' का एक दृश्य (वाएं)।



संगीत की विद परीक्षा में भी उस ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया था।

वह ब्रेल टाइप पर ब्रेल लिपि में अपने नोट्स तैयार करता है व शिक्षकों के व्याख्यान टेप कर के उन्हें याद करता है। अपनी सफलता का श्रेय वह अपने शिक्षक श्रीकृष्ण जोशी को देता है, जिन्होंने उसे बचपन से ही पढ़ाई के लिए प्रोत्साहित किया।

इब्राहीम को विश्वविद्यालय से शिकायत है कि वह उसे लिखने के लिए पर्याप्त समय नहीं देता। अन्य विश्वविद्यालयों में दृष्टिहीन विद्यार्थियों को 30 मिनट का अंतिम समय दिया जाता है जब कि विक्रम विश्वविद्यालय में यह सुविधा 15 मिनट की है। भविष्य में वह संगीत में एम.ए. करने है।

बाद गायन व संगीत के क्षेत्र में शायो जना, मदन मोहन मालवीय की वृद्धावस्था पर लिखा गया था है।

—ललित जैन, वि.वि.प्र.

हाल ही में राष्ट्रपति ने एम.एस. इंटर कालिज सिकंदराबाद के प्रवक्ता वृजेंद्रमोहन कश्यप को राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार से पुरस्कृत किया।

श्री कश्यप एक श्रेष्ठ शिक्षक और शालीन व्यक्ति हैं। अपने शिष्यों के बीच वह वेहद लोकप्रिय हैं। वह एक कलाकार, चित्रकार, मूर्तिकार, कहानीकार, हिंदी व अंगरेजी के कवि, रंगमंच के अभिनेता और निर्देशक भी हैं। उन्होंने

टी.टी.नगर की वृद्धावस्था पर लिखा गया था नाटक की विशेषता यह थी कि इस में पात्रों ने संवाद कम बोले, लेकिन उन के हावभाव इतने प्रभावी और सटीक थे कि नाटक दर्शकों के दिल को छू गया।

जगदीशसिंह के संयोजन एवं आशुतोष कोठारी की रूप सज्जा विशेष रूप से उल्लेखनीय रही।

—इंद्रजीत कौशिश, वि.वि.प्र.

विगत दिनों शासकीय कन्या महाविद्यालय टी.टी नगर, भोपाल द्वारा एक



नाट्य संस्था 'अभिकल्प' द्वारा प्रस्तुत नाटक 'तुम फिर आना' के एक दृश्य में गुलशनकुमार व वीणा गौड़।

एटलस तथा भौगोलिक उपकरणों का निर्माण भी किया है।

—ब.प. भटनागर, वि.वि.प्र.

रंगमंच

बीकानेर में पिछले दिनों 'क्षितिज' नाट्य संस्था द्वारा एक प्रभावशाली नाटक 'यार, तुम पानी क्यों नहीं लेते' का मंचन किया गया। नाटक मुख्यतया: असम में हाल

अंगरेजी हास्य नाटक 'सिल्वर मून' का मंचन किया गया। नाटक में भाग लेने वाली छात्राएं थीं,—सरला भार्गव, रश्मि, ज्योति, उमा अय्यर आदि। इन में रश्मि तथा उमा का अभिनय सराहनीय रहा। —माया, वि.वि.प्र.

पटना की सांस्कृतिक संस्था 'प्रांगण' ने पिछले दिनों 'दिन रुक गया' तथा लक्ष्मीनारायणलाल



नाटक 'तालों में बंद प्रजातंत्र' का एक दृश्य.

लिखित नाटक 'नहीं' का मंचन युवा निर्देशक संजय उपाध्याय के निर्देशन में किया.

निर्देशक संजय दोनों नाटकों के कथ्य को उभारने में सफल रहा. 'दिन रुक गया' में प्रफुल्लरंजन सहाय तथा संजय उपाध्याय ने प्रभावित किया. विनीत तथा प्रभात ने भी अपनी भूमिकाओं के अनुरूप अभिनय किया. नाटक 'नहीं' में पुष्कर सिन्हा ने अपनी भूमिका काफी अच्छी तरह निभाई.

अशोक तिवारी का संगीत संयोजन कुछ त्रुटियों को छोड़ कर ठीकठाक रहा.

—संजयकुमार चौधरी, वि.वि.प्र.

श्रीगंगानगर के विभिन्न छात्र संगठनों द्वारा शहीद भगतसिंह जयंती समारोह बलराज साहनी द्वारा स्थापित रंगमंच संस्था 'इप्टा' के सहयोग से मनाया गया.

महान् क्रांतिकारी, विचारक, लेखक भगतसिंह के 76वें जन्म दिवस पर, जो कि इस वर्ष राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में

मनाया गया, 'इप्टा' (आगरा) के अध्यक्ष प्रसिद्ध निर्देशक राजेंद्र रघुवंशी द्वारा निर्देशित नाटक 'शाहादत', 'आजादी के बाद' तथा नृत्य नाटक 'तुम ने देखा' 'दियागोगार्सिया' सफलतापूर्वक मंचित किए गए.

सफल कार्यक्रम संयोजन हरविंद कोहली व मंच संचालन हरजीतसिंह सिधू ने किया.

—किशोर खुराना, वि.वि.प्र.

बीकानेर की 'संकल्प, नाट्य समिति' ने गत दिनों स्थानीय प्रेक्षागृह टाउन हाल में एक हास्यप्रधान नाटक 'कंचनरंग' का मंचन किया. नाटक का निर्देशन राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, दिल्ली की छात्रा रेणुका इसराणी ने किया.

नाटक की मुख्य विशेषता यह थी कि स्वयं निर्देशिका सहित सभी भूमिकाओं को बड़ी कुशलता से निभाए जा सकें. नाटक का मंचन साथ निभाने में सफल हुए. रेणुका इसराणी

कविता भादाणी एवं तनवीर मालावत ने जिन दृश्यों में अभिनय किया था, उनमें से कुछ को ठहाके गुंजते रहे। पोस्टमैन की छोटी सी भूमिका में रमेश आचार्य के अभिनय को सराया गया, मंच सज्जा साधारण रही।

—इंद्रजीत, वि.वि.प्र.

दिल्ली में यहां की एक नाट्य संस्था 'अभिकल्प' ने डा.गौरीशंकर राजहंस के उपन्यास पर आधारित नाटक 'तुम फिर आना' का सफल मंचन किया। श्रीराम कला एवं संस्कृति केंद्र के वेसमेंट थिएटर में मंचित इस नाटक का नाट्य रूपांतर और निर्देशन गुलशनकुमार ने किया था।

मानवीय संबंधों को अत्यंत भावुक रूप में प्रस्तुत करने वाले इस 90 मिनट के नाटक में सभी पात्रों का अभिनय सराहनीय रहा। फिर भी वीना गौड़ (मिसेज फ्रेजर) राकेश बहशी (मिस्टर फ्रेजर) और खुद गुलशन कुमार (ग्रामीण युवक रवि) का अभिनय अत्यंत प्रभावी रहा। निर्देशन के अलावा ध्वनि प्रकाश व्यवस्था भी सराहनीय रही।

—गुलशन भाटिया

नई दिल्ली में यूथ कल्चर सोसाइटी, रमेश नगर के तत्त्वावधान में 'आरंभ' नाट्य संस्था द्वारा विभु कुमार के नाटक 'तालों में बंद प्रजातंत्र' का मंचन रमेशनगर कम्युनिटी हाल में किया गया।

आई. एस. वर्मा के निर्देशन में हुए इस नाटक में बूढ़े राजनीतिबाजों द्वारा युवा पीढ़ी को बेवकूफ बना कर अपना स्वार्थ सिद्ध करते रहने के चक्र का आकर्षक चित्र प्रस्तुत किया गया था।

सभी कलाकारों का अभिनय सराहनीय रहा। ध्वनि और प्रकाश व्यवस्था सामान्य रही पर नाटक का डेढ़ घंटा देर से शुरू होना काफी खला अंत में सोसाइटी के उपाध्यक्ष सुनील सेठी ने बताया कि इन कमियों को दूर करने का प्रयास करते हुए सोसाइटी हर माह एक नाटक करवाया करेगी।

सरिता व मुक्ता में प्रकाशित
लेखों के महत्त्वपूर्ण रिप्रांट

सेट नं. 1

प्राचीन हिंदू संस्कृति

शंभूक वध

अतीत का मोह

पुरोहितवाद

गौ पूजा

हमारी धार्मिक सहिष्णुता

कृष्ण नीति: हमारा नैतिक पतन

ज्ञान की कसौटी पर परलोकवाद

राम का अंतर्द्वंद्व

राम का अंतर्द्वंद्व: आ. व आ. के उत्तर

भारत में संस्कृति का ब्राह्मण

नियंत्रित विस्तार

हिंदू धर्म

संस्कृत

भारतीय नारी की धार्मिक यात्रा

कर्ण

भारतीय नारी की सामाजिक यात्रा

तुलसी और वेद

रामचरितमानस में ब्राह्मणशाही

युगोयुगों से शोषित भारतीय नारी

भ्रष्टाचार

रामचरितमानस में नारी

सत्यनारायण व्रत कथा

क्या नास्तिक मूर्ख है?

गांधी जी का बलिदान

यज्ञोपवीत

जंत्र तंत्र मंत्र

कर्मयोग

गुरुडंपुराण

ईश्वर आत्मा और पाप

कितना महंगा धर्म?

मूल्य-5 रुपए

50% की पुस्तकालयों, विद्यार्थियों व अध्यापकों के लिए विशेष छूट.

रुपए अग्रिम भेजें.

वी.पी.पी. नहीं भेजी जाएगी.

सेट में लेखों का परिवर्तन कभी भी हो सकता है.

दिल्ली बुक कंपनी,

एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली

भारतीय अर्थव्यवस्था और स्वराजपाल

लेख • वेद अग्रवाल



स्वराजपाल

प्रभी

हाल ही में भारतीय रिजर्व बैंक ने देश की अर्थव्यवस्था पर अपनी रिपोर्ट सरकार को पेश की थी, जिस में देश में आम तौर से पूँजी निवेश की स्थिति को

संतोषजनक बताया गया था. उस के एक ही सप्ताह पश्चात विश्व बैंक ने भी भारतीय अर्थव्यवस्था विषयक अपनी रिपोर्ट

प्रकाशित की।

दिसंबर (प्रथम) 1983

लंदन में बसे भारतीय मूल के उद्योगपति स्वराजपाल द्वारा शोयरों की खरीद को ले कर पैदा हुए विवाद ने आज भारतीय उद्योगपतियों को संशय में डाल दिया है. यदि समय रहते इस के हल नहीं खोजे गए तो परिणाम क्या होंगे?

रिजर्व बैंक और विश्व बैंक द्वारा प्रस्तुत दोनों ही रिपोर्टों में कहा गया है कि 1982-83 के वित्तीय वर्ष के दौरान देश की अर्थव्यवस्था सुधरने के बजाए बिगड़ी है. पर इस में विश्व बैंक की रिपोर्ट अपेक्षाकृत तटस्थ है, जिस में बताया गया है कि भारत के सकल घरेलू उत्पादन में गिरावट आई है और विश्व बैंक से मिलने वाले ऋणों का परिमाण घटा है.

विश्व बैंक ने संकेत दिया है कि बैंक से संबद्ध अंतरराष्ट्रीय विकास संघ से भारत को अब रियायती व्याज पर अधिक ऋण नहीं मिल सकेगा. इतना होने के बाद भी विश्व बैंक ने भारतीय अर्थव्यवस्था को चीन की तुलना में अच्छा ठहराया है.

विश्व बैंक ने कहा है कि 1982-83 के वित्तीय वर्ष में भारत को दो अरब 15 करोड़ डालर का कर्ज दिया गया, जो बैंक के कुल निर्गत ऋणों का 32 प्रतिशत था, जबकि इस से पूर्व भारत का भाग 40 प्रतिशत रहा करता था, भारत ने कृषि और उद्योग क्षेत्र में क्या उपलब्धि की, इस संबंध में विश्व बैंक की रिपोर्ट में कहा गया है कि 1979 में सूखा पड़ने तथा 1982 में कम पानी बरसने के कारण 1982-83 का वित्तीय वर्ष भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए एक विषम वर्ष रहा.

1981-82 में जहां 13 करोड़ 30 लाख टन खाद्यान्न का रिकार्ड उत्पादन हुआ था, वहां उत्पादन का परिमाण 1982-83 में घट कर मात्र 12 करोड़ 50 लाख टन रह गया.

कृषि उत्पादन में इसी कमी का स्वाभाविक परिणाम यही हुआ कि देश के सकल घरेलू

उत्पादन में जो मूल्य जुड़ता है, उस में 4 से प्रतिशत तक की कमी आ गई.

सकल घरेलू उत्पादन में अन्न उत्पादन के अतिरिक्त बंबई की कपड़ा मिल की हड़ताल तथा अन्य क्षेत्रों में औद्योगिक अशांति एवं विद्युत आपूर्ति बाधा भी कमी का कारण रही. यह सही है कि मुद्रा प्रसार व स्थिति में सुधार हुआ. 1980-81 में मुद्रा प्रसार का प्रतिशत नौ प्रतिशत था जबकि 1981-82 में वह घट कर केवल 2.2 प्रतिशत रह गया.

विश्व बैंक ने आगे कहा है कि 198 की गरमियों में अनाज के मूल्यों में भारी वृद्धि हुई, जिस को नियंत्रित रखने के लिए भारत सरकार द्वारा 45 लाख टन अन्न व तात्कालिक आयात किया गया, जिस अनाज की आपूर्ति में सुधार हुआ. सीमेंट उर्वरक तथा कुछ अन्य बुनियादी वस्तुओं देशी उत्पादन में वृद्धि के कारण उन आयात में एक प्रतिशत की गिरावट आई.

विदेश व्यापार की स्थिति में भी सुधार इस प्रकार देखा गया कि निर्यात में पा प्रतिशत की वृद्धि हुई, जिस से व्यापार संतुलन को संतुलित रखने के लिए देश काफी प्रयास करना पड़ेगा. आयात की जाने वाली कुछ वस्तुओं के घरेलू उत्पादन फलस्वरूप न केवल आयात और नियंत्रण मूल्यों का अंतर कम हुआ है, वरन् देश अर्थतंत्र में भी दृढ़ता आई है.

इस संबंध में तेल उत्पादन में वृद्धि उल्लेख किया जाना अप्रासांगिक न हो

1979-80 में जहां तेल की संपूर्ण खपत का 64 प्रतिशत विदेशी से भरा गया था, वहीं 1982-83 में केवल 47 प्रतिशत मंगाया गया, जिस से विदेशी मुद्रा में काफी बचत हुई।

रिपोर्ट में आगे कहा गया है कि उद्योगों की प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति में 1982-83 के दौरान कुछ कठिनाइयां अवश्य उत्पन्न हुईं, क्योंकि कभी कच्चे माल की प्राप्ति तो कभी ऊर्जा की आपूर्ति में व्यवधान पड़ता रहा। यद्यपि घरेलू बचत 20 प्रतिशत तक पहुंच गई है, मगर विश्व बैंक के अनुसार पूंजी निवेश में कठिनाई बनी रहेगी। उद्योग विकास के लिए विदेशी ऋणों की आवश्यकता पूर्ववत् रहेगी।

बैंक ने अपनी रिपोर्ट में उक्त धारणा प्रस्तुत कर संभवतः यह संकेत दिया है कि विश्व बैंक और पश्चिम के विकसित राष्ट्र भारत को और भी कर्ज देते रहने के इच्छुक हैं, किंतु यह बात हमारे देश की अर्थव्यवस्था के लिए शुभ नहीं कही जा सकती है।

प्रतिबंध की समाप्ति

रिजर्व बैंक ने प्रवासी भारतीयों की पूंजी का भारत में प्रवेश पर जो प्रतिबंध लगाया था, वह अंततः समाप्त हो गया। भारत सरकार के निर्देश पर रिजर्व बैंक ने शोयरों की खरीद पर लगे पुराने प्रतिबंधों को नरम कर दिया है और स्पष्टीकरण दिया है कि विदेश स्थित जिन कंपनियों में प्रवासी भारतीयों का 50 प्रतिशत स्वामित्व है, वे भारतीय कंपनियों में अपना धन लगा सकते हैं। दूसरे शब्दों में वे भारत में शोयर खरीद सकते हैं, केवल साथ ही यह शर्त भी लगाई गई है कि कोई भी प्रवासी भारतीय या उस की कंपनी किसी भी भारतीय कंपनी में उस के एक प्रतिशत से अधिक के शोयर नहीं खरीद सकते हैं।

रिजर्व बैंक के इस स्पष्टीकरण के लंदन स्थित भारतीय उद्योगपति स्वराज पाल की कैपेरो उद्योग समूह द्वारा भारत की स्कोट्स कंपनी तथा डी सी एम के शोयरों की खरीद को कानूनी मान्यता प्राप्त हो गई है।

यहां यह उल्लेख करना समुचित ही होगा कि इन दोनों कंपनियों में स्वराजपाल ने जो शोयर खरीदे थे, उन्हें उक्त दोनों भारतीय कंपनियों द्वारा मान्यता देने से इंकार कर दिया गया था साथ ही यह भी कहा गया था कि शोयरों की यह खरीद रिजर्व बैंक द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों के विपरीत है।

यह सही है कि प्रवासी भारतीयों द्वारा भारतीय कंपनियों में पूंजी निवेश के बारे में जो स्पष्टीकरण दिया गया है, उस से इस प्रकरण में भारत सरकार की नीति कुछ स्पष्ट अवश्य हुई है, किंतु स्वराजपाल की शोयर खरीदारी को ले कर चल रहा विवाद समाप्त होने की संभावना अभी भी नहीं है, क्योंकि रिजर्व बैंक का स्पष्टीकरण छपते ही भारत भर के उद्योगपतियों में गहरी चिंता व्याप्त हो गई है और वे इसे भारतीय उद्योगों के लिए शुभ नहीं मानते हैं।

इस प्रकरण को ले कर भारतीय उद्योग एवं वाणिज्य महासंघ (फिक्की) के अध्यक्ष अशोक जैन ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा है प्रवासी भारतीयों द्वारा स्वदेश में पूंजी निवेश के मामले में रिजर्व बैंक द्वारा फिर से दिए गए स्पष्टीकरण से मूलभूत परिवर्तन आ गया है। इस से स्थिति बिगड़ी है, क्योंकि इस का सरकार द्वारागत 2 मई को घोषित मूल नीतियों के साथ तालमेल नहीं है।

फिक्की के अध्यक्ष ने रिजर्व बैंक के हाल के स्पष्टीकरण पर सरकार से अप्रतिष्ठा किया है कि इस मामले पर पुनर्विचार किया जाना चाहिए तथा प्रवासी भारतीयों द्वारा पूंजी निवेश की एक सीमा निश्चित की जानी चाहिए। फिक्की के अध्यक्ष का स्पष्ट मत है कि प्रवासी भारतीयों की पूंजी का उपयोग स्वदेश की कंपनियों को हथियाने अथवा उन में अस्थिरता पैदा करने की खातिर नहीं किया जाना चाहिए।

दूसरी ओर स्वराजपाल ने रिजर्व बैंक के स्पष्टीकरण का स्वागत करते हुए कहा है कि इस स्पष्टीकरण के पश्चात् उन के द्वारा भारतीय कंपनियों में खरीदे गए शोयरों को अब बिना किसी हीलहुज्जत के पूंजीकृत कर

लिया जाना चाहिए ताकि प्रवासी भारतीयों की पूंजी का भारत में नियमित प्रवाह बना रह सके।

स्वराजपाल ने भारत सरकार की प्रशंसा करते हुए कहा कि वह सचमुच अच्छी बात है कि भारत सरकार ने निहित स्वार्थ वाले भारतीय उद्योगपति के दबाव के सामने झुकने से इनकार कर दिया। सरकार की इस दृढ़ता से प्रवासी भारतीयों की काफी पूंजी भारत में लग सकेगी।

स्वराजपाल का कथन

स्वराजपाल का कथन है कि उन्होंने भारत में अपनी कंपनियों की पूंजी लगा कर अपने राष्ट्र की सेवा ही की है तथा उन का ऐसा कोई विचार नहीं है कि वह स्वदेशी उद्योगपति को हटा कर उन की कंपनियों पर अपना शिकंजा जमाएं। स्वराजपाल ने यह भी कहा कि वह आसानी से अपना देश छोड़ने वाले नहीं हैं, भले ही उन्हें यहां पूंजी लगाने में कितना ही हतोत्साहित क्यों न किया जाए।

रिजर्व बैंक के स्पष्टीकरण के बाद स्वराजपाल की कंपनियों द्वारा खरीदे गए शोयर्स का मंजीकरण हो ही जाना चाहिए, किंतु पूंजीकरण हो ही जाएगा, यह अब भी निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता है, क्योंकि इन कंपनियों के सामने अभी रोक लगाने के अन्य तरीके भी मौजूद हैं। देशी कंपनियां अदालत का दरवाजा खटखटा सकती हैं, किंतु इस का कोई अपेक्षित प्रभाव शायद ही मिल पाए, क्योंकि इन कंपनियों के सरकारी निदेशक अपने मत के बल पर शोयर होल्डरों की आकस्मिक बैठकें बुला कर शोयर पूंजीकरण के लिए दबाव डाल सकते हैं।

इतना अवश्य कहा जा सकता है कि यदि स्वराजपाल के मामले में उत्पन्न यह विवाद लंबा खिंच जाता है तो प्रवासी भारतीयों से पूंजी निवेश प्राप्त किए जाने की सरकारी योजना खटाई में पड़ जाएगी। पूंजी निवेश करने की यह योजना बहुत अच्छी है, इसे स्वयं भारतीय उद्योगपति



वित्त मंत्री प्रणव मुखर्जी : बयानों ने दुविधा में डाला।

स्वीकार करते हैं, किंतु शोयर्स की खरीद के पीछे स्वराजपाल का इरादा कहीं कुछ और तो नहीं है—यह भारतीय उद्योगपति जान लेना चाहते हैं।

भारत की कम से कम दो कंपनियां यह मानती हैं कि स्वराजपाल उन पर अपनी पकड़ करना चाहते हैं और वर्तमान निदेशक मंडल को अपदस्थ कर अपने प्रबंध में लाना चाहते हैं। शोयर्स की खरीद के माध्यम से कंपनियों का स्वामित्व हथियाने की बात कोई नई नहीं है—ऐसा पहले भी होता रहा है। स्वराजपाल प्रकरण ने कंपनी क्षेत्र की कमजोरियों को उजागर कर रख दिया है।

इस प्रकरण में अभी तक भारत सरकार की स्थिति त्रिशंकु की सी रही है।

यह एक ज्ञात तथ्य है कि स्वराजपाल ने हाई कमान के कुछ 'खास' आदमियों के संकेत पर ही भारतीय कंपनियों में पूंजी लगाने का साहस किया था। जब भारतीय पूंजीपतियों ने इस का विरोध किया तो सरकार भी कुछ असमंजस में पड़ गई। वह एक ओर तो

स्वराजपाल को संतुष्ट करना चाहती थी, तो दूसरी ओर भारतीय उद्योगपति को भी असंतुष्ट नहीं करना चाहती थी.

पिछले कुछ महीनों से सरकार अनिश्चय की स्थिति में थी वह करे तो क्या करे. अंततः सरकार ने अपनी नीति स्पष्ट कर दी, जो रिजर्व बैंक के आदेश के रूप में प्रकट हुई है. किंतु रिजर्व बैंक के आदेश के बाद भी स्वराजपाल के सामने अनेक बाधाएं हैं. ये बाधाएं भी सरकार द्वारा ही दूर की जा सकती हैं. कंपनी कानून के अनुसार किसी कंपनी का निदेशक मंडल बिना कोई कारण बताए, किन्हीं शेयरों की खरीद को स्वीकार करने से इनकार कर सकता है. सरकार जब तक इस कानून में संशोधन नहीं करती है और निदेशक मंडल को दिया गया वह अधिकार निरस्त नहीं करती है, तब तक शेयरों की खरीद व बिक्री की वैधता हमेशा अधर में लटकती दिखाई देगी. कंपनी कानून बोर्ड को भी जो कंपनियों के संबंध में शिकायतों की सुनवाई करता है, कानून की व्याख्या सरल करनी होगी तब ही वह शिकायत करने वालों के प्रति न्याय कर सकेगा.

यद्यपि स्वराजपाल ने अभी तक अपनी

कोई शिकायत बोर्ड के सामने प्रस्तुत नहीं की है, फिर भी उस के द्वारा शिकायत दर्ज करने जाने की संभावना को नकारा नहीं जा सकता है. रिजर्व बैंक द्वारा प्रस्तुत स्पष्टीकरण संदर्भ में उस के द्वारा खरीदे गए शेयरों की मान्यता न दिए जाने का मामला वह बोर्ड के सामने रख ही सकता है.

भारत के वित्त मंत्री के ताजा बयानों से वह आभास होता है कि स्वराजपाल द्वारा किए गए इन सौदों के पीछे सरकार की नीति और जब सरकार यही चाहती है कि प्रवासी भारतीय अपनी पूंजी का निवेश भारत में करें तब ऐसे विवादों को उत्पन्न होते ही समाप्त कर दिया जाना चाहिए था.

व्यापार व्यवहार की इस सामान्य प्रक्रिया पर इतनी लंबी खींचतान से वह सरकार की छवि धूमिल हो रही है, वहां तक कि भारतीय निजी उद्योग भी अपनी सही तसल्ली पेश करने में असफल हो रहा है. जो अविलंब इस प्रकरण का पटाक्षेप नहीं किया गया, तो भारत में होने वाला निजी निवेश अवरुद्ध सा हो जाएगा, जो भारत की समृद्धि तथा औद्योगिक भविष्य के लिए निश्चित रूप में अच्छा साबित नहीं होगा.



फ्रंटवैस



डायमोनटो



नर्सिंग

सौंदर्य सहायक उत्पादनों के निर्माताओं द्वारा प्रस्तुत आप में निहित नारी सुलभ आकर्षण को उभारने के लिए. पहनने में बिल्कुल सही आकार के बिल्कुल अनुरूप पहनने पर स्वाभाविक अनुभूति

BRIDAL FORM®

निर्माता -
के.आर. विट्ठल,
१३, त्रिकमजी धिया मार्ग,
मंगलदास मार्केट के नजदीक
बंबई - 400 002.
दूरभाष - 317919

शीतल, सुखदायी, सूती



राजेंद्र ए. बी. सी. कम्प में

सभी प्रमुख विप्रेताओं में प्राप्त

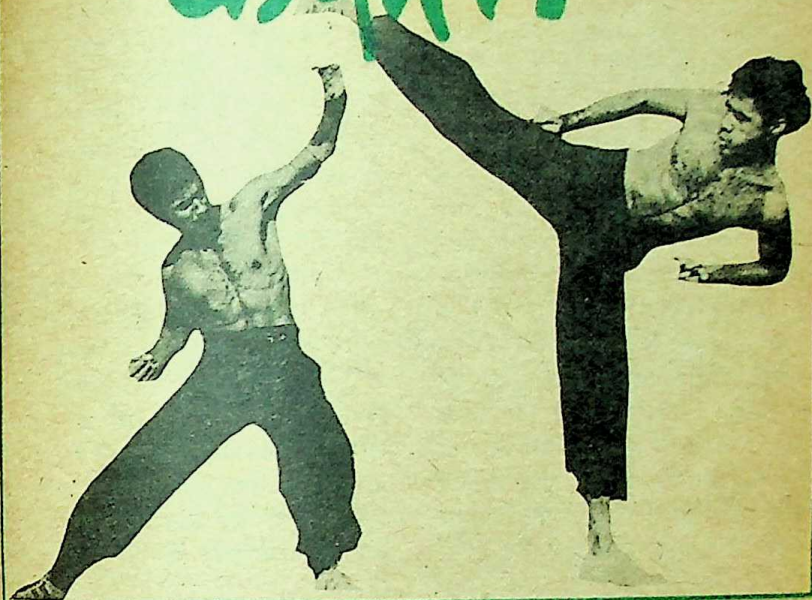
ए. बी. सी. कम्प में

ए. बी. सी. कम्प में

वी. पी. पी. से भी संग्रहित कर सकते हैं. मुफ्त संचित्र पुस्तिका के लिए लिखें.

दिसंबर (प्रथम) 1992

कवाते:



कोई चमत्कार नहीं है

लेख • दीपक

इधर हाल के कुछ वर्षों में जूडो, कराते, कुंगफू इत्यादि की लोकप्रियता बड़ी तेजी से बढ़ी है। इस का सर्वोपरि कारण है समाज में गुंडों-बदमाशों का नित्य बढ़ता आतंक। अधिकांश युवतियां जूडो, कराते आदि सीखने का शौक महज इसलिए रखती हैं कि जरूरत पड़ने पर छेड़खानी करने वाले शोहदों को मजा चखा सकें।

ज्यादातर लोग इस मुगालते में रहते हैं कि कराते कोई ऐसी चमत्कारिक चीज है जिस का छोटा-मोटा कोर्स करते ही वे ऐसी रहस्यमय शक्ति या अचूक दांवों के मालिक हो जाएंगे कि चार आदमियों को चुटकियों में ठिकाने लगा देंगे या फिर हाथ के एक ही वार से दो ईंटें तोड़ सकेंगे।

हालांकि

होती है कि आसानी से समझ में न आने वाली हर चीज के ऊपर चमत्कार या जादू का बिल्ला लगा कर उस बारे में सोचने से छुटकारा पा लेता है, लेकिन कराते के साथ बात सिर्फ इतनी ही नहीं है: इस में पूरा-पूरा सहयोग दिया है ब्रूसली जैसे असाधारण व्यक्तियों की बेहद लोकप्रिय फिल्मों ने या

कराते को ले कर उन सामान्य में तरह-तरह की अटकलें लगाई जाती हैं पर सच्चाई क्या है? क्या कराते वाकई कोई चमत्कार है या शरीर की एक साधारण सी प्रक्रिया?

सह-आदर्मी की धर्म प्रवृत्ति Gurukul Kangri Collection, Haridwar

फिर सस्ते जासूसी उपन्यासों में वर्णित मारधाड़ के दिग्गजों ने अपने सामान्य जीवन में कलाएं छिछली पत्रकारिता का शिकार भी हुई हैं।

सामान्यतः इन के बारे में आप ने जो लेख पढ़े होंगे उन में प्रमुखता से यही चर्चा रहती है कि फलां इतनी ईंटें एक बार में तोड़ सकता है, तो फलां उतने तख्ते तोड़ सकता है। पढ़ कर आप को यही लगेगा कि क्या कमाल के लोग हैं वे भी, काश हम भी वैसा कर पाते। उन लेखों में आप यह नहीं पाएंगे कि वे लोग वैसा कर पाने में क्यों और कैसे समर्थ होते हैं।

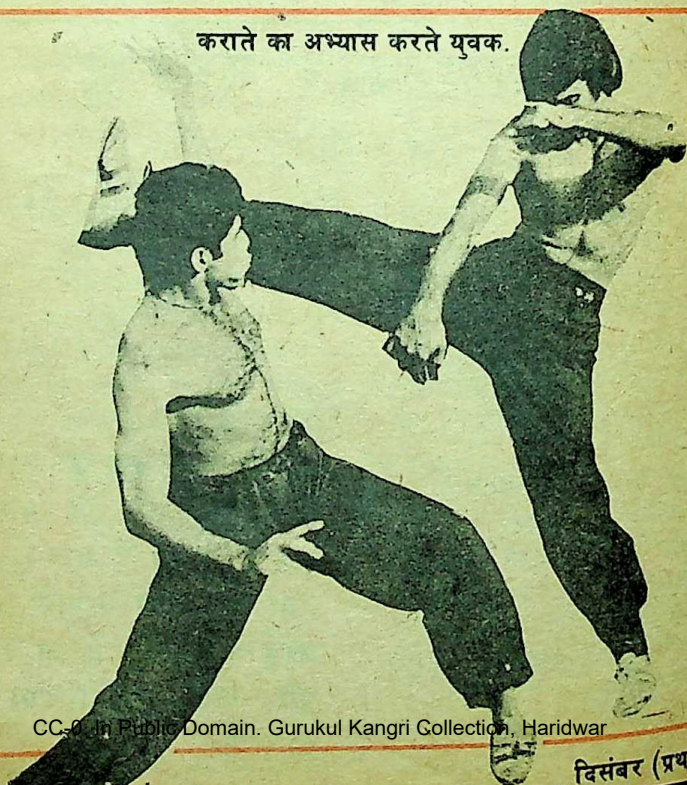
वास्तव में वैज्ञानिक तथ्यों के सहारे यह बताया जा सकता है कि कराते वस्तुतः कोई चमत्कारिक चीज नहीं है। कुंगफू, ताए क्वोन दो इत्यादि कलाएं कराते से बहुत मिलतीजुलती हैं, पर कराते पर जापानियों की निष्ठा व अध्यवसाय के कारण प्रचुर मात्रा में साहित्य उपलब्ध है और इस पर वैज्ञानिक अध्ययन भी सब से ज्यादा हुआ है।

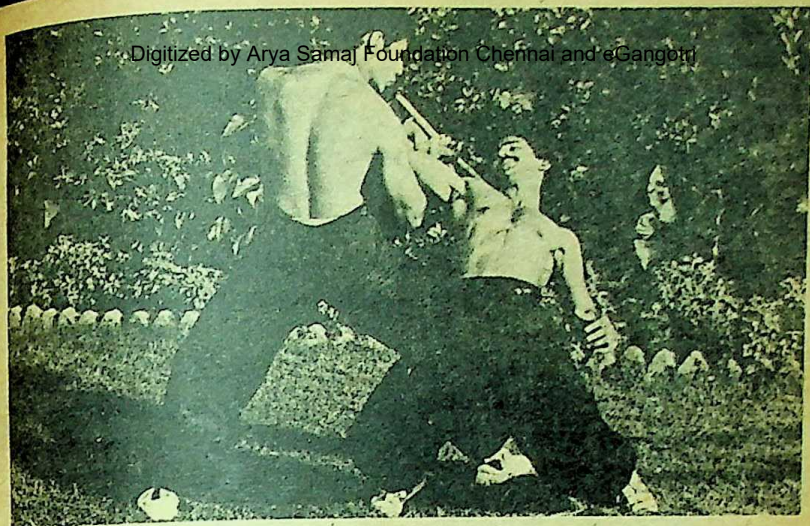
यह सच है कि कराते के विशेषज्ञ एक एक ईंट को तोड़ सकते हैं। एक एक इंच मोटे 10 से भी ज्यादा लकड़ी के तख्ते तोड़ सकते हैं। इस में कोई धोखा नहीं है न ही सरकस के कुछ खेलों की तरह कोई झूठ है। पश्चिमी वैज्ञानिकों ने इस की कई जांच विधिवत जांचपड़ताल की है।

यहां एक बात ध्यान में रखने योग्य है कि आप ने योगियों के चमत्कारों के विषय में काफी कुछ सुना या पढ़ा होगा। याद रखें कि योग और कराते में कोई संबंध नहीं है। अधिकारिक विज्ञान को योग के विषय में ज्यादा जानकारी नहीं है, जब कि वैज्ञानिकों ने कराते का पूरा विश्लेषण कर लिया है।

पुराने समय में कुछ जापानी कराते विशेषज्ञ 'जैन' (बौद्ध धर्म का जापानी स्वरूप) के अनुयायी हुआ करते थे और पूरा पाठ में कुछ वक्त जाया करते थे, परंतु अब जापान में भी वह बात नहीं रही। आज के विशेषज्ञ उस पचड़े में नहीं पड़ते। इस के

कराते का अभ्यास करते युवक.





कराते में निपुण युवक हथियार के सामने अंततः असहाय ही रहते हैं.

अलावा अब तो पश्चिमी देशों में भी बहुत सारे अच्छे विशेषज्ञ हैं, जो पुराने जापानी विशेषज्ञों से बेहतर ही हैं.

योगियों के आचरण के विपरीत मैसुतात्सु ओयामा सरीखे विशेषज्ञ ने, जो जापान कराते एसोसिएशन के अध्यक्ष थे, अपने आप को वैज्ञानिकों के सुपुर्द किया ताकि इस कला पर से रहस्य का परदा हट सके. ज्ञातव्य है कि ओयामा अपने जीवन में 52 बार सांडों से निहत्थे भिड़ कर उन के सींग कराते चाप से तोड़ चुके हैं. ओयामा और अन्य विशेषज्ञों के प्रहारों की जांच हाइस्पीड फोटोग्राफी के अलावा अन्य अत्याधुनिक उपकरणों की मदद से भी की गई है.

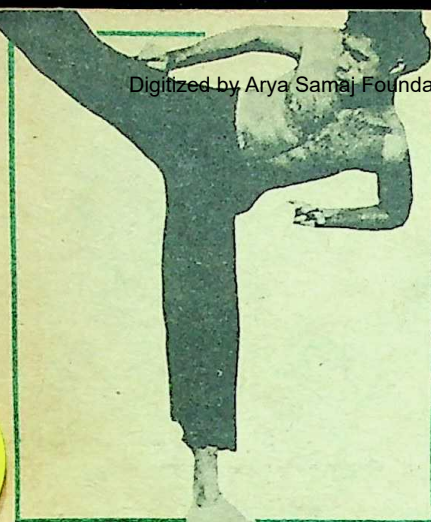
इस विषय में क्लीवलैंड स्टेट विश्वविद्यालय के भौतिकविद जर्लवाकर ने तथा एम. आई.टी. के वैज्ञानिकों के एक समूह ने बड़ा गहरा शोध किया है. जर्लवाकर साधारण कदकाठी के हैं और खुद कई तख्ते तोड़ सकने में समर्थ हैं. इन वैज्ञानिकों ने साबित कर दिया है कि कराते पूरी तरह से 'भौतिक' चीज है.

उन्होंने दिखाया है कि कराते चाप की विध्वंसक शक्ति इस पर निर्भर करती है कि

आप कितनी जोर से मार रहे हैं और हथेली कितनी सख्त है. हाथ का ईंट से टकराते समय वेग यदि 10 मीटर प्रति सैकंड या उस से ज्यादा है तो ईंट टूट सकती है, लेकिन सामान्य मनुष्य के लिए छः मीटर प्रति सैकंड के वेग से हाथ आगे बढ़ा पाना संभव नहीं है. 10 मीटर प्रति सैकंड की रफ्तार से प्रहार करने में समर्थ होने के लिए कठिन अभ्यास और श्रेष्ठ शारीरिक क्षमता की जरूरत है. जो भी यह तकलीफ उठाए वह ऐसा कर सकता है.

तकलीफदेह प्रशिक्षण

बेशक इस में तकलीफ खासी होती है. कराते विशेषज्ञ 'माकीवारा' नामक वस्तु पर प्रहारों का अभ्यास करते हैं. इस बेहद खुरदरी चीज के कारण हाथों पर पहले ही दिन छाले पड़ जाते हैं. फिर वहां ठूठे पड़ जाते हैं. विशेषज्ञ तब भी अभ्यास जारी रखते हैं. यहां तक कि ठूठों से भी रक्तस्राव होने लगता है. ऐसी अवस्था में उस स्थान पर कभीकभी अतिरिक्त कार्टिलेज की वृद्धि देखी गई है. जिस से वह अंग एकदम सख्त हो जाता है. कुछ विशेषज्ञों के हाथों के रेडियोग्राफों से इस की पुष्टि हुई है. इस के अलावा विशेषज्ञ दो



लात से पिस्तौल झटक देगा, लेकिन आप
किया है, तब भी कुछ कर पाने की संभावना
शून्य ही है।

अगर हमलावर के पास सिर्फ चाकू
है तब आप के लिए थोड़ी गुंजाइश रहती है
कराते का कुछ ज्ञान रखने पर आप उस
असहाय नहीं रहेंगे। यहां यह ध्यान देने की
बात है कि ऐसी हालत में बचाव फुर्ती के
वजह से ही हो सकता है और फुर्तीला होने के
लिए कराते विशेषज्ञ होना जरूरी नहीं है।

विशेषज्ञ का कथन

न्यूयार्क पुलिस को आत्मरक्षा का
प्रशिक्षण देने वाले विशेषज्ञ आर्थर सीडल
का कथन है कि कराते का जानकार भी एक
दो छुरे का घाव खाए बिना बदमाश पर कब्जा
नहीं पा सकता। अगर आप में इतनी दृढ़ता है कि
एकदो घाव खा कर और अपना खून बहा
देख कर भी होशोहवास कायम रख सकेंगे
तो आप के लिए कराते की शिक्षा व्यर्थ नहीं
होगी।

यदि बदमाश निहत्था है तो आप को
कराते के प्रहारों का प्रयोग करने से पूर्व के
बार सोचना चाहिए। अंडकोशी पर लगा
गई 'फ्रंट किक' या गले पर दिया गया 'स्पीयर
हैंड जैव' घातक हो सकता है।

कोई घातक प्रहार कर देने पर भते हैं
आप का पक्ष एकदम जायज हो, पर आप
थाना पुलिस या कोर्टकचहरी के चक्कर में पड़
सकते हैं और यह कोई भी पसंद नहीं करेगा
इस सिलसिले में याद रखें कि घातक होने के
कारण ही कराते को विधिवत स्पोर्ट्स के रूप
में मान्यता मिलने में दिक्कत पेश आ रही है।
जब कि जूडो ओलंपिक में जगह पा चुका है।

बिना हथियार आत्मरक्षा सिखाने वाली
किताबों या ऐसे किसी कोर्स के चक्कर में पड़ना
लाभदायक नहीं है। वस्तुतः ऐसे
विज्ञापन आप के मन में छिपे हुए भय का
पूरापूरा फायदा उठाते हैं। उन के पीछे जितना
धन, समय और शक्ति का व्यय होता है, उतना
अनुप्राप्त भी आप को उमलबिध नहीं होती।

उंगलियों पर खड़े होने जैसी कई अत्यंत
कठिन कसरतें भी करते हैं।

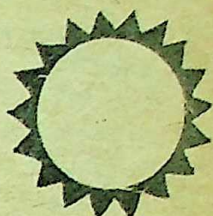
कराते की परंपरागत शैली में तो हाथों
की शक्ति बढ़ाने और उन्हें सख्त बनाने के
लिए कम के कम तीन वर्ष तक मेहनत कराई
जाती है। इसलिए आप इस भ्रम में न रहें कि
बिना हथियार आत्मरक्षा वाला कोई कोर्स
कर के आप ईंटें या मौका पड़ने पर किसी
बदमाश की हड्डि तोड़ सकेंगे। इस उपलब्धि
की प्रक्रिया इतनी कष्टसाध्य और लंबी है कि
आम आदमी के लिए कतई व्यावहारिक नहीं
है। छाले पड़े हाथों के साथ आप रोजमर्रा का
काम कैसे कर पाएंगे?

कराते के सहारे बदमाशों से मुठभेड़ के
संदर्भ में यह याद रखें कि कराते का ब्लैक
बेल्ट विशेषज्ञ भी अपने हाथपैर पिस्तौल की
गोली से ज्यादा तेज नहीं चला सकता, मनुष्य
के शरीर के लिए यह संभव ही नहीं है,
इसलिए अगर गुंडे के पास पिस्तौल है तो
बेहतर यही होगा कि आप होशियारी न
दिखाएं। होशियारी सिनेमा के परदे पर ही
मजा देती है। हकीकत में पेट में लगी गोली या
छुरा बड़ा दर्द करता है।

अगर गुंडा पहुंच के भीतर खड़ा हो या
किसी वजह से उस का ध्यान एकाएक बंट
जाए तो कराते विशेषज्ञ के लिए इस बात की
संभावना रहती है कि वह हाथ के प्रहार से या

50 लाख बच्चों की प्यारी
रंगीन पत्रिका

चंपक



हर पक्ष चंपक में प्रकाशित मनोरंजक व
शिक्षाप्रद कहानियां, कविताएं, पहेलियां,
चुटकले और लेख बच्चों को नई जानकारी
देते हैं, उन का चरित्र संवारते हैं और नए
स्वरूप में ढालते हैं.

चंपक हिंदी के अलावा अंगरेजी,
गुजराती, तमिल, बंगाली,
मराठी व मलयालम
भाषाओं में भी
प्रकाशित होता है.

अपने बच्चों को चंपक लेकर दें.
उन का मनोरंजन भी करें और
भविष्य भी संवारें.



इस कमबख्त फीरोज़ शाह कोटला मैदान को उन लोगों से कितनी दुश्मनी है जो बाहर से दिल्ली आ कर रक्षात्मक तरीके से एकएक रन की तरह स्कोर मारते हुए रोजीरोटी कमाते हैं।

अभी जब भारत और वेस्टइंडीज पैड कस कर इस अखाड़े में दोदो हाथ करने के लिए उतरने ही वाले थे कि मैं नो बाल की तरह अपने कस्बेतुमा शहर में जा गिरा था। यदि मैं दो दिन की छुट्टी ले कर ऐसा न करता तो एकएक रिश्तेदार फुलटास गेंद की तरह

यहाँ मेरे कसने पर आ गिरता और छक्का का स्कोर मारने वाली मेरी जेब में ही रन आउट हो जाती।

मुझे घर पर देख कर सब ने ऐसा बनाया था जैसे कि मैं पहली गेंद पर कस बोलड हो कर पवेलियन लौट आया हो। किंतु मैंने इस की जरा भी परवाह नहीं की। कुछ लोगों ने मुझ से दिल्ली चलने की जोर-अपीली की थी, किंतु मैं अंपायर की तरफ बना रहा था, आखिर मैं गलत निर्णय दे सकता था।

मैं ने लोगों को रंगीन टी.वी. के टी.वेल को स्टेडियम में बैठ कर देखने और औचित्य न रहने की बात बताई थी, इस घरमहल्ले में मेरे प्रति ऐसी उदासीनता गई थी जैसी कि मैच डा होने की संभावना ले कर दर्शकों में होती है। यानी कोई हफ्त तरफ ज्यादा ध्यान नहीं दे रहा था।

अगले दिन जब मैं सो कर खड़ा दिल्ली में मैच शुरू हो चुका था। सब वहाँ में बैठे खेल का आँखों देखा हाल सुन रहे

तोबा, यह मौसम क्रिकेट का

व्यंग्य • जीति



मोती क्रिकेट टीमों
के भारत आगमन के
सब ही देश में
एक ही जेस में
आगमन की
पुति होती
की उस के तो
होश ही
गए...



मैं न तो बेड टी मिली थी और न ही में
हाने के बाद पहनने के लिए कपड़े ही
मिले गए थे और न ही शोव का सामान ही
मैं पर रखा था।

मुझे बेहद कोफ्त हुई थी और मैं सोचने
लगा था कि काश, मैं लोक सभा का सदस्य
होता तो इस खेल पर प्रतिबंध लगाने संबंधी
एक विधेयक संसद में पेश कर देता, लेकिन
नहीं। सांसद हो कर तो ऐसा सोच भी नहीं
सकता था। तब तो मैच देखने के टिकट और
घर पर आने। पांचों उंगलियां घी में
होतीं।

खैर, उठ कर शोव करने बैठा तो
खिड़की से देखा कि सामने के मकान में
मनाटा छाया हुआ था। छोट्टे भिना कर

28 सदस्यों के परिवार का वह घर आखिर
एक दम सुनसान क्यों था? पता चला कि वे
सब ड्राइंगरूम में बैठे टी.वी. पर मैच देख रहे
थे।

खैर, किसी तरह नहा कर, कपड़े बदल
कर, सारे कार्यों से फारिग हो कर मैं ने नाश्ते
के लिए पत्नी को आवाज दी थी। वह बेहद
बुरा मानती हुई उठ कर आई और
चायनाश्ता मेज पर पटक कर फिर कमेट्रिया
कंपनी में जा बैठी।

बाद में, इतना अकेलापन दो दिन में तो
मैं बजाए कार्यालय जाने के पागलखाने जाने
के योग्य रह जाऊंगा। अतः बहुत सोचविचार
के बाद मैं दिल्ली वापस आने के लिए तैयार हो
गया था। चूँकि वह दिन आराम हो चुका था।

अतः कोई भी दिल्ली आने के लिए चमगादड़

की तरह नहीं बिगड़ता। Samaj Foundation Chennai

घर से बस स्टैंड के रास्ते में एक जगह भीड़ देख कर मैं भी तमाशबीन बन गया था। एक युवक एक अधेड़ उम्र के दुकानदार से झगड़ रहा था। जैसे कोई खिलाड़ी अंपायर के निर्णय को दुर्भावनापूर्ण मान कर खेल भावना (स्पोर्ट्समैन स्प्रिट) को त्याग दे।

पूछने पर पता चला कि इस दुकानदार की दुकान के आगे मैले की एक भैंसागाड़ी बहुत देर से खड़ी थी। उसी के पास वह युवक भी खड़ा था। जैसे क्रीज पर घंटों से डटे बैट्समैन द्वारा टुकटुक कर प्लेड करने से दर्शक खीज जाते हैं, दुकानदार के संयम का बांध भी टूट गया था। उस ने उस युवक को बहुत बेहूदे ढंग से उल्टीसीधी बातें कहना शुरू कर दी थीं।

युवक का कहना था कि इस दुकानदार ने मुझे सफाई कर्मचारी समझ कर कहा, "ओबे, हटा यहां से गाड़ी।" तो दुकानदार का कहना था कि "यह युवक वहीं भैंसे के पास बहुत देर से खड़ा था।" इस पर युवक ने कहा कि वह तो भैंसे के जुए में पड़े ट्राजिस्टर से मैच का आंखों देखा हाल सुन रहा था। खैर, चूंकि सफाई कर्मचारी कहीं से टोकरी लिए वहां पर आ गया था, अतः गलतफहमी दूर हो गई थी।

अगले दिन दिल्ली आ कर दफ्तर जाते समय मैं ने इस कमेंट्री की उपयोगिता भी देखी थी। ठसाठस भरी बस में उन सज्जन को महिलाओं की सीट पर ही बैठने के लिए जगह मिल गई थी, जिन के पास कानचिपकाऊ क्रिकेटी ट्राजिस्टर से बड़ा एक ट्राजिस्टर था। कमेंट्री का एक करिश्मा और था। आसपास की सीटों पर बैठी लड़कियां एकदम चुप थीं, वरना स्त्रियां और चुप...

हालांकि देर से दफ्तर पहुंचा था, किंतु कुरसियां खाली पड़ी थीं सब कैटीन के बरांडे में बैठे खेल का आंखो देखा हाल सुन रहे थे। मैं भी निसंकोच उधर ही बढ़ गया। तभी एक साथी ने दूसरे से कहा, "बेटे मोज़ करो, केजी नहीं आने वाला।"

"कौन केजी?" मैं ने बीच में ही लिया था।

"अरे, वही अपना सुपरिटेण्डेंट कौन."

"तो उस का नाम केजी कैसे पता चला?"

"अरे यार, वह सिर से किरमाने लंबाई में गावस्कर."

सुपरिटेण्डेंट के कल हुए इस नाम पर मैं बेसाख्ता हंस पड़ा था। तभी एक साथी ने पूछा था, "अबे क्यों नहीं आएगा, केजी?"

"बेटे, वह रंगीन टी.वी. पर मंच रहा है।"

"तो लंच के समय आ जाएगा।"

"क्यों खुद क्या भूखो मरेगा।"

"तो किसी और समय आ जाएगा।"

"गलत, बिलकुल गलत, वाटरल समय वह भी पानी पीएगा। लंच के खाना खाएगा, टी टाइम चाय पीएगा। जाने इन की बात। अरे यह तो खेल लोगों का है। शाही है, शाही खेल।"

इसी तरह की बातें करतेकरते गए थे। कैटीन वाले का लड़का चाय ने पिया था। लड़के के हाथ पर पट्टी बधी देख कर कोरी हमदर्दी जताते हुए जबानी बकिया था, "यार, यह क्या हुआ, इतना रोना है।"

"कल कैटीन वाले ने इस पर चाय की मार पकड़ी। बच्चू हवाई फायर करते रहे थे।"

"हवाई फायर?" मेरे आसपास मित्र ने समझाया था, "हां, हवाई बार्जलिंग का ऐक्शन करते हुए हवा में घुमा रहा था। बस चिढ़ गया कैटीन वाले दबोचा, कहने लगा, 'साले तेरे बाप ने खेला है क्रिकेट। अबे गिल्लीडंडे की खेल तेरी, पर खेल वह भी नहीं। बस चाय चाय।"

मुझे लगा था जैसे मैं पगबाधा हो (एल.बी.डब्ल्यू) हो गया होऊं और नहीं पा रहा होऊं कि क्या करूं। पकड़ वापस लौट जाऊं या झगड़े के मूड से कैटीन ही डटा रहूं।

तभी एक साथी ने जैसे स्लोमो

दिसंबर (प्रथम)

मिले सा दिखाते हुए कहा था, "भाई, कल
टीन वाला बहुत खिड़कियाँ हुआ था 50
ने की एक कप चाय में हरेक 50 मिनट से
कम देर कमेट्री सुनना चाहता था. न जाने
कितने ग्राहक तो बैठें खाली न होने के कारण
ही लौट गए. बस उस ने, कुम्हार से बन न
पड़ी गंधे के कान उमेठ दिए."

इस पर मैं भी अन्य बाबुओं की तरह
खीं कर के हंस पड़ा था.

सुबह तो अनजाने ही सुपरिंटेंडेंट की
बनुपस्थिति का लाभ मिल गया था, किंतु
राम को तो जानबूझकर ही फायदा कमाया
था. कार्यालय से चार बजे ही वापसी कर ली
थी.

मुझे लगा था कि लगातार दो दिन तक
मैं या तो मौन व्रत धारण करना पड़ेगा या
समाधि लगानी पड़ेगी, क्योंकि ऐसा कोई
व्यक्ति मिलता ही नहीं था जो कि क्रिकेट पर
बर्बा न करता हो और कमेट्री का भस्सी न
हो.

कमरे पर आया तो पड़ोसी अपने बच्चे
से डांट रहे थे, "अबे नालायक की औलाद,
बना गया मैच देखने, क्या देख के आया. बता
खर झाड़व कैसे लगाया जाता है, लेग ब्रेक
फेंकने के लिए उंगलियों की ग्रिप कैसी
होती है... अबे कुछ करेगा भी जिंदगी में या
नहीं. पढ़ता तू नहीं. चल जा के पढ़ने बैठ."

यानी उन्हें भी क्रिकेट से कोई लगाव
नहीं है. मैं यह समझ कर उन की बैठक में उन
के पास चला गया था कि वह मेरे जोड़ीदार हैं,
कुलु गुस्सा शांत होते ही वह मुझ से बोले,
साहब, इस क्रिकेट ने तेरा गलत बना दिया है,
गलत. खैर, छोड़िए से अंतिम स्कोर क्या
है? कौन खेल रहा है."

मैं खून का घुंटा कर रह गया था. मुझे
सुप देख कर उन्होंने खुद ही कहा था, "मैच
तो झा होगा."

"मेरी बला से." मैं ने मन में कहा था,
कर सोचा था कि काश मैच झा ही हो जाए,
मैच के झा होने पर सब से ज्यादा खुशी भी मुझे
होगी क्योंकि क्रिकेटियों को इस से पीड़ा जो
हवेगी.

सरिता व मुबता में प्रकाशित लेखों के महत्त्वपूर्ण रिश्ते

सेट नं. 2

प्राचीनकाल में बच्चों की शिक्षादीक्षा
वेदों में विज्ञान
राम कथा व सीता चरित्र
सरिता और हिंदू समाज
तुलसी साहित्य: जनवादों की नमायशा
तुलसी साहित्य: आ. व आ. के उत्तर
हिंदुओं के मंदिर कैसे हों?

रावण
रामचरितमानस के अविश्वसनीय
प्रसंग
रामचरितमानस के असंगत स्थल
श्रीकृष्ण

गीता: कर्मवाद की व्याख्या या कृष्ण
का आत्मप्रचार

क्या कौमार्य रक्षा दक्षिणानूसी है?

कृष्ण और राधा

श्रीमद्भागवत

भागवत और भूगोल

समाजवाद बनाम स्वतंत्रता

कामायनी

हिंदू विवाह पद्धति

पुत्रेष्टि यज्ञ

प्राचीन भारत में गो हत्या

हिंदी साहित्य का गलत इतिहास

धनुषयज्ञ

कृष्ण और गोपियां

हमारे देवमंदिर

क्या समाजवाद अनिवार्य है?

विवाह पूर्व यौन संबंध

श्रीकृष्ण: अपने जीवन की संध्या में

सताई गई नारी

कृष्ण और कुब्जा

मूल्य-5 रुपए

50% की पुस्तकालयों, विद्यार्थियों व
अध्यापकों के लिए विशेष छूट.

रुपए अग्रिम भेजें.

वी.पी.पी. नहीं भेजी जाएगी.

सेट में लेखों का परिवर्तन कभी भी हो
सकता है.

दिल्ली बुक कंपनी,

एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली

खेल समीक्षा

इंद्रमोहन महाजन ने इस्तीफा क्यों दिया?

आजकल हाकी जगत में इस विषय पर काफी चर्चा है कि आखिर वे क्या आरोप हैं, जिन के कारण भारत सरकार द्वारा भारतीय हाकी महासंघ का अनुदान रोक देने जैसा कदम उठाना पड़ा और जिन की वजह से ही इंद्रमोहन महाजन

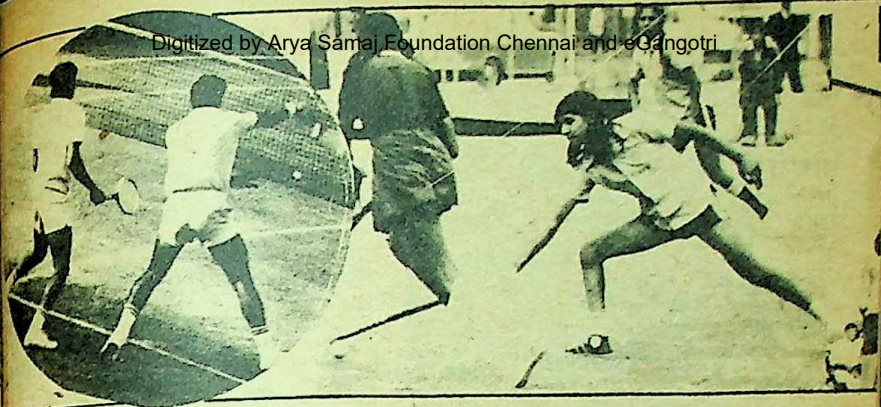


जैसे राजनीतिक व प्रशासनिक स्तर पर शक्तिशाली समझे जाने वाले अधिकारियों भारतीय हाकी महासंघ के अध्यक्ष के इस्तीफा देना पड़ा।

दरअसल यह सारा झगड़ा 1982 को पी.एन. शर्मा से शुरू हुआ। पी.एन. शर्मा हाकी संघ के सहायक सचिव थे। इंद्रमोहन महाजन ने उन्हें नौकरी से बर्खास्त कर दिया था।

इंद्रमोहन महाजन पर आरोप था कि उन्होंने 1981-82 की भारत-पाक श्रृंखला के दौरान पैसे के मामले में भ्रष्टाचार की। उन्होंने कलकत्ता टेस्ट के दौरान बंगाल हाकी संघ से पाक टीम के किराए के नाम पर 53,541 रुपये का भुगतान किया, जिसे संघ के खाते में नहीं डाला गया। उधर बंबई हाकी संघ से भी उन्होंने पाक टीम के हवाई किराए के 11,350 रुपये ले लिए थे।

भारतीय टीम के कलकत्ता आवासीय भवन का 43,626 रुपये का खर्चा बंगाल हाकी संघ ने वहन किया ही था। महाजन ने बिना



हमारे कर्ताव दिए पांक टीम के नाम पर 10 हजार रुपए व भारतीय टीम के नाम पर तीन हजार रुपए ले लिए.

पांचवी विश्व कप हाकी प्रतियोगिता (बर्लिन में 29 दिसंबर से 13 जनवरी 1983) के दौरान भी इंद्रमोहन महाजन ने मोटी रकम इकट्ठी की. होटल व्यय के नाम पर उन्होंने 40 हजार रुपए व मनोरंजन भत्ते के रूप में 10 हजार रुपए वसूले. दिलचस्प बात यह है कि अधिकांश पैसा उन्होंने अपने ही विभाग के पांच इंस्पेक्टर देशबंधु के मारफत लिया. देशबंधु ने ही 18 फरवरी, 1982 को पाकिस्तान जाने वाली भारतीय जूनियर टीम के लिए निर्धारित 7,090 अमरीकी डालर की रकम में से 2,090 डालर इंद्रमोहन महाजन के लिए निकाल कर शेष रकम (पांच हजार डालर) टीम के मैनेजर उद्यमसिंह को सौंप दी थी.

पैसे के इस व्यापक दुरुपयोग को ले कर जब 16 अप्रैल, 1982 को दिल्ली में हुई हाकी संघ की कार्य समिति की बैठक में इंद्रमोहन की परोक्ष रूप से छीछालेदारी हुई तो वह सक्ते में आ गए और उन्हें लगा कि इन सब अंदरूनी बातों व दस्तावेजों को विरोधियों तक पहुंचाने में वैतनिक सहायक सचिव पी.एन. शर्मा का हाथ है.

अतः पी.एन. शर्मा को बरखास्त कर दिया गया. किंतु पी.एन. शर्मा ने दिल्ली की अदालत में महाजन के विरुद्ध आपराधिक के

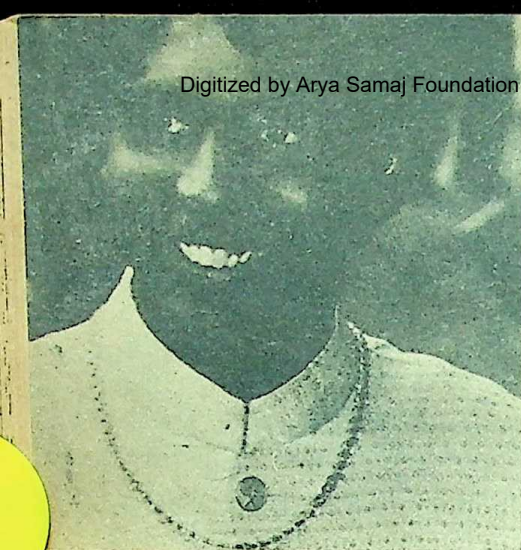
आरोप लगा दिए. महाजन इस कांड से अभी उबरे भी नहीं थे कि एशियाड-1982 बलवीर-सिंह ने खुल्लमखुल्ला इल्जाम लगाया कि राजिंदरसिंह को टीम में शामिल करने के लिए इंद्रमोहन महाजन ने उस पर दबाव डाला था.

बहरहाल भारत सरकार के लिए इतने ही प्रमाण पर्याप्त थे. पिछले दिनों उस ने भारतीय हाकी महासंघ का कार्य संचालन भारतीय ओलंपिक एसोसिएशन को सौंप दिया. गत आठ वर्षों में यह तीसरा अवसर (1975, 1978, 1983) है जब ओलंपिक एसोसिएशन ने भारतीय हाकी महासंघ के कार्यभार को अपने हाथों में लिया है. भारतीय ओलंपिक एसोसिएशन के अध्यक्ष राजा भलिंदरसिंह ने महाजन का कार्यभार संभाल लिया है.

ओलंपिक अभी दूर है

जब भी कोई टीम अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंट में हिस्सा लेती है, तब उस टीम की सफलताओं को ले कर बड़े बड़े दावे किए जाते हैं, लेकिन जैसे ही टूर्नामेंट शुरू होता है और टीम एक के बाद दूसरा मुकाबला हारती-चली जाती है तो दावा करने वालों का स्वर घीमा पड़ने लगता है.

भारतीय फुटबाल टीम के प्री ओलंपिक (ग्रुप 3) टूर्नामेंट में उतरने से पूर्व टीम की



विजय अमृतराज : प्रतिष्ठा की चमक कम हो रही है?

तैयारियों को ले कर ऊंचेऊंचे स्तर में राग अलापा गया कि टीम को इस बार यूगोस्लाविया के प्रशिक्षक सिरीक मिलोवन ने प्रशिक्षण दिया है, टीम के तकनीकी निदेशक बाब बूटलैंड है। इस के अलावा तीन भारतीय प्रशिक्षक भी टीम के साथ हैं, लेकिन इतने तामझाम के बाद भी परिणाम क्या हुआ?

सउदी अरब के खिलाफ अपने ही मैदान तथा समर्थकों के बीच हारने के बाद हम सिगापुर से भी हार गए। मलयेशिया के साथ मैच बराबर रहा। इंडोनेशिया को अवश्य हम ने हरा दिया, लेकिन पांच देशों के टूर्नामेंट में इंडोनेशिया संभवतया सब से कमजोर टीम थी।

वैसे भी भारतीय टीम के चयन को ले कर इस बार जम कर राजनीति हुई। टूर्नामेंट में उतरने से एक घंटा पूर्व टीम की घोषणा की गई मुख्य विवाद कप्तान को ले कर था। फुटबाल संघ के अध्यक्ष जियाउद्दीन व तकनीकी प्रशिक्षक बाब बूटलैंड परमिंदर को कप्तान बनाना चाहते थे, लेकिन सचिव अशोक घोष तथा मुख्य प्रशिक्षक सिरीक मिलोवन की राय प्रशांत बनर्जी में थी और

जीत प्रशांत बनर्जी की हुई। बूटलैंड को हरा दिया।

20 अक्टूबर को सिगापुर इंडोनेशिया के खिलाफ मैच में बूटलैंड मिलोवा के बीच काफी तूटू मैच हुआ। मैनेजर शांता मिश्रा की तमाम मिश्रित बावजूद वह दौरे के बीच बंबई वापस आया। तो यह है कि अधिकारियों के तत्पर जिन के रहते भारतीय टीम से ओलंपिक पहुंचने की आशा की जा रही है।

धुलती आशाएं

1983 की डेविस कप क्वालीफायर प्रतियोगिता के पूर्वी क्षेत्र फाइनल में भारतीय खिलाड़ियों के प्रदर्शन से यह जाहिर हो रहा कि अंतरराष्ट्रीय टेनिस जगत में भारतीय लान टेनिस की नैया की पतवार उलटने की खिलाड़ियों के हाथों में है उस पर उलट पकड़ कमजोर होती जा रही है।

क्योंकि उपनगरीय क्षेत्र में स्थित कोलिजियम के कोर्ट पर पहले एकल हार विजय अमृतराज को जहां मेजबान जापानी हितोशी शिरातो को हराने में दो घंटे का समय लग गया, वहीं भूतपूर्व जर्नियर विजय विजेता रमेश कृष्णन त्सुयोशी फुकुई को दो घंटे से अधिक के कड़े संघर्ष के बाद पांच में हरा पाया।

उलट एकल मैचों के परिणाम एकल उलटे हो गए। त्सुयोशी फुकुई ने विजय अमृतराज को पीट दिया तथा हितोशी शिरातो ने रमेश कृष्णन को हरा कर कप्तान फैला दी। यह तो गनीमत रही कि भारतीय टीम युगल मैच जीत चुकी थी, लेकिन विजय और आनंद अमृतराज खेल जीतने दलान पर हैं, रमेश कृष्णन से जगदीश भी धीरेधीरे लुप्त होती जा रही है।

डेविस कप प्रतियोगिता में चंद दिनों बाद एक लाख 75 हजार डालर वाली ओपन ग्रैंड टेनिस टूर्नामेंट के क्वार्टर फाइनल में गोम्स (इकबाडोर) के हाथों हार कर रमेश ने देश की प्रतिष्ठा है कि वह अब भारतीय

विसंबर (प्रथम)

लन टेनिस के जनाजे को ज्यादा लंबे समय
कंधा नहीं दे सकता।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फुटबाल में नया नियम

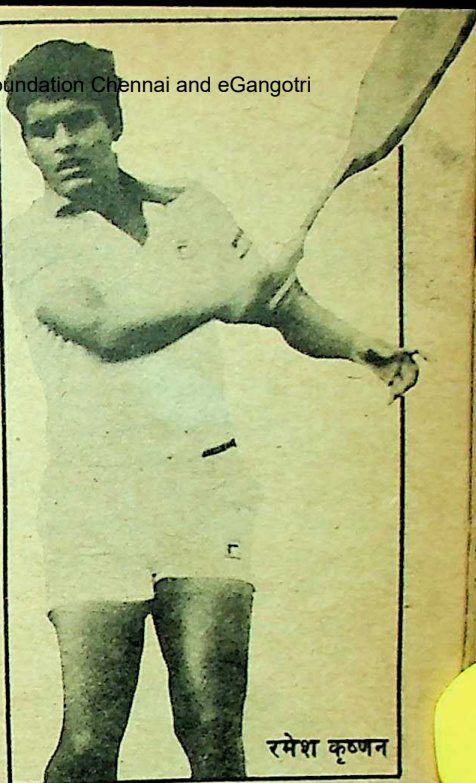
आज जब कि क्रिकेट जैसा खेल
नयातार नीरस व उबाऊ होता चला जा रहा
है, फुटबाल के खेल को और अधिक
प्रतिशील व रोमांचक बनाने के नित नए
प्रयास किए जा रहे हैं।

अखिल भारतीय फुटबाल महासंघ ने
हाल ही में भारत में फुटबाल के प्रमुख
टूर्नामेंटों के फाइनल मैचों में 'ड्रा' पद्धति को
समाप्त करने की घोषणा की है। सचिव
अशोक घोष के अनुसार नए नियमों के तहत
यदि किसी मैच में हारजीत का फैसला नहीं
होता, तो मैच ड्रा नहीं होगा, अपितु अतिरिक्त
समय दिया जाएगा। उस दौरान भी कोई
निर्णय नहीं होता तो 'टाई ब्रेकर' नियम लागू
किया जाएगा। नए नियमों को सर्वप्रथम
सीनियर नेशनल में उपयोग में लाया जाएगा
और फिर धीरे-धीरे सीनियर टूर्नामेंटों में भी
इसे लागू कर दिया जाएगा।

एथलेटिक्स की उपेक्षा

आज जब कि सारा देश क्रिकेट के रंग
में डूबा हुआ है, बहुत कम लोग जानते होंगे
कि पिछले दिनों जमशेदपुर में हुई 22वीं
राष्ट्रीय एथलेटिक्स प्रतियोगिता में भारतीय
एथलीटों ने दो एशियाई तथा पांच राष्ट्रीय
खेलों के साथ आठ रिकार्ड भंग किए। तीन
दिन की राष्ट्रीय प्रतियोगिता में 29 प्रदेशों
और संबद्ध इकाईयों के 622 एथलीटों ने भाग
लिया। मुकाबले टेलको स्टेडियम के 'सिडर
ट्रेक' पर हुए।

पी.टी. उषा, एलिजाबेथ बसंतकुमारी,
सुरतेज, बस्तावर खमोटा, अजमेरसिंह का
प्रदर्शन विशेष उल्लेखनीय रहा। हाल ही में
कैबल में संपन्न पांचवीं एशियाई एथलेटिक्स
चैंपियनशिप में भारतीय एथलीटों ने दमदार
प्रदर्शन करते हुए 13 पदक (तीन स्वर्ण पांच



रमेश कृष्णन

रंजत, पांच कांस्य) जीते। यह संख्या जापान
द्वारा जीते गए पदकों (4,7,3) से एक कम है,
लेकिन समाचारपत्रों ने क्रिकेट के समाचारों
को प्रथम पृष्ठ पर छापा।

राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर की इन
प्रतियोगिताओं के समाचारों को खेल पृष्ठ में
एक कोने में छाप कर ही उन्होंने अपने कर्तव्य
की इतिश्री समझ ली। एथलेटिक्स के प्रति इस
सौतेले व्यवहार को देख कर ही भारत के
जानेमाने एथलीट हरिचंद ने कहा है, "क्रिकेट
के मुकाबले एथलेटिक्स के प्रति जनता उतनी
उदार नहीं है। क्यों नहीं है? इस का रहस्य मैं
आज तक नहीं समझ पाया।

सारी दुनिया में कुल मिला कर छः सात
देश ही तो क्रिकेट में हिस्सा लेते हैं। उस में भी
हमारा स्तर कोई बहुत अच्छा नहीं है, लेकिन
इस पर क्रिकेट का इतना शोर है।
एथलेटिक्स, कुश्ती और बैडमिंटन जैसे खेलों
की ओर कोई ध्यान नहीं देता।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

हानिकारक भी हैं

शीर्षक पढ़ कर शायद आप चौंक जाएं, पर यह सच है कि विटामिन स्वास्थ्य के लिए कभीकभी हानिकारक भी साबित होते हैं।

विटामिनों के भीषण परिणामों से आम व्यक्ति अपरिचित ही रहता है और अनजाने में आवश्यकता से अधिक विटामिन का सेवन कर लेता है, जिस के परिणामस्वरूप उसे अनेक घातक बीमारियां आ घेरती हैं। कभीकभी तो विटामिनों का अधिक सेवन प्राणों के लिए घातक भी बन जाता है।

अकसर डाक्टर भी अपने निजी स्वार्थों

के कारण रोगियों को तरहतरह के विटामिन खाने की सलाह देते हैं जिस से स्वास्थ्य विपरीत प्रभाव पड़ता है और एक रोग

चुस्त और स्वस्थ रहने के लिए लोग बाजार, से विटामिनों के गोलिएं आदि खरीद कर खाने रहते हैं, लेकिन इस प्रकार मनमाने तरीके से विटामिनों का सेवन स्वास्थ्य के लिए किस प्रकार घातक सिद्ध होता है?



बच्चे को मोटाता जा करने के लालच
में दी गई विटामिनों की गोलियां
उसके स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाकर रोग में
फंसा सकती हैं



स्थान पर उस को अनेक बीमारियों का शिकार होना पड़ता है।

इस में कोई दो राय नहीं हैं कि विटामिन शरीर के लिए उपयोगी होते हैं, लेकिन सवाल यह है कि रोगी को दिए जाने वाले विटामिन का क्या वाकई उस के शरीर में अभाव है। अगर रोगी में उस विटामिन का अभाव होता है तो विटामिन का कोई भी विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता, लेकिन यदि उस के शरीर में उस विशेष विटामिन की आवश्यक मात्रा पहले से ही मौजूद है तो विटामिन उस के स्वास्थ्य के लिए घातक सिद्ध हो सकता है।

लेखक एक ऐसे व्यक्ति से परिचित है, जो शारीरिक रूप से काफी हृष्टपुष्ट था, लेकिन उसे न जाने यह गलतफहमी कैसे हो गई कि वह कमजोर हो गया है। उस ने डाक्टर से संपर्क किया और डाक्टर ने बिना जांचपड़ताल किए उसे कई विटामिन खाने को दे दिए। परिणाम यह हुआ कि वह अपना स्वास्थ्य ही गंवा बैठा और सांस व दमे के रोग का शिकार हो गया।

इसी प्रकार एक गर्भवती महिला को डाक्टर ने अनेक प्रकार के विटामिन खाने की

सलाह दी। नतीजा यह हुआ कि नवजात शिशु क्षय रोग से ग्रस्त हो गया और बड़ी मुश्किल से उस को बचाया जा सका।

विटामिन और बीमारियां

भिन्नभिन्न प्रकार के विटामिनों से भिन्नभिन्न प्रकार की बीमारियां उत्पन्न होती हैं।

स्वस्थ मनुष्य के शरीर में मुख्यतया 'ए', 'डी', 'बी', 'सी', और 'के' विटामिनों की एक समुचित मात्रा विद्यमान रहती है। इन में से किसी भी विटामिन का निश्चित मात्रा से अधिक पाया जाना किसी न किसी रोग को जन्म देता है।

डाक्टर अकसर लोगों को विटामिन 'ए' खाने की सलाह देते हैं। विटामिन 'ए' में अगर बहुत से रोगों को दूर करने की क्षमता है तो साथ ही इस की अधिकता से स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव भी पड़ता है। विटामिन 'ए' की अधिकता से मिचली, सिर्दरद बालों का झड़ना आदि रोग पैदा हो जाते हैं।

इस विटामिन का खासतौर से उन बच्चों के स्वास्थ्य पर काफी गहरा असर पड़ता है, जिन की माताएं उन को दिन भर में

15-20 बार सेहत लाभ के लिए यह विटामिन देती हैं। ऐसे बच्चों को प्रायः भुख न लगने की शिकायत हो जाती है। त्वचा की अनेक बीमारियां तथा गिगनीवाइटिस भी इस विटामिन की अधिकता के कारण हो जाती है।

शरीर में विटामिन 'ए' की जरूरत से ज्यादा मात्रा शरीर को जहरीला (टॉक्सिक) बना देती है। अतः स्वयं या अपने परिवार के लोगों को विटामिन 'ए' देने से पहले किसी योग्य चिकित्सक का परामर्श लेना बेहतर होगा। अगर वह कहता है कि रोगी के शरीर में विटामिन 'ए' का अभाव है, इसे तभी खाएं, अन्यथा इस के भयंकर परिणाम भी हो सकते हैं।

इसी प्रकार विटामिन 'बी' और 'सी' भी शरीर के लिए हानिकारक साबित हो सकते हैं।

अकसर लोग स्वतः ही ऐसा महसूस करते हैं कि उन के शरीर में विटामिन 'बी'। कांपलेक्स' का अभाव हो गया है और वे इस

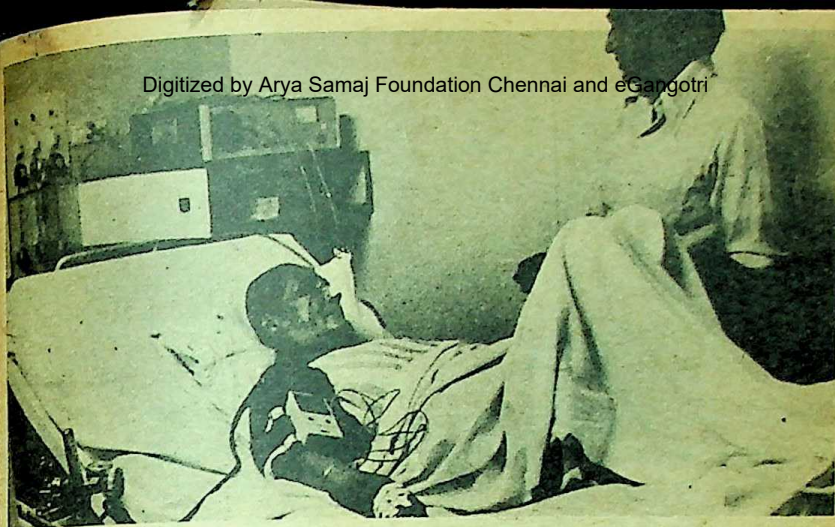
की गोलियां बिना किसी डाक्टर के मशवरे लेना शुरू कर देते हैं। शुरू में तो उन का फायदा नजर आता है, लेकिन धीरे-धीरे त्वचा असमान्य होने लगती है और जिगर संबंधी रोग होने की काफी संभावनाएं रहती हैं।

विटामिन 'बी 1' शरीर के लिए काफी उपयोगी होता है। इस की एक मिलीग्राम मात्रा ही दिन भर के लिए काफी होती है। इस विटामिन का शरीर में अभाव हो जाने से पाचन संबंधी बीमारियां तथा नींद न आने का रोग (इनसोमीनिया) हो जाता है, पर इस की अधिकता भी कम घातक नहीं होती। इस की अधिकता से हृदय गति तेज होना, निम्न रक्तचाप, कंपन आदि रोग प्रायः हो जाते हैं।

विटामिन 'बी 2' से खुजली की बीमारी होती देखी गई है। इस के अतिरिक्त इस विटामिन की अधिकता से कुछ अन्य बीमारियां भी हो जाती हैं। इसलिए इस विटामिन का सेवन तभी करें, जब आप के शरीर में वाकई इस की कमी हो।

शरीर में विटामिनों की मात्रा आवश्यकता से अधिक पहुंचने पर त्वचा संबंधी रोग भी हो जाते हैं।





बाजार में बिकने वाले विटामिन नकली भी हो सकते हैं, जिन का प्रभाव जानलेवा भी हो सकता है।

इसी प्रकार विटामिन 'वी 3' शरीर के लिए काफी उपयोगी माना जाता है, लेकिन इस की थोड़ी सी भी अधिकता शरीर में रासायनिक उथलपुथल मचा देती है और शरीर के अनेक अंगों को प्रभावित करती है। पेटिक अल्सर बहुधा इस विटामिन की आवश्यकता से अधिक मात्रा में हो जाने के कारण ही होता है।

कुछ रोग जैसे सर्दीजुकाम के लिए विटामिन 'सी' काफी उपयुक्त होता है, लेकिन शरीर में इस का प्रतिशत बढ़ जाने से गठिया जैसी भीषण बीमारी के होने की काफी संभावना रहती है, क्योंकि इस की बढ़ोतरी से शरीर में प्रोटीन की कमी होने लगती है, जिस से शरीर के जोड़ शिथिल पड़ जाते हैं और गठिया की बीमारी पनपने लगती है।

अकसर विटामिन 'सी' की अधिकता से रासायनिक प्रक्रियाओं के होने के कारण मूत्र के रास्ते में पत्थर (आकजलेट स्टोन) बन जाते हैं और मूत्र संबंधी बीमारी हो जाती है।

गर्भवती महिलाओं के लिए विटामिन 'सी' की अधिकता और भी हानिकारक है। गर्भावस्था के दौरान यदि इस विटामिन का सेवन ज्यादा किया गया है तो नवजात शिशु

में क्षय रोग तथा अन्य बीमारियां होने की काफी आशंका रहती है। इसलिए बेहतर तो यही होगा कि गर्भवती महिलाएं डाक्टर द्वारा सुझाई गई विटामिन की निश्चित मात्रा ही लें, जिस से बच्चे के स्वास्थ्य पर कोई विपरीत असर न पड़े। यदि इस विटामिन को भोज्य पदार्थों के रूप में ही ग्रहण किया जाए तो अच्छा रहेगा।

विटामिन 'सी' की अधिकता से गुर्दे में पत्थर बन जाता है, जिस से प्रायः अन्य बीमारियां भी उत्पन्न हो जाती हैं और ये बीमारियां लाइलाज होती हैं। पत्थर को निकालने के लिए शल्य चिकित्सा ही एक मात्र इलाज होता है।

बच्चों के स्वास्थ्य के लिए विटामिन 'डी' परमावश्यक होता है। बच्चों को प्रतिदिन इस की 400 आई.यू. (अंतरराष्ट्रीय इकाई) मात्रा ही देनी चाहिए। वरना इस के काफी घातक परिणाम भी हो सकते हैं।

इसी प्रकार विटामिन 'ई' भी शरीर के लिए काफी हानिकारक सिद्ध होता है। लोगों का ऐसा विश्वास है कि यह कई रोगों का जादुई निदान है, लेकिन इस कथन में कोई वैज्ञानिक सत्यता नजर नहीं आती। यह बात

केवल लोगों को गुमराह करने के लिए विटामिन निर्माण करने वाली दवा प्रकाशित की जाती हैं। इस विटामिन का सेवन करने वाला शायद ही कोई व्यक्ति ऐसा हो, जिसे यह पता हो कि इस से उच्च रक्त चाप जैसी लाइलाज बीमारी भी उत्पन्न हो जाती है।

कोई भी विटामिन अधिक मात्रा में लिया जाए तो शरीर के लिए हानिकारक साबित होगा।

नकली विटामिन

यह आप निश्चित तौर पर नहीं कह सकते कि जो विटामिन आप गोलियों के रूप में ग्रहण कर रहे हैं, वह असली ही है। आज विटामिनो में मिलावट का धंधा काफी तेजी से पनप रहा है। समाचारपत्रों में आए दिन नकली दवा बनाने वाली कंपनियों के बारे में समाचार प्रकाशित होते रहते हैं। ये कंपनियां अधिकतर बंबई और उस के आसपास काफी संख्या में हैं, जो धड़ल्ले से बिना किसी पंजीकरण और सरकारी लाइसेंस के विटामिन तथा अन्य दवाएं निर्मित करने में संलग्न हैं। ये कंपनियां विटामिनो के रूप में अनेक हानिकारक औषधियों का मिश्रण तैयार कर के और उन्हें सुंदर चमकीली पन्नीयों में रख कर बाजार में खुलेआम बेचती हैं। अब आप ही सोचिए क्या ये नकली विटामिन आप की सेहत के लिए हानिकारक नहीं होंगे।

यदि आप के शरीर में किसी भी विटामिन का अभाव है तो बेहतर यही होगा कि आप उस विटामिन को भोज्य पदार्थों के

रूप में ग्रहण करें। प्रत्येक भोज्य पदार्थ में भोज्य पदार्थ के रूप में लिए गए विटामिन स्वस्थ पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता। यह भी गारंटी रहती है कि आप जो विटामिन खा रहे हैं, वह बाजार में मिलने वाले विटामिन की तरह नकली नहीं है।

यदि आप के शरीर में डाक्टर के अनुसार विटामिन 'ए' की कमी है तो बंदगोभी, धनियां की पत्ती, मकखन, जूनी, पपीता, पालक का साग, मूली, पत्ता आदि का सेवन कर सकते हैं। इन वस्तुओं में विटामिन 'ए' की समुचित मात्रा प्राकृतिक अवस्था में रहती है।

विटामिन 'बी' दालों, दूध, मांस, अंडे, केला तथा सेब में पाया जाता है। अतः इन वस्तुओं के सेवन से विटामिन 'बी' की कमी को पूरा किया जा सकता है।

टमाटर, आलू, मूली, अन्ननाश, टमाटर तथा अनाज विटामिन 'सी' का मुख्य स्रोत है।

विटामिन 'ई' सब्जियों जैसे टमाटर और आलू में पाया जाता है। अंडे में भी विटामिन 'ई' की समुचित मात्रा रहती है।

विटामिन 'डी' का मुख्य स्रोत सूर्य का प्रकाश है। अतः सूर्य के प्रकाश में कुछ समय नियमित बैठना स्वास्थ्य के लिए काफी लाभदायक होता है।

इस के अतिरिक्त विटामिन 'डी' मछली, मछली के तेल व डब्बे के दूध में पाया जाता है। यही कारण है कि जब शरीर में विटामिनो का अभाव हो जाता है तो डाक्टर इन वस्तुओं को खाने का मशविरा देते हैं।

84 साल की उम्र में पढ़ाई

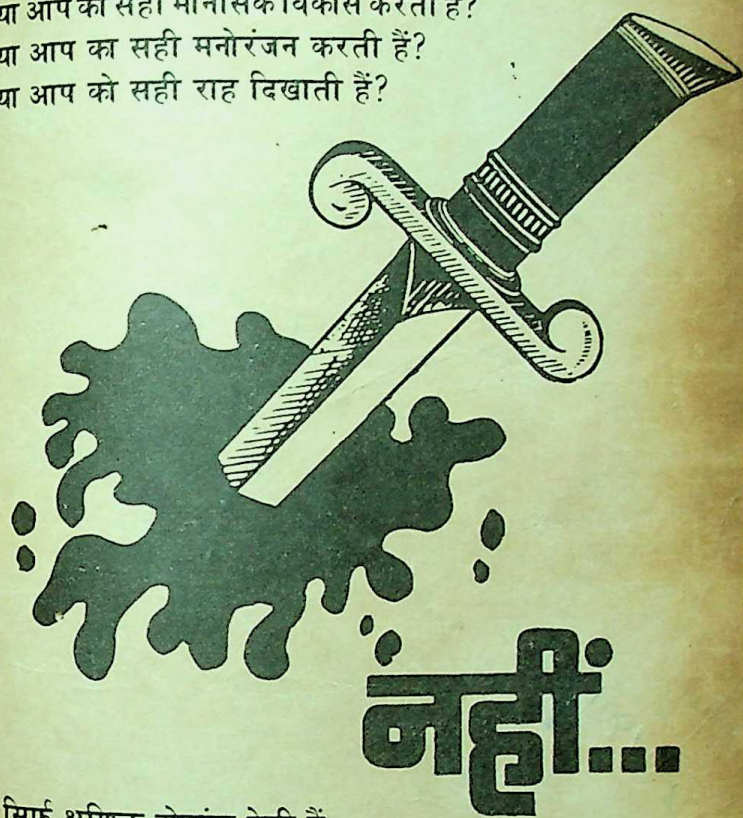
राजनीतिवाजों को छोड़ कर हमारे देश में कोई भी व्यक्ति वृद्धावस्था में किसी भी क्षेत्र में सक्रिय नहीं रह सकता, पर इंग्लैंड में समरसेट की 84 वर्षीया एक विधवा सूर्य बैनेट ने तो कमाल ही कर दिखाया। वह पिछले वर्ष तक बिलकुल पढ़नालिखना नहीं जानती थी, पर प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत उस ने पढ़नालिखना सीख लिया, हालांकि पिछले सात वर्षों से उस की आंखें बेहद कमजोर थीं। उसे कार में बैठ कर सड़क के बोर्ड और पढ़ने में बहुत आनंद आता है। खुशी होती है।

बलात्कार, हत्या, डकैती, तस्करी, जालसाजी,
वेश्यावृत्ति की कहानियां—

क्या आप का सही मानसिक विकास करती हैं?

क्या आप का सही मनोरंजन करती हैं?

क्या आप को सही राह दिखाती हैं?



वे सिर्फ क्षणिक रोमांच देती हैं...

गलत दुनिया में भटकाती हैं...

चरित्रहीनता की ओर ले जाती हैं...

सुरुचिपूर्ण, स्वस्थ मनोरंजन के लिए
प्रेरक और उद्देश्यपूर्ण साहित्य पढ़ें.

दिल्ली प्रेस की पत्रिकाएं
ज्योति नए युग की घरघर जगाएं.

जब मैं बड़ा होऊंगा न,
कॉमिक्स ही पढ़ूंगा,
और बिस्किट ही खाऊंगा...



बच्चों को भाये पारले ग्लुको
स्वाद में निराले,
शक्ति से भरपूर



पारले
ग्लुको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

भारत के सबसे ज्यादा बिकनेवाले बिस्किट



everest/82/PP/14/14

सुखता

शान्ति के
पर पर खड़ा
लिपीन
सिया लोगों
विवाह
संगठनों का
चित्य



गुरुकुल
गुरुकुल कॉलेज

बन्ने से प्राप्त दिनांक 22
3-1-84

आपके बच्चे कल क्या बनते हैं

यह इस पर निर्भर करता है
कि आप उन्हें आज पढ़ने के
लिए क्या देते हैं

आपके बच्चों के लिए
स्कूल के पश्चात सिर्फ खेलना ही काफी नहीं।
उनको दीजिए सुमन सौरभ- दिल्ली प्रेस की नई पत्रिका
जी हां, वही दिल्ली प्रेस जो पिछले 40 वर्षों से
आपके पूरे परिवार के लिए सरिता, गृहशोभा, मुक्ता,
भूभारती, चंपक, कैरेवान और वूमंसडैरा प्रकाशित
करते आ रहे हैं।

सुमन सौरभ आपके बच्चों का संतुलित विकास करने
के लिए प्रकाशित की जा रही है।

सुमन सौरभ की शिक्षा पूर्ण कहानियां व रोचक स्तंभ
आप के बच्चों को जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा देंगे।
उन का स्वस्थ मनोरंजन करने के साथसाथ उन को देश व
समाज के प्रति अपना उत्तरदायित्व निभाने के लिए तैयार
करेंगे।

हर महीने अपने बच्चों को ले कर दें

सुमन सौरभ

ताज़गी महसूस कीजिये



हिन्दुस्तान सीबा - गाबगी



सुबूत अपनी आँखों से देख लीजिए

यह आसान टेस्ट करके देखिये :



पानी से भरी तश्तरी में थोड़ा सा कोयले का चूरा छिड़किये। अब थोड़ा सा बिनाका टॉप पानी में मिला लीजिये और इस घोल की एक बूंद तश्तरी के बीचों-बीच टपकाइये। अब देखिये बिनाका टॉप कितनी तेज़ी से चारों तरफ फैलता है.... मेल को दूर करता है और पानी की सतह को बिल्कुल साफ़ कर देता है।

बिल्कुल इसी तरह बिनाका टॉप का विशेष फैलने वाला तत्व आपके मुँह के हर कोने में फैल कर दांतों में सड़न पैदा करनेवाले कीटाणुओं का नाश करता है और साँस की दुर्गन्ध को रोकता है। बिनाका टॉप आपके मुँह की पूरी रक्षा करते हुए उसे ताज़गी से भर देता है।

ARMS.HCG-2-78.HN-83-TH

बिनाका **टॉप** दूधपेस्ट -
मुँह की पूरी रक्षा के लिए

रेक्सोना आपकी त्वचा की देखभाल करता है...



इसे कोमल और उज्ज्वल रखता है

रेक्सोना, इसमें मिले हैं चार कुदरती तेल—
हापुशा, दालचीनी, लौंग, टेरिविंथ. रेक्सोना
से नहाइये—यह आपकी त्वचा को कोमल और
उज्ज्वल बनाए रखता है. इसकी मनमोहक
खुशबू आपको पहरे में महकाए. रेक्सोना—आपकी
त्वचा की कुदरती देखभाल के लिए.



रेक्सोना आपकी त्वचा के लिए गुणकारी है

लेख

कथा साहित्य

फिलिपीन	17	मनमोहन	सदमा	23	मो. मुवीन
कर्मचारियों को बोनस	21	विनोद गुप्ता	नाटक का दूसरा ...	46	चंद्रमोहन
तथ्य निर्धारित करें	30	कि.स.भटनागर	भेड़चाल	75	गायत्रीरानी
पोलो	38	महेंद्रकुमार	जबराना	116	आलोक
शराबियों के लिए...	57	दीपक			
छात्र संगठन	60	सुरेंद्र अवस्थी			
उन की हवाई कंपनी	68	विमल	हर एक नजर	35	रामचंद्र सरोज
गरासिया लोगों में...	86	सुभाष रावल	याद तो आता होगा	83	विश्वमोहन
डा. अचला नागर	99	ताराचंद	कभीकभी	94	तारादत्त
गीलिया	103	प्रशांतकुमार			
कमाल जवाब का	111	उषा मनोहर			
डा. सुब्रह्मण्यम	119	ज्योतिर्मय	संपादक के नाम	7 81	साहित्य संगम
क्रिकेट ने लोगों को...	129	मुकुंद सक्सेना	मुक्त विचार	13 84	ये लड़के...
शफरान	134	नवोदित	ये शिक्षक	36 96	बास्ताने दफ्तर
ए साल की बंधाई	144	हरीशकुमार	धूपछांव	67 109	सावधान
			शाबाश	72 122	युवागतिविधियां
					चित्रावली 139

कविताएं

स्तंभ

संपादन व प्रकाशन कार्यालय : ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा. लि. के लिए विश्वनाथ द्वारा दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली व

दिल्ली प्रेस स.प.प्रा.लि. गाजियाबाद में मुद्रित.

मुक्ता नाम रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क है. मुक्ता में प्रकाशित सभी रचनाओं के सर्वाधिकार दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा. लि. द्वारा सुरक्षित हैं. © दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा. लि. 1983

मूल्य : एक प्रति 3.25 रुपए. एक वर्ष 78.00 रुपए. विदेश में (समुद्री डाक से) एक वर्ष : 160.00 रुपए. अमेरिका में (हवाई डाक से) एक वर्ष : 325.00 रुपए.

मुख्य वितरक व वार्षिक शूल्स भेजने का स्थान : दिल्ली प्रकाशन वितरण प्रा. लि. रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. व्यक्तिगत विज्ञापन विभाग : एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001. बंबई कार्यालय : 79ए, मित्तल चैम्बर, नारीमन पॉइंट, बंबई-400021. मद्रास कार्यालय : नं. 14, पहली मंजिल, सीएस कॉम्प्लेक्स, 150 82, मांटीअथ रोड, मद्रास-600008. कलकत्ता कार्यालय : पोर्टार पॉइंट, नीमगंजी मंजिल, 113, पार्क स्ट्रीट, कलकत्ता-16. बंगलौर कार्यालय : नं. 302-बी, 'ए' बिल्डिंग-नीमगंजी मंजिल, 3, कवीस रोड, बंगलौर-560001. अहमदाबाद कार्यालय : 503, नारायण चैम्बर, समीप गेहूँ किनारे, आश्रम रोड, अहमदाबाद-380009.

मुक्ता में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और वास्तविक

घटनाओं या संस्थाओं से उन की किसी भी प्रकार की समानता केवल संयोग मात्र है.

ये सुरक्षा भरी धुलाई... सनलाइट की कोमलता से आई.



शुद्ध सनलाइट पूरी कोमलता से आपके कपड़ों को
हिफाजत-भरी धुलाई करता है...और आपके हाथों पर
भी कोई आंच नहीं आने देता. सनलाइट अपनाइए और
पाइए रंगीन कपड़ों की ख्यादा चमकदार और सफ़ेद कपड़ों
में सफ़ेदो गानदार.

**कपड़ों की देखभाल
सनलाइट का काम**

हन्दुस्तान लीवर का एक उत्कृष्ट उत्पादन.

संपादक के नाम

'रेडियो की विश्वसनीयता' (मुक्त विचार/नवंबर/द्वितीय) में आप के विचार एक व सामयिक लगे।

किसी भी आकाशवाणी केंद्र की तुलना आज विश्वसनीयता के मामले में पत्रिकाओं की साख काफी अच्छी है। कम कम भारत में तो निर्विवाद रूप से ऐसा ही आकाशवाणी केंद्र से प्रसारित प्रत्येक कार्यक्रम सत्तारूढ़ दल की छवि उभारने वाला होता है। ऐसा लगता है कि आकाशवाणी सत्तारूढ़ दल के इशारों के अनुसार ही अपने कार्यक्रम पेश करने को विवश है। इसलिए आल इंडिया रेडियो को आल इंडिरा रेडियो व दूरदर्शन देवी दर्शन कहना गलत ही होगा।

-रामफल

*

'एक और भारतीय सम्मानित' (मुक्त विचार/नवंबर/द्वितीय) में आप ने नोबेल पुरस्कार पाने वाले खुराना व चंद्रशेखर के साथ में दो भारतीय वैज्ञानिकों का जिक्र किया जो कि अब अमरीका के नागरिक हैं, लेकिन एक कड़ी में एक और भारतीय वैज्ञानिक आता जिसे नोबेल पुरस्कार विदेश में बसने के बाद मिला था। वह भारतीय हैं-सर रोनाल्ड हार्जिन्स। जिन्हें सन 1902 में मलेरिया के कारण मलेरियम की खोज पर यह पुरस्कार मिला

-आशुतोष नीमा

'संपादक के नाम' (मुक्त विचार/नवंबर/प्रथम) में व्यक्त विचारों से मैं सहमत हूं, लेकिन इस का दूसरा पहलू भी है।

घटना के समय मुख्य मंत्री की उपस्थिति एवं घटना के पश्चात उन की रहस्यमय चुप्पी क्या इस राष्ट्रविरोधी काररवाई में उन के प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप में संलग्न होने का भ्रम पैदा नहीं करती है? यह घटना जहां एक ओर राज्यों पर केंद्र की ढीली पकड़ का उदाहरण है, वहीं केंद्र के साथ राज्यों के असहयोगपूर्ण रूख की भी परिचायक है।

-रामफल भगत

*

कहानी 'दिशा' (नवंबर/द्वितीय) की नायिका अपनेआप में आज की लड़कियों के लिए एक आदर्श है। सुलभा के चरित्र का अनुसरण ही आज के बढ़ते मजनुवाद का उचित इलाज है। आशा है भविष्य में इसी प्रकार की और भी अच्छी कहानियां पढ़ने को मिलेंगी।

-आभा माहेश्वरी

*

कहानी 'दिशा' में कहानीकार द्वारा पुरुष की दुर्बलताओं का बेबाक चित्रण प्रशंसनीय है।

-रेणु सक्सेना

'संपादक के नाम' के लिए मुक्ता की रचनाओं पर आप के विचार आमंत्रित हैं। साथ ही आप देश के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि विषयों पर भी अपने विचार इस स्तंभ के माध्यम से रख सकते हैं। प्रत्येक पत्र पर लेखक का पूरा नाम व पता होना चाहिए, चाहे वह प्रकाशन के लिए न हो। पत्र इस पते पर भेजिए :

संपादक के नाम,

मुक्ता, झंडेवाला एस्टेट,

नई दिल्ली-110055.

न्यू बैंक

आपके बच्चों
की आजीवन
सहायता करता है



न्यू बैंक
के साथ बचत
शुरू कीजिए



न्यू बैंक आफ इंडिया

(भारत सरकार का उपक्रम)

प्रधान कार्यालय : १, टाल्सटाय मार्ग, नई दिल्ली-११०००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

आपके बच्चे देश के नि-
वहुत कुछ कर सकते हैं।
उनका पालन पोषण और
शिक्षा अच्छी हो। अपने
बच्चों के भविष्य का नि-
न्यू बैंक की सहायता से
करिए। हमारे पास ऐसे
योजनाएँ हैं जो उनको स-
फल जीवन के मार्ग पर
अग्रसर कर सकती हैं।
अधिक जानकारी के नि-
कृपया अपनी निकटतम
शाखा में सम्पर्क करें।

कहानी 'दिशा' में कहानीकार ने
 को उठाने के लिए राजीव को कुछ
 अधिक ही गिराया है। फिर भी उस की पहुंच
 -कृष्णा भारद्वाज

*

लेख 'हिंदी दिवस पर शोभायात्रा,
 कलानी उपयोगी' (नवंबर/प्रथम) पढ़ कर
 लगा जैसे मेरे दिल की बात कह दी हो।
 एक जगह मधुकरराव चौधरी ने यह
 बात भी कही थी कि जिस तरह स्वाधीनता के
 लिए हमारे देश के नेताओं ने समयसमय पर
 मोलन किए थे तब कहीं स्वतंत्रता मिली

मैं चौधरीजी से यह पूछना चाहता हूँ कि
 स्वतंत्रता सेनानियों ने गांवगांव जा कर लोगों
 से स्वतंत्रता की लड़ाई के लिए उत्साहित एवं
 प्रेरित किया था, परंतु चौधरीजी ने जब से
 हिंदी सेवा का बीड़ा उठाया है तब से वह
 जनन में जा कर लोगों को हिंदी के प्रति
 जागरूक बना सके हैं?

-उमाशंकर रोहिला

लेख 'अदब से बातें करिए' (नवंबर/
 प्रथम) बहुत अच्छा लगा। वस्तुतः कम ही
 व्यक्ति आजकल अदब से बातें करना जानते
 हैं। यहां तक कि शिक्षित कहे जाने वाले
 व्यक्ति भी अभद्रता से पेश आते हैं।

मुख्यतः कई डाक्टर बड़े अक्खड़
 स्वभाव के होते हैं। मरीज बड़ी उम्मीद से
 डाक्टर के पास इलाज के लिए जाता है,
 लेकिन डाक्टर के अभद्र एवं रूखे व्यवहार से
 वह दुखी हो जाता है। एक तो बीमारी से वह
 बैसे ही परेशान रहता है ऊपर से डाक्टर का
 अशिष्ट व्यवहार उसे और भी कूठत कर
 देता है।

आजकल के पढ़ेलिखे युवक तो
 रिक्शेवालों व मजदूरों आदि के साथ बड़ी
 असभ्यता से पेश आते हैं। उन से शिष्ट
 व्यवहार करना जैसे वे अपनी शान के
 खिलाफ समझते हैं, पर यह कोई नहीं
 समझता कि यदि हम दूसरों साथ भद्रतापूर्ण
 व्यवहार करेंगे तो वह भी हमारे साथ भद्रता
 से पेश आएंगे। -राकेशकुमार शर्मा

आंवले के गुण! च्यवनप्राश का इतिहास !

दोनों ही आप जानते हैं!

अब जरा देखिए, हमदर्द का
 च्यवनप्राश क्या है!

अब
 एक नए
 अवसर
 शुरू है

फिसी दवा का पुराना फारमूला होना एक बात है,
 उसे साइंटिफिक रूप देना दूसरी बात है।

हमदर्द का विश्वास है कि च्यवनप्राश की तैयारी के लिए फारमूले की
 विशेषता के साथ और भी कई बातें महत्व रखती हैं। इसी कारण
 हमदर्द में च्यवनप्राश को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए तीन बातों
 का विशेषकर ध्यान दिया जाता है:

- ० आंवलों और दमरे द्रव्यों की गहरी छानबीन जिससे कि साफ मुथरी
 और उच्च धेणी की चीजें काम में लाई जा सकें।
- ० साइंटिफिक विधि से निमार्ण।
- ० स्लीनिकल अनुसंधान।

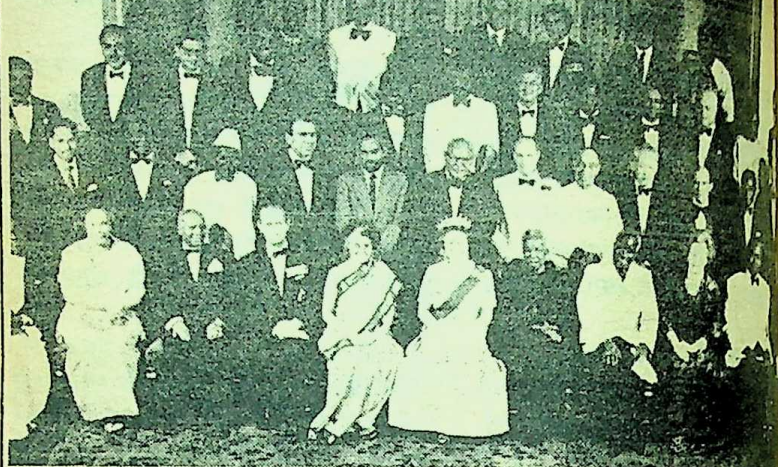
हमदर्द

च्यवनप्राश

प्रकृतिक टॉनिक।

प्रकृतिक विधि से निर्मित।





● राष्ट्रमंडल सम्मेलन: एक लालटेन के पीछे करोड़ों का जलसा.

एक साल के अंदर तीन विश्व स्तर का जलसा करवा कर श्रीमती इंदिरा गांधी विश्व में अपने नाम का ढिंढोरा पिटवाने में सफल रहीं, पर इस के बदले भारत की गरीब जनता को क्या मिला? राष्ट्रमंडल का आयोजन अपना उद्देश्य पूरा करने में कहां तक सफल रहा?

● विपक्षी एकता: क्यों असफल रही?

रेत की नींव और कागज की दीवारों के सहारे विपक्षी दल किस प्रकार 'एकता महल' बनाने का स्वप्न देख रहा है?

● राजीव गांधी का संघ: सेवा दल

बेजान सेवा दल में जान डाल कर राजीव गांधी अपने लिए ईमानदार तथा कर्तव्यनिष्ठ फौज तैयार कर रहे हैं. मगर घाघ राजनीतिबाजों की फौज क्या उन के मनसूबों को पूरा होने देंगे?

● वायुदूत: भंवर में फंसा हुआ अधूरा सपना

सरकार की तीसरे तंकर की वायु सेवा 'वायुदूत' के साथ केंद्र सरकार क्या सौतेला व्यवहार कर रही है?

● एकतन्त्रता यज्ञ में खतरे की पदचाप

हिंदू समाज के धर्मगुरुओं व राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को एक झंडे के नीचे इकट्ठा देख कर श्रीमती इंदिरा गांधी किस प्रकार भयभीत हो रही हैं.

● पंजाब: एक और सामूहिक हिंदू हत्या

खब्बे राजपूता गांव के पास चार बेकसूर हिंदुओं को उग्रवादियों ने किस प्रकार गोलियों से भून डाला. एक के बाद एक भयानक और क्रूर वारदातें कर के आतंकवादी आखिर छिपते कहां हैं?

● असंतोष की आग में जलता बनारस हिंदू विश्वविद्यालय

विश्वविद्यालय प्रशासन और छात्रसंघ की आपसी हठधर्मी हिंसा की राजनीति को बढ़ावा दे रही हैं...

● चरबी कांड: जन आंदोलन बनेगा?

विपक्ष के इस नए मुद्दे में कितना दमखम है? क्या आगामी चुनाव में इसे राजनीतिक हथियार बनाया जाएगा?

● धीरेंद्र ब्रह्मचारी: योगी या भोगी

धीरेंद्र ब्रह्मचारी को एक के बाद एक शिकस्त दे कर उन की साख को मिट्टी में मिलाने के पीछे किस का हाथ है?

इन के अतिरिक्त अन्य कई लेख तथा सभी स्थायी स्तंभ. राजनीतिक उथलपुथल पर पैनी नजर रखने वाली पत्रिका.

भूभारती

दिसंबर (द्वितीय), 1983

राजनीतिक, सामाजिक व धार्मिक घटनाओं की सीधे घटनास्थल से खोजपूर्ण जानकारी.

भूभारती पाढ़िए, जागरूक व जिम्मेदार नागरिक बनिऐ.

हमारे साथ समय भी पंख लगा कर उड़ता है



आइए, आपको युग युगान्तरों की सैर करावें।

देश भर में स्थित प्राचीन मन्दिर तथा भव्य स्मारक, दर्शनीय स्थल, जल क्रीड़ा केन्द्र, योगाश्रम और ऊंची अट्टालिकाओं के आधुनिक नगर। हम वास्तव में कुछ ही क्षणों में आपका परिचय कई युगों से कराते हैं।

आज की बदलती दुनिया में, अब भी भारत में ऐसे स्थल हैं जो अपनी मौलिकता बनाए हुये हैं। जहाँ आज भी प्रकृति अपने अपूर्व सौन्दर्य को सजाए विचरण करती है।

आइए, आप भी समय के साथ पंख लगा कर उड़िए।

इंडियन एयरलाइन्स
Indian Airlines

हिंदू समाज
के
पथभ्रष्टक
तुलसीदास

हिंदू समाज के पथभ्रष्टक तुलसीदास

संत कवियों की प्रशंसा की परंपरा चली तो आलोचकों ने तुलसी को हिंदी साहित्य का सूर्य घोषित कर दिया। प्रशंसा की चक्रचौंध में किसी ने यह सोचने की चेष्टा नहीं की कि तुलसी वास्तव में हिंदू समाज के पथप्रदर्शक थे या पथभ्रष्टक?

तुलसी की वास्तविकता पाठकों के सामने ला कर रखना ही इस पुस्तक

का उद्देश्य है। इस से पाठकों को तुलसी साहित्य के बारे में एक नई दृष्टि से सोचने की प्रेरणा मिलेगी।

मूल्य रु. 4, डाक खर्च रु. 2.
पुस्तकालयों, विद्यार्थियों व अध्यापकों के लिए 50% की विशेष छूट.
मनीआर्डर द्वारा 3 रुपए भेजिए
वी.पी.पी. से भेजना संभव नहीं है।

दिल्ली बुक कंपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri, Varanasi, India. दिल्ली-1.

दिसंबर (द्वितीय) 1983



सुवर्ण विचार

'विश्व नेता' का चुनावी नारा

श्रीमती इंदिरा गांधी का नया तमाशा—राष्ट्रमंडल के सदस्य देशों के राष्ट्राध्यक्षों का सम्मेलन—उन की विश्व नेता बनने की कोशिश का ही एक अंग था. 1980 में पुनः सत्ता में आने के बाद से उन्हें लगातार यह लग रहा है कि वह देश में लोकप्रिय बने रहने लायक काम नहीं कर पा रही हैं. देश की समस्याएँ इतनी जटिल होती जा रही हैं कि सिर्फ लीपापोती का तरीका अपनाने से उन्हें हल नहीं किया जा सकता.

कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, जम्मू व कश्मीर के चुनावों में उन के दल की हार ने उन्हें और चिंतित कर दिया है. समाजवादी नारे से अब कोई प्रभावित नहीं होता. सत्ता में आने के बाद उन्होंने कुछ बैंकों का सरकारीकरण किया था, पर किसी ने तालियाँ नहीं बजाईं.

बंबई के अधिवेशन से एक दिन पहले उन्होंने बंबई की कुछ कपड़ा मिलों को भी सरकारी नौकरशाही के सुपुर्द कर दिया, जिन में लंबे समय से हड़ताल चली आ रही थी, पर फिर भी उन के घर पर पैसा ले कर ढोल पीटने वाले जमा नहीं हुए.

उलटे सारा देश उन्हें पंजाब और असम की समस्याओं को सुलझा न पाने के लिए दोष दे रहा है. महंगाई का रोना तो अब पुराना हो गया है, अब तो लटमार और कत्ल के बढ़ते मामलों से जनता में भय की भावना भी पैदा हो गई है.

उन का अपना दल उन्हें कोई खा सहयोग नहीं दे रहा है. अधिकतर कांग्रेस इंदिराजी के साथ इसलिए नहीं हैं कि वह कुशल प्रशासक और योग्य नेता हैं, बल्कि इसलिए हैं कि वह सत्ता में हैं. इसलिए इंदिरा कांग्रेसी सत्ता सुख भोगने के लिए ही लगाता एकदूसरे की टांग खींचने में लगे रहते हैं और इंदिराजी चाह कर भी कुछ नहीं कर पाती.

ऐसी हालत में अगले चुनावों को जीत के लिए उन के पास विश्व नेता का खिताब ओढ़ कर चुनाव लड़ने के अलावा अब और कोई चारा नहीं रहा है. अब अगले चुनावों में यही कहा जाएगा कि इंदिराजी का लोहा संसार के बड़ेबड़े नेता तक मानते हैं. वह भारत की नहीं विश्व की नेता हैं. सारा संसार उन की आवभगत करता है. अतः भारतीयों उन्हें वोट दो ताकि वह भारत की नेता बनी रहें वरना विश्व नेतृत्व का वह होगा?

अब यदि भारतवासियों को अपने देश का नाम विश्व के मामलों में देखना है तो उन इंदिराजी को फिर प्रधान मंत्री चुनना होगा.

बंगला देश व ग्रेनाडा का अंत

वैसे श्रीमती इंदिरा गांधी गुटनिरपेक्ष का चाहे जितना भी ढिंढोरा पीटती रहें, वह गुट की हर गलती की सफाई देना और अमरीकी गुट के हर काम की आलोचना करना वह न केवल अपना कर्तव्य

अधिकार समझती हैं, बल्कि इसे पूरी तरह से नैतिक भी मानती हैं।

इसी लिए राष्ट्रमंडल देशों की बैठक में अपने ऊपर बहुत काबू रखने पर भी वह अमरीका को ग्रेनाडा पर हमले के लिए दोषी ठहराने से नहीं चूकीं। उन्हें शायद आशा थी कि जिस तरह अमरीका को गालियां देने पर आक्रान्त गुटनिरपेक्ष देश तालियां बजाते हैं, वैसा ही यहां भी होगा, लेकिन हुआ उलटा गे। और कहीं के नहीं, ग्रेनाडा के ही छः डोसी द्वीपों के राष्ट्राध्यक्षों व प्रधान मंत्रियों ने इस आलोचना को गलत बताया और अमरीकी हस्तक्षेप को उचित ठहराया।

असली तिलमिलाहट तब हुई जब एक आसनाध्यक्ष ने कहा कि अमरीका को गालियां देने वाले यह न भूलें कि भारत ने वयं 1971 में पूर्वी पाकिस्तान पर हमला कर न केवल वहां की सत्ता ही पलट दी थी, बल्कि पाकिस्तान के टुकड़े भी कर दिए थे। उसी तरह अमरीकी कदम की आलोचना करने वाले तंजानिया ने भी यूगांडा पर हमला करने के ईदी अमीन की सरकार का तख्ता लटा था।

श्रीमती इंदिरा गांधी इस आरोप के त्तर में ग्रेनाडा को यूगांडा व बंगला देश से लग सिद्ध करने का असफल प्रयास करती हैं।

बाद में जब एक संवाददाता ने श्रीमती इंदिरा गांधी से पूछा कि अगर ग्रेनाडा में अमरीकी फौजों का होना गलत है तो लेबनान सीरियाई फौजों के बारे में उन का क्या चार है तो उन्हें फिर उत्तर देते हुए ठेनाई हुई। सीरियाई फौजें रूसी समर्थन से बनान में हैं, अतः वह भला उसे कैसे बुरा कह सकती थीं?

भारत की विदेश नीति की कमजोरी का सबसे बड़ा कारण ही यह है कि हम कभी कुछ करते हैं तो कभी कुछ। कहने को गुटनिरपेक्ष होने का दावा करते हैं, पर हैं वास्तव में रूसी झूठ। इसी लिए हमारी बातों का या तो नाक उड़ाया जाता है या उन की अवहेलना जाती है।

मकानों में रहते हैं, वे दूसरों पर पत्थर नहीं मारते। हमारे नीति निर्धारकों को इस कहावत का मतलब शायद अब तक भी मालूम नहीं हुआ है।

यह है खेल देखने की कला!

हमारे देश में खेलों में परिपक्वता आ गई है। दिल्ली में डी.सी.एम. फुटबाल प्रतियोगिता के दौरान बंगाल की दो टीमों के बीच फाइनल मैच के अवसर पर भारी दंगे हुए, आंसू गैस छोड़ी गई और गोलियां चलाई गईं। एक व्यक्ति मरा, कितने ही घायल हुए और लाखों का नुकसान हुआ।

यह खेद की बात थी कि ऐसी घटना इतने दिनों बाद हुई। खेल की भावना का तो मतलब ही यह है कि यदि आप मैदान में न हों तो भी उसी तरह किक लगाएं, उसी तरह अड़ंगा लगाएं और विरोधी को गिरा दें।

टिकट ले कर चुपचाप बेंच पर बैठ कर खेल देखना कमजोरों का काम है। अपनी टीम को हारता देखते हुए कुछ न करना क्षयरता है, देशद्रोह है... माफ कीजिए, टीम द्रोह है, खेलों का अपमान है।

खेल देखने जाने का अर्थ ही यह है कि आप मैदान में स्वयं न उतर पाने की भड़ास को किसी भी तरह निकालें। फुटबाल प्रेमियों के लिए तो यह अपमान और शरम की बात है कि वे दर्शक दीर्घा में समानांतर फुटबाल न खेलें।

इंग्लैंड, ब्राजिल, पेरू आदि देशों में तो यह आम परंपरा है। वहां हर मैच के दौरान दसबीस के सिर तो फुटते ही हैं। खिलाड़ी मैदान में बाद में उतरते हैं, लोहे के टोप पहने पुलिस वाले पहले आ जाते हैं और साथ में एंबुलेंस व डाक्टर भी होते हैं। वहां तो परिपक्वता ऐसी है कि प्रेस फोटोग्राफर गोल होते हुए फोटो खींचें न खींचें, सिर फूटने के फोटो जरूर खींचते हैं, वरना संपादक उन्हें शायद नौकरी से ही निकाल दें।

दूर की बात छोड़िए, पश्चिमी बंगाल

में यह परिपक्वता काफी दिनों से है, मैच के बाद दंगा होना वहाँ मैच की सफलता का अंग माना जाता है और फिर भी हर मैच में दर्शक खचाखच भरे होते हैं।

दिल्ली के लोग तो खैर हैं ही दब्बू और जाहिल। अब बंगाली खिलाड़ियों के समर्थकों ने उन्हें मैच देखने का प्रशिक्षण देना शुरू कर दिया है। आशा की जानी चाहिए कि डूरंड प्रतियोगिता में सिरफोड कार्यक्रम शुरू से नहीं तो क्वार्टर फाइनल से तो अवश्य शुरू हो जाएगा। वरना लोग यही कहेंगे कि दिल्ली के लोग दब्बू और जाहिल ही नहीं, बेदिमाग भी हैं। उन्हें कुछ सिखाओ तो सीखते ही नहीं हैं।

उपचुनाव कौन जीतेगा?

23 दिसंबर को कई राज्यों में लोक सभा व विधान सभाओं के रिक्त स्थानों के लिए होने वाले उपचुनावों में विपक्षी दलों में फिर आपस में मतों के कटने की आशंका है जिस से इंदिरा कांग्रेस के उम्मीदवारों को लाभ पहुंच सकता है। काफी कोशिशों के बावजूद लोक दल-भारतीय जनता पार्टी का राष्ट्रीय लोकतांत्रिक गठबंधन व जनता पार्टी के नेतृत्व वाला संयुक्त मोर्चा उम्मीदवारों पर सहमत नहीं हो सका।

यदि ये दोनों मोर्चे तालमेल बैठ लेते तो ये चुनाव इंदिरा कांग्रेस को काफी महंगे पड़ सकते थे और आम जनता को भी यह बताने का अवसर मिल जाता कि वह वास्तव में किस की तरफ है।

फिर भी अब जो कुछ हो रहा है, उसे बहुत गलत नहीं कहा जा सकता। इन आठदस स्थानों पर यदि आज कोई सहमति हो भी जाती तो अगले आम चुनावों तक वह विवाद में पलट जाती। दोनों ही पक्ष अपनी जीतों का ढिंढोरा और हारों के लिए दूसरे पक्ष के असहयोग को दोषी ठहराते।

अब यदि दोनों पक्ष हार भी जाएं तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि दोनों कितने पानी में हैं। ऐसी हालत में अगले आम चुनावों से दोनों ही डरेंगे और अखिल भारतीय स्तर पर कुछ न

कुछ तालमेल अवश्य कर लेंगे। तब दोनों पक्ष अपने-अपने प्रभाव की लंबीचौड़ी डींगें न हाकेंगे।

बंदूक कमजोर है

दुनिया में ऐसे लोगों की कमी नहीं है जो सोचते हैं कि राज केवल बंदूक के बल पर किया जा सकता है। वे लोग बंदूक के बल पर तख्ता पलटने की वकालत करते हैं और पिछले बंदूक के बल पर ही तख्ता पर जमे रहना चाहते हैं।

वास्तव में बंदूक की उपयोगिता बहुत भ्रामक है। बंदूक को इस्तेमाल करने वाले बुद्धि का इस्तेमाल करना बंद कर देता है। वरना दूसरों की सुनना बंद कर देता है। हर विरोध का जवाब वह बंदूक से ही देना चाहता है। चाहे वह विरोध ठीक ही क्यों न हो।

एक बड़ी बात यह है कि जिसे बंदूक प्रारंभिक सफलता मिल जाती है वह यह भूल जाता है कि दूसरा कोशिश करे तो उस से बड़ी बंदूक ला सकता है, पर वह तो अपमान बंदूक के नशे में ही मदहोश हो जाता है।

और सब से बड़ी बात यह है कि बंदूक न तो प्रबंध करना सिखाती है, न उत्पादन करना। इस से सत्ता तो हाथ में आ जाती पर उस का प्रबंध करना कहाँ से आए? इसके लिए तो ज्ञान चाहिए, अनुभव चाहिए। प्रबंध कार्यों में कुशलता चाहिए, नए विचार चाहिए और आपसी विचारविमर्श का लोभ उठाने की योग्यता चाहिए। बंदूक वाला सब कहाँ से लाए?

यही कारण है कि आज जितने देशों बंदूक के सहारे राज हो रहा है, वे अनिश्चितता हैं। बंदूक वाला शासक समय डरा रहता है कि न जाने कब सैन्य विद्रोह हो जाए। इस के विपरीत जनता के देशों में राष्ट्राध्यक्ष आराम से रहते हैं। उन्हें मालूम है जब तक जनसमर्थन उन के साथ रहे, उन्हें कोई डर नहीं।

फिरलौरी मोर्चे के नेता या अराफात का हाल का पतन बंदूक

जबरदस्त प्रदर्शन कर रहा है। मारकोस इस जन असंतोष को राष्ट्रपति रैनन की यात्रा की चकाचौंध में डूबो देना चाहते थे।

फिलिपीन की जनसंख्या करीब साढ़े चार करोड़ है और यह एशिया का एक ऐसा देश है जहां की राजधानी मनीला के हवाईअड्डे पर उतरते ही वहां की सुंदरियां मुसकान बिखेर कर और गले में फूलमाला डाल कर हर आने वाले मेहमान का स्वागत करती हैं। यहां आने वाला पर्यटक उतरते ही महसूस करने लगता है कि यहां की मूल पंथ्यता संस्कृति का सिर्फ नामोनिशान ही बाकी है।

पश्चिमी सभ्यता और संस्कृति की छाप यहां पर हर जगह दिखाई देती है। सड़कों पर विदेशी कारों की लंबी कतारें, शानदार हैशनेबल होटलों, डांस क्लबों, डिस्को क्लबों और रोशनी में जगमगाती यहां की रातों का नशा पर्यटकों पर छाने लगता है। फंगरेजी यहां सभी जगह बोली जाती है, जब कि यहां की भाषा फिलिपीनो है। मनीला में पर्यटक की निगाह पैसिग नदी के उत्तरी किनारे पर बने राष्ट्रपति निवास और आंस्कृतिक केंद्र पर पड़े बिना नहीं रह सकती।

1521 में इस देश की खोज मैगेलन ने की थी। बाद में इस पर स्पेन ने अधिकार कर लिया। एशिया के दक्षिणपूर्वी तट से 800 किलोमीटर दूर प्रशांत महासागर में स्थित लगभग 7,100 द्वीपों के इस समूह पर स्पेन और अमरीका के बीच हुए युद्ध की समाप्ति के बाद 1898 में स्पेन ने इसे अमरीका को सौंप दिया।

द्वितीय महायुद्ध के दौरान इस पर जापान ने अधिकार कर लिया, लेकिन अक्टूबर 1945 में यह फिर अमरीका के अधिकार में आ गया। 4 जुलाई, 1946 को अमरीका ने इसे आजाद कर दिया और इस के बाद यहां गणतंत्र की स्थापना कर दी गई।

1965 तक लिबरल पार्टी के नेल सोडाजे मैकापगल इस देश के राष्ट्रपति रहे, लेकिन नवंबर 1965 के चुनावों में रानलिस्ट पार्टी के नेता मारकोस राष्ट्रपति

बने और उस के शासन में देश ने पर्याप्त प्रगति की। 1969 में वह पुनः राष्ट्रपति चुने गए, लेकिन इस के बाद देश में अशांति की स्थिति उत्पन्न हो गई, जो अभी तक जारी है। सितंबर 1972 में राष्ट्रपति मारकोस ने मार्शल ला लागू कर दिया, संसद भंग कर दी और मुख्य विपक्षी नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। 1973 में देश में एक नया संविधान लागू कर के संसदीय शासन प्रणाली कायम की गई, जिस में मारकोस राष्ट्रपति और प्रधान मंत्री दोनों बन गए।

1974 में राष्ट्रपति मारकोस ने आतंकवादियों को क्षमादान देने की घोषणा की। 1973-74 में सरकारी सेनाओं ने दक्षिणी भिडोनाओं में जिन मुसलिम पृथक्तावादियों के विरुद्ध कार्रवाई की थी, उन्हें 1975 में स्वायत्त शासन प्रदान करने की घोषणा कर दी गई।

मारकोस की राजनीति

इस के बाद हुए विभिन्न जनमत संग्रहों में राष्ट्रपति को पर्याप्त समर्थन मिलता रहा और वह लगातार राष्ट्रपति बने रहे, 7 अप्रैल, 1980 को अंतरिम संसद के चुनाव हुए जिन में मारकोस की नेतृत्व वाली पार्टी को भारी बहुमत मिला और 12 जून को उन्होंने पहले तो प्रधान मंत्री का भी पद संभाल लिया, पर बाद में प्रधान मंत्री पद पर अपने वित्त मंत्री विराट को नियुक्त कर दिया।

फिलिपीन की पिछले एक वर्ष के दौरान राजनीतिक क्षेत्रों में काफी चर्चा रही है। यहां हाल में हुआ मनीला फिल्म समारोह बड़ा ही चर्चित रहा है। राष्ट्रपति की पत्नी इमीला मारकोस ने स्वयं ही फिल्म समारोह में प्रदर्शित की जाने वाली फिल्मों का चुनाव किया था। जिस समय फिल्में मनीला तथा देश ने अन्य सिनेमाघरों में प्रदर्शित हुईं, उस समय कई किलोमीटर लंबी लाइनें लग गईं। सभी फिल्में सेक्स और नरनता से भरपूर थीं। यहां के चर्च ने राष्ट्रपति मारकोस की शिकायत की, जिससे राष्ट्रपति ने चुपचाप स्वीकार कर लिया।

मारकोस की पत्नी पिछले कुछ वर्षों से तेजी से उमर रही हैं। राजनीतिक प्रेक्षकों का तो यहां तक कहना है फिलिपीन में राष्ट्रपति मारकोस का शासन नहीं है, बल्कि उन की सुंदर पत्नी इमीला का शासन है। हाल के कुछ महीनों तक आम लोगों में यह चर्चा रही है कि इमीला फिलिपीन की भावी राष्ट्रपति हैं। फिलिपीन की राजनीति में आज भी इमीला का हुकम ही चलता है।

यहां की राजनीति में दूसरा सब से शक्तिशाली प्रतिपक्ष का नेता बेनिनो एकीनो रहा है। राष्ट्रपति मारकोस के मुकाबले एकीनो भी जनता में बहुत लोकप्रिय थे। सितंबर 1972 में राष्ट्रपति मारकोस ने फिलिपीन में फौजी शासन लागू कर के अखबारों का मुंह बंद करने के साथ प्रतिपक्ष के नेता एकीनो का फिलिपीन में जीना मुश्किल कर दिया था। पूरे सात साल तक एकीनो फिलिपीन की जेलों में बंद रहे। कुछ वर्षों पूर्व उन्हें दिल के आपरेशन के लिए अमरीका जाने की इजाजत दी गई। लंबे अरसे के बाद 21 अगस्त को जब एकीनो स्वदेश लौटे तब उन्हें मैनीला हवाई अड्डे पर जहाज की साढ़ियों पर ही गोली मार दी गई। यहां के राजनीतिक हलकों में यह आम चर्चा है कि संभवतया 1987 में होने वाले आमचुनावों में राष्ट्रपति पद के प्रबल दावेदार एकीनो के जीतने की संभावना को ध्यान में रख कर ही उन्हें मरवाया गया है। यहां की राजनीतिक पार्टियां राष्ट्रपति मारकोस पर एकीनो की हत्या करवाने का आरोप लगा रही हैं।

फिलिपीन के राजनेता अमरीका को अपना सब से बड़ा सुरक्षा प्रदान करने वाला देश मानते हैं। अमरीकी खैराती धन पर चलने वाला फिलिपीन बाहर से आनेवाले पर्यटकों और सैलानियों को शायद एशिया का विकासशील और उदार देश लगे, लेकिन हकीकत यह है कि इस सारी चकाचौंध के पीछे अमरीकी डालर की मेहरबानी है। फिलिपीन के सभी आर्थिक और राजनीतिक संबंध अमरीका से जुड़े हुए हैं। फिलिपीन में

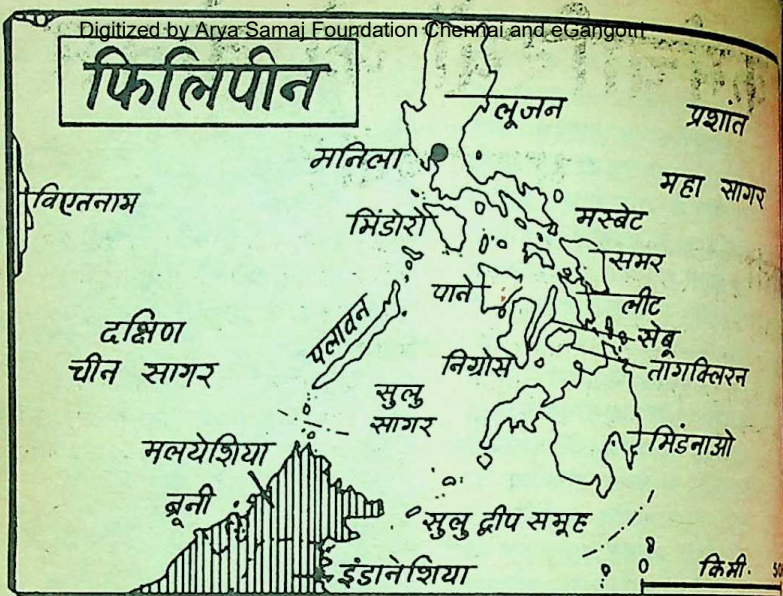


इमीला मारकोस : क्या भविष्य में फिलिपीन की सत्ता संभालेगी?

अमरीका के दो फौजी अड्डे प्रशांत क्षेत्र में अमरीका की रक्षार्पित के मुख्य केंद्र बने हुए हैं। ये दो अड्डे हैं—क्लार्क और सुबिक। इन दोनों अड्डों को फिलिपीन ने 90 करोड़ डालर के किराए पर अमरीका को दे रखे हैं। अमरीका के लिए ये अड्डे इसलिए महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि वह यहां से 'एसियान' देशों की राजनीति में अपना दबदबा बनाए रख सकता है और रूस की विएतनाम में बढ़ती घुसपैठ को रोक सकता है।

फिलिपीन के क्लार्क अड्डे पर इस समय अमरीका के कई सौ एफ-4 लड़ाकू विमान हैं, जो किसी भी समय दक्षिणपूर्वी एशिया में किसी भी स्थल पर हमला करने में सक्षम हैं। क्लार्क से कुछ दूरी पर ही क्राउन घाटी है, जो इन दिनों एक प्रकार से आस्ट्रेलिया, जापान, दक्षिण कोरिया, फ्रांस, ब्रिटेन, सिंगापुर और वाइलैंड के लिए सुविधाजनक हवाई स्थल बना हुआ है।

फिलिपीन



सुबिक खाड़ी के अड्डे पर अमरीकी हवाई जहाजों की मरम्मत की जाती है और उन में पेट्रोल भरा जाता है। इस अड्डे के नजदीक ही क्यूबिक पाइंट अमरीका के सातवें बेड़े का मुख्य केंद्र है। एक प्रकार से सुबिक अड्डा अमरीकी जहाजों के लिए हिंद महासागर, फारस की खाड़ी तथा चीन सागर में जाने के लिए सब से बड़ा आश्रय स्थल है। फिलिपीन और अमरीका के मैत्री संबंधों में फिलिपीन के ये अड्डे ही दोनों के बीच के सेतु बने हुए हैं।

अमरीकी राष्ट्रपति रेगन की प्रस्तावित फिलिपीन यात्रा में इन अड्डों के खिलाफ भी जनता में पिछले कुछ वर्षों से गहरा असंतोष है। इन अड्डों के कारण ही अब आसपास के क्षेत्रों में नशीले पदार्थों की भारी मात्रा में आने, वेश्यावृत्ति के पनपने और अवैध बच्चों की संख्या बढ़ने से लोग आशंकित हैं। फिलिपीन जनता में यह धारणा अब जोर पकड़ती जा रही है कि अगर रूस और अमरीका में युद्ध हुआ तो फिलिपीन रूस के हमले का मुख्य केंद्र बनेगा।

फिलिपीन की विदेश नीति में अमरीका के साथ फिलिपीन के मैत्री संबंधों को मजबूत करने पर विशेष जोर दिया जाता है। यही कारण है कि फिलिपीन के राष्ट्रपति मारकोस

एशिया में अमरीकी राजनीति के सब से प्रशंसक और एशिया में अमरीकी हितों संरक्षक बनने का दावा करते हैं।

मारकोस अपनी विदेश नीति में अमरीकी समर्थक और उदार हैं, उनके घरेलू नीति में तानाशाह हैं, वह कम्युनिस्टों और कम्युनिस्टों से बेहद घृणा करते हैं, उन देश में पनपते आंदोलनों को कम्युनिस्टों घुसपैठ तथा षड्यंत्र का आरोप लगा निर्दयतापूर्वक कुचल रहे हैं।

फिलिपीन में शायद ही ऐसा कोई गुजरता हो जब जनता और पुलिस की मार में दोचार व्यक्ति न मरते हों। इस समय सरकार विरोधी तीन गुट मुसलिम विद्रोही, न्यू पीपल आर्मी तथा मोरो राष्ट्रीय उदार फ्रंट के सक्रिय हैं।

फिलिपीन में अखबारों पर आज भी सेंसरशिप है और कई सौ पत्रकार जेल में हैं। सन 1972 से फिलिपीन में मार्शल ला था। सन 1981 में इस में कुछ ढील दी गई और कुछ अरसा पूर्व ही सरकार ने इसे खत्म लिया है।

राष्ट्रपति मारकोस ने हाल में यह घोषणा की है कि नेशनल एसेंबली के चुनाव निष्पक्ष करवाए जाएंगे।

कर्मचारियों को बोनस

मगर क्यों?

सस्ती लोकप्रियता हासिल करने के लिए केंद्रीय सरकार ने अपने सभी कर्मचारियों को 15 दिन के वेतन के बराबर 1983-84 का तदर्थ बोनस देने की घोषणा की। बालू वर्ष में इस तदर्थ बोनस के भुगतान पर सरकार को 44 करोड़ रुपए का अतिरिक्त आर्थिक भार उठाना पड़ेगा।

लेकिन इतनी बड़ी धनराशि आएगी कहाँ से? जाहिर है इस की पूर्ति जनसाधारण पर अतिरिक्त करों का भार डाल कर ही की जाएगी।

केंद्र सरकार के इस निर्णय का सभी श्रम संघों द्वारा स्वागत किया गया है, क्योंकि यह श्रम संघ एक लंबे अमें से सभी कर्मचारियों



लेख • विनोद गुप्ता

बिना उत्पादकता बढ़ाए बोनस की मांग करना कहाँ तक जायज है? कर्मचारियों को यह रवैया क्या उचित है?



को बोनस दिए जाने की मांग कर रहे थे और आंदोलन की धमकी दे रहे थे. लगता है सरकार इन कर्मचारी संघों के आगे झुक गई है, यानी व्यापक राष्ट्रीय हित को ताक में रख कर उस ने कर्मचारी संघों की बात मान ली है.

केंद्रीय सरकार के कर्मचारियों की कुल संख्या 32 लाख हैं. तदर्थ बोनस और उत्पादकता से जुड़े बोनस योजना के अधीन 82 प्रतिशत कर्मचारी आ जाते हैं. दीपावली के इस तोहफे को बाद में सभी कर्मचारी के लिए पृथक फार्मूला तय कर के लागू किया जाएगा. तब तक उत्पादकता से जुड़ी हुई बोनस योजना के तहत कुछ ही वर्गों के कर्मचारी बोनस पाते थे, अब सब पाएंगे.

सरकारी ढांचा

सरकार ने बोनस की घोषणा करते समय आशा व्यक्त की है कि कर्मचारी लगन से काम कर के राष्ट्रीय लक्ष्यों को प्राप्त करने में पूरा योगदान देंगे. पर प्रश्न तो यह है कि जहां बोनस व्यवस्था पहले से थी, वहां के कर्मचारियों ने कितनी लगन से काम किया और राष्ट्रीय लक्ष्य को कहां तक प्राप्त किया? जाहिर है परिणाम निराशाजनक ही है.

जहां तक बोनस का संबंध है, बोनस कुल लाभ का वह अंश होना चाहिए जो निर्धारित लक्ष्य से अधिक उत्पादन करने पर दिया जाए. वेतन और बोनस में मूल अंतर यही है. वेतन तो लक्ष्य पूरा हो या न हो, मिलता ही है, लेकिन बोनस को उत्पादकता से जोड़ना बहुत आवश्यक है.

यदि श्रमिक अपनी उत्पादकता बढ़ा कर अधिक परिश्रम और लगन से निर्धारित लक्ष्य से अधिक उत्पादन करते हैं तो निर्धारित लक्ष्य से अधिक हुए उत्पादन के लाभ में से उन्हें एक हिस्सा दिया जा सकता है, किंतु हमारे यहां तो निर्धारित लक्ष्य को ही प्राप्त नहीं किया जाता है, लक्ष्य से अधिक उत्पादन करने की बात तो दूर रही. तो फिर बोनस किस लिए?

बोनस केवल उन्हीं क्षेत्रों में मिलना चाहिए जहां किसी न किसी प्रकार का

उत्पादन हो रहा हो. अर्जित कर रही हो. जहां उत्पादन वहां बोनस क्यों मिलना चाहिए? अध्यापकों और अन्य सेवाओं में उत्पादन से कोई ताल्लुक नहीं है, बोनस मिलना चाहिए?

केंद्र सरकार के अधिकांश उद्योग प्रतिष्ठान घाटे में चल रहे हैं. अब चलने वाले प्रतिष्ठानों के कर्मचारियों बोनस देना क्या उन की अकर्मण्य पुरस्कृत करना नहीं है? न्यूनतम बोनस प्रतिशत तो कर्मचारियों को मिलता है. मध्य प्रदेश के भारतीय मजदूर संघ न्यूनतम अनिवार्य बोनस की दर 8.33% कर 12.5 प्रतिशत करने की मांग कर रहा है. दूसरी तरफ कर्मचारियों बोनस भी दिया जाए, क्या इस से कुल उत्पादन और वृद्धि नहीं हो जाएगी? क्या आगे कर उद्योग के लिए बंद होने का खतरा नहीं हो जाएगा?

सभी केंद्रीय कर्मचारियों को बोनस के निर्णय से देश के प्रत्येक राज्य के कर्मचारियों ने भी बोनस देने की मांग शुरू कर दी है. प्रत्येक राज्य में लाखों संख्या में कर्मचारी कार्यरत हैं. यदि राज्यों के कुल सरकारी कर्मचारियों की गिनती की जाए तो वह एक करोड़ से अधिक होंगे. केंद्र ने अपने कर्मचारियों बोनस दे कर अन्य राज्यों के सामने समस्या उत्पन्न कर दी है. यदि सभी राज्य अपने समस्त कर्मचारियों को बोनस दें तो स्थिति बड़ी ही विकट हो जाएगी.

सभी कर्मचारियों को बोनस देने का अर्थ है कामचोरों को पुरस्कृत करना, बहुत से कर्मचारी अपने कर्तव्य का पालन से निर्वाह नहीं करते, फिर भी उन्हें बोनस मिलेगा ही.

कर्मचारी संघों को चाहिए कि वे बोनस की मांग करते हैं तो उत्पादकता बढ़ाने का प्रयास करें. बिना उत्पादकता बढ़ाए बोनस प्राप्त करना बेईमानी है.

के हाथ कांप रहे थे। अम्बा ने लिखा
 उस के हाथों में था। अम्बा ने लिखा

अनवर बेटा,
 मुझे यह लिखते हुए बेहद दुख हो रहा
 कि दिल का दौरा पड़ने के कारण सलमा के
 अम्बा का इंतकाल हो गया है और इस से

सुनते ही सलमा सीढ़ियों से गिर पड़ी और उस
 की टांगें हमेशा के लिए बेकार हो गई...

उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि ऐसा
 हो सकता है या ऐसा हुआ है। मन को बहलाने
 के लिए वह बारबार पत्र पढ़ता था। कहीं उस
 के पत्र पढ़ने में तो कोई गलती नहीं हो रही है?

अम्बा

अम्बा

अम्बा की मौत ने सलमा को
 अपाहिज बना कर उस की
 सारी खुशियां छीन ली थीं,
 पर किस प्रकार अनवर ने उस
 के आंचल को खुशियों से भर
 दिया?

या कहीं वह पत्र का मतलब ही तो गलत नहीं ले रहा है?

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसलिए हाँ में ज़िन्दा हो गई है. इस का इलाज नहीं है.

अंततः वह हताश हो कर बैठ गया. न उस की नजरें धोखा खा रही थीं और न अब्बा ने पत्र लिखने में कोई गलती की थी. सचमुच सलमा के अब्बा का देहांत हो गया था और इस दुर्घटना में सलमा ने अपने पैर खो दिए थे.

उस की आंखों के सामने सलमा का चेहरा घूम गया था और कल्पना में वह सलमा को पहियों वाली कुरसी पर बैठा देखने लगा था.

यह कल्पना इतनी दर्दनाक थी कि उस की आंखों में आंसू आ गए थे और उस ने जल्दी से अपना सिर झटक दिया था, क्योंकि वह और ज्यादा देर इस स्थिति की कल्पना नहीं कर सकता था. वह क्या करे, उस की समझ में नहीं आ रहा था.

अंततः कुछ सोच कर वह दफ्तर से छुट्टी ले कर घर जाने की तैयारियां करने लगा.

घर पहुंचा तो अब्बाअम्मी ने उसे सारी बातें बता दीं कि कैसे भी नसीम साहब के जीवन का कोई भरोसा नहीं था. उन्हें पहले भी दिल के दो दौरें पड़ चुके थे. तीसरे दौरें में वह बच नहीं सके. डाक्टर भी नहीं आ सका, परंतु उन की मृत्यु के साथसाथ बेचारी सलमा का भी जीवन नष्ट हो गया है. उस समय वह घर में ही ऊपर की मंजिल पर कोई काम कर रही थी. अब्बा के देहांत की खबर सुनी तो चीखती हुई नीचे की ओर दौड़ी, परंतु सीढ़ियों पर उस का संतुलन बिगड़ गया और वह लड़कती हुई नीचे आ गिरी. होश आया तो चीखने लगी, "मेरे पैर सुन्न हो गए हैं... मुझ से चला नहीं जाता..."

डाक्टर को बुलाया गया तो निरीक्षण के बाद उस ने बताया कि न तो कोई हड्डी टूटी है और न कोई अंदरूनी चोट है. फिर भी चला न जाना और टांगों का सुन्न अथवा बेजान हो जाना अजीब सी बात है. जब एक दूसरे डाक्टर को दिखाया गया तो उस ने बताया कि सदमे के कारण टांगों के स्नायु निष्क्रिय हो गए हैं. उनका मस्तिष्क से संबंध टूट गया है.

उस दिन से सलमा अपंग सी हो गई है और पहियों वाली कुरसी पर कर ही इधरउधर घूम पाती है.

वह चुपचाप अब्बा की बातें सुनता था और जब वह सलमा के घरवालों में जाने लगा था तो उस के घरवालों ने बहाने बना कर रोकने का प्रयत्न किया. इस पर वह घरवालों का आशय समझा था. वे नहीं चाहते थे कि वह अब सलमा घर जाए और उस से मिले.

शायद वे चाहते थे कि वह सलमा सारे संबंध तोड़ ले. आखिर एक अपंग लड़की में रह भी क्या गया था. जब तक वह अच्छी थी. वह उस की मंगेतर थी. घरवाले उसे अपनी होने वाली बहु मानते परंतु अब एक अपंग लड़की को वे अपनी कैसे बना सकते थे और उस के साथ उस विवाह कर के उस का जीवन कैसे नष्ट कर सकते थे. उसे घरवालों के इन विचारों से दुख हुआ था.

जब वह सलमा के घर आया तो उस घरवालों को सांत्वना देतेदेते ही उस का समय बीत गया. इस बीच सलमा सामने आई थी. आती भी कैसे? पहले जैसी सलमा तो अब वह थी नहीं, जो किसी काम के बने आ जाए और वह चौर दृष्टि से उसे देखते वह ही कहीं से छिप कर उसे निहारती थी.

उस की चाची ने ही उसे बताया था कि सलमा अपने कमरे में है तो वह सलमा के कमरे की ओर चल दिया था. सलमा पहियों वाली कुरसी पर बैठी बुनाई कर रही थी. देखते ही उस ने अपने सिर का आंचल उठा लिया और फिर सिसक उठी.

अपने दोनों हाथों से मुंह छिपा कर रोती रही. वह उसे समझाता रहा, उसे होने के लिए कहता रहा. फिर जब मन बोलन हलका हो गया तो उस ने अपने दोनों हाथों से अपने पैरों को देखने लगी.

वह धीरे से उस को सहलाने लगा।
उस के पैरों को सहलाने लगा।

"हिलते भी नहीं?" उस ने धीरे से पूछा।

"नहीं." सलमा ने चिबशता से कहा।
उस ने सलमा का एक पैर हाथ में ले कर

धीरे से सलवार के पाहिंचे को ऊपर उठाया
तो सलमा शरमा गई, पर वह गौर से उस के

पैरों को देखता रहा। पैरों में कोई भी परिवर्तन
नहीं हुआ था। पैर बिल्कुल ठीक थे, वह

धीरे धीरे सलमा की पिंडली को सहलाने लगा
फिर बोला, "कुछ महसूस होता है?"

"आप चाहे सूई चुभो दें...कुछ भी
महसूस नहीं होता." वह बोली।

यह सुन कर उस ने धीरे से सलमा की
मांसल पिंडली में चुटकी ली...और फिर कई

चुटकियां लेता रहा, पर सलमा के चेहरे पर
कोई भाव नहीं आए। इस पर वह हताश हो

उठा।
सचमुच सलमा के घुटनों से नीचे का

भाग निर्जीव हो चुका था। वह अपंग हो गई
थी। उस के चेहरे पर निराशा के भाव देख कर

सलमा अपना चेहरा छिपा कर फिर सिसकने
लगी।

"हीसला रखो सलमा," वह उसे

सलमा का यौवन और सुंदरता बरकरार
रही, पर अपंग हो जाने के कारण वह

अनवर से विवाह न करने के बारे में सोचने
लगी थी।

सलमा को समझाते हुए बोला, "सब ठीक हो जाएगा।
तुम्हारे पैर बहुत जल्दी ठीक हो जाएंगे। तुम

फिर से पहले की तरह चलफिर सकोगी। तुम
अस खुद को संभालो."

जब वह सलमा के घर से अपने घर
आया तो घरवालों ने उस से एकदो प्रश्न

किए। फिर उस के अब्बा बोले, "अब इस के
बाद वहां कभी नहीं जाना."

"क्यों?" उस के माथे पर बल पड़ गए

तोड़ रहे हैं."

"क्यों?" उस ने तेज स्वर में पूछा था।

"नहीं तो और क्या करें, क्या एक अपंग
लड़की को अपनी बहू बना कर एक नई

मुसीबत पालें, तुम्हारी जिंदगी बरबाद
करें..."

"अगर सलमा शादी के बाद अपंग हो
जाती तो?"

"तुम तुकों से हमें बहलाने की कोशिश
मत करो," अब्बा क्रोध में बोले थे, "हम जो

कर रहे हैं, तुम्हारे भले के लिए कर रहे
हैं...तुम वापस नौकरी पर चले जाओ."

उस ने अब्बा की इस बात का कोई
उत्तर नहीं दिया था और वापस अपने कमरे में

आ कर लेट गया था, पर उस की आंखों में
नींद नहीं थी।

घरवाले रिश्ता तोड़ने की बात कर

थे। जब यह बात सलमा को
मालूम होगी तो? एक सदमे ने तो उस से टांगें

छीन लीं, हो सकता है यह नया सदमा उस का
मानसिक संतुलन ही बिगाड़ दे। सचमुच

सलमा यह सदमा बरदाश्त नहीं कर पाएगी
वह उसे बहुत चाहती है।



वैसे घरवाले भी सलमा को बहुत ज़ाहने
थे और जल्दी से जल्दी बहू बना कर उसे घर
में लाना चाहते थे, परन्तु उस हादसे के
बाद... फिर एक अपंग लड़की उसे या उस के
घरवालों को क्या सुख दे सकती है?

वह इस बारे में जितना सोचता उस की
उलझने बढ़ती जातीं. उस ने उकता कर
अपनी आंखें बंद कर लीं और अंत में वह इसी
निर्णय पर पहुंचा कि वह इस संबंध में सलमा
के डाक्टर से बात करेगा.

दूसरे दिन वह सलमा के डाक्टर के पास
गया था. उस का प्रश्न सुन कर
डाक्टर बोला था, "आप का विचार ठीक है.
सचमुच मृत स्नायु को जीवित करना या
मस्तिष्क से उन का टूटा हुआ संबंध पुनः
स्थापित करना बहुत मुश्किल है. मैं स्वयं
इस बारे में तरहतरह के प्रयोग कर रहा हूं,
परन्तु अभी तक कोई सफल प्रयोग नहीं कर
सका हूं."

"इस का मतलब यह है डाक्टर साहब
कि सलमा अब कभी अच्छी नहीं हो
सकती?"

"नहीं, यह बात नहीं है," डाक्टर बोला
था. "एक रास्ता है. यदि इस के लिए हम
मनोविज्ञान का सहारा लें. जिस तरह एक
सदमे से सलमा का यह हाल हुआ है, उसी
तरह भय, वह चाहे मौत का हो या किसी और
बात का, उसे ठीक कर सकता है, परन्तु इस का
दूसरा परिणाम भी सामने आ सकता है.
सलमा कमजोर दिमाग की है, हो सकता है
भय के कारण उस में और कुछ बिगाड़ आ
जाए."

"ऐसा नहीं होगा, डाक्टर साहब, ऐसा
कभी नहीं होगा." डाक्टर की बात सुन कर
वह पागलों की तरह बड़बड़ाने लगा था.

उस शाम वह सलमा के घर गया तो
सलमा के घरवालों का व्यवहार उस के प्रति
कुछ उखड़ाउखड़ा था.

"क्या बात है चची जान, आज आप सब
की नजरें क्यों बदली हुई हैं? उस ने पूछा
था.

बोलीं, "और उन्होंने सख्ती से हम से कहा
कि अब अनवर को यहां नहीं आने
जाए."

"ओह," यह सुन कर उस ने बुरा
काटे, फिर बोला, "इस बात का पता
को तो नहीं चला न?"

"उस ने छिप कर यह सब मुर
है," चची जान ने यह कहा तो उस के
पर गहरी चोट लगी.

वह वहां और नहीं रुक सका था.
आ गया था. उस में सलमा का सामना
का साहस नहीं था. उसे अब्बा पर क्रोध
रहा था. बिना उस से पूछे उन्होंने ऐसा
क्यों ले लिया? यह तो जाहिर सी बात है
अब्बा की बातों ने सलमा के घरवालों के
को गहरा आघात पहुंचाया होगा, परन्तु
से ज्यादा दुख इस बात का था कि यह
सलमा को भी मालूम हो गई थी. वहाँ
एक सदमे से नहीं निकली थी कि दूसरे
ने उसे भीतर ही भीतर तोड़ दिया होगा.

दूसरे दिन वह उस समय सलमा के
गया, जब घर में कोई नहीं
घरवाले एक विवाह में गए हुए थे. सलमा
जा सकती थी. वह अपने कमरे में
पहियों वाली कुरसी पर बैठी बुनाई कर
थी.

सलमा ने उस की आहट पा कर
कर उसे देखा था और फिर उस के चेहरे
उलझन के भाव उभर आए थे.

"घर में कोई नहीं है. सब एक शहर
गए हुए हैं." वह धीरे से बोली थी.

"मालूम है." उस ने उत्तर दिया.

"आप को यहां नहीं आना चाहिए
उस ने कहा था.

"क्यों?" उस की आंखें लाल हो गईं.

"कल आप के अब्बा आए थे. उन्होंने
अम्मी से कहा था कि आप को यहां नहीं
दिया जाए."

क्या? उस के चेहरे के भाव
गए थे.

"उन की सोचना भी याद रखना है" Foundation Chair

सलमा की आंखों में आंसू आ गए थे, "सचमुच अब सारे संबंध टूट जाना चाहिए. एक अपाहिज लड़की आप को या आप के घरवालों को कोई सुख नहीं दे सकती."

"तो तुम भी यही चाहती हो?" उस ने तेज स्वर में पूछा था.

"हां." उस ने कहा था और दोनों हाथों से अपना मुंह छिपा कर सिसकने लगी थी.

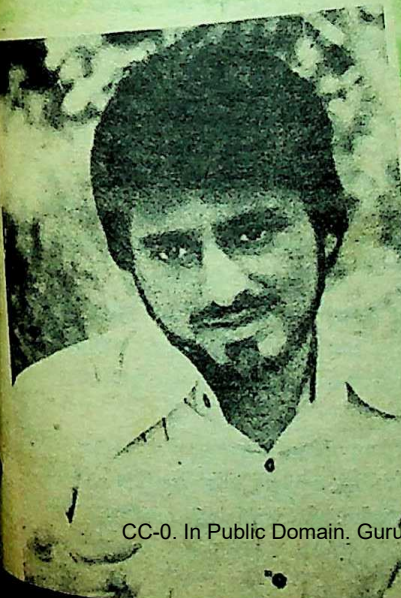
"श्रिक है," वह बोला था. "यदि सब यही चाहते हैं तो यही होगा मगर मेरी इच्छा भी अधूरी नहीं रहेगी." यह कह कर उस ने जेब से शराब की बोतल निकाल ली थी और उस का ढक्कन खोलने लगा था.

"यह क्या?" सलमा चौंक पड़ी थी.

"शराब," वह पागलों की तरह हंसा था, "यह मुझे इतनी शक्ति देगी कि मैं अपनी इच्छा पूरी कर सकूंगा."

"क्या मतलब?" सलमा भयभीत स्वर में बोली थी.

अनवर जब सलमा के घर से अपने घर आया तो घरवालों की बातों से उस के माथे पर बल पड़ गए.



तुम जानती हो मैं तुम्हें कितना चाहता हूं." उस की आंखें अंगारों की तरह दहक रही थीं, "मगर आज सारे रिश्ते टूट रहे हैं. तुम अपंग हो जाने के कारण कभी मेरी नहीं हो सकतीं, पर तुम अपंग हो गई तो क्या, तुम में अब भी वही सुंदरता और यौवन है, जिस का मैं दीवाना हूं. सारे रिश्ते टूटने से पहले मैं एक बार तुम्हारे शरीर को पाना चाहता हूं."

"नहीं." सलमा भयभीत स्वर में बोली थी, "आप ऐसा नहीं कर सकते."

"आज मैं कुछ भी कर गुजरने का फैसला कर के आया हूं."

"आप, इतने नहीं गिर सकते... आप मुझे बरबाद नहीं कर सकते." सलमा की आंखों में आंसू थे.

मगर अनवर तो पूरी तरह जानवर बन चुका था. वह आगे बढ़ने लगा था.

"आज तुम्हारी सहायता को कोई नहीं आने वाला. तुम्हारी चीखें भी इस कमरे के बाहर नहीं जा सकतीं."

"नहीं," पहियों को हाथों से घुमाते हुए उस ने कुर्सी को पीछे

किया था, परंतु उस की कुर्सी पीछे दीवार से टकरा कर रुक गई थी अब और पीछे हटने का कोई रास्ता नहीं था. सामने से अनवर जानवर बना चला आ रहा था.

और इस से पहले कि अनवर उसे छूता उस ने स्वयं को कुर्सी से नीचे गिरा लिया था और अपने दोनों हाथों की सहायता से फर्श पर रेंग कर भागने की चेष्टा करने लगी थी, पर अनवर ने उसे अपनी सशक्त भुजाओं में उठा लिया था. उस का दुपट्टा एक ओर जा गिरा था, फिर उस ने एक झटके से उस की कमीज की आस्तीन फाड़ डाली थी. वह तड़पी थी और उस की गिरफ्त से निकल गई थी, परंतु दूसरे ही क्षण धड़ाम से फर्श पर गिर पड़ी थी. अपनी विवशता पर उस की आंखों में आंसू आ गए थे. अनवर उस की ओर फिर बढ़ा था. अब उसे लगा था कि जैसे उसे अपना सतीत्व बचाना कठिन होगा.

जानवरों की तरह फिर एक बार उसे

कमीज फाड़ डाली थी। अंतिम बचाव के लिए सलमा ने अपनी टांगों को एक जोरदार झटका दिया था और अनवर की पिंडली पर ठोकर मारी थी। अनवर लड़खड़ा कर गिर पड़ा था।

जब तक वह उठता, वह काफी दूर तक सरक गई थी। उस के हाथ में एक सब्जी काटने वाला चाकू आ गया था, जिस ने उस का साहस और बढ़ा दिया था।

"अब अगर मेरे करीब आने की कोशिश की तो यह चाकू तुम्हारे सीने में उतार दूंगी," कहती हुई वह हांफती सी दीवार का सहारा ले कर उठ खड़ी हुई थी, पर अनवर पर उस की धमकी का कोई प्रभाव नहीं हुआ था। वह आगे बढ़ा था और एक झटके से उस ने उस के हाथों से चाकू छीन लिया था।

वह मचली थी और स्वयं को अनवर से बचाने के लिए दौड़ती हुई एक ओर चली गई थी। अनवर उसे खूनी नजरों से देख रहा था और वह कमरे के बीच में खड़ी थरथर कांप रही थी। अनवर अचानक पागलों की तरह हंसने लगा था और उस ने चाकू फेंक दिया था, उस की हंसी देख कर वह घबरा गई।

"सलमा," अचानक वह भावुक स्वर में बोला था, "देखो, देखो, तुम चल सकती हो... खड़ी हो सकती हो..."

यह सुनते ही उसे एक झटका लगा था और उस के होठों से एक चीख निकल गई थी। सचमुच वह उस समय अपने पैरों पर खड़ी थी। उन्हीं पैरों पर, जिन्हें कुछ देर पहले वह अपनी इच्छा से हिला भी नहीं सकती थी। उन्हीं पैरों से दौड़ कर वह वहां तक आई थी।

"मेरा प्रयोग सफल रहा..." अनवर की खुशी का ठिकाना नहीं था, "डॉक्टर ने कहा था मौत का भय या कोई दूसरा आघात तुम्हारे पैरों के स्नायु को पुनः जीवित कर सकता है। इसी लिए मैं ने तुम्हारी इज्जत लूटने का नाटक किया था। ताकि तुम्हारे मस्तिष्क पर भय सवार हो जाए और तुम स्वयं को बचाने का प्रयत्न करो। यही भय तुम्हारे स्नायु को फिर से जीवित कर दें और उन का संबंध मस्तिष्क से हो जाए।"

"क्या?" वह आश्चर्य से अनवर को देखने लगी थी। उस ने सपने में भी नहीं सोचा था कि अनवर यह सब उस के लिए कर रहा होगा। वह कुछ देर पहले तक तो अनवर के लिए अपने मन में हजारों नीच विचार लालचुकी थी।

"मुझे माफ कर दीजिए," उस की आंखों में आंसू आ गए थे और वह जा कर अनवर से लिपट गई थी। अनवर खुशी से झूमता हुआ पागलों की तरह उसे चूमने लगा था।

बजरी चूर्ण सिरदर्द का कारण

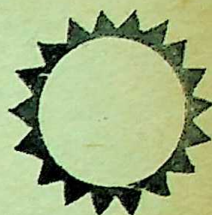
भाषा के संबंध में कोई छोटी सी चूक अर्थ को अनर्थ कर देती है, यह उत्तर प्रदेश की इस घटना से साबित होता है। उत्तर प्रदेश के एक ठेकेदार ने पुल के निर्माण के लिए आवश्यक सामग्री दिलाने के लिए केंद्रीय सरकार के गृह निर्माण विभाग के अध्यक्ष को हिंदी में एक पत्र लिखा जिस में 30 हजार रुपए की बजरी चूर्ण की मांग की।

प्रार्थनापत्र में 'चूर्ण' शब्द देख कर अध्यक्ष ने इस खयाल से कि चूर्ण तो स्वास्थ्य विभाग के अंतर्गत आता है, उस पत्र को वहां भिजवा दिया। स्वास्थ्य विभाग का अध्यक्ष इस 'चूर्ण' से परिचित नहीं था। अतः उस ने अपने अधीनस्थ कर्मचारी को उस चूर्ण का पता लगाने के लिए कहा।

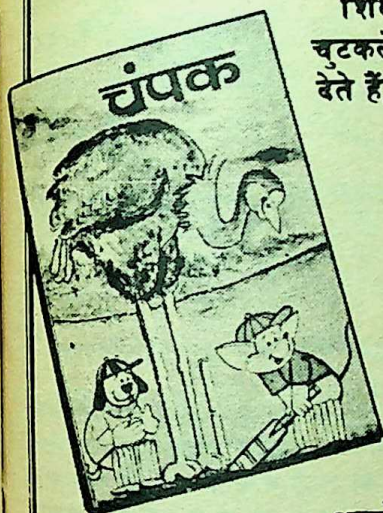
जब बहुत खोजने पर भी ऐसा चूर्ण नहीं मिला तो अध्यक्ष ने एक प्रतिनिधि मंडल बनाया यह देखने के लिए भेजा कि ऐसी कौन सी महामारी फैली हुई है जिस के लिए इतने अधिक चूर्ण की जरूरत आ रही है। प्रतिनिधि मंडल जब उस ठेकेदार से मिला तो वास्तविकता जान कर सिर पीट कर रह गया। वास्तव में ठेकेदार ने सीमेंट के लिए 'बजरी चूर्ण' शब्द का प्रयोग किया था।

50 लाख बच्चों की प्यारी
रंगीन पत्रिका

चंपक



हर पक्ष चंपक में प्रकाशित मनोरंजक व
शिक्षाप्रद कहानियां, कविताएं, पहेलियां,
चुटकले और लेख बच्चों को नई जानकारी
देते हैं, उन का चरित्र संवारते हैं और नए
स्वरूप में ढालते हैं.



चंपक हिंदी के अलावा अंगरेजी,
गुजराती, तमिल, बंगाली,
मराठी व मलयालम
भाषाओं में भी
प्रकाशित होता है.

अपने बच्चों को चंपक लेकर दें.
उन का मनोरंजन भी करें और
भविष्य भी संवारें.





लेख • कि.स. भटनागर

सोलह हजार व्यक्तियों पर एक सर्वेक्षण किया गया। सब से एक ही प्रश्न पूछा गया कि उन के जीवन का लक्ष्य क्या है। उत्तर चौंकाने वाला था। 95 प्रतिशत व्यक्तियों ने उत्तर दिया—'संसार की अधिक से अधिक सेवा करना व अच्छी तरह जीवन यापन करना।' यह एक अत्यंत अस्पष्ट लक्ष्य था। केवल पांच प्रतिशत लोगों ने स्पष्ट रूप से बतलाया कि वे क्या करना और पाना चाहते थे। कुछ वर्ष बाद पुनः सर्वेक्षण करने पर पता चला कि लक्ष्यहीन अपना जीवन जैसेतैसे बिता रहे थे, जब कि लक्ष्य निर्धारित कर लेने वाले पांच प्रतिशत लोगों में से अधिकांश अपना लक्ष्य पा चुके थे या पाने वाले थे। लक्ष्यहीन व्यक्ति, देश की कृपा अपनी सेवा भी पूर्ण रूप से नहीं कर सकते।

मनोविज्ञान में दो नियम हैं। प्रथम है कि

आप वह सब कर सकते हैं, जो आप सोचते हैं कि आप कर सकते हैं। दूसरा है कि आप जिन गुणों को अपने में पाना चाहते हैं, आप मान कर चलें कि वे आप में हैं, शनैःशनैः वे गुण आप में स्वयं ही आ जाएंगे। निश्चित लक्ष्य वालों को ही ये नियम मदद करते हैं। लक्ष्यहीन व्यक्ति को मालूम ही नहीं होता कि वह क्या करना चाहता है, क्या पाना चाहता है।

निश्चित लक्ष्य होने से सफलता पाने के उदाहरण संसार में अनेक हैं। लक्ष्य अच्छे व बुरे दोनों हो सकते हैं। जैसा भी लक्ष्य होगा प्राप्ति भी वैसी ही होगी। जो विज्ञान में माहिर है, संसार को कुछ देना चाहता है वह इस में छोटी तक पहुंच सकता है। एडीसन को ही लीजिए, उन की स्कूली शिक्षा नहीं थी, पर वह संसार को इतनी नई चीजें दे गए कि उनके आधुनिक सभ्यता का जनक माना जाते लगे।

सिकंदर दुनिया गिरेद बिजय प्राप्त कर लाया था, उस ने विजय प्राप्त की भी। कोलंबस ने नई दुनिया खोज ही ली। महात्मा गांधी ने अंततः अंगरेजों को भारत से दूर कर ही दिया। किसी परीक्षा को पास करने का संकल्प कर के हम उसे पास कर ही लेते हैं। फुटबाल का मैच जीत लेने का प्रण कर उसे जीत ही लिया जाता है। दृढ़ निश्चय होना और लक्ष्य होना एक ही बात है।

यदि हम समझ लें कि लक्ष्य निर्धारित होने से वह कैसे और क्यों मिलता है तो लक्ष्य बनाने के प्रति हम उदासीन न रहें। जरा विस्तार में जाने से पहले एक मामूली से प्रयोग से यह बात स्पष्ट हो जाएगी। हम में से हरेक ने बचपन में लैंस से सूर्य की किरणों को एक बिंदु पर केंद्रित कर दूसरी तरफ रखे कागज को जलाया है। लैंस से सूर्य की किरणें एक बिंदु पर केंद्रित करने से इतना ताप उस जगह हो जाता है कि वह कागज को जला देता है। इसी नियम का उपयोग कर आजकल सूर्य की किरणों का सीधा उपयोग कर सौर ऊर्जा से पानी गरम

किया जाता है। बिजली बनाई जाती है। बिखरी किरणें अपने आप में समर्थ नहीं हैं कि वे कागज को जलाने के योग्य आवश्यक ताप पैदा कर सकें। अतः लक्ष्य होने से शक्तियों का केंद्रीकरण होता है और फिर कुछ भी असंभव नहीं रहता।

लक्ष्य निर्धारित होने से हम उसे आखिर क्यों पा लेते हैं, इस के दो कारण हैं। एक मनोवैज्ञानिक और दूसरा सामान्य। पहले हम मनोवैज्ञानिक पहलू लें।

हमारे मस्तिष्क की मुख्य रूप से दो अवस्थाएं होती हैं। एक चेतन दूसरी अवचेतन। (तीसरी अर्धचेतन अवस्था भी होती है।) चेतन अवस्था में मस्तिष्क इंद्रियों से (नाक, कान, जीभ, त्वचा, आंख) बाहरी संकेत ग्रहण करता है। उन पर विचार कर आवश्यक कार्रवाई करता है। इन में से कुछ संकेत ऐसे भी होते हैं जिन का उपयोग बाद में

जिंदगी में सफलता पाने का सब से अच्छा तरीका है कि आप अपना लक्ष्य निर्धारित कीजिए और इस के लिए कुछ बातों पर ध्यान देना आवश्यक है...





जिन्हीं सोचसमझ किसी काम अथवा व्यवसाय को अपनाने से उस में विलग लगने के कारण सफलता नहीं मिलती

भी किया जा सकता है, अतः वे अवचेतन में संग्रहीत हो जाते हैं। बाद में जब उन की आवश्यकता पड़ती है तब इन सूचनाओं के आधार पर निर्णय लिया जा सकता है।

अवचेतन मस्तिष्क की कार्यक्षमता व भंडारण क्षमता असीम है। वह तो चौबीसों घंटे कार्य करने वाली एक कर्मशाला है, जहां हमेशा गुत्थियां सुलझाई जाती हैं। सोते में हमें जो स्वप्न दिखाई देते हैं, वह सब इसी मस्तिष्क की क्रियाशीलता है। यदि हम किसी समस्या को ले कर सो जाते हैं तो अकसर सवेरे उठ कर हमें उस का हल मिल जाता है। अवचेतन मन अपनी भंडारित सामग्री के आधार पर उस समस्या का विश्लेषण करता है और समाधान तलाश देता है।

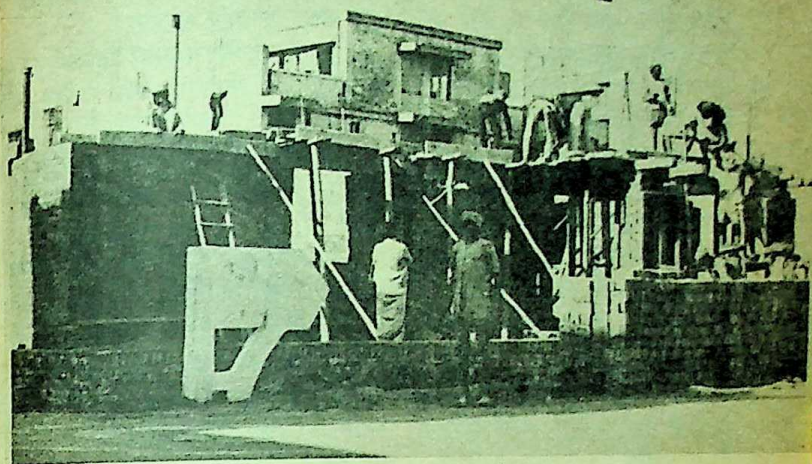
अवचेतन मस्तिष्क की इसी कार्यप्रणाली को ध्यान में रख कर मनोविज्ञान में आत्म सुझाव का सिद्धांत प्रतिपादित किया गया है। अपना लक्ष्य बना कर उसे अवचेतन मन को सौंप दें। यदि अवचेतन मस्तिष्क उसे एक बार में ग्रहण न करे तो बारबार उसी सुझाव को

प्रेषित करते रहें, अंततः वह उसे ग्रहण कर लेगा। एक बार यदि उसने ग्रहण कर लिया तो कोई चिंता नहीं, वह क्रियाशील हो कर हमें अपने लक्ष्य की ओर जाने का रास्ता सुझाएगा। यही कारण है कि जब हम किसी परीक्षा को पास करने का दृढ़ निश्चय करते हैं तो अपने आप ही सारी सुविधाएं जुटती जाती हैं। किताबें भी मिल जाती हैं, निर्देशन भी मनोबल ऊंचा हो, इच्छा उत्कट हो तो अवचेतन मस्तिष्क उसी अनुपात में क्रियाशील हो उठता है।

तब हमारी मुलाकात उन लोगों से होती है जो लक्ष्य प्राप्ति में सहायक हो सकते हैं। उत्कट इच्छा होने से हमारी शक्तियां बिखर नहीं पातीं, वे सब लक्ष्य पर केंद्रित हो जाती हैं। फिर हर कार्य लक्ष्य प्राप्ति के लिए एक सीढ़ी का काम करता है।

यह सब तभी हो सकता है जब लक्ष्य स्पष्ट हो।

यह सब तभी हो सकता है जब लक्ष्य स्पष्ट हो। जरा विचार करें कि आप नाव पर सवार हैं। आप को यह



लक्ष्य भले ही मकान बनाने का हो या कोई अन्य. परिश्रम और समुचित साधनों के अभाव में अपेक्षित सफलता पाना संभव नहीं है.

नहीं मालूम कि आप को कहाँ जाना है और साथ ही पत्नवार भी नहीं है तो क्या होगा? आप एक ही जगह घूमते रहेंगे या बहाव की ओर जाते रहेंगे. केवल श्रम से भी सफलता नहीं मिलती. मकान बनाने का सारा समान ईंट, गारा, पत्थर, सीमेंट आदि एकत्र कर लिया जाए तो मकान नहीं बन जाता. कैसा मकान चाहिए, कितने कमरे चाहिए, कितने समय में बनना चाहिए तथा क्या-क्या सुविधाएं चाहिए. इन सब बातों का जब तक अंदाज नहीं होगा, कार्य को करने वाले निपुण कारीगर न होंगे, मकान नहीं बन सकता. मकान का विस्तृत नक्शा चाहिए ताकि सारे प्रयासों को एक सुव्यवस्थित ढंग से केंद्रित किया जा सके.

दृढ़ निश्चय : बेहद जरूरी

अपने जीवन के लक्ष्य के बारे में मात्र यह कहने से काम नहीं चलता कि पढ़ा लिख कर हम आदमी बनेंगे. अरे, भाई, यह कहना चाहिए कि हम डाक्टर बनेंगे, वकील बनेंगे,

इंजीनियर बनेंगे, समाज सेवी बनेंगे, यह तय करने के बाद ही तो यह तय किया जा सकता है कि पढ़ाई का ढंग क्या हो. कौन से विषय लिए जाएं कि लक्ष्य प्राप्त हो सके. बिना लक्ष्य पढ़ाई करने पर तो मात्र बाबू बनना ही रह जाता है.

प्रयासों का केंद्रीकरण और लक्ष्य के साथ कार्य करना एक साथ चलता है. सफल व्यक्तियों की जीवनियां हमें बतलाती हैं कि वे सब तुरंत निर्णय लेने वाले, दृढ़ निश्चय के व्यक्ति थे, पर यदि वे बिना लक्ष्य के काम करते तो सफल नहीं हो सकते थे.

हमारा लक्ष्य कैसे बने. क्या हो, यह विचार करने की बातें हैं. जिस काम में कोई दिलचस्पी न हो उसे लक्ष्य बना लेने से कुछ हासिल नहीं हो सकता. जरा गहराई से सोचने पर पता चल सकता है कि आप की रुचि किस कार्य में है. कोई ऐसा कार्य अवश्य है जो आप दूसरों से अच्छा कर सकते हैं. अतः उसी दिशा में अपनी शक्तियों का केंद्रीकरण करें. अपनी पसंद के काम में ही जीजान से लगा जा सकता

है। अपनी पसंद के काम से हमें प्यार होता है, उसे हम फिर बिना थके अधिक समय तक कर सकते हैं। अतः काम से प्यार होने से वह और अधिक अच्छा होता है।

लक्ष्य निर्धारित होते ही वह आप के दिमाग में चिंतन का प्रमुख विषय हो जाता है। आप की बाह्य इंद्रियां उन सब संकेतों को ग्रहण करने लगती हैं, जिन के प्रति सामान्य तौर पर वे उदासीन रहती हैं। यदि आप मकान बना रहे हैं तो रास्ते में बनते हुए मकान आप को बलात रोक लेंगे। दो मिनट रुक कर आप उन की बनावट आदि का अध्ययन करेंगे।

लक्ष्य बनते ही उस विषय का ज्ञान उपलब्ध होने लगता है। पुस्तकालय में आप अपने लक्ष्य के अनुरूप सही पुस्तकें देख सकते हैं। उस संबंध की पत्रपत्रिकाओं का अध्ययन किया जा सकता है, इस से अनावश्यक प्रयोग करने का समय बचता है।

अवसर से फायदा उठाने

लक्ष्य होने से हम अवसर पकड़ने की स्थिति में आ जाते हैं। अवसर तो हर क्षण आते रहते हैं। यह तो हम पर निर्भर करता है कि हम उसे अपने उपयोग में ला सकते हैं या नहीं। लक्ष्य होने से हम अवसरों को पहचान सकते हैं और उन का उपयोग कर मनचाहे परिणाम पा सकते हैं।

इस सिलसिले में एक महत्वपूर्ण बात यह है कि लक्ष्य बहुत अधिक ऊंचा न हो कि उसे पाने में अत्यंत कठिनाइयों का सामना करना पड़े। ऐसे लक्ष्य को न पाने से आत्मविश्वास में कमी आती है। लक्ष्य अपनी शक्ति के अनुरूप हो और स्पष्ट हो।

अतः आत्मविश्वास जागृत करने के लिए पहले छोटा लक्ष्य रखा जा सकता है। उसे पाने के बाद दूसरा और तीसरा। जीवन का एक प्रमुख लक्ष्य हो सकता है, पर उसे पाने के लिए अनेक छोटे लक्ष्य रखने होते हैं, जो सीढ़ी का काम करते हैं। अतः लक्ष्य एक दिन का भी हो सकता है, एक हफ्ते का भी, एक साल का और जीवन भर का भी।

लड़की का विवाह करना है। यह भी एक

लक्ष्य है। इस के लिए समय चार माह ले सकता है, दो माह का भी। उसी के अनुसार काम करना होगा। जीवन के लक्ष्य को पाने के लिए प्रतिदिन कुछ न कुछ करना होगा जो उस लक्ष्य की ओर ले जाए।

अतः यह निश्चय करें कि आप को क्या चाहिए, कब चाहिए, क्यों चाहिए, कैसे चाहिए।

कार्य आरंभ करें। किसी भी काम को अच्छी शुरुआत का मतलब है कि वह आधा तो हो ही गया।

वास्तविक सफलता पाने के लिए संकेत में निम्नलिखित तरीके से काम आरंभ करना चाहिए।

1. तय करिए कि आप का प्रमुख लक्ष्य क्या है। उसे स्पष्ट भाषा में लिख कर अनेक स्थानों पर चिपका लीजिए। मतलब यह कि वह हर समय आप की नजरोں के सामने रहे।

2. फिर विस्तृत योजना बनाइए कि कब, कैसे और कहाँ उसे पाया जा सकता है। इसे कागज पर लिख लीजिए।

3. फिर एक या दो ऐसे साथी तलाश कीजिए जो इस कार्य में मदद दे सकते हों, वे विश्वस्त व्यक्ति ही हों, जो आप का भला चाहते हों और आप को सहयोग की भावना से सहानुभूतिपूर्वक सहायता दे सकें।

4. अपनी विचारधारा सकारात्मक व आशावादी रख के अपने साथियों में यह विश्वास भरें कि हम लक्ष्य पाएंगे।

5. कार्य के संपन्न होने के दौरान यदि आवश्यक हो तो योजना में फेरबदल भी कर दें, क्योंकि कोई भी इतना चतुर व दूरदर्शी नहीं होता कि आने वाली तमाम समस्याओं का लेखाजोखा आरंभ में ही तैयार कर ले।

6. यदि किसी साथी पर से विश्वास डगमगा जाए तो उसे तुरंत छोड़ दीजिए। अपने लक्ष्य को जीवन का हिस्सा मान कर ही मनचाही मुराद मिल सकती है।

उपरोक्त तरीकों से अपने लक्ष्य को अपने प्रेचंड मनोवृत्ति व उत्कट इच्छा से बड़ी सरलता से पाया जा सकता है।

हर एक नजर

हर एक नजर उन की नजर देख रही है,
यों उन की नजर ताश के घर देख रही है।
माना कि हवाओं में उजाले की बात है,
यों हादसे वही हैं और रात वही है।
वीरान इस तरह हुई फूलों की बस्तियां,
लगता है चमन है तो चमन और कहीं है।
उजड़े हुए मकान में हम अजदहों के साथ,
रहते ही चले आए हैं तकलीफ नहीं है।

—रामचंद्र सरोज





इस स्तंभ के लिए अपने रोचक संस्मरण भेजिए. उन्हें आप के नाम के साथ प्रकाशित किया जाएगा और प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 15 रुपये की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. संस्मरण के साथ अपना नाम व पता अवश्य लिखें.

भेजने का पता: संपादकीय विभाग, मुक्ता, ई-3, रानी ज़ांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

बात उस समय की है जब मैं 11वीं कक्षा में पढ़ती थी. हमारी हिंदी की अध्यापिका 'मतलब' शब्द का प्रयोग बहुत करती थीं. वह पढ़ा कर चली जाती थीं, लेकिन कोई छात्र कह नहीं पाता था. वैसे सभी लोग उन के पढ़ाने के तरीके से असंतुष्ट थे.

एक दिन उन्होंने बीच में एक प्रश्न पूछ लिया. एक लड़की उठी और उस ने कई बार 'मतलब' शब्द का प्रयोग कर के उन्हें उत्तर दिया.

उस दिन के बाद उन्होंने मतलब शब्द का प्रयोग छोड़ दिया. —सुनीता शर्मा

मैं आठवीं कक्षा में पढ़ता था. हमारे विज्ञान के अध्यापक ने एक दिन कक्षा में घोषणा की कि जो छात्र विज्ञान में सब से अधिक अंक प्राप्त करेगा उसे गुडलक पेन इनाम में दिया जाएगा. छात्रों में इनाम पाने के लिए होड़ लग गई. मुझे 50 में से 36 अंक मिले और इनाम मैं पाने की आस लगाए रहा.

सभी छात्रों ने इनाम देने की बात चलाई तो उन्होंने कहा, "विज्ञान की परीक्षा के लिए बहुत से छात्रों ने नकल की और सर्वोच्च अंक भी अवैध तरीके से अपना कर प्राप्त किए. इसलिए इनाम देने का प्रश्न ही नहीं उठता."

उन का जवाब मुझे बहुत बुरा लगा था, लेकिन मैं अब भी उन का आभारी हूँ कि उन्होंने मेरे अंदर मेहनत का उत्साह जगाया था. —त्रिलोकीनाथ श्रीवास्तव

हमारे विद्यालय में विज्ञान के अध्यापक के संबंध छात्रों के साथ बहुत अच्छे थे, लेकिन वह जब किसी काम से नाराज होते थे तो उसे 'गधे के बच्चे' कह कर डांटते थे.

एक बार मेरे एक सहपाठी प्रकाश गुप्ता पर वह नाराज हुए और बोले, "गधे के बच्चे यदि कल विज्ञान का गृहकार्य पूरा कर के नहीं लाए तो अपने पिता को साथ ले कर आना."

प्रकाश के पिता अगले दिन सीधे कक्षा में आए और बोले, "मास्टर साहब, मैं प्रकाश गुप्ता का पिता विनोद गुप्ता हूँ. मैं आप को क्या दिखाई दे रहा हूँ?"

"मैं आप का मतलब नहीं समझा," मास्टर साहब ने पूछा.

"मतलब यह कि मैं आप को गधा तो नहीं दिखाई दे रहा हूँ?" प्रकाश के पिता बोले.

मास्टर साहब उन की ओर देखते रहे. फिर उन्होंने कहा, "फिर आप मेरे लड़के को बच्चा का बच्चा क्यों कहते हैं?"

मास्टर साहब बहुत शरमिदा हुए और उन्होंने प्रकाश के पिता से माफी मांगी. उस दिन के बाद उन की यह आदत छूट गई. —हरिबंशी

उन दिनों मेरी पानी पीने की जगहों पर अंगरेजी पढ़ाती थी। मैं अंगरेजी नहीं आती थी। हमारी कक्षा का एक छात्र बहुत ही उद्दंड था। शिक्षकों का आदर करना तो उसे आता ही नहीं था। एक बार मौसी ने उस लड़के से एक प्रश्न किया। चूंकि उसे अंगरेजी नहीं आती थी। इसलिए उस ने बैठेबैठे ही जवाब दिया, "हमें अंगरेजी नहीं आती।" किंतु वह शांत स्वर से बोली, "तब तुम्हें क्या आता है?" इस पर उस ने उसी उद्दंडता से कहा, "मुझे गाली देनी आती है।" तब मौसी ने कहा, "तुम्हें अंगरेजी नहीं आती और मुझे गाली देनी नहीं आती। अब तुम मुझे गालियां सिखाया करना और मैं तुम्हें अंगरेजी सिखाया करूंगी। कुछ दिनों बाद जब तुम अंगरेजी सीख जाओगे और मैं गालिया देना, तब हम अपनी अपनी नई सीखी हुई भाषा में बातें करेंगे।"

इस बात का उस छात्र पर इतना असर पड़ा कि उस की बुरी आदतें सुधरती चली गईं।

—मधुलिका श्रीवास्तव

*

हमारे हिंदी के अध्यापक बहुत ही सख्त स्वभाव के थे, पर अधिकांश छात्र उन की कक्षा से गायब रहते थे और दूसरे छात्र उन की उपस्थिति बोल दिया करते थे। यह बात उन्हें किसी तरह मालूम हो गई।

एक दिन उन्होंने हाजिरी करते वक्त एक नाम पुकारा, "रामसेवक।" पर सब चुप थे। उन्होंने दोबारा पुकारा, लेकिन कोई उत्तर नहीं मिला।

अध्यापक ने बौखला कर चश्मा मेज पर रखा और छात्रों की ओर देख कर बोले, "इस बेचारे का कोई मित्र नहीं बना है। चलो, मैं ही उस की हाजिरी बोल देता हूं... 'यस सर' (उपस्थित श्रीमान)" के बाद छात्रों ने एकदूसरे की हाजिरी बोलने छोड़ दी। —कमलेश

*

जब मैं 10वीं कक्षा का छात्र था। मेरे घर की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी। पिताजी का देहांत हो चुका था। घर में फीस के लिए भी पैसे नहीं थे।

मैं कक्षा में नियमित उपस्थित रहता और पढ़ने में भी होशियार था, इसलिए कक्षा अध्यापक की नजर में था।

फीस के चक्कर में से दोतीन दिन स्कूल नहीं गया, क्योंकि मेरा नाम कटने वाला था। बाद में मैं ने अपनी मां को आवेदनपत्र ले कर भेजा। मां से मेरे कक्षा अध्यापक मिले। उन्होंने कहा, "बच्चे से कहना कि उस की फीस माफ हो गई है।"

मां ने आ कर मुझ से कहा। मैं खुश हो कर अगले दिन स्कूल गया। बाद में पता चला कि वह अध्यापक अपनी जेब से मेरी फीस भर दिया करते थे। —दीनदयाल शर्मा

*

हमारी एक अध्यापिका बहुत मेकअप कर के आती थीं।

एक दिन हम सभी अपनी कक्षा में बैठी गपशप कर रही थीं, क्योंकि उन्हीं का घंटा था।

मैं पानी पीने गई और वापस जाने लगी तो मेरे आगे वही अध्यापिका जा रही थीं। तभी

हमारी कक्षा में प्रधानाचार्या की आवाज गूंजी, किस का घंटा है?"

यह सुन कर वह भी बाहर दरवाजे पर रुक गई। उस समय एक लड़के ने कहा, "फूलों के गुलदस्ते का।"

इस पर कक्षा में हंसी का फव्वारा छूटा। प्रधानाचार्या की नजर दरवाजे पर गई, जहां वह अध्यापिका खड़ी थीं। प्रधानाचार्या उन्हें देख कर चुपचाप कक्षा से निकल गईं।

अगले दिन हमारी अध्यापिका हलके रंग की साड़ी पहन कर आई और उनके मेकअप भी नाममात्र का था। —लीनाराय •

राजसी वैभव का प्रतीक

लेख • महेंद्रकुमार खट्टर



अगर

किसी खेल में सजसी वेशभूषा, ठोठ वाट, गति और रोमांच का समावेश मिलता है तो वह है—पोलो. उत्पत्ति की रहस्यात्मकता से घिरे और जानवर पर मानव के अद्भुत नियंत्रण का प्रतीक पोलो का खेल राजामहाराजाओं का खेल माना जाता है.

अपने सुखद अतीत को संजोए
पोलो आज निरंतर अपनी
लोकप्रियता खोता जा रहा
है. क्या इस खेल को खोई
प्रतिष्ठा मिल सकेगी?



पोलो की उत्पत्ति कब और कहाँ हुई, निश्चित रूप से इस बारे में कोई नहीं जानता। पर इतनी जानकारी है कि दो हजार वर्ष पूर्व यह खेल ईरान, मणिपुर और कश्मीर में ला जाता था। तब इसे चौगान के नाम से जाना जाता था। चौगान उस हाकीनुमा डंडे को कहते हैं जिसे हाथ में पकड़ कर गेंद पर मारा जाता है। कालांतर में इस खेल का नाम पोलो पड़ गया। पोलो शब्द की उत्पत्ति तिब्बत के 'पुलू' शब्द से हुई। तिब्बत में पुलू नाम की एक विशेष जाति के वृक्ष पाए जाते हैं। इस वृक्ष की खाल से पोलो खेलने की गेंद बनाई जाती थी।

कश्मीर, ईरान और मणिपुर के प्राचीन साहित्य में इस खेल का स्पष्ट वर्णन किया गया है। मुगल काल में यह समाज का सर्वाधिक प्रतिष्ठित खेल माना जाता था। मुगल बादशाह बाबर की इस खेल में विशेष रुचि थी। 21 अप्रैल, 1526 को पानीपत की लड़ाई में इब्राहीम लोदी को हरा कर बाबर ने

घोड़ों की मदद से खेले जाने वाले पोलो खेल में बेहतर नस्ल के घोड़ों का अत्यधिक महत्त्व है।





पोलो : आन, वान और शान का खेल.

हिंदुस्तान में मुगल साम्राज्य की नींव रखी थी. उस जमाने में दिल्ली और आगरा में इस खेल का आयोजन किया जाता था.

सम्राट अकबर की भी इस खेल में बहुत रुचि थी. कहते हैं कि अकबर अंतःपुर की स्त्रियों के साथ भी पोलो खेलता था. तब फटेपुराने कपड़ों की गेंदे बनाई जाती थी और एक लंबी व मुड़ी हुई लकड़ी की मदद से यह खेल खेला जाता था.

महिलाओं का मनपसंद खेल

राजपूत स्त्रियां तो इस खेल में भाग लेती ही थीं, जहांगीर की पत्नी नूरजहां का भी यह मनपसंद खेल था. ईरान की औरतों में सुलतान खुसरो की पत्नी और ईरान की भूतपूर्व शहजादी की इस खेल में विशेष दिलचस्पी थी. दिल्ली की कुतबमीनार के निर्माता कुतबुद्दीन ऐबक को यह शौक इतना महंगा पड़ा कि उसे अपनी जान ही गंवानी पड़ी. उस की मृत्यु पोलो खेलते समय घोड़े से गिर कर हुई थी.

बहरहाल, आधुनिक पोलो 1853-54 में सिलचर में शुरू हुआ. 'सिलचर पोलो क्लब' विश्व का पहला पोलो क्लब था. इस की स्थापना 1861 में हुई. 1892 में भारतीय पोलो संघ बना. इसी के साथ भारत में पोलो की विधिवत शुरुआत हुई. 1901 में राजपूताना पोलो क्लब बना.

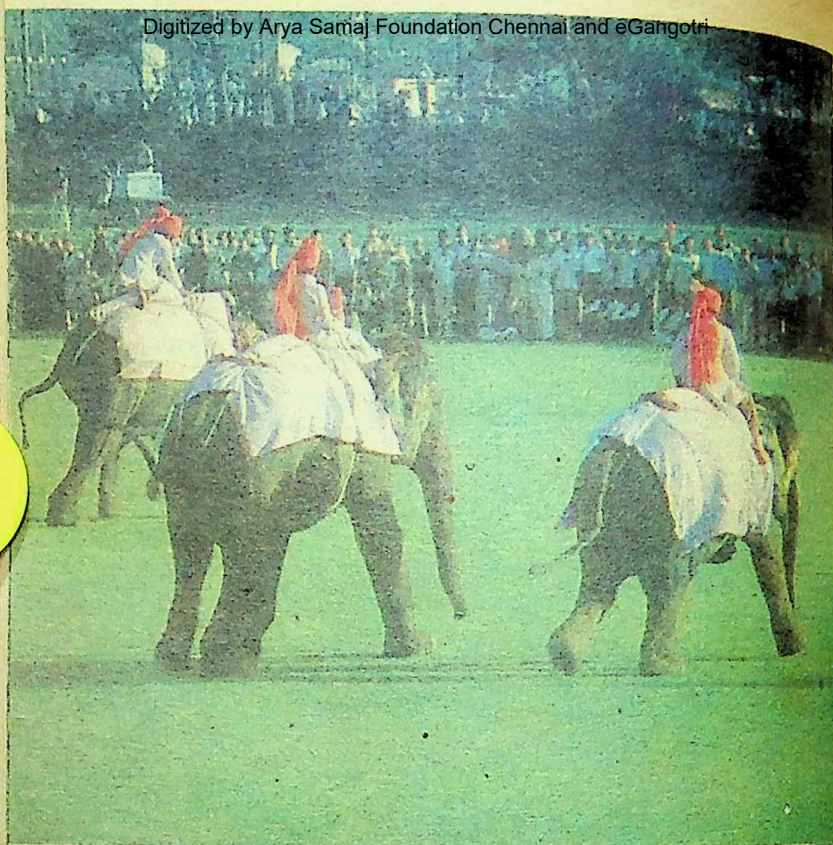
पोलो धीरे-धीरे अपने उदगम स्थल से निकल कर अलवर, भीमाल, बाकानेर, हैदराबाद, पटियाला, जोधपुर, किशनगढ़

तथा जयपुर में भी प्रचलित हो गया. जयपुर की पोलो टीम की गणना उस समय सबसे सर्वाधिक शक्तिशाली टीमों में की जाती थी. उस की श्रेष्ठता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि 1933 में अखिल भारतीय पोलो चैंपियनशिप जीतने के अलावा उस ने ब्रिटिश टूर्नामेंट तथा उस वर्ष आयोजित सभी टूर्नामेंट जीते थे. जयपुर पोलो क्लब ने 1930-1938 तक लगातार नौ बार अखिल भारतीय चैंपियनशिप जीती थी.

भारतीय पोलो को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित करने को श्रेय सर्वप्रथम किशनसिंह, कुंवर विजयसिंह, राव राहनुतसिंह तथा जयपुर के सवाई मानसिंह को जाता है. इस चौकड़ी के नेतृत्व में भारतीय पोलो टीम ने पहली बार 1957 में विश्व पोलो चैंपियनशिप में हिस्सा लिया और अपने पहले ही दांव में अर्जेंटीना, अमरीका, स्पेन, फ्रांस, इंग्लैंड और मैक्सिको को रौंद कर खिताब पर कब्जा जमाया. सवाई मानसिंह टीम के सर्वाधिक प्रतिभाशाली खिलाड़ी माने जाते थे. 1970 में इंग्लैंड में पोलो मैच खेलते समय वह घोड़े से गिर पड़े थे और उन का प्राणांत हो गया था.

आजादी के बाद की स्थिति

सवाई मानसिंह के बाद मेजर रिचार्ड मेजर कुलदीप गर्चा, पिंकिल सोढी, दिनेश सोढी, कलान मेहरा, कर्नल भवानीसिंह, कर्नल श्रीराम, कर्नल बहादुर सभाली. आज के बाद राजा महाराजा और नवाबों के शा



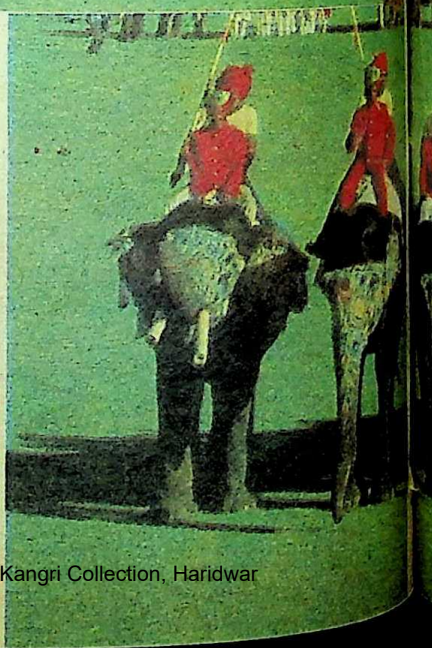
हाथी पोलो गौरवमयी अतीत का अत्यंत
त्रासद वर्तमान.

जो समाप्ति से लगा कि पोलो जैसा महंगा
खेल शीघ्र ही भारतीय खेल मंच से लुप्त हो
जाएगा, पर पोलो लुप्त तो नहीं हुआ, लेकिन
तना अवश्य हुआ कि आज इसे वह संरक्षण
प्राप्त नहीं है, जो राजाओं के काल में था.

अच्छे मैदानों की कमी

भारत की विश्व विजयी पोलो टीम के
उत्पत्ति महाराजा जयपुर का कथन है, "मैंने
विश्व के हर हिस्से में पोलो मैच खेले हैं, अतः
मुझे यह कहने में जरा भी संकोच नहीं है कि
हमारे देश के खिलाड़ी किसी भी देश की टीम
का बड़ी आसानी से मुकाबला कर सकते हैं."

उन का यह भी कहना है कि भारत में



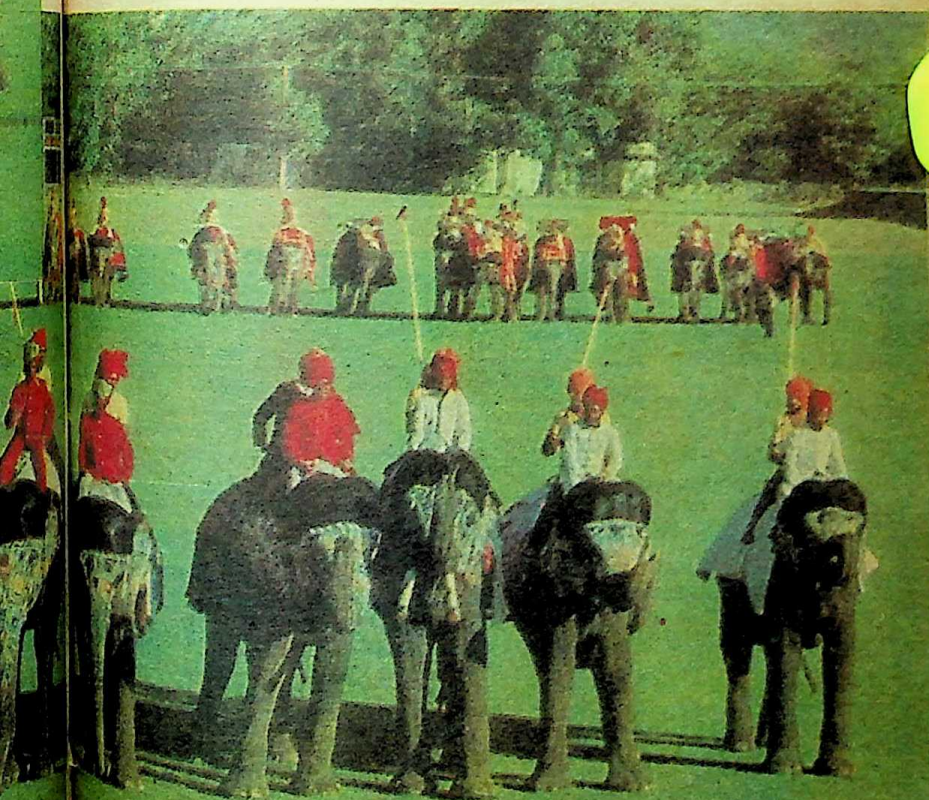
खिलाई है। हा हा, अभी वह तो
पोलो के मैदानों का तथा अच्छी नस्ल के घोड़ों
का।

पोलो : घटती लोकप्रियता

महाराजा जयपुर इस बात पर भी
सहमत नहीं हैं कि भारत में पोलो मरणासन्न
अवस्था में है। उन्हीं के शब्दों में, "भारत में
पोलो कभी समाप्त नहीं हो सकता। हां, इस
की लोकप्रियता कुछ कम जरूर हो सकती है
और इस का कारण यह है कि पोलो अमीरों
का खेल है, साधारण व्यक्ति इस खेल में
दिलचस्पी रखते हुए भी इस में भाग नहीं ले
सकता। पहले तो घोड़ों व हाथियों पर हजारों
रुपए खर्च कीजिए, फिर प्रशिक्षण और

अभ्यास में अपनी सारी पूंजी पानी की तरह
बहाइए और फिर यदि प्रशिक्षण और अभ्यास
के दौरान कोई घोड़ा या हाथी लंगड़ा या
जख्मी हो जाए तो बस समझिए कि सब
किएधरे पर पानी फिर गया।"

जयपुर पोलो का गढ़ माना जाता है।
सवाई मानसिंह मार्ग पर रामबाग पैलेस
होटल के साथ जयपुर पोलो ग्राउंड पोलो के
राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मैचों का मुख्य
मैदान माना जाता है। बिड़ला, रूंगटा, पोद्दार
जैसे बड़े-बड़े घरानों की कंपनियां इन मैचों को
आयोजित करने के नाम पर प्रतियोगियों को
अपने घोड़े उपलब्ध कराती हैं। हाथी पोलो
एकमात्र राजस्थान पर्यटन विभाग ही
आयोजित करता है। •





भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड

(भारत सरकार का पूर्ण स्वामित्व वाला उपक्रम)

पंजीकृत कार्यालय : हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस,

18-20 कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली - 110 001

सावधि जमा योजना

यथा संशोधित कम्पनी (एक्सेप्टेड ऑफ डिपॉजिट्स) नियमावली, 1975 के अनुसार व्योरे :

(क) कम्पनी का नाम : भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड

(ख) कम्पनी के निगमन की तारीख : 13 नवम्बर, 1964

(ग) कम्पनी द्वारा दिया गया कारोबार, साथ ही शाखाओं और यूनिटों का व्योरा, अगर हों तो :

भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड के कार्यकलापों के अंतर्गत सभी ऊर्जा स्रोतों के प्रजनन, प्रेषण, वितरण और उपयोग के लिए आवश्यक विद्युत, इलेक्ट्रॉनिक और यांत्रिक उपकरणों तथा विभिन्न औद्योगिक प्रयोगों के लिए आवश्यक अन्य औद्योगिक उपकरणों का डिजाइन, विकास, निर्माण, स्थापना और चालूकरण आता है।

कम्पनी का पंजीकृत कार्यालय और प्रधान कार्यालय नई दिल्ली में है तथा निर्माण इंडीजनों बंगलौर, भोपाल, हरिद्वार, हैदराबाद, झांसी, रानीपेट और तिरुचिरापल्ली में हैं। इसके अलावा देश के विभिन्न भागों में तथा विदेश में स्थित कई सेवा इंडीजनों भी हैं।

(घ) कम्पनी के मैनेजमेंट का संक्षिप्त विवरण : कम्पनी का प्रबन्ध एक निदेशक मण्डल के पर्यवेक्षण, निदेशन और नियंत्रण के अन्तर्गत प्रबन्ध निदेशक और पूर्ण-कालिक निदेशकों द्वारा चलाया जाता है।

(ङ) निदेशकों के नाम, पते तथा व्यवसाय :

नाम	व्यवसाय तथा पता
श्री के०एल० पुरी	अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक, भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लि०, 18-20 कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली
श्री एच०एम०एस० भटनागर	अपर सचिव तथा वित्तीय सलाहकार, उद्योग मन्त्रालय, उद्योग भवन, नई दिल्ली
श्री एस० कानुनगो	संयुक्त सचिव, उद्योग मन्त्रालय (भारी उद्योग विभाग), उद्योग भवन, नई दिल्ली
श्री आर०एन० श्रीवास्तव	निदेशक (कार्मिक), भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लि०, 18-20 कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली
श्री वी०एस० सामंत	निदेशक (पावर), भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लि०, 18-20 कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली

(च) तथा (छ) लाभ तथा लाभांश :

31 मार्च को समाप्त वर्ष	कर-पूर्व लाभ	कर-परचातु लाभ	लाभांश	(रु० करोड़ में) पूंजी पर लाभांश %
1981	37.52	37.52	9.00	6%
1982	51.65	30.15	10.39	6%
1983	60.42	37.42	12.19	6%

(ज) वो अंतिम लेखा-परीक्षित तुलन-पत्रों के अनुसार कम्पनी की संक्षिप्त वित्तीय स्थिति :

	31.3.83 की स्थिति के अनुसार	31.3.82 की स्थिति के अनुसार	31.3.83 की स्थिति के अनुसार	31.3.82 की स्थिति के अनुसार
देयताएं				
शेयर पूंजी	203.21	173.21	448.73	401.37
आरक्षित तथा अधिशेष	167.14	145.54	0.07	0.07
प्रतिभूत ऋण	264.08	199.32	1504.10	1254.62
अप्रतिभूत ऋण	372.80	408.05	108.33	91.80
चालू देयताएं एवं धन-व्यवस्था	1054.00	821.74	कूट नहीं	कूट नहीं
	—	—	कूट नहीं	कूट नहीं
कुल	2061.23	1747.86	2061.23	1747.86

टिप्पणी : प्रारंभिक देयताओं के संक्षिप्त व्योरे :

	31.3.83 को	31.3.82 को
कम्पनी के विरुद्ध दावे जो ऋणों के रूप में स्वीकार नहीं किए गए	44.91	43.58
बैंकों से बढ़ावा बिल	57.14	14.23
बैंक तथा अन्यो द्वारा जारी गारंटियों के लिए दी गई प्रति-गारंटियां	0.25	—
विवादग्रस्त सीमाशुल्क के दावे	5.60	10.09
योग	107.90	67.90

(झ) वह रकम जो कम्पनी, यथा संशोधित कम्पनी (एक्सेप्टेड ऑफ डिपॉजिट्स) नियमावली, 1975 के अंतर्गत जमा के लिए निर्धारित है, अर्थात् कम्पनी का वाणिज्यिक बैंक में जमा राशि के योग का 25% :

91.89 करोड़ रु०

(अ) 31.3.1983 को प्राप्त जमाएं :

62.54
करोड़ रु०

(उ) गैर-दावायुक्त जमाओं के अलावा कम्पनी के पास कोई मियाद-बाहर जमाएं नहीं हैं।

(घ) कम्पनी एतद् द्वारा घोषित करती है :

- कि उसने यथा संशोधित कम्पनी (एकमोटर्स ऑफ इण्डिया लि.) नियमावली, 1975 के उपबंधों का पालन किया है;
- कि इन नियमों के पालन करने का अर्थ यह नहीं है कि जमाओं की वापसी की गारंटी केन्द्रीय सरकार की है;
- कि कम्पनी द्वारा स्वीकृत जमाएं अप्रतिभूत हैं और अन्य अप्रतिभूत देयताओं के समान हैं।

कम्पनी की निम्नलिखित योजनाओं के अंतर्गत 1,000 रु० के मुफ्तों में तथा कम से कम 1,000 रु० की जमाएं/नवीकरण आवेदन आमंत्रित हैं, बशर्ते कि आवेदन-पत्र में दिए गए नियम और शर्तें पूरी होती हों :

I. संचयी जमा योजना

न्यूनतम जमा राशि	तीन वर्ष बाद परिपक्वता पर देय रकम	न्यूनतम जमा राशि	तीन वर्ष बाद परिपक्वता पर देय रकम
रु० 1,000	रु० 1,515	रु० 10,00,000	रु० 15,25,000
जमा कराए गए प्रत्येक अतिरिक्त 1,000 रु० पर परिपक्वता पर 1,515 रु० दिए जाएंगे		जमा कराए गए प्रत्येक अतिरिक्त 1,000 रु० पर परिपक्वता पर 1,525 रु० दिए जाएंगे	

टिप्पणी :

- कर्मचारियों, भूतपूर्व कर्मचारियों और मृत कर्मचारियों की विधवाओं द्वारा जमा कराए गए 1000/- रु० के परिपक्व होने पर 1525/- रु० की रकम लीवाई जाएगी।
- संचयी जमा योजना के अंतर्गत वार्षिक व्याज 15% की दर पर लगाया जाएगा और हर वर्ष मिश्रित कर दिया जाएगा, लेकिन जमा की परिपक्वता के समय रकम में आने वाले अंतर को समायोजित कर लिया जाएगा और शेष पर कर काट दिया जाएगा।

II. सावधि जमा योजना

श्रेणी	अवधि और प्रतिवर्ष साधारण व्याज की दर		
	1 वर्ष	2 वर्ष	3 वर्ष
जनता से प्राप्त जमाएं	11.5%	12.5%	14%
अपने कर्मचारियों, भूतपूर्व कर्मचारियों, कम्पनी के मृत कर्मचारियों की विधवाओं और भाग्यताप्राप्त धर्मार्थ न्यास्तों और रेजीमेंटल वरग अथवा सहायक सेनाओं के कल्याण के लिए केन्द्रीय सशस्त्र सेनाओं द्वारा स्थापित गैर-पब्लिक वॉश से प्राप्त जमाएं	12%	13%	14.5%

टिप्पणी :

व्याज का हिसाब 30 सितम्बर व 31 मार्च को लगाया जाएगा और छमाही तथा परिपक्वता पर भुगतान किया जाएगा। जहां जमा रकम एक लाख रु० या उससे अधिक है, वहां व्याज 30 जून, 30 सितम्बर, 31 दिसम्बर और 31 मार्च को सम्पादन अवधि के लिए दिया जाएगा। व्याज इंस्टैन्ट वारंटों के जरिए अदा किया जाएगा, जो देश की भारतीय स्टेट बैंक की सभी शाखाओं पर सममूल्य पर भुत्ताए जा सकेंगे।

रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया ने विदेशी मुद्रा विनियमन अधिनियम, 1973 के अंतर्गत कम्पनी को भारतीय राष्ट्रीयता/मूल के गैर-निवासियों और भारतीय राष्ट्रीयता/मूल के गैर-निवासी व्यक्तियों के स्वामित्व वाले विदेश स्थित ब्रिचवेरट निवासियों को कुछ निषेधों और शर्तों के साथ मूलधन तथा उस पर लगे व्याज को पूर्ण प्रत्यावर्तन अधिकारों सहित कम से कम 60% तक स्वीकार करने की सामान्य अनुमति प्रदान कर दी है।

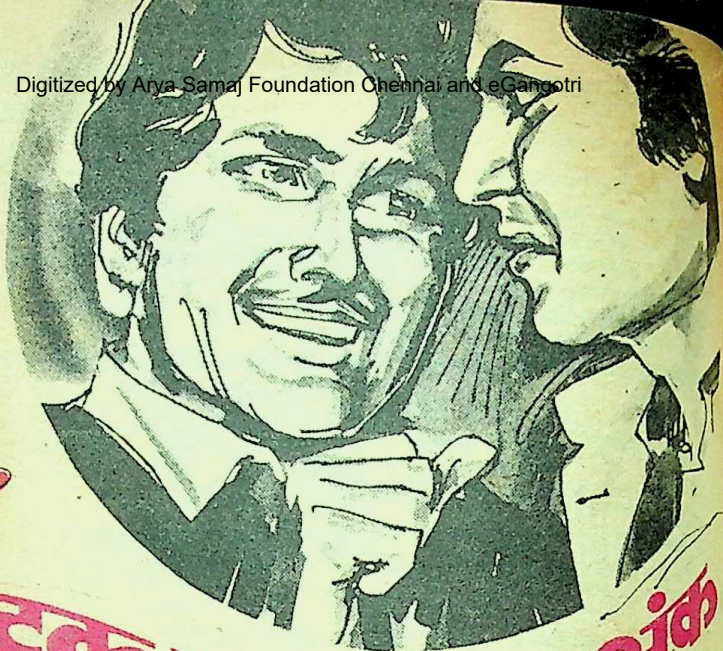
भारतीय राष्ट्रीयता/मूल के अनिवारियों से बिना प्रत्यावर्तन अधिकार के तीन वर्ष, दो वर्ष तथा एक वर्ष की परिपक्वता अवधि के लिए जमाएं स्वीकार करने के लिए पहले प्राप्त अनुमति का फिर से नवीकरण कराने के लिए भारतीय रिजर्व बैंक से अनुरोध किया गया है।

उपयुक्त विज्ञापन का पाठ निदेशक मण्डल ने अपनी 22 सितम्बर, 1983 की बैठक में स्वीकार कर लिया है और उसकी एक प्रतिलिपि पर बोर्ड द्वारा विज्ञापन स्वीकृत करने समय यथा गठित कम्पनी के निदेशक मण्डल के अधिकांश निदेशकों के हस्ताक्षर हैं, पंजीकरण के लिए कम्पनियों के रजिस्ट्रार, दिल्ली तथा हरियाणा को दे दी गई है। यह विज्ञापन कम्पनी के निदेशक मण्डल के अधिकार से तथा उसके नाम से जारी किया जाना है।

भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लि० के
निदेशक मण्डल के आदेश द्वारा
एम० नारायणस्वामी
सचिव

नई दिल्ली
दिनांक : 30.9.1983

आपकी पूंजी, हमारी सफलता : दोनों साधन सहायक होते हैं



जाटक का दूसरा अंक

कहानी • चंद्रमोहन प्रधान

भोजन कर के जैसे ही मैं डेरे में लौटा, देखा कि नत्थू महोदय सीढ़ियों पर धरना दिए बैठे हैं। पीछे वापस भागने का सवाल ही नहीं था, क्योंकि इस कमबख्त ने मुझे देख लिया था। मन ही मन मैं समझ गया, आज की रात चौपट हुई ही, ऊपर से दंड भी मिलेगा।

मुझे देख कर नत्थू ने बत्तीसी निकाली। जम्हाई लेता हुआ बोला, "यार घंटे भर से यहीं पहरा दे रहा हूँ।"

"बड़ा उपकार किया मुझ पर," मैं ने चिढ़ कर कहा और ताला खोल दिया। नत्थू ने भीतर प्रवेश कर के बत्ती जलाते हुए मकान मालिक के भाव से कहा, "आ जाओ।" और खुद जा कर मेरी चारपाई पर चित लेट रहा।

कुरसी पर बैठते हुए मैं ने कहा, "हां, अब बको।"

"बकूँ?" नत्थू ने आश्चर्य से आंखें फाड़ीं, "तुम कैसे दोस्त हो, यार! घर आए हुए दुश्मन की भी खातिरदारी की जाती है, मैं

तुम्हारा इतना पुराना दोस्त हूँ, पहले चाय तो पिलाओ। खुद तो ढाबे से गले तक ठूस कर चले आ रहे हो..."

नत्थू से बहस कर के जीतने का हम सर्वोच्च न्यायालय के वकीलों में हो तो हो, हमारे जैसे सामान्य लोग तो उस से बहस कर नहीं सकते। कुछ कहना बेकार समझ कर मैं उठा और स्टोव जलाने लगा।

नत्थू छत को देखता जैसे अपने से ही बोला, "इतने बड़े बाप का बेटा हो कर यह बेवकूफ इस डेरे में सड़ रहा है, ढाबे में दोखाई रुपए वाला खाना खा रहा है, एक नौकर तक नहीं।"

"अबे, इस आजादी की जिदगी के मजे तुझे क्या पता," मैं हंसा, "तू क्या जाने कि ऊपरी तड़कभड़क और अमीरी का प्रदर्शन मुझे कितना भारी लगता है। कुछ दिन यह मजे ले लूं फिर तो फंसना ही होगा।"

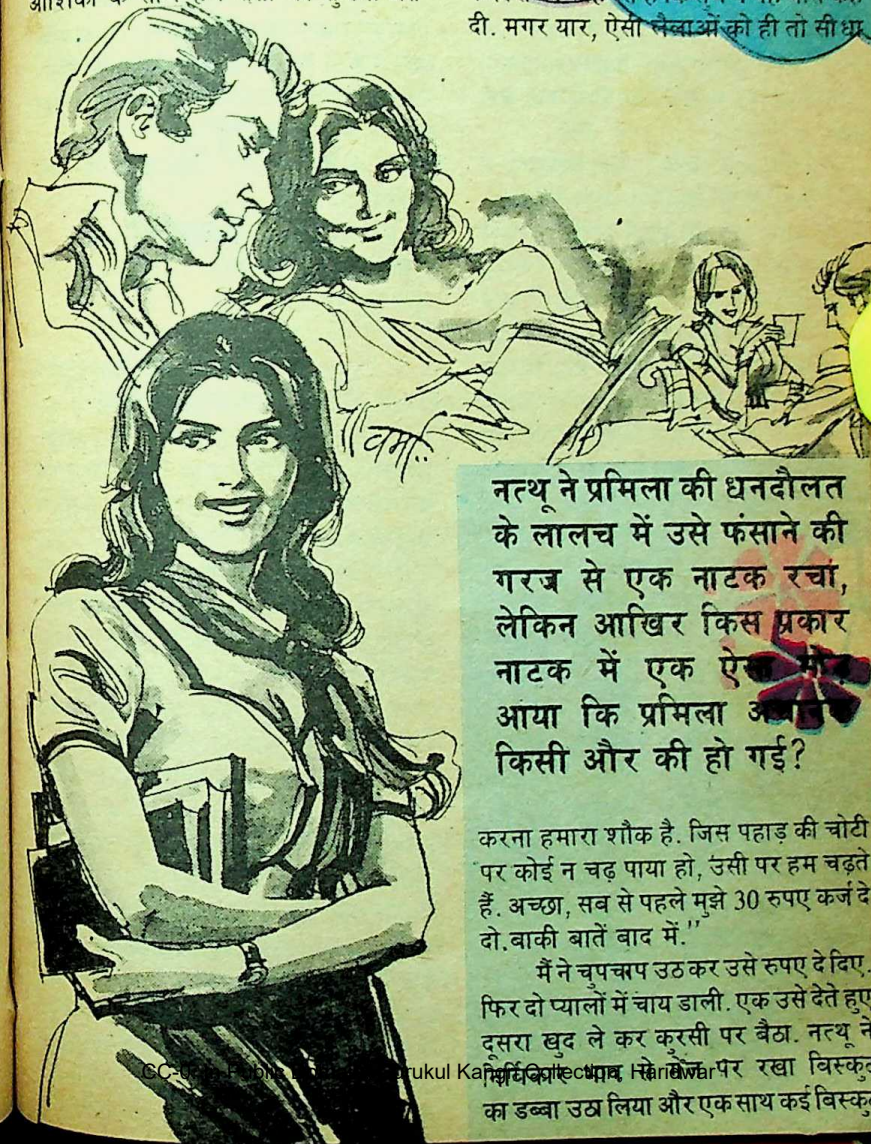
नत्थू छत की ओर अपलक देखता रहा। यों ही, थोड़ी देर बाद उस ने कहा, "यार रवि,

प्रमिला के बारे में बहुत कुछ जानने को है। Foundation के कामों बाद रोज़ाना कील है कि मजनू को फिरा नंगा, पागल था, वरना हम तो लैला के दुपट्टे की सलवार सिला लेते।

"यह तो ठीक है, मगर यह वैसी लैला नहीं है, बरखुरदार. यह तो तुम्हारी ही पतलून को लंगोटी बना देगी."

"क्या कहना, क्या कहना." नत्थू मस्ती से झूमता हुआ बोला, "हम जैसे फकीरों की सोच है कि तम ने यह बात कह दी. मगर यार, ऐसी लैलाओं को ही तो सीधा

नत्थू ने दोनों कान छुए. "यह तुम क्या कह रहे हो? मैं, मजनू? ऐसे सड़ेगले आंशिकों के साथ हम संतों की तुलना मत



नत्थू ने प्रमिला की धनदौलत के लालच में उसे फंसाने की गरज से एक नाटक रचा, लेकिन आखिर किस प्रकार नाटक में एक ऐसा मोड़ आया कि प्रमिला अब किसी और की हो गई?

करना हमारा शौक है. जिस पहाड़ की चोटी पर कोई न चढ़ पाया हो, उसी पर हम चढ़ते हैं. अच्छा, सब से पहले मुझे 30 रुपए कर्ज दे दो. बाकी बातें बाद में."

मैं ने चुपचाप उठकर उसे रुपए दे दिए. फिर दो प्यालों में चाय डाली. एक उसे देते हुए दूसरा खुद ले कर कुर्सी पर बैठा. नत्थू ने बिस्कुट का डब्बा उठा लिया और एक साथ कई बिस्कुट

मुंह में ठंस लिए फिर विस्कृत चबाता हुआ बोला, "सुनी रवि, तुम्हें एक बात माननी होगी."

नत्थू की बात मैं ने पहले भी कई बार मानी है और नतीजा हमेशा कष्ट-दायक ही रहा है. एक बार, उस का एक पत्र एक लड़की के हाथों में पहुँचाने की चेष्टा करते हुए मुझे प्रधानाचार्य के सामने पेश होना पड़ा था. और मैं विद्यालय से निकलतेनिकलते बचा था, क्योंकि हस्तलिपि में फर्क साबित हो गया था, किंतु डांट बुरी तरह पड़ी थी.

"जी, माफ कीजिए. मुझे विद्यालय से नहीं निकलना है. यह मेरा चौथा वर्ष है."

"रवि, कुछ तो शरम करो." नत्थू ने बड़े पीड़ित भाव से कहा, "याद करो जब तुम फर्स्ट ईयर फूल बनाए जाने वाले थे, तो तुम्हें किस ने सीनियर दादाओं से बचाया था? इसी नत्थू ने. जब तुम्हारे गांव वाले चाचाजी यहां आए और तुम्हारे किसी कार्यक्रम में व्यस्त रहने के कारण यहीं सीढ़ियों पर मुंह लटकाए खड़े थे, किस ने उन्हें ढाबे में ले जा कर भोजन कराया था और कील से ताला खोल कर उन्हें भीतर बैठाया था? इसी नत्थू ने न. जब सेकेंड ईयर की परीक्षा में तुम परची देने के कारण पकड़े जाने वाले थे तो उस पुरजी को किस ने झट से निगल कर तुम्हारी जान बचा दी थी? इसी नत्थू ने न. जब..."

"मान गया, मान गया." मैं ने उसे रोका, "तुम ने बड़े उपकार किए हैं मुझ पर, लेकिन मैं भी तुम्हारी बात मान कर निकलतेनिकलते बचा हूँ."

"निकल तो नहीं गए, यदि ऐसी नौबत आती तो देख लेते तमाशा. हड़ताल करा देना तो मेरे बाएं हाथ का खेल है. प्रधानाचार्य को 16 का पहाड़ा याद आने लगता." नत्थू ने शान से कहा.

नत्थू कहता हो तो ठीक है. पिछले 12 साल से वह यहीं रह कर पढ़ रहा है और उस के कई जूनियर मित्र प्रोफेसर भी हैं. दादा लोग भी उस से दबते हैं. कालिज के अधिकारियों ने

उस से लड़काना भी छोड़ दिया है. कई बार निरर्थक हड़तालें करा कर लोगों की नाइंदम कर चुका है.

मैं ने हाथ जोड़ दिए, "अच्छा बाबा, तुम्हीं सही कह रहे हो. कहो, क्या काय है?"

"शाबाश, यह हुई न बात. आखिर तो फरमावरदार ही. इसी से तो मैं तुम्हें सब गहरा दोस्त मानता हूँ."

नत्थू चाय में विस्कृत डुबा कर खा रहा. फिर कुछ सोच कर बोला, "यार, रवि बात यह है कि मैं ने यह तय किया है कि तुम्हारा इश्क कालिज की ब्यूटी क्वीन प्रमिला से कराया जाए."

"क्या कहा?" मेरे हाथ से का गिरतेगिरते बचा.

"अरे यार, घबराते क्यों हो? वह लड़की ही तो है, कोई शेरनी तो नहीं है. पहले बात तो सुन लो."

"देखो नत्थू," मैं ने निर्णय दिया, "क्यों तो सर्कस वालों के तंबू में घुस कर शेरनी की मूछ का बाल उछाड़ लाऊ. प्रिंसिपल साहब की नाक पर से चश्मा उतार कर ला दू? मगर यह काम मुझ से हरीशच नहीं होने का."

"अरे, नाहक पतले मत हो. पहले बात तो सुनो. असल में, तुम यह इश्क मेरे लिए करोगे. मैं उस से इश्क करना चाहूँ, तो वह पुट्टे पर हाथ नहीं रखने देगी. तुम पहले उसे हत्थे पर चढ़ाओ, ठीक मौके पर मैं आ धमकूंगा."

"और, वह अपना इश्क मुझ से हट कर तुम पर थोप देगी, यही न." मैं ने कहा, "नत्थू, तुम डाक्टर से अपनी खोपड़ी की जांच कराओ."

"यही तुम में ऐब है, पूरी बात नहीं सुनते." नत्थू ने सिगरेट की डब्बी उठा कर सिगरेट सुलगाई और फिर धुआं उगलता बोला, "वास्तव में, प्रमिला से तुम्हें प्रेम बाँटे ही करना है. तुम तो बस, उसे हत्थे पर चढ़ाने की काशिश करते रहोगे. एक दिन मौके पर मैं आ धमकूंगा और तुम से उसे बचाने के

पराई यादें

मालूम हुआ हम को
जब रुठ गई हम से,
यादें भी पराई थीं
जागीर न थी अपनी.

—शहरयार



लिए तुम्हें एकदो हाथ मार दूंगा. तुम भाग खड़े होना. फिर मैं सब देख लूंगा."

"यह बड़ा घिसापिटा फिल्मी तरीका है," मैं ने कहा, "फिर मुफ्त में अपनी मरम्मत भी..."

"अरे, नाहक क्यों दुबले हो रहे हो, सचमुच के हाथ थोड़े ही पड़ेंगे, सब नाटक ही तो होगा."

"और उस महामाया ने जा कर प्रधानाचार्य से कह दिया तो?"

"कहा न, सब मुझ पर छोड़ दो. वह कुछ नहीं करेगी." नत्थू ने सीना ठोका.

नत्थू की योजना जैसी भी हो, मुझे तो सिपाही की तरह आंखें मूंद कर सेनापति की आज्ञा की तरह उसी पर अमल करना था. दूसरे ही दिन उस की योजनानुसार प्रमिला से मैं ने समय पूछ लिया. उस ने पहले तो घूर कर मेरी घड़ी की ओर देखा, फिर बोली, "रविजी, आप को भी वक्त पूछने की हवा लग गई."

"जी, देखिए न, बात है कि मुझे अपनी घड़ी के सुस्त होने का संदेह हो रहा है. इसी लिए..."

"सवा बारह," उस ने झटके से कहा था और कक्षा में जा घुसी.

धत् तेरे की. नत्थू की ऐसी की तैसी. मेरे जैसे शरीफ ब्रह्मचारी के नाम से मशहूर छात्र को भी उस ने आज एक लड़की के हाथों जलील करवा दिया. उस पर मन ही मन उफनता हुआ मैं बाहर निकल चला ही था कि एक खम्भे की ओट से बत्तीसी कढ़ी नत्थू महोदय वरामद हुए.

"शाबाश बहुत ठीक चल रहे हो." उस ने जैसे प्रमाणपत्र दिया.

"देखो, नत्थू..."

"देख ही रहा हूं. तुम होनहार निकलोगे. चलो, कैंटीन में बैठते हैं. आज के पहले मोर्चे की फतह का समारोह होगा."

कैंटीन में नत्थू ने सिधाड़े, रसगुल्ले और चाय मंगवाई. मैं ने अपना क्रोध छिपाए रखते हुए कहा, "यार, इस तरह क्या होगा. समय पूछ लेने में क्या रखा है. फिर उस ने कैसे लहजे में बताया था, यह भी तो खयाल करो."

"अबे, तुझे क्या पता इन बातों का." नत्थू ने पूरा रसगुल्ला मुंह में रखा, "ये लड़कियां पहले तो यों ही भड़कती हैं जैसे जान ही निकाल लेंगी. बाद में क्या होता है? पल भर चैन न पाऊं सजनवां, तोरे बिना, फिल्में देखा करो, यार."

"नत्थू के बच्चे. हम कालिज में पढ़ने आए हैं या रिश्ते बनाने?"

"रिश्ते बनाने." नत्थू ने इतमीनान से कहा, "पढ़ने में क्या रखा है, जब चाहा, पास हो लेंगे. मगर, ऐसी जोरदार लड़की फिर कहां से नसीब होगी?"

नत्थू चिकना घड़ा है. मन ही मन उफनते हुए मैं ने उसे कई वजनदार गालियां दे दीं.

नत्थू ने गंभीर भाव से कहा, "रवि रामचंद्रजी और लक्ष्मणजी भी तो पढ़ने के लिए आये हैं. उनके साथ गए थे, लौटते हुए जनकपुर से विवाह करते आए, मैं तो इन



जब हलके से भिड़ा हुआ दरवाजा खुला तो चौखट पर पिताजी खड़े थे.

महापुरुषों का अनुसरण कर रहा हूँ."

"ठीक कह रहे हो," मैं ने ताना कसा, "बर्नाड ने कहीं कहा है—, अपना उल्लू सीधा करने के लिए शैतान भी धर्मशास्त्र से हवाला दे सकता है."

"पर यह उल्लू तुम्हीं को सीधा करना है, समझे? जैसे योजना बनाई है, कदम बढ़ाते रहो. शाबाश, काम बनने पर मेरी तरफ से तुम्हें एक मोटर साइकिल का उपहार पक्का है."

"मोटर साइकिल? तुम..."

"अबे, उस का बाप देगा." नत्थू बड़े प्रसन्न भाव से बोला.

नत्थू की योजनानुसार, कदम दर कदम मैं बढ़ता रहा. प्रमिला मेरे पिछले वर्ष के नोट्स भी लेने लगी है और हम दोनों कैंटीन में भी बैठने लगे. यद्यपि मैं इस तरफ से होशियार रहा कि कोई अफवाह न उड़े. फिर भी कई लोगों ने टोकना शुरू कर दिया.

अब नाटक का दूसरा अंक प्रारंभ होना था. अर्थात् मेरे द्वारा प्रमिला के साथ बदतमीजी तथा मौके पर नत्थू महोदय का बंबडया हीरो बन कर प्रकट होना. मेरी झूठी मरम्मत और फिर सारा मामला नत्थू के पास में. फिर लंबे प्रेमालापों के बाद, एक दिन नत्थू मियां का प्रमिला से विवाह, जिस में नत्थू के अनुसार बराती ए खास की उपाधि मुझे मिलने वाली थी तथा फिर जैसे उन के दिन फिरे, वैसे भगवान सब के दिन फेरे, जैसा का भरत वाक्य.

इस अंक का परदा उठने में देर इसलिए हो रही थी कि पिटाई की शर्त से मैं हिचकिचा रहा था. माना कि नकली पिटाई तो सही, किंतु पीड़ित, असहाय सुंदरी की रक्षा करने में नत्थू कहीं नाटक भूल कर सबे जाश में आ गया तो मेरे दो चार दांतों के बर्फी शहीद होने की संभावना थी. सब से बुरी बात

तो यह थी कि मैं इस योजना में अपने बचाव के लिए बदले में कुछ नहीं कर सकता था, मुझे तो बस पिट कर भागना था।

पर उधर नत्थू को संदेह होने लगा कि कहीं मैं प्रमिला से सचमुच तो प्यार नहीं कर बैठ हूँ। अतः रविवार को उस ने दोपहर में मेरे डेरे पर मुझे आ पकड़ा।

"देखो यार, यह अमानत में खयानत वाली बात बड़ी नामुनासिब होती है।"

"कैसी अमानत, बे?"

"उड़ो मत." उस ने गंभीर भाव से कुर्सी पर बैठ कर कहा, "तुम ने प्रमिला को अपनी भाभी बनाने के बदले बीवी बनाने का प्रयत्न तो नहीं शुरू किया है?"

"दिल्लगी ही दिल्लगी में, दिल लगा बैठे हैं हम." मैं ने मजाक किया।

"ऐ." नत्थू सिर पकड़ कर बैठ गया।

मैं ठहाका लगा कर हंसा, "अबे मूरखचंद. मैं ने मां के सामने कसम खा रखी है कि बाप की तय की हुई लड़की से ही शादी करूंगा. इतमीनान रखो, वह तेरी ही श्रीमती बनेगी."

"यार, तुम्हारे मुंह में घीशक्कर."

नत्थू की आंखें चमकने लगीं, "उस के पिताजी लखपति हैं. समझ लो दोस्त, यह काम बना, तो तुम्हारा यह नत्थू भी सेठ नत्थू प्रसाद बन कर रहेगा. फिर तो तुम हमें मुक़द़्दक कर सलाम करोगे. कार, बंगला..."

"ठहरो जरा, मैं ने टोका, "यों बीवी के लिये से यह सब क्या उचित..."

आप तो हैं बेवकूफ" नत्थू ने फतवा दिया, "चले गांधीजी बनने. अरे, तुम के बाप के और है ही कौन. बेटी के लिए बाप? तभी तो मैं ने उसी का चुनाव किया है. उचित अनुचित का दकियानुसी पाठ मुझे पढ़ाओ, रवि. तुम्हारी तरह मैं उल्लू थाड़े हो हूँ कि बाप के पास लाखों की जायदाद है और बेटी यहां कालिज में पड़ा है. साइकिल तो लखपति ससुर क्यों नहीं खोजू? तुम यह क्यों उल्लास कर रहे हो?"

"चाय के लिए पानी रख," स्टोव जलाते हुए मैं ने कहा, "नत्थू, एक बात है. परसों इसी शहर में भारतीय मुद्रकप्रकाशक संघ का अधिवेशन है. मेरे पिताजी उस के प्रांतीय अध्यक्ष हैं और अधिवेशन में उन्हें स्वागताध्यक्ष बनाया गया है. वह यहां कल शाम तक आ रहे हैं, ग्रैंड होटल में ठहरेंगे. उन के कार्यक्रमों से तो मुझे मतलब नहीं है, पर कल भेंट करने स्टेशन जाना होगा. फिर पता नहीं वह क्या हुक्म लगा दें, तीनचार दिन सब करो."

नत्थू को बड़ी निराशा हुई. वह जल्दी अपना हीरोपना दिखाने के लिए बैचन था.

"खैर, यही सही," उस ने पस्त आवाज में कहा और सिगरेट फूंकने लगा.

दूसरे दिन संध्या को स्टेशन जा कर मैं ने पिताजी से भेंट की. उन के ट्रेन से उतरने पर मुद्रकप्रकाशक संघ वालों ने भी उन का स्वागत किया और होटल ले चले, जहां उन्हें ठहरना था. पिताजी ने जातेजाते मुझ से कह दिया कि मैं कल अधिवेशन खत्म होने पर उन से रात में होटल में मिल लूं.

स्टेशन से निकला तो बाहर नत्थू बत्तीसी काढ़े खड़ा दिखाई दिया.

"तुम यहां क्या कर रहे हो?" मैं ने पूछ लिया.

"यार, एक नई बात सूझी है"

"उसी कार्यक्रम पर दृढ़ रहो, भलेमानुस, तुम्हारे लिए पिटने तक को तो तैयार हो गया हूँ."

"वह बात नहीं." नत्थू ने सिगरेट की डब्बी निकाली, "कार्यक्रम वही रहेगा. यह बात उसी सिलसिले में सूझी है."

"तो बको, जल्दी बको. अभी मुझे कल की कक्षाओं के लिए तैयारी करनी है."

"खबरदार, रवि," नत्थू ने उंगली उठा कर चेतावनी दी, "कक्षा का नाम ले कर मेरा मूड खराब मत करो. बात सुनो."

हम दोनों रिकशाले कर डेरे आए. नत्थू ने बड़े शहस्पर्तिक भाव से कहा मैं शुरू किया, "रवि, नाटक का दूसरा अंक तुम्हारे डेरे पर सिखाया जा रहा है. क्या तुम जानते हो?"

इधरउधर, पार्क या कॉलेज आदि में कोई देख कर यदि बीच में आ कूदा तो सारा मामला गुड़गोबर हो जाएगा। दूसरे वे तुम्हें सचमुच पीट देंगे।"

"मगर, उसे यहां लाओगे कैसे?" मैं ने परेशानी से कहा, "लड़की है..."

"लड़की ही है, कोई भालू तो नहीं है। तुम बैठे देखते रहो। मैं सब ठीक कर दूंगा तुम्हें सिर्फ इतना करना है कि अपने जन्म दिन निमंत्रण उसे दे देना और यही डेरे का पता।"

"किसी को साथ लेती आई तो?"

"अरे भोंदू! यह क्या कोई ब्राह्मण भोजन है? कह देना यों ही तीनचार चुने दोस्तों की पार्टी है, वह बड़ी तेज और साहसी लड़की है। अकेली आ जाएगी।"

न चाहते हुए भी, इस सरासर आत्मघाती लगने वाले कार्यक्रम पर मुझे राजी होना पड़ा।

सब ठीक कर के नत्थू ने पूरी आधी केतली चाय चढ़ाई और छः स्लाइसों पर भरपूर मक्खन तथा चीनी लगा कर उदरस्थ किए।

हुकम नत्थू महाराज का! पता नहीं इस नालायक और बेवकूफ से आदमी में क्या बात है कि मैं अपना नुकसान कर के भी, इस के सम्मोहन में आ जाता हूं।

यह तय था कि नत्थू ठीक पांच बजे आएगा। यों हम लोग झूठी पार्टी की भी छोटीमोटी व्यवस्था कर चुके थे। नमकीन, मिठाइयां आदि मैं ने दिन में ही ला रखी थीं। नत्थू मुझ से मेरा सब से बढ़िया सूट उधार ले कर सजनेसंवरने को घर गया हुआ था। हम लोगों को दिखाना था कि तीन ही घनिष्ठ मित्रों की आपसी पार्टी है, अब यह तो नत्थू ही जाने कि प्रमिला उसे कितना घनिष्ठ मानती होगी।

घड़ी ने साढ़े पांच, फिर पौने छः बजा दिए नत्थू नंदारद! जब छः बजे भी उस ने दर्शन नहीं दिए तो मैं घबराया, पर मन को समझा लिया। बीच में भी आए तो क्या हज है, कार्यक्रम तो वही है। खटकने वाली बात होती

रहता। वह सोचती जैसे सिर्फ उसे ही बुलाना है।

छः बजे के बाद प्रमिला ने दर्शन दिए अकेली आई थी, अपनी दो सीटों वाली गाड़ी खुद चला कर लाई थी। उस के आते ही कमरे में जैसे इंद्र धनुष खिल उठा। कमरा मदन से सुगंध से महकने लगा। प्रमिला मुझे इतनी सुंदर पहले कभी नहीं दिखी थी। वह वैसे कमर तो थी, पर आज पार्टी में जाने की तैयारी के आई थी।

मन को एकाग्र रखने के लिए मैं ने नत्थू उस के प्रति अपनी पुरानी मित्रता एवं योजना का ध्यान किया था।

"अरे रवि! अकेले ही हो, तुम?" नत्थू यकायक चकित हो कर चहचहाई।

उस के वायलिन की झंकार सरीखे स्वर के जादू से उबर कर मैं ने बखिसियानी हंसी के साथ कहा, "बैठो, कैं सिर्फ दो दोस्तों को और बुलाया है, मि जानती हो, कितने लेटलतीफ और लापरवाह होते हैं ये लोग।"

"जाने दो!" उस ने मेज पर रिवन बंधी दो पुस्तकें रखते हुए कहा, "जन्मदिन की असंख्य बधाइयां लो। तुम ने पहली बार यह पार्टी दी है।"

"इस के पहले तुम से ही मुलाकात कहां थी!"

मैं ने अनजाने ही उसे मक्खन लगाया।

वह हंसी, बोली, "बड़े गौर से देख रहे हो क्या बात है?"

"कुछ नहीं।" मैं ने लज्जित हो कर आंखें मोड़ कर उस के समाने प्लेट रखी। "लो, यह नाश्ता तो शुरू करो, पर तुम ने उपहार क्यों लिया बैकार में।"

उस ने एक समोसा उठाया, "उपहार क्या, यह आवश्यक रस्म है। खैर, यह बड़ा हुआ कि तुम्हारा वह मनहूस दोस्त नत्थू नहीं है।"

नत्थू की याद आने से मैं ने घबराया, उसे

बदली

गुनगुनाती हुई आती हैं
फलक से बूंदें,
कोई बदली तेरी पाजेब
से टकराई है.

—कतील शिफाई



करने लगा. आंखें रह रह कर प्रमिला की ओर उठ जातीं.

प्रमिला ने गौर से मुझे देख कर पूछा, "बड़े परेशान लग रहे हो, कुछ बात है जरूर!"

"अरे भई, उन्हीं लोगों के इंतजार में हूं, सो..."

"जाने दो उन्हें," वह हंस कर बोली, "आएंगे तो आ जाएंगे. नहीं तो सारी रसम लाई मेरी ही हुई!"

रसम लाई मुंह में रखते हुए उस ने मुझे फिर देखा और जरा हंसती हुई बोली, "आज क्या बात है जो तुम मुझे यों घूर कर देख रहे हो? क्या अच्छी नहीं लग रही हूं?"

"अच्छी?" मैं ने नाटक का तय किया हुआ संवाद भूल कर कह दिया, "प्रमिला, तुम से बड़ कर सुंदरी मैं ने जीवन में कभी नहीं देखी."

"अच्छा!" उस ने कौतूक के साथ कहा, "और, यह ज्ञान तुम्हें आज प्राप्त हुआ है."

"प्रमिला," मैं ने जरा भावुकता के साथ कहा, "सच मानो, मेरा जी चाह रहा है, कि..."

"मुझे चबा कर निगल जाओ, है न!" वह हसने लगी.

"अरे नहीं, नहीं, जी चाहता है, तुम्हें... तुम्हें... अपने हृदय में छिपा लूं!"

"देखो, रवि," प्रमिला ने गंभीर हो कर कहा, "तुम्हारी भावनाएं मैं समझ रही हूं कि तुम उस से ऐसी आशा मत रखो कि मैं किसी

लगाती फिरेती कालिज की लड़की की तरह

जो करेंगे वही मेरे हित में होगा. तुम मुझे बहुत अच्छे लगते हो. तुम मेरे पति बनने के पात्र हो, सामाजिक, पारिवारिक दृष्टि से यह निर्णय वह ही करेंगे."

मैं खुद को बड़ा आदर्शवादी समझता रहा था. अब पता चला, प्रमिला मेरी भी उस्ताद है. मैं गला साफ कर के कुछ कहने ही वाला था कि बाहर से खांसी की आवाज आई थी.

"नत्यू!" मैं किचकिचा उठा. जी में आया कि जा कर 10 जुते लगा कर उसे भगा दूं. आ गया दालभात में मूसलचंद. आना था तो वक्त पर आता! इस समय मुझे उस के वाहियात कार्यक्रम की रस्ती भर भी परवाह नहीं थी.

लेकिन जब हलकें से भिड़ा हुआ दरवाजा खुला तो मुझे चौखट पर पिताजी खड़े दिखाई पड़े! मेरी आंखों के आगे सौरमंडल के सभी ग्रह चक्कर लगाने लगे. संसार के आखिरी व्यक्ति वह होंगे, जिन के इस समय यहां पहुंचने की उम्मीद मुझे होती.

"प...प... पिताजी!" मैं खड़ा हो कर हकलाया.

"बैठो, बैठो!" वह भीतर आए, "पार्टी हो रही है! कैसी पार्टी है?" वह मुसकरा कर बोले.

"ज...ज..." मैं बहुत घबराया हुआ था कि इस नत्यू की वजह से मैं ऐसी स्थिति में पड़ गया

जन्म दिवस है इन की," प्रमिला ने मेरी बात परी की, "आप इन के पिताजी हैं?"

"नमस्ते! खुश रहो. बैठो भई, घबरा क्यों रहे हो! नाश्ता तो करो. मगर इस का जन्म दिवस तो दिसंबर में है."

"ऐं." प्रमिला ने आंखें चौड़ी कीं. फिर हाथ जोड़ कर बोली, "खैर, मैं अब घर जाऊंगी. मैं ने नाश्ता कर लिया है. अच्छा, मैं चलती हूं. नमस्कार."

उस ने उन्हें नमस्ते की और बाहर सड़क पर खड़ी अपनी गाड़ी में बैठ कर फुर्र हो गई. पिताजी उसे जाते देखते रहे.

मेरी हालत कुछ संभली तो पिताजी से कहने की कोशिश की, "पिताजी, बात यह है कि यह सिर्फ नाटक था."

"नाटक, कैसा नाटक?" उन्होंने बैठते हुए पूछा.

"मन ही मन नत्थू को चुनी हुई वजनदार गालियां देते हुए, मैं ने संक्षिप्त रूप में नाटक की बात बता दी कि नत्थू की मदद के लिए ही यह सब किया है. प्रमिला को देख कर मैं ने जो नाटक में गड़बड़ी की वह मैं छिपा गया.

"बड़ी गलत बात है!" उन्होंने जरा नाराजगी के साथ कहा, "तुम्हारे बारे में मुझे पता चलता रहता है कि सादे ढंग से डेरा ले कर रहते हुए पढ़ रहे हो, किसी चक्कर में नहीं पड़ते हो. तुम्हारी सारी गतिविधियां मुझे पता रहती हैं, पर यह बात मुझे भी पसंद नहीं आई. यह तो सरासर बचकानी बात है! तुम्हारे ऐसे दोस्त भी हैं, यह आश्चर्य है."

"वही एक ऐसा है." रोनी ओवाज में कहते हुए मैं ने नत्थू को मन ही मन दो चार गालियां और दीं.

"लगता है. इसी ने मुझे यह गुमनाम पत्र भेजा और तुम्हारे इस डेरे का पता दिया."

उन्होंने जेब से एक कागज निकाला. नत्थू की हस्तलिपि में था, "मान्यवर आज छः बजे संध्या के बाद नीचे दिए पते पर जा कर अपने सुपुत्र की कारगुजारी देखें." नीचे मेरा पता था.

नत्थू की लिखावट देख कर मैं ने दात

अधिवेशन से उठ कर ही आया हू. वहां अभी लौटना होगा. कल होटल में नि लेना."

वह कर बाहर निकल गए. उनकी खड़ी थी. उस में बैठ कर वह चले मैं बिस्तर पर गिर पड़ा.

नत्थू पता नहीं किस कंदरा में सार तरह दम साधे छिपा था. दूसरे दिन मैं को पिताजी से मिलने ग्रैंड होटल पहुंचा. रिसप्शन काउंटर पर बैठी लड़की ने फोन उन से बात की और मुसकरा कर बोले "ऊपर तीसरे माले में—सोलह नंबर कमरा!"

खड़ी लिफ्ट से मैं ऊपर आया. रुकी, तो बरामदे में ही पिताजी एक सम के साथ खड़े बांतें करते दिखे. मुझे देख मुसकराए, बोले, "इन्हें नमस्कार करो."

मैं ने उन अपरिचित सज्जन नमस्कार किया. पिताजी ने कहा, "जाते इन्हें?"

"जी नहीं."

"ये तुम्हारी मित्र प्रमिला के पिता हैं."

मेरे सिर पर जैसे गलियारे में रंगबिरंगा फानूस गिर पड़ा. प्रमिला ने अव शिकायत कर दी है. यह क्या सोचते हो

पिताजी ने गंभीरता से कहा, "प्रमिला मुझे बहुत ही पसंद आई. उस दिन तुम्हें कमरे के बाहर से उस की बातें मैं ने सुनी हर तरह से हीरों में तोलने योग्य लड़की इसे मैं गंवाना नहीं चाहता, अतः मैं ने तुम्हारे विवाह की बात पक्की कर दी है. अगले वर्ष होगी, तुम्हारी पढ़ाई पूरी पर."

मेरे कान सनसनाने लगे. कुछ दे मुंह बाए मैं उन्हें देखता रहा, फिर भड़क बेवकूफों की तरह लिफ्ट का बिनाछाया उस की बगल की सीढ़ियों से नीचे आ गया. उस की आंखों के हंसने की आवाज

हो गई. आवश्यक रस्मों से निबट कर, पिताजी को ट्रेन में चढ़ा कर जब मैं डेरे लौटा तो नत्थू महाराज सीढ़ी पर विराजमान थे!

उसे देखते ही क्रोध में मैं ने उस की गरदन पकड़ ली, "बदमाश! आज तुझे मार डालूंगा!"

"अरे, अरे, ठहरो यार!" नत्थू ने मेरे हाथों से अपनी गरदन छुड़ा कर खांसते हुए पूछा "क्या हो गया जो तुम आगबबूला हो रहे हो?"

"यह नाटक का तीसरा अंक है. साले!"

मैं ने दांत किटकिटाए, "अबे, तू उस दिन गाम को कहां गायब था?"

"ओह! तो यह बात है!" नत्थू ने जैसे क्या के साथ कहा, "पहले ताला तो खोलो."

मैं ने क्रोध में ताला खोल दिया. वह जा कर चरपाई पर लेट रहा और समझाने के शब्दों में बोला, "रवि, तुम बड़े नासमझ हो,

राम! समझ में नहीं आता, तुम एम.ए. में कैसे आ पहुंचे. उस दिन एक खास कारण से मुझे कार्यक्रम बदल देना पड़ा था. साथ ही सोचा,

मुझारे पिताजी को भी तमाशा दिखा दूं. जरा धैर्य ही रहेगा. इसी पर इतने नाराज हो गए.

तुम्हारी शादी तो उस से हो ही रही है, अब तो वही मेरी भाभी है."

"तुम्हारे जैसा बेशरम..."

"अरे भई, जब कार्यक्रम ही बदल गया तो..."

"बदल कैसे गया? तुम ने प्रमिला से शादी का इरादा नहीं किया था?"

"किया था," उस ने मुझे समझाया, "पर यदि अच्छी लड़की मिले, तो?"

"क्या मतलब?" मैं नहीं समझा.

"सुनो रवि, फोर्थ इयर की रचना तुम्हारे ही साथ पढ़ती है न! उस के पिताजी भी बड़े धनी हैं. पार्टी की शाम यहां आते वक्त बाजार में उसे देखा, तो कुछ मत पूछो," उस ने लंबी सांस ली, "तुम्ही सोचो, उस से प्रमिला की तुलना हो सकती है? उस के आगे तो प्रमिला, माफ करना सौ नंबर के बलब के आगे साठ पैसे की मोमबत्ती है. आह! वे मदमाती आंखें! वे गज भर लंबे बाल! गुलाब सरीखे होंठ..."

नत्थू आंख बंद किए गदगद स्वर में रचना की शान में कसीदे पढ़ता रहा और मैं अपने सिर को दोनों हाथों से पकड़े, बैठा उसे देखता रहा.

नई दिल्ली में

- अंगरेजी की नवीनतम पुस्तकें
- हिंदी प्रकाशकों की विविध विषयों पर पुस्तकें
- सरिता, मुक्ता, भूभारती, चंपक कैरेवान व वूमंस ईरा का वितरण केंद्र
- सरिता पत्र समूह के लिए विज्ञापन स्वीकार करने का केन्द्र



दिल्ली बुक कंपनी

एम/12 कलापूर मार्ग, नई दिल्ली - 1

मुक्ता

नए लेखकों के लिए कहानी प्रतियोगिता नए अंकुर

मुक्ता ने अपने जन्म ही से नए लेखकों को प्रोत्साहित किया है। कभी लेखकों के नाम से प्रभावित हो कर उन की रचनाओं को तरजीह नहीं दी है। मुक्ता के लिए रचना ही महत्वपूर्ण होती है। लेखकों का नाम या उस की ख्याति नहीं।

नए लेखकों को प्रकाश में लाने के लिए मुक्ता द्वारा समयसमय पर नए अंकुर प्रतियोगिताएं भी आयोजित की जाती रही हैं, जिन में केवल उन्हीं लेखकों की रचनाएं स्वीकृत की जाती हैं जिन की कोई रचना पहले कहीं न छपी हो।

अब इस प्रतियोगिता को सामयिक की बजाए स्थायी रूप दे दिया गया है। यह प्रतियोगिता निरंतर चलती रहेगी। इन में उन सभी नए लेखकों की कहानियों का स्वागत है जिन की कोई रचना पहले कहीं प्रकाशित नहीं हुई है। इन रचनाओं के लिए कोई अंतिम तिथि नहीं है। जैसेजैसे ये प्राप्त होती जाएंगी इन पर विचार कर के निर्णय किया जाता रहेगा और यथासंभव शीघ्र प्रकाशित कर दिया जाएगा। प्रत्येक रचना पर 75 रुपए का पारिश्रमिक दिया जाएगा। वर्ष के अंत में सभी 'नए अंकुर' रचनाओं पर पुनः विचार किया जाएगा और सर्वश्रेष्ठ रचनाओं पर निम्नलिखित पुरस्कार दिए जाएंगे :

प्रथम पुरस्कार : 200 रुपए
द्वितीय पुरस्कार : 100 रुपए
तृतीय पुरस्कार : 50 रुपए

ये पुरस्कार पारिश्रमिक के अतिरिक्त होंगे।
इस विषय में संपादक का निर्णय अंतिम व मान्य होगा।

रचनाएं भेजने से पहले कृपया मुक्ता कार्यालय से लेखकों के नियम मंगवा कर पढ़ लीजिए ताकि आप की रचनाओं पर विचार करने में सुविधा रहे।
इस के लिए 50 रुपये का बैंक ऑर्डर जमा करना पड़ेगा। प्रतीक लिखा लिफाफा भेजिए।

हमें इस बात पर आश्चर्य होता है कि सिगरेट की भाँति शराब की बोतलों पर भी यह क्यों नहीं छपवा दिया जाता है कि शराब पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। शराब कई मकसदों से पी जाती है। कुछ लोग गम कम करने के लिए पीते हैं, कुछ लोग दुःखियों के सान्निध्य में, तो कुछ लोग सिर्फ दूसरों का साथ देने के लिए ही जाम टकराते। इस लेख में हम उन लोगों की आँखें

खोल देना चाहते हैं, जो शरीफ आदमियों की तरह थोड़ी सी शराब पीते हैं और पी कर होश में रहते हैं। यानी अपना सब कामकाज पूर्ववत् करते रहते हैं। दंगा नहीं मचाते, ऐसे लोग प्रायः शराब के साथ आमलेट, काजू, नीबू, प्याज वगैरह खाते हैं और समझते हैं कि इस से शराब का प्रभाव कम हो जाएगा।

वैज्ञानिकों ने साबित कर दिया है कि शराब थोड़ी मात्रा में पीने पर भी काफी नुकसान पहुंचाती है। चाहे आप शराब की

अव्वल तो शराब
पिएं ही नहीं, पर यदि
पीने की कोई मजबूरी
ही हो तो कुछ बातों
का ध्यान अवश्य
रखें...



शराबियों के लिए हिदायतनामा

लेख • दीपक



चुस्की भरे पेट ही क्यों न लेते हैं, चाहे आप एक ही पैग क्यों न पीते हों, शराब तो नुकसान पहुंचाती ही है और आप को खबर भी नहीं लगती. खबर तब लगती है जब आप इसी तरह कई बरस शराब पी चुके होते हैं, लेकिन तब तक आप अपने सामाजिक परिवेश व यारदोस्तों के इस कदर दबाव में आ चुके होते हैं कि फिर इसे छोड़ना आप के लिए संभव नहीं होता. अगर आप ऐसी ही स्थिति में हैं तो आप पर कभी भी अलकोहल के घातक रोगों का आक्रमण हो सकता है.

शराब की कई किस्में होती हैं. जैसे बीयर, विहस्की, फ्रेंचवाइन, ब्रांडी, जिन, रम, वोदका इत्यादि. इन सब में अलकोहल का प्रतिशत अलग-अलग होता है और अलकोहल के अलावा उपस्थित रहने वाले अन्य पदार्थों जैसे फरफ्यूरल, टैनिन आदि का अनुपात

भिन्न रहने से स्वाद भी अलग-अलग होता है. लेकिन आप के शरीर को मतलब अलकोहल से है. बाकी 'स्वाद' लाने के पदार्थों का कोई खास महत्व नहीं है. तो ये जाए कि शराब आप के पेट में जा कर गुल खिलाती है.

हानिकारक अलकोहल

अलकोहल पेट में जाते ही आमाशक की दीवारों से पानी सोखती है. इस प्रक्रिया में जलन की अनुभूति होती है, उस से हम समझते हैं कि तत्काल गरमी आ गई. ठंड के दिनों में शराब पीने का एक बहाना भी होता है, पर यह नितांत भ्रम है. यह सब कि एक ग्राम अलकोहल आक्सीकृत हो कर नौ कैलोरी ऊष्मा देती है, लेकिन उस के पाचन में 18 घंटे लग जाते हैं. बल्कि अलकोहल की पेट के पाचक रसों से प्रतिक्रिया होती ही नहीं.

अलकोहल को पचाने का कार्य यकृत होता है. अलकोहल पूरी तरह पच कर कार्बोडाई आक्साइड गैस और पानी में परिवर्तित हो जाता है. यानी शरीर को काम का पदार्थ भी नहीं मिलता. उस पानी के कारण बीयर पीने के बाद पेशाब ज्यादा आता है.

अगर शराब तेज है या आप बिना पानी या सोडा मिलाए पीते हैं तो ज्यादा खतरा



Digitized by eGangotri Foundation Chennai and eGangotri

तब अलकोहल पेकरी बीमारों में इस बीमारी के साथ पानी खींचती है कि वहां से रक्तस्राव हो सकता है. ऐसा रक्तस्राव यदि बारबार होता रहे तो वहां पर अलसर हो जाने की संभावना रहती है.

यकृत की बीमारी

पाश्चात्य देशों में लोगों का खानपान अच्छा होता है और इसी से उन्होंने सदियों से यह भ्रम पाल रखा है कि उन के 'भोजन का एक अंग-शराब' उन्हें कोई नुकसान नहीं पहुंचाती. इस खुशफहमी को दूर किया है माउंट सिनाई स्कूल आफ मेडिसिन के डाक्टर इमैनुएल रूविन ने. एक देशव्यापी सर्वेक्षण से उन्होंने दिखा दिया है कि 25 से 45 वर्ष के पुरुषों में हर चौथी मौत यकृत की बीमारी-सिरोसिस से हो रही है. न्यूयार्क में तो 25 से 65 वर्ष के पुरुषों में हर तीसरी मौत इसी बीमारी से हो रही है. वहां मौत होने के पहले दो कारण क्रमशः हृदयरोग और कैंसर हैं.

अलकोहल का यकृत पर प्रभाव एकदम बिधे पड़ता है. यकृत का काम है चर्बी का गचन करना. यही यकृत जब चर्बी के बजाए अलकोहल का पाचन करने को मजबूर हो जाता है तो नतीजा होता है वहां पर चर्बी का जमाव और आखिर में सिरोसिस की बीमारी.

भारत में चूकि खातेपीते लोगों का आहार भी पौष्टिकता की दृष्टि से पूर्ण नहीं होता, इसलिए उन्हें तो खासतौर पर सावधान रहना चाहिए.

मैसाचुसेट्स जनरल हास्पिटल में पता लगाया गया है कि शराब पीने वाले प्रायः सभी लोगों का ट्राइग्लिसराइड का स्तर बढ़ा हुआ होता है. याद रहे कि ट्राइग्लिसराइड कोलेस्टेरोल से भिन्न चीज है, मगर हृदय रोगों के लिए समान रूप से जिम्मेदार है. जरूरी नहीं कि आप को एक बार दिल का दौरा पड़ चुका हो तभी आप हृदय रोग के खतरे में हों. अगर आप का ट्राइग्लिसराइड स्तर बढ़ा हुआ है तो आप पर रक्त की हमला कभी भी हो सकता है.



शराब के कारण आपसी संबंधों में टकराव सामान्य सी बात बन जाती है.

अमरीका के 'नेशनल इंस्टीट्यूट आन एलकोहालिक एब्यूज एंड एलकोहालिज्म' के अनुसार प्रतिदिन 86 प्रूफ व्हिस्की की तीन औंस मात्रा को भी 'ज्यादा' की श्रेणी में ही रखा जाना चाहिए.

अतः जरा सी 'चुस्की' लेने से संबद्ध खतरे आप के समक्ष रख दिए हैं. अगर आप चुस्की लेना छोड़ सकें तो बहुत अच्छा है, लेकिन अगर शराब पीने की बहुत ही मजबूरी हो तो निम्न बातों का खयाल रखें. शराब में ज्यादा से ज्यादा पानी मिलाएं, सोडा नहीं. सोडे में गैस के कारण पेट में शराब का अवशोषण और तेजी से होता है. शराब हमेशा भरे पेट पर लें, खाली पेट भूलकर भी नहीं. पेट में भोजन की उपस्थिति के कारण अलकोहल के जज्व होने की रफ्तार काफी मंद पड़ जाती है. डाक्टर को दिखा लें कि आप का यकृत तो ठीक है, यानी कहीं ट्राइग्लिसराइड बढ़ा हुआ तो नहीं है. नई खोज यह है कि कम वजन के आदमी पर अगर आप दुबले हैं तो शराब कम पिएं. •

संगठनों का औचित्य

लेख • सुरेंद्र अवस्थी

छात्र संघों की उपादेयता पर इन दिनों एक प्रश्न चिह्न सा लगा हुआ है। हड़तालें, धरने, घेराव, बसों की तोड़फोड़, परिसर के अंदर व बाहर सार्वजनिक संपत्ति का नुकसान, जलूस, प्रदर्शन व पुलिस से मुठभेड़ जैसी घटनाएं आजकल छात्रों के साथ जुड़ कर रह गई हैं। चार केंद्रीय विश्वविद्यालय—अलीगढ़ मुसलिम विश्वविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, जावहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय एवं बन्नारस हिंदू विश्वविद्यालय, जिन्हें समस्त देश में शिक्षा जगत के लिए आदर्श होना चाहिए था, पिछले तीन वर्षों में कई बार अनिश्चित काल के लिए बंद हुए हैं। परिणामस्वरूप इन में सत्र समय पर समाप्त नहीं हो पाया। जावहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में तो इसी कारण नए छात्रों



का प्रवेश भी रोक दिया गया।

देश के अन्य शिक्षा संस्थानों की स्थिति इस से भी बदतर है। इन में कई बार तो पूरे बरस पूरा सत्र ही शून्य घोषित कर दिया जाता है। इस बिगड़ती स्थिति में छात्र वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाले छात्र संघों से एक सकारात्मक भूमिका निभाने की अपेक्षा है।

नारेबाजी, हड़ताल और हिंसक घटनाएं आज विश्वविद्यालय परिसर में सामान्य सी बात बन कर रह गई हैं, छात्रों का हित सोचने वाले छात्र संगठन इस दिशा में आखिर क्या कर रहे हैं?

तक घेराव किया गया था, शारीरिक शिथिलता एवं अपनी ही छात्राओं द्वारा प्रताड़ना की वेदना उन के लिए इतनी असह्य



परंतु देखने में आता है कि छात्र संघ के पदाधिकारी, जो प्रजातांत्रिक ढंग से चुने जाते हैं, स्वयं गैरप्रजातांत्रिक और अमानवीय कार्य करते हैं, हिंसा पर उतारू रहते हैं।

इस में छात्राएं भी पीछे नहीं रहतीं। तीन वर्ष पूर्व कलकत्ता के एक महिला विश्वविद्यालय की प्रधानाचार्या का लंबे समय

हो गई कि दो दिन बाद वह हस्पताल में दम तोड़ गई थीं।

मई 1983 में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय छात्र संघ के पदाधिकारियों के नेतृत्व में कुलपति एवं विश्वविद्यालय के अन्य प्राध्यापकों का तीन दिन तक घेराव किया गया। अंततः पुलिस ने बरिस में प्रवेश कर के

स्थिति पर काबू पाया.

दिल्ली विश्वविद्यालय में केनेडा के नेतृत्व में
संघर्ष का प्रथम चरण माना जाने लगा है। यदि पुलिस कहीं परिसर में प्रवेश करती है तो निश्चय ही छात्रों और पुलिस में मुठभेड़ होती है। वैसे विश्वविद्यालय की स्वायत्ता के नाम पर पुलिस विश्वविद्यालय परिसर में प्रवेश करने से घेराव एवं हिंसक घटनाओं के होने के बाद भी हिचकिचाती है। पुलिस और छात्रों का तो कुत्तेबिल्ली सा बैर हो गया है।

छात्र संघों के इशारों पर अनुशासनहीनता ही शिक्षा जगत की संस्कृति बन गई है। शायद इसी परिप्रेक्ष्य में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की अध्यक्ष माधुरी शाह ने कुछ समय पूर्व कहा था कि छात्र संघों को समाप्त कर देना चाहिए। अतः अब प्रश्न उठता है कि छात्र संघों की क्या यही भूमिका होना चाहिए?

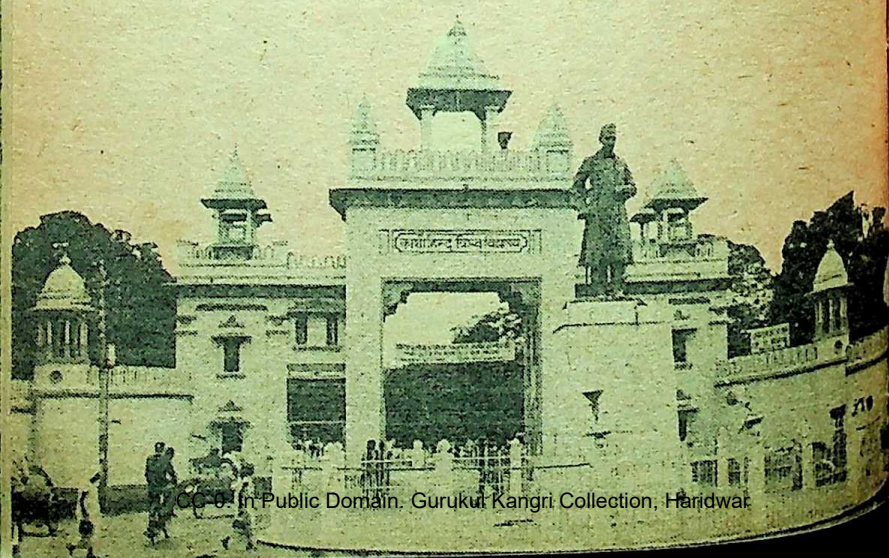
वास्तव में छात्र संघों का प्रादुर्भाव विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ ही हो गया था। हमारे विश्वविद्यालय की संरचना इंगलैंड के विश्वविद्यालय की परिपाटी पर आधारित है। इंगलैंड में 19वीं शताब्दी में भी बरकिक्रम और लिवरपूल विद्यालयों में छात्र

संघों का प्रावधान था और छात्र संघ शिक्षा सहभागी होते थे। जब सन 1915 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना हुई तो उस के अधिनियम में भी छात्र संघ की व्यवस्था की गई।

स्वतंत्रता संग्राम में विश्वविद्यालयों में महाविद्यालयों के युवा छात्रों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सन 1936 में जब 'जवाहर ईंडिया स्टूडेंट फेडरेशन' की स्थापना की गयी थी, उस समय जवाहरलाल नेहरू और मुहम्मद अली जिन्ना दोनों का यही मत था कि विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों के संचालन छात्र वर्ग के सहयोग से ही संभव है।

स्वतंत्रोत्तर भारत में शिक्षा से संबंधित सभी आयोगों एवं कमेटियों (राष्ट्रकमिटी 1951, कोठारी आयोग 1964-66, गजेंद्र गढ़कर कमेटी) ने छात्र संघों की अनिवार्यता को महसूस किया और कहा कि छात्रों का विश्वविद्यालय के प्रशासन एवं शिक्षा क्षेत्र में सहयोग नितांत आवश्यक है और छात्र संघों के माध्यम से सहयोग प्राप्त हो सकता है। सभी शिक्षाविदों ने नवयुवकों के सर्वांगीण विकास और उनकी प्रतिभा के

काशी हिंदू विश्वविद्यालय जहाँ अनिश्चितकालीन हड़तालों के कारण तीन वर्षों से समय पर परीक्षाएं नहीं हो सकीं।





बातचीत में मशगूल छात्र नेता. विश्वविद्यालयों की बिगड़ती स्थिति के लिए बहुत कुछ जिम्मेदार.

प्रकाश में आने के लिए छात्र संघों को महत्वपूर्ण माना है

परंतु छात्र संघों का जो स्वरूप उभर कर आया है, वह अत्यधिक निराशाजनक है. छात्र संघ विश्वविद्यालयों के संचालन में सहायक न बन कर बाधक सिद्ध हुए हैं.

आज देश के 60 प्रतिशत महाविद्यालयों में किसी प्रकार के निर्वाचित छात्र संघों का प्रावधान नहीं है. विश्वविद्यालयी स्तर पर देश के 120 विश्वविद्यालय के केवल 45 विश्वविद्यालयों में ही छात्र संघों का निर्वाचन होता है. बाकी में पदाधिकारी मनोनीत कर दिए जाते हैं, पर मनोनीत छात्र संघ विद्यार्थी वर्ग का प्रतिनिधित्व नहीं करते.

जहां छात्र संघों के लिए प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से निर्वाचन होता है, वहां स्थिति और भी गंभीर है. कई बार तो छात्रों में गुटबंदी और हिंसात्मक घटनाओं के कारण चुनाव हो ही नहीं पाते. यदि चुनाव हों भी तो उम्मीदवारों की योग्यता के स्थान पर अन्य बातों को वरीयता दी जाती है इसलिए बहुधा छात्रसंघों में अयोग्य विद्यार्थी ही पदाधिकारी बनते हैं.

हिंदू विश्वविद्यालय में छात्र संघों के चुनावों के दौरान पोस्टरों और वाहनों पर अंधाधुंध पैसा खर्च किया जाता है. इलाहाबाद, गोरखपुर और रायपुर विश्वविद्यालयों में पेशेवर नेताओं और आसमाजिक तत्वों का बोलबाला रहता है. पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार व आंध्र प्रदेश के तटीय क्षेत्रों, राजस्थान एवं हरियाणा के महाविद्यालयों में जाति के नाम पर वोट मांगे जाते हैं.

क्षेत्रीयता का बोलबाला

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में, जहां देश के सभी भागों के छात्र अध्ययन हेतु आते हैं, राज्य और क्षेत्रीयता के आधार पर वोट पड़ते हैं. राजकोट, लखनऊ व कानपुर के विश्वविद्यालयों में 'जिलावाद' अथवा क्षेत्रीयता चलती है. गढ़वाल और हिमाचल मैदानी इलाकों से संबंधित छात्रों का एक गुट होता है, तो दूसरा गुट पहाड़ी इलाकों के छात्रों का होता है. हरियाणा पश्चिमी उत्तर प्रदेश एवं राजस्थान में शहरी और ग्रामीण विद्यार्थी अलग-अलग समुदायों में बंट जाते हैं. ये सब प्रत्यक्ष रूप में चाहे न हों, परंतु छात्र संगठन अपने-अपने उम्मीदवार खड़े करते समय इन आलों को अवश्य ध्यान में रखते हैं.

दिल्ली विश्वविद्यालय में भी इसी प्रकार का अवस्था है.



उपद्रव व तोड़फोड़ की घटनाएं विश्वविद्यालयों के छात्रों के साथ जुड़ कर रह गई हैं.

आज शिक्षा जगत में कई छात्र संगठन अपनी अपनी विचारधारा को ले कर काम कर रहे हैं. लगभग सभी छात्र संगठनों का किसी न किसी राजनीतिक दल से संबंध है. विशेषतया चुनाव प्रचार के समय राजनीतिक दलों की मुख्य भूमिका रहती है. पिछले वर्षों में तो राजनीतिक दलों ने समस्त सीमाओं का अतिक्रमण कर छात्र संघों के चुनाव में सीधे भाग लेना आरंभ कर दिया है.

दिल्ली विश्वविद्यालय के चुनावों में एक ओर भारतीय जनता पार्टी के छात्र संगठन जनता विद्यार्थी मोर्चे द्वारा अपने चुनाव का संचालन भारतीय जनता पार्टी के केंद्रीय कार्यालय से हो रहा था तो दूसरी ओर नेशनल स्टूडेंट यूनियन आफ इंडिया, जो इंदिरा कांग्रेस का छात्र संगठन है, का मार्गदर्शन स्वयं राजीव गांधी कर रहे थे. दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ पर कब्जा जमाने के लिए इन दो छात्र संगठनों की लड़ाई ने राजनीतिक दलों के महासंघर्ष का रूप धारण कर लिया था.

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में भी इंदिरा कांग्रेस के दोतीन संसद सदस्य चुनाव प्रचार के लिए गए. यहां तक कि भूतपूर्व संचार मंत्री श्री स्टीफन जो अब संसद सदस्य एवं इंदिरा कांग्रेस के सचिव हैं पीछे

नहीं रहे और उन्होंने भी जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के छात्रों को भाषण-पिलाया. इस प्रकार कई स्थानों पर तो छात्र संगठनों का अपना महत्त्व कम होता है और राजनीतिक दल ही हावी होने लगे हैं.

राजनीतिबाजों का जमघट

ऐसी परिस्थिति में चुनाव राजनीतिक दलों का दंगल ही बन कर रह जाता है. राजनीतिबाजों का परिसर में प्रवेश, प्रचार में दल का नाम, झंडा, चिह्न, दलीय नेताओं की अपीलें सब कुछ बराबर चलता रहता है.

राजनीतिबाज विश्वविद्यालयों एवं शिक्षा के क्षेत्र में सुधार लाने के स्थान पर केवल अपना उल्लू सीधा करना चाहते हैं. यह छात्र संघ के चुनावों में अथाह धन, वाहन एवं कहींकहीं असामाजिक तत्वों द्वारा अपने उम्मीदवारों को जिताते हैं और बदले में अपने दल के अधिवेशनों, जलूसों प्रदर्शनों, पदयात्राओं व विरोधी दल के लोगों से मुठभेड़ में शक्ति प्रदर्शन हेतु छात्र समुदायों का प्रयोग करते हैं. इस का परिणाम यह होता है कि छात्र नेता विद्यार्थियों की समस्याओं पर चिंतन नहीं करते, बल्कि अपने राजनीतिक आकाओं के इशारों पर विश्वविद्यालयों व महाविद्यालयों में हड़ताल व तोड़फोड़ करते

हैं। वे केवल राजनीतिवाजों के हाथ की कठपुतली बन कर रह जाते हैं। Digitized by Arya Samaj Foundation, Chhannar and Gargoti

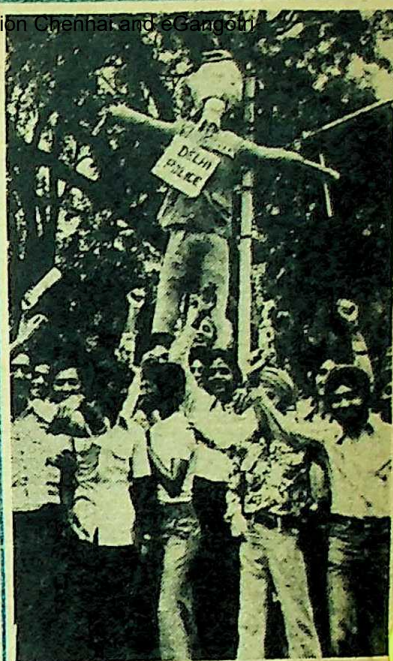
चुनाव प्रचार के लिए आचार संहिता को ताक पर रख दिया जाता है और चुनाव प्रचार में हर प्रकार के हथकंडे अपनाए जाते हैं।

विश्वविद्यालयों में राजनीतिवाजों की एक नई जमात पैदा हो गई है। कई विश्वविद्यालयों में छात्र संघ के पदाधिकारी बनने हेतु अधिकतम आयु का कोई विधान नहीं है। इसलिए वहां कुछ पेशेवर राजनीतिवाज वर्षों तक डटे रहते हैं। अब्वल तो वे परीक्षा में पास होना ही नहीं चाहते और यदि गलती से पास हो भी जाते हैं तो किसी अन्य पाठ्यक्रम में प्रवेश ले लेते हैं। यहां तक कि 35-42 वर्ष तक के छात्र नेता भी छात्र संघ के पदाधिकारी चुने गए हैं। उन के लिए छात्र संघ पर कब्जा बनाए रखना ही एक मात्र उद्देश्य होता है। शिक्षा या अध्ययन से तो उन का दूर का नाता भी नहीं रहता।

छात्रसंघों का औचित्य

यदि योग्य विद्यार्थी छात्र संघ में प्रवेश कर जाएं तो भी वह महत्वपूर्ण भूमिका निभाने में असमर्थ रहते हैं। छात्र संघों का कार्यकाल सात आठ माह होता है और उस समय में उस के पदाधिकारी विश्वविद्यालय के प्रशासन व्यवस्था के नियमों से परिचित भी नहीं हो पाते।

छात्र संघों के संविधान में छात्र संघों का स्वरूप केवल सामाजिकसांस्कृतिक क्लब की तरह है, अतः उन के विश्वविद्यालय प्रशासन व जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में राय देने एवं सहयोगी होने ही कल्पना भी नहीं की जा सकती, फिर छात्र संघों के प्रति विश्वविद्यालय या महाविद्यालय के अधिकारियों का रवैया भी ऐसा रहता है कि वह छात्र संघ के सहयोग से प्रशासन चलाने के बजाए प्रशासन को छात्र संघ से बचाने का प्रयास करते हैं। यदि छात्र संघ का प्रतिनिधि मंडल कुलपति अथवा अधिकारियों के पास छात्रों की समस्याओं को ले कर जात है तो उन्हें प्रशासन में लाना होता है जैसे विरोधी दल के लोग सरकार को लताड़ने



पुलिस के विरुद्ध अपना रोष प्रकट करते हुए विश्वविद्यालय के छात्र।

आ रहे हैं।

छात्र संगठन भी मजदूर संघों की तरह काम करते हैं। तथा प्रशासन (अध्यापक वर्ग) भी मिलमालिकों जैसे तेवर रखते हैं। ऐसे वातावरण में एकदूसरे से सहयोग की अपेक्षा उपहास बन जाती है। वैसे छात्र संघों की दो ही भूमिकाएं रहती हैं, या तो उन्हें आम विद्यार्थी अधिकारियों का पिछलग्गू मानता है या शत्रु। छात्र संघ में कुलपति और प्रधानाचार्य की हर तर्कसंगत बात का खंडन करने वाला और हर बार उन से लोहा लेने वाला ही सच्चा छात्र नेता माना जाता है।

छात्र संगठनों में कोई आंतरिक प्रजातंत्र भी नहीं होता। मुख्यतया अध्यक्ष व सचिव ही सभी निर्णय लेते हैं। विरोधी गुट के छात्र चुनाव हारने के बाद छात्र संघ का लगभग हर कदम पर विरोध करते हैं। खास तौर पर तब जब छात्र संघ का बजट पास करवाना प

सरिता व मुक्ता में प्रकाशित

लेखों के लिए सम्पूर्ण अधिकार Samaj Foundation (Dehradun and Gangotri)

सेट नं. 3

सिपाही क्यों लड़ता है
इस्लाम और स्त्री
डायरी न लिखिए
प्रेम पत्र न लिखिए
यांगी अरविन्द
गीता में अन्तर्विरोध
गायत्री मंत्र
गायत्री मंत्र: आ. व आ. के उत्तर
ट्रेड यूनियन
त्रासदी मुसलिम समाज की
भगवान की दुकानें
वेदों में नारी
स्वर्ग कहाँ है
आखिरत की अटकलें
हिन्दी साहित्य में बपौती
घाटे वाले बालाजी
भीष्म
संत कवियों के चमत्कार
उलाहने
वैदिक युग में मांस भक्षण
देवताओं के वैद्य-अश्विनी कुमार
महाभारत की ऐतिहासिकता
महाभारत की ऐतिहासिकता: आ. व
आ. के उत्तर
दहेज और हिंदू धर्म
आप की लड़की प्रेम करती है
यूनियन
सौंदर्य प्रतियोगिता
वैज्ञानिक ज्ञान बनाम अध्यात्म ज्ञान
पंजीपति
नियोग

मूल्य-5 रुपए

50% की पुस्तकालयों, विद्यार्थियों व
अध्यापकों के लिए विशेष छूट.

रुपए अग्रिम भेजे.

बी.पी.पी. नहीं भेजी जाएगी.

सेट में लेखों का परिवर्तन कभी भी हो
सकता है.

दिल्ली बुक कंपनी,

एम-12, कानपुर रोड, नई दिल्ली

उद्घाटन समारोह करवाना हो. परन्तु
विश्वविद्यालय में तो छात्र संघ के चुनाव के
बाद पूरे साल छात्र संघ का उद्घाटन भी नहीं
हो पाता. इसलिए सामान्य विद्यार्थी तो छात्र
संघ की गतिविधियों में रुचि ही नहीं रखता.
सामान्य विद्यार्थियों में भी छात्र संघों के
प्रति विश्वसनीयता में कमी आई है. जब
कभी किसी मुद्दे को लेकर छात्रों का आह्वान
किया जाता है व प्रदर्शन किए जाते हैं, तो
सामान्य छात्र उस से कभी नहीं जुड़ता.
दिल्ली विश्वविद्यालय में जहाँ लगभग
50,000 विद्यार्थी अध्ययन करते हैं, पिछले
आठ वर्षों में छात्र संघ के आह्वान पर कभी
1,000 से अधिक विद्यार्थी इकट्ठे नहीं हुए हैं.
केवल वे गिने चुने विद्यार्थी ही जिन की
राजनीतिक महत्त्वाकांक्षाएं हैं या किसी
विशेष विचारधारा से जुड़े, छात्र संघ की
गतिविधियों में भाग लेते हैं.

इस के लिए छात्र संघ स्वयं जिम्मेदार
हैं. पिछले दशक में गुजरात के नवनिर्माण
आंदोलन और जयप्रकाश के आंदोलन के
सिवा छात्रों ने कोई भी विशेष कदम नहीं
उठाए.

छात्र संघों के आंदोलन के मुद्दे
परीक्षाओं का स्थगन, या परीक्षाओं में नकल
करने की स्वतंत्रता और पकड़े जाने पर उस
के विरोध, नए पाठ्यक्रमों का विरोध या
सिनेमा टिकटों में छात्रों को रियायतें आदि ही
रहे. रचनात्मक मुद्दों पर छात्र संघों की
भूमिका नकारात्मक ही रही है. 1980 के बाद
तो छात्रों के अधिकांश आंदोलन केवल
स्थानीय छुटपुट समस्याओं को लेकर ही
चलते रहे हैं.

किसी सीमा तक यह हमारी शिक्षा
पद्धति का भी दोष है. बेरोजगारी की समस्या
के कारण विद्यार्थी स्वयं को असुरक्षित पाता है
और इसी कारण राजनीतिबाजों के चंगुल में
फंस जाता है. फिर भी छात्र संघों का रवैया
पूर्णतः और गैरजिम्मेदाराना ही रहा है. आज
स्थिति यह है कि यदि छात्र संघों को समान
कर दिया जाए तो परिसरों का वातावरण
बहुत कुछ सुधरे सकता है.

धूपध्वांव

इस स्तंभ के लिए समाचारपत्रों की रोचक कटिंग भेजिए. सर्वोत्तम कटिंग पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. कटिंग के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.

भेजने का पता: मुक्ता, दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली-110055.

अध्यापक जुआ खेलते पकड़े गए

सतना जिले के कोठी गांव के एक अध्यापक की उस समय बड़ी फजीहत हुई जब स्कूल से गायब रह कर जुआ खेलते हुए वह रंगे हाथों पकड़े गए. वह बिना छुट्टी लिए स्कूल से गायब थे और पांच व्यक्तियों के साथ जुआ खेल रहे थे कि अचानक पुलिस ने छापा मारा तो अध्यापक भी पकड़े गए.

पुलिस की गिरफ्त में आगेआगे मास्टरजी थे और पीछेपीछे छात्रों की भीड़.

—अमर उजाला, आगरा (प्रेषक: खान जब्बार राशिद) (सर्वोत्तम)

*

मंत्री की जेब पर नजर

भरतपुर में राजस्थान के निर्माण मंत्री चेताराम मीणा की एक जेबकतरे ने जेब साफ कर दी, लेकिन थोड़ी सी चूक के कारण वह पकड़ा गया. मंत्री मीणा बाजार से गुजर रहे थे तो सामने से एक जलूस ले कर आ रहे विधायक राजभानसिंह से मिलने के लिए कार से नीचे उतरे. उसी समय जेबकतरे ने उन की जेब साफ की, लेकिन उन के अंगरक्षक ने जेबकतरे को धर दबोचा.

—दैनिक भास्कर, ग्वालियर (प्रेषक: संजीव सागर)

*

आधुनिक स्वयंवर

मद्रास में आयोजित स्वयंवर में 22 युवकयुवतियों का विवाह हुआ.

मद्रास ब्राह्मण संघ द्वारा आयोजित इस स्वयंवर में प्रत्येक उम्मीदवार के लिए जरूरी था कि जब उस का जीवनवृत्त जिस में उम्र, योग्यता, आदतें, इच्छाएं तथा मांगे शामिल थीं, पढ़ कर सुनाया जाए तो वह मंच पर आए. उस के बाद उम्मीदवार और उस के अभिभावक एकदूसरे से विवाह संबंधी शर्तों पर बातचीत करें.

—दैनिक वीर प्रताप, जालंधर (प्रेषक: प्रदीपकुमार गुप्ता)

*

शराबी और नाग ने एकदूसरे को डसा

सिलीगुड़ी में नशे की हालत में एक शराबी एक नाग से छेड़छाड़ करने लगा. फिर उसे कस कर पकड़ लिया. सांप उस के शिकंजे से छूटने की कोशिश करने लगा. शराबी ने अपनी पकड़ ढीली की और जेब से बिस्कुट निकाल कर नाग को खिलाने लगा, लेकिन सांप ने उसे काट लिया.

पर मौत के मुंह में जाने से पहले शराबी ने सांप का फन फिर से पकड़ लिया और उसे पूरे जोर से अपने मुंह में रख कर चबा लिया और फिर दोनों वहीं ढेर हो गए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. —आर्यावर्त, पटना (प्रेषक: जयप्रियकुमार पांडेय) •

आज जब पेट्रोल तथा विमान में प्रयुक्त होने वाले ईंधन के खर्च का अभाव की

सुदूर ऊंचाइयों को छूने लगे हैं, उस समय किसी हवाई कंपनी को चलाना कोई मामूली काम नहीं है। इसी कारण संभवतः विश्व की अनेकानेक हवाई कंपनियां घाटे में जा रही हैं।

लेकिन इस कमरतोड़ महंगाई के बावजूद आज कुछ हवाई कंपनियां ऐसी भी हैं, जो इस व्यापार में लाभ उठा रही हैं। ऐसी ही एक हवाई कंपनी है— 'पीपल्स एक्सप्रेस' जो महंगाई के इन थपेड़ों को बड़े अनोखे तरीकों से सहती हुई जनता की सेवा कर रही है।

'पीपल्स एक्सप्रेस' की स्थापना लगभग दो वर्ष पूर्व संयुक्त राज्य अमरीका में हुई थी। मजे की बात यह है कि चालू होने के कुछ समय बाद ही उस ने लाभ उठाना प्रारंभ कर दिया है, लेकिन मुनाफा कमाने के लिए इस

कंपनी ने जो तरीके अपनाए हैं वे आज के युग में ब्यासव में कुछ अजीब से लगते हैं। पर अजीब से होते हुए भी ये तरीके प्रशंसनीय हैं।

'पीपल्स एक्सप्रेस' ने आधुनिक एयरलाइनों द्वारा शानशौकत पर किए जाने वाले अंधाधुंध खर्चों की जगह सादगी और मितव्ययता को अपनाया। इस कंपनी के कर्णधारों का विचार था कि शानशौकत के नाम पर जो खर्च किया जाता है उस में कटौती कर के ही विमान के किरायों में कमी लाई जा सकती है।

इस हवाई कंपनी ने अपने कर्मचारियों की संख्या भी आवश्यकता से अधिक नहीं

यह उन की अपनी हवाई

लेख • बिमल श्रीवास्तव



रखी है और उन में काम का विभाजन इस ढंग से किया है कि सब कार्य प्रत्येक कर्मचारी के पास होता है।

इस कंपनी के सभी कर्मचारी 'मैनेजर' (प्रबंधक) कहलाते हैं। ये केवल नाम के ही लिए नहीं बल्कि वास्तव में प्रबंधक होते हैं, क्योंकि उन के ऊपर कोई अन्य उच्च कर्मचारी नहीं होता और सभी कामों के वे स्वयं जिम्मेदार होते हैं। उदाहरण के लिए विमान के मैकेनिक को 'मैटेनेंस मैनेजर' कहा जाता है। वह स्वयं ही विमान के पुरजे बदलने से ले कर, उस की मरम्मत, देखभाल, रखरखाव आदि का काम करता है।

ई कंपनी है



इसी प्रकार जो विमान के टिकट बेचने के कामकाज का कार्य करता है, उसे 'कस्टमर सर्विस मैनेजर,' तथा विमान के पायलट को 'फ्लाइट मैनेजर' कहते हैं। इस प्रकार इस कंपनी में छोटेबड़े का कोई भेदभाव नहीं है तथा यहां के 1,200 कर्मचारी अपनेअपने विभागों के स्वयं अधिकारी हैं। इस कंपनी में कर्मचारियों की कोई यूनियन नहीं है। इस प्रकार यह कंपनी हड़ताल, आंदोलन आदि झंझटों से बची रहती है।

इस के अलावा इस कंपनी की एक अन्य विशेषता यह है कि इस के कर्मचारी अपनी इयूटी के अलावा कुछ अन्य कार्य भी करते हैं। इस प्रकार प्रत्येक कर्मचारी के पास कम से कम दोहरे विभाग तो रहते ही हैं। उदाहरण के लिए टिकट बेचने वाला कर्मचारी बिक्री का काम समाप्त हो जाने के बाद वायुयान में जाता है और वहां विमान परिचारक के तौर पर यात्रियों की देखभाल करता है। इसी प्रकार पायलट वायुयान के उड़ान भरने से पहले उस के परिचालन संबंधी अन्य कार्य जैसे 'फ्लाइट प्लान' तैयार करना आदि करता है और उस के बाद वायुयान को उड़ाने की भी इयूटी पूरी करता है।

इस प्रकार जहां अन्य एयरलाइनों के पायलट महीने में केवल 70-80 घंटे की उड़ान इयूटी करते हैं, बाकी समय खाली बैठे रहते हैं, वहां 'पीपल्स एक्सप्रेस' के पायलट इसी खाली समय का सदुपयोग कंपनी के बजाए घाटे के मुनाफे में चलने के लिए करते हैं।

छोटे पैमाने पर शुरू की गई यह हवाई कंपनी अपनी मेहनत और ईमानदारी से आज किस प्रकार जनता के दिल में अपना स्थान बना रही है।

इस कंपनी के कुछ शेयर उस के कर्मचारियों को कम दाम पर दिए जाते हैं। उन्हें ये शेयर अनिवार्य तौर पर लेने पड़ते हैं, किंतु यदि कर्मचारी चाहें तो अनिवार्य शेयरों के अतिरिक्त वे और शेयर भी रिआयती दामों पर ले सकते हैं। इस प्रकार ये कर्मचारी कंपनी के हिस्सेदार अथवा मालिक भी बन जाते हैं। उदाहरण के लिए पीपल्स एक्सप्रेस के कर्मचारियों को अनिवार्य शेयर जिस भाव से दिए जाते हैं, आज अमरीका में उन का बाजार भाव लगभग चौगुना है, लेकिन जो कर्मचारी अतिरिक्त शेयर खरीदना चाहता है, उसे ये अनिवार्य शेयरों के रिआयती भाव से दोगुने भाव पर दिए जाते हैं। इस का नतीजा यह हुआ है कि इस कंपनी के कर्मचारी उसे अपनी कंपनी समझ कर काम करते हैं।

योजना का प्रारंभ

इस हवाई कंपनी को प्रारंभ करने की योजना डोनल्ड बर तथा गेराल्ड गिरनर ने मिल कर बनाई थी। इन दोनों यात्रियों को विभिन्न हवाई कंपनियों में वर्षों तक उच्च पद पर कार्य करने का अनुभव प्राप्त था।

ये लोग चाहते थे कि अपने खर्च में कटौती कर के यदि विमान के भाड़े में कमी कर दी जाए तो लोग इन्हीं के विमानों में यात्रा करना पसंद करेंगे।

इस के लिए इन्होंने न्यूयार्क के पास न्यूअर्क नामक स्थान को उस कंपनी का मुख्यालय बनाया। न्यूअर्क से विमानों के परिचालन के अपने कायदे थे, क्योंकि यह स्थान न्यूयार्क हवाई अड्डे जैसा महंगा नहीं था, इसलिए उन्हें वायुयानों के उतरने आदि की फीस बहुत कम देनी पड़ती। इस के अलावा यह स्थान न्यूयार्क के पास होने के कारण यहां यात्री मिलने में आसानी थी।

'पीपल्स एक्सप्रेस' के विमानों की उड़ान के लिए कुछ ऐसे स्थानों का चुनाव किया गया, जहाँ पर विमानों की यात्रा की



सुविधाएं कम थीं, किंतु उन स्थानों पर यात्रियों के मिलने की संभावनाएं अधिक थीं। उन स्थानों पर न्यूअर्क से विमान जाते और दोबारा उड़ान भर कर न्यूअर्क वापस चले आते। इस प्रकार इस कंपनी के विमानों के लिए केवल एक ही स्थान अर्थात् न्यूअर्क में अपना अड्डा बनाना पड़ता, इस प्रकार विमान परिचालन के खर्च में भी भारी कटौती की संभावना थी।

'पीपल्स एक्सप्रेस' ने अपनी सेवाओं की शुरुआत 30 अप्रैल, 1981 को की। इस के लिए उस ने तीन पुराने बोइंग 737 विमानों का प्रयोग किया। ये विमान पश्चिमी-जर्मनी की 'लुफ्तहंस' नामक हवाई कंपनी से खरीदे गए थे, जिस ने इन वायुयानों को खरबीने तथा अनुपयोगी समझ कर बेच दिया था।

'पीपल्स एक्सप्रेस' ने इन विमानों में कुछ महत्वपूर्ण परिवर्तन किए। जैसे उन की प्रथम श्रेणी की बड़ी सीटों को हटा कर उन की जगह सामान्य श्रेणी की सीटें लगावाईं। इसके अलावा खानेपीने के स्थान पर भी सीटें लगा दी गईं। इस प्रकार 'लुफ्तहंस' के पुराने विमान में 90 सीटों की जगह 118 सीटों का प्रयोग किया गया।



इस प्रकार इन सब तैयारियों के साथ 'पीपल्स एक्सप्रेस' ने अमरीका के पांचछः नगरों के बीच हवाई सेवा प्रारंभ कर दी। खर्च में कटौती की दृष्टि से इस एयरलाइन ने यात्रियों को मिलने वाली कई सुविधाएं न देने की घोषणा की। जैसे यात्रियों को वायुयान तक अपना सामान स्वयं ढो कर ले जाना पड़ता है, या फिर सामान पहुंचाने के लिए अलग पैसा देना पड़ता है, जब कि अन्य एयर लाइनें यह कार्य मुफ्त में करती हैं।

इस के अलावा इस के वायुयानों में मुफ्त चाय, काफी या नाश्ते की भी व्यवस्था नहीं है। यदि किसी यात्री को ये सुविधाएं चाहिए तो उन्हें अलग से दाम देने होंगे, लेकिन कंपनी के व्यवस्थापकों का कहना है कि इन बनावटी सुविधाओं के बदले में वे यात्रियों को पूर्णतया आराम देने का प्रयत्न करते हैं और उन की हर कठिनाई को हल करने में सहायता देते हैं।

धीरेधीरे 'पीपल्स एक्सप्रेस' ने अपनी सेवाओं का विस्तार करना चालू कर दिया। इस ने 22 और पुराने बोइंग 737 विमान खरीदे तथा उन को चलाना प्रारंभ कर दिया। इस के अलावा उस ने यात्रा के लिए नए

स्थानों का चुनाव करना भी आरंभ कर दिया और अब तो इस के विमान अमरीका के लगभग 15 नगरों में जाने लगे हैं।

इस कंपनी को अपने पहले वर्ष (1981) में लगभग सात करोड़ का घाटा हुआ था, किंतु 1982 में इस ने लगभग 10 करोड़ का लाभ उठाया। यही नहीं बल्कि अब तो इस कंपनी ने 17 और बड़े-बड़े विमानों को खरीदने के आर्डर दे डाले हैं।

वैसे तो अभी तक 'पीपल्स एक्सप्रेस' की सेवाएं संयुक्त राज्य अमरीका के अंदरूनी भागों तक ही सीमित हैं, किंतु भविष्य में इन्हें लंदन तथा यूरोप के कुछ अन्य नगरों तक ले जाने की योजना है। इस के लिए वह जंबो जेट (बोइंग 747) जैसे बड़े विमान खरीदने जा रही है।

'पीपल्स एक्सप्रेस' की निरंतर उन्नति से अमरीका की बड़ी-बड़ी एयरलाइनें भी अब सतर्क होने लगी हैं और कई स्थानों पर प्रतिस्पर्धा की दृष्टि से उन कंपनियों ने भी अपने किराए कम करने की घोषणा कर दी है। इस प्रकार एक छोटी सी हवाई कंपनी बड़ी एयरलाइनों को पीछे छोड़ते हुए जनता के दिल में अपना स्थान बनाती जा रही है।

शाबाश

इस स्तंभ के लिए समाचारपत्रों की रोचक कटिंग भेजिए. सर्वोत्तम कटिंग पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. कटिंग के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.

भेजने का पता: मुक्ता, दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली-110055.

रिकशाचालक की ईमानदारी

उरई में एक रिकशाचालक चंद्रभानु ने 20,000 रुपए मूल्य के सामान से भरी एक अटैची कोतवाली में जमा करवा कर अपनी ईमानदारी का परिचय दिया. यह अटैची नजीर अहमद नामक एक व्यक्ति उस के रिकशा में भूल गया था. इस अटैची में सात तोला सोना, आधा किलो चांदी, 1,760 रुपए और 1,000 रुपए के कपड़े थे. नसीर अहमद जब अपनी अटैची को रिपोर्ट लिखवाने कोतवाली आया तो उसे अपना सारा सामान मिल गया. रिकशाचालक की ईमानदारी से प्रभावित हो कर उस ने उसे 100 रुपए बतौर इनाम दिए.

—हिंदुस्तान, नई दिल्ली (प्रेषक: रावेंद्रकुमार 'रवि')

*

बालक ने नाग को दबोचा

लखनऊ में 12 वर्षीय एक छात्र संजीवकुमार रावत ने अपने बस्ते में छिपे एक काले नाग का मुंह पकड़ कर उसे बाहर फेंक कर अभूतपूर्व साहस का परिचय दिया. पांचवी कक्षा का यह छात्र जब सायंकाल पढ़ने के लिए अपनी छत पर गया और जब उस ने बस्ता खोला तो उसे बस्ते में फुफकारता हुआ एक सांप नजर आया. इस छात्र ने तुरंत उस नाग का मुंह पकड़ लिया और उसे छत से बाहर फेंक दिया.

—आज, पटना (प्रेषक: रामफल भगत)

*

एक लाख का सोना लौटाया

जोधपुर में ईमानदारी का एक दुर्लभ उदाहरण प्रस्तुत करते हुए पेंशन पाने वाले एक बड़े व्यक्ति ने करीब एक लाख रुपए का सोना उस के स्वामी को लौटा दिया. यह सोना उसे एक थैले में एक मंदिर में पड़ा मिला था.

थैले में ही पड़े राशनकार्ड से उस ने थैले के मालिक का पता लगाया. सोने का मालिक उक्त सोना बैंक में रखने ले जा रहा था.

—नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली (प्रेषक: हरिशंकर उपाध्याय)

*

पत्नी ने पीटा

धार के नालंदा थाना क्षेत्र के सराय गांव में एक होटल मालिक ने जब एक महिला के साथ बलात्कार किया तो उस की पत्नी ने उसे खूब पीटा. बाद में उसे धारा 376 के तहत पुलिस पकड़ कर ले गई.

—नई दुनिया, इंदौर (प्रेषक: मुकेश शर्मा)

*

ईमानदारी अभी जिंदा है

ईमानदारी अभी जिंदा है, बाह बिजबास किला है दिल्ली के गीता कालोनी निवासी

दिसंबर (द्वितीय) 1983

तिपहिया स्कूटर चालक भीष्म देव ने, इस ने एक यात्री को उस के घर जा कर उस का वह बैग लौटा दिया, जिस में 32,000 रुपए थे। यह बैग उक्त यात्री उस के स्कूटर में भूल गया था। दक्षिण दिल्ली पुलिस उपायुक्त ने स्कूटर चालक को 100 रुपए नकद व प्रशस्ति पत्र दे कर सम्मानित किया है।
—हिंदुस्तान, नई दिल्ली (प्रेषक: कन्हैयालाल जैन)

शराबियों को सुधारने के लिए

इंफाल में महिलाओं द्वारा शराबी पुरुषों को सुधारने के लिए अजीबोगरीब ढंग अपनाया गया है।

वहां कुछ महिलाएं चौराहे पर खड़ी हो कर वहां से गुजरने वाले प्रत्येक पुरुष को रोक कर पूछती हैं, "क्या तुम ने शराब पी है?" शक होने पर वे उस का मुंह सूंघती हैं और जो पुरुष शराब पिए हुए पाया जाता है, उस की डंडे से पिटाई करती हैं। भले ही वह पुरुष कोई नेता हो, अधिकारी हो या पत्रकार, वे किसी को भी नहीं छोड़तीं।

—पंजाब केसरी, दिल्ली (प्रेषक : सुभाषचंद्र मित्तल)

रिश्वती उप सरपंच की पिटाई

उदयपुर के एक उप सरपंच को एक हजार की रिश्वत मांगने पर गांव वालों के कोप का शिकार बनना पड़ा और उस की लाठी व जूतों से पिटाई की गई।

बताया जाता है कि रीछड़े के उप सरपंच भवरलाल सिधवी ने एक कुम्हार सोहनलाल से एक हजार की रिश्वत मांगी, क्योंकि सोहनलाल के मकान का बरामदा सरकारी जमीन पर आ गया था।

सोहनलाल पंचायत नियमों के अनुसार जुरमाना अदा करने को तैयार था, लेकिन उप सरपंच उस के घर जा कर रिश्वत की मांग करने लगा। इस पर गांव वालों ने जम कर उस की धुनाई कर दी।
—हिंदुस्तान, नई दिल्ली (प्रेषक : हेमेंद्र शर्मा) (सर्वोत्तम)

**जन्मोत्सव, विवाह
व अन्य
शुभ अवसरों पर**



पुस्तकें भेंट में दीजिए

कीमतें कम करने के लिए :

- सरकारी खर्च कम हो
- करों में कमी हो

बढ़ती हुई कीमतों की मूल वजह (और प्रायः एकमात्र) सरकार द्वारा आवश्यकता से ज्यादा खर्च किया जाना (करों व ऋणों से प्राप्त आय की तुलना में ज्यादा व्यय) और उस घाटे को पूरा करने के लिए नए करेंसी नोट छापना तथा माल व सेवाओं पर नए नए कर थोपना है।

हर नया नोट, हर नया कर माल व सेवाओं की कीमत में तुरंत वृद्धि कर देता है, जिस की वजह से सरकारी खर्च में और अधिक वृद्धि आवश्यक हो जाती है। इस वृद्धि की भरपाई के लिए फिर नए नोट छपते हैं, फिर नए कर लगते हैं और इस से कीमतें लगातार बढ़ती जाती हैं।

राजनीतिबाज बढ़ती हुई कीमतों का सारा दोष उत्पादकों व व्यापारियों के जिम्मे मढ़ कर आम लोगों को धोखा देने की कोशिश करता है। यह अच्छी तरह से जानते हुए भी कि करों द्वारा बढ़ी लागत उत्पादक और व्यापारी अपनी जेब से पूरी

नहीं कर सकते। उन्हें चीजों के दाम बढ़ाने ही पड़ते हैं। आम लोगों के हाथ में अतिरिक्त धन आने से भी वस्तुओं की मांग ज्यादा बढ़ जाती है जिस से कीमतें भी और बढ़ जाती हैं।

इस के साथ ही राजनीतिबाजों की अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए, अपनी पार्टियों को चलाने के लिए और चुनाव लड़ने के लिए काले धन की मांग भी जुड़ जाती है। यह रकम सिर्फ माल व सेवाओं की कीमत से ही प्राप्त हो सकती है। इस प्रकार कीमतें और ज्यादा से ज्यादा बढ़ती जाती हैं।

कभीकभी यह कहा जाता है कि ज्यादा उत्पादन से कीमतें बढ़ना रोक जा सकता है। लेकिन अगर कहीं कोई ज्यादा उत्पादन होगा तो वह कच्चे माल और सेवाओं पर बढ़े हुए करों की वजह से ज्यादा कीमत पर ही होगा। इसलिए बढ़े हुए उत्पादन से भी कीमतें कम नहीं होंगी।

कीमतें कम करने के लिए:

- करों में कमी कीजिए
- सरकारी खर्च कम कीजिए

इस के अलावा और कोई रास्ता नहीं है।

मेड़चाल

भेजना ही, रामलाल से अच्छा आदमी नहीं मिल सकता. हर जगह उस के परिचित हैं. वह काम करवा कर ही लौटता है. पर उस में जरा सी खराबी भी है, वह दफ्तर का काम करने में कामचोर है, पर इस 'जरा सी

व्यंग्य • गायत्रीरानी जायसवाल

"साहब" चेहरे पर मासूमियत लाते हुए डबडबाई आंखों से उस ने मोहनजी की ओर देखा. मोहनजी ने सिर उठाया, देखा, उन के सामने रामलाल था, दफ्तर का सब से 'काबिल' कर्मचारी. कोई भी व्यक्तिगत काम हो, मेम साहब को कुछ मंगवाना हो, खरीदारी करानी हो, कहें

रामलाल ने क्रिकेट प्रेमी बनते हुए कार्यालय से भाग कर क्रिकेट का मैच देखने की जोड़तोड़ की, पर जब उस के दोस्तों ने इस खेल के बारे में उस से कुछ पूछा तो उस के छक्के छूट गए...



पुस्तकालय
गुरुकुल

बराबी के मुकाबले उस में देरों अचूक होंगे हैं।
मोहनजी सोच भी नहीं सकते कि अगर वह
दफ्तर में न होता तो उन का क्या हाल होता।
किसी और से टैक्सी लाने को कहो तो वह
इतना सा काम भी सलीके से न कर सकेगा।

अभी पिछले महीने की तो बात है। घर
में गैस खत्म हो गई थी और तीन दिन से फोन
पर फोन करने पर भी गैसवाले के कान पर जूँ
तक नहीं रेंग रही थी। उस का एक ही उत्तर
था 'गैस अभी नहीं आई है।' मेम साहब का
पारा सातवें असमान पर था, "इतने बड़े
हाकिम हो और जरा सी गैस नहीं मंगवा
सकते."

आखिर में रामलाल ही काम आया था।
भले ही 30 रुपए ब्लैक में देने पड़े थे, पर गैस
तो उसी दिन आ गई थी।

एक और घटना उन्हें याद आई। करीब
दो महीने पहले की बात है उन्होंने
बड़े साहब को खाने पर बुलाया था। खाने की
शानदार मेज पर अत्याधुनिक बरतनों में
खाना खाने के बाद, बड़े साहब की मेम साहब
ने ज़िद ही पकड़ ली, "मोहनजी, यह सेट मुझे
बहुत पसंद है। मेरे लिए भी एक मंगवा दीजिए
न, जो भी पैसे होंगे मिल जाएंगे।"

"बिलकुल आ जाएगा। आप चिंता न
करें," मोहनजी ने कहा था, पर मन ही मन
सोचने लगे थे कि इस प्रार्थना रूपी आदेश को
मूरा कैसे करें। यह खाने के बरतनों का सेट
16,000 रुपए का था। 'ठीक है, हम कमाते
हैं,' मोहनजी ने सोचा था, 'पर औरों को बांटने
के लिए थोड़े ही।'

ऐसे कठिन समय में उन्हें फिर रामलाल
माद आया था। मोहनजी को कुछ नहीं कहना
पड़ा और संतोखसिंह ठेकेदार से मिल कर
शाम को ही सेट बड़े साहब के पास पहुंचा
दिया गया था। मोहनजी को तो सेट पहुंचने का
तब पता चला था जब बड़े साहब की
मेम साहब का धन्यवाद का फोन आया था।
तब यह बात अलग है कि इस मामले में
रामलाल ने एक छोटी सी टी.सेट खरीद भी ले
लिया। ऐसे ही पचीसों छोटे बड़े काम उन के

हिसाब में कौन-कौन से काम आते हैं।
रामलाल ने उन के
लिए किए थे। वह अलादीन के चिराग का
जिन था, हरदिल अजीज था, ऐसे 'चमचे' का
बुझाबुझा चेहरा मोहनजी देख न सके।

"क्या बात है रामलाल? तबियत तो
ठीक है?" वह बोले।

"जी," मरी हुई आवाज में रामलाल ने
कहा।

"तब?"

"जी, बड़ी परेशानी में पड़ गया हूँ, वह
अपने शब्दों का प्रभाव देखने को कुछ रुका,
फिर बोला, "साहब, गांव से भाभी आई हैं।
बहुत बीमार हैं।"

"अच्छा," दोचार औपचारिक बातें
करने के बाद उन्होंने कहा, "तो छुट्टी चाहिए
तुम्हें?"

"नहीं, साहब."

"कुछ एडवांस चाहिए?"

"नहीं साहब," रामलाल देख रहा था
कि लोहा अभी गरम नहीं हुआ था। वह
बड़ेबूढ़ों की इस उक्ति को नहीं मानता था कि
जब लोहा गरम हो तभी चोट करो। उस का
सिद्धांत था कि लोहे को गरम करो और तब
चोट दो। वह अभी लोहा गरम कर रहा था।

"तब क्या मदद कर सकता हूँ, मैं?"
मोहनजी सहानुभूतिपूर्वक बोले।

"साहब वह... इलाज तो कराना ही
पड़ेगा, पर साहब वह..."

"यह क्या... सीधी बात बतलाओ, न."
उन्होंने मीठी झिड़की दी।

"साहब." उस की समझ से अब लोहा
गरम हो चुका था। "सभी छुट्टियाँ खत्म हो
चुकी हैं और भाभी का इलाज कराना ही है।"

"तो स्पेशल कैजुअल लीव, अंडं लीव,
मेडिकल लीव, क्या चाहिए, बोलो, अभी
मंजूर किए देता हूँ।"

"नहीं साहब, छुट्टी लूंगा तो काम का
नुकसान होगा, छुट्टी नहीं चाहिए।"

"तब?"

"साहब, मैं रोज दफ्तर आऊंगा, रोज
काम करूंगा। हाँ, अब की इजाजत
चाहिए कि जब जरूरत हो तब यहीं से भाभी



रामलाल ने रमेश को यह बताया कि उस ने किस प्रकार अधिकारी को बुद्ध बना कर मैच देखने की सुविधा प्राप्त कर ली और जोरजोर से हंसने लगा।

के पास हस्पताल चला जाय करूं." उस ने दयनीय आवाज में कहा।

"अरे, यह कौन सी बड़ी बात है," मोहनजी ने हंसते हुए कहा, "इतना सब काम तुम्हारे ऊपर होते हुए भी तुम अपने दायित्व के बारे में सजग हो, यह जान कर बहुत खुशी हुई."

"पर साहब वह बड़े बाबू..." उस ने वाक्य अधूरा छोड़ दिया।

"हां, बड़े बाबू से मैं कह दूंगा।"

खुशी से उछलता हुआ रामलाल मोहनजी की केबिन से बाहर निकल गया।

"लगता है काम बन गया, गुरु," सुरेश ने रामलाल से पूछा।

"बनता क्यों नहीं, मैं ने कोई कच्ची गोलियां खेली हैं? अरे, उन के सभी जायजनाजायज काम एक पैर पर खड़े हो कर करता हूं, भला मना कैसे कर देते?" वह बोला।

"आप लोगों ने इन का अभिनय नहीं देखा," मोहनजी की स्टेनो ने उन लोगों के पास जाते हुए कहा, "अगर बंबई चले जाएं

सभी कुमारों की छुट्टी कर दें. वाह, क्या शानदार अभिनय था रामलालजी का।"

"धन्यवाद, लेकिन भांडा न फोड़ देना," हंसते हुए रामलाल ने कहा।

"क्या बातें हो रही हैं, चुपकेचुपके, जरा हमें भी तो बताओ," रमेश पास आता हुआ बोला. वह एक कर्तव्यनिष्ठ, ईमानदार और मेहनती कर्मचारी होने के साथसाथ हंसमुख भी था और सभी सहकर्मियों में बेहद लोकप्रिय।

"अरे आओ रमेश, कोई खास बात नहीं हो रही है. बस 35 दिवसीय छुट्टियों की रूपरेखा बन रही है," रामलाल ने आंख दबा कर कहा।

"कैसी 35 दिवसीय छुट्टियां? कहीं बाहर जा रहे हो क्या?" रमेश अपनी उत्सुकता न दबा सका।

"अरे भई, इस की मत पूछ. इस के दिमाग को कोई नहीं पा सकता." सुरेश ने हंसते हुए कहा, "तभी तो हम लोग इसे गुर

"पर बात क्या है?"

"मैंने तो शानदार किंग्दम मैच था

हो रहा है. जानते ही न, सुरेश ने कहा.

"हांहां, पर उस से क्या?"

"तुम भी बस यार वो ही हो," सुरेश झुंझलाता हुआ बोला, "अपना यार रामलाल ठहरा क्रिकेट का पुराना प्रेमी. दुनिया इधर की उधर हो जाए, पर क्रिकेट नहीं छूट सकता. उसे मैच देखना है, पूरे पांच दिन, बिना छुट्टी लिए तो उस ने अपना तुक्का भिड़ा लिया है."

"भई, मेरी समझ में तो यह कूटनीतिक भाषा आई नहीं, तुक्का, मैच छुट्टी?"

रामलाल ने उसे पूरी बात बताई और जोरजोर से हंसने लगा.

"पर मैच तो परसों से है न," रमेश ने पूछा.

"हां, पर कल सभी खिलाड़ी होटल में आ जाएंगे. उन से मिलना है."

"उन से?" आंखें फाड़ कर रमेश बोला, "उन से कैसे मिलोगे? क्या उन्हें जानते हो? सुना है लोग उन्हें बहुत परेशान करते हैं, इसलिए पुलिस लगा दी गई है." रमेश ने शंका प्रकट की.

"अरे, जब यहां का पाला जीत लिया है तो वहां भी कोई न कोई तुक्का भिड़ ही जाएगा," रामलाल लापरवाही से बोला.

"हां भई, अपनी अपनी बात है," सुरेश लंबी सांस भर कर बोला, "यह वहां जिदा मैच देखेगा और हमें यहां मुर्दा कमेंट्री से ही संतोष करना पड़ेगा."

"लेकिन इस जरा से खेल के लिए तुम ने झूठ बोला," रमेश ने कहा.

"वाह, वाह, आप से मिलिए," रामलाल ने नाटकीय मुद्रा बना कर कहा, "50 हजार लोग जहां सुबह से शाम तक जमे हों उसे आप 'जरा सा' खेल बता रहे हैं? संसार का सब से रोमांचकारी खेल आप के लिए 'जरा सा' है? वे 50 हजार लोग आप की नजरों में बेवकूफ हैं जो पैसा और समय खर्च कर के दिन भर धूप में बैठे रहते हैं? क्या हमारी सरकार भी बेवकूफ है, जो बिमारी कमेंट्री सुनाती रहती है, टी.वी. पर दिनदिन

बेवकूफ हैं, जो अपनी बिजली और रुपया खर्च कर के टी.वी. और रेडियो से चिपके रहते हैं."

"मतलब यह कि यह भेड़चाल हो गई है. प्रगतिशील बनने के लिए आप वह सब करेंगे जो और सब कर रहे हैं," रमेश बोला, "उन सब के पास समय होगा, पर तुम एक दफ्तर में काम करते हो. दफ्तर के प्रति भी तुम्हारी जिम्मेदारियां हैं. न खेल खेलना बुरा है और न उसे देखना दिखाना, पर ऐसे इसे दिखाना चाहिए कि देशवासियों का नुकसान न हो. तुम्हारी इस भेड़चाल पर एक किस्सा याद आ गया."

"सुनाइए, आप का किस्सा भी सुन लें," व्यंग से रामलाल बोला.

"एक" साहब ने पूछा कि दुनिया गोल होने के दो प्रमाण दो तो तुम्हारे जैसे ही एक साहब बोले, पहला प्रमाण तो यह है कि यह बात किताबों में लिखी है. किताबों में लिखा यदि झूठ होता तो पढ़ाया न जाता और दूसरा प्रमाण यह है कि हमारे मास्टर साहब कहते हैं. यदि वह झूठ बोलते तो निकाल दिए जाते. सब क्रिकेट देखते हैं, उसे अच्छा कहते हैं, इसलिए जरूरी है कि तुम भी उसे अच्छा कहो."

"मजाक उड़ाना आसान है, रमेशजी, पर दुनिया में रह कर दुनिया के साथ चलना ही दुनियादारी है," रामलाल ने तर्क दिया, "वरना दुनिया तुम्हें पीछे छोड़ देगी."

"यानी जो लोग क्रिकेट नहीं देखते वे आप की नजरों में पिछड़े हैं?"

"बेशक."

"देखो रामलाल, मैं किसी खेल को बुरा नहीं कहता. खेल अवश्य खेलना चाहिए, देखना भी चाहिए, खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन भी करना चाहिए, पर काम के करोड़ों घंटे बरबाद कर के नहीं. झूठ बोल कर छुट्टी ले कर नहीं. दफ्तर या कालिजों से भाग कर फिर बोला, "रामलाल, क्या तुम ने कभी सोचा है यह



"भई रमेश इन देशप्रेमी महोदय से मिलो," रामलाल रमेश की खिल्ली उड़ाते हुए बोला.

है. 50 हजार ब्रो मैदानों में बैठे खेल देख रहे हैं और करोड़ों लोग अपना कामधान छोड़ कर रेडियो और टी.वी. से चिपके बैठे हैं. यदि औसतन प्रति व्यक्ति प्रतिदिन पांच घंटे इस में बरबाद कर रहा है तो... नहीं हमारा विकासशील देश इस ऐयाशी का भार नहीं उठा सकता."

"अब चुप भी रहो," रामलाल चिढ़ता हुआ बोला, "अगर तुम्हारे गणित से देखा जाए तो दिन भर काम में पिले रहें."

"मैं ने यह तो नहीं कहा, पर जो काम के घंटे हैं उन्हें बरबाद नहीं करना चाहिए. अब तुम स्वयं देखो, कम से कम चारपांच दिन या तो तुम दफ्तर आओगे ही नहीं या पूरे दिन काम नहीं करोगे. इस बीच सैकड़ों व्यक्ति जिन की फाइलें तुम्हारे पास हैं, आआ कर लौट जाया करेंगे. तुम्हारा काम तो पिछड़ेगा ही, उन व्यक्तियों को भी बारबार आने में धन, समय और शक्ति बरबाद करनी होगी. हमारे अन्य साथी भी कमेट्री से चिपके रहेंगे.

कितने लोगों का कितना समय, कितने दिनों तक खराब होता रहेगा."

"भई सुरेश, इन देशप्रेमी महोदय से मिलो," रामलाल खिल्ली सी उड़ाता हुआ बोला, "क्या हम ने सरकारी नौकरी काम करने के लिए की है? क्या हमी ने काम करने का ठेका ले रखा है? क्या केवल हमारे काम करने से देश में खुशहाली छा जाएगी? और यह तो राजकाज है, चलता ही रहेगा, जिसे गरज होगी वह 10 चक्कर लगाएगा. हम तो बुलाने नहीं जाते उसे. रही छुट्टी की बात, तो जनाब, जब सरकारी छुट्टी आसानी से मिल रही है तो अपनी छुट्टी क्यों बरबाद करें? आखिर सरकार मैच क्यों करा रही है, इसी लिए कि जनता देखे. सरकारी मैच, सरकारी छुट्टी, हिसाब बराबर." वह ठहाका मार कर हंस पड़ा.

"बेशर्मी की सी हद है, रामलाल," रमेश बोला, "तुम्हारे दर्शन तुम्हें ही मुबारक हो, पर धूप में बैठे, सिर पर अखबार

कृतघ्न

कृतघ्न का पुत्र होना, सप के दाँतों से ज्यादा तेज होता है।
—शेक्सपीयर

"हां हां, सुनाओ," रामलाल को धेर कर सभी बोल उठे।

"एक नेताजी फुटबाल के मैच का उद्घाटन करने गए। उद्घाटन के समय फुटबाल को ठोकर मारी तो पैर में मोच आ गई। खैर शामियाने के नीचे आकर बैठ गए। मैच समाप्त होने पर उन से दो शब्द बोलने को कहा गया तो वह बोले, देवियों की सज्जनो, हमें बहुत दुख है कि अभी विकासशील देश होने के नाते हम बहुत कुछ नहीं कर सके हैं। अब देखिए, एक गेंद के पीछे देश के 20-22 कर्णधार दौड़ रहे हैं। इतने दिनों की स्वतंत्रता के बाद भी हम हर खिलाड़ी के लिए एकएक गेंद की व्यवस्था न कर सकें, पर घबराइए नहीं, मैं आप को विश्वास दिलाता हूं कि यदि मेरी कर्तब सलामत रही तो अगले पांच वर्षों में हर खिलाड़ी के लिए एकएक गेंद का इंतजाम कर के रहूंगा।"

बहुत जोर का ठहाका लगा पर रामलाल खिसियानी बिल्ली सा कैलाश को घूरता रहा।

"कहो भाई रामलाल, पसंद आई यह कहानी।" उसे छोड़ता हुआ सा कैलाश बोला।

"चुप रहो, खुद कुएं के मेढक बने हो तो चाहते हो कि सब वैसे ही बने रहें," वह गुस्से से बोला और एक ओर चल दिया।

"एक बात समझ में नहीं आई। यह मैच तो पांचछः दिनों में समाप्त हो जाएगा, जब वह 35 दिवसीय कार्यक्रम कैसे बना रहा है?" रमेश बोला।

इस पर कैलाश बोल पड़ा, "मैं बताता हूं। यह मैच खत्म होगा तो कोई दूसरा मैच शुरू होगा यानी इन दिनों वह या तो रेडियो से चिपका रहेगा या पड़ोसियों के टी.वी. से। बस फिर 35 दिन क्या, महीनों काट दो।"

"पर यार, काम धाम?" सुरेश बोला।
"काम गया भाड़ में। चमचागीरी

"तुम अभी जमाने से 100 वर्ष पीछे हो रमेश, तुम नहीं समझोगे। बंदर क्या जानें अदरक का स्वाद। तुम्हें तो शायद 'क्रिकेटी' की स्पेलिंग भी न आती हो। इस का मजा तो उस से पूछो जो क्रिकेट जानता हो, जिस में इस खेल की समझ हो। जब कपिल देव छक्का लगाता है तो लोगों के छक्के छूट जाते हैं। जब गावस्कर चौका लगाता है तो लोग चौंकचौंक जाते हैं। क्या रोमांच है इस खेल में?"

भोजनावकाश हो गया था अतः इस चखचख में बाकी लोग भी शामिल हो गए थे। कैलाश, जो सहकर्मियों में मुंहफट मशहूर था, बोला, "यार रामलाल, कमेंट्री सुनते वक्त कुछ शब्द मेरे कानों में भी पड़ जाते हैं, जैसे मिड आन, मिड आफ, सिली पाइंट, स्पिन, वगैरहवगैरह। क्या मतलब है, इन शब्दों का?"

"अरे, इन शब्दों को ले कर चाटना है क्या? मैच देखो, मैच का रोमांच महसूस करो, बस," रामलाल बात को हवा में उड़ाता हुआ बोला।

"लेकिन मैच का पूरा मजा लेने के लिए इन शब्दों को जानना जरूरी है न।" कैलाश उसे छोड़ना नहीं चाहता था।

"खाक जरूरी है, रामलाल ने नाक चढ़ा कर कहा, "आम खाने से मतलब है या पेड़ गिनने से। मैं इन सब पचड़ों में नहीं पड़ता।" वह जान छोड़ता हुआ सा बोला।

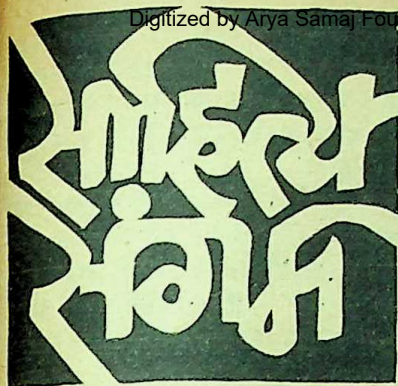
"पचड़ों में नहीं पड़ते या जानते नहीं," रमेश ने धीरे से चुटकी ली।

"अरे भई रमेश, तू भी कहां फंस गया," कैलाश बोला, "रामलाल का मैच देखना, क्रिकेट कमेंट्री सुनना एक फैशन है तो भला अपना रामलाल पीछे क्यों रहे," वह खिल्ली सी उड़ाता हुआ बोला तो सब ठहाका मार कर हंस पड़े।

जब हंसी थमी तो कैलाश बोला, "तुम्हें एक किस्सा सुनाऊंगा। सुना नहीं सक्त है या लतीफा, पर रामलाल जैसे भेड़चाल वालों की

पुस्तक: 'राजनीति की शतरंज'

लेखक: शांताकुमार, प्रकाशक: राजपाल एंड संस, दिल्ली, पृष्ठ: 285, मूल्य: 30 रुपए.



राजनीति की 'शतरंज'

यह पुस्तक जनता शासन में हिमाचल प्रदेश के मुख्य मंत्री, शांताकुमार (जो हिमाचल में मुख्य मंत्री बनने से काफी पहले ही सुपरिचित लेखक रहे हैं। उन की अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, जिन में भारतचीन युद्ध के संदर्भ में लिखी गई पुस्तक 'हिमालय पर लाल छाया' विशेष उल्लेखनीय है।) के संस्मरणों पर आधारित है। इस में कुछ उस समय की अत्यधिक चर्चित घटनाएँ भी हैं। इन सभी घटनाओं से लेखक का किसी न किसी रूप में संबंध रहा है। इन घटनाओं का विस्तार से वर्णन किया गया है।

पुस्तक ठाकुर रामलाल द्वारा जनता विधायकों से दलबदल करवा कर शांताकुमार की सरकार गिरा देने से प्रारंभ होती है। यहां सरकार गिरने पर शांताकुमार द्वारा मंत्रि मंडल सहित फिल्म देखने जाने का भी वर्णन है।

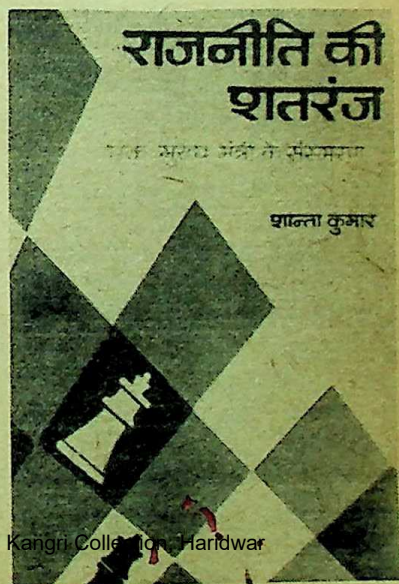
इस के पश्चात लेखक परत दर परत 1977 के लोकसभा चुनावों के बाद के अपने अनुभवों का वर्णन करता चलता है। लेखक स्वयं लोकसभा का चुनाव लड़ना चाहता है, परंतु उस के अनुसार वह स्वयं ही पार्टी व एक अन्य व्यक्ति के लिए ऐसा न करने का निश्चय करता है। चुनाव हुए और जनता पार्टी उस में भारी बहुमत से जीत गई, जिस के पश्चात शीघ्र ही नौ राज्यों की विधान सभाएं भंग कर दी गईं।

इन विधान सभाओं में जनता पार्टी द्वारा बहुमत प्राप्त कर लिया जाना निश्चित था। जिस ने सत्ता के लोभियों को अपनी कारगुजारियां दिखाने को मजबूर कर दिया। हिमाचल प्रदेश भी इस का अपवाद नहीं रहा। हिमाचल प्रदेश जनता पार्टी के कुछ लोक

सभा सदस्य ही इन में सब से आगे थे। केंद्र में बैठे कुछ वरिष्ठ नेता उन्हें यह सब करने के लिए पूरी शह दे रहे थे।

खैर, शांताकुमार मुख्य मंत्री बन जाते हैं। पार्टी के ही विरोधी उम्मीदवार के मुकाबले उन्हें केवल एक विधायक का अधिक समर्थन प्राप्त होता है अर्थात् पार्टी के विपक्षी, जिन्हें अब असंतुष्ट कहना अधिक उचित होगा, भी पर्याप्त शक्तिशाली थे।

मुख्य मंत्री बनने के पश्चात मंत्रि मंडल



का गठन होता है। पार्टी अध्यक्ष चंद्रशेखर के समक्ष इस के लिए एक सूची प्रस्तुत की गई। जिसे उन्होंने हिमाचल के ही एक अन्य सांसद रंजीतसिंह को भी दिखाने के लिए कहा। रंजीतसिंह अपने एक समर्थक को मंत्री पद पर सुशोभित देखना चाहते थे।

मंत्रि मंडल का गठन हुआ, परंतु इस से पूर्व क्याक्या हुआ यह पढ़ने योग्य है। अधिकांश केंद्रीय नेता अपने समर्थकों (चमचों) को मंत्री पद पर आसीन देखना चाहने लगे थे और तो और प्रधान मंत्री मोरारजी देसाई भी एक कांग्रेसी को प्रदेश विधान सभा का अध्यक्ष बनाए जाने के पक्ष में थे। इन सब से मुख्य मंत्री कैसे निबटे व मजबूर हो कर उन्हें क्याक्या करना पड़ा, यह सब स्वच्छ राजनीति का नारा लगाने वालों के लिए काबिलेगौर है।

शांताकुमार के अनुसार तब असंतुष्ट ओछेपन पर आ जाते हैं व उन्हें बदनाम करने के लिए एक के बाद एक हरकतें प्रारंभ कर देते हैं। उन पर एक स्त्री को रखल बना कर रखने तथा मंत्रि मंडल की एक महिला मंत्री पर हमला करने व उस के अपहरण की चेष्टा करने का भी आरोप लगाया जाता है।

असंतुष्टों के केंद्रीय आका उन्हें थोड़ेथोड़े समय पश्चात विधायकों का विश्वास प्राप्त करने के लिए मजबूर करते हैं। लेखक ने प्रत्येक घटना को विस्तारपूर्वक लिखा है। जिस से आज की राजनीति का चित्र प्राप्त होता है। अतः इसी लिए पुस्तक को पढ़ना आवश्यक है।

पुस्तक की (और लेखक की भी) एक विशेषता यह है कि इस में उस ने विरोधियों व समर्थकों के नाम बिना किसी हिचकिचाहट के लिए हैं व उन की कारगुजारियों को स्पष्ट रूप से लिखा है। उन्होंने असंतुष्टों की गतिविधियों को कुछ केंद्रीय नेताओं द्वारा शह दिए जाने पर कड़ा प्रहार भी किया है। यहां पार्टी के वरिष्ठतम नेताओं को भी लेखक ने नहीं बख्शा है, क्योंकि प्रकाशित करने पर भी उन्होंने किसी के विरुद्ध कोई काबूबाई नहीं की थी।

चरणसिंह नामक राम के राजनारायण नामक हनुमान पर तो पुस्तक में पूरा अध्याय है। राजनारायण के 'फ्री स्टाइल' अनुशासन का वर्णन रोचक टिप्पणियों के साथ किया गया है।

शिमला में माल रोड से ऊपर एक मैदान है - रिज मैदान। यहां केवल सरकारी सभाएं ही की जा सकती हैं, राजनीतिक सभाएं नहीं। वैसे इस मैदान का प्रयोग जनसाधारण और पर्यटक सैरसफाई के लिए भी करते हैं। यह शिमला का सर्वाधिक लोकप्रिय स्थान है।

25 जून, 1978 को राजनारायण शिमला आए व अनुमति न दिए जाने पर भी उन्होंने रिज मैदान पर अपनी राजनीतिक सभा की। जिस में स्वयं उन्होंने व उनके कुछ साथियों समर्थकों ने शांताकुमार की कड़ी आलोचना की। इस पर मुख्य मंत्री के रूप में लेखक द्वारा भेजी गई रिपोर्ट को आधार बना कर तत्कालीन प्रधान मंत्री मोरारजी देसाई ने राजनारायण को जो उन दिनों स्वास्थ्य मंत्री थे, मंत्रि मंडल से निकाल दिया था। इस के पश्चात राजनारायण लेखक के विरुद्ध क्याक्या करते हैं, उस से पाठकों को उन के व्यक्तित्व व जनता पार्टी के विघटन के लिए उन के द्वारा की गई कारगुजारियों की अच्छी जानकारी मिलती है।

मुख्य मंत्री होते हुए भी कई बार नौकरशाही के हाथों बेबस होने व सांस्कृतिक गतिविधियों में संलग्न रहने का वर्णन भी पुस्तक में किया गया है।

एक भुक्तभोगी लेखक ने पुस्तक को आज की राजनीति, जिस का अंतिम ध्येय सत्ता की प्राप्ति ही है, की जानकारी देने वाला प्रामाणिक ग्रंथ बना दिया है। लेकिन असंतुष्टों की काररवाइयां व उस समय की हिमाचल प्रदेश की प्रमुख राजनीतिक घटनाओं में लेखक ने स्वयं को जो स्थान दिया है, उस से कई बार मन में यह विचार उत्पन्न होता है कि कहीं इस पुस्तक को लिखने के पीछे शांताकुमार का अहंकार व विद्वत्ता के अभाव में अपनी छवि का निर्माण तो नहीं है।

याद तो आता होगा!

नीम का तिनका
दांतों में दबा कर
सोचती होगी
तुम अकसर
वह सुबहें
जो तुम्हारे उर्गी साथ,
वह दोपहरें
जो तुम्हारे साथ
युवा हुई,

जिस के किनारे
देखते रहे एकदूसरे को
पर मिल नहीं पाए.

हलकेहलके
उंगलियां सिर में फिराना,
मेरी उदासियों को

चूड़ियों की खनखनाहट
में छुपा लेना
और चुपके से ढेर सा
अमृत बरसा देना
अकसर
याद तो आता होगा!

—विश्वमोहन माथुर

वह शामें
जो बिन बताए
ढल गई,
उस नदी में



ये लड़के ये लड़कियां

इस स्तंभ के लिए अपने रोचक संस्मरण भेजिए. प्रकाशित होने पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी, पत्र पर अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.

भेजने का पता : दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली-110055.

हमारी हिंदी की अध्यापिका अकसर कक्षा में अंत्याक्षरी का कार्यक्रम रखती थीं. एक तरफ लड़के तथा दूसरी तरफ लड़कियां होती थीं.

एक दिन उन्होंने अंत्याक्षरी की बात कही तो लड़कों ने आनाकानी की. इस पर लड़कियां कहने लगीं, "ये क्या खेलेंगे हमारे साथ. ये तो बच्चे हैं, कुछ आताजाता तो है नहीं."

इस पर एक लड़के ने उठ कर कहा, "हां, आप सब तो एकदो बच्चों की मां होतीं. सभी लड़कियों की सुरत देखने लायक हो गई और अध्यापिका भी उस लड़के की हाकिम जवाबी पर हंसे बिना नहीं रह सकीं.

—द्वारिकाप्रसाद चेटाय

हमारे कालिज के गेट पर मधुमक्खियों का छत्ता लगा हुआ था. एक दिन कुछ शरारत लड़कों ने लड़कियों का झुंड आता देख कर मधुमक्खियों को छेड़ दिया, लेकिन उस का नतीजा उलटा निकला.

जब तक लड़कियां गेट तक आतीं, तब तक मधुमक्खियों ने उन लड़कों को खदेड़खदेड़ कर खूब काटा.

इस घटना के बाद उन लड़कों ने फिर कोई शरारत नहीं की.

—अवधेशकुमार अस्थ

एक बार हमारे हिंदी के अध्यापक 'क्रोध' का पाठ पढ़ा रहे थे. क्रोध और बैर में अंतर समझाते हुए वह बोले, "यदि किसी छात्र ने शरारत की और शिक्षक ने उसे तुरंत दंड दिया तो उसे क्रोध कहेंगे और बैर वह कहा जाएगा, अगर..."

"...परीक्षा के समय निकाला जाए," एक लड़के ने पीछे से वाक्य पूरा किया.

इस पर कक्षा में जोर ठहाका लगा और अध्यापक भी मुसकरा उठे.

—कामेशकुमार रायपू

हमारे कालिज के भौतिक शास्त्र के प्रोफेसर एक लड़के की बहुत इज्जत करते थे, क्योंकि वह बहुत विनम्र था. एक बार प्रोफेसर ने कोई सवाल हल करने के लिए उसी लड़के को खड़ा किया और कहा, "बेटे, वैसे तो तुम काफी व्यवहारकुशल और विनम्र हो, इस की मुझे खुशी है."

लड़के ने फौरन कहा, "साहब, यह आप की मेहरबानी है."

"लेकिन हम आपन विषय की ओर ज्यादा ध्यान नहीं दे रहे हो." उन्होंने आगे कहा.

लड़के ने हमेशा की तरह कहा, "साहब, आप की मेहरबानी है." इस पर हम सब की हंसी निकल

हंस पड़े.

एक बार हमारे कालिज में एक लड़के ने लड़कियों की ओर इशारा करते हुए कहा, "क्या डी.डी.टी. की खुशबू आ रही है।"

तभी एक लड़की बोली, "लेकिन मच्छर अभी भी नहीं मरे।"—महेंद्रकुमार तिवारी

*

लगभग दो वर्ष पूर्व महाराष्ट्र समाज की ओर से 'शांसी की रानी' नाटक का मंचन किया गया।

एक दृश्य में अंगरेजों से लड़ते लड़ते रानी की सहेली मुंदर मारी जाती है। रानी को यह खबर दी जाती है और वह दुखी हो कर मुंदर को देखने आती है।

उस के बाद परदा गिरना था, लेकिन परदा गिरा नहीं और मुंदर घबराहट में उठ कर भाग जाती है।

यह देख कर सभी छात्रछात्राएं हंसने लगे और आगे का नाटक बेकार हो गया।

—ऊषानाम जोशी

*

हम कुछ मित्र चिड़ियाघर देखने गए। वहां लड़कियों की एक बस भी आई हुई थी। सभी लड़कियां चिड़ियाघर देखने चली गईं, केवल एक लड़की बस में बैठी रही। हम सभी मित्र उस के इदीगर्द घूमते रहे।

हमारे एक मनचले मित्र से न रहा गया तो उस ने पूछ लिया, "आप चिड़ियाघर देखने नहीं जाएंगी।"

उस लड़की ने तपाक से कहा, "तुम सभी को देख लिया, अब चिड़ियाघर देखने की क्या जरूरत है? इस पर मेरे मित्र का चेहरा देखने लायक हो गया।

—राजेश पारीक

*

मैं अपने तीन मित्रों के साथ कालिज के बगीचे में घूम रहा था। मेरे एक मित्र ने बड़े बड़े फूलों की कमीज पहनी हुई थी। हमारे पीछे कुछ लड़कियां थीं।

एक लड़की ने दूसरी से कहा, "देखो, पूरा बाग का बाग जा रहा है।"

मेरे मित्र ने तुरंत उलट कर जवाब दिया, "बाग देख कर ही तितलियां मंडराती चली आ रही हैं।"

—महेंद्रकुमार

*

कालिज में लड़के अक्सर लड़कियों को देख कर छींटाकशी किया करते थे। एक दिन कुछ लड़कियां लान पार कर के कक्षा की तरफ जा रही थीं। इस पर किसी लड़के ने कहा, "अरे यार, बिल्लियां रास्ता काट गईं। अब कक्षा तक कैसे जाएं?"

तभी एक लड़की जोर से बोली, "बड़ी शरम की बात है कि कुत्ते खड़े देखते रह गए।" लड़कों पर घड़ों पानी पड़ गया।

—सुधा शोयल

*

बात उन दिनों की है जब मैं बी. एस.सी. की परीक्षा दे रही थी। लड़के लड़कियों की परीक्षा एक ही कालिज में हो रही थी।

प्रश्न पत्र समाप्त होने के बाद हम कुछ लड़कियां बातें करती हुई जा रही थी कि एक लड़का आया और एक कलम दे गया।

वह कलम हमारी सहेली का था। कलम ले कर हम कुछ आगे बढ़े कि एक लड़का आया और बोला, "सुनिए, हिंदी में 'धन्यवाद', अंग्रेजी में 'थैंक्स' और उर्दू में 'शुक्रिया' शब्द हैं, क्या इन में से आप लोगों को एक भी नहीं आता।"

जब तक हंस-मोहों-कहो-अपनी-मालती-का-आइया-होना-और-इस-अपनी-पलती-के-लिए-भ्रमा-मांगतीं. तब तक वह अपने दोस्तों में जा मिला।

—कुमकमुकमारी

साधारण लोगो

विश्व में एक भी समुदाय ऐसा नहीं है, जहाँ विवाह प्रथा का अस्तित्व न हो। भले ही विवाह के स्वरूप अथवा प्रकारों में भिन्नता हो, बहुपत्नी या बहुपति प्रथा का प्रचलन हो।

भारत के सामाजिक जीवन में लड़के का अपने प्रेमी के साथ भाग जाना अच्छा नहीं समझा जाता। लड़के या लड़की द्वारा चुपकेचुपके शादी कर लेना भी माँबाप पसंद नहीं करते। फिर हमारे संस्कार ही इतने प्रबल



में लड़की
छा नहीं
ही द्वारा
पपर
तेने प्रव

में विवाह

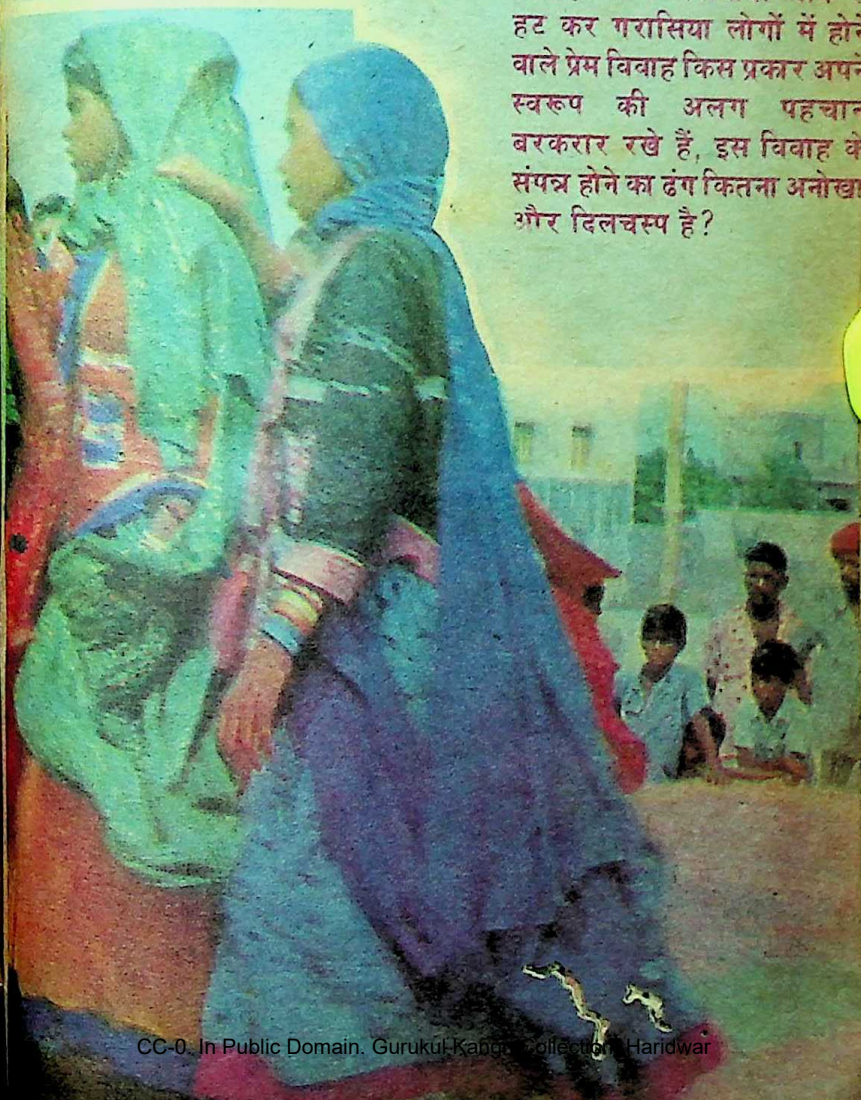
Digitized by Arya Samaj Foundation ~~Uttarakhand~~ and eGangotri

हैं कि सामान्य तौर पर लड़कियां मातापिता की इच्छा के विरुद्ध किसी प्रेमी के साथ भाग जाना पसंद ही नहीं करती हैं। लड़के भी ऐसी जोखिम उठाते हुए डरते हैं। मांवाप पर ही प्रायः विवाह का उत्तरदायित्व डाल दिया

ऐसे परंपरागत विवाहों से ठीक विपरीत गरासिया जाति में विवाह होते हैं। राजस्थान में पाली, सिरौही और उदयपुर जिले में अरावली पर्वत शृंखलाओं की ढलानों में रहने

लेख • सुभाष रावल

विवाह की परंपरावादी लीक से हट कर गरासिया लोगों में होने वाले प्रेम विवाह किस प्रकार अपने स्वरूप की अलग पहचान बरकरार रखे हैं, इस विवाह के संपन्न होने का ढंग कितना अनोखा और दिलचस्प है?



Digitized by Anva Samaj Foundation Chennai and eGangotri
 वाली इस जनजाति में दहेज और मातापिता की स्वीकृति और झड़पों से पर बहुत दिलचस्प तरीके से विवाह होते हैं। सभ्य समाज के निरंतर संपर्क में आने से इन की विवाह प्रथा भी यद्यपि काफी प्रभावित हुई है, फिर भी उन में 80 प्रतिशत विवाह प्रेम विवाह ही होते हैं। मातापिता को अपने बेटेबेटियों के विवाह की चिंता नहीं रहती।

सभ्य समाज में प्रेम विवाहों के असफल हो जाने के चर्चे प्रायः सुनने को मिलते रहते हैं, पर गरासिया लोगों में प्रेम विवाह असफल होते कम सुने जाते हैं, क्योंकि यहां उन की आन का सवाल होता है, जिसे पसंद किया है

उसे उम्र भर निभाना ही पड़ेगा। आखिर अपनी रुचि को खराब बताना क्या अच्छी बात है? पर अपवाद स्वरूप विशेष परिस्थितियों में दूसरी शादी भी की जा सकती है। आजकल गरासिया लोगों में 20 प्रतिशत तक मातापिता द्वारा विवाह होने लगे हैं, किन्तु 1947 से पूर्व तो प्रायः शतप्रतिशत विवाह स्वेच्छा से यानी प्रेम विवाह ही हुआ करते थे।

विवाह की प्रक्रिया

प्रेम विवाह का मतलब ही यह है कि इन में बाल विवाह नहीं होते। विवाह योग्य आयु लड़कों के लिए सामान्य तौर पर 18 से 24 वर्ष

मिलन की सुखद वेला में गरासिया युगल.





अतीत की यावों में खोई आदिवासी महिलाएं.

तथा लड़कियों के लिए 14 से 18 वर्ष रहती है. बिना किसी धार्मिक रीतिरिवाजों के विवाह होते हैं. जीवन के इस निजी पक्ष में संबद्ध दो प्राणियों के अलावा किसी तीसरे का कोई दखल ही नहीं होता. तीसरे व्यक्ति को तो खबर ही तब लगती है जब विवाह हो चुका होता है.

इन में जीवन साथी के चुनाव की प्रक्रिया बचपन से ही प्रारंभ हो जाती है. बचपन का प्रेम जीवन भर निभाया जाता है. प्रेम में दिए गए कौलकरार सब बरकरार रहते हैं. छोरेछोरी कहलाने वाली उम्र में गरासिया जोगों के पक्षीस घूमजंगल में पशु चराने और खेती करते के साथ ही मजदूरी

करना भी होता है. इसी समय से प्रेम-के अंक फूटने लगते हैं.

बचपन के साथी

जवानी की देहरी पर कदम पड़ते बचपन के साथी के साथ रहने की उत्कं बलवती होती चली जाती है. दूर जंगल बैठा गरासिया युवक अथवा युवती अप प्रेमी-प्रेमिका को बुलाने के लिए जोरजोर गीत गाते हैं या वाद्ययंत्र बजाने लगते. एक-दूसरे में बैठे युवक अथवा युवती के इ गायन को उन के भाषा में हेलो कहते हैं. गीत की भाषा को पहचान कर छोकरियां घरों से निकल कर जंगलों की ओ

गाती हैं। लड़कियाँ अपने प्रेमी के साथ मिलना बना कर वे अपने प्रेमी के पास आ जाती हैं। इसी तरह लड़की भी तेज स्वर में गाती है जिसे सुन कर प्रेमी भागा चला आता

एकदूजे की परख

घंटों तक लुकछिप कर यह मिलन होता। बचपन के साथी जीवनसाथी होने की धुन

अधना वादी निभाती है। वे भाग कर पहाड़ों में छिप जाते हैं। इसे वे अपनी भाषा में 'खींचणा' करते हैं। मेला छोड़ कर भागने की प्रक्रिया बहुत तड़के होती है।

पाली जिले में वैशाख कृष्ण सप्तमी को यह मेला प्रतिवर्ष गोरिया गांव में रबी की फसल काटने के बाद लगता है। मेले में हजारों की संख्या में गरसिया स्त्रीपुरुष नृत्य करते हैं और गीत गाते हैं। स्त्रियां गणगौर की प्रतिमा



विवाह से पूर्व की तैयारियों में व्यस्त गरसिया जाति की युवातियां।

रहते हैं। एकदूजे को परख लेने का काफी समय होता है, अतः इन का प्रेम विवाह प्रायः सफल ही रहता है।

यहां अपने मनचाहे साथी के साथ हो लेने का सब से अच्छा और एक मात्र अवसर होता है-मेला। मेल कराने वाला यह मेला प्रायः गणगौर में होता है। गणगौर के मेले में तड़के लड़कियां नाचते हैं, गाते हैं और इसी नाचगाने में एकदूसरे को लुकाते हैं। इसी गामे के बीच अपने प्रेमी के साथ मिलन करते हैं। लड़का इस मौके पर चूकता नहीं। लड़की

को रात भर एक के बाद एक सिर पर रखे नाचती हैं। मान्यता यह है कि इस से मनचाहा मीत मिलता है।

उन के भागने का पता लगने पर लड़की का पिता लड़के के पिता के घर अपने कतिपय रिश्तेदारों के साथ औपचारिक विरोध करने पहुंचता है। पंचायत बुलाई जाती है और लड़के के पिता को जुरमाने के रूप में 50 रुपए से लेकर 200 रुपए तक देने होते हैं। यह पंचायत तय करती है। जुरमाना देने के बाद लड़का अपने घर आता है भगोड़े



मेले में गरसिया युवती प्रसन्न मुद्रा में.

लड़केलड़की अब पतिपत्नी के रूप में साथ रहने लगते हैं. वस इस के अलावा कोई धार्मिक या सामाजिक रस्में नहीं होती हैं.

इस प्रेम विवाह में गौत्र संबंधी भूल भी कभीकभी हाँ जाती है. सम गौत्र में विवाह होना संभव नहीं है. ऐसी भूल हो जाने की स्थिति में गरसिया पंचायत 15 रुपए का

जुरमाना कर के प्रेमीप्रेमिका का संबंध विच्छेद करवा देती है, वे पृथक् हो जाते हैं और अगले मेले में कोई दूसरा साथी तलाश कर लेते हैं.

पंचायत के समक्ष विवाह स्वीकार हो जाने पर दावत होती है. लड़के वालों को दावत दी जाती है, जिस में मक्की की राटी व

मेला अपने मन चाहे साथी को चुनने का बेहतरीन मौका.



सरिता व मुक्ता में प्रकाशित
लेखों के महत्वपूर्ण रिप्रिंट
सेट नं. 1

प्राचीन हिंदू संस्कृति
शंबूक वध
अतीत का मोह
पुरोहितवाद
गौ पूजा
हमारी धार्मिक सहिष्णुता
कृष्ण नीति: हमारा नैतिक पतन
ज्ञान की कसौटी पर परलोकवाद
राम का अंतर्द्वंद्व
राम का अंतर्द्वंद्व: आ. व आ. के उत्तर
भारत में संस्कृति का ब्राह्मण
नियंत्रित विस्तार
हिंदू धर्म
संस्कृत
भारतीय नारी की धार्मिक यात्रा
कर्ण
भारतीय नारी की सामाजिक यात्रा
तुलसी और वेद
रामचरितमानस में ब्राह्मणशाही
युगोंयुगों से शोषित भारतीय नारी
भ्रष्टाचार
रामचरितमानस में नारी
सत्यनारायण व्रत कथा
क्या नास्तिक मूर्ख है?
गांधी जी का बलिदान
यज्ञोपवीत
जंत्र तंत्र मंत्र
कर्मयोग
गुरुड़पुराण
ईश्वर आत्मा और पाप
कितना महंगा धर्म?

मूल्य-5 रुपए

50% की पुस्तकालयों, विद्यार्थियों व
अध्यापकों के लिए विशेष छूट.

रुपए अग्रिम भेजें.

वी.पी.पी. नहीं भेजी जाएगी.

सेट में लेखों का परिवर्तन भी हो
सकता है.

दिल्ली बक फिन्नी

एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली

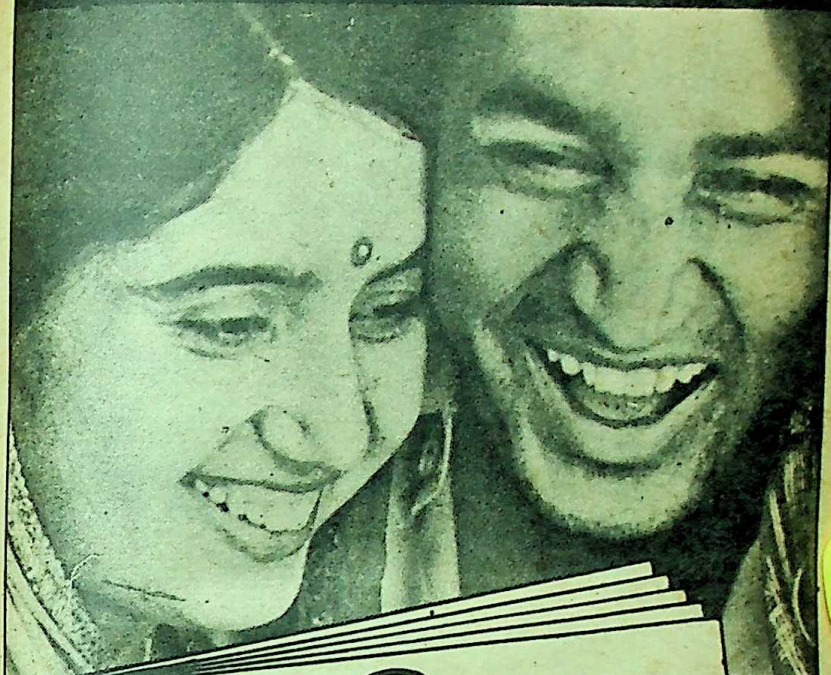
जाती है। इसे वे अपनी भाषा में करवा कहते हैं। पंचायत की स्वीकृति मिलने पर मांस भी पकाया जाता है। विवाह के कुछ समय बाद ही लड़के का पिता लड़के को कुछ जमीन दे कर उसे अलग झोंपड़ी में बसा देता है। वस यहीं से एक नई गृहस्थी का जन्म होता है। कभीकभी वे संयुक्त परिवार में भी रह लेते हैं, किंतु पृथक झोंपड़ी जरूर बना दी जाती है।

गरासियों का सामान्य जीवन भी उन की प्रकृति की भांति बहुत सादा है। गरासियों के गांवों में जनसंख्या सौ, दो सौ से अधिक की नहीं होती। इन के गांवों में हाट बाजार की कल्पना भी करना निरर्थक है। एक शहरी के मस्तिष्क में गांवों की जो परिकल्पना है, गरासियों के गांव वैसे नहीं होते हैं। ये अपने घर अपने खेतों के छोर पर ही बनाते हैं

घासफूस तथा बांसों के बने कच्चे मिट्टी से लिपेपुते इन के घरों में एकदो पीतल के बरतन और मिट्टी के घड़ों के अतिरिक्त कुछ भी सामग्री नजर नहीं आती। खाना मिट्टी के बरतनों में पकता है। बरतनों की कमी में इन का काम पत्तों से चलता है। पत्ते की थाली और पत्तों की ही कटोरी (दोना) इन के बरतन हैं।

साधारण कद के गरासिया स्त्रीपुरुष आभूषणों के शौकीन हैं। मर्द कुरता धोती पहनते हैं तथा साफा बांधते हैं। स्त्रियां पूरी आस्तीन की कुरती पहनती हैं, जिसे वे जुल्मी कहती हैं। यह प्रायः लाल, हरा, पीला और गहरे आसमानी रंग अधिक पसंद करती हैं इन में घाघरा अधिक घेरवाला और छोटी आरणी पहनने का रिवाज है। मर्द अपने पास हथियार रखते हैं, जिन में तलवार और तीरकमान मुख्य हैं।

स्त्रीपुरुष दोनों ही गहने पहनने का शौक रखते हैं। स्त्रियां तो अनेकानेक गहने पहनती हैं, पर पुरुष कान, हाथ और पांव के गहने पहनते हैं। हाथ में पहने जाने वाले गहने को यह कड़लामाठी कहते हैं। गरासिया पुरुष अपने बाल संवारने के लिए कंधा बालों में रखता है। कंधे को वे अपनी भाषा में कांगसिया कहते हैं।



सरिता

निहित स्वार्थों को चुनौती देने वाली एकमात्र पत्रिका, जिस ने बड़ी से बड़ी शक्ति की परवाह नहीं की। सरिता की यह निर्भीकता अब एक इतिहास बना चुकी है। इसी लिए आज 40 लाख से अधिक पाठक सरिता का सम्मान करते हैं।

सरिता के लेख, समीक्षाएं, टिप्पणियां, उस की स्पष्ट नीति व क्रांतिकारी विचार आप को भी नए मोड़ पर ले आएंगे। हृदयस्पर्शी कहानियां, मोहक कविताएं आप का स्वस्थ मनोरंजन करेंगी। लाखों पाठकों के साथसाथ आप भी आज से ही सरिता पढ़िए।

दिल्ली प्रेस की पत्रिकाएं नए युग को धर धर जगाएँ

कभीकभी

होता है जख्म गहरा, गहरा कभीकभी.
रहता है साथ पहरा, पहरा कभीकभी.

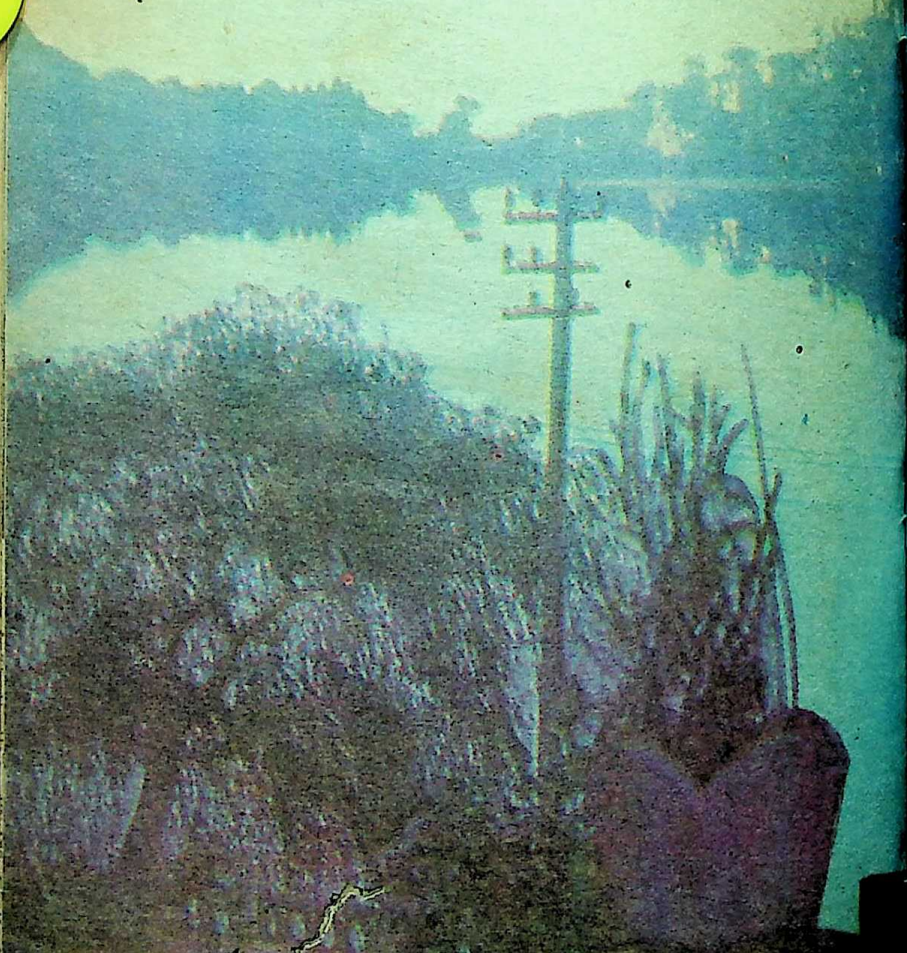
फिर आ के लौट जाती, रुकती नहीं हवा,
रहता है वक्त ठहरा, ठहरा कभीकभी.

हरियालियों में रह कर होते हरे नहीं,
होता है पास सहरा, सहरा कभीकभी.

अंधी गली की बस्ती गूंगे यहां सभी,
मिलता है प्यार बहरा, बहरा कभीकभी.

हम भूल बैठे जिस को वह और का नहीं,
अपना ही एक चेहरा, चेहरा कभीकभी.

—तारादत्त 'निर्विरोध'



भी.
नहीं,
भी.
रोग'



दास्ताने दफ्तर



बात उस समय की है जब एक बैंक द्वारा ग्रामीण बैंक कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया जा रहा था। हमारे प्रशिक्षक अपनी हाजिरजवाबी के लिए प्रसिद्ध थे।

एक दिन बैंक के प्रबंधक प्रशिक्षण कक्ष की तरफ आए। मैं उस समय बाहर ही खड़ा था। मैं ने पूछा, "क्या आप प्रशिक्षक से मिलना चाहते हैं?"

तब उन्होंने मुसकराते हुए जवाब दिया, "अरे नहीं, भाई, मुझे अपने सिर में दर्द नहीं करवाना है।"

पर कुछ सोचते हुए वह फिर बोले, "मुझे तुम लोगों से सहानुभूति है। मैं तुम लोगों के लिए सिरदर्द की गोलियों का एक डब्बा भिजवाता हूँ।"

जब ये सब बातें मैं ने बाद में मैं ने अपने प्रशिक्षक को बताईं तो वह तुरंत बोले, "आपके प्रबंधक सिरदर्द की गोलियों के एजेंट मालूम पड़ते हैं।"

—अजीतकुमार जैन

*

हमारे कार्यालय के एक अधिकारी के छः बच्चे हैं। जब उन के यहां सातवें बच्चे का जन्म हुआ तो उन्होंने कार्यालय में ही जलपान का प्रबंध किया। इसी दौरान उन्होंने कहा, "मेरे सभी बच्चों का नाम 'स' से शुरू होता है। जैसे सुबोध, सरिता, सरला, इत्यादि। इस बच्चे का नाम क्या होना चाहिए?"

तब हमारे एक सहकर्मी ने कहा, "भाई साहब, 'स्टाप' कैसा रहेगा।" यह सुन कर वहां ठहाका गूंज उठा।

—कमलेशकुमार राजपूत

*

कुछ महीने पहले की बात है। हमारे कार्यालय के एक प्रबंधक के पास एक महिला गृहकर के सिलसिले में चारपांच दिन से आ रही थी।

छठे दिन जब चौकीदार ने आ कर कहा, "आप से मिलने एक औरत आई है, क्या उसे अंदर आने दूं?" तो वह बोले, "नहीं, अभी उसे अंदर मत आने देना। पांच दिन से मेरे सिर में दर्द कर रही है। न जाने इस के पति कैसे हैं कि सुबहसुबह घर से निकाले देते हैं।"

उन के इतना कहने के बाद ही एक औरत अंदर आई। प्रबंधक ने सिर उठा कर देखा तो सामने उन की पत्नी खड़ी थी, जो उन्हें कुछ जरूरी कागजात देने आई थीं।

—बलवंतराय महरोत्रा

*

हमारा एक सहकर्मी दफ्तर में दस मिनट देर से आता है। एक दिन अफसर ने उसे बला कर देर से आने का कारण पूछा तो उस ने जवाब दिया, "साहब, नहाने में देर हो जाती है।"

उस उत्तर को सुन कर प्रास बैठे एक कर्मचारी ने कहा, "पर मैं तो दफ्तर समय पर ही आ जाता हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection Haridwar
इस पर उस ने भोलेपन से कहा, "हम नहा कर जो आते हैं।"

यह सुनकर वह भी बोलने लगे और वह सब बातें बुरी तरह झेंप गए।

—नितेंद्रकुमार

*

एक बार हमारे टेलीफोन विभाग की बिजली गुल हो गई। तब हमारे अभियंता ने बिजलीघर वालों को बुलाया। देखने पर पता चला कि फ्यूज टूटा हुआ है। तब अभियंता ने मुझे फ्यूज ठीक करने को कहा। चूँकि फ्यूज वाक्स बहुत ऊपर था, इसलिए मैं ने कहा कि वह मुझ से नहीं बदला जाएगा।

इस पर वह झल्ला कर बोले, "तुम्हें तकनीशियन किस ने बना दिया।" तब मैं ने कहा, "जिस ने आप को अभियंता बना दिया, उसी ने मुझे तकनीशियन भी बनाया है।"

यह सुन कर उस का चेहरा देखते ही बनता था।

—रविनारायण मुस्तसर

*

एक दिन हमारे सहयोगी के घर साहब ने फोन किया। हमारे सहयोगी ने चोगा उठा कर पूछा, "आप कौन बोल रहे हैं?"

हमारे साहब ने पूछा, "आप कौन बोल रहे हैं।" तब हमारे सहयोगी ने पुनः अपना प्रश्न दोहरा दिया। तब साहब ने खीज कर कहा, "मैं गधा बोल रहा हूँ।"

इस पर हमारे सहयोगी ने यह कह कर फोन रख दिया कि "मैं गधों से बात नहीं करता।" बाद में जब उन्हें यह पता चला कि वह साहब का फोन था तो वह बुरी तरह झेंपे।

—गोकुलचंद कुशवाहा

*

एक दिन दोपहर को भोजन के समय मैं अपने दफ्तर के अन्य साथियों के साथ कैटीन में बैठ कर बातें कर रहा था। हमारे साहब भी बातचीत में शामिल थे।

किसी सिलसिले में हमारे एक साथी ने पूछा, "साहब वीडियो क्या होता है?"

उन्होंने तुरंत अफसराना अंदाज में कहा, "जैसे ए.डी.एम. और एस.डी.ओ. होते हैं उसी तरह वी.डी.ओ. भी होता होगा।"

—राजेंद्र भाटिया

*

हमारे कार्यालय के मुख्य अधिकारी बहुत ही बोलते थे और हर बात के अंत में कहते थे, "मैं किसी से चाय नहीं पीता, पान नहीं खाता।"

एक दिन कार्यालय में छोटे अधिकारियों की बैठक चल रही थी। बातों ही बातों में उन्होंने कहा, "जब मुझे कोई खिलातापिलाता है तो ऐसा शक होता है कि वह कुछ काम निकालने के लिए यह सब कर रहा है।" उस के थोड़ी देर बाद उन्होंने कहा, "अब देखो न, मैं इतनी देर से बोल रहा हूँ, लेकिन तुम लोगों ने अभी तक चायनाश्ता भी नहीं मंगाया।"—वीरेंद्रकुमार यदु

नौकरीपेशा व्यक्तियों को और किसी कार्यवश दफ्तरों में जाने वालों को दफ्तर में अनेक मनोरंजक स्थितियों से गुजरना पड़ता है और कई बार तो किस्सा बहुत ही दिलचस्प बन जाता है। क्या आप की दृष्टि में कोई इस प्रकार की घटना आई है, जो रोचक हो?

आप ऐसे संस्मरण 'मुक्ता' के लिए भेजिए। प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण के लिए 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी। पत्र के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें।

पत्र पते पर भेजिए। Gurukul Kangri Collection, Haridwar

संपादकीय विभाग, मुक्ता, ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

विश्व बाल साहित्य

मनोरंजक, वीरतापूर्ण, ज्ञानवर्धक,
प्रेरक पुस्तकें



प्रत्येक रु. 2.00

प्रसिद्ध वैज्ञानिक
वीरान टापू

प्रत्येक रु. 2.50

योगीराज
चीकू
नया घर

चीकू से बलवान हारा
घड़ी की टिकटिक
वीरवल की सूझबूझ

प्रत्येक रु. 3.00

मंगल की सैर

पहेली

आदमी की कहानी
अज्ञात द्वीप
हमारी सेना

प्रत्येक रु. 3.50

घाट का चोर
सत्य का बल
राजा की अंतरिक्ष यात्रा

प्रत्येक रु. 4.00

अनमोल शंख
शुक्र की खोज
संकट के साथी
दुश्मनों के

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें या आदेश भेजें.

दिल्ली बुक कंपनी

एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-1.



VISHVUJAY DBC 104

डा. अचला नागर स्वर्ण जयंती मनाने वाली फिल्म 'निकाह' की कहानी व संवाद कहानियाँ देश की शीर्षस्थ पत्रपत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं.

लेखिका हैं. यह नाम हिंदी फिल्मों के दर्शकों के लिए नया जरूर है, लेकिन अजनबी नहीं और हिंदी पत्रपत्रिकाओं के पाठकों का तो यह जाना पहचाना नाम है. अचला नागर की

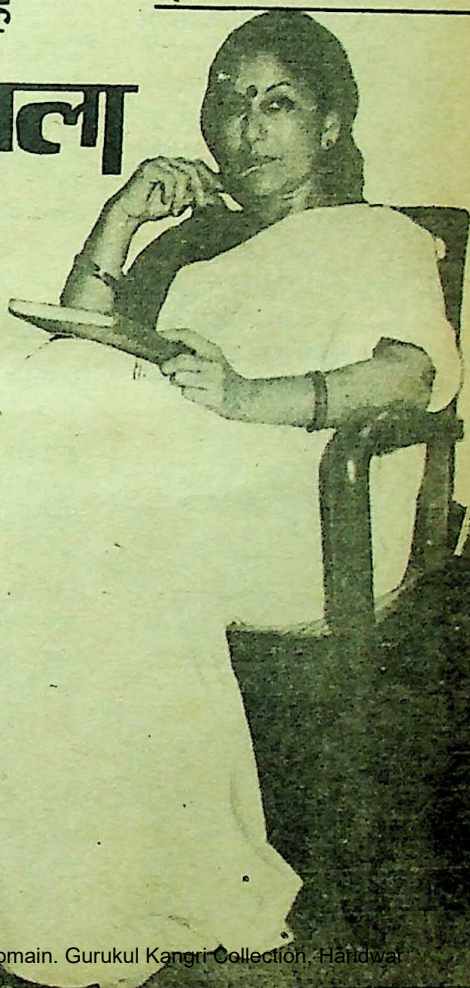
मुसलिम समाज में महिलाओं की स्थिति पर 'निकाह' जैसी फिल्म की कहानी लिख कर अचला नागर ने अपनी अलग पहचान बनाई है. आखिर वह भारतीय परिवेश में महिलाओं की स्थिति के बारे में और क्या-क्या सोचती हैं?

"आज की नारी
अपनी भारतीयता
खो चुकी है"

**डा. अचला
नागर**

शेंट

ताराचंद मकसाने



मुसलिम समाज में प्रचलित तलाक की प्रथा पर आधारित फिल्म 'निकाह' अभी तक प्रदर्शित बी.आर. फिल्म की सब से कामयाब फिल्म है। इस के संवादों के लिए डा. अचला नागर को 'श्रेष्ठ संवाद' का फिल्मफेयर अवार्ड (इस से पहले किसी संवाद लेखक को अपनी पहली फिल्म के लिए यह पुरस्कार नहीं मिला था) मिला। इस वर्ष 1982 के लिए उन्हें उत्तर प्रदेश फिल्म जर्नलिस्ट एसोसिएशन ने 'श्रेष्ठ कहानी' का पुरस्कार दिया और नार्थ जेसीज ने उन्हें 'श्रेष्ठ लेखिका' घोषित किया।

लेखक ने एक भेंट में उन से पहला सवाल किया, "आप हिंदी फिल्मों के दर्शकों के लिए नई हैं। अपने बारे में कुछ बताइए?"

"मैं मूलतः लखनऊ की निवासी हूं। लेकिन मेरा बचपन मथुरा में बीता। तालीम भी वहीं हुई, पर हां यह एक बड़ी बात है कि मैं ने हिंदी के मूर्धन्य साहित्यकार श्री अमृतलाल नागर के घर में जन्म लिया।

"जहां तक लेखन की बात है, लेखन का

अचला नागर : 'अपनी कला को सड़ाना नहीं चाहिए। यह अंदर के कलाकार का अपमान है.'



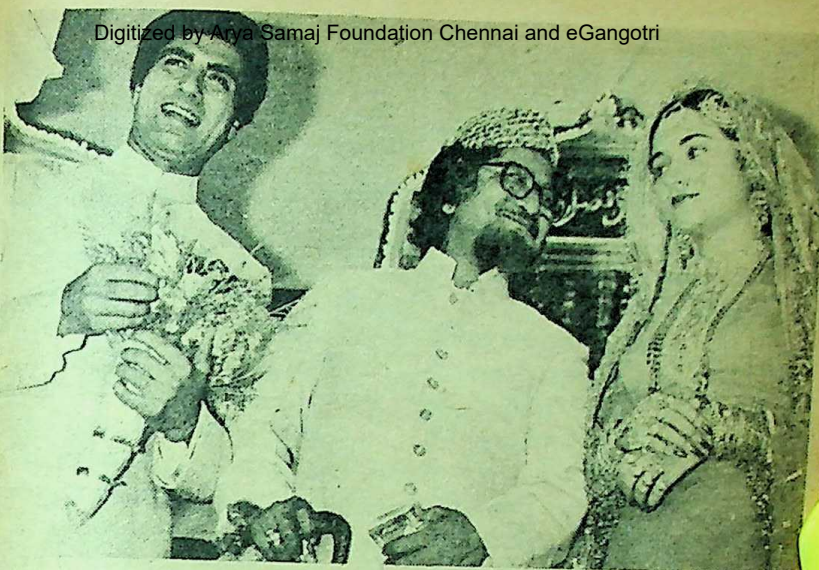
शौक मुझे बचपन से ही रहा है। मैं अपने ही पिता की प्रशंसक हूं। वह मेरे प्रेरणास्रोत रहे हैं। मेरी पहली कहानी आठ वर्ष की अवस्था में लखनऊ की एक पत्रिका में प्रकाशित हुई थी और मैं ने ज्यादातर कहानियां ही लिखी हैं। लेखन के मामले में रेडियो का भी काफी योगदान रहा है। रेडियो ने मेरी कलम को मांज दिया है। 1968 से मैं रेडियो के लिए 'फुल लेंथ' (एक से डेढ़ घंटे तक) के नाटक, झलकियां आदि लिख रही हूं। वैसे मैं थिएटर से भी जुड़ी हुई हूं। कई नाटक लिखे हैं। उनमें अभिनय भी किया है।"

डा. अचला नागर ने साहित्य में शोध किया है। 'स्वातंत्र्योत्तर कहानियों में प्रेम निरूपण उन के शोध का विषय था। वह गत दो वर्षों से विविध भारती बंबई में कार्यक्रम निष्पादक (प्रोग्राम एक्जीक्यूटिव) के पद पर सेवारत हैं। इस से पूर्व वह आकाशवाणी मथुरा में उद्घोषिका थीं।

"अचलाजी, फिल्म 'निकाह' की कहानी लिखने के पीछे क्या आप की कोई विशेष प्रेरणा रही?"

"जी हां, यह प्रेरणा मुझे एक समाचार ने दी थी। एक दिन मैं ने किसी फिल्मी पत्रिका में जीनत अमान व संजय खान के बारे में समाचार पढ़ा था। संजय खान ने जीनत को तलाक दे दिया, लेकिन लोगों को यह भी मालूम नहीं था कि उन का निकाह कब हुआ था। जब तलाक हो गयो है तो स्पष्ट है कि निकाह भी हुआ होगा। यह भी छपा था कि अब संजय खान जीनत से पुनः निकाह करना चाहते हैं। लेकिन उन्हें यह मालूम होना चाहिए कि इस मामले में मुसलिम समाज में क्या रिवाज है।

"इस समाचार में मेरी थोड़ी दिलचस्पी बढ़ी। विषय नया लगा, लेकिन मुझे भी मालूम नहीं था कि मुसलिम समाज में इस बारे में क्या रिवाज है। इस संदर्भ में मैं ने अपने ही कार्यालय की एक मुसलिम तानपुरा वादक से जानकारी हासिल की। मेरी दिलचस्पी और बढ़ी। विषय बहुत ही पसंद आया और मैं ने इसी विषय पर रेडियो के लिए एक घंटे का



अचला नागर द्वारा लिखी गई कथा पर बनी फिल्म 'निकाह' का एक दृश्य.

नाटक लिख दिया."

"लेकिन आप का यह 'रेडियो नाटक' इतने बड़े निर्माता के पास कैसे पहुंच गया. या आप ने अपने पिता की ख्याति का..."

लेखक की बात काटते हुए वह बोलीं, "नहीं. ऐसी बात नहीं है. कहां वह महान साहित्यकार और कहां मैं. फिर चोपड़ाजी को तो यह बाद में मालूम हुआ कि मैं अमृतलालजी की बेटी हूं. मैं ने यह सुना था कि चोपड़ाजी वीडियो के लिए एक घंटे की फिल्म बनाते हैं. 'बेटा', 'गजल' आदि फिल्मों उन्होंने बनाई हैं. मेरी कहानी शायद उन्हें पसंद आ जाए तथा उस पर वीडियो फिल्म बने यही सोच कर मैं ने आलेख चोपड़ाजी को दिया था.

"और इसी बीच मेरा तबादला हो गया. मैं लखनऊ से बंबई आ गई. यहां आने पर जब मैं ने यह समझा कि चोपड़ाजी मेरी कहानी पर फीचर फिल्म बना रहे हैं तो मुझे कितनी प्रसन्नता हुई, उस को बयान नहीं कर सकती और चोपड़ाजी को जब यह मालूम हुआ कि मैं अमृतलालजी की बेटी हूं तब उन्होंने प्यार से डांटते हुए कहा कि, 'तुम बात तुम ने पहले क्यों नहीं बताई...'"

"सामान्यतः फिल्म का लेखक परदे पर नजर नहीं आता है, जब कि आप ने फिल्म 'निकाह' में सलमा आगा की मां की भूमिका की है."

"इस मामले में मेरे साथ दुर्घटना हुई है." मुसकराती हुई अचलाजी कहती हैं "दरअसल मैं यह भूमिका नहीं करना चाहती थी, लेकिन इस भूमिका को निभाने वाली अभिनेत्री आशा शर्मा उस दिन अनुपस्थित रहीं. सभी लोग तैयार थे. बेहद इंतजार के बाद भी जब आशा शर्मा सेट पर नहीं पहुंची तो चोपड़ाजी ने मुझ से अनुरोध किया कि यह भूमिका मैं ही अदा करूं. हालांकि मैं नहीं करना चाहती थी, परंतु उन के विशेष अनुरोध पर मैं ने यह भूमिका की.

"वैसे भी चोपड़ाजी यह मानते हैं कि यदि उन की फिल्मों में लेखक एक मिनट के लिए भी परदे पर आ जाता है तो फिल्म हिट हो जाती है और ऐसा हुआ भी है..." अचलाजी अपनी बात समाप्त करती हैं.

"अचलाजी, मुसलिम समाज की भांति हिंदू समाज में भी तो महिलाओं पर घिनौने अत्याचार होते हैं, इस बारे में आप क्या

कहना चाहेंगी."

"देखिए, किसी भी धर्म में गलत कोई बात नहीं है। धर्म तो एक जीने की प्रणाली है। आज हम जो धर्म का रूप देख रहे हैं वह उस का बिगड़ा हुआ रूप है और लेखक की कलम पर किसी धर्म, मजहब, जाति की मुहर नहीं लगी होती है। मेरी परवरिश ऐसे खानदान में हुई, जहां केवल एक ही धर्म का पालन होता है वह है मानवता।

"मुझे एक छोटी सी बात याद आ रही है।" अतीत में खोती हुई अचलाजी कहती हैं, "जब मैं मथुरा में स्कूल में पढ़ रही थी तब एक फार्म पर बाबूजी (अमृतलाल नागर) के हस्ताक्षर करवाने थे। मैं उन के पास गई। फार्म में एक खाना था, 'धर्म' जिस के आगे मैं ने कुछ नहीं लिखा था। बाबूजी ने धर्म के आगे न तो हिंदू लिखा और न ही मुसलमान। उन्होंने लिखा 'मानवता'."

"क्या आप को यह नहीं लगता कि फिल्म 'निकाह' एक मुसलिम फिल्म बन कर रह गई।"

"नहीं, ऐसी बात नहीं है। फिल्म में सभी पात्र मुसलिम होने से ही शायद आप यह बात कर रहे हैं। यदि मैं चाहती तो अपनी कहानी में नीलोफर को नीलिमा बना कर पेश कर सकती थी, लेकिन मैं वास्तव में एक औरत की बुनियादी समस्याओं के बारे में कहना चाहती थी। एक परिवार में औरत अपने प्यार के बदले क्या चाहती है, उसे क्या अधिकार प्राप्त हैं, उस का क्या स्थान होना चाहिए, वैसे तलाक विषय पर तो कई फिल्में आ

चुकी हैं, पर यह सुनकर आप को ताज्जुब होगा कि इस फिल्म को मुसलमानों से ज्यादा हिंदुओं ने देखा है।"

लेखक ने अचलाजी से अंतिम सवाल उन संघर्षशील नारियों के बारे में किया जो आज हर क्षेत्र में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिला कर आगे बढ़ रही हैं।

इस के उत्तर में अचलाजी ने कहा, "आज की नारी काफी गलत जगह तक पहुंच गई है। मैं औरतों का पक्ष नहीं लूंगी। आज वह अपनी भारतीयता खो चुकी हैं। आर्थिक दृष्टि से जिस का घर से बाहर निकलना नितांत आवश्यक है, उसे अवश्य दहलीज को लांघना चाहिए। इस ईर्ष्या या द्वेष से नहीं कि पड़ोसी के यहां रंगीन टी.वी. आ गया तो हमारे यहां भी आना चाहिए।

"स्वतंत्रता के पश्चात नारी ने हर तरह की आजादी चाही। खानेपीने की, पहनने-ओढ़ने की, घूमनेफिरने की और फिर सेक्स की आजादी। आज उस के दिल में विद्रोह की भावना ने जन्म ले लिया है। उस की दलील है कि यदि पुरुष हर तरह से आजाद है तो स्त्री क्यों नहीं हो? और इसी आजादी का स्त्रीपुरुष खुल कर लाभ उठा रहे हैं। फलस्वरूप एक बच्चा अपनी मां की ममता से वंचित रह जाता है, तो दूसरा पिता के प्यार के लिए तरसता है।

"और जहां तक प्रतिभाशाली संघर्षशील नारियों का सवाल है, उन्हें अवश्य आगे आना चाहिए। अपनी कला को सझाना नहीं चाहिए। यह अंदर के कलाकार का अपमान है।"

नेत्रहीन नर्स

आंध्र प्रदेश में श्रीकाकुलम में 'सोम पेटा नेत्र चिकित्सालय' ने अपने 25 वर्ष के इतिहास में पहली बार एक नेत्रहीन नर्स को नियुक्त किया है। यह नर्स है मंदाकिनी, जिस ने ब्रेल प्रणाली से मैट्रिक तक शिक्षा ही नहीं प्राप्त की है, नर्स और मिडवाइफ का प्रशिक्षण भी विशेष योग्यता के साथ प्राप्त किया है।

हस्पताल में उस का काम मरीजों को इंजेक्शन लगाना, उन के बिस्तरों को ठीक करना, उन्हें खाना वांटना व उन से मीठीमीठी बातें करना है। अपनी नियुक्ति पर उस का कहना है, "आंखें न होने से मैं दिलोजान से मरीजों की सेवा कर सकूंगी। वरना आंखें होने पर मुझे नौकरी करने के अलावा गृहिणी का जीवन भी जीना पड़ता है।"



एक 'शहरी बीमारी'

लेख • प्रशांतकुमार बनर्जी

हमारे वैज्ञानिक चिकित्सा के क्षेत्र में चाहे कितनी ही उन्नति क्यों न कर चुके हों, पर पीलिया रोग आज भी हमारे देश के चिकित्सकों के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती बना हुआ है।

यह वही भयंकर रोग है, जिस का व्यापक प्रकोप दिल्ली में सन 1955-56 में हुआ था, जिस में 30,000 से अधिक व्यक्तियों ने इस की यातना झेली थी और सैकड़ों परिवारों में यह रोग मृत्यु का विषाद भी ला चुका था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद पहली बार स्वास्थ्य

मंत्रालय को इस रोग को रोकने में अपनी अक्षमता के कारण बुरी तरह बदनाम होना पड़ा था, जिस के परिणाम स्वरूप तत्कालीन स्वास्थ्य मंत्री को त्यागपत्र देना पड़ा था।

आज आप को अगर यह पता चले कि लगभग दो दशक बीतने के बाद भी इस रोग का गुप्त प्रभाव अब भी उस समय जैसा ही बना हुआ है तो क्या आप को आश्चर्य नहीं होगा? पर इस संबंध में कोई निश्चित आंकड़े यहां प्रस्तुत करना इसलिए असंभव हैं क्योंकि हमारे देश में किसी भी शहर के स्वास्थ्य विभाग में इसे फैलने वाला रोग मानने से अस्वीकार किया जाता है और इसलिए ऐसे रोग कभी किसी स्वास्थ्य विभाग में उन्मूलन हेतु दर्ज नहीं किए जाते हैं।

यद्यपि पीलिया रोग का वह भयंकर प्रकोप तब से लेकर अब तक सुनने में नहीं आया, पर ओखल भारतीय आयुर्विज्ञान के गैस्ट्रोएंटरोलाजी और ह्युमैन न्यूट्रीशन

गंदगी और अव्यवस्था से जन्मा पीलिया रोग आज तेजी से महानगरों में फैलता जा रहा है। इस रोग से कैसे छुटकारा पाया जा सकता है?

विभाग के प्रोफेसर डी.एन. साहू के अनुसार यह रोग सिर्फ 1981 से 1983 के बीच दो वर्ष की अल्पावधि में सिर्फ उत्तर भारत में ही आठ बार अपना प्रभाव दिखा चुका है। यह तो ठीक है कि अब कम से कम इस रोग के कारणों एवं रोकथाम के सरल उपायों की खोज की जा चुकी है, इसलिए इस का घातक प्रभाव सुनने को नहीं मिलता। स्वास्थ्य विभाग को भी क्या गरज पड़ी है कि इस के बारे में लोगों को बताए और यही कारण है कि संबंधित क्षेत्रों में प्रभावित यह बात रोगियों और चिकित्सकों तक से छिपी रही।

रोकथाम के प्रयास

1955-56 में हुए पीलिया रोग के व्यापक प्रकोप से हमें एक फायदा तो अवश्य हुआ: वह यह कि वैज्ञानिकों और चिकित्सकों में एक नई चेतना जाग उठी. वे इस रोग के उत्पन्न होने के कारण तथा रोकथाम की खोज में लग गए. यद्यपि पीलिया का प्रकोप बारबार होता रहा, पर इसी बीच इस की रोकथाम के उपाय जाने जा चुके थे, जिस के कारण इस का प्रभाव इतना घातक न हो सका.

अन्य चिकित्सा संस्थानों की भाँति अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान भी 1956 से इस क्षेत्र में प्रयासरत है. 1981 से 1983 के बीच उत्तर भारत में फैले इस रोग का इस संस्थान द्वारा व्यापक अध्ययन किया गया. डा.टंडन का कहना है कि अंगर रोगी स्वयं आ कर इस रोग की सूचना न देते एवं उन से इस के रोकथाम का अनुरोध न करते तो शायद ही कभी स्वास्थ्य विभाग द्वारा उन्हें यह सूचना उपलब्ध हो पाती. डा.टंडन का कहना है कि हमारे शहरों में रहने वाले स्वस्थ लोगों में से पांच प्रतिशत लोग इस रोग के सब से भयंकर तरह के जीवाणुओं को फाले रहते हैं.

इस प्रकार के रोह को फैलाने में पानी का भी बहुत बड़ा हाथ होता है, पर दुनिया के कई देशों ने पानी के प्रदूषण से फैलने वाले

इस प्रकार के रोग को फैलाने में पानी का भी बहुत बड़ा हाथ होता है, पर दुनिया के कई देशों ने पानी के प्रदूषण से फैलने वाले

अगर पीने के पानी में सोड्र तक प्रदूषण लागे तो यह अपना प्रभाव दिखा सकता है। इस के अतिरिक्त हमारे देश में हस्पतालों की दयनीय स्थिति भी काफी हद तक इस रोग के फैलने के लिए जिम्मेदार है।

घातक प्रभाव

पीलिया रोग का प्रभाव जन समुदाय की रोजाना की गतिविधियों को प्रायः ठप्प कर देता है। रोग से पीड़ित व्यक्तियों को स्कूल या दफ्तर जाने से रुकना पड़ता है। विश्राम की यह अवधि कम से कम छः सप्ताह की अवश्य होती है। किसीकिसी को चिकित्सक 10 सप्ताह तक आराम की सलाह देते हैं।

पीलिया से अकसर कई ऐसी बीमारियां भी उत्पन्न हो जाती हैं, जिन का इलाज जीवन पर्यंत संभव नहीं होता है। इस रोग में यकृत की कोशिकाओं की अनियमित वृद्धि होने लगती है। यकृत साधारण तौर पर कार्य करना बंद कर देता है। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान द्वारा पिछले दिनों उत्तर प्रदेश के एक नगर में किए गए सर्वेक्षण में (सिर्फ हस्पताल में भर्ती) पीलिया के रोगियों में 12 प्रतिशत की मृत्यु दर पाई गई।

दुनिया में कई देशों में इस प्रकार पानी के प्रदूषण से फैलने वाले इस रोग को या तो

पानी खत्म किया जा चुका है या इस पर कड़ा नियंत्रण रख पाना संभव हो चुका है, पर हमारे देश में इस रोग को स्थायी तौर पर खत्म करने के बजाए तात्कालिक रोकथाम को ही प्राथमिकता दी जाती है। यह तो संयोग की बात है कि अभी तक यह रोग देश के शहरी भागों तक ही सीमित है, जहां कम से कम इस रोग की तात्कालिक चिकित्सा व्यवस्था हो जाती है।

डा. टंडन ने बताया कि कोई व्यक्ति जब हमारे हस्पतालों में किसी अन्य बीमारी जैसे गुर्दे की डायलिसिस या अन्य प्रकार की शल्य चिकित्सा कराने हेतु आता है तो उसे अपने पहले की बीमारी से तो छुटकारा मिल जाता है, पर बाद में उसे पीलिया रोग होता देखा गया है। इस का कारण यह है कि पहले की चिकित्सा के दौरान उसे अगर इंजेक्शन लगाना या उस का आपरेशन करना पड़ता है तो औजारों की उचित सफाई न होने से ऐसे रोग के विषाणु उस के शरीर में अपनेआप पहुंच जाते हैं।

कभी किसी रोगी को दूसरे व्यक्तियों से खून लेना पड़ता है, पर जल्दी में खून चढ़ाते समय यहां यह नहीं देखा जाता कि खून देने वाले व्यक्ति में इस प्रकार के रोग के विषाणु तो नहीं हैं। फल यह होता है कि रोगी बाद में

दूषित जल पीलिया रोग फैलाने में सहायक होता है।





आपरेशन के दौरान साफ़ सूथरे औजारों का होना निहायत जरूरी है.

बुरी तरह पीलिया रोग का शिकार हो जाता है. कभीकभी इस प्रकार के रोग में जान भी चली जाती है.

रोग से कैसे बचें?

यह बात तो पहले ही कही जा चुकी है कि इस रोग को मुख्यतया गंदगी में पनपने वाले हीपेटाइटिस नामक विषाणु फैलाते हैं, जो किसी न किसी तरह से पीने के पानी तक पहुंचने में कामयाब हो जाते हैं. अतः इस से बचने के लिए सब से मुख्य बात यह है कि लोगों को किसी भी तरह पीने के लिए स्वच्छ पानी उपलब्ध कराना चाहिए.

यहां आशय यह नहीं है कि देश के जिन भागों में पीने का पानी उपलब्ध नहीं है, वहां स्वच्छ पानी का इंतजाम हो, बल्कि जहां पानी इस समय उपलब्ध है, वहां भी इस की उचित सफाई का ध्यान रखा जाए. जहां जल व्यवस्था किसी एक जगह से नियंत्रित होती है वहां इस की शुद्धता की कड़ी जांचपरख हो ताकि लोगों को इस रोग के व्यापक प्रकोप से बचाया जा सके.

पीने के पानी की स्वच्छता को बरकरार रखने के लिए यह आवश्यक है कि मलमूत्र का निकास चाहे वह पीलिया रोग से पीड़ित व्यक्तियों का हो या आम लोगों के, उचित ढंग से होना चाहिए. उचित निकास के लिए

विज्ञान मौलिकी की उचित व्यवस्था होनी चाहिए. ताकि यह किसी भी प्रकार से पीने के पानी के पाइपों को स्पर्श न करे सके. पानी के पाइपों की समयसमय पर उचित निगरानी करना चाहिए ताकि किसी प्रकार टूटेफूटे स्थानों से यह विषाणु इस स्वच्छ पानी में न जा सकें.

जल वितरण व्यवस्था के अंतर्गत केंद्रीय जल भंडार की समयसमय पर सफाई एवं उस का उचित रखरखाव बहुत ही आवश्यक है ताकि पानी को यथासंभव किसी प्रकार के प्रदूषण से बचाया जा सके. इस संदर्भ में हमारे चिकित्सक एवं स्वास्थ्य विभाग के लोग अगर मिल कर यह अभियान शुरू करें तो क्या ही बेहतर हो, पर इस में काफी सतर्कता बरतनी चाहिए. उन्हें यह बात सदैव याद रखनी चाहिए कि उन की जरा सी लापरवाही लाखों लोगों की जान ले सकती हैं, जिस में वे स्वयं भी शामिल हो सकते हैं. नगर महापालिका अथवा नगर प्रशासन को इस प्रकार के कार्यों की हमेशा निगरानी करना चाहिए एवं समयसमय पर कड़ी खोजबीन भी करनी चाहिए.

जैसा कि पहले ही बताया जा चुका है कि इस प्रकार के रोग को मुख्यतया तीन प्रकार के विषाणु फैलाते हैं. पिछले दो दशकों में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान द्वारा इन में से एक प्रकार के विषाणु 'ए' पर पूरापूरा काबू पाया जा चुका है. अध्ययन के दौरान यह पाया गया कि यह बहुत ही सूक्ष्म जीवित कणिकाएं होती हैं, जिन्हें सिर्फ इलेक्ट्रॉनिक सूक्ष्मदर्शी की सहायता से ही देखा जा सकता है.

इस प्रकार के विषाणु की यह खासियत होती है कि अगर इसे एक मिनट के लिए 100 डिगरी सेंटीग्रेड ताप पर गरम किया जाए तो यह मर जाता है, जब कि अन्य प्रकार के विषाणु काफी उच्च ताप पर भी ठस से मस नहीं होते हैं. इस से यह बात सिद्ध हो जाती है कि अगर पानी को पीने से पहले उबाल लिया जाए तो इस प्रकार के विषाणुओं से एक हद तक छुटकारा मिल सकता है. इस के

अतिरिक्त अगर पीने के पानी में प्रति
मीटर के हिसाब से क्लोरीन मिलाई जाए तो
इस बीमारी से बचा जा सकता है, क्योंकि यह
विषाणुओं को निष्क्रिय बना देती है तथा ये
रोग फैलाने में अक्षम हो जाते हैं। पानी को
नरफ छानने से यह विषाणु कभी दूर नहीं होते।

इस प्रकार ऊपर कही गई दोनों विधियां
हमारे देश में बड़ी आसानी से प्रयोग में लाई
जा सकती हैं। यह जानकारी जल वितरण
प्रवस्था के प्रबंधकों के लिए काफी
महत्वपूर्ण है, क्योंकि अगर वे पानी में उचित
दोसों से क्लोरीन मिलाएं तो इस प्रकार
विषाणु 'ए' से फैलने वाले इस रोग का प्रभाव
प्रायः समाप्त किया जा सकता है।

साथ ही यदि पानी का प्रयोग करने वाले
भी पानी को इस्तेमाल करने से पहले उबाल
लें तो इस प्रकार के रोग से बच सकते हैं। पूरे
वर्ष न सही, कम से कम वर्षा ऋतु एवं इस के
बड़े दिनों बाद तक पानी को उबाल कर ही
पिना चाहिए। इस से न सिर्फ रोग से ही
छुटकारा पाया जा सकता है, बल्कि इसे फैलने
से भी रोका जा सकता है।

चिकित्सा के उपाय

जल प्रदूषण के रोकने और पीने के पानी
को स्वच्छ रखने के विभिन्न उपायों को दृढ़
नियमन के अतिरिक्त वैज्ञानिकों ने इस
प्रकार के विषाणुओं से बचने के लिए
आवश्यक टीकों की भी खोज की है। अब इस
बात के काफी प्रमाण मिल चुके हैं कि अगर
रोगी के शरीर में रोगों से लड़ने वाली रुधिर
कणिकाओं को प्रविष्ट कर दिया जाए तो इस
प्रकार के रोग से छुटकारा पाया जा सकता है।
इस प्रकार की कणिकाओं को जानव शरीर के
रुधिर से या जरायु से प्राप्त किया जाता है।
राजार में यह आई.एस.जी. (इम्प्यून सीरम
लोबूलिस) के नाम से मिलता है।

इस का इंजेक्शन लेने के पश्चात यह
कणिकाएं शरीर में प्रवेश कर जाती हैं और
बाद में शरीर के अंदर मौजूद रोगाणुओं को
आक्रमण कर के मार डालती हैं तथा शरीर
ही इस प्रकार के बाहरी विषाणुओं से रक्षा

करती है। एक बार इस इंजेक्शन के लेने पर
इस का असर तीन से छः मास तक रहता है।
इस प्रकार चिकित्सा शास्त्र में विषाणुओं की
आपस में लड़ कर मर जाने की इस घटना को
उदासीनीकरण कहा जाता है। यद्यपि विषाणु
'ए' की रोकथाम हेतु टीके का पर्याप्त विकास
हो चुका है, किंतु यह अधिक महंगा होने के
कारण हमारे देश में अभी प्रचलित नहीं है।
इस का एक कारण यह भी है कि इस के
रोकथाम की विधि काफी सस्ती है, क्योंकि यह
100 डिगरी सेंटीग्रेड पर मर जाता

विषाणु 'ए' की तरह विषाणु 'बी' के
टीके का भी विकास हो चुका है। इस के लिए
अधिक शक्तिशाली आई.एस.जी. का भी
विकास हो चुका है। इस के अतिरिक्त विषाणु
'बी' के एक विशेष प्रकार के टीके का विकास
हूआ है, जो कि संभवतया वर्तमान दशक की
महान उपलब्धियों में से हैं। इस टीके से व्यक्ति
को दो से तीन साल तक रोग से छुटकारा मिल
जाता है। इस प्रकार दोतीन वर्ष के अंतराल से
इस टीके को लगवाने से इस रोग के प्रकोप से
बचा जा सकता है।

पर अफसोस की बात यह है कि अभी
यह टीके इतने महंगे हैं कि इस का आम लोगों
के लिए प्रयोग करना संभव नहीं है। वैसे अब
तक प्रचलित दवाइयों में आई.एस.जी. का
इंजेक्शन ही ऐसा है, जिस का असर तीनों
प्रकार के विषाणुओं पर पड़ता है। इसलिए
आजकल इस का प्रयोग धीरे-धीरे काफी
प्रचलित होता जा रहा है।

विषाणु 'ए' और 'बी' के अतिरिक्त जो
तीसरे प्रकार का 'नान ए-नान बी' विषाणु है,
उस के बारे में हमारे वैज्ञानिकों को कोई खास
जानकारी नहीं है। अभी तक यह भी पता
लगाना संभव नहीं हो सका है कि इस प्रकार के
विषाणुओं पर ताप, क्लोरीन या आई.एस.जी.
का प्रयोग कहां तक प्रभावकारी होता है, परंतु
वैज्ञानिकों ने एक हद तक यह मान लिया है कि
इस प्रकार के विषाणु का विषाणु 'ए' की
ही तरह उपचार करना होगा, जिस से
सतापप्रद लाभ मिलने की आशा है।

एक बात यहां सब से अधिक ध्यान देने

योग्य यह है कि किसी भी फैलने वाले रोग की रोकथाम या उसे जड़ से खत्म करने के लिए जनसाधारण को भी सरकारी संगठनों के साथ सहयोग करना चाहिए। केंद्रीय स्वास्थ्य विभाग को समयसमय पर व्यापक तौर पर लोगों का स्वास्थ्य परीक्षण करना चाहिए तथा सफाई व्यवस्था का उचित प्रबंध करना चाहिए।

इस संबंध में स्वास्थ्य विभाग को गैरसरकारी डाक्टरों की समयसमय सहायता लेनी चाहिए। सार्वजनिक तौर पर रोग की रोकथाम हेतु जन सांमान्य में जाग्रति उत्पन्न करने के लिए उचित शिक्षा की व्यवस्था विभिन्न संचार माध्यमों द्वारा की जानी चाहिए।

वर्ष भर हस्पतालों में काफी बड़ी तादाद

हिंदू धर्म का आधार ग्रंथ

सरल, सुलभ भाषा में पहली बार



ऋग्वेद की संपूर्ण "शाकल संहिता" का हिंदी भाषांतर

संस्कृत के श्लोक नहीं, केवल हिंदी में

भाषांतरकर :

डा. गंगासहाय शर्मा, एम.ए. (संस्कृत)
पी.एच.डी. व्याकरणाचार्य

वेद में क्या है, क्या नहीं है, दूसरों से न सुन कर स्वयं पढ़िए। यह वही वेद है जो आज तक गोपनीय विधा रहा है और जिस के लिए शास्त्र कहते हैं कि शूद्र के कान में यदि इस का एक अक्षर भी पड़ जाए तो उस के कान में पिघला सीसा भर देना चाहिए।

मूल्य 65 रु, दो प्रतियां 95 रु. डांक व्यय 10 रु.

दिल्ली बुक कंपनी;

एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.

हर हिंदू परिवार के लिए आवश्यक

में पीलिया रोग आ कर भरी होते हैं। जांच के दौरान यह पाया गया है कि इन में अधिकतर पहले किसी न किसी निजी चिकित्सकों के अधीन इलाज करवा चुके हैं। ऐसे रोगियों की सूची कभी भी स्वास्थ्य विभाग के पास नहीं पहुंचती है, पर देखा गया है कि चिकित्सकों की लापरवाही से ये रोगी किसी अन्य रोग का उपचार करातेकराते औजारों की सफाई न रखने के कारण पीलिया के शिकार हो जाते हैं।

हमारे देश-में ऐसे लोग पांच प्रतिशत हैं, जो इस रोग से पीड़ित तो नहीं हैं, पर अपने यकृत या रुंधर से जब इस रोग के विषाणु 'बी' व्यक्ति के शरीर में प्रवेश करते हैं तो वे उस के रक्त को दूषित कर देते हैं। जिन रोगियों को बारबार रुंधर की आवश्यकता होती है, उन्हें रक्त ग्रहण करने से पहले उस की उचित जांच करा लेना चाहिए।

विषाणु 'बी' से होने वाला पीलिया रोग फैलने वाला होता है, इसलिए इस की रोकथाम करने से पहले उस स्थान में रहने वालों में से उन व्यक्तियों को अलग कर लेना चाहिए, जिन्हें यह रोग है। यानी ऐसे लोगों से जहां तक हो सके दूर ही रहना चाहिए। इन के द्वारा प्रयुक्त होने वाली चीजें दूसरों के द्वारा इस्तेमाल नहीं की जानी चाहिए।

रोगी की सेवा करने वालों को हमेशा तज्जुधर से बहने वाले पानी में हाथ धोना चाहिए। यदि रोगी के मलमूत्र की सफाई करना हो तो हाथ में दस्ताना पहनना आवश्यक होता है। ऐसे व्यक्तियों के पास स्वस्थ लोगों को नहीं जाना चाहिए, क्योंकि यह भी छुआछूत से फैलने वाली बीमारी सिद्ध हो चुकी है। इस प्रकार के रोगी को इंजेक्शन देने के लिए अलग सूई का प्रयोग करना चाहिए।

हमें यह बात अवश्य याद रखनी चाहिए कि पीलिया रोग से मानव शरीर में भयंकर गिरावट आ जाती है। कभीकभी तो यह जानलेवा भी बन जाता है। अतः दुर्बल करने वाले इस रोग से बचने के लिए प्रत्येक नागरिक को चाहिए कि इस रोग की रोकथाम की विधियों का दृढ़तापूर्वक पालन करें।

सावधान

इस स्तंभ के लिए समाचारपत्रों की कटिंग भेजिए. कटिंग के नीचे अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें. सर्वोत्तम कटिंग पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी.

भेजने का पता : मुक्ता, दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली-110055.

पशुओं के श्री नकली दांत

मुरतपुर में अब पशुओं को भी नकली दांत लगाए जाने लगे हैं ताकि पशुमेलों में बूढ़े पशुओं को अच्छी कीमत पर बेचा जा सके.

हाल ही में यहां के एक गांव के किसान ने 16 सौ रुपए में नई भैंस खरीदी, लेकिन घर जाकर जब उस ने भैंस को चारा डाला तो भैंस ने खाना शुरू किया लेकिन भैंस के सभी दांत जमीन पर गिर पड़े.

—नवजीवन, लखनऊ (प्रेषक: प्रतापसिंह 'बेखबर') (सर्वोत्तम)

*

महिला से ठगी

उदयपुर में एक अज्ञात युवक ने एक महिला से ढाई लाख रुपए मूल्य के जेवर और नकदी लिए. ठिगाने कद का यह युवक भूपालपुरा के एक गोदाम मालिक रतनलाल के घर सुबह गया और उस की पत्नी से बोला, "आय कर विभाग ने आप के गोदाम पर छापा मारा है तथा आपके बेटे भूपेंद्र उर्फ लाला ने बैंक में जो रुपया था वह जांच दल को दे दिया है तथा शेष रुपयों लिए घर के सारे जेवर मंगाए हैं."

उस ने यह भी बताया कि सेठजी मेवाड़ औद्योगिक क्षेत्र गए हैं और लाला दुकान पर केला है. इस पर रतनलाल की पत्नी ने घर के सारे जेवर और 11 सौ रुपए उस युवक के थाले कर दिए.

घटना के कुछ देर बाद रतनलाल घर पर खाने के लिए आए तो पत्नी ने दुकान पर जेवर लाने और छापे की बात बताई. यह सुन कर रतनलाल भौचकके रह गए. उस ने तुरंत पुलिस को सूचना दी.

—राजस्थान पत्रिका, उदयपुर (प्रेषक: भगवानदास)

*

पैसे का नया तरीका

कलकत्ता नगर में कुछ युवतियां अपने गिरोह के साथी सदस्यों की सहायता से दयालु भाव के लोगों विशेषतः कच्ची उम्र के लोगों को निराले ढंग से ठग रही हैं.

हाल में यहां न्यू सिनेमा के निकट एक युवती ने दयनीय मुद्रा बना कर पास से गुजरते हुए युवक से कहा कि उस का पर्स कहीं गिर गया है. अतः पांच रुपए देकर सहायता करे. युवक दया आ गई. उस ने जेब से दो रुपए का नोट निकाल कर युवती की ओर बढ़ाते हुए कहा, "पांच तो नहीं दो दे सकता हूं."

कुछ समय बाद दो तीन गुंडों ने युवक को घेर लिया और पास की एक गली के भीतर यह कहते हुए ले गए कि लड़की का मोलभाव करते हो और उस की जेब-खाली करने लगे. युवक रोकर कहने लगा, "इन थोड़े से रुपए में इंटरव्यू देने जा रहा हूं. तब गुंडों ने उसे छोड़ा और उसे शिकार की ताक में लग गए.

—विश्वमित्र, कलकत्ता (प्रेषक: बल्लभदास)

दौसा निवासी रामचरण महाजन के घर में कलेश होता था जिसे उस की पत्नी किसी तरह समाप्त करना चाहती थी.

दो युवा ज्योतिषी वहां आ कर धर्मशाला में ठहरे. पता चलने पर महाजन की पत्नी उन के पास गई और उस ने उन्हें गृहकलेश के बारे में बताया. ज्योतिषियों ने महिला को देवी पाठ कराने के लिए आभूषण ला कर देने को कहा.

महाजन की पत्नी ने उन कथित ज्योतिषियों को जेवर सौंप दिए. ज्योतिषियों ने उसे अगले दिन आने के लिए कहा.

अगले दिन जब वह धर्मशाला में गई तो ज्योतिषी चंपत हो गए थे. यह देख कर वह बेहोश हो गई.

—राजस्थान पत्रिका, उदयपुर (प्रेषक: हेमंत शर्मा)

*

विज्ञापनों द्वारा ठगी

कोटा में हेनिका कामर्शियल इन्वेस्टमेंट कंपनी ने बेरोजगार शिक्षित युवकों को ठग लिया. इस कंपनी ने इस वर्ष मार्च में कामर्स कालिज के पास अपना कार्यालय खोला और दैनिक पत्र में विज्ञापन दे कर युवकों से नौकरी के लिए आवेदनपत्र मांगे.

कथित विज्ञापन के अनुसार कंपनी को 15 रुपए के पोस्टल आर्डर के साथ 200 आवेदन मिले. कंपनी के अधिकारी ने 36 युवकों को नियुक्ति पत्र भेजे और जमानत की राशि जमा करने को कहा.

कंपनी का प्रधान कार्यालय दिल्ली में बता कर वे लोग सैरसपाटे करते रहे. बाद में 17 हजार रुपए हड़प कर एकएक कर के कंपनी के सभी अधिकारी रफूचककर हो गए.

—नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली (प्रेषक: राजेंद्र भाटिया)

*

हाथी की मदद से रुपए हड़पे

नागपुर में पुलिस ने एक महावत को गिरफ्तार किया है. उक्त महावत ने अपने हाथी को कुछ सड़क पर खड़ा कर के एक ट्रक को रोक लिया. उस ने ट्रक चालक को भयभीत कर के ट्रक से च उतरने पर बाध्य कर दिया. बाद में हाथी ने सूंड केबिन में डाल कर, 9,000 रुपए निकाल लिए. महावत ने रुपए अपने कब्जे में लिए और हाथी के साथ चलता बना तब पुलिस ने तत्काल हस्तक्षेप कर के महावत को हिरासत में ले लिया और उस हाथी को पकड़ कर बांध दिया.

—नवभारत, रायपुर (प्रेषक: प्रकाश भोजवानी)

*

नकली दारोगा गिरफ्तार

आजमगढ़ जनपद का निवासी सुधाकर नामक एक युवक स्थानीय रेलवे स्टेशन पर अपने को दारोगा बताते हुए किसी से रकम वसूलने की कोशिश कर रहा था कि संदेह होने पर पुलिस को सूचना दी गई और उसे गिरफ्तार कर लिया गया.

—विश्वमित्र, कलकत्ता (प्रेषक: बल्लभदास बिजानी)

*

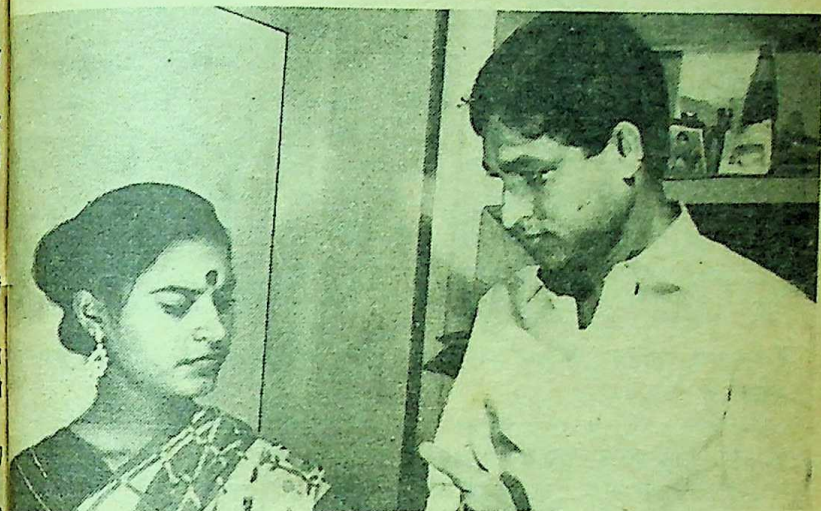
बैंक से रुपए गायब

छापारु नगर में गरोबा मैदान के एक व्यापारी चंद्रकिशोर माधानी रेलवे स्टेशन के समीप बैंक आफ इंडिया की मोहन नगर शाखा में रकम भरने गए. तब किसी ने ब्लेड से उन के बैग को काट कर उस में रखे 28,000 निकाल लिए.

जब उक्त व्यापारी की ध्यान अपने बैग की सुरक्षा पर था. तब लुच्चा चोर फरार हो चुका था.

—नवभारत, नागपुर (प्रेषक: जगदीशप्रसाद साहू)

कमाल जवाब का!

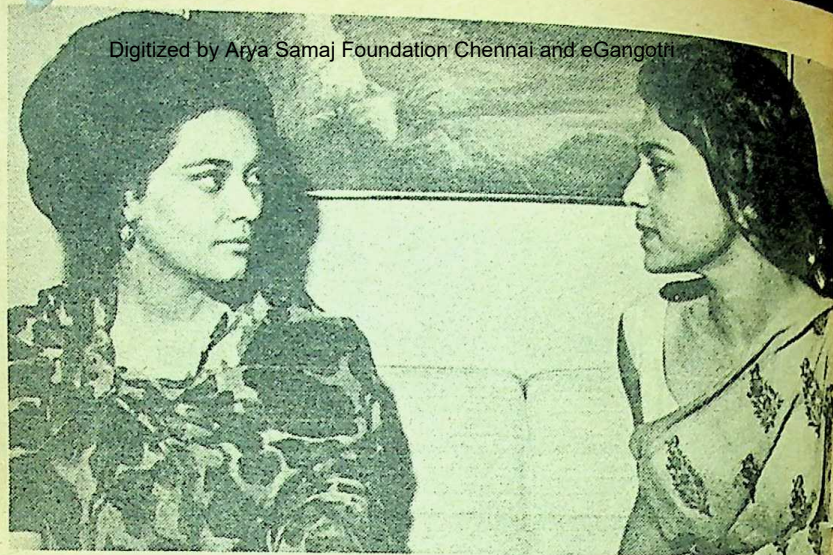


रभी हाल ही की बात है. मैं 'बस' में यात्रा कर रही थी. एक स्थान पर कुछ क्षण रुकी तो एक यात्री ने बड़े सहज से चालक से पूछा, "बस चंडीगढ़ कितने लीए पहुंचेगी?" चालक महाशय ने कड़ुवा सा बनावट बना कर कहा, "पहुंच ही जाएगी, बूजी, खड़े तो हैं नहीं, चल ही रहे हैं." उत्तर सुन कर मुझे हंसी भी आई और मुझसे भी. मन किया पूछूं कि महाशय, अगर आप की बस खड़ी होती तो हमें यह प्रश्न ही पूछना नहीं था, पर व्यर्थ मुंह लगाना ठीक न था. आप के जवाब से आप के ही नहीं आप के मातापिता के व्यक्तित्व तथा आप के परिवेश का भी पता चलता है, अतः जवाब देते वक्त कुछ बातों को ध्यान में रख कर आप दूसरों पर अपना अच्छा प्रभाव डाल सकते हैं...

समझ कर मैं चुप हो गई और इस प्रश्नोत्तर के पीछे के मनोविज्ञान के बारे में सोचती रही.

किसी भी प्रश्न का सही उत्तर देना एक आवश्यकता ही नहीं, कला भी है—यह हम ने शायद ही कभी सोचा हो. आम तौर पर कोई कुछ पूछे तो हम अपने ही ढंग से कोई उत्तर दे कर पीछा छुड़ा लेते हैं. कई बार उत्तर बेतुका भी होता है. उदाहरण के लिए एक बार मैं ने अपने एक विद्यार्थी से पूछा, जो कक्षा में देर से आया था, "लेट क्यों हो गए?" उत्तर मिला, "लेट हो गया जी." इस जवाब में कोई अपमानजनक बात नहीं है, केवल एक बेतुकापन झलकता है. मेरे प्रश्न में कारण पूछा गया था तथा उत्तर में कारण ही बताया जाना चाहिए था. चालक वाली उपर्युक्त घटना में भी सीधा प्रश्न था, जिस का उत्तर सीधा होना चाहिए था.

हमारे उत्तर देने के ढंग से हमारी पूरी मनोदशा का अंदाज़ लगाया जा सकता है. स्वस्थ मनोस्थिति, निराला मनःस्थिति,



विनम्रता व शालीनता से दिया गया संक्षिप्त जवाब दूसरे में आप के प्रति रुचि पैदा कर सकता है.

निराशावाद आदि कई पहलुओं को हम अपने उत्तरों से पुस्तक की भाँति खोल कर रख देते हैं। अतः बच्चे किस प्रकार उत्तर देते हैं और किस प्रकार देना चाहिए, इस बात का ध्यान बचपन से ही रखना चाहिए। समयोचित उत्तर सनने वाले को प्रसन्न करते हैं।

इस बात को हम सभी जानते हैं कि आजकल कई नौकरियों में साक्षात्कार (इंटरव्यू) के बोर्ड में मनोवैज्ञानिक अवश्य बैठाए जाते हैं। प्रार्थी के उत्तरों को वह मनोविज्ञान के तराजू पर तोलते हैं। कई बार अच्छे से अच्छा उम्मीदवार भी जब चुना नहीं जाता तो हम केवल व्यवस्था को भलाबुरा कह कर चुप हो जाते हैं। यह नहीं सोचते कि हमारी भल कहां है।

इस संदर्भ में अपने एक परिचित मनोवैज्ञानिक के कुछ अनुभव यहां देना उचित होगा। विशेषज्ञ होने के कारण वह सज्जन कई बड़ीबड़ी कंपनियों के इंटरव्यू बोर्ड में होते हैं। उन का कहना है कि उम्मीदवार के उत्तरों का विश्लेषण करने पर उन्हें रोचक अनुभव ही हुए हैं। पूरा चरित्र एवं मानसिकता उनके संक्षेप में आती है। फिर

व्यक्ति चाहे कितना भी परदा डालने का प्रयत्न करे. चयन करते समय उत्तरों के अनुसार पासा पलट जाता है.

एक बार किसी साक्षात्कार में उन्होंने एक चित्र दिखाया, जिस में कोई युवक ऊँची गगनचुंबी इमारत के सामने सोच में खड़ा ऊपर देख रहा था। उम्मीदवारों को पाठ्यपत्रों में इस का विवेचन कर विवरण लिखना था। किसी परीक्षार्थी ने लिखा था 'चित्र में युवक आत्महत्या की बात सोच रहा है।' मनोवैज्ञानिक विश्लेषण के अनुसार यह उत्तर निराशावाद व पलायनवाद का द्योतक है। कहना न होगा कि इस उत्तर का परिणाम विपरीत निकला। लड़के का चुनाव नहीं हुआ।

तीन प्रकार के स्वभाव

अमरीका के मनोविशेषज्ञ एरिक ब
'ट्रांजेक्शनल एनालिसिस' के जन्मदाता है।
इन का कथन है कि हमारे रोजमर्रा के
लेनदेन, प्रश्न प्रतिप्रश्न, उत्तर प्रतिउत्तर
हमारे व्यक्तित्व का ही नहीं, घर व
बालबच्चा, और मातापिता के व्यक्तित्व का

भी बोध करा देते हैं, हर संतुष्ट में वीत प्रत्यय के व्यक्तित्व होते हैं—पेरेंट्स (मातापिता), एडल्ट (प्रौढ़), चाइल्ड (बच्चा)। हम चाहे कितनी भी बड़ी आयु के हों, (चाहे बच्चे ही) उपर्युक्त तीनों स्वाभाव हम में होंगे।

बहुत बार बड़े लोग आपस में बच्चों की सी बातें करते हैं, जैसे जिद करना, बच्चे आपस में प्रौढ़ों की तरह भी बातें करते हैं, किसीकिसी के साथ हम बड़प्पन अपना कर उपदेश देते हैं, आम जीवन में हम आयु के अनुसार प्रौढ़ बातें करते हैं, यानी एक संतुलित व्यक्तित्व में उपरोक्त तीनों गुण संतुलित मात्रा में होते हैं। असंतुलित व्यक्ति में या तो 'पेरेंट्स' का जोर होगा या 'चाइल्ड' का।

उदाहरण के लिए एक प्रश्न लीजिए, पति सुबह दफ्तर जाने से पूर्व पत्नी से पूछता है, "मेरा रूमाल कहां रख दिया?" अब यह प्रश्न एक प्रौढ़ प्रश्न है, जिस का प्रौढ़ उत्तर यही होगा कि ड्रायर में है या अलमारी में है। यदि पत्नी ऐसा उत्तर दे देगी तो बात वहीं समाप्त हो जाएगी, किंतु किसी की पत्नी इस का उत्तर झुंझला कर देती है, "सुबह काम के वक्त भी आप को चैन नहीं, होगा कहीं, देख

लो" इस जवाब में पत्नी का 'पेरेंट्स' बोल रहा है। इसी प्रश्न के उत्तर में यदि किसी की पत्नी रुंआसी हो कर कहती है, "तुम भी बच्चों के साथ सुबहसुबह मुझे चैन नहीं लेने देते, देखो तो कितना काम पड़ा है।" यहां पत्नी का व्यवहार बचकाना है।

मनोवैज्ञानिक विश्लेषण

इस प्रकार की प्रतिक्रियाओं को जांच कर स्वभाव का तथा संतुलित मानसिकता का पता अवश्य लगाया जा सकता है। साथ ही बचपन में मातापिता द्वारा दिए गए वातावरण का भी अनुमान लग जाता है, जो बच्चे सदा कलहक्लेश वाले वातावरण में पलते हैं, उन के व्यक्तित्व तथा सामाजिक व्यवहार में असंतुलन साफ झलकता है।

अभी हाल ही में मैं एक इंटरव्यू बोर्ड की सदस्या थी, हमें एन.सी.सी. की 'बेस्ट कैडेट' चुननी थी, हर संस्था से आई छात्रा अच्छी थी, चुस्त थी, किंतु एक छात्रा ने अपने समय सूचक तथा निर्भय उत्तरों से हम सभी को इतना प्रभावित किया कि उस के सिवा हमें कोई अन्य कैडेट चुनने का ध्यान ही नहीं

तीखेपन से दिए गए उलजलूल जवाबों के परिणाम गंभीर भी हो सकते हैं।



आया और एक राय से उसी का चयन हुआ।

यह तो सही था कि प्रश्नपत्र की भाषा जिसमें हो सकता है कई मेधावी छात्रछात्राएं पूरी न उतर सकें। कई को झिझक होती है, जब कि बहुतों को उत्तर देने की कला नहीं आती। अब लिखित परीक्षा का ही उदाहरण लीजिए। कभी किसी असफल हुए छात्रछात्रा से बात कर के देखिए। वे कहेंगे, "प्रश्नपत्र तो बहुत अच्छा हुआ था, प्रश्न भी सारे किए थे, फिर न जाने क्यों नंबर आए नहीं।"

इस पर नातापिता या सहानुभूति जतलाने वाला व्यक्ति झट से शिक्षकों पर कीचड़ उछालने लगेगा, पर उन से यह कौन कहे कि आप के बच्चे के उत्तर सही भी थे या वह उस के द्वारा कागज काले करने के ही नंबर चाहते हैं।

हमारे एक पारिवारिक मित्र की बेटी कालिज में पढ़ती है। एक बार कालिज की परीक्षाएं हुईं। जब लड़की से पूछा कि प्रश्नपत्र कैसे किए तो उस ने काफी डींग हांकी। संयोगवश उस की कक्षा की मेरे विषय की कापियां मेरे पास आईं। सब से पहले मैं ने उसी की कापी जांची। सच मानिए, उस ने सारे प्रश्नों के उत्तर लिखे थे, परंतु एक भी उत्तर जितना चाहिए, जैसा चाहिए वैसा नहीं था, ऐसे में परीक्षक अंक कैसे देगा?

विनम्रता से उत्तर दें

अब प्रश्न उठता है कि उत्तर किस प्रकार दिया जाए? प्रतिदिन के जीवन में हो या किसी औपचारिक स्थान पर, उत्तर हमेशा विनम्रता से दिया जाए तो उस का असर ही कुछ अनोखा होगा। अशिष्टता से भी अगर आप जवाब दें तो कोई फांसी पर नहीं लटकाएगा, किंतु आप के मातापिता, घरपरिवार व लालनपालन का अंदाजा लगा कर आप से दूर भागेगा। फिर अशिष्टता का प्रतिउत्तर भी अशिष्टता से ही मिलेगा।

यदि नम्रता आप के व्यक्तित्व को मोहक बनाती है तो असभ्यता उसे कुरूप ही बनाएगी। इस के अतिरिक्त उत्तर समयानुकूल और आवश्यकतानुसार हो।

बिलावजह ही लटकालटका कर लंबी कहानी सुनाने से सारा मजा किरकिरा हो जाता है।

एक बार हमारी एक सहयोगी प्राध्यापिका ने सुंदर स्वेटर पहना था, दूसरी ने उसे देख कर सहज ही कहा, "सुंदर स्वेटर है। कहां से लिया?" इस प्रश्न का छोटा सा जवाब है—'धन्यवाद'। और आगे दुकान का नाम बता देना, पर उस प्राध्यापिका ने खुशी में आ कर हमें स्वेटर की इतनी लंबी कहानी सुनाई कि एकएक कर सारी प्राध्यापिकाएं ऊब कर खिसक गईं।

यदि ठीक उत्तर न दिया जाए तो समय भी नष्ट होता है। खास कर ऐसे स्थानों पर जहां बहुत से लोगों से निबटना होता है, जैसे रेलवे या बस अड्डे की 'पूछताछ' खिड़की पर या डाकखाने, बैंक, दुकानों आदि स्थानों पर।

एक बार मैं कपड़े की एक दुकान पर खड़ी कुछ कपड़े देख रही थी। मुझ से पहले खड़े व्यक्ति ने कपड़ा पसंद किया। दुकानदार ने पूछा, "कितना दू?" इस पर ग्राहक का उत्तर था, "दे दो, जी।" दुकानदार पांच मिनट मुंह ताकता रहा। फिर पूछा, तब कहीं दोबारा ग्राहक ने जवाब दिया, "दे दो जी—यही कोई चार मीटर।" अब आप ही बताइए क्या यह उत्तर सही है?

अपने बच्चों को ठीक ढंग से उत्तर देना सिखाइए। बात तो छोटी सी है, किंतु यह वातावरण में मिठास या कड़वाहट पैदा कर सकती है, व्यक्तित्व को निखार व कुरूप भी बना सकती है। अतः आप ध्यान रखें कि जब आप का बच्चा दुनिया में कदम रखे तो कोई यह न कह सके, "अरे, मांबाप ने इतना भी नहीं सिखाया?" अगर किसी को यह कहने का मौका मिला तो आप के किएकराए पर पानी फिर जाएगा।

जवाब देना एक कला है और अन्य कलाओं की भांति ही इसे संजोना है, बढ़ाना है। गरदन हिला कर 'हां' या न का संकेत है। अथवा 'हूंहां' आदि भी अच्छी आदतों में नहीं आता। उत्तर देते समय आत्मसंयम, आत्मविश्वास के साथ नम्रता रखिए फिर बोलिए अपने व्यक्तित्व का जादू।

बलात्कार, हत्या, डकैती, तस्करी, जालसाजी, वेश्यावृत्ति,
की कहानियां —

क्या आप का सही मानसिक विकास करती हैं?

क्या आप का सही मनोरंजन करती हैं?

क्या आप को सही राह दिखाती हैं?



नहीं...

वे सिर्फ क्षणिक रोमांच देती हैं...

गलत दुनिया में भटकाती हैं...

चरित्रहीनता की ओर ले जाती हैं...

सुरुचिपूर्ण, स्वस्थ मनोरंजन के लिए प्रेरक और
उद्देश्यपूर्ण साहित्य पढ़ें.

दिल्ली प्रेस की पत्रिकाएं
ज्योति नए युग को घरघर जगाए.

रमेश को नौकरी मिल गई। वह सारा काम निपटार में ले आया और जल्द ही नौकरी पर चला गया।

नौकरी करते हुए लगभग एक वर्ष हुआ था, लेकिन एक ही वर्ष में उस ने बाबूओं के सारे लटकेझटके सीख लिए थे। कुछ ऐसा संयोग हुआ कि एक वर्ष के बाद ही उस की नियुक्ति कार्यालय की वित्त शाखा में हो गई और वह प्राविडेंट फंड और पेंशन प्रकरणों की फाइलें संभालने लगा।

एक दिन दफ्तर के बाहर की दुकान से चाय पी कर और मुंह में पान दबा कर वह अपनी मेज पर लौटा तो देखा कि एक बुजुर्ग सज्जन उस की मेज के पास कुर्सी पर डटे हुए हैं। अक्सर अपने आवेदन के संबंध में उस के पास लोग आया करते थे। वह समझ गया कि यह महाशय भी उन्हीं में से एक हैं। उस ने बड़ी रुखाई से उन से पूछा, "कहिए, क्या काम है?"

कुरतापाजामा पहने हुए वह सज्जन कुछकुछ नेता जैसे लग रहे थे, लेकिन चेहरे से यह लगता था कि वह काफी अनुभव प्राप्त कोई सरकारी कर्मचारी हैं। बात सही भी थी।

रमेश का स्वर कुछ नम्र हो गया था।
"कहिए, कैसे आना हुआ?"

वह सज्जन हंसे, "मुझे कोई काम नहीं रहता है, वैसे ही कभीकभी दफ्तर के चक्कर लगा कर पुरानी यादों को ताजा कर लेता हूँ। कभी तुम जैसे नए लोगों को कुछ गुर सिखा देता हूँ।"

रमेश एकदम गिड़गिड़ाता हुआ बोला, "अरे बाह, बड़े बाबू, कुछ गुर हमें भी सिखाइए न?"

"जरूर, मैं तो पहले से ही यह सोच रहा था, लेकिन जरा चायपानी हो जाता तो कुछ गला चलता," बड़े बाबू बोले।

रमेश ने चपरासी को बुला कर चाय और पान लाने को कह दिया तब वह बाबू ने अपनी आंखे किसी उपदेश देने की भाँसाधु की तरह बंद कीं और बोले, "सुनो अगर तुम इस देश के सफल बाबू बनना चाहते हो तो चार बातें याद रखो।"

"कौन सी चार बातें?" रमेश ने पूछा।

जबराना

कहानी • आलोक सक्सेना

उन्होंने अपनी छड़ी घुमाते हुए कहा, "तुम इस शाखा में शायद नए आए हो। वैसे यहां के सभी कर्मचारी मुझे जानते हैं। मैं इसी शाखा में 20 वर्ष तक काम कर चुका हूँ। दो वर्ष हुए

रमेश नहीं समझ पा रहा था कि अनायास दफ्तर आए बड़े बाबू का मतव्य क्या है? पर जब उसे असलियत पता चली तो वह भौचक्का रह गया।



शाखा और विभागों में इस की
ती है. कहीं यह तय की जाती है.
हुई दर लाइसेंस, कोटा,

"नजराना वह होता है जो काम करते समय पार्टी के बारबार आने पर, बातचीत का



रास्ता खोलने के लिए दिया जाता है, जैसे कोई अपनी फाइल के बारे में पूछने के लिए 10 बार तुम्हारे घर आए और हर बार तुम्हारे बच्चों के लिए मिठाई ले कर आए या फिर दफ्तर में तुम्हें कैटीन में ले जाए और चाय-समोसे खिलाए तो यह नजराना हुआ। कई बार नजराने के दौरान ही मेहनताना तय कर लिया जाता है।"

तब तक चाय आ गई थी। बड़े बाबू इटमी नान से चाय के घूंट भरते हुए बोले, "अब जबराना क्या होता है, यह सुनो। कई लोग बड़े ढीठ होते हैं। काम लाखों का करवाना चाहते हैं, पर देना एक कौड़ी भी नहीं चाहते। ईमानदारी की आड़ में कंजूसी करना चाहते हैं। ऐसे लोगों से नजराना, मेहनताना, शुकुराना कुछ भी प्राप्त नहीं होता है। ऐसे लोगों से जबराना वसूल करना पड़ता है।"

"ऐसे किसी आदमी की फाइल तुम्हारे पास हो तो उसे नीचे दबा दो। या फिर इस पर टिप्पणी लिख दो कि 'नियमानुसार जांच करवाई जा रही है' या 'आडिट के लिए भेजना उचित होगा?' लेकिन एक बात याद रखना, ऐसा सचमुच कभी मत लिखना। सिर्फ उस पार्टी को बतलाना कि आप की फाइल पर

वेसाकपा पड़ेगा अर्थात् आडिट के लिए जांच के लिए भेजना पड़ेगा। एक दम ढीली पड़ जाएगी। कहे बाबूजी, काहे आडिट को भेजते हो? बाद तुम्हें जो प्राप्त होगा वह होगा..."

बड़े बाबू ने चाय खत्म कर मुँह दबाया, और गदगद भाव से सुन रहे पास झुक कर बोले, "मेरा पेशान अभी तक तुम्हारे पास ही अटका बैठा। जी.पी. एफ. भी नहीं मिला है। तो ये फाइले कहां हैं?"

रमेश के चेहरे का भाव एकदम गया। बड़ी व्यस्तता से कुछ फाइल सामने खींचता हुआ वह बोला, "ले थी? आपने पहले ही क्यों नहीं पूछा? आप का नाम मोहनदास है न? मोहनदास आप के पेशान प्रकरण में तो बहुत देर आप की सर्विस बुक में कई कमियाँ की फाइल पर नियमानुसार जांच के लिए लिखा जा रहा है। अच्छा, अब दूसरा काम भी निपटालूँ।" और फिर रमेश बाबू एक फाइल सामने खींच कर बोले, "मैं ऐसे व्यस्त हो गए जैसे उन के साथ खड़ा ही न हो।"



आप मांग कर खाते हैं?
मांग कर कपड़े पहनते हैं?
मांग कर बस, ट्राम व रेल में सफर करते हैं?
मांग कर सिनेमा देखते हैं?
मांग कर रेस्त्रां में चायकाफी पीते हैं?
तब
मांग कर पत्रपत्रिकाएं व पुस्तकें क्यों पढ़ते हैं?
निजी पुस्तकालय आप की शोभा है, आपका
परिवार की शान है, उन्नति का साधन है,
मांग कर नहीं खरीद कर पढ़िए।

डा. सुब्रह्मण्यम चंद्रशेखर

ज्योतिर्मय



डा. सुब्रह्मण्यम चंद्रशेखर.

कोई 48 साल पहले की घटना है।
न में रायल एस्ट्रोनॉमिकल (खगोल
शास्त्री के सभागार में एक गोष्ठी
थी। दुनिया भर के माने हुए
थी इस गोष्ठी में उपस्थित थे और

अपनी खोजों व उस से प्राप्त निष्कर्षों का
आदानप्रदान कर रहे थे।

इसी गोष्ठी में एक भारतीय युवक ने
अपना व्याख्यान दिया। व्याख्यान का विषय
एकदम अच्छा था- 'तारों की मौत कैसे होती

है, तारों का जन्म कैसे हुआ, वे कैसे अस्तित्व में आए, कौन सा तारा कितनी दूर है, किस तारे की क्या विशेषता है—खगोलविदों ने इन पहलुओं पर तो विस्तार से प्रकाश डाला है, किंतु तारे नष्ट कैसे होते हैं, इस पर कुछ कम ही ध्यान दिया है।

भारतीय युवक ने व्याख्यान दिया तो श्रोताओं ने बीच में कई बार तालियां बजाईं। एक तो यह वक्ता बहुत कम उम्र का था—सिर्फ 25 वर्ष का और दूसरे खगोल शास्त्र के जिस पहलू को उस ने उठाया था, वह प्रायः उपेक्षित ही रहा था। ये दोनों कारण उस युवक को उस गोष्ठी का नायक सा बना गए।

इस के बाद अपने समय के सर्वाधिक मेधावी और चर्चित खगोलविद सर आर्थर स्टेनली एडिंगटन का भाषण हुआ। वह युवा खगोलविद भी एडिंगटन को अपना आदर्श मानता था। एडिंगटन के अपना भाषण शुरू किया तो निशाना बनाया उसी युवक के भाषण को। उन्होंने युवक की स्थापनाओं को एकएक कर निशाना बनाया और उस के पूरे व्याख्यान की धज्जियां उड़ा दीं।

एडिंगटन खगोलशास्त्र के पितामह माने जाते थे। उन्होंने युवा वैज्ञानिक के भाषण को अतिरेकपूर्ण और भ्रामक बताया तो इस से उस के भाषण का जो रंग जमा था, वह उखड़ना स्वाभाविक ही था।

किसी भी युवा प्रतिभा को हतोत्साहित करने के लिए इस से बड़ी घटना और क्या हो सकती है कि जिस व्यक्ति को वह अपना आदर्श और मार्गदर्शक मानने लगा हो, वही व्यक्ति भरी सभा में उस की उपलब्धियों को निर्भयता से काटने लगे, किंतु इस घटना से हतोत्साहित होने के स्थान पर यह युवक अपने काम में लगा रहा और अतंतः उसे नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

73 वर्षीय डा. सुब्रह्मण्यम चंद्रशेखर को इस वर्ष का नोबेल पुरस्कार देने के लिए चुने जाने का समाचार आया तो बहुतों ने 48 वर्ष पूर्व की उपर्युक्त घटना का हवाला देते हुए कहा कि उन्हें पुरस्कार तो सन् 1935 में ही मिल जाना चाहिए था।

खगोलशास्त्र के क्षेत्र में छपने वाला सोसाइटी हाल में उन्होंने जो व्याख्यान दिए थे, उस के बारे में बहुत बाद में जाकर पता हो सका कि डा. चंद्रशेखर की स्थापनाएं सही हैं। यह भी स्वीकार किया गया कि एडिंगटन ही गलत थे और उन्होंने संभवतः एक कारण ही चंद्रशेखर का खंडन किया था—स्थापनाएं खगोलशास्त्र के क्षेत्र में नूतन संघर्षात्मक थीं कि उन से एक विस्थापन की तरह इस शास्त्र की एक नई दिशा उद्घाटित हुई।

विज्ञान की ओर रुझान

सन् 1930 में भौतिकी के लिए एडिंगटन पुरस्कार प्राप्त करने वाले प्रसिद्ध भौतिक वैज्ञानिक डा. चंद्रशेखर के नाम का डा. सुब्रह्मण्यम चंद्रशेखर के चाचा डा. रमन को नोबेल पुरस्कार मिला जब डा. चंद्रशेखर की आयु 20 वर्ष थी। 1937 उसी साल केंब्रिज विश्वविद्यालय में मिलावे लिए भर्ती हुए थे। उन के परिवार के तारों और संगीत—ये दो ही शौक थे। उन दोनों में सी.एस. अय्यर का नाम प्रमुख संगीत में लिया जाता है। वह मद्रास विश्वविद्यालय के अकादमी के संस्थापकों में भी गिने जाते थे।

उन के पिता उन्हें गणित के विषय में उत्तारना चाहते थे, किंतु डा. चंद्रशेखर रुझान विज्ञान की ओर ज्यादा था। पिता का कर परिवार के लोगों ने भी उन्हें प्रोत्साहन दिया। जिस साल उन को नोबेल पुरस्कार मिला, उसी साल डा. चंद्रशेखर ने मद्रास के प्रेसीडेसी कॉलेज में भौतिक विज्ञान की उपाधि परीक्षा में उत्तीर्ण की। यही योग्यता के साथ उत्तीर्ण की। यही केंब्रिज विश्वविद्यालय में छात्रवृत्ति पढ़ने गए।

केंब्रिज विश्वविद्यालय से स्नातक करने के बाद वह ट्रिनिटी कॉलेज में आकर रहने लगे। यहीं उन्हें एडिंगटन से मिलना मिला। जिसे वह अपना आराध्य मानते थे। डा. चंद्रशेखर के शोधपत्र और विषयक निबंध तो पहले ही विज्ञान में दिए जा चुके थे।

के छपते थे, ट्रिनिटी कालिज में आय उत्तेजा के कामों का ब्योरा भी सामने आने लगा। सन 1935 में उन्हें खगोलशास्त्र की रायल सोसाइटी ने व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया।

ट्रिनिटी कालिज में कुछ समय अनुसंधान कार्य करने के बाद यह भारत आ गए। विदेशों में उन की प्रतिष्ठा एक वैज्ञानिक के रूप में थी ही। भारत आ कर उन्होंने यहीं रहने का निश्चय किया। उन्होंने यहां काम की तलाश भी की, किंतु किसी विश्वविद्यालय में उन जैसे प्रतिष्ठित वैज्ञानिक के लिए कोई जगह नहीं मिली। हां, प्रसिद्ध यहां उन की सहपाठी रह चुकी ललिता से उनका विवाह हो गया।

काफी दिनों तक तलाश करते रहने पर कार में जब भारत में उन्हें काम नहीं मिला तो सन 1937 में वह शिकागो विश्वविद्यालय के अलावे पर अमरीका चले गए। यहीं उन्होंने रेवार के तारों के नष्ट होने की प्रक्रिया पर अपनी थ. उन ग्लोबों के आधार पर एक पुस्तक लिखी।

सन 1946 में उन्हें शिकागो विश्वविद्यालय में विशिष्ट सेवा प्राध्यापक नियुक्त किया गया। यह सब से बड़ा सम्मान था। कितने आश्चर्य की बात है कि जिस व्यक्ति को भारत में अध्यापन का साधारण काम नहीं मिला, उसे एक ऐसे पद पर नियुक्त किया गया, जिस के साथ उन्हें पढ़ाने उन के अलावा शोधार्थियों को मार्ग निर्देशन देने का दायित्व भी जुड़ा था।

डा. चंद्रशेखर तब से शिकागो

विश्वविद्यालय में ही रहे। वह अमरीका के नागरिक भी बन चुके हैं। विश्व की अनेक वैज्ञानिक संस्थाओं ने उन का सम्मान किया है। लंदन की रायल सोसाइटी ने उन्हें विशिष्ट सदस्य मनोनीत कर रखा है।

सन 1952 में अमरीका की कला और विज्ञान परिषद ने उन्हें अपना सदस्य चुना। सन 1967 में उन्हें विज्ञान का राष्ट्रीय पदक मिला। सन 1974 में उन्हें अमरीका की भौतिक विज्ञान परिषद ने पुरस्कृत किया। भारत में उन्हें सन 1968 में पद्मविभूषण की उपाधि से सम्मानित किया गया था।

उन्हें मिलने वाले पुरस्कारों और सम्मानों की सूची बहुत लंबी है। इतने अधिक पुरस्कारों और सम्मानों के मालिक होते हुए भी डा. चंद्रशेखर अपने काम के प्रति पूरी निष्ठा से समर्पित हैं। उन के पढ़ाए हुए दो विद्यार्थियों—तुंग दाउंग ली और चैन निंग यंग (चीन में जन्मे) को 1957 में भौतिकी का पुरस्कार मिल चुका है। अपने विद्यार्थियों से उन्हें इतना प्रेम है कि यदि दो विद्यार्थी हैं तो भी उन्हें पढ़ाने के लिए वह कड़ाके की ठंड में भी मीलों दूर जाते हैं।

डा. चंद्रशेखर को इस की कोई शिकायत नहीं रही कि उन्हें नोबेल पुरस्कार देर से मिला। एक पत्रकार ने उन से जब कहा कि 'यह पुरस्कार तो आप को 1935-36 में ही मिल जाना चाहिए था,' तो उन्होंने बहुत ही संतुलित उत्तर दिया, 'यह ठीक ही हुआ, अगर मुझे 1935-36 में नोबेल पुरस्कार मिल गया होता तो संभवतया उस उम्र में मुझे पंड हो जाता और मैं किसी काम का नहीं रहता।'

75 वर्षीया प्रतिभाशाली छात्रा

इंग्लैंड के लांकैस्टर विश्वविद्यालय की एक वृद्ध छात्रा को विशेष योग्यता के लिए दिए जाने वाले पुरस्कारों में से एक पुरस्कार दिया गया।

यह है 75 वर्षीया मोरथा गार्डन, जिस ने 69 वर्ष की उम्र से पढ़ना शुरू किया था। वह जब अपनी लड़की से मिलने आस्ट्रेलिया गई थी तो उसे फ्रांसीसी भाषा सीखने का शौक पैदा हुआ था और इंग्लैंड वापस आ कर उक्त विश्वविद्यालय में संस्थागत छात्र के रूप में प्रवेश ले लिया। पढ़ने-लिखने का खर्चा वह आस्ट्रेलिया से मिलने वाली 40 पौंड प्रति सप्ताह की वृद्धा पेंशन तथा 426 पौंड प्रति वर्ष की अपनी व्यक्ति आमदनी से निकाल रही है।



नई प्रतिभाएं

उज्जैन के राधाकिशन वाडिया ने 'काष्ठशिल्प एवं पेंटिंग' के क्षेत्र में विशेष स्थान बना लिया है। 1973 में जे.जे. आर्ट्स कालिज, बंबई से 'फाउंडेशन' में डिप्लोमा करने के बाद से वह डा. वी. श्री वाकाणकर के निर्देशन में काष्ठ की मूर्तियां



राधाकिशन वाडिया (ऊपर) तथा उस की दो कला कृतियां, पेंटिंग 'ऋतुसंहार' (एकदम ऊपर) व काष्ठकृति 'आलिंगन' (बाएं ऊपर).

और पेंटिंग बना रहा है। उस ने अपनी कृतियों में मानव चरित्र के गुणों और उस के सौंदर्य को व्यक्त किया है। वह अभी तक 500 से भी अधिक कलाकृतियां बना चुका है। उस की कलाकृतियों में खजुराहो की मूर्तियों की स्पष्ट झलक दिखाई देती है।

उस ने अपनी कलाकृतियों की एकल एवं सामूहिक प्रदर्शिकाओं में खजुराहो, उज्जैन, रायपुर, ग्वालियर, नागपुर और

दिल्ली में लगाई हैं।

राधाकिशन को नूतन कला संग्रहालय, रायपुर, मध्य प्रदेश समाज एवं युवक कल्याण विभाग भोपाल, महाकौशल कला परिषद रायपुर और कालिदास चित्र एवं मूर्तिकला प्रदर्शनी के पुरस्कार के अलावा



अखिल भारतीय स्तर पर भी 14 पुरस्कार मिले हैं।
—ललित जैन, वि.वि.प्र.

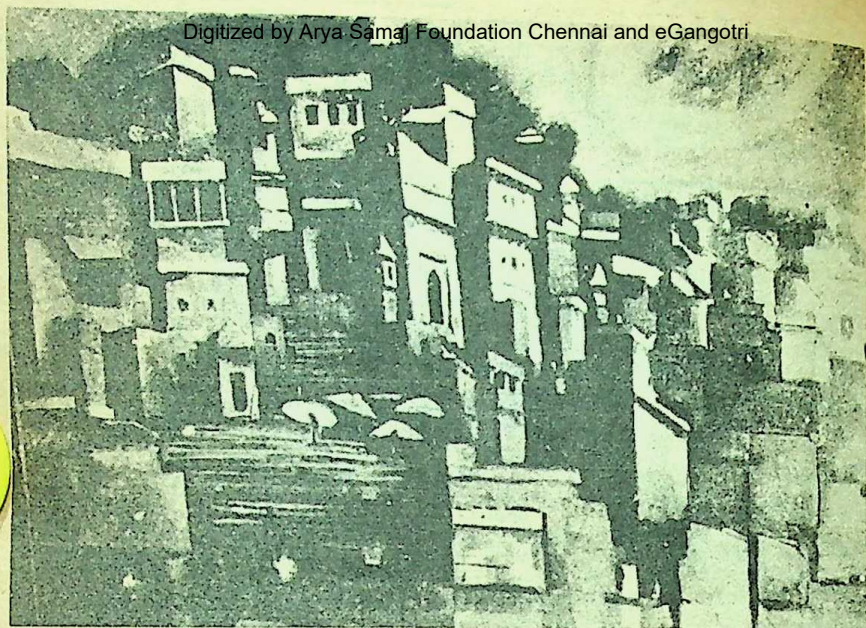
श्री वैष्णव वाणिज्य महाविद्यालय इंदौर का छात्र मंगल मिश्र देवी अहिल्या विश्वविद्यालय ही नहीं, बल्कि संपूर्ण मध्य प्रदेश के एक मात्र ऐसा छात्र है, जिस ने अपनी प्रभावशाली, गंभीर और चितनशील वक्तृत्व शैली के बल पर भारत की चुनिंदा परिसंवाद प्रतियोगिताओं के सर्वोच्च पुरस्कार प्राप्त किए हैं।

वर्ष 1983 की कमल नयन बजाज स्मृति अखिल भारतीय अंतर विश्वविद्यालयी परिसंवाद प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार तथा सन 1982 की बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के तत्वावधान में मानव अधिकार दिवस के अवसर पर आयोजित अखिल भारतीय अंतर विश्वविद्यालयी वादविवाद प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ वक्ता का खिताब जीता, उल्लेखनीय है कि उस ने इस प्रतियोगिता में



प्रतिभाशाली वक्ता
मंगल मिश्र
(ऊपर) व विज्ञान
प्रदर्शनी में स्वर्ण
पदक प्राप्त
आशीष कुमार
भीवास्तव (दाएं)...





तीसरी बार सफलता प्राप्त की है। इस के अतिरिक्त उस ने लगभग 50 स्पर्धाओं में भाग ले कर सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया है।

—आशुतोष बाजपेयी, वि.वि.प्र.



इलाहाबाद में संपन्न हुई राज्य विज्ञान प्रदर्शनी में सी.एम. ऐंगलो बंगाली कालिज, वाराणसी के 10वीं वर्षा के प्रतिभाशाली छात्र आशीषकुमार श्रीवास्तव ने पूरे उत्तर

पेनइंक द्वारा बनी राकेश की कलाकृति 'विधवा' (ऊपर) तथा मनुष्य की अतृप्त इच्छाओं का चित्रण करती मुक्ता जैन की एक कलाकृति (ऊपर बाएं)।

बनारस के घाटों की प्राचीनता खोजनी
डॉ. पी. मोहंती की कलाकृति (वाए) तथा
अब्दुल हमीद द्वारा पेंसिल से बनाया गया
एक चित्र (दाएँ).

प्रदेश में प्रथम पुरस्कार (स्वर्णपदक) प्राप्त किया है. उसे इस राज्य स्तरीय विज्ञान प्रदर्शनी में स्वर्णपदक के साथ ही दो रजत पदक एवं दो कांस्य पदक प्राप्त करने का भी गौरव मिला है.

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली तथा जवाहरलाल नेहरू स्मारक निधि की सहायता से शिक्षा विभाग उत्तर प्रदेश द्वारा आयोजित इस प्रदर्शनी में आशीषकमार श्रीवास्तव को स्वर्णपदक स्वदेशी टेक्नालाजी और औद्योगिक विकास के अंतर्गत विविध प्रदूषण नियंत्रण माडल पर मिला, जिस में उस ने ध्वनि, वायु, जल तथा मृदा प्रदूषण के कारणों, प्रभाव एवं नियंत्रण के उपायों को प्रदर्शित किया था. उसे अन्य पुरस्कार 'विकलांगों की सहायता हेतु टेक्नालाजी' तथा 'टेक्नालाजी और महिलाएँ' विषयों के अंतर्गत मिला, जिस में उस ने विकलांगों एवं महिलाओं के लिए उपयोगी साधनों का प्रदर्शन किया था. आशीष वर्ष 1982 में भी राज्य विकास प्रदर्शनी में स्वर्णपदक पा चुका है.

—चंद्रमोहन श्रीवास्तव



प्रदर्शनी

काशी हिंदू विश्वविद्यालय कला संकाय के स्नातकोत्तर अंतिम के चार चित्रकार छात्रों ने पेंटिंग अपनी कलाकृतियों की एक प्रदर्शनी आयोजन किया. चित्रकला की मूर्त उ दोनों विधाओं का प्रतिनिधित्व कलाकृतियां तैल एवं जल रंगों त स्याही एवं पेंसिल से कागज एवं कै अंकित थीं तथा अलगअलग विचारों का संकेत देती थीं.

रायपुर के नेताजी सुभाष स्टेडियम में हुई अखिल भारतीय फुटबाल प्रतियोगिता एक दृश्य.



—प्रतुलकुमार श्रीवास्तव

प्रतियोगिताएं

उज्जैन के मानविकी अध्ययनशाला में अंतर महाविद्यालयी शतरंज प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिस में विभिन्न कालिजों के खिलाड़ियों ने भाग लिया। अंतिम मुकाबले में माधव कालिज, उज्जैन ने अध्ययनशाला

उज्जैन के मानविकी अध्ययनशाला में हुई 'शतरंज प्रतियोगिता का एक दृश्य (एकदम, बाएं) तथा दिल्ली विश्वविद्यालय दौड़-कूद प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ धावक रणजीतसिंह (बाएं)।

गय के छात्र कलाकार मीद के कैनवास पर रंग के अलावा आड़ीतिरछी साइनों से बने चित्र के विशेष आकर्षण थे।

उ ने पेंसिल को नेगेटिव पर न चला जों पर उसी तकनीक से चला कर नों को बनाया है। स्कोचिंग की यह उस की अपनी है।

म और स्याही के काम में माहिर प्रकृति के निकट जा कर उसे देख के रूप में सजीव किया था, 'पेन में रात्रि में फूलों पर पड़ने वाले के आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया है। वैज्ञानिक चित्रों के निर्माण में दक्ष हंती के चित्र, कला और मनोविज्ञान साथ ले कर चल रहे थे। मोहंती ने तियों में काशी के घाटों और गलियों भ्रमल ही रूप में प्रस्तुत किया है।

ता जैन ने अपने 15 चित्रों के माध्यम त्व के लिए संघर्ष करते मनुष्य को ग प्रयास किया है। संघर्ष, मन की छाएं और लक्ष्य पर पहुंचने में बाधक दशाति इन चित्रों में दर्शाते हैं कि दर्शकों को चित्रकार के भावों

(स्कूल आफ स्टडीज) को हरा कर यह प्रतियोगिता जीत ली। विजेता टीम का नेतृत्व मनोज तिवारी ने किया।

पुरस्कार वितरण के बाद मनोज ने बताया, "यहां की कुरसियां इस लायक नहीं हैं कि उन पर लगातार चारपांच घंटे बैठ जा सके। प्रतियोगिता के दौरान यहां पानी पिलाने वाले की भी व्यवस्था नहीं थी, खेल के बीच में खिलाड़ियों को स्वयं ही पानी पीने जाना पड़ता था जिस से उन की एकाग्रता भंग होती थी।"

—ललित, वि.वि.प्र.

दिल्ली विश्वविद्यालय की 1983 की अंतर विद्यालयी दौड़कूद प्रतियोगिता करनैलसिंह स्टेडियम में संपन्न हुई। इस प्रतियोगिता में अधिकांशतः वे ही एथलीट छाए रहे जिन का दोतीन वर्षों से इस प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ धावकों का

Digitized by Arya Samaj Foundation
 खिताब सुवर्ण कालिज की छात्र विजयमाला दत्ता को प्राप्त हुआ। विजयमाला दत्ता ने गोला फेंक व डिस्कस थ्रो में भी प्रथम स्थान प्राप्त कर विश्वविद्यालय में नया रिकार्ड बनाया। विजयमाला दत्ता ने नवम एशियाई खेलों में भी गोला फेंक प्रतियोगिता में भारत का प्रतिनिधित्व कर चौथा स्थान प्राप्त किया था।

लड़कों में सर्वश्रेष्ठ धावक का खिताब पन्नालाल गिरधारीलाल दयानंद वैदिक एंग्लो कालिज के छात्र रणजीर्तसिंह को मिला। रणजीर्तसिंह 20 किलोमीटर की पैदल चल प्रतियोगिता का खिलाड़ी है और उस ने इस प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय का अपना ही पुराना रिकार्ड तोड़ा।

लड़कों में टीम चैंपियनशिप पन्नालाल गिरधारीलाल दयानंद एंग्लो वैदिक कालिज को प्राप्त हुई जब कि लड़कियों में टीम

चैंपियनशिप कमला नेहरू कालिज
 —राजीव मेहरोत्रा,

रायपुर के नेताजी सुभाष स्टे अखिल भारतीय प्रतियोगिता का किया गया। इस में कलकत्ता, कोरवा, भिलाई, विलासपुर, इत्यादि स्थानों की कुल 28 टीम लीया। अंतिम मुकाबले में यंग मुर्सा नागपुर ने नेहरू क्लब रायपुर को 3 कर शील्ड पर कब्जा जमाया।

—श्रीकान्तचंद्र रहाटगांवकर,

रंगमंच

विगत दिनों कानपुर की नाट्य 'प्लेग्रुप' के तत्वावधान में लेखक,



नागपुर में नाट्य प्रतियोगिता प्रथम पुरस्कार नाटक 'सैत कोतवाल' दृश्य (बाएं) की नाट्य संस्था के तत्वावधान में मंचित 'अर्द्धांगिनी' दृश्य (नीचे)





नागपुर में आयोजित प्रतिभा सम्मान
हमें सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का सम्मान
प्राप्त करते महेश रंक (वाएं)।

ओमेंद्रकुमार के चर्चित नाटक
'नी' का मंचन किया गया।

एक में दांपत्य जीवन के बिखरते
काफी अच्छे ढंग से पेश किया गया
गणपिनी का किरदार रंगमंच की
डाली विश्वास, तनावग्रस्त पति की
उदय सक्सेना और शेखर की
स्वयं डा. ओमेंद्रकुमार ने बखूबी
-शशी वर्मा

नागपुर में आयोजित 1983 की अखिल
नाट्य प्रतियोगिता इंदौर ने जीती।
आर्टिस्ट एसोसिएशन, नागपुर द्वारा
इस नाट्य प्रतियोगिता में इंदौर ने
प्रभाग ले कर प्रथम स्थान प्राप्त
प्रतियोगिता में कुल 16 नाट्य संस्थाओं
लेखा था।

प्रतियोगिता में इंदौर की ओर से
नीस का लिखा नाटक 'सैया भयो'
खेला गया। हास्य भूमिका में दीपक
ने बेहद प्रभावित किया। अन्य
में दिलीप नंजाड, सुहास मोहोती
न भंडारी ठीक रहे। प्रतियोगिता में

पुरस्कार वितरण

सहारनपुर में गत दिनों जिला भारतीय
राष्ट्रीय छात्र संगठन के तत्वावधान में जैन
कालिज में आयोजित एक भव्य समारोह में
कुछ नई प्रतिभाओं को शिक्षा, रंगमंच,
पत्रकारिता आदि क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्यों
के लिए सम्मानित किया गया। समारोह की
अध्यक्षता उत्तर प्रदेश के कृषि मंत्री
चौ. यशपालसिंह ने की एवं खाद्य रसद आपूर्ति
मंत्री वासुदेवसिंह ने सम्मान पत्र भेंट किए।
आलोक तनेजा के नेतृत्व में आयोजित इस
समारोह के अंत में दहेज व मद्यनिषेध पर
आधारित नाटक 'और फिर' का मंचन भी
किया गया। -विजेश जोशी, वि.वि. प्र. •

विश्वविद्यालय प्रतिनिधि

समाज निर्माण में पत्रकारिता के
बढ़ते हुए महत्त्व व इस क्षेत्र में लोगों की
बढ़ती हुई रुचि को देखते हुए दिल्ली
प्रेस ने युवा वर्ग को इस क्षेत्र में आने के
लिए प्रोत्साहित करने व उन का उचित
मार्गदर्शन करने के उद्देश्य से विभिन्न
कालिजों एवं विश्वविद्यालयों में
छात्रछात्राओं की प्रतिनिधियों के रूप में
नियुक्ति की है।

ये विश्वविद्यालय प्रतिनिधि अपने
कालिज, विश्वविद्यालय व नगर से
संबंधित गतिविधियों की रिपोर्ट,
भेंटवार्ताएं आदि नियमित रूप से भेजते
हैं। समयसमय पर ये प्रतिनिधि अपने
कालिज या विश्वविद्यालय में ऐसी
प्रतियोगिताओं का भी आयोजन करते
हैं, जिनमें भाग लेने वाले किसी
निर्धारित विषय पर अपनेअपने विचार

क्रिकेट ने लोगों को निकम्मा बना दिया है

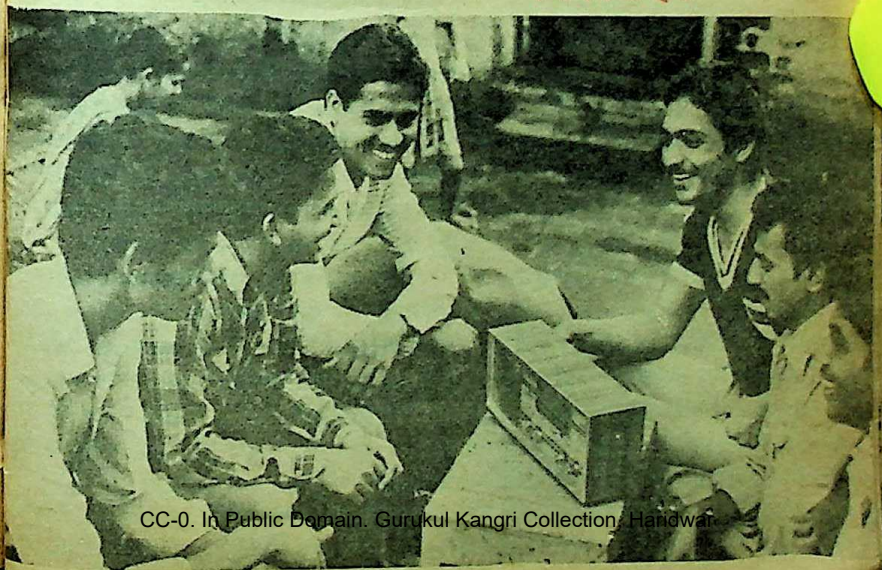
लेख • मुकुंद सक्सेना

पिछले दिनों की बात है, दिल्ली के फीरोजशाह कोटला मैदान पर भारत और वेस्टइंडीज के बीच दूसरा क्रिकेट टेस्ट मैच खेला जा रहा था, मुझे एक निजी कार्य से एक बैंक जाना पड़ा था।

बैंक में घुसते ही एक अजब सी खामोशी नजर आई थी। करीबकरीब सभी काउंटर खाली पड़े थे, लेकिन उन के सामने लगी ग्राहकों की लाइन बढ़ती ही जा रही थी। काउंटर्स के पीछे एक कोने पर पड़ी एक चौकोर मेज के चारों तरफ कुछ कर्मचारी

दुनिया से बेखबर मौन बैठे थे। मेज पर रह एक विदेशी पाकेट ट्रांजिस्टर दबी आवाज कुछ फूसफुसा रहा था।

**सरकारी कार्यालय के कर्म-
चारी हों अथवा स्कूलकालिज
के छात्र अध्यापक, क्रिकेट के
खेल ने सब को किस प्रकार
अपने कर्तव्यों से विमुख
कर दिया है?**





क्रिकेट का आंखों देखा हाल सुनने की बात किसी को कुछ करने ही नहीं देती.

हाल की दीवार पर कांच के फ्रेम में मढ़ी वारतें 'श्रम बिना न किमपि साध्यम्' एवं ग्राहक हमारे माननीय अतिथि हैं' के ठीक ऊपर टंगी दीवार घड़ी की सुईया टिकटिक मरती हुई आगे बढ़ती जा रही थीं. एक, दो, फिर तीन. आखिर कब तक सन्न का बांध न टूटा. कसमसाती लाइन से अचानक एक वती का स्वर उभर ही गया, "आग लगे इस क्रिकेट में. मजाक बना रखा है बदमाशों ने. ये तीन घंटे हो गए लाइन में पिसते और ये हैं कि कोई ध्यान ही नहीं देते."

शह मिलते ही एक अधेड़ व्यक्ति भी जब घुरा उठा था, "क्रिकेट ने तो तबाही मचा रखी है. सारे के सारे निकम्मे हो गए हैं. यहां मान निकली जा रही है, उन्हें कमेंट्री सुनने से फुरसत नहीं."

अभी वह अपनी बात पूरी भी न कर पाया था कि एक मौलाना साहब ने अपनी घड़ी की पकड़ मजबूत करते हुए खलअंदाजी की, "लाहौल बला कुच्चत. अरे आपदाओं ने कभी गिल्लीडंडा भी नहीं खेला होगा, साहबजादे चले हैं कमेंट्री सुनने. चाहे वह भी न मालूम हो कि एक ओवर में कितनी रें होती हैं, कपिल और मार्शल की गेंदबाजी व तपसरा बखूबी करते हैं. मैं तो कहता हूं कि सरकार इस कमबख्त खेल पर पाबंदी क्यों

नहीं लगा देती, वरना निकम्मों की जमात बढ़ती ही जाएगी. जब क्रिकेट ही नहीं होगा तो ये नामाकूल कमेंट्री कैसे सुनेंगे?"

अचानक हाल में जोरदार ठहाका गूंज उठा था, "गावस्कर जिदाबाद, गावस्कर जिदाबाद" और अभी तक मूर्तिवत बैठे बैंक कर्मचारी गावस्कर का शतक पूरा होते ही उछलने कदने लगे थे. चपरासी को तुरंत निकटवर्ती रेस्तोरां से मिठाई और चाय लाने के आदेश पारित कर दिए गए थे. कुछ ही देर में वहां अच्छी खासी दावत का माहौल बन गया था. चपरासी से ले कर प्रबंधक तक ने दावत में शरीक हो कर खुशियां मनाई थीं.

इसी बीच दीवार घड़ी चार का संकेत करने लगी थी. कर्मचारी अपनेअपने काउंटरों पर आ कर बेतस्तीब से पड़े कागजों को समेटने लगे थे.

अब मुझ से और नहीं सहा गया था, मैं बोल ही पड़ा था, "यह चेक भुना दीजिए, बहुत जरूरी है." मेरा इतना कहना था कि चेक काउंटर पर बैठा कर्मचारी गरज उठा था, "देखते नहीं हैं चार बज चुके हैं. अब बैंक के बंद होने का समय हो गया है. कल आइएगा." कह कर वह उठ खड़ा हुआ था.

इसी बीच लाइन में फिर हलचल हुई थी और एक व्यापक प्रबंधक के कमरे में

शि
प्रव
चेक
उठ
नही
का
पड़े
कि
का
सक

मैं
धक
अप
उम्

टेस्ट
आप
क्रि
होत
प्रबंध
थी.

व्यर्त
ताले



कमेंट्री सुनने के नशे में धुत्त बैंक कर्मचारी ग्राहकों पर कोई ध्यान ही नहीं देते.

शिकायत ले कर पहुंच गया था. उस ने प्रबंधक से प्रार्थना की थी कि आज उस का चेक कैश नहीं हुआ तो उसे काफी नुकसान उठाना पड़ेगा. वह अपनी बात अभी पूरा भी नहीं कर पाया था कि प्रबंधक उस की बात को काटते हुए बीच में ही बोल पड़े थे, "आप तो पढ़ेलिखे हैं, आप तो अच्छी तरह जानते होंगे कि दो बजे के बाद कैश बंद हो जाता है. आप का चेक आज किसी भी हालत में कैश नहीं हो सकता."

"साहब, इस में हमारी क्या गलती है? मैं तो पूरे तीन घंटे से लाइन में लगा हुआ धक्के खा रहा था, पर आप के ही कर्मचारी अपनी सीट से नदारत थे." उस ने कुछ उम्मीद भरे स्वर में कहा था.

"आप को जब मालूम था कि वे आज टेस्ट मैच का आंखों देखा हाल सुन रहे हैं तो आप बेवजह क्यों लाइन में लगे रहे. भई क्रिकेट सिनेमा की तरह कोई रोजरोज तो होता नहीं है कि जब चाहा चले गए देखने." प्रबंधक ने कर्मचारियों की ही तरफदारी की थी.

इस प्रकार झड़पों में 15 मिनट और व्यतीत हो गए थे. समाज की नजरों में ताले लगाने शुरू कर दिए थे और अब लंबी

लाइन भी धीरेधीरे छंटने लगी थी.

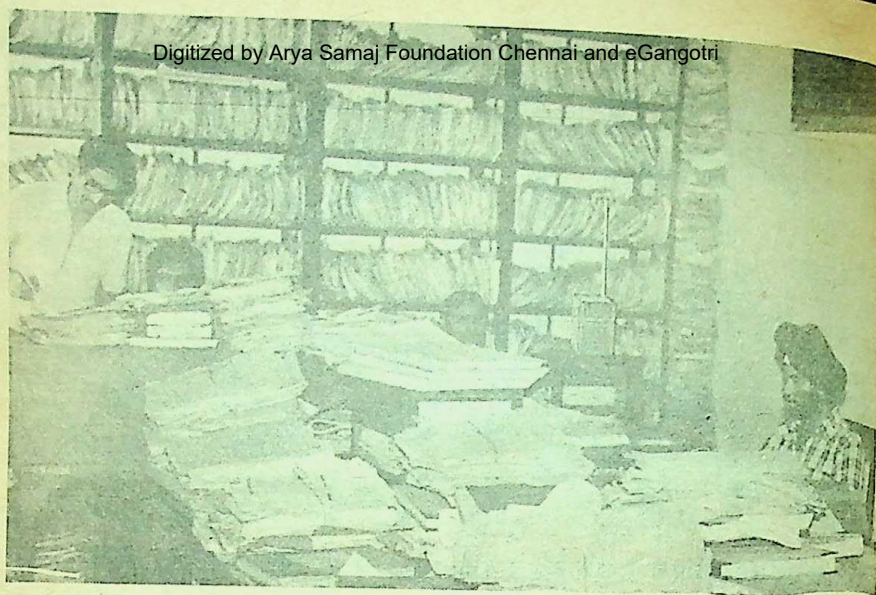
अगले दिन स्कूटर ट्रांसफर कराने के लिए मैं आर.टी.ओ. कार्यालय गया था. समय करीब दो के आसपास रहा होगा. मैं ने चपरासी की भांति दिखने वाले एक व्यक्ति से पूछा था, "भाई स्कूटर का ट्रांसफर कौन बाबू करते हैं." "सोसनाथ बाबू, लेकिन वह पांच दिनों के अवकाश पर हैं." उस ने कहा था.

मैं ने जब सोमनाथ बाबू के अवकाश लेने का कारण पूछा था तो वह सहजतापूर्वक बोला था, "हमारे साहब क्रिकेट देखने के बेहद शौकीन हैं, इसलिए दूरदर्शन पर मैच देखने की खातिर ही उन्होंने कार्यालय आना मुनासिब नहीं समझा."

"फिर कौन से बाबू स्कूटर ट्रांसफर करेंगे?" मैं ने उस से पूछा था.

"वह जो कोने में बैठे ट्रांजिस्टर सुन रहे हैं."

हिम्मत जुटा कर मैं ने उन के पास जा कर कहा था, "भाईसाहब, जरा सुनिए." पर भाईसाहब कब सुनने वाले थे. उन्हें क्रिकेट का बुखार जो चढ़ा हुआ था. कुछ देर बाद उन्होंने एक उड़ती दृष्टि मेरे ऊपर डाली थी और फिर ट्रांजिस्टर को कान से चिपका कर पूर्ववत् बैठ गए थे.



काम भले ही उलटासीधा हो या वह भी न हों, कमेंट्री का मोह लोग नहीं त्याग पाते.

मैं ने यह सोच कर कि शायद रोमांचक खेल हो रहा होगा उस समय मौन रहना ही बेहतर समझा था, पर इंतजार की भी एक हद होती है. पूरे 30 मिनट हो गए थे, अतः मैं फिर गुस्ताखी कर ही बैठा था, "जनाब, स्कूटर का ट्रांसफर आप ही करेंगे क्या?" मेरा इतना कहना था कि वह बिगड़ पड़े थे, "अभी अभी एक विकेट गिरा है और आप हैं कि स्कूटर ट्रांसफर की रट लगाए हुए हैं."

क्रिकेट खेल या आफत

मैं ने अपने द्वारा की गई गुस्ताखी को महसूस कर लिया था और माफी मांगते हुए पांच दिन बाद आने का वादा कर के कार्यालय से बाहर आ गया था. मुझे बारबार झुंझलाहट आ रही थी कि क्रिकेट का खेल न हुआ आफत हो गई.

अगले दिन मैं अपने छोटे भाई की फीस जमा करने उस के स्कूल गया था. मैं यह देख कर हतप्रभ रह गया था कि सभी कक्षाएं खाली पड़ी हुई थीं, लेकिन कामनहाल लड़के लड़कियों से खूबचाखच भरा हुआ था. अध्यापक कक्ष में भी अध्यापक अध्यापिकाओं

का जमघट लगा हुआ था. कुछ लड़के लड़कियां कैटीन में चाय की चुस्कियों के साथ कमेंट्री का आनंद ले रहे थे तो कुछ पेड़ों के साए तले किसी खिलाड़ी की धुआधार बल्लेबाजी पर जश्न मना रहे थे. पूरे स्कूल में पिकनिक का सा माहौल बना हुआ था.

सामने से आती भाई की कक्षाध्यापिका पंर मेरी नजर अचानक ठिठक गई थी. अपने हाथ के मिनी ट्रांजिस्टर को साड़ी के पल्लू में छिपाते हुए वह हड़बड़ाहट में बोली थीं, "कहिए कैसे आना हुआ?" मैं उन की बौखलाहट को भांप गया था. अतः अपने आने का असली मकसद छिपाते हुए बोला था, "यों ही जरा भाई की प्रगति के बारे में पूछताछ करने चला आया."

"क्यों नहीं, क्यों नहीं, बच्चों की पढ़ाई के बारे में तो अभिभावकों को जानना ही चाहिए." मैं ने यों ही अनजान बनते हुए उन से पूछा था, "क्या आज स्कूल में छुट्टी है? एक भी छात्र कक्षा में नहीं दिखाई दे रहा है?"

"जी, दरअसल बात यह है कि आज कमेंट्री आ रही है न, इसलिए आज बच्चों का

“खैर कोई बात नहीं।” यह कह कर मैं
 के फाटक के बाहर निकल आया था।
 कुल से बाहर निकलते ही मैं ने सोचा
 रिकशा ले लूं। सामने नुककड़ पर खड़े
 वाले से जब मैं ने चलने को कहा तो उस
 कह दिया था, “रिकशा खाली नहीं
 ने जब न चलने की वजह जाननी चाही
 वह तपाक से बोल उठा था, “मैं खेल
 हूं, इसलिए नहीं चल सकता” उस ने
 रिकशे के हैंडिल में टंगे ट्रांजिस्टर की
 और बढ़ा दी थी। बोझिल कदमों को
 हुए उस दिन मुझे पैदल ही घर वापस
 पड़ा था।

घर आ कर मैं लगभग निढाल सा अभी
 पर लेटा ही था कि घंटी खनखना उठी
 समय मुझे सचमुच बहुत कोफ्त हुई
 क्या करता, लाचार था। दरवाजा
 के लिए उठना ही पड़ा था।

दरवाजा खुलते ही देखा कि हमारे
 ओमप्रकाशजी सामने खड़े हुए थे।

कहिए, कैसे आना हुआ,” पूछते हुए
 बैठक में ले आया था। ओमप्रकाशजी
 थे, “भाईसाहब, मेरा छोटा बेटा कई
 सख्त बीमार है। आज अचानक उस
 गियत और भी खराब हो गई है। मैं उस
 कारी हस्पताल ले गया था। आधे से
 डाक्टर ड्यूटी पर नहीं आए थे।”

“क्या हस्पताल में डाक्टरों की हड़ताल
 ने उन से पूछा था। “नहीं, हड़ताल तो
 मगर इस क्रिकेट ने जरूर डाक्टरों को
 बना दिया है। सब के सब टेस्ट मैच
 गए हुए हैं और जो आए भी हैं, वे
 पर कमेंट्री सुन रहे हैं। अगर आप
 जानपहचान या सिफारिश हो तो चले
 वरना कहीं ऐसा न हो कि बच्चे की
 और गंभीर हो जाए।” मेरे एक मित्र
 जा उसी हस्पताल में डाक्टर है। अतः
 के साथ हस्पताल चला गया था और
 उस बच्चे का इलाज करवाया था।

पर लौटा तो याद आया था कि आज से
 गयाड के लिए जाने इन्टरप्रिय इडोर।
 में विश्व हिंदी सम्मेलन नामक

हिंदी को (देसी भाषा न सही) अंतरराष्ट्रीय
 भाषा बनाने का बीड़ा उठाने के लिए इन्टरप्रिय
 स्टेडियम जा पहुंचा था। माननीय अतिथिगण
 तो मंच पर विराजमान थे, लेकिन सामान्य
 अतिथिगण काफी अरसे से खाली पड़ी
 कुर्सियों की शोभा बढ़ा रहे थे। जिस समय
 हिंदी को अंतरराष्ट्रीय भाषा बनाए जाने के
 नुस्खे सुझाए जा रहे थे और गरमागरम बहस
 छिड़ी हुई थी तो हमारी निकटवर्ती कुर्सी पर
 आसीन एक खट्टरधारी सज्जन ने अपनी जेब
 से कमेंट्रिया ट्रांजिस्टर निकाला था और उस
 के कान उमोठ दिए थे। उन की देखादेखी अब
 कई लोगों ने अपने कमेंट्रियां ट्रांजिस्टर
 निकाल लिए थे और उन्हें कानों में चिपका
 लिया था।

यह देख कर मुझे बेहद कोफ्त हुई थी।
 मैं झुंझलाता हुआ घर आ गया था कि ओफ
 यह क्रिकेट तो किसी को कुछ करने ही नहीं
 देता। इस ने लोगों को कितना निकम्मा बना
 दिया है।

अपने छोटे बच्चों को

चंपक

दीर्घाए,

बड़े बच्चों को

सुखान्दी सीरम्हा

गुप्तमोहन, शिवाजी, मंगोरजक.

जाफरान

कभी
सोने
से भी
कीमती
था

जाफरान राजा महाराजा और शाही परिवारों में ही लोक-प्रिय नहीं रहा है, एक कीमती मसाले के रूप में यह अब भी महत्वपूर्ण समझा जाता है, आखिर किस प्रकार इस का प्रयोग सुगंध, स्वाद और दवा के रूप में किया जाता है?

अकबर ने 1585 में अपना पहला आक्रमण कश्मीर पर किया था, लेकिन एक शर्त पर उस ने अपनी फौजों को वापस कर लिया था. वह शर्त थी कि कश्मीर में होने वाले जाफरान का सारा उत्पादन उस को मिला करेगा. यही नहीं जब यूनान के सम्राट सिकंदर की सेनाएं उब कर स्वदेश वापस लौट जाना चाहती थीं तो उस ने उन्हें यह कह कर मुसलमानों को प्रोत्साहित किया कि जाफरान का स्वाद और सुगंध इतना अच्छा है कि इसे खाने के लिए ही नहीं, बल्कि दवा के रूप में भी प्रयोग किया जाता है.

को छोड़ कर जाने का क्या औचित्य है जाफरान जैसी कीमती चीज की पैदावार है.

यही नहीं अरब कबीलों के साथ जाफरान को सोने के बाद दूसरी कीमती समझते थे. वह अपनी स्त्रियों को प्रेम में जाफरान ही भेंट किया करते थे. राफ्ट योद्धा जब युद्धभूमि में जाते थे तो उन च स्त्रियां और परिवार के बड़ेबड़े उर का जाफरान का टीका लगाते थे. हिंदुओं में भी कहींकहीं जाफरान का टीका लगाने का प्रचलन है. कश्मीरियों में तो प्राचीन काल ही जन्म, विवाह और मृत्यु से संबंधित धार्मिक कार्यों में जाफरान का प्रयोग जाता है.

आखिर जाफरान है क्या, जिसके लोगों में इतना आकर्षण रहा है?

जाफरान वास्तव में इरीज जाफ्रान क्रोकस सेटिवस नाम के फूल के स्टिग्मा बना ऐसा कीमती पदार्थ है, जिस का प्रायः सुगंध व खाने की चीजों में स्वाद के ही नहीं, अनेक रोगों में दवा के रूप में प्रयोग किया जाता है.

प्राचीन काल में जाफरान की सुगंध इतना पसंद किया जाता था कि यूनान उन कमरों को, जिन में बड़ीबड़ी शाही हुआ करती थीं, जाफरान की सुगंध से भरवाया जाता था. रोम के शाही न्यायालय तथा थिएटरों में भी जाफरान की सुगंध जाती थी, जिन में शाही परिवार के नाटक आदि कार्यक्रम देखा करते थे. यह शाही परिवार के लिए जो स्नानागार में भी जाफरान की सुगंध समाई रहती है कहा जाता है कि रोम का शासक नील कभी शहर की सड़कों से गुजरता था तो के सम्मान में सड़कों पर जाफरान बिछाया जाता था. इस से पूरा शहर महकने लगता था.

यद्यपि जाफरान की सुगंध और स्वाद अत्यंत तीखा होता है, फिर मध्ययुगीन काल से ही यह एक प्रमुख औषधि के रूप में प्रयोग किया जाता है.

न का प्रयोग आज भी विश्व के सभी
चावलों, मुरों और मछली जैसे भोज्य
में किया जाता है। यही नहीं जाफरान
सी मात्रा का प्रयोग कर के रोटी
(डबलरोटी), मक्खन, पनीर, बिस्कट
हिंदी ही नहीं खाने वाली तंबाकू की भी
बनाया जाता है। कश्मीर में तो
चावलों और पुडिंग में जाफरान
का आम रिवाज है।
जा के रूप में जाफरान का प्रयोग
ह के बुखारों, मेलेंकोलिया और
तिल्ली बढ़ने की बीमारी में किया
जाता है। यही नहीं इस का प्रयोग शक्ति
वर्द्धक औषधि अथवा टानिक के
भी किया जाता है। पेट की गड़बड़ी पर
जा के रूप में भी जाफरान का प्रयोग
जाता है। यूनानी और आयुर्वेदिक चिकित्सा
में इस का प्रयोग मूत्र संबंधी तकलीफों
के लिए किया जाता है।
जाफरान के पौधे की जड़ प्याज यानी
की तरह की होती है। इस की पत्तियां
तरह लंबीलंबी होती हैं। इस के फूल
सुगंध के नीली या बैंगनी रंग की छः
पंखाले होते हैं। प्रत्येक फूल में पीले रंग
स्टैमैन्स होते हैं। इन्हीं स्टैमैन्स के ऊपर
लगे रहते हैं। इन्हीं स्टैमैन्स को
कर के जाफरान बनाया जाता है। एक
म जाफरान बनाने में पांच लाख
की आवश्यकता पड़ती है, जो करीब
100 फूलों से प्राप्त हो पाते हैं।
जाफरान मूलतः ईरान में पैदा होता था,
फिर यह एशिया और यूरोप के देशों में
होने लगा। भारत और स्पेन में इस की
प्रतिबंध लगा हुआ है, यानी हरेक
इस की पैदावार नहीं कर सकता।
भारत में जाफरान की खेती मुख्य रूप
मीर में होती है, लेकिन अब उत्तर
उत्तरकाशी, जोशीमठ और पौड़ी
में तथा हिमाचल प्रदेश में संगला में
न के पौधे में कुछ विशेष संस्करण
वर्ण बीज नहीं बनते।



क्या आप की भी वरवधू की तलाश है

हम ने हजारों दंपतियों के
सुखी घर बसाए हैं.
हम ने हजारों आदर्श वरवधूओं को
एक हो जाने में
सहायता की है.

कैसे?

उन्होंने स्वयं
या उन के मातापिता ने
विज्ञापन दिया.
उन का विज्ञापन
सरिता के वैवाहिक विज्ञापनों में 15 दिनों
तक आदर्श वरवधू तलाश करने वालों
आकर्षित करता रहा.

शरिता

आज 75 लाख से अधिक स्त्रीपुरुषों द्वारा
महीने में दो बार पढ़ी जाती है.
सरिता की विशिष्ट व मनोरंजक
कहानियां 15 दिन तक पाठकों के
आकर्षण का केंद्र बनी रहती हैं.

आइए...

वरवधू ढूंढने में हम भी आप की
सहायता करें.

संपर्क करें :

वैवाहिक विज्ञापन विभाग
दिल्ली प्रेस

एम-12, कनाट सरकार
नई दिल्ली-110001.

भारत के निम्न भागों में जाफरान का फायदेमंद साबित हो सकता है लेकिन इस की पैदावार में आखिर ऐसी क्या दिक्कतें आती हैं कि भारत इस का निर्यातित रूप से निर्यात नहीं कर पाता?

पौधे के रोपण के दो वर्ष बाद भी पौधे में कम ही फूल आते हैं, पर तीन वर्ष बाद प्रत्येक पौधे में करीब 20-20 फूलों के गुच्छे आते हैं। इन पौधों के 12-14 वर्ष पुराना होने पर इसी पौधे की कार्मलेट को खोद कर उन का रोपण कहीं और कर दिया जाता है। यदि कार्मलेट इस प्रकार उखाड़ कर नहीं लगाई जाएगी तो वह सड़गल जाएगी, पर अन्यत्र लगाने पर वह नए पौधे के रूप में विकसित हो जाती है।

शाही जाफरान

अक्तूबर के मध्य या अंतिम सप्ताह में जब ठंडी हवा चलनी शुरू होती है और हलकी बौछार पड़ती है तो जाफरान के पौधे में फूल खिल आते हैं, पर ये फूल केवल एक दो सप्ताह तक ही खिले रह सकते हैं। फूलों के खिलते ही उन्हें चुन लिया जाता है और हलकी धूप में सूखने के लिए फैला दिया जाता है। इस के बाद स्टिग्मा को फूलों से अलग कर के उन्हें धूप या किसी अन्य प्रकार गरमी पहुंचा कर दोतीन दिन और सुखाया जाता है।

और इस प्रकार एक हजार किलोग्राम ताजे फूलों से केवल तीन किलोग्राम सूखे हुए स्टिग्मा प्राप्त होते हैं। इन स्टिग्मा से जो जाफरान बनाया जाता है, वह सर्वश्रेष्ठ क्वालिटी का होता है। इसे 'शाही जाफरान' कहते हैं। इस के अलावा जाफरान के फूलों के अन्य भागों से जो जाफरान बनता है, वह इस से कम 'अच्छी क्वालिटी का होता है। इसे 'मोगरा जाफरान' और 'लच्छे जाफरान' कहते हैं।

एक हेक्टेयर भूमि में जाफरान की खेती करने पर वर्ष भर में केवल 10 किलोग्राम जाफरान प्राप्त होता है (एक हेक्टेयर में जाफरान के केवल 25 पौधे ही लगाए जाते हैं) और यदि असमय ही कोहरा या बारिश हो जाए तो यह भी नहीं मिल पाता। हमारे देश में इस का उत्पादन 10 हजार किलोग्राम प्रतिवर्ष है।

13 वीं शताब्दी में जाफरान सोने से कीमती समझा जाता था, पर आज यह इतना कीमती नहीं रह गया है, फिर भी मसालों में

जाफरान उगाया जा रहा है, पर यह व्यावसायिक स्तर पर नहीं उगाया जा रहा है, बल्कि यह एक प्रयोग है, जो सफल रहा है।

कश्मीर में जाफरान की खेती की शुरुआत ईसा पूर्व से ही शुरू हो गई बताई जाती है। कहा जाता है कि इस की खेती संभवतः उन लोगों ने शुरू की थी जो फिलिस्तीन और फारस से भारत आए थे।

जाफरान के आकर्षण में बंध कर मुगल बादशाह जहांगीर ने कुछ दिन कश्मीर की घाटी में बिताए थे और यह अनुमान लगाया था कि कहीं भी इतना जाफरान नहीं उगाया जाता जितना कि कश्मीर में। आज कश्मीर में श्रीनगर से दक्षिणपूर्व में 16 किलोमीटर दूर पंपोर में राष्ट्रीय मार्ग पर दोनों ओर करीब 3,400 एकड़ भूमि में जाफरान उगाया जाता है। इसी लिए इस क्षेत्र को 'सोना करुंड' (सोने की टोकरी) कहा जाता है। जाफरान उगाने में कश्मीर के बाद जम्मू के किश्तवार क्षेत्र का नाम आता है।

वनस्पति विज्ञान की दृष्टि से कुछ विशेष संरचना के कारण जाफरान के पौधे में बीज नहीं बनते, बल्कि इस की कार्मलेट का रोपण किया जाता है। भुरभुरी मिट्टी के पौने दो मीटर वर्ग के चबूतरे जैसी जगह पर एक कार्मलेट का रोपण किया जाता है। इस में किसी प्रकार की खाद नहीं डाली जाती, सीधे सिंचाई भी नहीं की जाती। सिंचाई के लिए इस चबूतरे के चारों ओर 20 सेंटीमीटर चौड़ी नालियां होती हैं, जिस में पानी भर कर आलू की खेती की तरह जाफरान के पौधे की सिंचाई की जाती है और यह ध्यान भी रखा जाता है कि पौधे के आसपास खदानें नहीं उगने पाएं।

लेखकों के लिए सूचना

- सभी रचनाएं कागज के एक ओर हाशिया छोड़ कर साफ-साफ लिखी या टाइप की हुई होनी चाहिए.
- प्रत्येक रचना के साथ वापसी के लिए केवल टिकट नहीं, टिकट लगा, पता लिखा लिफाफा आना चाहिए, अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं वापस नहीं की जाएंगी.
- प्रत्येक रचना के पहले और अंतिम पृष्ठ पर लेखक के हस्ताक्षर होने चाहिए.
- प्रत्येक रचना पर पारिश्रमिक दिया जाता है, जो रचना की स्वीकृति पर भेज दिया जाता है.
- स्वीकृत रचनाओं के प्रकाशन में अकसर देर लगती है, इसलिए इन के विषय में कोई पत्रव्यवहार नहीं किया जाता.
- मुक्ता और सरिता में पूर्ण-विराम की जगह बिंदु का प्रयोग होता है. कृपया इसी का प्रयोग करें. इसी प्रकार अंक बजाए नागरी के अंतरराष्ट्रीय होने चाहिए. भारतीय संविधान में राष्ट्रभाषा हिंदी के लिए यही अंक निर्धारित किए गए हैं और सारे संसार में प्रायः सभी भाषाओं में, यही अंक प्रयुक्त होते हैं.

रचना इस पते पर भेजें :
संपादकीय विभाग
मुक्ता, ई-3, राती झंगी मार्ग,
नई दिल्ली-110055.

सब से कीमती मुसाफिर हैं। इस की खेती करने वाले लोग राज्य के ठेकेदारों को सूखा जाफरान सात हजार रुपए प्रति किलोग्राम के थोक भाव से बेचते हैं. फिर यह जाफरान देश में 12 से 15 हजार रुपए प्रति किलो ग्राम के फुटकर भाव से बिकता है. श्रीनगर, अमृतसर और बंबई इस के व्यापार के प्रमुख केंद्र हैं.

इस का उत्पादन करने में सब से बड़ी समस्या है—फलों का बहुत कम समय के लिए खिलना, क्योंकि जब फलों को तोड़ने, उन्हें सुखाने, उन से स्टिग्मा अलग करने जैसे काम करने के लिए एकदम जितने श्रमिकों की आवश्यकता पड़ती है, उतने बहुत मुश्किल से मिलते हैं. साथ ही इस की खेती करने वाले भी वर्ष में ज्यादा समय तक बेकार ही बैठे रहते हैं. दूसरे नई कार्मलेट बनने में भी बहुत समय लगता है.

इन्हीं सारी दिक्कतों के कारण भारत नियमित रूप से इस का विदेशों से व्यापार नहीं कर पाता. आजादी से पूर्व 1930 से 1934 के दौरान भारत को 21,400 किलोग्राम जाफरान का आयात करना पड़ा था. 1945 से 1950 के बीच 5,125 किलोग्राम जाफरान का आयात किया गया था.

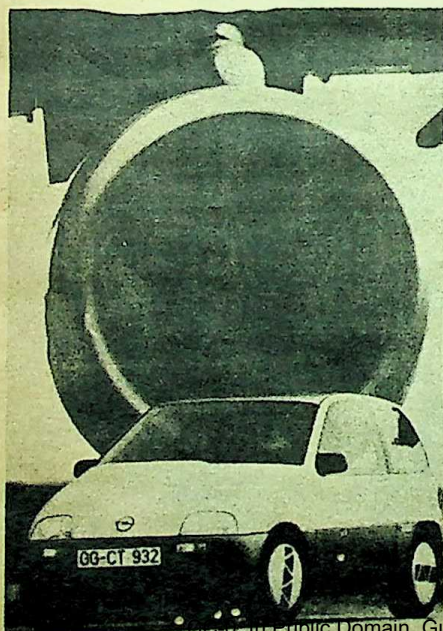
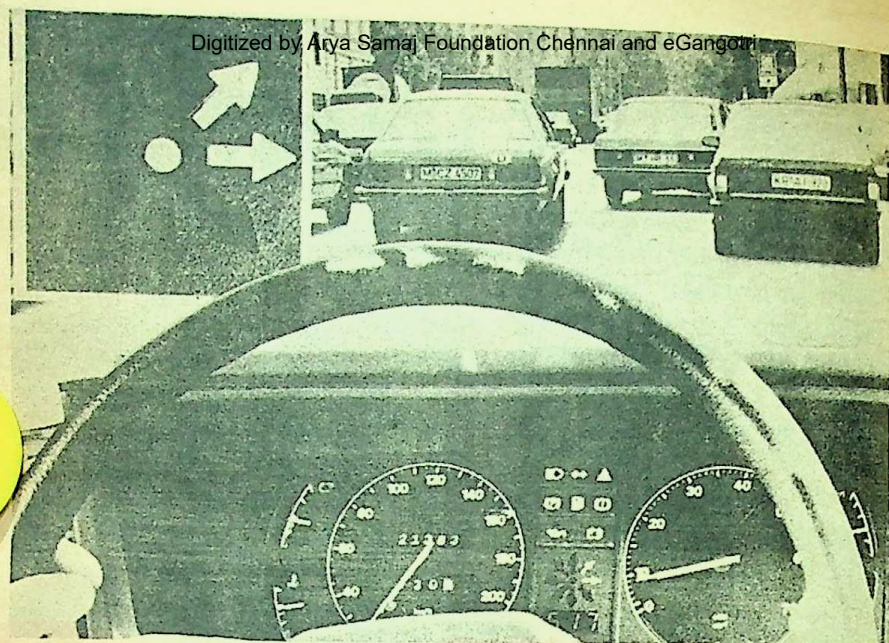
लेकिन 1962 से 1974 के बीच किसी प्रकार भारत ने छः किलोग्राम से ले कर 1,485 किलोग्राम तक प्रतिवर्ष जाफरान का निर्यात किया (लेकिन इस बीच इस की अत्यंत खराब फसल होने पर 1968-69 में 890 किलोग्राम जाफरान का आयात करना पड़ा था) और आजकल देश से 2,000 किलोग्राम जाफरान का प्रतिवर्ष निर्यात किया जाता है. देश में जाफरान का सब से ज्यादा निर्यात दुबई व अन्य अरब देशों को किया जाता है. इस के अलावा कनाडा, अमरीका, फ्रांस, स्पेन, जर्मनी, जापान, केनिया व हांगकांग को भी इस का निर्यात किया जाता है.

फिर भी यदि इस के उत्पादन पर कुछ अधिक ध्यान दिया जाए तो देश के लिए इस का निर्यात एक अत्यधिक फायदे का व्यापार सिद्ध हो सकता है.

का जिक्र कवि हेनरिच हेने ने अपनी एक कविता में किया था, लेकिन अब उस की 10 फुट लंबी कांस्य प्रतिमा बोन (पश्चिमी जर्मनी) में रीने नदी के तट पर स्थापित की गई है। हेनरिच की कविता के अनुसार एक युवती लोलें, इस नदी के तट पर बैठ कर बाल संवारा करती थी और उस के आकर्षण में बंधे नाविक वहां आते थे और उन के जहाज छुट जाया करते थे। देखना है अब कितने नाविक उस की ओर आकर्षित होते हैं।

चित्रावली

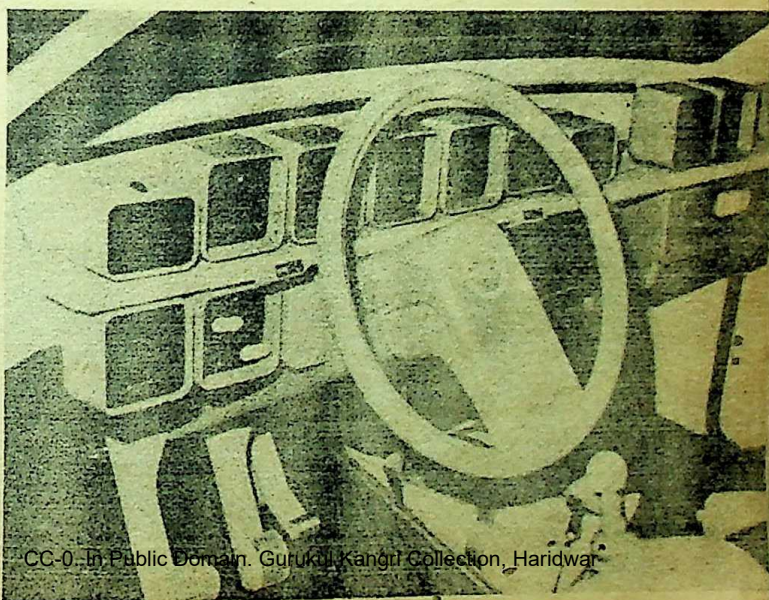




नईनई कारें : यदि आप पश्चिमी जर्मनी में कार चला रहे हैं और आप को रास्ते नहीं मालूम हैं तो किसी से पूछने का कष्ट मत करिए. कार में लगा कंप्यूटर आप को खुद व खुद बताता रहेगा कि अब आप इधर मुड़िए, अब उधर. यह संभव हुआ है, कार के कंप्यूटर में शहर के कुछ रास्तों के नक्शे डाल देने पर. म्यूनिख की कार बनाने वाली कंपनी सीमेंस 1986 तक ऐसी कार बाजार में ले आएगी. (ऊपर).

और यह है भविष्य की कार. ये इतनी छोटी है कि जेट इंजन के अंदर घुस सकती है, पर 3.4 मीटर लंबी इस कार में तीन दरवाजे और चार सीटें हैं, इसे 150 किलोमीटर की अधिकतम गति से भगाया जा सकता है और इस में 100 किलोमीटर जाने में केवल चार लीटर पेट्रोल खर्च होता है (बाएं).

ओपेल जूनियर ऐसी कार है, जिस में यदि आप चाहें तो छत को आसानी से हटा सकते हैं. सीटों का बिस्तर बना सकते हैं तथा अपनी सुविधा के अनुसार इस में और भी परिवर्तन कर सकते हैं. (बाएं-ऊपर नीचे)





यह भी एक कला है : आप को क्या चाहिए—छः मुकुट, चार तलवारें, दो छल्ले और अन्य शाही शानशौकत का साज-सामान? ये सब आप को मात्र साढ़े सात हजार पौंड में मिल सकते हैं, लेकिन यह असली नहीं नकली होगा. पर आप उस के नकली होने की पहचान नहीं कर सकेंगे. यह कमाल है. 66 वर्षीय राब राबिसन का. वह असली जैसी नकली चीजें बनाने में विश्व में सब से ज्यादा माहिर हैं, पर अब उन्होंने इस कला से संन्यास ले लिया है. फिर भी आप को उन का शिष्य ये चीजें बना कर दे सकता है.

अब साइकिले ही भली : 37 वर्षीय रिचर्ड नोबेल ने एक चार पहियों की गाड़ी में जेट इंजन लगा कर उसे 1,000 किलोमीटर की रफ्तार से नेवादा (अमरीका) की सड़कों पर भगा कर विश्व कीर्तिमान बनाया था, लेकिन लंदन की सड़कों पर वह साइकिल से ही गुजरते हैं और कहते हैं, "भई यहां तो साइकिल ही भली है, मैं इस से ही जल्दी पहुंच जाऊंगा."

Digitized by eGangotri Collection
कभी कभी ऐसा भी होता है मजदूर यूनियन की नौकरी को जन्मसिद्ध ही मानती हैं और किसी भी प्रबंधक द्वारा कर्मचारी को नौकरी से निकालने पर होहल्ला मच चाहे कारण कोई भी हो. मजे की बात उस दिन हुई जिस दिन लंदन में 27 वर्षीया टाइपिस्ट नोलन को उस के खान मजदूरों की यूनियन के दफ्तर से ही बरखास्त कर दिया. मैरी का था कि उस ने 'शोध विभाग' से मुख्य कार्यालय तक जाने से इनकार कर दिया था. अब वह बरखास्तगी के खिलाफ कानूनी लड़ाई लड़ रही है. देखना है अब मजदूर नेता आर्थर स्का इस 'सरमायादारी' के खिलाफ क्या तर्क देते हैं.



साल पर हर कोई एकदूसरे को नए साल की मुबारकबाद देते देखा जाता है। तक कि इस बात की भी परवाह नहीं आती कि जिसे मुबारकबाद दी जा रही है आदमी जानपहचान का है या नहीं। ऐसे में एकदूसरे का रुतबा भी आमतौर पर देखा जाता। लोग बड़े विशुद्ध भाव से सरे को नए साल की शुभकामनाएं देते हैं।

मगर सवाल यह है कि नए साल की कबाद देने की जो प्रथा अपने यहां आती है, क्या उसे पूरी तरह से सही कहा जाता है? आइए, जरा इस पर गौर कर जाएं।

विचार करने की सब से पहली बात तो कि नए साल की मुबारकबाद किसे दी जाए और किसे नहीं। आमतौर पर यही देखने

में आता है कि नए साल की मुबारकबाद पड़ जाने वाले हर आदमी को लोग शुभकामनाएं देने लगते हैं। ऐसा करने की कोई तुक हमारी समझ में नहीं आती। नए साल की मुबारकबाद देने का सिलसिला सिर्फ अपने मित्रों और परिचितों तक ही सीमित रखा जाए तो बेहतर रहेगा। इस बात का क्या औचित्य है कि जो भी नजर आ जाए उसे नए साल की मुबारकबाद ठोक दी जाए, चाहे आज तक उस की शक्ल भी न देखी हुई हो। हां, ऐसे लोगों को भी शुभकामनाएं दी जा सकती हैं, जिन से आप का परिचय बेशक न हुआ हो, मगर जो आप को अकसर दिख जाया करते हों।

एक खास बात नए साल के मौके पर देखने में आती है कि कुछ लोग इस अवसर का दुरुपयोग लड़कियों के करीब आने के लिए भी किया करते हैं। ये लोग अपने पासपड़ोस

नए साल की लड़ाई

• हरीशकुमार 'अमित'



या दफ्तर की उन लड़कियों व महिलाओं को नए साल की शुभकामनाएं खास तौर से देने जाते हैं, जिन से वे बात करना चाहते हैं। ऐसा अगर मुबारकबाद देने के उद्देश्य से ही किया

जाए तब तो रीक है, लेकिन अगर सबका प्रयोजन उन लड़कियों व महिलाओं से बात करने का बहाना तलाशना हो तो इसे सही नहीं कहा जा सकता.

नए साल और शुभकामना कार्डों का तो

**नए साल पर बधाई देना
एक अच्छी परंपरा है
मगर इस में कम से कम
वक्त और धन लगाना
चाहिए, पर आखिर यह
संभव कैसे है?**



दांत काटी रोटी का सा साथ होता है. वे लोग जो सारे साल में कभी एक चिट्ठी भी नहीं लिखा करते, इस मौके पर कईकई शुभकामना कार्ड भेजते देखे जाते हैं.

शुभकामना कार्ड खरीदते वक्त लोगों के दिमाग में आमतौर पर यही बात रहती है

कि कार्ड जितना महंगा होगा, उतना ही ज्यादा खूबसूरत और प्रभावशाली होगा. इसलिए खासखास आदमियों के लिए महंगे महंगे कार्ड ही खरीदे जाते हैं. वैसे यह बात काफी हद तक सही है. मगर इसे पूरी तरह से तो उचित नहीं कहा जा सकता. कार्डों

मे आप की सुरुचि झलकनी चाहिए और वे आकर्षक भी लगने चाहिए। फिर चाहे यह सस्ता सा ही क्यों नहीं। हां, कार्ड खरीदते वक्त इस बात का ध्यान जरूर रखिए कि इस का कागज इतना घटिया न हो कि यह पाने वाले के पास पहुंचतेपहुंचते ही फट या मड़तुड़ जाए।

शुभकामना कार्ड हमेशा खुला ही भेजें। इस तरह आप इस पर बूक पोस्ट की दर से डाक टिकटें लगा सकते हैं। यह दर डाक व्यय की आम दर से सस्ती पड़ती है। वर्ष के अंतिम सप्ताह में इन कार्डों की ही वजह से हो जाने वाली डाक की भीड़ को देखते हुए अगर कार्डों को कम से कम आठदस दिन पहले ही डाक में डाल दिया जाए तो बेहतर रहेगा। इस से ये पहली जनवरी तक तो पहुंच ही जाएंगे।

यहां यह बात भी कही जानी जरूरी लग रही है कि दूसरे लोगों की देखादेखी आप को भी नए साल की शुभकामनाएं देने के लिए कार्ड ही खरीदने की जरूरत नहीं। यह मत सोचें कि फलां आदमी चूँकि मुझे कार्ड भेजता है, इसलिए बदले में मुझे भी उसे कार्ड ही भेजना चाहिए।

अगर आप कोई सस्ता सा कार्ड भी खरीदते हैं तो यह आप को तकरीबन 50 पैसे का नो पड़ेगा ही। अब 30 पैसे का डाक व्यय लगने के बाद एक कार्ड पर आप का खर्च 80 पैसे आएगा। अगर आप की जेब इतना खर्च करने की इजाजत नहीं देती तो आप ऐसा कर सकते हैं कि शुभकामना कार्डों के बजाए पोस्टकार्ड खरीद लें और उन पर अपनी शुभकामनाएं लिख कर भेज दें। इस तरह प्रति व्यक्ति आप का खर्च सिर्फ 15 पैसे ही आएगा।

इस के अलावा बाजार में विभिन्न दृश्यावलियों व चित्रों वाले पोस्टकार्ड भी मिल जाते हैं, जिन पर अपनी शुभकामनाएं लिख कर भेजी जा सकती है। ऐसे पोस्टकार्ड भी शुभकामना कार्डों से सस्ते पड़ते हैं। इन पर 25 पैसे प्रति कार्ड की दर से डांक टिकट लगाने पड़ते हैं।

कुछ लोग अपने-अपने शुभकामना कार्ड भी छपवा लिया करते हैं या पोस्टकार्ड

पर ही अपने शुभकामना संदेश मुद्रित करवा लेते हैं। ऐसा करना भी सम्मत पड़ता है, लेकिन ऐसा किया जाना तभी ठीक रहता है जब काफी संख्या में कार्ड भेजे जाने हों।

कुछ व्यक्तियों को नए साल पर शुभकामना कार्ड भेजने का इतना ज्यादा शौक होता है कि अगर वे किसी के घर नए साल की मुबारकबाद देने जाते हैं तो साथ में उसे एक कार्ड भी दे आते हैं। हमारे हिसाब से यह भी एक बेतुकी बात ही है। जब खुद जा कर किसी के घर मुबारकबाद दे दी गई है तो फिर कार्ड देने की क्या जरूरत रह जाती है।

दिमागी ऐयाशी

एक और बात जो खास तौर से सरकारी दफ्तरों में देखने को मिलती है। वह यह है कि पहली जनवरी वाले दिन दोपहर के खाने के वक्त तक यहां का कामकाज तकरीबन ठप ही रहता है। लोग दफ्तर पहुंचते ही एकदूसरे को मुबारकबाद देने में व्यस्त हो जाते हैं। हालत यहां तक देखी गई है कि दफ्तर के कई कमरों में एक भी कर्मचारी नजर नहीं आता। जिधर नजर दौड़ाओ, लोग टोलियां बना कर मुबारकबाद देने आजा रहे होते हैं।

दफ्तर के लोगों के अलावा दूसरे लोग भी नए साल की शुभकामनाएं देने के चक्कर में अपना काफी वक्त लगाते देखे जाते हैं।

यह बात साफ है कि नए साल की इस मुबारकबाद के चक्कर में काफी धन और समय बरबाद होता है। पश्चिम के अमीर देश तो इस दिमागी ऐयाशी का बोझ आसानी से उठा सकते हैं, मगर भारत जैसे गरीब देश में, जहां लोग पीने के पानी को तरस जाया करते हैं, इस दिमागी ऐयाशी का औचित्य समझ में नहीं आता।

हालांकि नए साल की मुबारकबाद देने के पक्ष में भी काफी तर्क दिए जा सकते हैं, मगर भारतीय परिस्थितियों को देखते हुए यह उचित लगता है कि नए साल की मुबारकबाद दी तो जरूर जाए, लेकिन इस पर लगने वाले वक्त और धन को जितना कम से कम किया जा सके, उतना बेहतर रहेगा।

कुछ लोग अपने-अपने शुभकामना कार्ड भी छपवा लिया करते हैं या पोस्टकार्ड

विश्व बाल साहित्य

मनोरंजक, वीरतापूर्ण, ज्ञानवर्धक, प्रेरक
एवं देशभक्तिपूर्ण बाल पुस्तकें...



रु. 2.00

स्वतंत्रता सेनानी
प्रत्येक रु. 2.50
तेनालीराम
बस में चोरी
तिनके का सहारा
गलतफहमी

चीकू

नकलची ननक
चमत्कारी बाबा
बहादुर विनीता
हाथी का शिकार
पंचतंत्र भाग I, II
घमंडी कौआ

रु. 3.00

आखिरी सरकस
रु. 3.50
घमंडी भैंसा
प्रत्येक रु. 4.00
अपहरण
सम्राट चंद्रगुप्त
आगरे वाले मामा जी

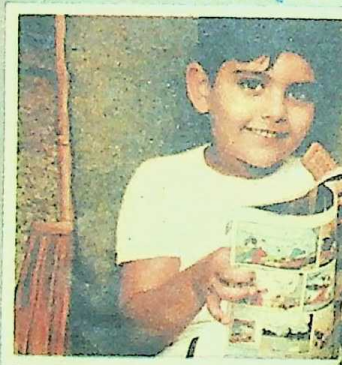
आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें या आदेश भेजें

दिल्ली बुक कंपनी

एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.

40 रुपये में पूरा सैट. अग्रिम रुपये भेजने पर डाक खर्च नहीं डाक खर्च केवल 50 पैसे की. पी. द्वारा
वी. पी. द्वारा भिजाने पर Public Domain Collection, Kottayam, Kerala, India. डाक खर्च
अतिरिक्त. बैंक नहीं बैंक डाफ्ट या पोस्टल आर्डर भेजें.

जब मैं बड़ा होऊंगा न,
कॉमिक्स ही पढ़ूंगा,
और बिस्किट ही खाऊंगा..!



बच्चों को भाये पारले ग्लुको
स्वाद में निराले,
शक्ति से भरपूर



पारले
ग्लुको

21/5/02



Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

